वैश्य समुदाय का इतिहास



संरक्षक
अखिल भारतीय वैश्य महा-सम्मेलन

लेखक
डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त
M.A.Ph.D.
हरिद्वार

मुद्रक: विश्व प्रिंटिंग प्रेस मेरठ-2

वैश्य समाज का इतिहास
AUTHOR and PUBLISHER
डा० रामेश्वर दयाल गुप्त M.A, Phd.
रामेश्वर कुंज : आर्य नगर
ज्वालापुर [२४९४०७] उ०प्र०
प्रथम बार : १००० : मूल्य-५०.००

समर्पणम

दिवंगत विभूतियां को :-



महाराजा अग्रसेन

वैश्यों के आदि संगठन कर्त्ता जिन्होंने 18 समूहों को गोत्र संज्ञा देकर एकाकार किया ।



महाराजा महासेन

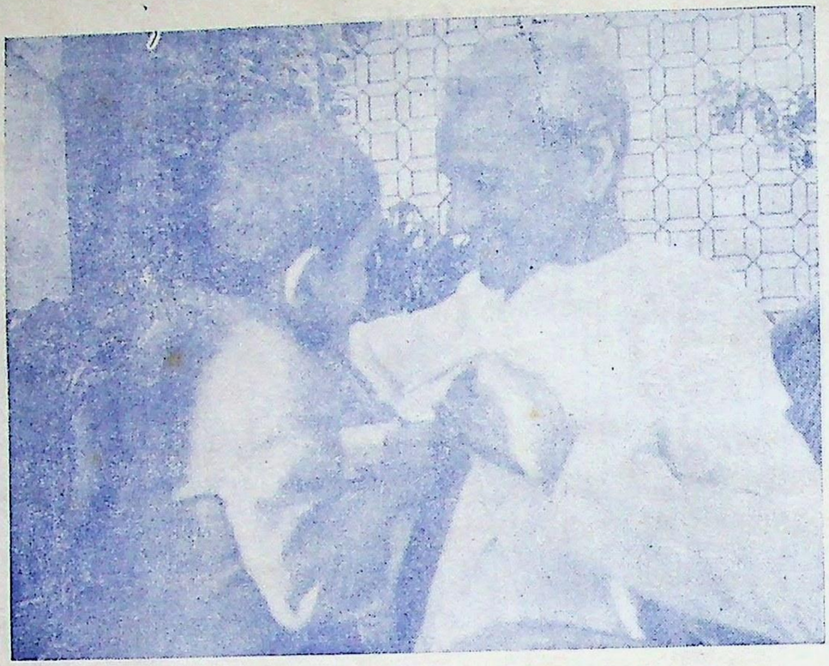
महाभारत कालीन दूसरे वैश्य संगठन कर्ता ।
माहौर जनपद से निसृत एक दर्जन वैश्य उपजातियों के सूत्रधार ।



राजा रत्नसेन [रत्न चन्द्र]

राजवंशियों के अग्रज जिनके हाथ में मुगल साम्राज्य की बागडोर फर्रुखशियर के समय रही और जिन्होंने हिन्दुओं पर लगने वाला जजिया-कर समाप्त करा दिया ।

कृतज्ञता ज्ञापन



पिता श्री स्व० मंत्री बाबूराम गुप्त, जिन्होंने जाति--सेवा की विरासत छोड़ी और उस का व्रती बनाया।



लेखक :

डा० रामेश्वर दयाल गुप्त B.Sc. M.I.E.T.E.

M. A. (वैदिक साहित्य : गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय)

M. A., Ph.D. (राजनीति विज्ञान, भोपाल विश्वविद्यालय)

सम्पादक—वैश्यों का उरुतन्त्र एवं वैश्य-सम्मेलन पत्रिका।

महामन्त्री—अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन (1986)

वैश्य समुदाय का इतिहास

विषय :—तालिका

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

विषय सूची

—०—०—०—

विषय-सूची भाग-२

हमारे सहयोगी

धन्यवाद ज्ञापन

इस पुस्तक के प्रकाशन की सामग्री विभिन्न वैश्य उपवर्गों की शिरोमणि सभाओं से मांगी गई थी। जिनसे जैसी मिली स्थानानुसार दे दी। उन सबका धन्यवाद है। जो उपवर्ग रह गये उनका, विवरण अगले संस्करण में शामिल करेंगे।

पुस्तक प्रकाशन में पृष्ठ-9 में अंकित सभी सहयोगियों से विभिन्न राशियाँ मिली हैं और उन्हीं से प्रकाशन संभव हुआ है। केवल पुष्पाङ्कित सज्जनों की सहयोग राशि आनी शेष है। जिसने दिया और जिसने नहीं दिया-सभी का धन्यवाद और अन्त में प्रचुर धन्यवाद है मित्रवर श्री जगदीश शरण तायल M. Com. प्रोप्रा० विश्व प्रेस का जिन्होंने तथा जिनके सारे परिवार ने इस कार्य को पावन-पुनीत एवं पारिवारिक कार्य समझकर हर स्थिति में हर संभव सहयोग किया है।

26 मार्च 1986
[होलिकोत्सव नवसस्येष्टि]
आर्यनगर-ज्वालापुर [249407]

रामेश्वर दयाल गुप्त
सम्पादक एवं लेखक



हमारे सहयोगी

Sh. Om Prakash Agrawal

LIFE HISTORY OF SHRI JOTI PARSHAD AGARWAL & SHRI OM PRAKASH AGARWAL

[M/s. Joti Prashad Om Pr kash No. A-95 Gandhi Nagar, Prince Road, Moradabad-1]

Shri Joti Parshad Agarwal (born on 16. Jan. 1913) & Shri Om Parkash Agarwal (born on 22-1-1916), at Sonepat, in Kuchhal Gotra in a well established family.

Business Apex Firms : Head Office is at 365, Sadar Bazar, Delhi-6 & branches as follows :

1. Phones : OFF : 8512373, 8514512 Gram : Shivlehri
   Res : 530272. 546521
   Joti Parshad Om Parkash 159, Kataria Building, Gulalwadi, Bombay-400004.
2. International Artware Emporium New 183/Old 446, Mint Street, Madras-600003. Ph. 33386 & 440187
3. Omsons India Handicrafts, Moradabad Adarsh Udyog, Katghar, Moradabad.
   Ashok Metal Company, Bombay & Calcutta.
4. Joti Steels (India) Factory-Stainless Steelwares, 20th Mile Jatheri Road, Rai. (Sonepat) Harayana.

The firm started manufacturing brass art wares and stainless steel wares and went into export & import business through out world.

The Firm has been Awarded A Gold Medal in excellent quality of Exports in 1982 and a five star title.

Shri Om Parkash has been six times abroad and Thrice Around the world in connection with Export Business Now he is 'The Honorary Life Member of Council for the World Trade & Industrial Development; Delhi.

The firms has been earning Hard Foreign Exchange. Handicrafts Brass Art Wares, Silver Plated wares, jewellery, stainless steel wares are the main items of their exports.

2. Social Impact in 1974 with noble guidance of Master Lakshmi Narain Ji, a social leader of Agarwal Samaj), Maharaja Aggarsen Agarwal Ashram trust, Haridwar was founded by the two and a plot of land was purchased measuring 3000 Sq. yards. The said trust was got registered in 1977 with Shri Pearey Lal Goel as President, Master Laxmi Narain Agarwal, Delhi as the Chief Secretary and Shri Joti Parshad Agarwal as its Chief Cashier. The foundation stone at Haridwar was laid down by Shri Joti Parshad Agarwal on 9th April, 1978 with great Pomp & Show and since then the said Ashram have been constructed in two storeys with the large sums of donations collected through about 270 trustees. The Ashram buildinghave been completed in a grand manner.

The opening ceremoney of the Ashram fixed during Maha Kumbh Mela on auspicious Baisakhi Day.

उदीयमान जाति-हिते-रता

श्री दयानन्द गुप्त मोदीनगर



जीवन परिचय

श्री दयानन्द गुप्त मेरठ मण्डल के सुप्रसिद्ध उद्योगपति हैं, जिनका जन्म सन् 1937 में जिला मेरठ के पीपलीखेड़ा ग्राम में हुआ। इलैक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त, श्री गुप्त जी एक स्वनिर्मित उद्योगपति हैं; जिन्हें वर्ष 1983 में भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा "स्वनिर्मित उद्योगपति" के रूप में ताम्रपत्र से सम्मानित किया गया था। वर्तमान में श्री दयानन्द गुप्त जी की दो पेपर मिलें, दो कैमिकल इण्डस्ट्रीज व सात खण्डसारी उद्योग हैं, जिन्हें चलाने का श्रेय उन्हें प्राप्त है।

श्री गुप्त जी न केवल अपने उद्योगों के प्रति ही इतने सजग हैं, बल्कि सामाजिक उत्थान, शैक्षिक विकास व समाज के उदीयमान वर्ग को ऊपर उठाने के लिये भी अत्यधिक प्रयत्नशील हैं। उनके द्वारा अनेकों इन्जीनियरिंग व मैडिकल शिक्षा प्राप्त कर रहे सुपात्र छात्रों को पूर्ण छात्र-वृत्तियाँ प्रदान की जा रही हैं। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि का आभास इससे भी मिलता है कि वे अनेकों पोस्ट ग्रेजुएट व इण्टर कालिजों की प्रबन्ध समितियों के पदाधिकारी हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थानों एवं औद्योगिक संस्थाओं के पदाधिकारी होने के साथ-साथ इन सबके लिये सराहनीय सहयोग भी उपलब्ध कराते रहते हैं।

यद्यपि वे अपने जातीय समुदाय के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं, तथापि उनकी प्राथमिकता का आधार "जातीयता से पूर्व मानवता" रहता रहा है।

They have been members of the Citizen council of India, Delhi and President & Vice-President, Secretaries of various social & religious-educational institutions.

They have constructed several Guest houses, Ashrams. in different pilgrim places of India for public

जाति बन्दना

परिवर्तिन संसार मृतः कोवा न जायते
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥ भर्तृहरि ॥

जीवन लेना उसी का धन्य है, जिससे वंश का नाम उज्जवल हो। इस परिवर्तनशील संसार में अन्यथा ऐसा कौन है जो जन्म लेकर मरता नहीं ?

निकृतस्य परैन्येर्ज्ञातिरेव परायणं।
नान्यो निकार सहते ज्ञातिर्ज्ञाति कथाञ्चन।

महाभारत शान्ति पर्व ॥ अ० ११ । १५ ॥

दूसरों से अनादर पाने पर अपनी जाति ही सहारा हुआ करती है। जाति-जन अपने जाति-जन का दूसरों से अनादर नहीं सह सकता।

—❀❀—

न्याय की बात

सब व्यक्तियों-वर्गों-और जातियों को उनका भाग मिलना चाहिये :-

सगच्छध्वं संवदध्वं संबो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथापूर्वे संजानानामुपासते॥

[अथर्व वेद में संगठन सूक्त]

एक परिवार के सब व्यक्ति, एक धर्म की सब जातीयें, एक देश के सब धर्म वाले—साथ साथ चलें और साथ साथ बोलें।

उनके ध्येय; गंतव्य-स्थान और मनोकामनायें एक सी हों, परन्तु इस जीवन क्रम में पहिले की भांति हरेक को उसका भाग, उसका अधिकार प्राप्त करने हेतु अग्रसर होना चाहिये।

यह देवाज्ञा है।

इकाइयों के कर्त्तव्यों के साथ उनके अधिकार भी सुरक्षित रहें, यही शास्त्र की आज्ञा है। यही प्रजातंत्रवाद है।

तो भी प्रत्येक हितकारी कार्य में सब स्वतन्त्र रहते हुये भी सामाजिक हितकारी कार्यों में वे परतन्त्र रहें।

यह ऋषि वाणी है।

इसी में भारत की आत्मा बोलती है।

—❀❀—

इतिहास द्वारा संस्कृति का तारतम्य

यां मेधां देव गणाः पितरश्चोपासते,
तया मामद्य मेधया अग्ने मेधाविनं कुरु।

(यजुर्वेद)

हे हमारे सच्चे नेता परमेश्वर। जिस संस्कृति की उपासना करके हमारे पूर्वज विद्वान, देव और हमारे संरक्षक पितर, महत्ता प्राप्त करते रहें हैं, उससे हमको भी समन्वित कीजिये।

क- इतिहास से प्रेम का कारण

वैश्यों का इतिहास क्यों लिखा जा रहा है ?

जिस भूमि पर हमारे पूर्व पुरुषों ने वीरता और त्याग के कार्य किये हैं, उस भूमि से हमें प्यार हो जाता है और उन पुरुषों की याद हम हृदय में बड़े चाव से संजोये रखते हैं। उनके नाम पर हम अपने बच्चों, ग्रहों और ग्रामों का नाम रखते हैं ; यह तो हुये बहुत पहले हुये व्यक्तित्व। अपनी निजी स्मृति में भी हमें याद रहता ही है कि अमुक नाम्नी माता ने हमें नौ मास गर्भ में धारण करके जन्म दिया था। आधुनिक वैज्ञानिक खोज ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि माँ के गर्भ में आने के पहिले उत्पादक अंश का वैविद्र्या पहिले पिता के गर्भ में बहुत काल तक रहा होता है। अस्तु जन्म के समय कुछ आदतें, संस्कार, स्मृति और भाषा, बच्चे में अपने माता पिता की होती हैं। कृतज्ञता मनुष्य को अन्य विस्मृतोन्मुखजानवरों की श्रेणी से पृथक करती है। उस कृतज्ञता के द्योतन के लिये मनुष्य अपने माता-पिता एवं पितामह; आदि के विषय में जानना चाहता है। न जाने क्यों उनका आजन्म मृत्युपर्यन्त विवरण सुनकर उसे सन्तोष होता है। उसके अन्दर अहम तत्व को शान्ति मिलती है। कहावत है कि खून का अंश अपनों की विपत्ति सुनकर तिलमिला उठता है। इस स्वप्रसूत इच्छा की पूर्ति प्रारम्भ में तो दादी की कहानियों के रूप में उसे मिलती है। और जैसे जैसे वह बढ़ता है, उसे इतिहास की पुस्तकों में मिलती है। मनुष्य अपने-अपने परिवार और पूर्व पुरुषों के बारे में यह जिज्ञासा रखता आया है कि लोग उन्हें जानें। लोग मन्दिर व धर्मशाला निर्माण करते हैं कि अन्य परिचित व अपरिचित लोग उन पर निर्माण कर्त्ता के प्रस्तर पर लिखे नामों को जानें और उनकी याद उपकार-कर्त्ता के रूप में आती रहे। पूर्व में राजाओं ने शिलालेख खुदवाये थे, अपनी चर्चा में कीर्ति-स्तम्भ निर्मित कराये थे, तथा भाटों से अपनी स्तुति में काव्य लिखाये थे। यह सब इतिहास का निर्माण ही था। जब तक मनुष्य जाति है, उसका इतिहास प्रेम अजर, अमर है। अब कलम, कागज और स्याही के युग में यह महत्वकांक्षा इतिहास-लेखन के रूप में प्रकट हो रही है।

क्वाहं कोऽहम् कुलं किं मे सम्बन्धः कहि इमेमम्।

मैं कौन हूं—कहां हूं ? किस कुल में उत्पन्न हुआ हूं ? लोक में मेरा किसके साथ कैसा सम्बन्ध है ? यह मानवीय जिज्ञासा है, जो समाज में इतिहास लिखवाती आई है।

हमारे देश में हर शुभ कार्य के सम्पादन के प्रारम्भ में निम्न संकल्प मन्त्र बोला जाता है, जिसमें भी गोत्र और पितामह एवं पिता की याद की जाती है :-

ब्राह्मणो द्वितीये प्रहरार्धे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंषति तमे कलियुगे। कलि प्रथम चरणे अमुक संवत्सरे, अमुक, मासे अमुकतियो अमुक वासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नो अमुकस्य सगोत्रो अमुकस्य पौत्रे अमुकस्य पुत्रोऽहम अमुक कार्यस्य प्रारम्भं करोमि"

ख- इतिहास का महत्व

जीवित वही है जिसकी कीर्ति जीवित है, जिसका इतिहास सामने है। जिसका इतिहास विस्मृत हो गया है तथा पूर्वजों के गुण वैभव प्रताप लोप हो गये हैं, उसका जीना मरने के समान है। जाति

का इतिहास ही जाति का जीवन है। इस भूतल पर अनेक संगठित मानव समाज उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंच कर भूत के विशाल उदर में लुप्त हो गये। कोई उनका नाम लेवा या पानी देवा शेष नहीं है, क्योंकि उनके दुर्भाग्य से उनके जातीय जीवन की यशोमालिका का गूंथने वाला ही इस भूतल पर कोई नहीं हुआ था। परन्तु जिसके यश को कवियों ने गीत में लिखा और कारीगरों ने प्रस्तरों पर अंकित किया, वे आज भी जीवित हैं। तभी इतिहास को पंचम वेद की संज्ञा दी गयी है। इतिहास से रीति-रिवाजों, आख्यानों और संस्कृति की रक्षा होती है। पुरानी त्रुटियों को जानकर उन्हें हटाने के प्रयत्न होते हैं। और इस प्रकार भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है।

येनास्य पितरो याता येन याताः पितामहाः ।
येन यातास्सतां मार्ग तेन गच्छन्न रिष्यते ॥

मनुस्मृति ४/१७८

सज्जनों के जिस मार्ग से पिता, पितामह अपना जीवन बिता चुके हैं, सन्तति उसी मार्ग पर चले। उसे ऐसा करने से दुःख नहीं होता है।

यह विख्यात है कि कोई सन्तान अपने उज्ज्वल गौरव पर धब्बा न लगने देगी। जब कोई समाज ऊर्ध्वगामी न होकर अपने कर्म और अशिक्षा से रसातलोन्मुख होता है, तब उसे अपने पूर्व इतिहास से ही ऊपर उठने की प्रेरणा मिलती है। अस्तु पुरातन की कड़ियों को एक माला में पिरोकर वैश्यों का इतिहास प्रस्तुत करने का संकल्प मैंने किया है, अन्यथा देश भर में घूमकर और साहित्य का अनुशीलन करके जो सामिग्री हम कायकर्त्ताओं के हाथ लगी, वह हमारे ही साथ चली जाती।

इतिहास का महत्व हृदयङ्गम करने हेतु कतिपय उदाहरण देना समीचीन होगा। भारतवर्ष में अग्रवाल वैश्य बड़े सम्पन्न तथा शिक्षिततम हैं। इनका कोई इतिहास नहीं था। अपने इलाहाबाद वाले वार्षिक अधिवेशन में उन्होंने एक प्रस्ताव पास किया था कि जो कोई अग्रवाल जाति का इतिहास लिखेंगे उन्हें ५०००) का पुरस्कार दिया जावेगा। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार ने यह इतिहास लिख डाला और पेरिस विश्वविद्यालय से उस पर उन्हें डाक्टरेट भी मिली। पृष्ठ १० पर वह लिखते हैं कि "यह इतिहास पूर्णतया साधार नहीं है। इसे मैंने मुख्यतया साहित्यिक अनुश्रुति के आधार पर लिखा है।" पृष्ठ ४१ पर पुनः लिखते हैं कि "दुर्भाग्यवश अग्रवाल इतिहास के लिये कोई शिलालेख, सिक्के, ताम्र-पत्र आदि उपलब्ध नहीं हैं, और मैंने कल्पना से भी काम लिया है।" उन्होंने अग्रसेन नामक राजा का इतिहास खोज निकाला और उनसे अग्रवाल वंश का उदभव लिखा है। पृष्ठ ११० पर वे एक भाट की अनुश्रुति को उद्धृत करते हैं।

वदी मंगसिर सनि पंचमी क्रेता पहल चरण।
अग्रवाल उत्पन्न भय, सनी भाखे शिव करण ॥

परन्तु यह त्रेता वास्तव में कलियुग था। सत्यकेतु जी ने आगे लिखा है कि राजा अग्रसेन परीक्षित या जनमेजय के समकालीन थे और जब अग्रसेन ने राज्य त्याग किया, कलियुग को बीते १०८ वर्ष हो चुके थे।

यों महाभारत में राजा अग्रसेन का विवरण नहीं है, न ही किसी अन्य इतिहास पुराण में ही है। परन्तु राजा अग्रसेन अब वास्तविक एतिहासिक पुरुष हैं। उनके नाम पर मन्दिर भी बने हैं। उनकी मूर्तियाँ हैं, जिनका जलूस निकाला जाता है। वे अग्रवालों के प्रेरणा स्रोत हैं। अग्रसेन ने सारे अग्रवालों को गौरवान्वित कर दिया है।

अपने पुनरुत्थान की वेला में जापान के सम्राट ने विदेशों में विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने भेजे थे। उन्हें यह काम भी सौंपा था कि वे यह देखकर आवें कि विदेश उत्थानोंन्मुख क्यों हैं? शिक्षा समाप्ति पर जब वे लौटे तो सम्राट ने उन्हें बुलाकर उनसे चर्चा की। जापान की अवनति के कारण बताते हुये उन लौटे हुये विद्यार्थियों ने आह भरी और कहा कि "सम्राट ! अन्य सब देशों के पास बहुत उज्ज्वल इतिहास है, जिसमें वर्णित उत्थान-पतन की कहानियां और वीरों की वीर गाथा से वे प्रेरणा लेते हैं। परन्तु हमारा कोई इतिहास नहीं है। बस फिर क्या था। इतिहासज्ञों की कमेटी बनी। और जापानियों के पूर्व पुरुष सूर्य भगवान बनाये गये, जिनकी अनेकानेक पीढ़ियों द्वारा प्रागैतिहासिक काल में सारे विश्व पर राज्य किया जाना इन पुस्तकों में वर्णित किया गया। और तब से आज तक जापानी बच्चों को यही इतिहास निष्ठापूर्वक पढ़ाया जाता है। उदित होता सूर्य उनका राजचिन्ह है और **Rising sun of the East** उनका नारा है।

तो फिर भारतीय गाथाओं में जो सत्य रूप से विराजमान हमारा पूर्व सम्बन्ध है, उस पर हम गर्व क्यों न करें? उसी को खोजकर मणिमाला बनाकर जाति के सन्मुख पुस्तक रूप में पेश किया जा रहा है।

ग- इतिहास के स्रोत

जिन देशों की सभ्यता हजार पांच सौ वर्ष की है, उनका क्रमबद्ध तिथिवार इतिहास प्राप्त है। भारतवर्ष की सभ्यता लाखों वर्ष पुरानी है। यदि सन्तति वार इतिहास यहां के प्रत्येक राजा का लिखा जाता तो पिछली चतुर्युगियों को जाने दीजिये अपनी इस चतुर्युगी को १ अरब ९६ करोड़ वर्ष के लगभग होते हैं, जैसा कि संकल्प के श्लोकों से सिद्ध होता है। दक्ष प्रजापति से अब तक का इतिहास लिख डालने में शायद जितने कागज की आवश्यकता होती वह हजारों टन में होता। अतः भारतवर्ष में मात्र युगों का इतिहास प्राप्त हैं जिनमें युग विशेष की संस्कृति और उसके नैतिक मापदण्डों का विवरण ही है।

भारत के सर्वविध विषयक अभ्युदय जिस प्रकार सबकी अपेक्षा प्राचीन है, उसी परिणाम से उसका पुरा कालीय आख्यान-मय इतिहास विद्यमान नहीं है। विभिन्न प्रदेशीय राजन्यवर्ग की धारावाहिक वंशावली और कीर्ति-कलाप एवं तदीय आविर्भाव कालादि का विनिर्णायक सर्वाङ्ग सुन्दर आख्यानमय प्राचीन इतिहास-केवल भारतवर्ष ही का क्यों ग्रीस, रोम, मिश्र, फिनिसिया, एसिरिया, बेबिलोन, पार्थिया और पारस्य तथा चीन प्रभृति किसी देश का भी विद्यमान नहीं है। काल्पनिक उपन्यास और जनश्रुति, सब ही देशों में अति प्राचीन कालीय अतीत साक्षी इतिहास के वरणीय पद पर समासीन रही है। किन्तु जो इतिहास अतीत का एक मात्र वर्षीयान, अपक्ष-पाती साक्षी, जो इतिहास प्रकृत प्रस्ताव से समाज का अभ्रान्त उपदेष्टा और परिचालक, जो इतिहास मानव जीवन का और मानव समाज का यथा प्रति-कृति

अंकित कर समाज का आविर्भाव उन्नति और अवनति यथोचित कारण निर्देशपूर्वक अभ्राग्न रूप से प्रदर्शन करता, जो इतिहास सुनिपुण शिल्पविद् का सुकौशल विचित्रित फूल की नाईं समाज का यथार्थतत्व सुस्पष्ट रूप से प्रगट करता है, सुविमल स्वच्छ दर्पण की नाईं जिसमें समाज की यथायथा प्रतिकृति प्रतिभाषित होती हैं—उसका यथोपयुक्त उपकरण प्रचुर रूप से संस्कृत साहित्य में विद्यमान रहा है । संस्कृत साहित्य में हम सब का जातीय जीवन, जातीय इतिहास जातीय चरित्र जातीय धर्म जातीय ज्ञान रीति-नीति आदि स्वर्णाक्षर में सुस्पष्ट रूप से लिपिबद्ध है ।

अतः हमें मूल रूप से पुराण, महाकाव्य, रामायण व महाभारत और राजपूत काल के अंग्रेजों व मुसलमानों और हिन्दू दरबारियों द्वारा छोड़े इतिहास पर ही निर्भर रहना होगा । हां शिरोमणि सभा अंश इधर ५० वर्ष का इतिहास कार्यवाही रजिस्टरों इत्यादि में सुरक्षित है, और उस पर विश्वास किया जा सकता है ।

भारतवर्ष में वंशावलियाँ आदि सुरक्षित रखने का एक और साधन जगा तथा तीर्थों के पंडे हैं । यह वंशानुक्रम से परिवारों और जातियों की वंशावलियाँ सुरक्षित रखे हुए हैं । इनका उनमें घटाव बढ़ाव करने में कोई स्वार्थ नहीं था । अतः जातियों के इतिहास के सम्बन्ध में उनसे उपलब्ध सामिग्री भी विशेष महत्व रखती है । पुराने मन्दिर, शिलालेख, टीले और लोक कथायें तो इतिहास का श्रोत हैं ही । स्रोत

इन कारणों से प्रेरित होकर वैश्य जाति के इतिहास का संकलन किया गया है । वैश्य उपजातियों के शिरोमणि संगठनों का वर्णन जातीय इतिहास के साथ-साथ आधुनिक प्रवृत्तियों के अध्ययन के लिये भी लिखना आवश्यक था । वैश्यों के उपवर्गों की शीर्षस्थ सभाओं से उनके उपवर्ग तथा संस्थाओं का इतिहास माँगा गया था और जैसा का तैसा पुस्तक में यथा स्थान दे दिया गया है ।

शिरोमणि संस्थाओं के विवरण से एक बात स्पष्ट है, कि शिरोमणि सभाओं का उद्भाव १८८५/९० के आस-पास कांग्रेस तथा आर्य समाज की स्थापना के बाद हुआ । उनकी प्रगति ऊंची नीची होती रही । पहिला ज्वार १९१४ के गृह युद्ध के आस पास आया । फिर शनैः शनैः वे शान्त पड़ गयीं । दूसरा ज्वार १९३०/३२ में आया जो स्वराज्य आन्दोलन के तीव्रतर होने से मन्द हो गया । १९४२ के आन्दोलन में तो वह सर्वत्र तिरोहित हो गया । फिर स्वरक्षा हेतु यह संस्थान फिर जागृत करने पड़े । यह क्रम १० वर्ष चलता रहा । इसके बाद आर्थिक तेजी और औद्योगिक संस्कृति का सूत्रपात १९६० से हुआ और संस्थायें फिर तिरोहित हो गई । और जब साम्यवादी व्यवस्थाओं ने बनियों का रोजगार छीना, तब फिर सभायें जागृत हुईं । और अब वे प्रजातन्त्रीय व्यवस्था में अपने घटकों को सुरक्षित रखने और अधिक संगठित होने को प्रयत्नशील हैं । अद्यतन लागू भारत का विधान जो वयस्क मताधिकार लाया है, उसका प्रयोग राजनीतिज्ञों ने वर्ग और जाति के संगठित वोटों की सौदाबाजी से सत्ता हथियाने में किया है । पार्टियों ने सत्ता प्राप्त करके अपनी समर्थक जातियों को प्रच्छन्न रूप में शिक्षा, नौकरियों और राज्याधिकृत व्यापार में सुविधाएं प्रचुरता से दी हैं । ब्राह्मण, हरिजन और मुसलमान ने मिलकर ३० वर्ष से राज्य की मशीन पर कब्जा किया हुआ है । अतः सब जातियां संगठित होने लगी हैं और समान नाम व इतिहास वाली उपजातियाँ जो भूतकाल में बटने में गौरव अनुभव करती थीं, एकत्रित होने लगी हैं । हम इसी युग में इस शताब्दी के नवें दशक में चल रहे हैं । समाज-विज्ञान का यह करिश्मा दृष्टव्य है ।

[१] विषय प्रारम्भ

भारतीय समाज के क्रमिक संगठन

हमारे देश में प्रायः यह विश्वास और निष्ठा चली आती है कि वर्ण व्यवस्था स्वयं ईश्वर द्वारा सृष्टि के प्रारम्भ में निर्मित की गई थी । और इस सन्दर्भ में यजुर्वेद के पुरुष सूक्त में आये अध्याय ३१ के ११ वें मंत्र का उद्धरण दिया जाता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में पुरुष अर्थात परमात्मा के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, हृदय या जंघा से वैश्य और पैरों से शूद्र प्रगट हुये । परन्तु हमारी मान्यता ऐसी नहीं है । संगठना की मनुष्य जाति को शनैः शनैः आवश्यकता हुई । यह प्रक्रिया धीरे-धीरे आवश्यकतानुसार हुई । और न ही हम इस मत से सहमत हैं कि आर्यों के इस देश में फैलाव के बाद ही वर्णादि बने । हाँ वेदों में वर्णन अवश्य है ।

१·०१ वैराज्य की सुखद स्थिति--

आदि की अमैथुनी सृष्टि में कुछेक स्त्री-पुरुष तो मुक्ति का सुख भोग कर लौटे हुये थे, पर बहु-संख्यक अपने पूर्व कल्प के शेष-कर्मों के प्रभाव से उत्पन्न हुये थे । इनमें परस्पर रक्त संबन्ध न होने से ममता मोह नहीं था । उनकी प्रवृत्ति भी सात्विक थी । प्रकृति-माता स्वयं उनके लिये कन्द-मूल-फल उपस्थित कर देती थी । वृक्षों से फल बिना किसी परिश्रम के प्राप्त होते थे जो उस सीमित जन संख्या के लिये पर्याप्त थे । भारतीय दर्शन ने चीनी दार्शनिक (Mo Tza.) की तरह यह नहीं कहा कि आदि सृष्टि में मनुष्य पापी था । न ही इस यहूदी मान्यता में दार्शनिक सत्य है कि अजीर के उस वृक्ष से, जो अदन में स्थित था, फल खा लेने पर ईश्वर ने आदम को पृथ्वी पर ढकेल दिया और तब से आज तक मनुष्य जाति ईश्वर की उस अनुज्ञा का उल्लंघन करने के पाप का फल भोगती आ रही है । यह प्रकृति और इसके नाना पदार्थ तो स्वयं प्रभु ने इन मनुष्यों और जीव जन्तुओं के उपभोग के लिये उसे पैदा करने के पहिले ही प्रस्तुत कर दिये थे । पर चूंकि वे बिना श्रम के मिलते थे और लोगों में रक्त सम्बन्ध के प्रभाव से उत्पन्न ममता का मोह नहीं था, अतः हरेक अपने उपभोग योग्य वस्तु ही ले लेता था, संग्रह की आवश्यकता नहीं थी । अतः मनुष्य अतिक्रमण नहीं करता था । मनुष्य समाज की यह सुखद स्थिति थी । पाप और भय नहीं था । मनुष्य में बुद्धि थी और वह दूसरों की आवश्यकतायें भी समझता था । उस समय किसी नियन्त्रण की भी आवश्यकता न थी । आदि में सा सम्पर्क राजा के बिना केवल धर्म से ही प्रतिबन्धित थे । महाभारत में इसका पूर्ण संकेत है ।

न वै राज्यं न राजाऽऽसीन्न च दण्डो न दाण्डिकः ।
धर्मणैव प्रजाः सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम् ॥५॥
पाल्यमानास्तथान्योन्य नरा धर्मेण भारत ।
अयं परमुपाजग्मुस्ततस्तान् मोह आविशत् ॥६॥

पहले न कोई राजा था न राज्य, न दण्ड था न दण्ड देने वाला। समस्त प्रजा धर्म द्वारा ही एक दूसरे की रक्षा करती थी। कालान्तर में इस परस्पर के संरक्षण में कष्ट अनुभव होने लगा। तब सब ओर मोह छा गया। उस उल्टे परिवर्तन का वर्णन आगे के श्लोक १७ से २० तक में उपलब्ध है। उनका अर्थ यों है :—

(अकुश न होने से)—तब मनुष्यों में कर्तव्याकर्त्तव्य का भाव नष्ट हो गया। मनुष्य लोभ के आधीन हो गये। जो वस्तु उनको प्राप्त न थी, उसे पाने का यत्न करने लगे। इस काम के कारण उनमें राग उत्पन्न हुआ। तब उन्होंने गम्यागम्य, भक्ष्याभक्ष्य, दोषादोष, कुछ भी न छोड़ा।"

यही परिवर्तन की पृष्ठभूमि है। तब चिन्तकों ने सोचा कि क्या यह सब ऐसा ही चलेगा ? फलत: क्रांति हुई। इस अराजक स्थिति में उक्त दोष आरम्भ में ही पैदा हुये थे। आगे श्लोक २८ से ३० तक में यह कहा गया है कि इस अवस्था को देख धर्म, अर्थ काम को अनुबन्धित करने के लिये त्रिवर्ग वाला नीति शास्त्र परमात्मा की आज्ञा से ऋषियों ने रचा।

मनु की यह साधारण प्रतिज्ञा अथर्ववेद के अध्याय ८ सूक्त १० के १३ मंत्रों में वर्णित इस क्रान्ति के ८ चरणों में हुये वर्णनानुसार है।

विराड्वा इदमग्र आसीत्तस्या जाताया:
सर्व मविभेदियमेवेद भविष्यतीति ।
सोदक्रामत्सा गार्हपत्ये न्यक्रामत् ।। गृहमेधी गृहपतिर्भवति य एवं वेद ।।
सोदक्रामत्साहवनीये न्यक्रामत् ।। यन्त्यस्य देवा देवहूतं प्रिया देवानाम् भवति य एवं वेद ।।
सोदक्रामत्सा दक्षिणाग्नौ न्यक्रामत् ।
यज्ञर्तो दक्षिणीयो वासतेयो भवति य एवं वेद ।।
सोदक्रामत्सा सभायां न्यक्रामत् ।।
यन्त्यस्य सभां सभ्यो भवति य एवं वेद ।।
सोदक्रामत्सा समितौ न्यक्रामत् ।।
यन्त्यस्य समितिं सामित्यो भवति य एवं वेद ।।
सोदक्रामत्सा मन्त्रणे न्यक्रामत् ।।
यन्त्यस्यामन्त्रणमामन्त्रणीयो भवति य एवं वेद ।।

इस पद्धति की एक विशेषता यह है कि हर क्रान्ति पर समाज आगे बढ़ता है। पर उस पद्धति में से ही उसका विरोधी गुण प्रगट होता है। थोड़े विरोध के बाद प्रथम पद्धति के श्रेष्ठांश दूसरी पद्धति से समझौता कर लेते हैं और एक माध्यम मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इसके लिये 'उत्क्रामत,' 'निक्रामत' तथा 'य एवं वेद' शब्द प्रयुक्त हुये हैं। हीगल के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद में इनके समानार्थक शब्द है Thesis, Anti-thesis और Synthesis. तत्पर्य यह है कि हर क्रांति के बाद क्रांति-पूर्व की प्रथा व पद्धति के अंश सुरक्षित रहते हैं यद्यपि बोल बाला उसकी विरोधी पद्धति का रहता है। यही बात समाज की क्रमश: गृहमेधी यज्ञीय, वर्णपरक, सभा, समिति और आमन्त्रण-पद्धति परक संगठनों पर लागू है।

जो पहिला मंत्र है—उसमें पहली क्रांति की पृष्ठभूमि का वर्णन है। पहिले वैराज्य था। जब जनसंख्या बढ़ी तो उनमें कतिपय जन मत-स्यन्याय की दुहाई देने लगे कि देखो समुद्र में बड़ी मछली छोटी को उदरस्थ कर लेती है। अस्तु बलवान को तुम्हारे श्रम से संचित भोगों को ग्रहण करने का अधिकार है। इस वैराज्य की स्थिति से बचने के लिये नियन्त्रण की आवश्यकता समझी गई। अथर्ववेद में यही चिन्ता व्यक्त की गई है। समाज ने सोचा कि अब क्या होगा ? अगले मंत्र में उत्तर दिया गया है।

१·०२ गृहमेधी

बस प्रथम क्रांति के फलस्वरूप गृह, गृहपति और गृहस्थी अर्थात परिवार की प्रथा का श्रीगणेश हुआ। यह निश्चय किया गया कि एक गृह होगा, उसमें उसकी स्त्री एवं सन्तान होंगे और वे सब गृहपति की सम्पत्ति समझे जायेंगे और उनका वह पति होगा। इस गृहस्थी का आधार छीना झपटी नहीं था, वरन स्त्री पुरुष का प्रेम था। उन सबमें रक्तैक्यता बनी। एक परिवार में पीढ़ी से दर पीढ़ी सैकड़ों सदस्य हो जाते थे। पर वे सब गृहपति के नियन्त्रण में रहते थे। उसकी आज्ञा ही उस कबीले का नियम और कानून थे। विश्व में पहिला अनुशासन पति का पत्नी पर ही स्थापित हुआ था।

भगस्ते हस्तमग्रहीत सविता हस्तमग्रहीत् ।
पत्नी त्वमसि धर्मणाह गृहपतिस्त्व ।।

(अथर्ववेद १४/१/५१)

(ऐ वरानने ! मैं तेरे ऐश्वर्य युक्त हाथ को ग्रहण कर चुका हूं। तू मेरी धर्म पत्नी हुई। मैं तेरा पति हूं।)

१.०१.०१ गृहपति के कर्त्तव्य और अधिकार

स्त्री में गर्भाधान करने वाले के लिये संस्कृत वाङ्मय में पति शब्द प्रयुक्त हुआ है। स्वामी और मालिक शब्द भी लोक में प्रचलित हैं। ग्रीक भाषा में (Posis) पोसिस तथा लिथुनियन भाषा में पतीस (Patis) शब्द प्रसिद्ध है। भर्ता शब्द भी कहीं कहीं आया है, जिसका अर्थ भी पालनकर्त्ता है। कर्त्तव्य से ही अधिकार का जन्म होता है। गृहपति गृह की रक्षा, भरण और सम्पादन करता है। ये स्वयं स्वीकृत कर्त्तव्य हैं।

उपहूता भूरिधना: सखाय: स्वादुसंमुद: ।
अक्षुध्या अतृष्या स्त गृहा मास्मद बिभतिन ।।

(अथर्व वेद ७/६०/४)

(आओ प्रियजनो! मैं तुम्हें बुला रहा हूं। मेरी छाया में तुम धन-धान्य पूर्ण हो। परस्पर मैत्री भाव से रहो। घर में अपार समृद्धि भरी पड़ी है। कभी वे दिन नहीं आयेंगे जब तुम्हें भूख प्यास से दुख में दिन काटने पड़ेंगे।)

इन कर्त्तव्यों को जब गृहपति ने अन्जाम दिया तो उसे सब सदस्यों पर कुछ अधिकार प्राप्त हुये। सर्व प्रथम अधिकार यह कि वे उसकी आज्ञा और अनुशासन में रहेंगे।

अनुव्रत: पितु: पुत्रो मात्राभवतु संमना: ।
जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम् ।।

पुत्र पिता के कहे में चले और उस संस्कृति का अनुव्रती हो, जो पिता ने स्थापित की है। वह माता के मनोमथानुसार हो। पत्नी सदा मधुमय वचन बोले।

उक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि गृह ही बढ़कर परिवार में बदल जाता है। और सारे परिवार की व्यवस्था निम्न प्रकार अनुबन्धित है :—

समानी प्रपा सह वो अन्न भागः, समाने योक्त्रे सहवोयुनज्मि ।
सम्यञ्चो अग्निं सपर्यतारा. नाभिमिवाभितः ।
(अथर्व १-३/१६)

(परिवार में सब साथ खाते हैं साथ पीते हैं, साथ यज्ञ करते हैं। जैसे रथ चक्र की नाभि में अरे पिरोये हैं, ऐसे ही जो परिवार में ज्येष्ठ है, उसके अनुशासन में सब रहते हैं।)

इस अनुशासन से लाभान्वित और आश्वस्त होकर सब परिवारी जन गृह पति का आज्ञा और दण्ड देने का अधिकार मानते हैं। यह स्वभाविक कृतज्ञता है। योरुप की स्कैन्डेनेविन्यन प्रभृति नस्लों में वर-गिल्ड की प्रथा है कि यदि परिवार के मुखिया को कोई मार डाले, तो उसके पांच पीढ़ी तक के उत्तराधिकारियों का अधिकार है कि वह बधिक से उप मृत्यु का बदला ले। परिवार का विस्तार बाद में भारतवर्ष में इस आधार-शिला पर किया गया कि उस गृहपति के उपकृत व्यक्ति २१ पीढ़ी तक समान-पिंडक, समानोदक, एवं गोत्रज बनकर मृत व्यक्ति को पिण्ड (चावल के मोदक) और जल (तर्पण) प्रतिवर्ष करते रहें। इसी उपलक्ष्य में वे गृहपति की छोडी हुई सम्पत्ति के उत्तराधिकारी होते आये हैं। गृहपति में राजा या शासक जैसी परिणति का यह प्रथक उत्क्रमण है।

१.०२.०२ हिन्दू विवाह का स्थायित्व और सम्पत्ति का उपोदघात्

विवाहित होने पर सर्व प्रथम घिरे हुए स्थान की आवश्यकता हुई जहां प्रेम का आदान प्रदान हो सके। उसी को घर कहा गया।

इहैमाबिन्द्र संनुद चक्रवाकेव दम्पती।
प्रजयैनो स्वस्तको विश्वमायुर्व्याश्वुताम्।
(अथर्व वेद १४/२/६४)

तुम दोनों पति-पत्नि चकवा-चकवी की तरह प्रेम-सूत्र में आबद्ध हो। तुम्हें संतान प्राप्त हो। सुन्दर घर में रहते हुये गृहस्थाश्रम को सारी आयु का उपभोग करते रहो।

यहां जो आयुपर्यन्त शब्द आया है वहीं से हिन्दुओं में विवाह के कभी न टूटने की परम्परा है। अतएव हिन्दू कानून में भी विवाह सदा-सर्वदा का सम्बन्ध था। उसमें न मिहर का रिवाज था, न तलाक का प्राविधान। जबकि मुस्लिम विधि में विवाह विशुद्ध रूप से एक नागरिक संविदा है। यह राय इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रथम भारतीय जज, जस्टिस महमूद ने अब्दुल कादिर बनाम सलीमा के प्रसिद्ध वाद में प्रकट की थी। जिस तरह जीवित एवं निर्जीव वस्तुओं के खरीदने और बेचने के लिये संविदा होता है और उसमें प्रतिफल जरूरी है, उसी तरह से बिना प्रतिफल के मुस्लिम विवाह सम्पन्न नहीं हो सकता है। प्रतिफल का नाम मेहर है। मुता-विवाह में तो क्षणिक सेवाओं के लिए भी प्रतिफल का प्राविधान है। मुता विवाह एक तरह की वेश्या-वृत्ति है जिसे धनी व्यक्ति ही कर सकते हैं। इस विवाह पद्धति में चार पत्नियों की सीमा तक का उल्लंघन किया जा सकता है। मुस्लिम विवाह विधि में बहु-पत्नीवाद की खुली छूट है।

हिन्दू कोड बिल द्वारा तलाक का अधिकार दिया जाना मुस्लिम प्रभाव ही कहा जायेगा, चाहे अद्यतन वह सीमित ही हो।

गृह के निर्माण हो जाने पर गृह में और वस्तुयें चाहियें। प्रकृति से गृहपति पदार्थ चुनता है और उनमें अपने श्रम का सम्बन्ध करके उन्हें प्राप्त करता है। वे न केवल उसके स्वयं के बल्कि उसके परिवार के लिये यथेष्ट मात्रा में होने चाहिये।

इहैव ध्रुवा प्रतिष्ठशालेअश्वावती गोमती सूनृतावती।
ऊर्जस्वती घृतवती पयस्य त्युच्छ्रयस्व महते सौभगाय ॥
(अथर्व वेद ३/१२/२)

(हे मेरी शाला। तू जहां बनी है, चिर काल तक स्थिर हो कर खड़ी रह। तेरे अन्दर घोड़े हों, गाय हों, तुझमें रहने वाले सन्तुष्ट होकर रहते हुये सदा परस्पर मधुर बाणी बोलें। तू अन्न-दूध-घृत से भरपूर हो और हमारी महान सुख समृद्धि के लिये सदा ऊंची खड़ी रहे।)

गृहपति परिवार के लिये यह भोग साधन इकट्ठे करता है। धर्म और गृह्य सूत्रों में पितृों की कल्पना करके गृहपति के मन में यह भाव भर दिया गया है कि इस जन्म के बाद वह पितृयान से जा कर दक्षिण पथ में सूर्य के उत्तरायण होने तक बन्द रहेगा और परिवार की चौथी पीढ़ी में सन्तान होने तक जन्म भी नहीं लेगा, घूमता रहेगा। उस स्थिति में क्षुधा और प्यास के शमन के लिये उसे उसके पुत्र-पौत्रादि श्राद्ध-तर्पण द्वारा अन्न-जल देंगे, तभी वह तृप्त हो सकेगा। ताकि सन्तानें श्राद्ध-तर्पण करती रहें, उसे धन-सम्पत्ति इकट्ठे करके सन्तान को सौंप जाना चाहिये। यही धन श्राद्ध-तर्पण में उसके काम जायेगा। धनार्जन और धनसंचय में यह दूरगामी स्वार्थ भी निहित है।

१.०२.०३ परिवार का संगठन और विस्तार

१- नाते-रिश्तों द्वारा—परिवार में विभिन्न अगों के लिये जो सम्बोधन के शब्द बनाये गये, वे परिवार के संगठन पर प्रकाश डालते हैं। कुछ रिश्ते पिता के सम्बन्धों के माध्यम से चलते हैं, कुछ माता के से। आर्य संस्कृति पिता को तथा द्राविण-संस्कृति माता को प्रमुखता देती थी।

२- वंशानुक्रम प्रणाली—में रिश्ता नाती और बाबा का था। जनक के लिये पिता या पितर या फादर शब्द संस्कृत एवं योरुपीय भाषाओं में भी है। पिता से ही पितामह और प्रपितामह शब्द बने हैं।

३- विभाग द्वारा—द्राविड़ और मंगोल संस्कृति के सम्पर्क से स्वकीय से परिवार की परिधि वंश और सम्बन्धियों तक बढ़ी। उसने माता-पिता के भाई बहिनों तक परिवार को फैला दिया।

कालान्तर में स्वकीय से उतर कर क्रमश: परिवार तीन पीढ़ी तक अविभक्त पिण्डक, उपरान्त ७ तक विभक्त पिण्डक, फिर १० पीढ़ी तक समानोदक और १३ पीढ़ी तक सगोत्र और २१ पीढ़ी तक सगोत्रज आदि प्रथाओं के अन्तर्गत विस्तृत कर दिया गया।

४- पुरखाओं का दैवीय-करण—माता-पिता के अनगिनित उपकारों से पला बालक बड़ा होकर उनका बहुत अनुगृहीत था। आर्य संस्कृति में आवश्यक था कि वह इन जीवित पित्रों की सेवा सुश्रूषा करे। परन्तु मंगोल और द्राविड़ संस्कृति अधिक परिवार परस्त थी। उन्होंने कल्पना की कि मृत पितरों को सदा स्मरण करते हुये उनका आह्वान करना चाहिये। पुरखों की पूजा कई रूपों में प्रगट हुई। उनकी मान्यता थी कि मरणोपरान्त पुरुष तुरन्त अन्यत्र पैदा न हो कर कुछ वर्षों तक भूत बने घूमते रहते हैं। वे देव-तुल्य होते हैं और वरदानों तथा श्रापों की प्रभावशाली वर्षा कर सकते हैं। अस्तु यह रिवाज पड़ा कि हर व्यक्ति अपने पुरखों को पिण्ड दान दे ताकि वे भूखे न रहें। भाद्रपक्ष की १३ वीं तिथि को उनका श्राद्ध कर के कौओं तथा ब्राह्मणों को भोजन कराया जाये, ताकि वह अन्न तीन पीढ़ी के पुरखों की आत्माओं तक पहुंच जाये। पितृामावस्या के दिन सारे दिवगंत पुरखाओं के नाम से अन्न दिया जाता है। योरुप के देशों में एक निश्चित तिथि संभवत: १९ सितम्बर को (All Souls Day) मनाते हैं, जो वार्षिक श्राद्ध के समानार्थक ही है। अतः तीन पीढ़ी से ऊपर तक के भाई-बन्धुओं की सब संतानें मिल कर यह उत्सव मनाती हैं।

श्राद्ध और तर्पण का ऐसा प्राबल्य है कि हिन्दुओं के उत्तराधिकार के नियम इसी बात पर आश्रित हैं कि दिवगत का श्राद्ध तर्पण करने के अधिकार किन किन को है। एक बात बड़ी मनोरंजक है। तीन पीढ़ी तक के पितरों को असुरमुख और उसके ऊपर वालों को नन्दी-मुख पितृ कहते हैं। भाद्रमावस्या को इन्हीं नन्दी मुखा पितरों का आह्वान होता है। तुरन्त मृत व्यक्ति को तीसरे दिन शुद्धि करते हैं और १३ वें दिन तेरहवीं का कृत्य होता है। बंगाल में उत्तराधिकारी का हक, इन कृत्यों के आधार पर ही होता है। मृत्यु समय आग लगाने का उपला जो शव पर रखता है, उसी का मृत की सम्पत्ति पर अधिकार होता है।

इसी प्रकार सूतक की प्रणाली है। ७ पीढ़ियों तक के वंशओं में किसी के मरने पर सबको १० दिन तक अपवित्र माना जाता है। गृह्य सूत्र १० पीढ़ी तक के वंशओं का सूतक सौ दिनों का (जिनके बीच में रात्रि आ गई हो) मानते हैं और उन्हें समानोदक या सोदक कहते हैं। अर्थात वे स्नान (जल) के साथी हैं। मनु तो मृत के गोत्र के सभी व्यक्तियों द्वारा सो दिन के इस सूतक को मानते हैं। याज्ञवल्क्य सूतक की लिस्ट में दामाद को भी ले लेते हैं। इसका तात्पर्य है कि मृत व्यक्ति की आत्मा मोह वश लौट-लौट कर इन सम्बन्धियों के शरीर से जाकर चिपट सकती है। इसे तर्पण कहते हैं। यह लोग मृत आत्मा को जल अर्पण करते हैं।

पितृ पक्ष के समाप्त होने के एक दिन बाद नाना को श्राद्ध देने का भी नियम है। इस प्रकार परिवार की परिधि सम्बन्धियों तक भी फैला दी गई है। पुरखों की पूजा-पद्धति ने हिन्दुओं के परिवारों को दृढ़ बनाये रक्खा है। तीन पीढ़ी तक के पुरखे तो संसाराभिमुख होते हैं। चौथी के सूर्य लोक चले जाते हैं। इसीलिये जब किसी के नाती का पुत्र होता है, तो वह ब्राह्मण को सोने की नसेनी देता है जिस पर चढ़कर वह स्वर्ग को जा सकेगा। उस व्यक्ति का श्राद्ध का अधिकार उसी दिन से कायम हो जाता है।

५- परिवार विस्तार का तृतीय श्रोत अर्थात नाम रखने की प्रक्रिया—कालान्तर की उपनिषदों में विख्यात नाम तो वे ही व्यक्ति वाचक रहे। पर नई पीढ़ी का नाम करण पहले तो पिता के, फिर बाबा के और मध्य काल में तो पर-बाबा तक के नाम को व्यक्ति के नामों के साथ जोड़ कर रखना प्रारम्भ हुआ। यह पित्रों को अमर करने का प्रयास था। और दूसरा अभिप्राय था परिवार का विस्तार और स्थायित्व।

१–चौथी पीढ़ी अथवा अधिक का उल्लेख करने वाले नाम :—

जनश्रुति पोत्रायण (छान्दोग्य उपनिषद ४/१/१)=जनश्रुति के वंश का नाती (स्वपरिचय)।

२– नारायण के पुत्र भारवी का नाती दण्ड–कवि।

३– कुबेर के नाती का पुत्र बाण (स्वपरिचय)

४– उदम्बरा परिवार में नीलकण्ठ के पुत्र भट्टगोपाल का नाती भवभूति (महावीर चरित्र में स्वपरिचय)

५– गर्ग वंशीयदीप्त बालाकि (बृहद्‌आरण्यक उपनिषद में)

६- सामान्य उत्तराधिकार—पित्रों की पूजा की प्रणाली और विस्तृत परिवार बनाये रखने के लिए परिवार को सम्पत्ति के उत्तराधिकारी से जोड़ दिया गया ताकि यह प्रथा अमर हो जाये। भारतवर्ष में बौद्धायन ने ५०० ईसा पूर्व अपने धर्म–सूत्र (१/२/६) में दो इकाइयों की बात कही थी। वह सात पीढ़ी तक की एकसूत्रता मानता है। स्वयं, उसके तीन पीढ़ी ऊपर तथा तीन पीढ़ी नीचे और उनको सपिण्ड कहता है। और स्वयं उसका पिता और उसका पुत्र सम्मिलित परिवार में विरासत में तीन पीढ़ियां ऊपर तक में छोड़ी सम्पत्ति के अधिकारी बन जाते हैं। तदनन्तर तीन पीढ़ी तक के व्यक्ति अविभक्त सपिण्डक कहे गये हैं जिन्हें भी सम्पत्ति पर अधिकार मिलना सम्भव था। जब तक किसी व्यक्ति का कोई सगोत्रीय या सगोत्रज विद्मान है, कोई संपत्ति राज्य को प्राप्त नहीं हो सकती थी।

इस २१ पीढ़ी की लिस्ट में भी यदि कोई वंशज नहीं है तो फिर वह सम्पत्ति, उन्हें छोड़ने वाले पिता के या माता के रक्त से मिले पुरुष सम्बन्धी उत्तराधिकार पा जायेंगे। अर्थात स्वय के फुफेरे या मौसेरे भाई अथवा उसके पिता के ममेरे, फुफेरे या मौसेरे भाई या माता के ममेरे, फुफेरे या मौसेरे भाई।

एक और तरकीब जो परिवार के स्थिरीकरण हेतु काम में लाई गई है, वह कन्या को उत्तराधिकार से वंचित करके अर्थात उसका रिक्थ हर के उसे दूसरे कुल में समर्पित करने के विधान के रूप में आई है।

आर्य परम्परा में तो दान-वत कन्या को परिवार, गोत्र, गोत्रज से दूर देना ही श्रेयस्कर रहा है। इसीलिये उसे पिता की सम्पत्ति में अधिकार नहीं दिया गया था। ऋग्वेद २/११/२ में पुत्र सम्पत्ति का अधिकारी है, पुत्री नहीं। इसीलिये पुत्री के जन्म पर प्रसन्नता नहीं होती। पर भाई रहित कन्या को पुत्रिका कह के उसका तथा उसके पुत्र का उसके पिता की सम्पत्ति पर अधिकार तथा धेवते को नाना का पिण्ड तर्पण करके पितृपूजा का अधिकार माना गया है।

भाई वाली पुत्री को सम्पत्ति में उत्तराधिकारी न मानने की कमी उसे सदा भेंट दिला कर पूरी की गई है। भ्रातृ द्वितीया पर भाई सौमंगली बहिन के घर स्वयं भेंट ले जाता था। बहिनों को श्राद्ध की दावत में भी बुलाया जाता था।

आर्यों अपनी ईजाद की हुई इस परिवार-गठन की क्रांति को सारे विश्व में ले गये। इसकी विश्व व्यापी सत्ता से परिवार प्रणाली की सर्वोत्कृष्टता भी दृष्टिगत होती है और आर्य-राष्ट्र का विस्तार भी।

सम्पत्ति पर परिवार के अधिकार और सम्पत्ति के व्यक्तिकरण तथा परिवार के मुखिया का स्वय स्वीकृत शासन आदि के रूप में शासन पद्धति का श्रीगणेश आर्य परम्परा की देन थी। वह इतनी स्वभाविक थी कि सारे सभ्य संसार ने उसे स्वीकार कर लिया। यूरेशिया में उसका विकास देश-देश में, राष्ट्र-राष्ट्र में, ग्राम-ग्राम में, समुद्र तथा पर्वत दोनों से वेष्टित भूभागों में हुआ। इसमें सहस्त्रों वर्षों का समय लगा, और यह एक स्वयं स्वीकृत प्रथा बन के रह गई।

१.०२.०४ स्व-प्रयत्न से अर्जित सम्पत्ति के कुछ अंश पर भी परिवार का अधिकार—

प्रारम्भिक कर्म-काण्ड और पितृ पूजा से भरे समाज में जब नैतिक मूल्यों का विकास हुआ, तब उत्तराधिकारादि के नियमों में परिवर्तन हुआ। धीरे-धीरे पारस्परिक सुरक्षा का भार लेने वाले अन्य राज्य जैसे संगठन बनने लगे। अतः पारिवारिक सम्पत्ति से पृथक निजी सम्पत्ति का भाव पुनः उठ खड़ा हुआ। अपने विद्यादि गुणों से व्यक्ति ने जो बनाया है, उसका प्रयोग वह (दान, बिक्री) अपनी मर्जी से कर सके, ऐसी व्यवस्था की मांग की गई। हाँ उसके कुछ भाग पर थोड़ा अकुश परिवार का माना ही गया। जब कृषि सम्पदा से पृथक अन्य सम्पदा का उत्पादन सम्भव हुआ तब इस व्यक्तिगत मनोवृत्ति का पुनर्जन्म हुआ। उद्योग, कला, व्यापार से उपार्जित इस धन-प्राचुर्य से पूर्व ही भारत में निज-प्रयत्न वाली सम्पदा पर भी परिवार का अधिकार माना गया था।

१.०२.०५ परिवार प्रणाली

वर्णाश्रम व्यवस्था में व्यक्तिगत जीवन को ४ आश्रमों में बांटा गया है। गृहस्थ आश्रम सब सामाजिक कार्यों तथा व्यवस्था का प्रश्रय है, अन्य आश्रम उसी पर आश्रित हैं। हमारी संस्कृति ने गृहस्थ आश्रम को परिवार से बांध दिया है। हम इसी में पैदा हुये, पले तथा बढ़े हैं, सो हमें इस प्रणाली की विशेषता यों ही नहीं दीखती है, वरना यह है शाश्वत व्यवस्था जिसने गये गुजरे पराभव और पराधीनता तथा परवशता के युग में हमारे संस्कार तथा हमारी संस्कृति के ताने बाने को चलाये रखा है। लोक में पुत्र नाम अमर रखता है। पुत्र ही विरासत का उत्तराधिकारी होता है। पुत्र में मानो अपना हृदय पुनः उत्पन्न होता है। स्त्री और पुत्र के चारों ओर परिवार पूरा जाता है। चाचा, ताऊ, बुआ, फूफा, दादा, दादी, नानी मातुल, साले, साढ़ू, बहनोई, श्वसुर, सास, मौसा आदि पारिभाषिक शब्द केवल संस्कृत में ही पाये जाते हैं, क्योंकि अपने इस रूप में परिवार भारतवर्ष में ही पनपता रहा है। पश्चिमी भाषाओं में तो इन शब्दों के अनुवाद प्राप्त हैं ही नहीं। वहां Uncle, Aunt, Grand तथा In Law शब्दों में सब रिश्ते लाये जाते हैं।

परिवार में आजीवन मधुरता का आदान प्रदान चलता है। मनुस्मृति अध्याय ८ में श्लोक १८१ से १८६ तक एक रूपक इस प्रकार बांधा गया है :—

आचार्य ब्रह्मलोक का स्वामी है। पिता प्रजापति लोक का, ऋत्विज देवलोक का, भगिनी व पुत्रवधू अप्सरा लोक का, माँ व मामा भूलो-' के, बालक आकाश लोक के स्वामी हैं। भ्राता पिता तुल्य, भार्या व पुत्र स्वशरीर के तुल्य, दास स्वर्ग छाया के तुल्य तथा कन्या परम कृपा की पात्र है। पुत्र वधू देववधू के तुल्य, बान्धव विश्वदेवा के समान और साले काम सुधादायक तथा शान्तिदाता हैं।" परिवार शान्ति का स्थान रहा है। यह मनुष्य को त्यागमय बनाने के प्रथम सोपान है। यहां सब अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करते हैं पर फल यथा आवश्यकता, संचित कमाई से पाते हैं। परिवार एक प्राकृतिक सहकारी सघ है। सामाजिक प्राणी होने के प्रथम पाठ व्यक्ति परिवार में ही पढ़ता है। परिवार भारतवर्ष की विशिष्ट वस्तु है।

चाणक्य शतक के कुछ स्थल बड़ लुभावने हैं :—

यदि रामा यदि च रमा यदि तनयो: विनयधीगुण
तनये तनयोत्पत्ति: सुरवर नगरे किमाधिक्यं ?
आतिथ्य शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्न पानं।
साधो संगमुपासते सततं धन्या गृहस्थाश्रम्।

परिवार त्याग का शिक्षणालय है। यहां कम आय में गुजारा होता है। बेकारी भुखमरी से त्राण है। मरने पर भी कृतज्ञ सन्तान तर्पण करती है। परिवारों द्वारा ही हाथ की खेती सम्भव रही है। बच्चों की शिक्षा और पारिवारिक उद्योग कला की शिक्षा परिवारों द्वारा सहज ही में होती आई है। परिवार में आनन्द है मनोरंजन है। परिवार में धार्मिक कृत्य होते हैं। परिवार सरक्षक है; क्योंकि पुत्र के रूप में बुढ़ापे की रोटी निश्चित है। परिवार स्वर्ग है।

१.०२.०६ साम्यवादी संस्कृति द्वारा परिवार का हनन

परन्तुहा हन्त! अब परिवार को जान बूझ कर समाप्त किया जा रहा है। बेबेल ने साम्यवाद की परिभाषा करते हुए लिखा था।—

It is in reality an entire world philosophy, in religion it is altruism, in the state a Demoratic Republic, in industry, a popular collectivism, in metphysics, materialism, in the home, an almost loosening of family ties and the marriage bond.

साम्यवाद द्वारा एक ऐसे समाज का निर्माण किया जा रहा है जिसमें विवाह पवित्र बन्धन न होकर केवल रति-क्रिया-लाभ के अन्तर्गत किया जाने वाला क्षणिक ठेका (Contract) मात्र है। एक ऐसे प्राणी का सृजन किया जा रहा जो कह सके Born in Hospital, brought up in Nursury, educated in College, living in Hostel, how am I concerned with family ?

[अस्पताल में पैदा हुआ, नर्सरी में धाय के दूध पर पला, पब्लिक स्कूल व कालिज में पढ़ा, होस्टल में रहा व्यक्ति मैं परिवार को क्या जानूं ?] हर्फ पढ़ा टाईप का, पानी पिया पाईप का। दूध पिया डब्बा से, काम क्या अब्बा से ? बेइन्तहाई तेजी की अर्थ-व्यवस्था उत्पन्न कर दी गई है, जिसमें आतिथ्य-सत्कार तथा पारिवारिक त्याग की आहुति दे दी गई है। लाभ की कसोटी वाले युग में यदि कृश गाय चारा बचाने के लिये काटी जाने का तक मान्य है, तो वृद्ध व कृश अनुत्पादक माता पिता को बुढ़ापे में अपने ऐश में कमी डालकर सहायता देना भी मूर्खता करार दी जाने लगी है। व्यावसायिक क्रांति, नौकरियों का केन्द्रीयकरण, शहरों की घनी बस्तियां और आंगन विहीन दो-दो कमरे के छोटे-छोटे मकान, पारिवारिक नियन्त्रण का विरोध, कैन्टीनों व होटलों का जाल जहां बिना घर गये ही सस्ता भोजन उपलब्ध है, पके-पकाये भोजन व बिस्कुट, स्त्रियों की जागृति और उनको घर छोड़ नौकरी के लिये घर से बाहर आने की प्रवृत्ति का प्रोत्साहन, स्त्रियों के मताधिकार, अविवाहित रहने की प्रवृत्ति, परिवार-नियोजन के नाम पर भ्रुण हत्या इत्यादि की कानूनी आज्ञा, वरण-स्वातन्त्रय, परिवार का छोटा होना, यौन नैतिकता के दोहरे माप-दण्ड, घर के बाहर सस्ते मनोरंजन की प्राप्ति, क्लब, सिनेमा, बाहरी स्त्रियों की सुलभ प्राप्ति. मिताक्षरा परिवार को समाप्ति, उत्तराधिकार के नये कानून, स्त्रीधन तथा अन्य सम्पत्ति की समानता, दायादि के अनधकारित्व की बात, मृत्यु-कर, योजनायें, रुपया लगाने की सुरक्षित निधियाँ, इनकम टैक्स के कानून, तलाक के कानून, दूर-दूर नौकरियां व तबादले, विदेश गमन—सब ही तो परिवार प्रथा को समाप्त करने पर तुले हुये हैं।

१.०३ समाज की दूसरी व्यवस्था (आह्वनीय)

एक रक्त-परक परिवार के सदस्यों की २१ पीढ़ी के बन्धु-बान्धवों की संख्या बहुत बढ़ गई। उनमें विभिन्न दार्शनिक मान्यतायें व पूजा पद्धतियां विकसित हुई। अतः परिवार का संगठन क्षीण पड़ गया। फिर कबीलों-कबीलों मे भोज्य पदार्थों के विनिमय और विभाजन को लेकर ईर्ष्या, द्वेष का प्रादुर्भाव होना स्वभाविक था। रक्तीय-मोह भी समाज में व्यक्तियों से अन्याय करवा ही देता था। तब समाज के चिन्तनशील व्यक्ति फिर एकत्रित हुये।

सोदक्रामत्साहवनीयेन्यक्रागत। यन्त्यस्य देवा
देवहूति प्रियो देवानाम् भवति य एवं वेद।

(अथर्व-८-१०-४-व-५)

अतः प्रजा (सा) में फिर क्रांति हुई और इस बार वह आह्वनीय अग्नि बन कर प्रकट हुई। तब तक अग्नि का आविष्कार अंगिरा ऋषि ने कर दिया था। प्रथा यह डाली गई कि कबीले के व्यक्ति जो कमा कर लायें, उसे अग्नि के चारों ओर बैठकर समान भाग में बांट कर खायें।

प्रसिद्ध साम्यवादी नेता अमृत श्री पाद डांगे ने स्वलिखित भारतवर्ष के इतिहास में मत प्रतिपादित किया है कि भारतवर्ष में यज्ञ सा म्यवादी पद्धति का वह रूप था जिसमें सब लोग स्व-सामर्थ्यानुसार कमा कर लाते थे, पर यज्ञ के सम्मुख बांट कर यथावश्यक भोग प्राप्त करते थे। उनका नारा था "इदन्नमम्" यह मेरा नहीं है। अग्नि हर बात की, हर व्रत की साक्षी होती थी। आह्वनीय वही अग्नि है। विशाल याज्ञिक कर्मकान्ड का प्रवर्तन हुआ और लोग पूजा भेद से परस्पर बंट गये।

१.०३.०१ प्रवर

इस क्रांति के फल स्वरूप जो संगठन रक्त परक था, अब गुरू या पूजा-पद्धति-परक हो गया। उसके लिए आर्य परम्परा में प्रयुक्त शब्द प्रवर' था। हर परिवार के मुखिया द्वारा एक विशिष्ट कर्म-काण्ड की प्रणाली अपना ली जाती थी। उस यज्ञ पूजा के समय, हर ग्रुप का प्रथम-पुरुष उस कर्म काण्ड के प्रस्तोता (मुख्य-गुरू) का नाम लेता था। वही नाम उन सब परिवारों का प्रवर अर्थात आध्यात्मिक-गोत्र हो जाता था। यह गुरू दस थे। अतः इस देश की आबादी दस प्रवरों में बंट गई। ब्राह्मणों ने अपने को उन्हीं दस का शिष्य माना। कालान्तर में पुरोहित का ही आध्यात्मिक प्रवर उसके विभिन्न वर्गीय यजमान अपना लेते थे। अतः आज जो प्रवर ब्राह्मणों के हैं वे ही क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र सभी के हैं-उदाहरणार्थ वशिष्ठ व बाल्मीकि प्रवर ब्राह्मण और भंगी दोनों के हैं। प्रवर रक्त परक न हो कर पूजा परक थे।

शांख्यायन ब्राह्मण ७४/१५ में जो कहा है कि

'ब्राह्मणो समाने गोत्रे बसेत्। यत् समाने गोत्रेऽन्नायं तस्योपात्यें।
[अर्थात ब्राह्मण अपने गोत्र वाले ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य के साथ निवास करें।] यहां गोत्र से अभिप्राय प्रवर का ही है।

किसी कुल के प्रवर ऋषि वे हैं जिन्होंने ऋग्वेद के सूक्त भी रचे थे, और अग्नि की स्तुति का यज्ञ किया है। यह प्रवर निश्चित हैं। किसी जन्मना जाति के प्रवर चार या पाँच से अधिक नहीं होते।

आपस्तम्ब सूत्र में इस पर लिखा है कि, 'एक वृणीते, द्वो वृणीते, त्रीणि वृणीते न चतुरो न पंचाति वृणीते"। अर्थात प्रवर में एक या दो या तीन ऋषियों का उच्चारण करें, चार या पांच या अधिक का न करें। और प्रवर का नाम समान होने पर उनमें परस्पर विवाह निषिद्ध था। समय के साथ आपस्तम्ब की बात टूटी। ऋषि-प्रवर, ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य भी होते थे, क्योंकि यह तो विद्वत्ता का प्रश्न था। मंत्र दृष्टा कुल बारह ऋषि हुये हैं। इनमें से दो क्षत्रिय (मनु व एल पुरूरवा) तथा तीन वैश्य (भलनन्दन, वत्स तथा संकलि) भी हैं।

१.०३.०२ गोत्र

गोत्र का अर्थ अपनी अद्भुत-भारत नामक पुस्तक के पृष्ठ १५५ पर श्री ए० एल० बाशम ने "गौसमूह" करके लिखा है। शब्द कल्पद्रुम में गोत्र का अर्थ है कि वह जिससे पूर्वजों का ज्ञान हो। अथर्ववेद में सर्व प्रथम इसका प्रयोग एक खेल के अर्थ में किया गया है अर्थात गोष्ठ

या गोशाला। पर छान्दोग्य उपनिषद में तथा बौद्ध व जैन साहित्य में इस शब्द का आधुनिक अर्थों में प्रचुर प्रयोग हुआ है।

इस गोत्र प्रणाली का सूत्रपात ब्रह्मा के ४ पुत्रों भृगु, अंगिरा, मरीचि और अत्रि से हुआ है। भृगु के कुल में जमदग्नि, अंगिरा के कुल में गौतम व भारद्वाज, मरीचि के कश्यप, वशिष्ठ, अगस्त्य और विश्वामित्र यह ७ गोत्र हो गये। आठवां गोत्र अत्रि का है। पाणिनी के समय तक अन्य कीतिमान पुरुषों के नाम भी जुड़ते गये और वे बीस हो गये। बाद में वे सहस्रों हो गये।

१.०३.०३ प्रवर के स्थान पर गोत्र शब्द के प्रयोग का प्रारंभ

पिछली रक्त परक सस्कृति को चलाये रखने के लिये स्मृतिकारों ने प्रवर के स्थान पर गोत्र शब्द चलाये रक्खा। इतिहासकार श्री रजनीकान्त शास्त्री ने भी लिखा है कि पुरोहितों के गोत्र-प्रवर को ही यजमान अपना गोत्र प्रवर मानें, ऐसा शास्त्र का मत है। उन्होंने लिखा है कि वंश परम्परा से प्रसिद्ध ब्राह्मण रूप आदि पुरुष का नाम गोत्र है। क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा वर्ण शंकरों के कोई गोत्र नहीं होते। अत इनके वे ही गोत्र बोले जाते हैं जो इनके पुरोहितों के होते हैं। हां उनके लौकिक-गोत्र बाद में बन गये जिनका आधार आख्यानों के पूर्वजों के उपनाम ही थे।

(आध्यात्मिक) गोत्रों की संख्या :-

(१) मूल गोत्राणि चत्वारि समुत्पन्नानि भारत।
अंगिराः कश्यपचैव वशिष्ठौ भृगुरेव च॥
(महाभारत शान्ति पर्व/अ० २९६)

पुरातन काल में अंगिरस, कश्यप, वशिष्ठ और भृगु यह चार ही गोत्र थे। इन्हीं से शिष्यों की संख्या बढ़ी। यहां भी गोत्र शब्द शिष्यत्व का सूचक है।

(२) कालान्तर में बौद्धायन स्मृति में गोत्र जनक ऋषि १+७=८ लिखे हैं। (बौद्धायन का समय ईसा पूर्व ६ठी शताब्दी है।)

(३) पुराणों के समय तक इनकी संख्या दस हो गयी थी।

ब्रह्मा के दस मानस पुत्र थे। भृगु, मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, मनु, आदि—दल, वशिष्ठ और पुलस्त्य। मनु स्मृति अध्याय १ श्लोक ६५ में यह क्रम फिर बदल गया है।

वहां दस प्रजापति माने हैं :— मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलस्त्य, पुलह क्रतु, प्रेतस, वशिष्ठ, भृगु व नारद। अब यह स्पष्ट है कि ४ वर्ण और ११०० जातियों के सब पुरुष ४ या ७ या ८ या १० व्यक्तियों की सन्तान नहीं हो सकते। यह केवल पुरोहितों के नाम हैं।

गोत्र जन्य संगठन आर्य संस्कृति में हजारों वर्षों तक चले। बाद में आर्य जन जब भारत के बाहर गये तो यह शैली भी साथ ले गये। आर्यों की जो टुकड़ियाँ बाहर चली गई थीं, उनमें भी स्वतन्त्र रूप से वेद के निर्देशन में इस संगठन शैली का विकास हुआ।

विभिन्न दार्शनिकों ने जब विशिष्ठ पूजा प्रणाली अपनाई और उनके शिष्यों ने उनके नाम पर जनता के सम्प्रदाय संगठित किये और उन्हीं में परस्पर विवाह प्रणाली को प्रारम्भ करके उनका विशिष्ट कर्म-काण्ड निर्मित किया तो मानो वह प्रवर प्रणाली की पुनर्स्थापना थी। यहूदी, मुसाई, ईसाई, मुहम्मदी, बहावी प्रभृति सम्प्रदायों का पूजा पद्धति पर आधारित संगठन जो भारतेतर देशों में हुआ है, वह इस मानवीय रुझान का द्योतक है।

भारतवर्ष के आर्यों में इसका उल्टा हुआ। एक प्रवर (आध्यात्मिक गोत्र) के लोगों ने परस्पर अर्थात उसी प्रवर गोत्र में कन्या को विवाह में देना निषिद्ध कर दिया ताकि प्रवरों का परस्पर तारतम्य बना रहे।

१.०३.०४ सगोत्र विवाह निषेध

भारतवर्ष में हिन्दुओं की द्विजातियों में निकट के संबन्ध वर्जित हैं। मुसलमानों में तो केवल मां का दूध ही बचाते हैं और चाचा, मामा, मौसा, फूफा के बच्चों में विवाह हो जाता है। कुछ वैश्यों में माता पिता, दादी और नानी का गोत्र बचा कर ही विवाह करते हैं। पर अधिकतर वैश्यों में पिता का गोत्र तथा माता की ५ पीढी ही बचाते हैं, जैसी कि मनुस्मृति में आज्ञा है। पर तो भी विवाह करते अपनी जाति ही में हैं—बाहर नहीं! विन्धाचल के दक्षिण में यह व्यवस्था नहीं है। केरल में बहिन की पहिली लडकी का विवाह उस व्यक्ति अर्थात मामा से होता है। गुजरात में मामा की पीढ़ी नहीं बचाते। सुभद्रा अर्जुन की फुफेरी बहिन थी। अतः वह कृष्ण की बहिन थी। पर विवाह हो गया। परन्तु यह अपवाद ही है।

सगोत्र विवाह निषेध के विशिष्ट कारण हैं—

(१) मैकलेनन ने इसका कारण कन्याओं की कमी बताया है।

(२) मार्गन के अनुसार इसका उद्देश्य जन-जन के अन्दर स्वेच्छाचार को रोकना था।

(३) क्राले के अनुसार इस प्रथा का कारण साथ-साथ पाले पोसे हुये बालक बालिकाओं में परस्पर आकर्षण के अभाव का सिद्धान्त था।

(४) दुरवाइम के अनुसार असगोत्र विवाह की प्रथा का मूल यह धार्मिक विश्वास था कि अपने जन का रक्त पवित्र होता है। उसके संरक्षण हेतु अपने धार्मिक कर्मकाण्ड में विश्वास रखने वालों में विवाह का विधान किया गया।

(५) डार्विन का मत है कि दीर्घकाल तक अन्तः प्रजनन का परिणाम होता है आकार व शारीरिक ढांचे तथा प्रजनन शक्ति का ह्रास। इसे Law of mutation कहते हैं। परस्पर विद्रोही रक्तांशों के मिलन से ही जिन्स वृद्धि को प्राप्त होती है।

(६) डेविस महोदय लिखते हैं "जिस प्रकार प्राण विद्युत प्राण विद्युत को हटाती है। आकर्षित नहीं करती उसी प्रकार निकट सम्बन्ध में विवाह हो जाने पर जैसा आकर्षण होना चाहिये वैसा स्त्री पुरुषों में नहीं होता। यह नियम है कि प्राण विद्युत रयि (मन की) विद्युत का आकर्षण करती है अथवा यों कहो कि विरुद्ध प्रकार की विजातियों में जिस प्रकार आपस में मेल होता है, ठीक उसी प्रकार दूर के विवाह सम्बन्धों में परस्पर प्रेम बढ़ता है। अतएव निकट सम्बन्ध में विवाह नहीं होना चाहिये।

(७) डा० एस० एम० बी० विस ने वाशिंगटन (अमेरिका) की नेशनल मेडीकल एसोसियेशन के अधिवेशन में घोषणा की थी की राज्य के गूंगे, बहरे, अन्धे, पागल और जड़ मूर्ख बच्चों की संख्या में एक रक्त के विवाहों के बच्चों का अनुपात बढ़ा-बढ़ा पाया गया है।

यदि उसी रक्त सम्बन्ध में विवाह किया जायेगा तो सन्तान भद्दी और प्रतिभा-शून्य होगी। खाने, पीने और सोने में तो वह चतुर होगी

परन्तु बौद्धिक और आत्मिक कार्यों में अयोग्य होगी, साथ ही अधिक स्वार्थी होगी। यदि रक्त सम्बन्ध में विवाह करने की प्रथा बन्द न हुई, तो मानव जाति का विनाश अवश्यम्भावी है।

संसार में आज अधिक विषय वासना पाई जाती है। रक्त सम्बन्धी विवाहों की सन्तान बहुत विषयी सिद्ध हुई है। फलत: अमेरिका में कई बार शोर मच चुका है कि इस प्रकार के विवाहों को प्रशासनों को त्याज्य व दण्डनीय ठहराना चाहिये ताकि अयोग्य सन्तान पैदा न हों।

नोट —मुसलमानों में ऐसे विषयी संस्कार अरब संस्कृति का निशेष हैं। वहां सैक्स को बुरा नहीं समझा जाता था। आँ हजरत के अपने दत्तक पुत्र की विधवा और दासी से यौन सम्बन्ध स्वभाविक समझे गये थे।]

(८) डाक्टर पी० ए० भास्कर का मत उद्धृत करना भी समीचीन होगा :—

(1) Research workers in field of genetics have been repeatedly harping on the potential hazards of such consanguineous marriages. Heredofamilial diseases, that is diseases which are genetically transmited and are carried on from generation to generation, can well be perpetuated by such consanguineous unions When I once remarked about this hazard to a family member who was busily involved in getting a "consanguineous marriage" arranged for his son, he said, "Oh! There is no disease whatsoever in any of the parents" Strangely, genitically transmitted diseases skip generations or may appear in a milder from in certain generations and in the full-fledged form in a subsequent generation. Therefore although the present genration or too many apparently be free from obvious disease, such familial diseases lurking in the family can always present themselves in an ugly way in a later generation.

Medical science has provided a formidable long list of diseases that can possibly be transferred from generation to generation. Classical examples of neurological diseases are mental subnormality, muscle paralysis of the body and nerve diseases leading to ulcers in feet resmbling leprosy.

मलेरिया पर किये अध्ययन की एक रिपोर्ट यों है :—

पिछले कुछ वर्षों से वैज्ञानिक विचार है कि कुछ कारक मनुष्य को मलेरिया परजीवी के प्रति अधिक संवेदन शील बना देते हैं जबकि कुछ कारकों की शरीर में उपस्थिति मनुष्य को मलेरिया से निरापद बना देती है।

इस बारे में जिस आनुवंशिक कारक की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान गया वह है 'दात्रकोशिका जीन' (सिकिल सैलजीन)।

हमारे देश में ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत अधिक है जिनके रक्त का हीमोग्लोबीन असामान्य है। उनमें दात्र (हंसिया) आकृति के जीन हैं। जब ये जीन समयुग्मजी अवस्था में होते हैं तो मनुष्य घातक अरक्तता-दात्र कोशिका अरक्तता (सिकिलसैल एनीमिया) का शिकार हो जाता है। इस अवस्था में रोगी के शरीर से लिए गए ताजे रक्त में कुछ लाल रक्त कणों की आकृति दात्र सदृश्य दिखाई देती है पर जब जीन वि[illegible]जी होते हैं तब रक्त कण सामान्य प्रतीत होते हैं लेकिन रक्त को अल्प आक्सीजन सांद्रता में उसके लाल कण दात्र सदृश आकृति अपना लेते हैं। उस समय उनकी आकृति लगभग वही होती है जो उक्त अरक्तता में होती है।

हर मानव जाति के लोगों में दात्र कोशिका जीन एक संख्या में नहीं पाई जाती। किसी जाति के लोगों में इनकी संख्या काफी अधिक होती है। उनके बच्चों में रुधिर लयी अरक्तता (हिमीलाइटिक एनीमिया) रोग बहुत व्यापक होता है।

अपनी परिकल्पना की पुष्टि में एलीसन ने तीन तथ्य प्रस्तुत किये हैं :—

मलेरिया का आक्रमण हो जाने से उन लोगों के शरीर में मलेरिया के परजीवी अपेक्षाकृत कम संख्या में पाये जाते हैं जिनमें दात्र कोशिका जीन मौजूद होती है।

इन व्यक्तियों का अध्ययन करने से जो तथ्य एकदम सामने आता है वह है दात्र-कोशिकाजीन और मलेरिया के बीच एक निश्चित सम्बन्ध। दात्र कोशिका वाले व्यक्ति मलेरिया परजीवी के प्रतिरोधी होते हैं। उनके अन्य अनेक कारण हो सकते हैं यथा समान रक्त वालों में आपसी वैवाहिक सम्बन्ध आदि।

सारणी—१ 'जन जातियों' और 'नीची जातियों' के नाम, क्षेत्र और उनमें दात्र कोशिकाजीन वाले व्यक्तियों की प्रतिशत :—

जनजातियां

जाति	क्षेत्र	प्रतिशतता
आदियन	केरल (उत्तर वायनड)	३२·००
इरूला	नीलगिरी पहाड़ियां	३१·४५
गमित	गुजरात	३१·४०
वेदीद	दक्षिण भारत	३१·००
पणीयन	केरल	२९·३७
मुडिया	बस्तर मध्य-प्रदेश	२६·६०
भटिया	,, ,, ,,	२८·००
राजगोड	,, ,, ,,	२७·००
महार	मध्यप्रदेश	३८·२१
रेली	आंध्रप्रदेश	३०·००
सोरठी	महाराष्ट्र	३०·०६

आनुवंशिक कारकों और मलेरिया के बीच एक घनिष्ठ सम्बन्ध है और विरासत में मिले कुछ ग्रुप और विकार मनुष्य में मलेरिया परजीवियों के प्रतिरोधिता बढ़ा देते हैं।

(९) डा० स्टीफेन एड एमेटो का मत :--

CHARLESTON–West Virginia, July 24/80 (AP)–Inter marriage among blood relatives has caused the U. S. state of West Virginia's incidence of rare illnesses and birth deformities to soar much higher than the U. S. national average, a geneticist says.

Dr. Stephen S. Amato, Director of a Genetic Evaluation and Counselling Centre at West Virginia University, said, the frequency of birth defects in the state is about 3.4 percent of all live births, compared with a rate of about 2.5 per cent in the nation as a whole.

"We see many cases of first cousins marrying. We even see a lot of families where the husband and wife shared the same grandparents on both sides," he said.

Dr. Amato said he also sees a variety of incestuous relationships that contribute to such problems. Father-daughter and brother-sister relationships are the most common, he said,

Dr Amato studies the incidence of hereditary illnenesses and deformities.

Hereditary illnesses and deformities differ from congenital defects in that they are not isolated occurrences, but are passed from parents to children through the parent's defective genes.

A defective gene carried by only one parent generally will not materialise in the offspring of the marriage. But if both parents carry the same defective gene, as is more likely when blood relatives marry, the probability that their children will suffer from the defect increases greatly.

Dr Amato, who commented during recent interview, said intermarriage occurs most commonly in the rural, more isolated areas of the state. In such areas, the population is small and there is little influx of outsiders to contribute new genes to the pool.

(१०) एक दूसरे प्राणी विज्ञान विद प्रो० ईवाट का कहना है कि "प्राणियों के जन्म के लिये काम प्रवृत्ति इतनी महत्पूवर्ण है कि उसकी सामान्य विशेषताओं पर गम्भीर विचार आवश्यक है। एक ही वर्ग में विवाह न करने के मौलिक कारण का आधार प्राणी विज्ञान से सम्बन्ध है, जिसका पशुओं और पौधों से समबद्ध अनेक तथ्यों से समर्थन होता है। पौधों की स्वत: उपज और पशुओं की एक जैसी नस्ल ये दोनों ही वंश वृद्धि के लिये हानिकारक हैं।

इसीलिये पौधों की कलम कराई जाती हैं, तथा पशुओं के लिए विदेशी न ल के सांड मंगवाये जाते हैं। और इस दूर के विवाह के कारण पैत्रिक रोग पीढ़ी रोग दर पीढ़ी फैलने से रोक दिये जाते हैं। पर ध्यान रहे कि 'प्रकृति एक नियत सीमा तक एक ही नस्ल के प्रजनन को सहन करती है।' यह बात भी विचारणीय है कि रक्त परिवर्तन होने से वंश बेल सूख जाती है।'

अतएव विवाह में गोत्र की दूरी से काम चल जाता है। पर वर्ण पर जाकर यह दूरीकरण रूक जाता है। अन्यथा विशेष जैन्स सुरक्षित न रहेंगे। ये जैन्स अणु माता-पिता के रजवीर्य के साथ जाते हैं। अच्छे गुणों की विरासत और तद् तद् पेशों की विशिष्टता के लिये वर्ण गत विवाह आवश्यक हैं।

भारत का यह मध्यम मार्ग है। मध्यम मार्ग ही श्रेयस्कर होता है।

खाते या अल्ल

गोत्र आचार्य परक होता है, पर भूल से बहुत से लोग अल्ल, खाता या खेडा को ही गोत्र कह देते हैं। उन्हें सम्प्रदाय भी कह सकते हैं। सूर्य और चन्द्र वंशियों के युद्ध के समय या कालांतर में क्षत्रियों या उपवंशों के नाम पर यह सम्प्रदाय चल पडे थे। इनका तात्पर्य यह है कि इन इन क्षत्रिय घरानों या उपवंशों के लोग वैश्य बन गये पर अपने साथ नामों रक्तेकताया स्थानीय मोह के कारण लगाये रहे। इनका और कोई शाब्दिक अर्थ नहीं है, आज कल केवल ऐतिहासिक मूल्य रह गया है। अबहम उदाहरणार्थ महा उरु वैश्यों की विभिन्न शाखाओं की अल्लों का विवरण देते हैं। इनकी जानकारी का श्रोत जगा लोग ही हैं। जगा पं० रामलाल शंकर लाल पुरानी बस्ती जाट कुए का रास्ता, जयपुर, निम्न प्रकार चौरासी अल्लें अपनी पुस्तक देखकर लिखाये हैं। उनमें से कुछ यों हैं :—

१- राजपुरिया, २- बिलासपुरिया, ३- अग्निपुरिया, ४- सीरोठिया ५- मारोठिया, ६- तेनगुरिया, ७- लोहिया आदि।

इसी प्रकार अन्य वैश्य उपजातियों के खाते व अल्ले हैं।

१.०४ समाज की तीसरी व्यवस्था-दक्षिणाग्नि

पूजा-परक वर्गीकरण में पुरोहितों की बन आती है। वे ही समाज में प्रमुख होते हैं। वे ही प्रभावी होते हैं और प्रचुरता भी उन्हीं पर रहती है। पुरोहितों का नेतृत्व पोप लीला को जन्म देता है। उससे समाज का विकास रूक जाता है। ऐसा भी अनुभव किया गया है कि एक ही व्यक्ति को प्रमुखता (Prominence) प्रभाव (Commanding-Influence) एवं प्रचुरता (Abundance.) समर्पित करने से वह व्यक्ति शीघ्र ही चरित्र विहीन तथा सत्ता का दुरुपयोग करने वाला बन जाता है। अतः वेद का सुझाव था कि उस समय समाज का सगठन धर्म-निरपेक्ष (Secular) कर देना चाहिये। बस यही तीसरी क्रांति है।

सोदक्रामत्सा दक्षिणाग्नौ न्यक्रामत् ॥
यन्नर्तो दक्षिणीयो वासते यो भवति य एवं वेद ॥

अथर्व वेद-८/१०/६-७

(तब प्रजा में क्रांति होती है या हुई और वह दक्षिण अग्नि अर्थात दक्षता के तप के रूप में प्रकट हुई। जो ऐसा जानता है, वह समाज के योग्य बनता है।)

समाज की जो ऐहिक आवश्यकतायें थीं, उनकी पूर्ति आवश्यक थी। अस्तु यह आवश्यक था कि समाज को उन कमियों की पूर्ति में जुटा कर सुखी समाज की सृजना की जा सके। यह कमियां तीन प्रकार की थीं :—

विद्या का अभाव, न्याय का अभाव, पदार्थों का अभाव।

अस्तु इस देश में गुरुकुल में शिक्षा की समाप्ति पर समावर्तन के समय अन्तेवासी गुरु (Hostel Superintendant) तथा आचार्य (Principal) मिलकर यह निश्चय करते थे कि प्रवृत्ति और शिक्षा के आधार पर किस विद्यार्थी को किस काम पर जुटायें। यह ध्यान रहे

लगभग ६ वर्ष की आयु से ही समाज का हर बालक अनिवार्य रूप से माता-पिता से पृथक करके समान शिक्षा हेतु गुरु के आश्रम (Hostel) में लाकर रख दिया जाता था। अस्तु निष्पक्ष गुरु-जन प्रवृत्ति और पात्रता के आधार पर बने व्रत लेने का परामर्श देते थे। जब व्रत ले लिया जाता था, तो उसे यज्ञोपवीत (यज्ञ+उपवीत) दे दिया जाता था। जो कोई व्रत न ले पाते थे उन्हें इन व्रत लेने वालों का सहायक नियुक्त कर दिया जाता था। एक वर्ग पदार्थों के बृहद उत्पादन की योजना बनाता था और अपने उपयुक्त सहायकों की सहायता से उत्पादन करता था। दूसरा वर्ग इन उत्पादित भोग पदार्थों को बटवाता और बटे हुये का संरक्षण करता था। और वितरण पद्धति में न्याय और नैतिकता की पुट तीसरा वर्ग देता था। इन चार मुख्य वर्गों में ही जनता निसर्जित होती थी। यह वेद वर्जित दक्षिणाग्नि का मूल रूप था जो कि एक शाश्वत पद्धति का वर्णन है।

समाज में श्रम विभाजन

हिन्दू जनमानस श्रद्धा से इन वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानता है। तो ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण उसमें समाज निर्माण की योजना होना सम्भाव्य है। यज्ञ के भक्त होने से उपरोक्त प्रक्रिया को वहां यज्ञ का रुपक देकर समझाया गया है। पुरुष सूक्त का यह प्रकरण चारों वेदों में आया है। एक प्रश्नोत्तर अंश नीचे उद्धृत है :—

प्रश्न – यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ।

मुख किमस्यासीत्किम् बाहूकिमूरु पादा उच्यते ॥

(यजुर्वेद ३१।१०)

[यत्पुरुषं] जिस [विराट] पुरुष को, (कतिधा, वि अकल्पयन) अनेक प्रकार से कहते और [वि, अदधुः] धारण करते हैं। [अस्य] इस [विराट पुरुष] का [मुखं, किं, आसीत्] मुख क्या था, (बाहू, किम्) बाहू क्या था [तथा] [ऊरू, पादों, किम् उच्येते] जंघा और पांव कौन कहे जाते हैं ?

उत्तर—ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

उरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याम् शूद्रो अजायत ॥

(यजुर्वेद ३१।११)

(अस्य) इस [विराट पुरुष] का [ब्राह्मणः, मुख, आसीत] ब्राह्मण मुख था, (बाहू, राजन्यः, कृतः) बाहू क्षत्रिय को किया। वह उसका पेट जो वैश्य है। (पद्भ्याम् शूद्रः अजायत) पावों से शूद्र प्रगट हुआ।

वास्तव में आबादी के वे ४ वर्गीकरण स्वभाविक हैं। उन्हीं को मुख' बाहु, उरु और पद रूप समाज का अंग कहा है। चार पेशे सृष्टि में मनुष्यों के उद्भव के साथ ही होते आये हैं। इस देश में आर्यों के पूर्व भी रहे हैं। केवल नामकरण इस प्रकार करने का श्रेय आर्यों को है।

१·०४·०१ श्रम विभाजन और वर्ण

पुरुष सूक्त का तात्पर्य :

प्रारम्भ में सृष्टि की आबादी बहुत कम थी। स्वतः उत्पन्न कंद-मूल फल खाकर निर्वाह करते थे। लोगों की सात्विक दृष्टि थी। किसी के पास कोई सम्पत्ति नहीं थी। जो कुछ प्राप्त होता था उसे यज्ञ के कुण्ड के आस-पास बैठ देवता को अर्घ समर्पित करने के बाद वे बांट कर खा लेते थे। व्यक्तिगत सम्पत्ति न होने से पुलिस, फौज तथा राज्य की व्यवस्था भी न थी। जैसे-जैसे जन संख्या बढी, वह भावना जो उदघोष करती थी कि उदार चरित्र वालों को तो सारी वसुधा एक कुटुम्ब है, समाप्त हो चली। सम्पत्ति के निर्माण होने पर उसकी रक्षा के उपाय किये गये। खेती प्रारम्भ हुई। धीरे-धीरे समाज में सहस्रों प्रकार के काम हो गये। ऐसे समाज को एक पुरुष की संज्ञा दी गई है जिसके सहस्रों सिर, सहस्रों आंखें, सहस्रों हाथ थे। इस सहस्र शीर्षा समाज पुरुष का वर्णन पुरुष सूक्त में है। इन सारे कार्यों को पुरुष की उपमा देकर चार भागों में बांटा गया है।

वेद में वर्णों के क्रम विभाग यों किये गये हैं :—

ब्राह्मण—सम्वत्सरं शशयाणा ब्राह्मणाव्रतचारिणः।

वाच पर्जन्यजिन्वितां प्रमडूका अवादिषु ॥ ऋ० ७।१०३।१॥

सम्पूर्ण वर्ष समाधि की शान्तवृत्ति में रहते हुए, मर्यादानुसार आचरण करने वाले सत्य का मण्डन करने वाले, ब्राह्मण अपूर्व वाणी को ओजस्वी शब्दों में बोले।

क्षत्रिय—अस्मतुधनपतिर्धनानामयं विशां विशपतिरस्तुराजा।

अस्मिन्निद महिर्वचासि धेह्यवर्चसं कृणुहि शत्रुमस्य ॥

(अथर्व ४।२२।३)

यह क्षत्रिय धनों का स्वामी हो, प्रजाओं तथा व्यापारियों का योग्य पालक होने के कारण राजा होवे। हे प्रभो! इसको इतना तेजस्वी कर कि शत्रु इसके सामने आते ही फीके हो जावें। यहां जनता मात्र के लिये प्रयुक्त विश शब्द दृष्टव्य है।

तीसरा वर्णन है जघाओं का। जाने आने आदि का कार्य इनके सहारे पर ही होता है। तथा व्यापार सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्यों का सम्पादन बिना पुष्ट जघाओं के असम्भव है। वेद वैश्यों के कर्म का इस प्रकार निर्देश करता है।

वैश्य—'इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरु एता नो अस्तु।

नुदन्नराति परिपस्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्मम ॥

(अथर्व ३।१५।१॥)

मैं ऐश्वर्य सम्पन्न वैश्य को आगे करता हूं। वह हमारे पास आवें और हमारी आर्थिक कठिनाइयों को सुलझाने के लिए हमारे अगुआ बनें। कंजूस, व्यापार-विरोधी और पशु-वृत्ति वाले शत्रु को दूर करके वह हमें धन देने वाले हों।

शूद्र—इन तीन से बचे सारे कार्य शूद्र के हिस्से में हैं।

जब देश का कानून प्रथम बार बना था तो उक्त सिद्धान्त मनुस्मृति में शामिल कर दिये गये :—

लोकानान्तु विवृद्धियर्थं मुख बाहूरूपायादतः।

ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यै शूद्रं च निरवर्तयत् ॥ (अ० १ श्लोक ३१)

लोकों की वृद्धि के निमित्त प्रजापति ने मुख, बाहु, ऊरू और चरण रूप क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के विभाग किए। पश्चिमी देशों में भी प्लेटो ने मनुष्य समाज को Teacher, Knight, Trader, Producer इन चार भागों में बांटा है। इसमें कोई किसी से बड़ा नहीं है। सब एक ही शरीर के बराबर उपयोग में आने वाले अंग हैं। गीताकार ने जो कहा है। कि स्त्री शूद्र व वैश्य नीचयौनी है,

यह उस समय की स्थिति है जब कहीं तो ब्राह्मण और कहीं क्षत्रिय राज्य सत्ता दबाये बैठे थे। जिसका प्रभुत्व होता है, उसी पेशे को वह सर्वोत्तम तथा गुणवान घोषित करता है। जब राजनैतिक शक्ति ब्राह्मण की थी तो सब कानून उसके पक्ष में थे और वह सर्वोत्तम था। देखिये कुछ उद्धरण—

१– न ब्राह्मणो हिंसितव्योऽग्निः प्रियतनोरिव।
सोमो ह्यस्य दायाद इन्द्रो अस्याभिशस्तिपाः॥

अथर्व ५ १८ ६

[ब्राह्मण अहन्तव्य हैं क्योंकि वे अग्नि के समान हैं। इनके दायाद चन्द्रमा हैं, और इनकी कीर्ति के रक्षक इन्द्र देव हैं]।

२– तं वृक्षा अपसेधन्ति छायां नो मोपगा इति।
यो ब्राह्मणस्य सद्धनमभि नारद मन्यते।

(हे नारद! उस मनुष्य को वृक्ष भी छाया नहीं देते हैं, जो ब्राह्मण का अपमान करते हैं!) [नारद स्मृति में]।

३– चतस्रो विहिता भार्या ब्राह्मणस्य पितामह।
ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या, शुद्रा चरतिमिच्छतः॥

(महाभारत अनुशासन पर्व अ० ४७ श्लोक ४)

(ब्राह्मण को अधिकार है कि चारों वर्णों की स्त्रियां रख सके। वह ब्राह्मणी, क्षत्रिय और वैश्य स्त्री तथा यदि रति की इच्छा करने वाला हो तो शूद्रा से भी विवाह कर सकता है।)

४ इम देवा असपत्न ओ३म् सुवध्वं महते क्षत्राय महते—
ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमं मनुष्य
पुत्रममुष्यै, पुत्रमस्यै, विश एष वोऽमी राजा सौमोऽस्माकं
ब्राह्मणानां राजा॥ यजुर्वेद ९।४०॥

[पुरोहित! इस राजा को शत्रु रहित करके कर्म में प्रेरणा कीजिये। महती क्षत्र-पदवी के हेतु, महती श्रेष्ठता के हेतु, महान जन-राज्य के हेतु। इस राजा रानी के पुत्र की भी रक्षा करें। ए प्रजाओं, ये आप लोगों के राजा हैं। इनकी आज्ञा मानो, परन्तु हम ब्राह्मणों का राजा सोम अर्थात् चन्द्रमा है, यह नहीं।]

अर्थात् ब्राह्मण लोग क्षत्रिय राजा के अनुशासन में नहीं रहना चाहते थे।

पर उपनिषद काल में क्षत्रिय ब्राह्मण से श्रेष्ठ बताये गये हैं। और लोक गाथा में निम्न उक्ति प्रसिद्ध हुई है :—

उत्तम खेती, मध्यम बान।
निकृष्ट चाकरी, भीख निदान॥

पहिले चाकरी से तात्पर्य केवल सिपाही का लिया जाता था। और "बामन को धन केवल भिक्षा" तो एक ब्राह्मण कवि नरोत्तम दास ने स्वयं एक ब्राह्मण सुदामा के मुख से कहलवाया है। इस प्रकार यहां तो क्रम ही उलटा हो गया। ब्राह्मण ग्रन्थों में तो वैश्य को ऋक से, यजु से क्षत्रिय और सामवेद से ब्राह्मण को उत्पन्न बताया है—अर्थात् वैश्य श्रेष्ठतम कहा गया है।

१·०४·०२ आदि में वर्ण का आधार पेशा था न कि जन्म और आचार

वर्ण व्यवस्था का स्रोत पौराणिक जन्म से मानते हैं और आर्य समाजी गुण-कर्म स्वभाव से। मैं वर्ण व्यवस्था का प्रारम्भ पेशे मात्र से मानता हूं।

आदि ग्रन्थ ऋग्वेद में निम्न मन्त्र आया है :—

कारुरहं ततो भिषगुपल प्रक्षिणीनना।
नानाधियो वसू यवोऽनुगा इवतस्थिम्॥

(९/११/११३)

मैं कारीगर हूं, मेरा पिता वैद्य है, मेरी माता चक्की चलाती है। स्पष्ट है कि एक ही परिवार में भिन्न कर्म उपस्थित थे। अर्थात् भिन्न-२ वर्ण के लोग एक ही परिवार में संभव हैं।

वायु पुराण तक में शौनक के ४ पुत्रों का वर्णन है; वे चारों पृथक-पृथक चार वर्णों के लिखे हैं। हरिवंश पुराण अध्याय ३१ में भार्गव वंश में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र चारों वर्णों के व्यक्तियों का होना लिखा है। इसी प्रकार मत्स्य पुराण में कामदेव के चारों पुत्रों का पृथक-पृथक वर्ण वाला होना लिखा है। इतरा दासी के पुत्र ऐतरेय नामक ऋषि हुए हैं, जिन्होंने ऐतरेय ब्राह्मण लिखा है। एक दासी पुत्र कवर्ष ऐलिस ने ऋषि होकर ऋग्वेद का भाष्य किया। वैश्य पुत्र सत्यकाम जाबाल ने वेदान्त पर लिखा है। मनु का एक पुत्र पृषध गौ के बध करने के कारण शूद्र हो गया और दूसरा नाभाष्टिनेमि वैश्य हो गया था। इसके पुत्र नाभागारिष्ट के दो पुत्र वैश्य से ब्राह्मण हो गये थे (हरिवंश पुराण)। अतः वर्ण जन्म से नहीं होता था। वह तो पेशों का द्योतक था। शूद्र कुलोत्पन्न: व्यास, पाराशर, शुक्र, कणाद, श्रृंग तथा वशिष्ट आदि ऋषि इसके उदाहरण हैं। प्लेटो ने भी अपनी पुस्तक (Republic) गण-राज्य मे अब से २४०० वर्ष पूर्व लिखा था कि पेशों के अनुसार मनुष्य समाज तीन भागों में ही बांटा जा सकता है।

Guardian	रक्षक
Soldier	सैनिक
Common man	सर्वसाधारण

रक्षक के उसने वे ही कार्य बतायें हैं जो दार्शनिक और ब्राह्मण के होते हैं। आधुनिक समय में वैल्स (H. G. Wells) ने अपनी पुस्तक (Work, wealth and Happiness of Man-kind) में मनुष्यों की प्रवृत्तियों के तीन विभाग किये हैं :—

Peasant, Perasona	कृषक प्रवृत्ति
Perasona	साहसी लोगों की प्रवृत्ति
Priest Perasona	पुरोहितों या शिक्षकों की प्रवृत्ति

१.०४.०३ वर्ण आचार मूलक भी नहीं थे।

आदि वर्ण व्यवस्था आचार-मूलक भी नहीं है। वर्णों में कोई ऊंचा नहीं था। चारों वर्णों को समान अधिकार प्राप्त थे। यज्ञ तथा यज्ञोपवीतादि पर सबका समान अधिकार था। वेदों में सब जनता द्वारा एक सी प्रार्थनायें किये जाने का विधान है। सब वर्णों में समानाधिकार पूर्वक सहभोज और अन्तर्जातीय विवाह भी होते रहे हैं। आचार-मूलक भेद तो दो ही हैं :— १-आर्य और, २-अनार्य अथवा दस्यु।

विजानीह्यार्य्यान्येव दस्यवः ॥ (ऋग्वेद ७ ५।११)

आर्यों के वाङ्मय में आचार सम्बन्धी नियम तो सब वर्गों के समान थे :—

अहिंसा सत्यमस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
एते सामाजिक धर्म चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनु ॥
(मनु० १०।६३)

अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, शौच और इन्द्रिय निग्रह-यह चारों वर्णों के धर्म हैं। यदि यह वर्ण-व्यवस्था आचार पर आधारित होती तो हर वर्ण अर्थात् अध्यापक, सैनिक, व्यापारी और परिश्रमी हरेक में से आचार पर आधारित ४ वर्ण फिर अलग-अलग और होते, और १६ विभाग हो जाते।

मनु ने एक स्थल (१०-६५) पर लिखा है "शूद्रो ब्राह्मणतामेति" अर्थात् शुद्र ब्राह्मण हो जाता है। वहां यह तात्पर्य कदापि नही है कि शूद्र अच्छे (आचारमूलक) कर्म करके ब्राह्मण हो जाता है। अपितु अर्थ यह है कि तप (परिश्रम साध्य) अर्थात् मेहनत मजदूरी से जीवन यापन करने वाला मनुष्य इस पेशे को छोड़कर ज्ञान-साध्य पेशे अपना सकता है, अर्थात् अध्यापक बन सकता है। क्योंकि आचार-मूलक अच्छे कर्म करने की अपेक्षा तो शूद्र से भी है। अच्छा चाल चलन किसी परिवार वा जन्म विशेष या वर्ण या स्वभाव विशेष वाले व्यक्ति मात्र की बपौती नहीं है।

दृश्यन्ते मानुषे लोके सर्व वर्णेषुदस्यवः।
लिंगान्तरे वर्तमाना आश्रमेषु चतुर्ष्वपि ॥
(महा० शान्ति०पर्व०अ० ६५ श्लोक २३)

(मनुष्य समाज के चारों वर्णों और आश्रमों में दस्यु नजर आते हैं, जिनके चिन्ह भिन्न-भिन्न हैं।)

१.०४.०४ वर्णों का निर्माण शनैः-शनैः हुआ।

वर्णों का विकास सृष्टि-सृजन के साथ नहीं हुआ। जैसे जैसे जन संख्या बढ़ी, उसकी आवश्यकतायें बढ़ी, तभी कार्य-विभाजन होकर वर्ण बने। कुछ लोगों का यह मत है कि स्वयं ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना के साथ ही चारों वर्ण बना दिये थे। सृष्टि के प्रारम्भ में तो शूद्र की रचना की आवश्यकता ही नहीं थी। आदि में तो सब एक ही वर्ण में थे और उन्हें ब्राह्मण कहा जा सकता है। न खेती होती थी, न नगर थे, न आवास। कन्दमूल फल का व्यवहार था। और प्रकृति की गोद ही उनका आवास-स्थल था। अतः न रक्षक की आवश्यकता थी, न वितरक की।

त्रेता में क्षत्रियों का बनना व बढ़ना, द्वापर में वैश्यों का और कलि में शूद्रों का बनना और बढ़ना श्री मद भागवत में भी लिखा है।

महाभारत वन पर्व ३१५।२०८ में भी ब्राह्मण से क्षत्रियों का, ब्राह्मण व क्षत्रियों से ही वैश्यों का, तथा तीनों वर्णों से ही शूद्रों का बनना अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाहों की पद्धतियों से भी लिखा है।

वृहद्दारण्यक उपनिषद में इसके रचयिता याज्ञवल्क्य ने पहिले अध्याय में सृष्टि रचना तथा ब्राह्माण्ड पुरुष की उत्पत्ति का वर्णन किया है। यह तथा इसी के चौथे अध्याय की १२ वीं और १३ वीं कण्डिकायें यों हैं :—

अ-ब्रह्म वा इदमग्रं आसीदेकमेव तदेकं सन्न व्यभवत्।
तच्छ्रेयो रूपमत्यसृजत् क्षत्रम्॥
सणैव व्यभवत् स विशम सृजत ॥
सनैव व्यभवत् स शौद्रं वर्णमसृजत ॥
वृ० १।४।२ श्लोक ११-१२-१३

ब—पश्चात क० ११अ—४२ के श्लोक १०-२३-२५ तक यों हैं:—

ब्रह्मा वा इदमग्र आसीद। एकमेव तदेकं सन्नव्यभवत्। तच्छ्रेयो रूपमत्यसृजत क्षत्रम्। यान्येतानि देवानि क्षेत्राणि वरुणः सोमो रुद्र पर्जन्यो यमो मृत्युरीशान इति। तस्मात् क्षत्रात्परं नास्ति तस्मात-ब्रह्मणः क्षत्रियमधस्तादुपास्ते राजसूये। क्षत्र एवं तद्यशो दधाति। सैषा क्षत्रस्य योनिर्यद् ब्रह्मा। तस्मात् यदपि राज परमतां गच्छति वैश्यं वान्तत उपनश्यति स्व योनिम्। य ३ एवं हिनस्ति स्वां स योनिमृच्छति स पापीयन् भवति यथा श्रेयांस हिंसित्वा।

सनैव व्यभवत्। स विशम् असृजत। यान्येतानि देवजातानि गणशः आख्यायन्ते-वसवो रुद्रा आदित्य विश्वदेवा मरुत इति ॥ २४॥ स नैव व्यभवत। स शौद्रं वर्णं मसृजत पूषाणमिय वै पूषेयं दीदं सर्वं पुष्यति यदिदं किञ्च ॥ २५॥ तदेतद् ब्रह्म क्षेत्र विद शूद्रः।

अनुवाद—

आदि में एक ब्राह्मण वर्ण था। एक होने से वह असामर्थ्य हुआ। इसलिए उसने एक और अपने से उत्तम वर्ण क्षत्रिय को बनाया [११-१३] इन्द्र-वरुण-सोम-रुद्र-पर्जन्य-यम-मृत्यु तथा ईशान क्षत्रिय देवता हैं। तभी राजसूय यज्ञ में क्षत्रिय के नीचे ब्राह्मण बैठते हैं।

जब ब्राह्मण वर्ण लौकिक व्यवहार में फिर भी समर्थ न हुआ तब उसने उससे उत्तम तर वैश्य वर्ण को बनाया। वसु रुद्र-आदित्य-विश्वेदेवा और मरुत वैश्य देवता हैं। यह गण बना कर कार्य करते हैं। जब फिर भी कार्य न चला तो उत्तमतम शूद्र वर्ण रचा। देवताओं में पृथ्वी ही शूद्र है क्योंकि वह सबका पालन पोषण करती है।

ठीक इसी बात की पुष्टि में महाभारत के भीष्म पर्व में भीष्म ने युधिष्ठर से यों कहा है :—

एकं वर्णमिद पूर्वं विश्वमासीत् युधिष्ठरः।
कर्म-क्रिया विभेदेन चातुर्वर्ण्यं प्रतिष्ठतम्॥

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि

आर्यों में जो एक ब्राह्मण वर्ण था, उससे काम न चलने पर क्षत्रिय वर्ण बना। और क्षत्रिय वर्ण से ही वैश्य और शुद्र वर्ण बने। यह प्रथा

मध्ययुग तक ऐसी रही। यहाँ तक कि अपनी पुस्तक के अध्याय ७ के पृष्ठ ८० पर टाड साहब ने उन ८० जातियों को गिनाया है जो राजपूती रक्त की होते हुए भी वणिक (व्यौपारी) बन गई थी। जो शब्द उन्होंने प्रयोग किये हैं, वे यों हैं: -

A table of eighty former m rcantile tribes chiefly of Rajput origin shall also be furnished in which the rememberences of some races are preserved, which have perished.

इस लिस्ट में कोर्टवाल (Kortwal) सोनी (Soni), बटेवरा (Battewatra) महेरिया (Mahehria), माहोरवाल (Mohorwal) इत्यादि जातियाँ वैश्य सम्प्रदाय में ही हैं। आर्य व्यवस्था में स्पष्टतया क्षत्रियों से शूद्र बनने के भी प्रमाण महाभारत और मनुस्मृति दोनों में हैं:—

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रिय जातयः।
वृषलत्वं गतालोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥
पौंड्रकाश्चोड्र द्रविडाः काम्बोजायवनाः शकाः।
पारदा पल्हवाश्चीनीः किरतादरदाः खसाः ॥

मनु० अ० १० श्लोक ४३-४४

ये क्षत्रिय जातियें क्रिया लोप से और ज्ञान न मिलने से लोकों में धीरे-धीरे शूद्रता को प्राप्त हुईं :-पौंड्रक, ओड्र, द्रविड, काम्बोज, यवन, शक पारद, पल्व, चीन, किरात, दरद, और खस। तब तक सैनिक वर्ग के लोग युद्ध का पेशा छोड़कर श्रम साध्य पेशों में जुट गये थे।

एक स्थल पर महाभारत में भी आता है—

मेकला द्राविडा लाटा पौंडा काण्वाः शिरास्तया,
शौंड्रिका दरदा दर्वाश्चोड्रा शवर वर्वराः ॥
किराता यवनाश्चैव तास्ताः क्षत्रिय जातयः,
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणनामऽदर्शनेन च ॥

महाभारत अनुशासन पर्व ३५ श्लोक १७-१८

मेकल द्राविण, लाट, पोण्ड्र कोण्वणि तथा शौंड्रिक दरद, दर्व, चौर, शवर, बर्बर, किरात और यवन सब क्षत्रिय जातियाँ हैं, किन्तु ब्राह्मण ज्ञान से सम्पर्क टूटने के कारण शूद्रत्व को प्राप्त हुईं।

अतः आर्य प्रसार काल में तो सब जातियां क्षत्रियों से तथा क्षत्रिय स्वयं ब्राह्मणों में उद्भूत हैं। सब जातियों के गोत्र ब्राह्मण ऋषि-मूलक है।

प्रारम्भ में वर्ण बनने में दृष्टिकोण यही था कि समाज का कारोबार लोगों में बांट दिया जावे। लोग अपने पेशे बदल सकते थे। परन्तु टैक्निकल स्कूलों के अभाव में पिता अपने पुत्रों को अपने पेशे के राज और पद्धति सिखा जाता था। इस प्रकार समाज में बिना परिश्रम और शैक्षणिक प्रबन्ध के हर गुण और फन में प्रवीण लोग सुलभता से प्राप्त हो जाते थे। और इसीलिये इस बात को आगे धार्मिक रूप दे दिया गया कि—

स्वधर्मे निधनं श्रेयः।
परधर्मो भयावहः :

इस चिन्तन ने ही वर्णों के पेशे को वपौती सा बनाते हुये जन्म पर आधारित व्यवस्था को जन्म दिया।

इसकी पुष्टि में एक और प्रबल उद्धरण शान्ति पर्व का देते हैं— भारद्वाज मुनि भृगु से शंका करते हैं कि महाराज !

शंका=कामः क्रोधो भयं लोभ शोकश्चिन्ता क्षुधा श्रमः।
सर्वेषां न प्रभवति कस्मद्वर्णो विभज्यते ॥

महा० भा० शा० पर्व० अ० १८८॥

काम, क्रोध भय, लोभ, शोक, चिन्ता, भूख, थकावट जब हम सब मनुष्यों को समान लगती है, तब फिर वर्णों का विभाग कैसा ?

समाधान=नाविशेषोऽस्ति वर्णानां सर्व ब्राह्ममिदं जगत्।
ब्रह्मणा पूर्व सृष्टा हि कर्मभिर्वर्णताङ्गतम् ॥

कि ईश्वर ने सब मनुष्यों को समान ब्राह्मण ही उत्पन्न किया था, अपने अपने भिन्न कर्मों ने ही वर्णों में विभक्त किया।

कामभोगीप्रियास्तीक्ष्णाः क्रोधिना प्रियसाहसाः।
त्यक्त स्वधर्मारक्ताङ्गास्ते द्विजाः क्षत्रतांगताः ॥

कि जिन ब्राह्मणों ने अपनी रुचि संसार के सुख भोगने और साहसी कर्म करने की ओर दी, वे ब्राह्मण से क्षत्रिय बन गये।

गोभ्यो वृत्तिमास्थाय पीताः कृष्युपजीविनः।
स्वधर्मान्नानुतिष्ठन्ति ते द्विजा वैश्यतां गताः ॥

व्यापार और कृषि की ओर जिन ब्राह्मणों का झुकाव हो गया, वे वैश्य बन गये।

हिंसानृत, प्रिय लुब्धा, सर्वकर्मोपजीविनः।
कृष्णाः शौच परिभ्रष्टास्ते द्विजाः शूद्रतां गताः ॥

हिंसक और लालची सफाई-रहित ब्राह्मण शूद्र बन गए।

१.०४.०५ वर्ण से जाति का निर्माण—

पीछे कहा जा चुका है कि हमारे देश की आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्था का मूल आधार वर्ण व्यवस्था रही है। इसके अनुसार समाज में श्रम-विभाजन हो जाता था। सारा व्यक्तिगत प्रयास समाज-परक था। तो भी प्रत्येक व्यक्ति को, जो कि अनेकशः जन्मों के संस्कार लेकर पैदा होता है, विकास करने और दैनिक कृत्यों पर अपनी योग्यता की छाप लगाने और तदनुरूप एक-गुने, दो-गुने तथा तीन-गुने (त्रयोरत्नानि घत्तनः) तक फल पाने का अधिकार था।

इस व्यवस्था के कार्यान्वियन की जिम्मेदारी गुरुकुल की थी। गुरुकुल के छात्रावास में सारे राष्ट्र के बच्चे एक जैसे वातावरण में, पलते और संस्कृत होते थे। समावर्तन संस्कार के समय वे शपथ लेते थे कि समाज की एक न एक कमी को वे गृहस्थ में जाकर दूर करेंगे। यह स्वेच्छा से किये गये व्रत ही ब्रह्मचारी का वर्ण निश्चय कर देते थे और 'वरे जाने की प्रक्रिया' के कारण इस व्यवस्था का नाम वर्ण-व्यवस्था रक्खा गया था। पेशे किसी जाति की मौरूसी सम्पत्ति नहीं थे, जिसके स्वभाव में जैसी प्रवृत्ति तथा जैसी महत्वाकांक्षा होती थी, उसने वैसा पेशा अंगीकार कर लिया। यदि वही व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से अपनी अवस्थाओं को बदल कर उस पेशे को छोड़ देता था तो ऐसा

करने में वह अपने ईश्वर प्रदत्त अधिकारों से ही स्वतन्त्र था। प्रत्येक वर्ण के कार्य भी अनेक हो जाते हैं—शास्त्र का ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक व्यवस्था यथा अर्थ एवं राजनीति का ज्ञान आदि। प्रत्येक ब्राह्मण व्रतधारी इनमें से एक विभाग छांट लेता था। जिसने आध्यात्मिक प्रचार का कार्य लिया उसे वेदों में पारंगत होना अनिवार्य था। जिसने चिकित्सा-शास्त्र चुना उसे अथर्ववेद में। यहीं से ब्राह्मणों के वर्ग चले। शासक, वकील, सिपाही, सेनापति आदि विभाग क्षत्रियों के बने। विभिन्न वस्तुओं के विभाजन के पृथक वैश्य वर्ग बने। विशेष श्रम साध्य पेशे भी बंट गये यथा लोहा व चमड़ा के कारीगर लुहार व चर्मकार कहलाये। यह चतुर्थ वर्ण के वर्ग कहे जा सकते हैं।

पेशा=मध्यकाल के धर्म-ग्रन्थों में जातियों का जिक्र मिलना शुरू हो जाता है। क्रमिक विकास होते-होते आज ७००० जातियां विद्यमान हैं। स्पष्ट है कि चार वर्णों से पेशों के प्रभाव से ही जन्मजात जातियां बनी थीं।

पश्चिम के देशों में सिन्डीकेट के आन्दोलन द्वारा एक पेशा वालों में सहयोग के सृजन की व्यवस्था है। परन्तु वह व्यवस्था भी आर्थिक मानव के सृजन के बाद प्रतिस्पर्धा से होने वाली हानि की विचारधारा का प्रभाव है। हमें अपनी वस्तु अपने मनमाने भाव बेचने दो—यही उसका आदर्श है। आदम स्मिथ ने स्पष्ट उपयोगितावाद का प्रश्रय लिया है। अतः पश्चिम का यह आन्दोलन ता पूंजीपतियों के हाथ का खिलौना था। तब कल्याणकारी राज्य ने सहकारिता आन्दोलन हाथ में लिये। स्वाभाविक पारिवारिक सहकारी संगठन को नष्ट करके तदर्थ गुणविहीन विभिन्न व्यक्तियों को एक कोआपरेटिव से सरकारी अनुदान से बांधकर उनसे विभिन्न कार्य करवाये गये। वे संगठन सारी सरकारी पूंजी खाकर घाटे के गर्त में समा गये। बेचो, खरीदो और लाभ उठाकर घर जाओ। इससे किसी घनिष्ठ सामाजिक व्यवस्था का सृजन नहीं हो सकता। आधुनिक भारत उसी अजमाई हुई सड़ी गली व्यवस्था को चालू कर रहा है। योरुप में यह असफल हुई है।

भारतीय श्रम विभाजन का आधार व्रत था। मुझे समाज को कुछ देना है न कि कुछ लेना है। स्व पर अनुशासन न कि अनुशासन बद्ध होकर समाज को लूटना। अतः श्रेणियों में काम बाँटकर वर्ण व्यवस्था सोद्देश्य होकर मानव जाति की सेवा करती रही हैं।

अ—पेशों से बनी जातियां=प्रागैतिहासक काल ही में यह जातियां बन गई थीं। आर्यों के आदि ग्रन्थ यजुर्वेद में निम्न पेशेवर जातियों का वर्णन है :—

मंत्र संख्या—

(५) १–ब्राह्मण=ब्रह्म-विद। २–राजन्य=प्रतापी राजपुत्र।
३–वैश्यव्यवसाय के लिये सर्वत्र वायु वत प्रवेश करने वाला। ४–शूद्र–शारीरिक कर्म स श्रम में तत्पर।
५–तस्कर=चोर। ६–वरिहा=सैनिक।
७–क्लीव=नपुंसक। ८–अभोगू=लोहे के हथियारों का नियन्ता।
९–पुंश्चलू=वैश्या।
(६) १०–मागध=भाट। ११–सूत=(काव्य रचयिता)
१२–शैलूष=नट, १३–सभाचार=(सभा में विचरने हारा)
१४–भीमलभ=भयंकर कार्य वाला। १५–रेभु=(शंसक)
१६–कारि=उपहास कर्त्ता। १७–स्त्री सखा
१८–कुमारी पुत्र। १९–रथकार
२०–तक्षा (बढ़ई)
(७) २१–कौलाल (कुम्हार) २२–कर्मार=सजावट करने वाला।
२३–मणिकार
२४–वप=(मेधावी) २५–इषुकार (बाण कर्त्ता)
२६–धनुष्कार २७–ज्याकार=(प्रत्यंचा)
२८–रज्जु सर्ज (रस्सी बटने वाला) २९–मृगयु (व्याध)
३०–श्वनी=(कुत्ता पालक)
(८) ३१–पौञ्जिक (धानुक) ३२–नैषाद
३३–दुर्म्मद (दुष्ट) ३४–व्रात्य
३५–उन्मत्त ३६–अप्रतिपद=(संशयी)
३७–कितव=ज्वारी ३८–अकितव
३९–विदलकारी=(टुकड़े-करने वाला)। ४०–कण्टकीकारी=(कांटे बोने-वाला)।
(९) ४१–जार ४२–उपपति
४३–परिवित्त=(जिसका छोटा भाई विवाहित हो, वह क्वांरा ज्येष्ठ) ४४–परिविदान
४५–एदिधिषु:पति
४६–पेशाकारी=(श्रृंगारी वैश्या)
४७–स्मरकारी (दूती) ४८–उपसद
४९–अनुरुध ५०–उपदा—घूस देने वाला
(१०) ५१–कुब्ज ५२–वामन
५३–स्राम ५४–अन्ध
५५–बधिर ५६–भिषज=(वैद्य)
५७–नक्षत्र दर्श=(गणितज्ञ) ५८–प्रश्नी
५९–अभिप्रश्नी ६०–प्रश्न विवाक=(वकील)
(११) ६१–हस्ति--प ६२–अश्व--प
६३–गोपाल ६४–अवि-पाल
६५–अजपाल ६६–कीनाश=(खेतिहर)
६७–सुराकार=(कलार) ६८–गृह-प=(चौकीदार)
६९–वित्त-ध (खजानची) ७०–अनुक्षत्ता
(१२) ७१–दार्वाहार-लकड़ी के काम वाला। ७२–अग्नेध
७३–अधिवक्ता
७४–परिवेष्ठा=(परोसने वाला) ७५–पेशिता=(अध्यापक)
७६–प्रकरिता
७७–उपसेक्ता ७८–उपमन्थिता=(जल्लाद)
७९–बास: पल्पूली=(धोबिन) ८०–रजयित्री-(रङ्गरेजिन)
(१३) ८१–स्तेन हृदय ८२–पिशुन=(चुगलखोर सी० आई० डी)
८३–क्षत्ता
८४–अनुक्षत्ता (बोडीगार्ड) ८५–अनुचर

८६–परिस्कन्द ८७–प्रिय वादी
८८–अश्वसाद (कोचवान) ८६–भागदुघ
६०–परिवेष्टा

(१४) ६१–अयस्ताप—सुनार ६२–निसर
६३–योक्ता-योगी ६४–अभिसर्त्ता (ADC)
६५–विमोक्ता ६६–त्रिष्ठी=(Air Hostess)
६७–मानस्कृत=(Thinker) ६८–आञ्जनकारी-अंजन लगाने वाली स्त्री
६६–कोशकारी
१००–असू-मृतवत्सा स्त्री

(१५) १०१–यमसू १०२–अवतोका-अपुत्री स्त्री
१०३–पर्यायिणी १०४–अविजाता
१०६–अतित्वरी १०६–अतिष्कद्वरी
१०७–विज र्जरा १०८–पलिकनी
१०६–अजिन सन्ध ११०–चर्मम्न=चमार

(१६) १११–धैवर (धीवर) ११२–दास
११३–वैन्द=(निषाद पुत्र) ११४–मार्गर=व्याध
११५–शौष्कल-(मच्छीमार) ११६–कैवर्त
११७–आन्द ११८–मैनाल
११६–पर्णक—(भील) १२०–किराद
१२१–जम्भक १२२–किम्पुरुष

(१७) १२३–पौल्कस—(भंगी) १२४–हिरण्यकार
१२५–वाणिज १२६–ग्लावी
१२७–सिध्मल १२८–जागरणी
१२६–स्वप्नी १३०–जन वादी-(नेता)
१३१–अप्रगल्भ १३२–प्रह्रिद

(१८) १३३–कितब १३४–आदिन वदर्श
१३५–कल्पी १३६–अधिकल्पी
१३७–समाष्थाणु १३८–गोव्यद्
१३६–गोवात=कसाई १४०–भिक्षमाण
१४१–चरकाचार्य १४२–सैलग

(१६) १४३–अर्तन १४४–भष.
१४५–बहु वार्दा १४६–मूक
१४७–आडम्बरा घात १४८–वीणावादी
१४६–तूर्णवध्म-तूणव बजाने वाला १५०–शंखध्म
१५१–वनप=वन का रक्षक
१५२–दाब-प=वनदाह रक्षक १५३–पुश्चलू-रन्डी
१५४–कारी १५५–शावल्या
१५६–ग्रामणी १५७–गणक
१५८–अभिक्रोशक-आवाज-लगाने वाला चपरासी १५६–पाणिघ्न
१६०–तलव १६१–तूणध

(२१) १६२–पीवा १६३–पीठसर्पी
१६४–चाण्डाल १६५–वंशवर्ती
१६६–खलति १६७–हर्यक्ष
१६८–किर्मिर १६६–किलास
१७०–शुक्लपिंगाक्ष १७१–कृष्णपिंगाक्ष

इनमें से बहुत शब्द रूढ़ि हैं, जिनमें न जाने किस पेशा या वर्ग का अर्थ अभिप्रेत है। उस समय की समाज व्यवस्था का भी इनसे पता लगाता है। पेशे पर आधारित जातियां बनने का यह अकाट्य प्रमाण है।

राजकीय संरक्षण के अभाव में पेशों के संघों ने अपने अनुशासन अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये एक संघ वालों में खान-पान तथा विवाह-सम्बन्ध अनिवार्य कर दिये, क्योंकि रक्त के सम्बन्ध प्रबल होते हैं। इस प्रथा से एक लाभ तो यह हुआ कि देश के करोड़ों बालक बिना किसी राजकीय शिक्षा योजना के घरों पर और मुहल्लों और जाति की बैठक-उठक में अपने उस सामाजिक कर्म विशेष में माहिर हो गये। देश के लाखों बढ़इयों व लुहारों व कृषकों ने किसी औद्योगिक स्कूल में बैठकर यह कार्य नहीं सीखा है। प्रथम संघ में अपने उस कार्य के लिये अभिमान और श्रद्धा थी, क्योंकि जातीय पर्वों पर वह अपने उस कुल-कर्म की पूजा स्तुति करता था। तीसरे वह संघ एक रक्त से सम्बन्धित होने के कारण कुल के बच्चों तथा बूढ़ों के कार्य तथा चरित्र पर निरीक्षण रखकर सम्पूर्ण समाज में दुर्व्यवस्था तथा दुराचार फैलाने से रोकता था। संघीय सामूहिक सौदे उस संघ की जातीय पचायत करती थी। और सबसे अधिक यह कि प्रत्येक नवीन विचारधारा की संस्कृति के प्रभाव में यकायक बहने से रोक सकने की सामर्थ्य वाले भारतीय संस्कार, कुल के बच्चों में भर दिये जाते थे। सारांशत: इसी प्रथा के कारण देश में हर समय वेद-पाठी-विद्वान, सफल-शासक, दान-वीर धनाढ्य तथा शारीरिक परिश्रम में गौरव समझने वाले लोग विद्यमान रहे, चाहे वह समय अवनति और दासता का ही रहा हो। इन पेशों वालों के संघ परस्पर खानपान तथा विवाहादि सम्बन्धों के नियम के कारण जाति व्यवस्था में परिणित हो गये। आज चारों वर्णों का वर्ण नाम सचमुच लुप्त है। एक पेशा एक-एक जाति के नाम का द्योतक है। भारत में एक भी सांकेतिक शब्द नहीं, जो किसी जन समुदाय का वाचक हो, और जाति के नाम से न पुकारा जाता हो। अंग्रेजी मे कास्ट (Caste) शब्द जिस अभिप्राय का द्योतक है साधारण बोल चाल में उसी को जाति कहा जाता है। परन्तु यह कास्ट शब्द जाति का समानार्थी नहीं है।

इतिहास में प्रचलित परम्परा ही किसी देश की थाती हो जाती है। हिन्दू परम्परायें दीर्घकाल से जाति प्रथा पर केन्द्रित हैं और जाति प्रथा ने संस्कृति और सभ्यता का निर्माण किया है और बनाये रक्खा है। नाना प्रकार की राजनैतिक और सामाजिक एवं दार्शनिक उथल पुथल के बाद भी यह प्रथा कायम है। पेशों से प्रारम्भ होकर अब वह जन्म तथा वंश पर आधारित हो गई है। वंश-गौरव प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर विराजमान है। सभी की आकांक्षा यह होती है कि औरों की अपेक्षा मेरा मान और गौरव अधिक समझा जावे। अतः हर व्यक्ति और हर इकाई इस गौरव को पाने और बढ़ाने के लिये सतत प्रयत्न-रत रहती है। जातियों की स्थिति को दृढ़तर बनाये रखने में इस मनोवैज्ञानिक तथ्य का विशेष हाथ है।

१.०४.०६ वंशगत प्रभाव से जातियां

मिस्र

वास्तव में सभी देशों में नाना भाव से वंशगत कौलीन्य या जाति भेद की उत्पत्ति के भाव प्राप्त होते हैं। मिश्र अत्यन्त प्राचीन सभ्यता का देश है। बहुत प्राचीन काल में वहां भी जमीदार, श्रमिक और क्रीतदास (गुलाम) ये तीन श्रेणियां थीं। वहां भी योद्धा और पुरोहित का वंशगत गौरव बहुत ऊंचा माना जाने लगा था। चीन में भद्र-श्रेणी, किसान, शिल्पी और वणिक यह चार श्रेणियां थीं तथा ऐटा और हिनन लोग अन्त्यजों के समान थे। हां उनको परस्पर मिलना-जुलना तथा रोटी-बेटी का सम्बन्ध वर्जित न था। अफ्रीका, फिजी, प्रशान्त महासागर के नाना द्वीप और वोर्नियों में भी वंशगत जाति का विचार है। मैक्सिको में तो स्पष्ट तीन जातियां हैं। स्थानीय लोग उत्तम हैं, मिश्रित लोग मध्यम हैं और आदिम जातियां अधम कही जाती हैं। अरब के दक्षिण प्रदेशों में कारीगर को अन्त्यज का दर्जा दिया गया है। उन्हें गांव या नगर के बाहर बसना पडता था। फैदरमैन साहब ने लिखा है इससे भी अभागे वे अन्त्यज हैं जो निष्ठा वान मुसलमान होकर भी मस्जिद में प्रवेश नहीं पा सकते। इंग्लैंड में भी ऐग्लो-सैक्शन युग में ऐसी ही वंशगत व्यवस्था थी। ग्रीस और प्राचीन जरमनी में भी अभिजात लोगों की एक श्रेणी है। आचार्य घल्ला का कथन है कि ईरान में भी चार वर्ण थे। उनके धर्म ग्रन्थ जिन्दाबस्ता में स्वयं चार वर्णों की चर्चा है। इस प्रकार सारे विश्व में वंशगत श्रेणी भेद पाया जाता है। हां परस्पर खान-पान में छुआ-छूत नहीं है। कहीं-कहीं शादी सम्बन्ध भी होते हैं। भारत में प्रायः एक जाति दूसरे में विवाह नहीं करती है। प्रारम्भ में स्मृतिकारों के सिद्धान्तानुसार वर्गों में परस्पर अनुलोम और प्रतिलोम विवाहों से जातियां बनी। आर्य और आर्येतर लोगों के विवाह सम्बन्धी से भी कुछ नई जातियां बनी, क्योंकि आर्यो के सामने शक, हूण, यूनानी तथा-आदिवासी सभी को विशाल (हिन्दु) क्षेत्र में हजम करने की समस्या थी। बह/इन सबको भिन्न/भिन्न जाति में दीक्षित करके हल की गई। इन के उदाहरण हैं भील, डोम, जाये गूजर, जाट और अहीर आदि

प्रतिलोम पद्धति—जातो नार्यमनार्यायामार्यादार्यो भवेद् गुणैः।
जायोप्यनार्य्यादार्य्यायामनार्य्य इति निश्चयः॥
मनु० १०।६७

[आर्य से अनार्य नारी में उत्पन्न बालक अनुकूल गुण होने पर आर्य कहलावेगा। परन्तु अनार्य से आर्यों में उत्पन्न बालक निश्चय ही अनार्य है)।] यह सिद्धान्त जातियां बढ़ाने का द्योतक न होकर अपनी कन्या अनार्यो में न देने के लिये प्रतिबन्ध का एक नियम मात्र है। अनुलोम पद्धति के कुछ उदाहरण मनु ने दिये हैं—

निषादो मार्गव सूते दास नौकर्मजी विनम्।
कैवतमिति य प्राहुरार्य्यावर्त-निवासिनः॥
मनु० १०।३४

शूद्रा स्त्री में ब्राह्मण से उत्पन्न निषाद कहलाता है। वह निषाद अयोगवी स्त्री में दास नामक मल्लाह उत्पन्न करता है। यहाँ कुछ और अनुलोम विवाहानुसार दिये जाते हैं:—

पुरुष		स्त्री	सन्तान की आर्य क्षेत्र में बनी जाति
ब्राह्मण पुरुष	+	क्षत्राणि	—कैवर्त्त
ब्राह्मण पुरुष	+	वैश्य स्त्री	—अम्बष्ठ
ब्राह्मण पुरुष	+	शूद्र स्त्री	—निषाद
क्षत्री पुरुष	+	वैश्य स्त्री	—माहिष
क्षत्री पुरुष	+	शूद्र स्त्री	—उग्र
वैश्य पुरुष	+	शूद्र स्त्री	—करण

१.४०.०७ एक और दृष्टिकोण

जाति व्यवस्था के निर्माण और पक्ष में जैन शास्त्रों ने एक अभूत पूर्व तर्क दिया है। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा निभ्रम और शुद्ध-मुक्त स्वभावी है। परन्तु कर्म के भौतिक परमाणुओं को वह अपनी ओर आकृष्ट करता रहता है, और बंधन में फंसा रहता है। यह कर्मिक शक्ति (अणु) बहुत छोटे होते हैं और आत्मा से जाकर चिपट जाते हैं और आत्मा को तरह-तरह के कर्मों में लिप्त करते हैं तथा मृत्युपरान्त भी उसके साथ रहते हैं, तथा कर्मानुकूल योनि में आत्मा को खींच ले जाते हैं। यह कर्मिक शक्ति (अणु) ८ प्रकार के हैं:—

१) ज्ञानावर्णीय—जो आत्मा से चिपटकर उसके-ज्ञान पथ को अवरुद्ध कर देते हैं।
२) दर्शनावर्णीय—जो आत्मा को सत्य पथ देखने नहीं देते।
३) वेदनीय— जो आत्मा को सुख-दुखः लाभ को प्रेरित करते हैं।
४) मोहनीय— जो आत्मा को मोह लेते हैं।
५) आयु— जो आत्मा को पूर्ण आयु मिलने देनेमें बादक होते है।
६) नाम जो मनुष्य के शरीर का नाम, रूप, रंग, चाल इत्यादि निश्चय करते हैं।
७) गोत्र— वे अणु जो निश्चय करते हैं कि जीव किस परिवार या जाति में जन्म लेगा।
८) अन्तरीय— सत्कर्म के बाधक अणु।

अर्थात प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी जाति में जो जन्म लेता है; वह अपने कर्मों के अनुसार विशेष क्रमिक अणु के प्रभाव से स्वयमेव मिलता है। अस्तु एक जाति के व्यक्ति एक ही प्रकार के कर्मिक अणु से उद्वेलित हैं। यह जाति प्रथा को अध्यात्मिक स्तर पर ला छोड़ने वाली फिलासफी है। हम उनकी एक पुस्तक का उद्धरण देते हैं—

Jainism by Herbert Warren publi hed by Jain Granthmala Bhava Nagar Page : 38--

"The energies which come in this class are those which determine the surroundings. family ete in to which we are born. There are two Sub divisions of this class namely, the force which takes us to high family circumstances. and that force which takes us into low circumstances."

यह गोत्र कर्मिक परमाणु दो प्रकार के होते हैं। एक तो वे जो हमें ऊंचे परिवारों में ले जाते हैं और एक वे जो नीचे परिवारों में। जैन धर्म में निरामिश भोजी ऊंची कोटि के परिवार है।

१.०४.०८ स्थान-वाचक जातियां

जो एक स्थान पर बस गये उन्होंने अपने जन्म स्थान का नाम अपने साथ लगा लिया जैसे अयोध्यावासी वैश्य, मध्यदेशीय व सरजूपारी और कन्नौजिया-ब्राह्मण, चौरसिया—बढई, जैसवार—बनियाँ आदि। पुराने जनपदों के नाम पर भी कुछ जातियाँ बनी हैं—(१) क्षत्रिय गण से खत्री (२) आग्रेयगण से अग्रवाल तथा अरत्तगण से अरोडा।

१.०४.०८ एक पूर्व-पुरुष से उत्पन्न लोगों की जाति

यह भी भाव कहीं पाया जाता है कि एक जाति के लोग एक पुरुष की सन्तान हैं चाहें वह व्यक्ति काल्पनिक ही क्यों न हो। उस पुरुष की उनमें पूजा होती है। ऋग्वेद १/१०५/५ में यदु, तुर्वसु, द्रुह्यु, अनु, पुरू वंशक जातियों का उल्लेख है।

१.०४.०९ धार्मिक सम्प्रदाय वाली जातियां

धार्मिक सम्प्रदायों ने भी जातियों की संख्या बढ़ाई है जैसे सिक्ख विश्नोई, गुसाईं, जोशी, और लिंगायत। इनका प्रारम्भ तो धार्मिक कारणों से हुआ था, पर इनके सम्बन्ध गूढतर होने से परस्पर विवाहादि इनमें ही होने से वे अलग जाति हो गई। आर्य समाजियों में भी एक प्रथक जाति बन जाने का आन्दोलन चल रहा हैं।

१.०४.०९ आधुनिक समय में भी जातियों का निर्माण

और अन्त में जातियों के अधुना निर्माण के सम्बन्ध में एक अंग्रेज इतिहासकार के विचार उद्धृत करते हैं :—

"The Process of caste making has indeed by no means come to an end. Fresh castes are constantly being formed and wherever we can trace the stages of their evolution, they seem to proceed on the lines followed in the traditional scheme. The first stage is for a number of families who discover in themselves some quality of social distinction, to refuse togive their women in marriage to other members of the caste from whom never the less they continue to take their wives. After a time when their numbers have bred women enough to supply material for a sub-communinty of their own, they close their ranks marry only among themselves and pose as a superior sub-cast of the main cast to which they belonged. Last of all they break all connections with the parent stock, assume a new name which ignores or disguises their original affinities and claim general recognition as a distinct caste

—Sir, Harbert Rislay's "The Peoples of India"

सर हरबर्ट रिजले साहब अपनी पुस्तक "प्युपिल्स आफ इण्डिया" में लिखते हैं :—

जातियों के निर्माण की श्रृंखला का अभी अन्त नहीं हुआ है। निरन्तर नई जातियां बनती और बढ़ती जा रही हैं। जहां कहीं उनके निर्माण की प्रक्रिया को ढूंढा जा सका है, वहां वही पता लगा है कि यह वही पुरानी प्रणाली है।

पहिला कदम इस प्रणाली का यह है कि प्रारम्भ में थोड़े से परिवार जिन्होंने अपने सामाजिक स्तर में सामन्तता पाई, अपनी लड़कियां जाति के और सदस्यों को देना बन्द कर देते हैं पर उनकी लड़कियों से विवाह करते रहते हैं। कुछ समय के बाद जब उनकी संख्या बढ़ जाती है, और उनमें जब इतनी लड़कियां हो जाती हैं जिनसे पृथक वंश चलता रहे, तब वे परस्पर ही लड़कियां लेते देते रहते हैं और अपने को मुख्य जाति से ऊंची उप जाति कहने लगते हैं।

और अन्त में मुख्य श्रोत वाली जाति से पूरा नाता तोड़कर नया नाम रख लेते हैं ताकि उनका पुरानी जाति से कोई सरोकार न दिखाई दे और वे पृथक जाति प्रतीत हों।"]

इसका उदाहरण त्यागी ब्राह्मणों का खेतिहर होने पर तथा भार्गव ब्राह्मणों का व्यापारी बनने पर पृथक जाति में सगठित होना है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कुछ माहौर वैश्य अपने को माथुर कहने लगे तथा कुछ मथुरिया अग्रवाल।

१.०४.१० प्राचीन वाङ्मय में जाति

जाति का अर्थ है व्यक्तियों का एक समूह जिसके रक्त का श्रोत एक जगह से हो परन्तु आधुनिक परिपेक्ष्य में वे परिवार जिनका एक नाम है, एक अग्रज हो (चाहे वह वास्तविक हो या काल्पनिक) तथा जिनका समान पेशा हो, वे एक जाति के कहे जावेंगे।

स्थान-स्थान पर मध्यकालीन साहित्य में देखने पर मिलता है कि कर्मानुसार वर्ण और उक्त परिभाषानुसार जाति, हिन्दू-समाज की एक विशिष्ठता है। वह विचित्र समाज संगठन-प्रणाली किसी अन्य देश में नहीं है। और यह संगठन बहुत बहुत प्राचीन है।

[अ] बालमीकि रामायण में जाति प्रथा का उल्लेख

रामायण में जाति प्रतिष्ठान के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई है। स्वयं बालमीकि जी कथानकों के अनुसार लव-कुश के समकालीन थे। अतः यह निश्चय ही सतयुग की बात हैं। युद्ध-काण्ड के ४२ वें सर्ग में मेघनाथ के युद्ध का वर्णन है। जब मेघनाद ने विरोधी पक्ष की ओर से विभीषण को लड़ते देखा तो उससे रहा न गया। रक्त में उबाल आया। विभीषण की भर्तस्ना करते हुये श्लोक ११-१२-१३ में वह कहता है :—

इह त्वं जातसंवृद्धः साक्षाद्भ्रातापितुर्मम ।
कथं द्रुह्यसि पुत्रस्य पितृव्यो मम राक्षस ?
न ज्ञातित्वं न सौहार्दं न जातिस्तव दुर्मते ।
प्रमाणं न च सौंदर्यं न धर्मोधर्मं दूषण ।।
शोच्यस्त्वमसि दुर्बुद्धे निन्दनीयश्च साधुभिः ।
यस्त्वं स्वजनमुत्सृज्य परभृत्यत्वमागतः ।।

ऐ राक्षस ! यहां तू जन्म लेकर बड़ा हुआ। मेरे पिता का भ्राता तथा मेरा चाचा होकर कैसा द्रोह करता है ? ए दुर्मते, न जन्म, न सौहार्द, न जाति-अभिमान, तुझे प्रमाण है। और ए धर्म दूषक ! सगे भाई होने तथा धर्म का भी तुझे कोई विचार नहीं। ए दुर्बुद्धि, तू शोचनीय तथा साधुओं से निन्दित है जो अपने जन (जाति-भाई) को छोड़कर शत्रु का भृत्य बना हुआ है।

(ब) महाभारत में जाति व्यवस्था का उल्लेख।

महाभारत युद्ध के अन्त में विजयी युधिष्ठर पुनः वन को जाने को उद्यत हो गये थे। तब पहिले व्यास ने और फिर भीष्म ने उन्हें राजधर्म का उपदेश दिया था। उसी क्रम में वह कहते हैं :—

निकृतस्य परैरन्यैर्ज्ञातिरेव परायणं।
नान्यो निकारं सहते ज्ञातिर्ज्ञातिः कथञ्चन।
॥शान्ति पर्व—अ० ११।१५॥

दूसरों से अनादर पाने पर अपनी जाति ही सहारा हुआ करती है। जाति-जन अपने जाति-जन का दूसरों से अनादर नहीं सह सकता।

समानयेत्पूजयेच्च वाचा नित्य च कर्मणा।
कुर्याच्च प्रियमतेभ्यो नाप्रिय किंचदाचरत॥
॥ वहीं अ० ११ श्लो० १६॥

नित्य वाणी तथा कर्म से जाति भाई का सम्मान करे। सदा उस के भले की ही कामना करे। अप्रिय की नहीं।

ऐसे ही आगे चल कर अनुशासन पर्व में भीष्म फिर उपदेश देते हैं।

ज्ञाति सम्बन्ध मित्राणि पूजनीयानि सर्वशः।
यष्टव्य च यथा शक्ति यज्ञैर्विविधि दक्षिणैः।
॥अ० ६ श्लो० १८॥

जाति के सम्बन्धी मित्रों का यथा शक्ति यजन करो और उन्हें भेंट दो।

(स) महर्षि पाणिनि कृत अष्टाध्यायी व्याकरण में जाति का उल्लेख इस प्रकार आया है :—

ब्राह्मोऽजातौ ॥६-४-१७१
योग विभागोऽत्र कर्त्तव्यः
ब्राह्म इति निपात्यते।
अनपत्येऽणि। ब्रह्मा हविः।
ततौ जातौ। अपत्ये
जातावरिण ब्रह्माणष्टि—
लोपो न स्यात ब्रह्मणेऽपत्य ब्राह्मणम्॥
क्षत्राद् घः ॥ ४-१-१३८
क्षत्रियः। जाताविल्येव
क्षत्रिरन्यः। शूद्राचामहत्पूर्ण जातिः।

(यहाँ भी ब्राह्मण क्षत्री आदि को जाति करके लिखा है) और तो और आर्यों के आदि ग्रंथ ऋग्वेद में भी जिन तृत्सुओं ने सुदास के आधीन युद्ध करके भेद नाम के योद्धा को हराया था, उनके दल में योद्धाओं की कई जातियों का उल्लेख है। एक जाति का नाम था अज (अजासश्च शिग्रवोयक्षवश्च) [ऋ० ७।१८।१९] अज और शिग्रु भी कोई जाति हैं। इसी सूक्त में मत्स्य—मछली नाम की जाति का उल्लेख है। रिक्ष तथा बानर नाम्नी जातियां तो रामचन्द्र जी के समय में भी थी। कौशतीक उपनिषद में गार्ग्यवतादि के मत्स्य देश में रहने की कथा है। छान्दोग्य उपनिषद में तो जाति का उल्लेख पदे-पदे है। एक ऋषि अपने को शूद्र पुत्र कहता है, दूसरा गणिका का। इन सब उद्धरणों से सिद्ध है कि जाति हमारे प्राचीनतम वाङ्मय के समय से देश में व्याप्त है।

१.०४.११ जाति के साथ पांति की प्रथा

अपने राज्य या शासन की प्रणाली प्रत्येक देश स्वयं निश्चय करता है। सबसे महत्व की प्रथा विकेन्द्रित इकाइयों द्वारा शासन और तुरन्त न्याय का मिलना है। प्रिन्स क्रोपाटकिन ने जो समाज पद्धति पूरे तर्क तथा विज्ञान के आधार पर सोची थी वह साम्यवाद से भी आगे जाती है। वह आदर्श समाज के लिये राज्य को अनावश्यक समझता था। उसका कहना है कि विभिन्न उत्पादन करने वाले सहकारी संघों की एक बैठक होगी। वह अपने में से निरुद्यमी अथवा कामचोर मजदूर को स्वयं दंड देगी। उनका सामाजिक बहिष्कार कर देना आदि ही ऐसे पर्याप्त दण्ड हैं जो उसको सुमार्ग पर ला देंगे। आजकल इसे Political Pluralism व्यवस्था कहा जाता है।

पुरानी जातिगत गिल्डस व समितियों पर भी यही शस्त्र था जिससे यह संतुलन कायम रखती थी। जातियों के पास पाँति का ही तो दण्ड था जो कि समाज में जनहित सम्बन्धी कार्यों पर अनुशासन रखता था।

यों तो पांति (या पङ्क्त) पंक्ति शब्द का अपभ्रंश है जिसका अर्थ कतार है ! पुराणों और स्मृतियों में हव्य-कव्य के ग्रहण के सम्बन्ध में ब्राह्मणों की एक पंक्ति में बैठने की पात्रता पर विचार किया गया है। मनुस्मृति अध्याय ३ में इस पात्रता के सम्बन्ध में जो लिखा है उसका अनुवाद निम्न प्रकार है :—

"धर्मज्ञ पुरुष देव कर्म (हव्य) में आचार, विचार, विद्या, कुल शील की जांच करें। और निम्नलिखित व्यक्तियों को ज्योनार की पंक्ति से न बिठायें-चोर, पतित, नपुंसक, वेदरहित, अजितेन्द्रिय, जुआरी, मांस बेचने वाला, दैत्य-वृत्ति, गुरु-मात-पिता विरोधी, अग्नि त्यागी, चन्दा हड़प जाने वाला, कत्थक, शूद्रापति, उपपति सहने वाला, वेतन देकर पढ़ने-पढ़ाने वाला, कटुभाषी, आग लगाने वाला, विष देने वाला, मादक द्रव्य बेचने वाला, मित्र-द्रोही, पुत्र का शिष्य, कुत्तों और पक्षियों का शिकारी, कन्या-दूषक, हिंस्र, शूद्रवृत, चरित्रहीन, कोढ़ी, क्षय-रोगी, श्वेत-कुष्ठी, मुर्गी पालने वाला, पीला पाँव वाला, और चुगलखोर इत्यादि।

उक्त वर्णन से स्पष्ट होगा कि स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्जित व्यक्तियों को छोड़कर अन्य ऐसों ही को पांति (सहभोज) से बाहर करने का आदेश है जो कर्म या वृत्ति के कारण कुपात्र हों।

शासन के केन्द्रीयकरण, अदालतों की स्थापना, मुकद्दमों में झूठी कसम पर दी हुई झूठी गवाहियों के आधार पर दिए गए निर्णय व फैसलों के कारण पञ्चत की प्रथा लुप्त प्रायः हो गई है।

वास्तव में साथ बैठकर खाना इतना महत्वपूर्ण है जिसके लिये मनुष्य मनमार कर भी अनुशासन और मर्यादा में रहता था। उस अधिकार के छिन जाने पर वह सदा उसे पुनः पाने के लिये लालायित भी रहता था। साथ भोजन-पान करने का बड़ा मनोवैज्ञानिक महत्व है। पश्चिमी कहावत है कि संसार में सब बड़े प्रश्न और राजनैतिक विवाद तथा उनके हल क्लबों में ढूंढ़े गये थे। भला ऐसे समाज से बाहर होना किसे रूचेगा ?

थोड़े से सुधार के साथ हम अपनी पाँति की प्रथा को राष्ट्रहित साधन में लगा सकते हैं। यह विशुद्ध वैज्ञानिक व आधुनिक अराजक समाजवाद का भारतीय रूप है। जाति अनुशासन एक प्रकार का प्रजातन्त्रीय अनुबन्ध है जो स्थान-वाचक न होकर सामाजिक है और अपने घटकों का जीवन नियन्त्रित करता रहा है।

१.०४.१२ जातीय अनुशासन से सामाजिक लाभ।

जातियों के अनुशासन ६ दिशाओं में कार्य करते रहे हैं :—

(१) खान पान की एक पद्धति तथा यह कि किसके हाथ का खायें और किसके का नहीं।
(२) वैवाहिक सम्बन्धों का क्षेत्र (३) पति-पत्नी के बीच सम्बन्ध।
(४) परिवार का चलन-व्यवहार (५) अभक्ष्य पदार्थों से बचाव तथा
(६) पर्वों और संस्कारों विशेषकर विवाह के समय के रीति रिवाज।
(७) अपने पेशे के सम्बन्ध में ईमानदारी और गोपनीयता के नियम।

प्रायः यह धारणा बन गई है कि जाति तथा जाति-सभाओं से सम्बन्धित सब बातें हेय हैं। राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी आत्मकथा में तीन पृष्ठ अपनी उस गतिविधि के बारे में लिखे हैं जिनका उस समय से सम्बन्ध है जब वे कायस्थ महासभा के प्रधान थे। उन्होंने जातीय सभाओं द्वारा सामाजिक क्रांति की संभावना पर अपने विचार प्रगट किये हैं और उन प्रस्तावों को विस्तार से लिखा है जो उन्होंने कायस्थ महासभा के वार्षिक अधिवेशनों में पारित कराये थे और जिनसे कायस्थों से समस्त उपवर्ग एक हो गये तथा वे कुरीतियों का निराकरण कर सके।

यद्यपि पेशों पर आधारित समूहवाद से जन्म-गत जातियां प्रारम्भ हुई पर शीघ्र ही उनमें स्वतंत्रता विवाह सम्बन्धों से कायम की गई। टैकनीकल स्कूलों के अभाव में इन पेशों की ट्रेनिंग बाप-दादा से यों ही मिलती जाती थी। रीति-रिवाज, धार्मिक-परम्परायें देवी-देवता तथा उनकी संस्कृति-यह सब जाति प्रथा ने ही जीवित रखे हैं। राजनैतिक दासता (मुसलमानी तथा अंग्रेजी राज्य) में जाति प्रथा ही हमें मुसलमान तथा ईसाई बनने से रोके रही है। जाति प्रथा के बिना हमारे संस्कार पद्धतियाँ व हमारी संस्कृति सब नष्ट हो गये होते। आज जो साम्यवाद और समाजवाद का धर्म फैल रहा है, वह लोगों को परिवार, धर्म, पंचायत, नैतिकता सबसे दूर खींचता जा रहा है। केवल पुरखों की दी हुई एक ढाल हमारे पास है और वह है जाति की प्रथा और श्रृंखला जो हमें धार्मिक, भारतीय तथा हिन्दू बनाये रक्खेगी। इसमें यत्र-तत्र जो सुधार अपेक्षित हैं उन्हें प्रत्येक जाति की जातीय सभायें ला ही रही हैं। जाति आन्दोलन तथा जाति-संगठन. भारतीय-संस्कृति तथा परम्परा को जिन्दा रखने के पुनीत पहलू हैं। पुण्य के काम हैं।

यहाँ हम अपने विचारों की पुष्टि में स्व० दीवान हरविलास शारदा रचित पुस्तक "हिन्दू-सुपीरियोरिटी" के कुछ अंश उद्धृत करते हैं।

"यूरोप और अमरीका के विद्वान जाति प्रथा की प्रतिभा के विषय पर मनन करते रहे हैं। जब वस्तुओं के विकासवाद के सिद्धान्त को समाज व्यवस्था पर लागू किया जायेगा और उसकी सम्यकतया ऊहा-पोह की जावेगी, तब निश्चय ही इस प्रणाली की विशेषता प्रगट होगी। यह प्रणाली वर्तमान स्वरूप में भी बहुत बड़ी बाधा नहीं रही है। इससे हिन्दू समाज के ढांचे के आधार की बहुत कुछ रक्षा हुई है। फलतः इसके लक्ष्य में सामाजिक सुरक्षा और उन्नति दोनों ही थीं। सामाजिक संगठन के इस आधार के कारण ही आर्यजाति उन विविध भयंकर राजनैतिक झंझाबातों और धार्मिक आघातों को नष्ट हुए बिना सहन करने में समर्थ रही है जो गत सहस्रों वर्षों से उस पर होते रहे हैं। जाति प्रथा ने समाज में व्यवस्था और दृढ़ता बनाये रखने का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है और अब भी कर रही है।"

युरोपियनों की दृष्टि में इस प्रणाली का महत्व क्या है; इसका परिचय श्रीयुत सिडनी (Sidney) कृत ए विजन आफ इण्डिया, [भारत की एक झांकी] नामक पुस्तक से सहज ही मिल जाता है। ग्रन्थकार लिखते हैं "इसमें कोई सन्देह नहीं कि उस मूलभूत दृढ़ता और शांति का जिसका उपभोग भारतीय समाज शताब्दियों पर्यन्त करता रहा है, मुख्य श्रोत जात-पांति की प्रथा ही रही है। और इसी ने राजनैतिक आघातों और प्राकृतिक उपद्रवों से उसकी रक्षा की है। इस प्रथा से समाज में हरेक व्यक्ति एक पेशे में बंध जाता था। दूर के विवाह होने से नस्ल सुधार तथा परिचित में विवाह से रक्त रक्षा होती थी। एक ही पेशे के लोगों में काम्पटीशन बचता था। जाति प्रथा से ही प्रत्येक व्यक्ति के स्थान एवं उसके क्षेत्र का निरूपण हो जाता है। यह प्रथा प्रारम्भ से ही हिन्दू को एक संघ का सदस्य बना देती है। और यही सामाजिक अन्याय एवं अतृप्त महत्वाकांक्षाओं के अभिशापों से उसकी रक्षा भी करती है। इसी प्रथा से उसके हृदय में लोकोपकार की भावना का उदय होता है। इसी प्रथा से वह समाज के हित को अपना हित और उसके अहित को अपना अहित समझने लग जाता है। आर्यों के लिए जाति (वर्ण) व्यवस्था उसका अवलम्ब न और आत्मत्याग-संघ होने के अतिरिक्त उसके लिए कल्याणकारी समाज की सृजना भी कर देती है। भारतवर्ष में बेरोजगारों को काम पर लगाने के लिए इतिहास में विशेष संस्थानों का कहीं पर भी उल्लेख नहीं मिलता क्योंकि इनकी आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। बन्धु-बान्धवों और मित्रों को आपत्तिकाल में सहायता करने का भाव भारत में सर्वत्र पाया जाता है। इसका कारण पारिवारिक बन्धनों की दृढ़ता और वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्त से उद्भूत सम्मिलित ध्येय के बन्धन हो हैं, जिनकी उपयोगिता पर सन्देह नहीं किया जा सकता। वर्तमान स्थिति में वर्ण-व्यवस्था-विहीन भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती।"

राजनैतिक पराभव के मुस्लिम शासन वाले दिनों में जाति व्यवस्था ने हिन्दुओं को जीवित रक्खा। न केवल उनके राजनैतिक और सामाजिक अधिकार बनाये रक्खे वरन आर्थिक हित भी। यह आज साफ दीखता है कि विजेताओं द्वारा दीक्षित मुसलमान अधिकांश में कुंजड़ों सक्कों और जुलाहों के बहुमत वाली जाति बन कर रह गई हैं। वे देश के धन-वैभव के साझेदार नहीं बन सके। यह भी सत्य है कि यदि जाति-प्रथा न होती तो और अधिक लोग ईसाई व मुसलमान हो गये होते, क्योंकि राज्य शक्ति का आकर्षण और धनादि का प्रभाव प्रचुर मात्रा में था। यदि इतने अन्याय युक्त पराधीनता काल के बाद भी ८०% लोग हिन्दू बने रहे हैं, तो इसका श्रेय जाति-प्रथा को ही है।

जाति प्रथा वास्तव में विधर्मी राज्य में आत्म रक्षा के भिन्न भिन्न दल थे। भिन्न-भिन्न मान्यता वाले भारतीयों को इकट्ठा करके, बिरादरी कायम करके-हिन्दू समाज के नाश होने का मार्ग जाति प्रथा ने ही रोका और उसमें सफलता मिली।

प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता स्वर्गीय लाला लाजपतराय ने आर्य समाज का इतिहास नामक पुस्तक में इस प्रथा पर निम्न विचार व्यक्त किये हैं।

"जाति प्रथा हिन्दुओं का श्राप भी रही है और रक्षा करने वाला वरदान भी। एक ओर तो उसके सामाजिक और राजनैतिक पराभव का यह कारण बनी है परन्तु दूसरी ओर इसने उन्हें पूर्णतया छिन्न-भिन्न और नष्ट होने से बचाया है। और उनकी जातीय-राष्ट्रीयता सुरक्षित रक्खी है। जाति प्रथा ने हिन्दुओं को और सामाजिक-धार्मिक संगठनों द्वारा हजम कर लिये जाने से बचाया है क्योंकि भारत के इतिहास में समय-समय पर इन विदेशी सामाजिक-धार्मिक वर्गों ने प्रभुता प्राप्त कर ली थी।" [अनूदित]

हम अगले अध्याय में यह दिखायेंगे कि साम्यवाद के नास्तिक धर्म को भी जाति प्रथा से टकरा कर नष्ट हो जाना होगा क्योंकि जाति प्रथा ने एक साम्यवाद पहले ही बना रक्खा है। Caste system has organized Inequality so that its venom was much less जिस वर्ग विहीन सम-समाज की प्रशंसा आज की जा रही है वह जाति प्रथा में पहिले ही उपस्थित है। एक जाति के सम्पन्न व विपन्न सब बराबर होते हैं। वास्तव में हिन्दू की परिभाषा ही यह रह गयी है कि वह व्यक्ति जो किसी न किसी जाति का हो दार्शनिक रूप से चाहे आस्तिक हो, नास्तिक हो या साम्यवादी, और वेदान्ती, द्वैत-वादी या त्रैतवादी हो, धर्म-कर्म पुनर्जन्म को मानते हो या नहीं, चार्वाकी-बौद्ध हों या जैन, सनातनी या आर्य समाजी या कबीर पन्थी, साहित्यिक, वैज्ञानिक, या राजनीतिज्ञ, नेता या शासन या अखबार नवीस, हिन्दू होने की अधुना यही पहचान है कि वे किसी जाति के हों और जन्म, विवाह मरण आदि पर उस जाति के निश्चित रीति रिवाजों को मानते हों। एक ईसाई लेखक ने तो यह लिखा है कि केवल जाति प्रथा मानते रहिये और किसी सिद्धान्त में निष्ठा रखिये चाहे न रखिये, आप हिन्दू हैं इसी एक अनुशासन द्वारा हिन्दुओं के सब संस्कार आप में आजावेंगे। ऐसा विलक्षण आविष्कार स्मृतिकार हिन्दुओं को दे गये हैं जिसे नष्ट नहीं होने देना चाहिये।

यद्यपि पश्चिमी लेखक पक्षपात वश व्यक्ति-प्रथा के विरुद्ध मुख्य रूप से अछूतों और मुसलमानों को भड़काने के उद्देश्य से प्रचुर प्रचार करते रहे हैं पर उनमें कुछ निष्पक्ष विचारक भी हैं। सिडनी वेब का मत पीछे आ चुका है। यहां कुछेक मत और देते हैं :—

(1) In his book "Caste in India".
J. H. Hutton says :—

"The Caste System in India has been an unique institution and the most important of its function has been to integrate Indian Society, to wield it into one community its various competing groups. It acts as a political stabiliser and as a preservative of India from a disorderly government, as a defence against despotism and as a means of preserving Hindu Culture under the regimes of alien conquerors".

[नोट—जाति संगठन का एक विख्यात लाभ यह भी है कि जब आर्य यहां आये तब अनेक जातियों के लोग यहाँ बसे हुये थे। अत: उन्हें एक समाज में बांधने के उद्देश्य से भी उन्होंने जाति प्रथा का आश्रय लिया।]

कालान्तर में भारत में जो और लोग आये जैसे मगोल, यूनानी, शक, हूण, आभीर, यूची आदि–उन्हें भारतीय सांचे में ढाल लेने में भी जाति प्रथा का योगदान रहा।

हरेक वर्ग अपनी जाति में अपने पारिवारिक ढांचे को सुरक्षित रख सकता था।

(2) Abbe Debois considered the Caste System of the Hindus the happiest effort of their legislation.

(3) Vedic oriented Social Order tends to direct all human activity towards the Evolution of man. Alex Carrel has said.

(4) In his book "Brahmanism & Hinduism" Sir Monier Williams observes :—

"Caste has been useful in promoting self-sacrifice, in securing sub-ordination of the individual to an organised body, in restraining from vice and in preventing pauperism.

(5) Likewise Meredith Townsent points out in his book "Europe & Asia" :—

"I firmly believe Caste to be a marvellous discovery and a form of Socialism which through ages has protected Hindu Society from the worst evils of industrial competetion. It may be a poor law to begin with, but it is the strongest form of Trade Unionism".

१.०.१३ जाति-प्रथा साम्यवाद की रोक है।

रूस देश से प्रबल झंझावात उठी है। जो सब पुरानी मान्यताओं को भस्मीभूत करती हुई तथा नये मूल्यों का निर्माण करती हुई इधर बढ़ी आ रही है 'सबसे उनकी सामर्थ्य नुसार कार्य कराओ और सब को उनको आवश्यकतानुसार भोग्य पदार्थ दो'। बड़े सुनहरे प्रभात का आकर्षण है। जहां तक उत्पादन और उसके वितरण का प्रश्न है,

और प्रत्येक वयस्क व्यक्ति के लिये रहन-सहन के सन्तोष प्रद ढांचे की गारन्टी करने का प्रश्न है, किसी को कोई मतभेद नहीं है। प्रभु की सृष्टि की विपुलता उसके मानस पुत्रों के लिये ही है उससे उसे वंचित करना पाप है। जिसे मानुष का चोला मिला है उसे शिक्षा पाने, समय पर पुष्टि पूर्ण भोजन करने, अपने एक निजी मकान में रहने और लगभग ५-६ घंटे काम करके यह सब साधन प्राप्त करने तथा शेष समय को कला, सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में खर्च करने का अधिकार है।

परन्तु इस लभानी व्यवस्था के साथ साम्यवाद और भी कई चीजें लाता है जो कदापि वांछनीय नहीं हैं। वह सारे इतिहास के भौतिक विश्लेषण में आस्था रखता है। उसका उद्घोष है कि भौतिक आवश्यकताओं को जुटाना ही मानव का महान उद्देश्य है। अस्तु आत्मिक तथा परोक्ष की दुनिया से उसे कोई सरोकार नहीं है। ईश्वर, राष्ट्रीयता, राष्ट्र-विशेष की संस्कृति व परम्परा और थाती, यह सब उन्हें नष्ट करने योग्य रूढ़ियां ही जचती हैं। वे मनुष्य के व्यक्तित्व और उसके विकास जैसी बात को नहीं मानते। व्यक्ति समाज नामक वृहत-मशीन का एक पुर्जा है, उसी के लिये उसे मशीन वत कार्य करते रहना चाहिये। ज्ञान और प्रेम सब काल्पनिक हैं। सारी दुनिया एक परिवार है। उससे उतर कर कोई छोटी इकाई ऐसी नहीं रहने दी जावेगी जिसे मनुष्य अपनी कह कर अपना प्रेम और त्याग उस पर केन्द्रित कर सके। स्पष्टत: इस व्यवस्था में परिवार और पत्नि दोनों नहीं होंगे। पत्नी शब्द के साथ जो संस्कार और इतिहास लगा है, वह उसे असह्य है। पत्नी की अवस्था को वह उस की आर्थिक आवश्यकता और पुरुष की वासना पूर्ति का क्रय-विक्रय मात्र समझता है। सम्मिलित परिवार को वह कुछ निठल्लों को व्यर्थ में भोग्य-पदार्थ मिलने देने का उपाय मात्र बताता है। परिवार की इकाई को साम्यवाद व्यर्थ का पचडा समझता है। साफ है कि परिवार के समाप्त होते ही जाति भी समाप्त हो जाती है। जब तक परिवार है, सगे-सम्बन्धी का रिश्ता है, रक्त की एकात्मता है, पति पत्नी की वे हो मान्यतायें हैं जो विरासत में हमें अपने पुरखाओं से तथा स्मृतिकारों से प्राप्त हुई हैं, तभी तक जाति रहेगी। साम्यवादी दार्शनिक ने यह बात समझी और परिवार की इकाई को नष्ट करने के लिये निम्नलिखित सुझाव दिये। रूस आदि देशों में उन पर कार्य किया जा रहा है। साम्यवाद कहता है कि जब तक परिवार रहेगा, व्यक्ति परिवार को समाज से ऊपर मानता रहेगा। वह अपने राष्ट्रीय भूत के साथ एक कडी जोड़े रहेगा। अत: साम्यवादी समाज के निर्माण में बाधा उपस्थित होगी। परिवार नष्ट करने के कुछ साम्यवादी प्रोग्राम निम्न प्रकार हैं :—

१—प्रत्येक व्यक्ति के लिये आर्थिक कठिनाइयाँ उपस्थित कर दी गई है। रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठाने का नारा, हर किसी को दिया गया है, जितना कुछ एक व्यक्ति श्रम करता है, उसको उतना ही पारिश्रमिक साम्यवाद सरकारी देती है, जितने में वह अकेला ही सुख पूर्वक रह सके। न कुछ बचेगा, न माँ बाप को देगा अथवा भाई बहिन में बांटेगा। परिवार नष्ट हो जावेगा।

२—पांच-साला, दस-साला योजनायें आदि इस प्रकार बन रही हैं। जिनमें उसे हमेशा अधिक ओवर-टाइम श्रम करने की प्रेरणा व प्रलोभन दिया जावेगा। उस पर समय ही न बचेगा जो कि वह स्त्री बच्चों में काट सके। वह रात्रि को थका मादा जाकर घर में लथपथ हो सो रहेगा।

३—राजकीय कार्यों में अविवाहितों को तरजीह दी जावेगी।

४—राज्य जो क्वाटर इत्यादि बनावेगा, वे एक दो कमरे के होंगे, जिनमें वह अकेला ही रह सके। वह अपने साथ स्थानाभाव से मां-बाप या परिवार के किसी अन्य सदस्य को नहीं रख सकेगा।

५—सिनेमा खेल-कूद तथा मनोरंजन के साधन सस्ते में या फ्री प्राप्त कर दिये जावेंगे। युवक और श्रमिक मनोरंजन के लिये घर और स्त्री की ओर नहीं भागेंगे।

६—विभिन्न प्रकार के बौद्धिक शिक्षण केन्द्र खोल दिये जावेंगे। श्रमिक को प्रोत्साहन दिया जावेगा कि वह काम से बचा खुचा समय इन क्लबों में बिताये न कि घर, गृहस्थी और बच्चों में।

७—होटलों का खाना सस्ता पड़ेगा। सुन्दर आकर्षक होटल बनाये जावेंगे ताकि मनुष्य वहीं पर भोजन करके तृप्ति प्राप्त कर लें।

८—सह-शिक्षा को प्रोत्साहन देना।

९—तलाक की प्रथा का प्रचलन।

१०—परिवारों के इन्सपेक्टर नियुक्त करना। वे घरों को सुविधा और प्रबन्ध में सहायता के नाम पर घरों में जाकर परिवार तोडने का प्रोत्साहन देंगे। वे परिवारों का बजट भी चैक कर सकेंगे।

११—घरों में जो पुरानी वस्तु, कपडे, बर्तन, फोटो, और हस्तलिखित ग्रन्थादि होते हैं, उन्हें देश हित के लिये अथवा अजायब घरों को दान करने की सतत प्रेरणा देकर वे उन्हें उनसे ले लेंगे।

१२—रूस में प्रत्येक घर में आने जाने वाले प्रत्येक अतिथि की रजिस्ट्री करानी होती है। वहां अतिथि बनने और अतिथि सेवा दोनों को हेय-दृष्टि से देखना सिखलाया जाता है। अन्यत्र मे यही किया जावेगा।

१३—घरों में मित्रों को इकठ्ठे होकर गप्पें मारने पर प्रतिबन्ध लगाना।

१४—सेंसर वाले चिट्ठियां पढ़ लेते हैं। टेलीफोन की बातें सुन ली जाती हैं।

१५—विरासत और उत्तराधिकार के अधिकार धीरे-धीरे समाप्त किये जा रहे हैं।

इन सब कार्यवाहियों में उद्देश्य है परिवार को समाप्त करना, ताकि मनुष्य भौतिकता का कायल हो जाये और सारे मानव समाज को परिवार माने। अर्थात राजकीय शासन करने वाली जो सत्ता है, वह जो कुछ कहे, कर दे, और वह जो कुछ भोग को दे, स्वीकार करले।

असाम्यवादी समाज की आवश्यकताओं की विशेषता तो स्वीकार करते हैं। परन्तु मनुष्य को हृदयहीन, आत्महीन मशीन नहीं बनाना चाहते। व्यक्ति की उन्नति और व्यक्तित्व के विकास को स्थान चाहते हैं। न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद प्रत्येक व्यक्ति की विशेष योग्यता तथा क्षमता द्वारा अधिक कमाने की व्यवस्था समाज में होनी चाहिये ताकि दुनियां का विकास जारी रहे। संसार में पारिवारिक छोटी-छोटी इकाई की सीढ़ी को नष्ट करके हम ऊपर नहीं पहुंच सकते। तथा उद्देश्य की प्राप्ति के लिये अपनाये जाने वाले कृत्रिम साधन को हम सांस्कृतिक परम्परा के विपरीत और अनैतिक होने के कारण त्याज्य समझते हैं। सम्पूर्ण गृहस्थों और कमाने वाले

घटकों द्वारा सारे विश्व को एक परिवार मानना एक नितान्त असंभव वस्तु है। किसी भी निकट भविष्य में यह ख्याली प्लान सफलीभूत होती नहीं दीखती। मनुष्य राष्ट्र की ईकाई में बंधेगा और उसे परिवार में आस्था रखनी ही पड़ेगी। मनुष्य बच्चों के लिए त्याग इसलिये करता है कि वे उसके अपने हैं। उनमें उसके माता पिता का रक्त है। समाज में एक नियमन कायम रहता है। गृहस्थ आश्रम को यही ट्रेनिंग उसे वानप्रस्थ में काम आती है, जब वह क्रमशः सारे देश और विश्व को परिवार मानने को निकल पड़ता है।

साम्यवादी के इस पहलू से हमें अपनी सांस्कृतिक परम्परा को अक्षुण रखना है तो परिवार व जाति प्रणाली को नष्ट न होने दीजिये। साम्यवाद पारिवारिक रहन–सहन की चट्टान से ठोकर खाकर इस देश से लौट जायेगा, अपना सुन्दर भाग हमें देकर। हमारे आधुनिक शासक भी वे ही सब बातें कर रहे हैं जो परिवार के नष्ट करने में सहायक हों। यह दुख की बात है जो बड़ा बेटा नौकरी से लग गया था, जाकर शहर में रहने लगा, परिवार ले गया। अस्तु जो कोई इस परिवार को जारी रखते हैं, और परिवार प्रणाली के दूसरे नाम से जातीय संगठन को प्रोत्साहन देने में अपनी शक्तियां लगाते हैं, वे निसन्देह संस्कृति का एक मोर्चा सम्हाले हुये हैं और बड़े पुण्य का कार्य कर रहे हैं।

युद्ध क्षेत्र में भाई चाचा, गुरु, श्वसुर को देखकर अर्जुन ने कहा था कि बन्धु बान्धवों की हत्या करके मैं यह राज्य नहीं चाहता हूं। कृष्ण जी ने स्वर्ग का लालच दिखा कर अर्जुन को युद्धरत अवश्य किया, परन्तु अर्जुन की सब आशंकायें सही निकलीं। महाभारत में सब बर्बाद हो गया।

इस प्रकार यह सुस्पष्ट है कि इस प्रणाली को जारी रखके और जाति प्रथा को बनाये रखकर हम एक विशाल सांस्कृतिक संघर्ष में भाग लेकर अपने जीवन के मान–दन्ड और मूल्य बनाये रखने में प्रयत्न शील हैं। और उस यज्ञ में अपने साकल्य का योगदान कर रहे हैं।

१.०४.१४ सामाजिक परिपेक्ष्य में–जाति का भावी स्वरुप

बदलते युग में जाति व्यवस्था के साथ खान पान का बन्धन तो रहता दीखता नहीं। पांति का अनुशासनात्मक पहलू देहातों और छोटे कस्बों में जातीय पंचायतों द्वारा अपने व्यक्तियों पर अंकुश जमाये हुये है, और जमाये रहेगा। जातियों की सम्मिलित पंचायतें आर्थिक गति–विधि चलाती रह सकती हैं। परिवार एक स्वाभाविक कोआपरेटिव थी, वह तो न रह सकेगी, क्योंकि परिवार छिन्न-भिन्न किया जा रहा है। पर नैतिक तथा चारित्रिक क्षेत्र में उसका स्थान सदा बना रहेगा।

नगरों में जाति प्रथा का रूप खान-पान से संबन्धित नहीं रह सकता, यद्यपि यह अभीष्ट है कि प्रत्येक की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की दृष्टि में रखकर यह आजादी रहे कि स्वास्थ्य तथा हाईजीन के नियमों को ध्यान में रखकर कोई भी किसी के साथ खाने या न खाने में स्वतन्त्र रहे। पर जाति का रूप विवाह-सम्बन्धों में कायम रहेगा। जातियां परस्पर ही विवाह सम्बन्ध करें, इस प्रथा के अनेकों लाभ हैं। थोड़े से अधिक शिक्षित लोग या बहुत ऊंचे उठे धनाढ्य व्यक्ति भले ही जाति तोड़ कर विवाह करलें परन्तु जनता के बहुमत पर इस प्रचार का कोई प्रभाव नहीं है। ऐसे अन्तर्जातीय विवाह असफल हो रहे हैं। नई संस्कृति और नये वायु-मण्डल में पहुंचकर कन्या प्रायः दुखी रही है। परस्पर का अत्यधिक परिचय न होने के कारण इन विवाहों में धोखा भी हुआ है। रक्त पवित्रता के हेतु भी वर्ण-शंकरता बढाना श्रेयस्कर नहीं है। युद्ध के कुपरिणाम बताते हुये अर्जुन ने गीता में कहा था कि मनुष्यों के आहत होने पर स्त्रियों की संख्या अधिक होगी और वे अपने अपने वर्णों के वर न पाकर अन्यों से सम्बन्ध करेंगी और इस प्रकार वर्ण-शंकरता बढ़कर कुलों का नाश कर देगी। ऐंग्लो-इण्डियन समुदाय इसका स्पष्ट नमूना है। अस्तु विवाह जातियों में ही होते रहेंगे। इस विषय में थ्योसोफिस्ट साहित्य में एक अनोखी बात कही गई है। वहां जाति गत विवाहों की विद्युत तथा चुम्बक के सिद्धान्तों से तुलना की है। एक जाति के शरीर की उच्च मानसिक विद्युत का संयोग यदि हीन-विद्युत के साथ होवेगा. तो एक अजीब किस्म का परिवर्तन शरीर में होगा। Resultant विद्युत का Content गुरु नहीं रहेगा। यह विषय खोज चाहता है। तो भी सजातीय विवाहों के पक्ष में एक दलील अवश्य है। इसी सम्बन्ध में एक पश्चिमी विचारक सज्जन ने इस प्रकार लिखा है :—

The normal Human brain with its Corelated physical capacities, is like human organism as a whole, the result of the hereditary transmission of specific or typical character from progenitor to offspring, Individual endowments as a truck of manner, in numerous instances, owe to the action of heredity- It has long been observed that peculiar physical and mental trait are apt to reappear in successive generations of a family.

अन्य जीवधारियों और पौधों की ही भांति मनुष्य और उसकी शारीरिक क्षमतायें उसके बाप दादाओं के खून से सम्बद्ध और संचालित होती हुई खास गुण व स्वभाव वाली बन जाती है। व्यक्ति वैशिष्ट्य तथा योग्यतायें भी बाप दादाओं के रक्तानुसार बन जाती हैं। संतति में यह सदा संभव है कि बाप दादा के गुण पुनः प्रगट हो जावें।

इन जीव विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुसार जातिगत विवाह एक विज्ञान सम्मस्त सिद्धान्त ठहरते हैं। इस सिद्धान्त की पुष्टि खुराना की जीव खोजों से होती है। कैसे माता पिता के बीर्य–रज में उनके गुण जीवन के माध्यम से जाते हैं, यह उसने सिद्ध किया है।

श्री खुराना डी. ए. वी. कालेज लाहौर के विद्यार्थी थे जो अब अमरीका में बस कर वहां वैज्ञानिक खोज कर रहे हैं। इसी प्रकार एक और वैज्ञानिक का भी मत है कि

Our genes determine our Moods—

उसने ६००० व्यक्तियों पर परीक्षण करके देखा कि हमारे जैन्स Genes के अनुसार हम विभिन्न घटनाओं पर अपना दृष्टिकोण बनाते तथा व्यवहार करते हैं।

[From Book styled Moodswing by Ronald Fuve— Professor of clinical Psychiarsy at Newyork Presbitaria Medical centre.]

जातियों का रूप विवाहों तक सीमित हो जाने के कारण अधुना जातीय संस्थाओं के सारे प्रयत्न विवाहों में आये रीति-रिवाजों को सुधारने में लगे हैं। समान नाम्नी जातियों मे क्षेत्र-विस्तार, दहेज-निवारण आभूषण निषेध, बाल-विवाह-निषेध, रिवाज-सुधार, सोलह संस्कारों का प्रचलन आदि वे व्यवस्थायें हैं जो जातीय सभायें कर रही हैं। इन सुधारों की प्रक्रियाओं से निकल कर जाति व्यवस्था शुद्ध लाभकारी प्रणाली रह जावेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

वैश्य समुदाय का इतिहास

लेखक:– डा० रामेश्वर दयाल गुप्त MA. Ph. D.
महामन्त्री अ० भा० वैश्य महासम्मेलन
रामेश्वर कुन्ज, आर्यनगर ज्वालापुर। (२४९४०७) उ०प्र०

१.] वैश्य : भारत के आदि निवासी

आर्यों के प्रसार से पूर्व भारत में वैश्यों का रूप-पणि था। आधुनिक पुरातात्विक अन्वेषकों का यह मत है कि ऋग्वेद काल के बहुत पहिले भारत के कई भागों में सभ्यता का विकास हो चुका था। हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, काली-वंग आदि स्थानों से इस पुरानी सभ्यता के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।

आर्यों के सारे देश में फैलाव से पूर्व भी इस देश में व्यापार करने वालों का एक समूह या जाति थी और उसे पणि कहते थे। ऋग्वेद ६/४५/३१–३३ में एक पणि सरदार वृबु की प्रशंसा यों आई हैः—

"वृबु निश्चय ही पणियों में मूर्धन्य था तथा अपनी महती कीर्ति के कारण गंगा के तीर पर उगने वाले विशाल वृक्ष के समान है। भारद्वाज ने वृबु से दक्षिणा विशेष पाई थी। अतः उसकी उपाधि सूरि तथा सहस्रदातम थी। नीति मंजरी (पृष्ठ–४०) में आया है कि वह वृबु तक्ष था तथा उसने भारद्वाज को१००० गायें दान में दी थीं। मनु ने भी १०/१०४ में यह कथा उद्धृत की है कि प्राण संकट में आने पर हीन जाति के अन्न खाने पर भी पुरुष पाप में लिप्त नहीं होता। दान की प्रशंसा पर उन्हें हीन बताना, यह मनु का पक्षपात ही है। और अराधसः कंजूस घोषित करने से आर्यों ने अपने साहित्य में पणि के लिए निम्न विशेषण प्रयुक्त किए हैं:—

अक्रतु—(शोभनकर्म से विहीन)
अग्रथिन्—(बकवादी)
मृध्रवाक्—(मिठबोला)
अश्रद्ध—(यागादिकों में श्रद्धाहीन)
अवृध—(देवताओं को स्तुतियों के द्वारा वर्धन न करने वाले)
अयज्ञ—(यज्ञ न करने वाले)।
बेकनाट—(बेकनाट खलु कुसी दिनोंभवन्ति, द्विगुण-कादिणों वा द्विगुणादामिनों वा द्विगुण कामयन्ते इति वा निरुक्त–६/२६)

अपने रक्तांश न होने से उन्हें ईर्षा-वश ही बदनाम किया है, जबकि सत्य यह है कि उपरोक्त सहस्रदातम शब्द के आधार पर ही शत हस्त सहस्रहस्त वाला वैदिक मुहावरा बना था। पर आर्य लोग कालान्तर में पणिओं को कंजूस कहने लगे थे और अपने रक्तीय समुदाय में से न होने के कारण उन्हें हेय समझते थे। यह बात १० वें मडल में आई है, जिसे लोग वाद की कृति मानते हैं।

ऋग्वेद के इस १० वें मंडल के १०८ वें सूक्त में सरमा-पणि सम्वाद आया है। पूरे सूक्त का अनुवाद हम आगे देते हैं। सूक्त का ऋषि भी पणि-गण ही है, और भाषा आदि वैदिक है। पणि इन्द्र की गौयें ले गए हैं तथा उन्हें पर्वत (गुहा) में छिपा दिया है। इन्द्र सरमा को दूती बनाकर उनके पास भेजते हैं।

किमच्छन्ती सरमा प्रेदमानड्दूरे ह्यध्वा जगुरि पुरार्यः।
कास्मै हितिः का परित केभ्यासीत् कदं रसाया अतरः पयांसि॥१॥

पणि सरमा से पूछते हैं कि तू इस स्थान तक कैसे आई है, क्योंकि वह बहुत लम्बा मार्ग है? तू क्यों आई है? तूने नदी के जलों को कैसे पार किया! (इससे प्रतीत होता है कि इनका देश इन्द्र के प्रान्तों से बहुत दूर किसी नदी के पार था।) आगे के मन्त्र न देकर सारांश देते हैं :—

(१) सरमा–मैं इन्द्र की भेजी दूती हूँ। तुम जो इन्द्र की निधियां लूट लाए हो, उन्हें चाहती हूं।

(२) पणि–इन्द्र कैसा है? सरमा, तुम हम से मिल जाओ और गौओं में तुम्हारा भी हिस्सा हो जावेगा। (प्रतीत होता है पणि नीति कुशल थे।)

(३) सरमा–मेरा इन्द्र अपराजेय है। जब वह आक्रमण करेगा, तुम डर के मारे भूमि पर सो जाओगे।

(४) पणि–देख ये वे गौयें हैं। इन्हें बिना युद्ध किये कौन वापिस ले जा सकता है। हमारे पास आयुध भी तीक्ष्ण हैं।

(५) सरमा–हमारे बृहस्पति के बाण तुम्हें चैन न लेने देंगे।

(६) पणि–गौ, घोड़े तथा अन्य ऐश्वर्य का खजाना हम पहाड़ के अन्दर दृढ़ता से बन्द करके उसकी रक्षा कर रहे हैं।

तू व्यर्थ यहां आई ।

(७) सरमा-तीक्ष्ण अमास्य (नेता) तथा नवग्व (९ मासयज्ञ करने वाले) अंगिरस ऋषि यहां आयेंगे और बलात गौये ले जावेंगे ।

(८) पणि-तू हमारी बहिन बन । कुछ गौये लेकर यहीं हमी में रह ।

(स्पष्ट है कि वे चरित्रवान थे जो बहिन (न कि पत्नी) बन कर रहने को आमन्त्रित किया ।)

मंत्र (१०)-(११) सरमा-मैं यह भाई बहन पना नहीं जानती । तुम गायें वापिस कर दो ।

आगे की वार्ता अन्य सूक्तों में है कि सरमा वापिस जाकर इन्द्र को सब वार्ता सुना देती है। इन्द्र, बृहस्पति व अंगिरस को साथ लेकर जाता है, गुफा को विदीर्ण करता है और पणियों को परास्त कर गायें वापिस ले आता हैं। (ऋग १/६२/२-४)। आर्य पणियों को कंजूस कहकर प्रभु से उनके हृदय को मृदु तथा दानशील बनाने की प्रार्थना भी करते थे। (ऋग०.६/५६/३१ पणीश्चिद विभ्रदामनः) शौनक व सायणाचार्य ने उन्हें असुर जाति का कहा है, परन्तु नगेन्द्र नाथ बसु ने लिखा है कि इस जाति में सब लक्षण आर्य सभ्यता के उपस्थित थे । कृषि वाणिज्य और सूदखोरी इनके मुख्य कार्य थे । एक मन्त्र में यह उल्लेख है कि पणिपतियों ने अपनी गायों में तीन दीप्त पदार्थ दूध, दहीं और घी छिपा रक्खे थे, अर्थात इनकी निर्माण-पद्धति का आविष्कार उन्हीं ने किया था । ऋक् संहिता में तुग्र, शुष्ण: चिद्र, वेतसु, नववास्तु, सप्तधुनि, बृबु आदिक पणि दल-पतियों का भी जिक्र आता है । इनमें से वृषभ सरस्वती तट पर, व्रबु गंगा तट पर, और प्रेमगन्द गणपति उस समय उच्चारित कीकर अर्थात दक्षिण विभाग में राज्य करते थे । यह कहा जा चुका है कि महाबलशाली सैन्यसामन्त से युक्त पणिपत-गण गौ-धन-जीवी, सूद-खोर और वाणिज्य-प्रिय कह कर उल्लिखित किए गए हैं । दूध, दही और घृतप्रस्तुत करने के लिए उनके पास "चतुःशृङ्गा" एवं "दश-पंत्र-उत्स" नामक यंत्र रहते थे। (ऋक् संहिता ५-४४-२४) वाणिज्य के लिए वे समुद्र यात्रा करते थे । (ऋक संहिता १-५६-२, ५-३४-७) । अल्प—मूल्य के द्रव्यों को अधिक मूल्य में वेचा करते थे और उसका यथेष्ट सूद लेते थे । वेद के निरुक्तकार यास्क ने "पणि" शब्द का अर्थ सर्वत्र "वणिक" ही किया है, कहीं भी असुर या अपदेवता अर्थ नहीं किया है । व्याकरणाचार्य पाणिनी ने भी "पण" धातु से ही वणिक शब्द की उत्पत्ति की है । "वणिक-जाति" ही समाज का मेरुदण्ड है । इस लिए वैश्य-समाज का आदि परिचय देने के पूर्व "आदि-वणिक" या "पणि-जाति" का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है ।

इससे यह भी अनुमान निकाला जा सकता है कि 'पणि-जाति' ही भारतवर्ष की आदि संस्कृत-भाषा जाति है । निरुक्त२/१७ में आया है "पणिर्वणिका भवति" । व्याकरण में भी उणादि सूत्रान्तर्गत सूत्र है पणेरिजादेश्च वः । पणिचातु में इज प्रत्यय के वाद पकार को वकार में बदला गया है ।

उसके पश्चात जब बाहरी देशों से दूसरी-आर्य जातियां पंजाब के मार्ग से यहाँ आई, तब उनके और पणि-जातियों के बीच संघर्ष हुआ । इस संघर्ष के कई उदाहरण ऋक् संहिता में देखने को मिलते हैं । इस संघर्ष में पणि पति-गण ऋत्विक समाज के निकट अपनी राज्य सम्पदा खो बैठे । फलत: उनमें कई अपनी आत्म-रक्षार्थ समुद्र-पथ से बाहर चले गए ।

डा० ए० सी० दास (ऋग वेदिक इन्डिया- शडयूल-११ पृष्ठ १९०-१९७) में लिखते हैं कि पणि आर्यों द्वारा तिरस्कृध होने पर सप्तसिन्धु छोड गुजरात पहुंचे, वहां से मलावार, बाबुल होते हुए सीरिया में जा वसे और फिनीशियन कहालये ।

इतिहासकार हिरोडटस भी इसका समर्थन करता है । आज तक प्रदेश बाबुल में मलमल को सिन्धु कहते हैं ।

और कई ऋत्विक् समाजों की तरह 'पणि-समाज' में भी आर्य-वैदिक भाषा प्रचलित थी । ऋग्वेद में तो इन्द्र को भी एक स्थान पर "पणि" कहा गया है । दोनों जातियों के उपास्य देवता भी मित्र-वरुण-मारुत ही रहे हैं । पणियों ने भारत के बाहर व्योपारार्थ प्रयाण किया, तो यह अपने देवता भी साथ लेते गए ।

पणि शब्द का ही अपभ्रंश फैनिक है । एशिया माइनर और दक्षिणी यूरोप के दो हजार वर्ष पूर्व के इतिहास में फिनिक्स जाति का विस्तृत वर्णन है । वहां लिखा है कि फिनिक्स लोग कांच-निर्माण और पर्वत काटने की कला जानते थे और उनकी एक वर्णमाला और उसकी एक लिपि भी थी ।

प्राचीन ग्रीस और जर्मनी में यह लोग फोनिक (Fonik) फेनेक (Fanak) और पणिक (Pannic) नाम से लिखे गए हैं । यहाँ तक कि ५०० वर्ष पूर्व हिरोडोटस इतिहासकार ने भी पणियों को संसार का आदि व्यौपारी लिखा है । वह इन्हें यूरेपियन नहीं मानता है ।

यूनान में भी पणि लोग व्यौरार्थ जहाज ले गए थे । यूनानी लोग आज भी ध्रुव तारे को लक्ष्य करके 'फानिक तारा' कहकर पुकारते हैं ।

मिश्र में पणि व्यौपारियों ने ही चित्र-लिपि के स्थान पर

सकेत लिपि का प्रचलन किया था।

पणि लोग शुद्ध शाकाहारी थे। वे आर्यों की याज्ञिक हिंसा और पशु-बलि के विरोधी थे। इन संस्कारों का प्रभाव आर्य संस्कृति पर भी पड़ा। परन्तु सत्ता के युद्ध में वे हार गए। आर्य संस्कृति ने उन्हें विश या विट का नाम दे दिया। तथा वैश्य को दर्जा तो तीसरा दे दिया पर धन उन्हें ही सौंपा। यजु०६/३-४ में यह प्रक्रिया वर्णित है :—

यातं धामान्युश्यसि गमध्यै यत्र गावोभूरिश्रृङ्गाः ऽअयासः।
अत्राह तदरुगायस्य विष्णोः परमं पदमवभारि भूरि।
ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनिं पर्य्यूहामि।
ब्रह्म हँह क्षत्रं हँहायु दृँह प्रजां दृँह ।।३।।
विष्णोः—कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे इन्द्रस्य युज्यः सखा ।।४।

स्तुत्यविष्णु !

तेरे धामों में जाने का मैं इच्छुक हूं जिनमें गायों की प्रचुरता है। तूने समाज को ४भागों में बाँटा है। एक ब्रह्मवेत्ता है, एक रक्षक है और तीसरे मुझ को धन की पुष्टि का कार्य सौंपा है।

मैं वैश्य इस धन से ब्रह्म को, क्षत्र को और प्रजा (शेष सभी) को दृढ़ करता हूं।

चौथे मंत्र में कहा है कि विष्णु की इस व्यवस्था को समझो जिसने सभी को वर्णों के व्रतों से बांध दिया है। और वह विष्णु इन्द्र (राजा) का मित्र है।

आर्यो से घुल मिल जाने पर भी कृषि, गौ-पालन तथा शाकाहार की अपनी व्यवस्था पणिओं ने जारी रक्खी। आर्यो के ऋत्विक और राजन्य वर्णेतर लोग भी इन्हीं में मिल गए, क्योंकि आर्यो को भी जब पुरोहितों और योद्धाओं की अधिक आवश्यकता नहीं रह गई तो इन्होंने तृतीय वर्ण में ही अपने लोग भर्ती किए। ऊपर की ओर तो थे पुरोहित और राजा, नीचे थे शूद्र और इन्हें मध्य स्थान दिया गया था।

अथर्ववेद में "ब्राह्मणों अस्य मुखमासीत" वाला मंत्र फिर आया है, पर वहां "मध्यम तदस्य यद्वैश्यः" आया है। उरुको मध्यम में बदल दिया है। (देखो अथर्ववेद—१९।६।६) परन्तु पूर्व से व्यापार में रत लोगों की संज्ञा ऊरू थी। इन्हें आर्यों ने अपने में स्थान देकर अपनी वर्ण व्यवस्था के वैश्य वर्ण में शामिल कर लिया। आर्यों से पूर्व उन्हें उरु, उरुव्य, अरी, उदीय आदि ही कहते थे।

२.) वैदिक तथा वैदिकोत्तर समय में वैश्य

पणियों के साथ जब आर्य घुले मिले तो उनकी सत्तत पर्यटन-शील वृत्ति को देख उन्होंने उनका वैश्य शब्द से नामकरण किया, यों ऋग्वेद में वैश्य शब्द जनता के लिए प्रयुक्त हुआ था। वैश्य शब्द विश धातु में क्विप प्रत्यय लगाके बना है। विश धातु का अर्थ है विशनि, प्रविशति प्रान्तरादावित घूमने—वाले लोग। पाणिनी ने वैश्य के लिए अर्य शब्द का प्रयोग किया है अर्यः स्वामि वैश्ययोः (६/१/१०३)

जो काम उन्हें सौंपे गए थे वे यों हैं :—

उरु विष्णों विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि।
घृतं घृतयोने ! पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ।।
यजु० ५।३८

वेदभाष्यकार सातवलेकर जी ने इसको यों व्युत्पत्ति की हैं :—

विष्णु—विष्णु शब्द भी बिश धातु से बना है। क्षय—बाजार जहां पदार्थों की बिक्री या उसी प्रकार पूंजी का सार वस्तु (घृत) लाभ और निस्सार वस्तु (छाछ) या "कमीशन" होता है।

इस वेद मन्त्र में वैश्यों को तीन बातों का उपदेश किया है। (विष्णो उरो विक्रमस्व) हे सर्वत्र फैले हुए वैश्य लोगों! कला कौशल और उद्योग धन्धों द्वारा जीवनोपयोगी, भोग्य पदार्थों का उत्पादन करो और (उरो क्षयाय नस्कृधि) तैयार हुए माल को बेचने मंडी को खोज करो।

(घृत योने ! घृतं पिव) व्यापार का सार जो घृत (मुनाफा) उसको भोगो, निसार वस्तु जो 'कमीशन' रूपी छाछ है उसकी इच्छा मत करो।

(यज्ञपति प्रप्र तिर) व्यापार में सफलता प्राप्त करो।

पीछे कहा जा चुका है कि वस्तुओं के वितरण के लिए आर्यों ने वैश्य वर्ण का सृजन किया। उसे उदर या उरु स्थानी माना। जिसका अर्थ है सब अंगों के श्रम को प्राप्त करके हर अंग को यथावश्यकता अंश उपलब्ध कराना। तैत्तिरीय संहिता (७।१।४।९) में कहा है कि प्रजापति ने वैश्यवर्ण अन्नाधार से उत्पन्न किया।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति से स्व शब्द का उच्चारण करके वैश्य उत्पन्न किये।

अथर्व वेद में कहा हैं कि भूमि के कर्षण के लिए वैश्य जाति की सृष्टि हुई।और अथर्ववेद द्वारा राजा को दिया निम्न आदेश दृष्टव्य है :—

अथर्ववेद काण्ड—३ सूक्त ४ की कुछ ऋचाओं में राजा को वैश्य के संरक्षण का उत्तरदायित्व यों दिया गया है—

आत्वा गन्राष्ट्र सह वर्चसोदिहि प्राङ्-विशांपतिरेकराट

त्वं विराज ॥ पहली अर्द्ध ऋचा

हे राष्ट्राध्यक्ष। यह राष्ट्र तुझे प्राप्त हुआ है ताकि तेज के साथ उदय को प्राप्त हो। तू वैश्य की रक्षा करते हुए सम्राट भाव से प्रजा में विराजमान हो।

त्वां विशो वृणतां त्वामिमा : प्रदिशः पांच देवीः।

वर्ष्मन्राष्ट्रस्य ककुदिश्रयस्व ततो न उग्रो विभजा वसूनि ॥ द्वितीय ऋचा

हे राजा ! वैश्य ने तुझे राज्य के लिए स्वीकार किया है। इन पाँच दिव्य दिशाओं ने तेरा वरण किया है। ताकि राष्ट्र के ऐश्वर्य मय स्थान से तू उनका आश्रय दाता—संरक्षक हो। आततायियों के प्रति उग्रवीर वन ताकि वैश्य धन का विभाजन शेष तीन वर्णों में यथावश्यकता कर सके।

स उ विशः कल्पयताम् ॥ छठी ऋचांश

सो वह राष्ट्राध्यक्ष निश्चय से वैश्य को समर्थ करे।

मौर्य युग तक उनके लिए गृहपति शब्द प्रयुक्त होता था। गुप्त काल के अभिलेखों तक में उनके लिए कुलिक, श्रेष्ठी (सेठ) तथा सार्थवाह शब्द प्रयुक्त हुआ है।

वैदिकोत्तर काल में भी यह उत्तरदायित्व निभाये गये।

वैश्य वर्णोत्पन्न पार्श्व नाथ ने मरणासन्न जैन धर्म का पुनरुद्धार किया था। जैनियों के 'उपासक दशा-सूत्र' नामक प्राचीन ग्रन्थ में वैश्य जाति के वैभव का वर्णन है। आनन्द नामक एक वैश्य ने जैन धर्म स्वीकार करके पांच अणुव्रत ग्रहण किए थे। चार करोड़ का सोना उसके खजाने में था, ४ करोड़ उसका सूद पर लगा हुआ था, ४ करोड़ मुद्राओं की उसकी जमानतें थीं। उसके पास चार दल पशुओं के थे। एक २ दल में दस दस हजार पशु थे। विदेशी वाणिज्य के लिए ५०० गाड़ियां और ५०० गाढ़ियां देशी व्यापार के लिए उस पर थीं। जलमार्ग से उसके ४ जहाज चलते थे।

मृच्छ कटिका नाटक में राजधानी के बीच श्रेष्ठी चत्वर का उल्लेख है। यहां धन कुबेर वैश्य रहते थे। भारत के सभी प्रधान केन्द्रों में उनकी कोठियां थीं।

३०० वर्ष ईसा पूर्व में चाणक्य ने अर्थ-शस्त्र की रचना की। उन व्यवसाओं का एक अध्याय में वर्णन है जो वैश्य तब करते थेः—

अगरु (काल चित्र या मण्डल चित्र), दोंगक, पारस, मुद्रक, उशीर, चन्दन-काष्ठ, स्वर्ण दुकूल, अंशु-पट्ट, क्षौम-वस्त्र (रेशमी), सुगंध-द्रव्य, हीरा-जवाहरात इत्यादि।

वैश्य के कर्म

प्रायः वैश्य के कर्मों के विषय में गीता के संकेत उद्धृत किये जाते हैं:— कृषि-गौ-पालन, व्योपार। इधर वैश्य महासभा आदि ने भी वही परिभाषा मान ली। परन्तु मेरा इस मे मतभेद है। वैश्यों में ऐसी कोई जाति नहीं है जिसका कार्य या तो खेती करना हो या पशु पालना। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत वाले मन्त्र में वैश्य को ऊरु या मध्य-स्थानी कहा है। उर वस्तुतः उत्पादन नहीं करता है। उत्पादन तो हाथ तथा पैर करते हैं। उदर तो उत्पादित वस्तु को इधर उधर बाँट देता है। वृहदारण्यक उपनिषद में वैश्यों का देवता मारुत अर्थात वायु बताया है कि जिसका कार्य इधर-उधर बांटना मात्र है। यजुर्वेद ३०।५ में भी कहा हैः—ब्रह्मणे ब्राह्मण क्षत्राय राजन्यं मरुभ्ये वेश्यं तपसे शूद्रं, तमसे तस्करं नारकाय वरिहणं पाप्मने। ब्रह्मवेत्तता से ब्राह्मण, राज्य करने से क्षत्री, वायुवत वितरण से वैश्य और परिश्रम से शूद्र संज्ञा हैं। सब वस्तुओं के वितरण के पुन्य कार्य वैश्य करता है और एवज मे दाल में नमक की तरह लाभ अपने उदर पालनार्थ ले लेता है। मनु ने जो १०-७९ पर लिखा है।

शस्त्रास्त्रमृत्वं क्षत्रस्य

वणिक्पशु कृषिविष।

इसका अर्थ यही है कि क्षत्री शस्त्रास्त्र पर रहता है और वैश्य पशु और कृषि तथा तदुत्पन्न वस्तुओं के क्रय-विक्रय कार्य पर। इससे अधिक स्पष्ट अध्याय ४ का १३ वाँ श्लोक है।

अर्धिकः कुत मित्रं च गोपालो दारुनापितौ

एतेशूद्रेषु भोज्यान्नायश्चात्मनं निवेदयेत।

यहां आधे में खेती करने वाले व गो पालक को शूद्र वर्ण के कार्य कहा है। व्यास स्मृति (२-५१) तथा पद्म पुराण (व्रा०ख०२अ०६) ने भी यह कार्य शूद्र वर्ण के बताये हैं।

यहां पर एक आधुनिक मान्यता का उद्धरण देना अनुचित न होगा। सन् १८८३ ई० में विहारस्थ माहुरी वैश्या के इतिहास में स्व० श्री गयाराम माहुरी भूषण ने पुस्तक के पृष्ठ ११ पर वैश्यों के कर्म यों लिखे हैं:—

वैश्यन के कुल कर्म कहों, धन से व्यापार करें नित सोई।

गो प्रतिपालन दान करें तिन पूजक शम्भु सुजान के होई॥

यहां वैश्य के कर्म धन से व्यापार, दान देना, ईश्वर भक्ति और

गौ का 'प्रतिपालन' कहा है। यह पालन नहीं प्रतिपालन है। गौ हिन्दुओं की पूजा का मान-विन्दु होने से लिखी है, गोपालन (Dairy Farming) की दृष्टि से नहीं। श्रम साध्य कर्म वास्तव में शूद्र के हैं। शूद्र शुचा शोकेन ऊवतीति वा श्रमेण ऊवति धावतीति शूद्र। (जिसका श्रम से पसीना बहे वह शूद्र है)। बोल-चाल में इन्हें कर्मणी कहते थे। कमीन उसी का अपभ्रंश है। इसे हम अपनी मूर्खता से ही बुरे भाव मे लेते हैं।

पुस्तक आइन अकबरी के पृष्ठ १२७ से अकबर के शासन की स्थिति ज्ञात होती है। वहां यह लिखा है कि वैश्य के कर्म इस प्रकार है:—नौकरी-खेती-व्यौपार-पशुपालन, वस्तुओं का विनियोजन और इधर-उधर ले जाना। वहीं पर शूद्र के कार्य यों लिखे हैं:— पेन्टिंग-सुनारी-लोहारी-बढ़ईगीरी शहद/दूध घी (मठ्ठा) नमक का व्यौपार। यह अकबर के समय की स्थिति थी।

व्यौपार का महत्व

व्यापार के पेशे से और व्यापारियों के समुदाय से अन्य पेशे वालों और समुदायों को वहुत दिनों से कुछ चिढ़ सी चली आ रही है। महाभारत की कथा है कि द्रोपदी के स्वयंवर के बाद जब युधिष्ठर द्रोपदी को लेकर चले तो द्रुपद ने बड़ी ग्लानि से कहाः—"न जाने यह कौनथा ? कहीं यह कर देने वाला वैश्य तो नहीं है ?" ईसा मसीह की कथा है कि चाबुक लेकर उन्होंने मन्दिर में से सर्राफों को भगाया था। नेपोलियन अंग्रेजों को दूकानदारों की जाति कह कर चिढ़ाता था।

इस प्रकार से व्यौपारी, व्यापार और व्यापार का केन्द्र बाजार क्यों बदनाम रहा है ? समाज तीन प्रकार के व्यक्तियों को ही अपने लिए उपयुक्त समझता रहा है। एक तो राजा हैं जो बाहुबल से संसार के प्रदेशों को अपने अधीन कर उन पर नाना प्रकार के अधिकार के पदों से शासन करते हैं। दूसरे हैं धार्मिक शिक्षकगण जो दूसरों को अक्षर ज्ञान देते हैं और इहलोक तथा परलोक की बात बतलाते हैं और सब आवश्यक सामाजिक एवं कौटुम्बिक कृत्यों के समय विभिन्न प्रकार की आगे और पीछे की बातें बतला कर सहायक होते हैं। तीसरा–वह वृहद समुदाय जिसे श्रमजीवियों का समुदाय कहा जाता है और जो अपने विविध प्रकार के शारीरिक श्रम से मनुष्य का जीवन सम्भव बनाते हैं। इन तीन के अतिरिक्त वहुत दिनों से व्यापारियों का भी एक समाज चला आ रहा है जिसका काम यह रहा है कि वस्तु को तैयार करने वाले से लेकर उसके प्रयोग करने वाले तक उसे पहुंचा दें और इस काम में धन कमायें। यह बिचवई लोग ही व्यौपारी रहे हैं। दूसरे पेशे वालों को इनसे चिढ़ कई कारणों से हो सकती है।

पंडित और पुरोहित तो सम्भवतः इनसे इस कारण चिढ़ते रहे हैं कि यह बिना कुछ विद्या अभ्यास किए और बिना किसी प्रकार का वास्तविक श्रम किए ही अपनी योग्यता से काफी धन कमा लेते हैं, बड़े पद प्राप्त कर लेते हैं और समाज के ऊपर अपने गौरव के स्थापन मे भी असफल नहीं रहते। राज पुरुष सम्भवतः इनसे इस कारण घृणा करते हों कि यह कुछ भी शारीरिक बल नहीं रखते, साहस के काम से दूर भागते हैं, और इस पर भी इनके पास वह शक्ति होती है कि समय पड़ने पर राजपुरुषों की भी यह धन से सहायता कर सकते हैं। श्रमजीवी इनसे इस कारश शत्रुता रखते हैं कि यह लोग हमारे ही समुदाय के होते हुए भी अपनी बुद्धि से इतनी उन्नति कर लेते हैं। परन्तु प्रभु की सृष्टि में जो चीज जहां बहुतायत से उत्पन्न होती है उसके बचे भाग की आवश्यकता उस भाग में पड़ती ही है जहां वह वस्तु पैदा नहीं होती और तब उस वस्तु को वहां पहुंचाने के लिए वितरक मध्यस्थ को आवश्यकता है ही।

पर जैसे-जैसे मनुष्य समाज का संगठन जटिल होता गया, उत्पादक तथा भोक्ता के बीच कई और लोग (कार्य-कर्त्ता) आ गये। स्टेट चुंगी लेने लगी, रेल मोटर का भाड़ा लगा। तब कहीं भोक्ता के पास वस्तु कहीं अधिक मूल्य में पहुंची। उसका सामुख्य केवल व्यौपारी से था, सो वह तेजी का उत्तरदायित्व उसी पर डालने लगा। इस तेजी पर सट्टे वाले, स्टाक-एक्सचैंज वाले आदि अन्य बुद्धि जीवियों का भी संघात था। यह बुद्धि-जीवी समाज में प्रबल होता गया। मध्यवृत्ति वाले अन्य पेशे भी इसी कारण उत्पन्न हुये। वकील, चिकित्सक, पत्रकार और राज्य के अन्य कार्य-कर्त्ता। इन्होंने व्यौपारी को पीछे सा ढकेल दिया हैं, और स्वयं अनुपार्जित आय पर रहते हुए भी व्यौपारी को बदनाम करते हैं। वास्तव में यह बुर्जुआ लोग स्वयं कितने पानी में हैं ? परन्तु दुर्भाग्य यह हैं कि राज्य ने व्यौपारी के कार्य में हस्तक्षेप करके उसे बांध दिया है। उसके आर्थिक अधिकारों के संरक्षणार्थ कोई संगठन भी नहीं हैं। उसकी वस्तुओं के भाव निश्चित किये गये हैं। रेट लिखकर टांगने पर बाध्य किया गया है। वस्तु को बेच डालने की आज्ञा है। उसका इतना बन्धन ही उसके गुरुत्व को सिद्ध करता है।

इस सबके बावजूद बाजारें आजकल भी जीवन का केन्द्र हैं। बाजार ही सामयिक संसार का प्रतीक है। बाजार से ही प्रकट होता है कि अमुक समाज की सस्कृति किस स्तर पर है। बाजार में हमें वे सब चीजें दीखती हैं जिनका प्रयोग समाज में होता है। उससे समाज की प्रवृत्तियों का पता लगता है। समाज के लोगों ने अधुना कितना विकास किया है जिसके कारण वे ऐसी चीजें तैयार कर सके हैं। और यह चीजें इस बात की सबूत हैं कि समाज विशेष ने अपनी आवश्यकताओं को कहां तक बढ़ाया है, जिनको पूरा करता हुआ वह अपने को उन्नत करता चला जा रहा है। स्मरण रहे कि सभ्यता की परिभाषा यही है कि हम अपनी आवश्यकताओं को बढ़ायें और उन्हें पूरा करने के साधन तैयार करें। इन सबका प्रमाण हमें बाजार में व्यापार करते हुए व्यापारियों के पास ही

मिल सकता है। इस कारण बाजार का कोई हेय स्थान नहीं है। वह समाज का प्रतिविम्ब है

व्योपारी

जिस प्रकार से बाजार में बिकती हुई चीजें समाज विशेष की लौकिक उन्नति की द्योतक हैं, उसी प्रकार व्योपारी स्वयं समाज के आध्यात्मिक विकास का सूचक है। उसके व्यवहार से ही यह पता लग सकता है कि किसी स्थान विशेष के रहने वालों का कैसा आचरण होता है। वे सच्चे हैं या झूठे, वे शिष्ट हैं या अशिष्ट। स्मरण रहे कि जब किसी स्थान में कोई विदेशी पहुंच जाता है, तो वह चाहे समाज के किसी अन्य अंग के सम्पर्क में न आये, परन्तु भिन्न-भिन्न वस्तुओं के व्यापारियों की सहायता के बिना काम नहीं चला सकता। उसे खाना खरीदना पड़ता है। उसे कपड़े भी खरीदने पड़ते हैं। उसे इधर-उधर चलने फिरने के लिए गाढी आदि की भी आवश्यकता पड़ती है और वह अपने घर कुछ उपहार की वस्तुयें भी स्त्रियों, बच्चों आदि को देने के लिए ले जाना चाहता है। उसका यह सब काम व्यापारियों के ही द्वारा हो सकता है। इस कारण जिस प्रकार का व्यवहार व्यापारियों का होगा उसी के अनुकूल सारे देश के सम्बन्ध में किसी विदेशी का विचार हो जायेगा। सो व्योपारी सामाजिक सभ्यता का प्रतीक है। उसे चाहिए कि जैसा नमूना दे, वैसा माल दे। हर वस्तु का उचित मूल्य ले। खरीददार को प्रसन्न रक्खे और उसका आदर करे, उससे शिष्टता वर्ते। इससे विदेशों में भी उसका मान बढ़ेगा।

व्योपार में लक्ष्मी बसती है। धन से ही बड़े-२ विद्यालय व धर्मस्थान चलते हैं। वैश्य ने संख्यातीत मन्दिर, धर्मशाले, पौशाले, गौशाले तथा अन्न-क्षेत्रों का निर्माण किया है। उसी के व्यापार से देश के श्रमिकों का जीवन स्तर ऊंचा उठता है। आवश्यकता यह है कि हम यही परोपकार की प्रवृत्ति व्योपार करते समय भी वर्तें। जैसे मन्दिरों और देवालयों में स्वच्छता और नैतिक स्तर रखते हैं उसी तरह हमें अपने बाजारों और अपने व्यापार केन्द्रों में भी अपने व्यापार सम्बन्धी व्यवहार में सत्य आचरण रखना चाहिए। यदि वहां हम ऐसा नहीं करते, तो हम उन पवित्र संस्थाओं को भी पवित्र नहीं रख सकते जो इस प्रकार से कमाए हुए धन से स्थापित हुई हैं और जहां लोग अपना कार्य समाप्त करके शान्ति व धर्म उपार्जन करने के लिए अनिवार्य रूप से जाते हैं। बाजार में धन पैदा होता है। उसके शिक्षालय में वे लोग तैयार किए जाते हैं जो बाजार चलाते हैं। ये अन्योन्याश्रित हैं। ये पृथक नहीं किए जा सकते। व्यापार में पैदा किया हुआ धन देवालयों को बनाने में भी खर्च होता है। व्यापारी देवालय में उपासना करने जाता है। वहां से धर्म सीखकर ही उसे व्यवहारार्थ रूप से बाजारों में लगाता है। व्योपार और देवालय भी अन्योन्याश्रित हो जाते हैं।

वैश्य व्योपारियों का भूमण्डल भ्रमण

पहिले व्योपारी वस्तु लेकर देश के बाहर विनिमय के लिए जाता है। उसके साथ उसकी संस्कृति जाती है उसकी मण्डी में ब्रांचें बनती हैं। उसका पण्डित पुरोहित उसके पीछे जाता है। यदि सफल हुआ तो उसके पीछे उसका सिपाही जाता है और उपनिवेश बन निकलते हैं। यही इतिहास का क्रम है। अंग्रेज व्योपारी आया, अंग्रेज सैनिक आया, और अंग्रेज पादरी आया। यह सब मिलकर बन गया, ब्रिटिश साम्राज्य। गये युग में भारत का व्योपारी यहां की वस्तुयें और सभ्यता लेकर यत्र-तत्र सर्वत्र गया था। उस भूत के गौरव को दुहराना और वृहत्तर चक्रवर्तित्व-मय भारत का निर्माण व्योपार से ही सम्भव है, क्योंकि अब सैनिक चक्रवर्तित्व के दिन तो लद गये हैं। इस देशाटन की कहानी यों है:—

(i) चीन

चाणक्य द्वारा वर्णित व्योपारिक वस्तुओं में चीन पट्ट और चीनानशुक नाम की दो वस्तुओं का वर्णन है, जिनसे चीन के साथ सम्बन्ध प्रकट होता है। लाकूपेरी नामक पुरातत्व वेत्ता ने लिखा है कि ईसा सन से ७०० वर्ष पूर्व भारतीय वणिक चीन से व्यापार करते थे। और भारतीयों ने चीन में अपने उपनिवेश बना लिए थे। उन्हीं के सम्पर्क से चीन में पहिले मुद्रा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ [Prof. Fermen De LacowpeuesW.estern Crigin of the Early Chinese Civilization] कुछ और मनोरंजक बाते उक्त पुस्तक में हैं:—

म्याऊ च्याऊ उपसागर के चारों ओर ६८० ई० पूर्व में भारतीय उपनिवेश बने थे जिन्हें 'लिंग-पर" कहते थे। TISINIDH नगर में उनकी टकसाल थी। ६३१ ई० पूर्व में वणिक प्रमुख गार के साथ सानतुम गया जहां उलूवंशीय चीनी राजकुमार ने पूर्ण समारोह के साथ उसका स्वागत किया था चीन देश में उसकी कथा इस समय भी प्रचलित है। इन भारतीय वणिकों के उपनिवेश उस समय चीन के राजा के अधिकार में नहीं थे, और न वे वाणिज्य के लिए उस राज्य को किसी प्रकार का कर ही देते थे।

ई० सन् से पूर्व ५८०–५५० के बीच विभिन्न प्रदेशों के देशी राजाओं और भारतीय वणिकों ने मिलकर एक मुद्रा संघ संगठित किया था। चीन के वणिकों ने भी इस संघ में योग दिया था। उस समय की ऐसी बहुत सी मुद्रायें उपलब्ध होती हैं जिनके एक तरफ चीन और दूसरी तरफ भारतीय वणिकों के चिन्ह अंकित है।

चीन और भारतीय हिन्दू लिपि सेयुक्त मुद्रा से यह सन्देह नहीं रह जाता। ई० सन के ४७१ वर्ष पूर्व पुत्रह वंश के एक चीनी वीर ने भारतीय वणिकों के उपनिवेशों का ध्वंस कर डाला। तब यह लोग "गण नेवके हार्क" और तंग पेह" के बन्दरों में रहने लगे। ढाई सौ वर्ष तक

यह लोग सुख पूर्वक यहां वास करते रहे। इसके बाद ईस्वी सन् पूर्व १४०-११० के बीच तीस वर्ष व्यापी विप्लव में यह स्थान बिलकुल नष्ट हो गये। तब आत्म रक्षा के लिए हिन्दू वणिक गण चीन का परित्याग करके प्रशान्त महासागर के उपकूल में हिन्दू राज्यशासित "कम्बोज" राज में आकर रहने लगे। इस समय भी कम्बोज श्याम जावा आदि द्वीपों में नाना प्रकार की गणेश मूर्तियां गणेश मन्दिर विद्यमान है।

(ii) दक्षिणी अमेरिका

मेक्सिको में दीवान चमनलाल यात्रा करने गए थे। वे वहां के मन्दिरों, देवी देवताओं तथा रीति रिवाजों का अनुसन्धान करके आये हैं, और उन्होंने वहाँ के लोगों का भारतीयों से सादृश्य दिखाया है। वहां 'इस्क' एक श्रेष्ठ जाति है। मास्क नामक एक भारतीय व्यापारी टीका काका झील के किनारे आकर बसा था और इस्क राज्य की स्थापना की थी। वहां के लोग अब भी अपने को सूर्य वंशी कहते हैं। इस्क तो इक्ष्वाकु का अपभ्रंश है। वे राम-सीता उत्सव किया करते है। वहां अब भी राजा को इन्द्र कहते हैं।

(iii) मिश्र तथा ग्रीस देश में हिन्दू वणिक:—

१—ग्रीस देश के वणिक 'एरिपन' ने अपने पेरीप्लस नामक ग्रन्थ में लिखा है कि:—

भारतीय व्यापारी अरब देश के 'पूड़ेमन' नगर में उतरा करते थे।

२—'स्ट्रेबो' ने लिखा है कि भारत ही कपास की जन्म भूमि है।

३—भारतीय व्यापारियों के वाणिज्य द्वारा यह अन्य देशों में पहुंची।

४—एरिपन ईसा की पहली शताब्दी में मिश्र से भारत में व्यापार करने के लिये आया था। उसने अपने ग्रन्थ में दक्षिण-भारत के निवासियों के वाणिज्य सम्बन्धी प्रभाव का वर्णन किया है।

प्रेरणा मिलती है इस सबसे एक हृदय में भारतीयता के फैलाव की ओर उसका साधन है व्योपार तथा वैश्य।

प्रजातंत्र के आदि नियन्ता वैश्य

सारे संसार में मुख्यतः भारतवर्ष में सदा सर्वदा से क्षात्र-वृत्ति राज्य करती रही है। ज्ञान में बढ़ा चढ़ा होने के कारण वे ब्रह्म वृत्ति का आदर करते रहे हैं। जब महर्षि राजा के यहां आते थे, तो राजा सिंहासन छोड़कर खड़े हो जाते थे और पादप्रक्षालन कर उन्हें अपने से ऊंचे आसन पर बैठाते थे। नियम और कानून स्मृतिकार ब्राह्मण बनाते थे और वे ही व्यवस्था भी देते थे और उन पर चलना और चलवाना क्षत्रीय राजा का कार्य होता था। ईसाई धर्म ठीक प्रकार से उपस्थित हो जाने के बाद से राजा हेनरी अष्टम तक इंगलैंड का राजा पोप के प्रति निष्ठा की शपथ लेता था। राजा अपना विवाह भी स्वेच्छा से नहीं कर सकता था।

कालान्तर में कुछ क्षत्रिय राजाओं को ब्राह्मणों का यह अंकुश असह्य हो उठा, और तब क्षत्रियों ने अपनी अलग राजर्षि बना लिये। पौराणिक आख्यायिकाओं में वशिष्ठ और विश्वामित्र की स्पर्द्धा का बहुत वर्णन है। पहिले ब्रह्मर्षि थे तो दूसरे राजर्षि। उपरान्त ब्राह्मणों ने अपना वैभव जाता देख अपने अलग राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। भृगुओं का वंश जिसमें परशुराम हुए, यही व्रत और प्रतिज्ञा लिए फिरता था। कहते हैं उन्होंने २१ बार पृथ्वी को क्षत्रिय-विहीन किया था। शाहजहांपुर जिले में जलालाबाद के पास एक नदी है। किंवदन्ति है कि उसके किनारे की भूमि अब भी लाल है। वहां सात बार परशुराम ने क्षत्रियों का सर्वनाश किया बताते हैं।

तो ब्राह्मणों और क्षत्रियों के हाथ में राष्ट्र और राष्ट्रों का नेतृत्व आता जाता रहा। और मनुष्य जाति का इतिहास मात्र रह गया कि कब किस राजा ने कौनसा प्रदेश विजय किया, फिर उसका कौनसा पुत्र कितने भाइयों को मारकर गद्दी पर बैठा। इतिहास में यह क्रमबद्ध रूप में वर्णित है। किस आचार्य ने कौनसा वाद चलाया इसका वर्णन ही तत्कालीन समय के बौद्धिक जागरण का इतिहास है। परन्तु इस रिवाज में पिसी जाती रही प्रजा जिसका कार्य था उत्पादन और वितरण। अपने उत्पादन में क्षत्रिय को राज कर देना और पंडित को दक्षिणा देना यह उसके जन्मगत कर्त्तव्य थे।

समाज में राज्यकर्त्ता और धर्म कर्त्ता की बहुत थोड़ी संख्या है। शायद १० फीसदी भी नहीं। यहां मेरा तात्पर्य कर्म की वर्ण व्यवस्था से है। शेष बहुमत है किसान और मजदूर का। कर्मों की व्याख्या करते समय वैश्य के यह कर्त्तव्य गिनाये हैं—यज्ञ करना, दान देना, विद्या पढ़ना, खेती करना और उपज का वितरण करना। जो लोग उत्पादन और वितरण करते हैं वे वैश्य हैं, जो उस कार्य में सहायक हैं वे चतुर्थ वर्ण के है। और वैदिक संस्कृत साहित्य में सर्वत्र वैश्य शब्द प्रजा मात्र के लिये प्रयुक्त हुआ है।

राष्ट्राणि वै विशः (ऐतरेय ब्राह्मण ३।२६)
वैश्य (प्रजायें) ही राष्ट्र को बनाते हैं।

विशि राजा प्रतिष्ठितः।, (यजुर्वेद २०।९)
वैश्य (प्रजा) में राजा प्रतिष्ठित है।

त्वां विशो वृणतां राज्याय ।। (अथर्व ३।४।१)
(राजाओ तुम वैश्य 'प्रजा' द्वारा राज्य के लिए चुने जाओ)

विशिस्त्वा सर्वावाच्छन्त ।। (अथर्व ४।८।४)
(समस्त वैश्य [प्रजायें] राजा तुम्हें चाहती हैं)। यहां तक कि आर्य शब्द केवल वैश्य के लिए ही आया है।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानीम् जनेभ्यः
ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च। यजु० २६।२
(इस कल्याणरी वाणी को ब्राह्मण, राजो शूद्र तथा आर्य सबके

लिए प्रचारित करो)। और भी

प्रियं मां कृणु देवेषु प्रिय राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्राय ऊनार्याय ।। (अथर्व० १९।६२।१)

देवता-राजा-शूद्र-और आर्य सबका प्रिय करो। यहां आर्य संज्ञा वैश्य की ही है।

अस्तु स्पष्ट है कि समाज में वैश्य का बहुमत है। और वस्तुतः वही प्रजा है। स्मृति सदा सर्वदा से यह विधान बनाती रही कि इन विशाल जन समूहों पर अल्प गिनती वालों का राज्य रहे। यह विशाल जन समूह उन थोड़े से संरक्षित वर्गों की आज्ञा में, उनकी प्रजा बन उनके भोग विलास वा ऐश्वर्य का साधन जुटाते रहे हैं।

पहले तो राजा ने गुरु का बंधन उतार फेंका। खिलाफत खतम हो गई। काजी का काम मस्जिद और मकतब में रह गया। भारत में यह लहर हिन्दू राज्य के बाद मुस्लिम साम्राज्य स्थापित होने से आई लगती है। गुरु बेचारे चारों धाम में मठ बनाकर जम गए। इंगलैंड में राजा हेनरी अष्टम कैथरायन रानी को छोड़कर एनीबोलन से शादी करना चाहता था। पोप ने आज्ञा नहीं दी। फलतः धीरे-धीरे हेनरी ने वह वातावरण उपस्थित किया कि इंगलैंड का राजा ही इंगलैंड के चर्च का सर्वाधिकारी(Defender of Faith) होने लगा। और तब वह शादी भी कर ली गई। थामस मोर ने जो राजा का मन्त्री था, इसका विरोध किया और उसे फांसी दे दी गई। तात्पर्य है कि क्षत्रियों की निरंकुशता का जमाना आया।

और शिक्षा प्रसार के साथ जनता जनार्दन ने अपने अधिकार समझे। जनता ने देखा कि फ्रांस में चार्ल्स राजा के अन्यायों को समाप्त करने के लिए एक दूसरे क्षत्री नैपोलियन की शरण ली पर जीत होने पर नैपोलियन भी वंशगत सम्राट हो बैठा। तब उन्होंने कहा कि यह राजा की प्रणाली ही बुरी है—इसी को समाप्त कर दिया जावे। जो उत्पादन करता है, वही समानाधिकार से अल्प समय के लिए प्रतिनिधि चुने और इनमें से सर्व श्रेष्ठ को राजा न कहकर मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री कहा जावे और यही प्रजातन्त्र का श्रीगणेश है। विश्व में अब धर्म-निरपेक्ष राज्य कायम है और तलवार की शक्ति को नमस्कार कर लिया गया है। युद्ध की परिपाटी समाप्त करने को सारे राष्ट्र उत्सुक हैं। युद्ध का आकर्षण प्रायः मर चुका है। जनमत शान्ति को तरजीह देता है। यही है युग-परिवर्तन, अब एक तलवार लेकर निकल पड़े और राज्य स्थापित कर लिया--की पुनरावृत्ति नहीं होगी। प्रजातन्त्र राज्य ही स्थापित होंगे।

खेद केवल इतना ही है कि इसके लाने में इतना समय लगा। अपने देश में एक वैश्य प्रजाजन (गांधी) के हाथों यह होना था। अपने इतिहास की एक घटना पर ध्यान देना आवश्यक है।

मनु इस देश के प्रथम शासक थे जो प्रजा में से चुने गए थे। मनु के ९ पुत्रों में से ६ कुल राजा बने। ७ वें पुत्र का नाम नाभाष्टिनेमि था। इसका एक वैश्य कन्या से प्रेम होकर विवाह हो गया। अतः इसे राज्य नहीं दिया गया। [देखो विष्णु पुराण अ० ४।१।११]

बेचारा बिहार की ओर चला गया। उसे राज्य परम्परा से घृणा हो गई। उसका एक पुत्र भल नन्दन था। वह शास्त्र में रूचि रखने के कारण ऋषि बना और विद्वान बना। ऋग्वेद ९/६८ का यही मन्त्र दृष्टा था। उसका पुत्र वत्स भी ऋषि ही हुआ। वत्स के पुत्र प्रांशु ने एक नई ज्योति जगाई। वह न ब्राह्मण बना न क्षत्रिय। साधारण प्रजाजन ही रहा। परन्तु इसने वैशाली के प्रांगण में प्रजातन्त्र प्रणाली की नींव डाली। मुजफ्फरपुर जिले में सदर मुकाम से ३० मील दूर वैशाली के खंडहरों में खड़े होकर मैंने प्रजातन्त्र की गन्ध वहां की पृथ्वी में सूंघी थी। वहीं वैश्य वर्णोत्पन्न महावीर स्वामी की जन्मभूमि देखी और पार्श्व में स्थित है प्राचीन ग्राम बनियां पड़ा जिसे नाभाष्टनेमि ने बसाया था और प्रांशु ने जहाँ प्रजातन्त्र के परीक्षण किए थे।

उसने वंशमाला का राज्य नहीं चलाया। प्रजातन्त्र के वे संस्कार वैशाली में हमें बुद्ध भगवान के समय तक लिच्छवियों के प्रजातन्त्र के रूप में मिलते हैं।

मल्ल—राजा महात्मा बुद्ध से परामर्श और आज्ञा मांगते थे वैशाली पर आक्रमण करने की। बुद्ध कहते हैं वे जीते ही नहीं जा सकते क्योंकि:—

(१) वहां का प्रत्येक नर नारी अपने को उस राज्य का स्वामी समझता है। (२) वे चरित्रवान हैं। (३) वे स्वयं कभी किसी पर आक्रमण करने की नहीं सोचते हैं।

वैशाली में ८ वीं शताब्दी में जब फाह्यान आया, उसने लिच्छवियों के प्रजातन्त्र को कायम पाया। यह प्रजातन्त्र प्रणाली हजारों वर्षों तक कायम रही। इसके संस्थापक वैश्य थे। और वैश्य तन्त्र वहां चलता रहा।

शूद्र-तन्त्र= उत्पादक जितना आलसी और लालची होगा उसे उतने ही सहायक रखने पड़ेंगे। वे सहायक साधन-विहीन मजदूर कहलाते हैं। जितना उनसे अन्याय होगा, उतने ही वे मजदूर होंगे और उसकी प्रतिक्रिया होगी। तब प्रजातन्त्र (व वैश्य तन्त्र) शूद्र-तन्त्र (साम्यवाद) में बदल जावेगा। हमारे देश में भी कृषक-मजदूर का अधिकार स्थापित हो रहा है। राजनीतिज्ञ ने देखा कि मजदूर-भूमिहीन बढ़ने लगे हैं। तब आवाज निकली कि ए वैश्य दान देना तेरा कर्तव्य है। अधिक भूमि तू भूमिहीन के लिये भूदान में दे डाल। अधिक सम्पत्ति सम्पत्ति--हीन को दे डाल। उद्योग का मुनाफा ऐसा बांट कि तेरा सहायक मजदूर भी उस मिल में स्वामित्व अनुभव करे, वैश्य बन जावे। अन्यथा स्वामित्व हीन की जो संख्या बढ़ जावेगी-मजदूर बढ़ जावेंगे तो शूद्र-तन्त्र स्थापित हो जावेगा। वैश्य तन्त्र को बनाये रखना है तो साधन विहीन(Have-nots)को स्वामित्व भाव सम्पन्न(Have)कर डालिये। वैश्य तन्त्र तथा शूद्र-तन्त्र में यही भेद चल रहा है--हम सम्पन्नता बांटते हैं और साम्यवाद (शूद्र तन्त्र)

बांटता हैं गरीबी।

सम्पन्नता वितरण का प्रथम परीक्षण अग्रसेन ने किया था। उनका ५१५५ वर्ष पूर्व (कलयुग से ८५ वर्ष पूर्व) जन्म हुआ था। उस समय देश में सर्वत्र ब्राह्मण एवं क्षत्रिय जाति का बोल बाला था। जो वैश्य वर्ण समाज का मेरुदण्ड था वही जाति बनने पर ब्राह्मण और क्षत्रियों की दृष्टि में हेय बन गया। हिन्दुओं के किसी भी धार्मिक ग्रन्थ में वैश्य जाति का उल्लेख नहीं है। सूत्र ग्रन्थों में यह भी व्यवस्था दे दी गयी कि यदि कोई वैश्य अपना कर्म छोड़ दे तो वह ब्राह्मण या क्षत्रिय का कर्म करने का अधिकारी नहीं हो सकता। वह शूद्र का कर्म स्वीकार करे।

जब ऐसी हीनावस्था हो गई तो वैश्य जाति को पुनः संगठित करने का निश्चय किया गया। गौतम रचित सूत्र ग्रन्थ की वह व्यवस्था थी कि एक ही व्यवसाय के लोग अपने संघ बना सकते थे जिन्हें जनपद कहा जाता था, और अपने संघ की व्यवस्था के लिये प्रत्येक जनपद अपने नियम बना सकता था। जनपद की रक्षा हेतु अपनी साधारण सेना भी रख सकता था। सूत्र ग्रन्थ की इस व्यवस्था का लाभ उठाकर अग्रसेन ने अपने वैश्य जनपद की स्थापना की और एक लाख वैश्यों का संगठन बनाया गया।

क्षत्रियों को वैश्य जनपद का उदय न भाया। परिणाम स्वरूप देवराज इन्द्र ने महाराज अग्रसेन से कुपित होकर उनसे संघर्ष छेड़ दिया। तब अग्र गण ने लक्ष्मी की आराधना करके उनसे प्रेरणा प्राप्त की। दक्षिण में नागवंश भी एक अनार्य सशक्त वंश था। उसकी कन्या से उन्होंने विवाह किया। नागवंश का संबल मिलने से वैश्य जनपद भी बढ़ा और इन्द्र से समझौता करके उन्होंने अग्रोहा नगर बसाया और उसे अग्र गणराज्य की राजधानी बनाया।

इस गण राज्य की प्रमुख उपलब्धियां यों थी :—

१—एक लाख वैश्यों का संगठन कर वैश्य जनपद की स्थापना की और वैश्यों का गौरव पुनः स्थापित किया।

२—अग्र गणराज्य सच्चे अर्थों में गण-राज्य था इस पर १८ गण प्रतिनिधि राज्य करते थे।

३—इस गण राज्य ने ऐसा ऊंचा आदर्श उपस्थित किया कि अग्रगण राज्य में यदि कोई अर्थहीन हो जाता था तो उसे एक ईंट और एक रुपया देकर पुनः लखपति बना दिया जाता था।

४—इस बात का प्रयत्न किया गया कि अग्र गण राज्य के परिवारों में धार्मिक भावना बढ़े। अतः उन्होंने यज्ञ प्रणाली का प्रचलन बढ़ाया। अहिंसा व्रत तथा मांस भक्षण निषेध भी इसी समय इनके द्वारा प्रचारित किया गया।

प्रजा के नेता के रूप में

ब्रह्मवैवर्त पुराण लगभग १४ वीं शताब्दी में लिखा गया था। उसने बौद्धों के वज्रयाण नामक वाममार्गी पन्थ की नकल में कृष्ण-राधा के शृंगार-मय रूप की उपासना की पद्धति चलाई। वोपदेव ने स्वनिर्मित श्रीमद् भागवत में यही प्रक्रिया यत्किञ्चित अपनाई थी। आज से ५००० वर्ष पूर्व कंस के राज्यकाल में कृष्ण ने उसके राज तन्त्र को चुनौती दी थी। परन्तु कृष्ण कंस से बच निकले तब उन्हें संरक्षण नन्द बाबा और जसोदा ने दिया था। उनके क्षेत्र में भी प्रचुर प्रजातन्त्र था। स्वयं राधा भी वृषभान वैश्य की कन्या थी :—

[वृषभानोश्च वैश्यस्य सा च कन्या बभूव ब्र० वै० पुराण। पुरुष खंड अध्याय—२ श्लोक—३६] आगे श्लोक ४१ यों है।

सार्द्ध रायाण वैश्येनेतत्सम्बन्धे चकरातः।

कृष्ण माता यशोदायाः रायाणस्तत्सहोदरः ॥३८॥

गौलोके गोपा कृष्णांश सम्बन्ध कृष्ण मात्तुलः ॥४१॥

[ब्रह्म वैवर्त पुराण। पुरुष खण्ड २ अध्याय ४९]

वह राधा वृषभान वैश्य की कन्या थी। उसने उसका विवाह रायण से किया। रायण जसोदा का सहोदर भाई था। पर गौलोक में रायण कृष्ण का पुत्र था।

वैश्यों की जनसंख्या

१९२१ को अन्तिम मर्दुम शुमारी थी, जिसमें जातियों के अनुसार संख्या रिपोर्टों में दी गई थी। उसमें वैश्यों की संख्या भी लिखी है:—

(१) अजमेर, मेवाड़, राजपूताना, पंजाब, काश्मीर आदि	९,१५,०५०
(२) बम्बई, बड़ौदा तथा कुर्ग	४७,३५,३७२
(३) मद्रास, अहाता, मैसूर, हैदराबाद, ट्रावनकोर और कोचीन	१०,७८१,३९
(४) मध्य प्रान्त तथा बरार	३,२७,०८१
(५) संयुक्त प्रान्त	२१,९५,९१४

नोट :—कलवारों की संख्या इस रिपोर्ट में पृथक ही असत शूद्रों में दिखाई है। शूद्रों के उस रिपोर्ट में तीन भाग किये गये थे :—

(अ) = सत शूद्र—जिनके यहां ब्राह्मण भोजन कर सकते थे।

(ब) = असत शूद्र—जिनका पानी ब्राह्मण नहीं पीते, ये पर स्पर्श करते थे।

(स) = अति शूद्र—अछूत व अस्पृश्य।

(६) अ—बंगाल अहाता	०
ब—उड़ीसा खण्ड मंडल तथा छोटा नागपुर	०
स—उड़ीसा	०
द—आसाम	०
य—कूच बिहार	०
र—बिहार	०
(इनप्रान्तों में सब वैश्यों की गणना सत शूद्रों में की गई थी।)	०

योग—९२५,१,१५६

बंगाल अहाता के सत शूद्रों की संख्या १९५, ५३, १३६ लिखी है।

इसमें बीसियों जातियाँ सम्मिलित थीं। यदि इसका १०% वैश्य मान लें तो लगभग १९॥ लाख और बनते हैं। ९२॥ लाख में १९॥ जोड़ने से ११२ लाख बनता है। उस समय सारे भारत की आबादी २९ करोड़ थी। आज भारत तथा पाकिस्तान की आबादी ८७करोड़ है। ग्रतः ११२×३= ३३६ लाख अर्थात २। करोड़ वैश्य भारत में है। चूंकि पाकिस्तान में वैश्य नहीं हैअतः भारत की १९८१ की ६८करोड़ आबादी में ३॥करोड़ होने से उनका प्रतिशत ५% बैठता है। यह संख्या ब्राह्मणों, राजपूतों और चमारों की सख्या के बाद पर आती है। अस्तु हमें राजनैतिक दृष्टि से भी वैश्य एकता का प्रयत्न करना चाहिए।

वैश्य राजाओं का वर्णन

अ-वर्धन वंश

मंजु श्री मूल कल्प नामक ऐतिहासिक बौद्ध ग्रन्थ के अनुसार थानेश्वर (हिसार के पास) के वर्धन राजाओं का परिचय इस प्रकार है :—

इस वंश का प्रारम्भ आदित्य वर्धन से ५६९ ई० में होता है। ये श्रीकण्ठ के निवासी थे। आदित्य वर्धन से प्रभाकर वर्धन और इनके राज्य वर्धन तथा इतिहास प्रसिद्ध हर्ष वर्धन हुये। हर्ष वधन का शासन काल ६०६ ई० से ६४७ ई० तक है। वर्धन वंश ने कुल ७८ वर्ष राज्य किया था।

हर्ष वर्धन के शासन काल में चीनी यात्री ह्यूनत्सांग का आगमन हुआ था। यह हर्ष वर्धन की राज सभा में बहुत समय तक रहा था। इस चीनी यात्री ने हर्ष वर्धन को वैश्य राजा लिखा है। कवि बाण ने भी चारों हर्ष चरित्र में इसे वैश्य लिखा है।

वैश्यों की उपाधि-गुप्त

गुप्त शब्द का वैश्यों के नाम के आगे प्रयोग भी सारे संसार में नामों के आगे वंश सूचक शब्द लगाने की प्रथा से है। केवल महाराष्ट्र में स्वनाम तदुपरान्त पिता का नाम फिर ग्राम लिखकर एक व्यक्ति का पूरा नाम बनता है। अन्यथा शेष सभी प्रान्तों में सब व्यक्तियों के नाम के आगे जाति सूचक उपनाम लगा होता है। तमिलनाडु, बिहार, बगाल, राजस्थान, मध्यप्रदेश, काश्मीर सर्वत्र यही पद्धति है। गुजरात में नाम व पिता के नाम के बाद जाति लिखते हैं। इस हेतु अब लोग जाति सूचक उपनाम लगाने लगे हैं। पहिले केवल वर्ण सूचक शब्द लगाते थे। शर्मा, वर्मा, गुप्त तथा दास शब्दों का प्रचलन था। इसका आधार सम्भवतः मनुस्मृति थो :—

शर्मवद् ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो रक्षा समन्वितम्।
वैश्यस्य पुष्टि संयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्य संयुतम्॥ मनु० २।३२

ब्राह्मण के नाम के साथ शर्मा, राजा के वर्मा, वैश्य के पाल व भूति और शूद्र के साथ दास शब्द का प्रयोग होता है।

यम स्मृति के अनुसार विप्र के नाम के साथ शर्मा और देव व राजा के साथ वर्मा और त्राता, वैश्य के साथ भूति और दत्त तथा शूद्र के नाम के साथ दास का प्रयोग उपयुक्त है। विष्णु पुराण के अनुसार क्रमशः शर्मा, वर्मा, गुप्त और दास शब्द युक्त नाम होने चाहिए।

बौधायन गृह्य सूत्र में भी कहा है "वैश्यान्तः गुप्तेति"।

अब तो आसेतु हिमालय पर्यन्त वैश्य के लिए गुप्त शब्द का प्रयोग होता है। महाराष्ट्र में गुप्ते तथा बंगाल में सेनगुप्त शब्द हो गया। परन्तु दक्षिण में चेट्टी, मुदालियर, नायक, रेड्डी आदि शब्दों का भी चलन है। वैश्य संगठन के नाम पर भी गुप्त शब्द उचित जंचता है।

ब-गुप्त वंश

वर्द्धन वश के पश्चात भारत में प्रसिद्ध वैश्य राज्य वंश गुप्त वंश है। गुप्त वंश का प्रारम्भ श्री गुप्त से होता है जो मुर्शिदाबाद (बंगाल) का मूल निवासी था। इनका पुत्र घटोत्कच गुप्त (२४० से ३१९ AD) था। इन दोनों को ताम्रपत्रों और शिला लेखों में 'महाराज' लिखा गया है।

(१) कलयुग राज वृत्तान्त पुस्तक के अनुसार इसी वंश का प्रथम सम्राट चन्द्र गुप्त(३१९A.D.)प्रथम है। इसका विवाह लिच्छिवी वंश की कुमारी कुमार देवी' से हुआ था। इस विवाह का वर्णन शिला लेखों में मिलता है। चन्द्र गुप्त की मुद्राओं में महाराज चन्द्र गुप्त और महारानी कुमारदेवी की साथ-साथ खड़ी मूर्तियां अंकित हैं। चन्द्रगुप्त के काल में स्वर्ण मुद्रायें भी प्रचलित की गई थी। इनकी राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) थी। इन्हीं के नाम से गुप्त सम्वत् का प्रारम्भ हुआ था। उन्होंने ७ वर्ष राज्य किया।

(२) समुद्र गुप्त [३१५ से ३७५ AD]

चन्द्र गुप्त प्रथम का बड़ा पुत्र समुद्र गुप्त प्रसिद्ध सम्राट हुआ। इनके राज्यकाल की मुद्रायें आज भी उपलब्ध हैं। समुद्र गुप्त अनेकों नाम से प्रसिद्ध थे, किन्तु चारों दिशा में अपूर्व विजय प्राप्त करके चक्रवर्ती समुद्र गुप्त के नाम से प्रख्यात हुये। चतुर्दिक विजय प्राप्त करके समुद्र गुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया। उस अवसर की अनेक स्वर्ण मुद्रायें आज सुलभ है। ह्यूनत्सांग ने लिखा है कि श्रावस्ती के विक्रमादित्य ने भारत विजय के पश्चात दीन-दुखियों के लिये ५ लाख स्वर्ण मुद्रायें वितरित की थीं। इनका राज्य काल ५१ वर्ष का था।

(३) महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त द्वितीय [३७५ से ४१४ AD]

चन्द्र गुप्त को ध्रुवदेवी के गर्भ से दो पुत्र — गोविन्द गुप्त और कुमार गुप्त तथा एक कन्या प्रभावती प्राप्त हुई। इसके शासन काल में ही कालिदास और वररुचि जैसे विद्वान हुये।

हत्वा भ्रातरमेव राज्य महरद् देवीं च दीनस्ततो।
लक्ष कोटिमलेखयन् किल किलौ दातास गुप्तान्वयः॥

चन्द्र गुप्त ने ३६ वर्ष राज्य किया। यह वही चन्द्र गुप्त है जो विक्रमादित्य के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। जिसका सम्वत वर्तमान काल में

विक्रम सम्वत के नाम से प्रचलित है, यह सम्वत शकों के नाश से २४१ वर्ष पश्चात चला

(४) कुमार गुप्त

इसने भी अश्वमेघ यज्ञ किया और स्वर्ण मुद्रायें चलाई । इनका राज्य काल ४२ वर्ष तक रहा, इनके पुत्र स्कन्द गुप्त नामक महाराजाधिराज हुये ।

(५) स्कन्द गुप्त

स्कन्द गुप्त हूणों से हुये युद्ध में विजयी होने के कारण बहुत प्रसिद्ध हुये । चन्द्रगर्भ परिपृच्छा सूत्र में इनके द्वारा हुये एक युद्ध का वर्णन इस प्रकार मिलता है ।

"कुमार गुप्त का जन्म कौशाम्बी में हुआ था । उसका एक पुत्र बहुबलशाली था । जब उसकी आयु १२वर्ष थी तो कुमार गुप्त पर तीन विदेशी महान शक्तियों ने आक्रमण कर दिया । आक्रान्ता थे—१. यवन, २.वाल्हिक ३. कुशान । इन्होंने गान्धार से गंगा के उत्तर प्रदेशों पर अपना अधिकार कर लिया । कुमार गुप्त जैसे बलशाली युवक ने सेना-संचालन की आज्ञा लेकर विदेशी आक्रान्ताओं का मुकाबला किया । शत्रु सेना ३ लाख थी और सेना संचालन विदेशी राजाओं के हाथ में था । महा सेनापति यवन था । कुमार गुप्त के पुत्र की सेना २लाख थी । उसका संचालन ५०० सामन्तों के द्वारा हो रहा था । वे सब राजा के मन्त्रियों के युवाकुमार, बलशाली और हिन्दू भावना से ओत-प्रोत थे । कुमार ने शत्रु सेना को छिन्न-भिन्न करके विजय पताका फहरा दी । युद्ध से लौटने पर राजा कुमार गुप्त ने उसे राज तिलक करके राजा बना दिया । अन्त में राजकुमार ने तीनों शत्रु राजाओं को पकड़ लिया और उन्हें प्राण दण्ड दिया तथा शान्ति पूर्वक जम्बू द्वीप पर २५ वर्ष राज्य किया ।"

(६) नृसिंह गुप्त

स्कन्द गुप्त के जीवनकाल में ही इनके पुत्र का देहावसान हो गया । अतः अपने पुत्र के शोक में वह भी राज-काज से विमुख हो गया था । इनके जीवन काल में ही स्कन्द गुप्त के भाई प्रकाशादित्य ने अपने पुत्र नृसिंह गुप्त को भारत सम्राट बनाया । इसने ४०वर्ष तक राज्य किया । प्रकाशादित्य के ज्येष्ठ भ्राता शाक्य महाबल ने हरिद्वार तथा कश्मीर का मध्य भाग जीता था ।

इसके बाद बुद्ध गुप्त, भानुगुप्त, तथागत गुप्त, कृष्ण गुप्त, हर्ष गुप्त, एवं जीवित गुप्त का राज्य रहा ।

(७) कुमार गुप्त द्वितीय

जीवित के भ्राता नृसिंह गुप्त का पुत्र कुमार द्वितीय राजगद्दी पर बैठा । उसने हूणों से युद्ध किया और अनेक राजाओं को जीता । इसने ४४ वर्ष तक राज्य किया। किन्तु इसके राजकाज में ही गुप्त वंश की शक्ति क्षीण हो गई और वे हूणों के आक्रमणों का मुकाबला करने में असमर्थ हो गए। अतः गुप्त साम्राज्य छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया । वायु पुराण में गुप्त वंश की राज्य सीमाओं का वर्णन इस प्रकार किया है :—

अनुगंग प्रयागं च साकेतं मगधांस्तथा ।
एतान जन पदान सर्वान् भोक्ष्यन्ते गुप्तवंशजाः ॥

[अग्र ज्योति संदेश से साभार]

गुप्त राजाओं की मुद्रायें

किसी भी देश के इतिहास में मुद्राओं (सिक्कों) का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है ।

प्रचीन मुद्रायें कार्षापण (आहत Punch Marked) कहाती हैं । ये स्वर्ण रजत और ताम्र से बनी होती हैं। तोल के क्रम से अर्द्ध काकिणी, पादमाष, कार्षापण, शतमान, स्वर्ण आदि विभिन्न तोल वाली मुद्राओं के विभिन्न नाम होते थे । पहले शासक या गणतन्त्र की परिषद् सिक्कों पर नाम नहीं देते थे । अपितु राज्य के विभिन्न मान्य चिन्हों को चिन्हित कर देते थे, जेसे बैल, हाथी, सूर्य, चक्र, शस्त्रास्त्र, पर्वत, वृक्ष आदि । कार्षापण मुद्राओं पर कई सौ प्रकार के चिन्ह मिलते हैं ।

कार्षापण मुद्राओं के पश्चात भी देश के विभिन्न भागों में विभिन्न शासकों द्वारा प्रचलित मुद्रायें प्राप्त होती हैं । कुछ 'राज्यतन्त्र प्रणाली के आधार पर चलाई गई मुद्रायें और कुछ गणतन्त्र प्रणाली के आधार पर चलाई गई । राज्यतन्त्र के आधार पर जैसे—कुषाण, गुप्त, पांचाल, क्षत्रप, मित्र आदि वंशों के शासकों द्वारा प्रचलित मुद्रायें और गणतन्त्र प्रणाली में यौधेय, कुणिन्द, औदुम्बर, आर्जुनमान, आग्रेय, राजन्य, वृष्णि आदि गणों की मुद्रायें ।

गुप्त राजाओं ने स्वर्ण रजत ताम्र की अनेक प्रकार की मुद्रायें चलाई । इन पर लक्ष्मी को प्रधानता दी गई । एक ओर राजा धनुषबाण लिए खड़ा हुआ सिंह से युद्ध करता हुआ, घुड़सवार या हाथी पर बैठा दिखाया जाता है । दूसरी ओर लक्ष्मी (देवी) मिलती है । चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्र गुप्त, कुमार गुप्त, स्कन्द गुप्त, नरसिंह गुप्त, बालादित्य आदि अनेक गुप्त सम्राटों की श्रृंखलाबद्ध मुद्रायें मिलती हैं । इनसे गुप्त सम्राटों के ऐश्वर्य होने की विस्तृत जानकारी मिलती हैं क्योंकि लक्ष्मी ऐश्वर्य की ही देवी है । इसी भांति पांचाल राज्य की मुद्राओं से हमें रुद्रगुप्त, आदि राजाओं की स्थिति का ज्ञान होता है ।

मित्ताथल(भिवानी)के खण्डहर से गुप्त भी राजाओं की स्वर्ण मुद्रायें मिली थीं । इन पर भी धनुषबाण लिए राजा की मूर्ति बनी होती है । साथ में गरुड़ के चित्र से युक्त ध्वज खड़ा है । राजा सिंह के साथ युद्ध करता हुआ भी दिखाया गया है । पृष्ठ भाग में लक्ष्मी कमल के फूल पर आसीन मिलती है । अनेक प्रकार की मुद्राओं पर विभिन्न लेख मिलते हैं । उदाहरणार्थ देखिये—

समुद्रगुप्त—कृतान्त परशुर्ज्जयत्यजितराजजेताजितः ।
चन्द्रगुप्त द्वितीय—देवश्री महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्तस्य ।
श्री गुप्तकुलस्य महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्त विक्रमाङ्कस्य

आजितविक्रमः । सिंहविक्रमः । सिंह महेन्द्र । वाजिमेघः । कृतान्तपरशुः ॥ इत्यादि । अगरोहा से प्राप्त स्कन्दगुप्त की रजत मुद्रा पर नाचते हुए मोर के चतुर्दिक् इस प्रकार लेख मिला है विजिताबनिखनिपतिः श्री स्कन्दगुप्तो दिव जयति । गुप्त राज्य की सीमा अग्रोहा तक थी ।

इस वंश के शेष राजाओं की वंशावली इस प्रकार है:—
कुमार गुप्त के बाद महासेन, देवगुप्त II,
माधव गुप्त, आदित्य सेन, देवगुप्त III,
विष्णुगुप्त द्वितीय, जीवित गुप्त III, ने राज्य किया ।

इनका राज्य गौड़ों ने क्षय कर दिया था । इस वंश के महासेन ही आदिक्ष्य वर्द्धन के समकालीन थे । उन्हें उसकी बहिन ब्याही थी ।

द– मेतक वैश्यों ने मालवगण स्थापित किया था जो वल्लभी नाम से प्रसिद्ध हुये ।

धनसेन I [५२५–५४५]
ध्रुवसेन [५४५–५५६]
महासेन [५५६–५५९]
धरसेन II, शीलादित्य, खाराग्रह,
धासेन III, शीलादित्य III आदि ने ७६७ तक शासन किया ।

य–वैश्य वंश की एक शाखा काकाटक वंश भी थी । इसमें बालटक प्रवरसेन, भद्रसेन, पृथ्वीसेन आदि ने ७ वीं सदी तक राज्य किया ।

अन्य राजाओं के नाम नाग पर थे– सर्वनाग, सर्वसेन, विध्यसेन, प्रवरसेन II, देवसेन एवं हरिसेन ।

र–नाग वंश भी वैश्य कुल उद्भूत था । इन्होंने नाग खण्ड [नानपुर] में २०० वर्ष राज्य किया । वंश क्रम यों था :—
शेषं नाग [११०–९० ई० पू०]
भोगिन [९०–८० ई० पू०]
रामचन्द्र [५०–५० ई० पू०]
धर्म [५०–४० ई० पू०]
वंगा [४०–२१ ई० पू०]
भूत नन्दी [२०से१० ई० पू०]
शिशु नन्दी [१० ई० पू० से २५ ई०]
यश नन्दी [२५–३० ई०]
पुरुष दत्त, उत्तम दत्त, काम दत्त, भवदत्त, शिवदत्त ।

ल–भारशिव वंश के सात राजा
नव नाग [१४०–१७० ई०]
वीरसेन [१७०–१८० ई०]
हयनाग [२१०–२४५ ई०]
भवनाग [२४५–२५० ई०]
वहिननाग[२५०-२६० ई०]
चरननाग[२६०–२९० ई०]
भवनाग [२९०–३१५ ई०]

इन्होंने १० अश्वमेघ यज्ञ किए थे । इनकी राजधानी पहिले पदभावती फिर मथुरा थी । मथुरा में गोमित्र, ब्रह्ममित्र, दृढ़मित्र, सूर्य मित्र एवं विष्णुमित्र तो कुषाणों के बाद भी राज्य करते पाये जाते हैं ।

व-सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य

रैवाड़ी निवासी हेमू वैश्य ने हुमायूं से दिल्ली का राज्य छीनकर विक्रमादित्य की उपाधि ग्रहण कर राजतिलक कराया था । उसने दो वर्ष राज्य किया था । बाद में अकबर से परास्त हुआ था ।

भामाशाह

वैश्यों द्वारा देश के स्वातन्त्र्य आन्दोलन का जो उपोदघात हेमचन्द्र विक्रमादित्य ने किया था और जिसका वर्णन ऊपर आया है, उस परम्परा को महाजन कुलोत्पन्न प्रधानमन्त्री भामाशाह ने जारी रक्खा ।

उनके पिता का नाम भारमल था और उन्हें महाराणा प्रताप सिंह के पिता महाराणा उदय सिंह ने अलवर से बुलाकर अपने यहां ससम्मान रखा था । अलवर में रावण देवरा क्षेत्र में जिसे अब प्रतापगंज कहते हैं, भामाशाह के महलों के खंडहर विद्यमान हैं । ऊंची पहाड़ी पर किले के ध्वसावशेष हैं । अलवर के भारमल कावड्या के मेवाड़ में जा बसने का समय विक्रम संवत १६१० (१५५३ ई०) है ।

भारमल कावड्या महाराणा के प्रधान पद पर प्रतिष्ठित थे । महाराणा उदय सिंह की मृत्यु संवत १६२८ में हुई । महाराणा उदयसिंह जी अपने अनन्यतम कनिष्ठ पुत्र जगमलजी को गद्दी का उत्तराधिकारी बना गए थे, किन्तु मेवाड़ के लब्ध-प्रतिष्ठित सलूँबर के रावजी व प्रमुख सरदारों ने ज्येष्ठ पुत्र प्रतापसिंह को ही श्रेष्ठ योग्य और धर्मानुसार उत्तराधिकारी समझ कर मेवाड़ के राजसिंहासन पर अभिषिक्त किया । इससे जगमलजी ने अप्रसन्न होकर अकबर बादशाह का आश्रय जा ग्रहण किया था । महाराणा उदेयसिंह की मृत्यु से चार वर्ष पूर्व चित्तौड़ तक मुसलमानों का अधिकार हो गया था । प्रतापसिंह ने सिंहासनासीन होते ही कठिन कर्त्तव्य के क्षेत्र में पदार्पण किया । उधर भारमल कावड्या की मृत्यु के बाद उनका पुत्र भामाशाह प्रधानमन्त्री के पद पर प्रतिष्ठित किया गया था ।

हल्दीघाटी की लड़ाई के बाद भामाशाह कुम्भलमेर की प्रजा को लेकर मालवे में रामपुरे की ओर चला गया था । वहां के अधिपति राव दुर्गा ने भामाशाह को उसके साथियों सहित प्रतिष्ठा के साथ रखा । शाही सेनापति शाहबाज खाँ ने गोगूंदा और उदयपुर में शाही सेना के थाने बैठा दिये थे । इससे महाराणा जननी-जन्मभूमि के उद्धार की चिन्ता में दुर्गम पर्वतों और वीरान जंगलों में भटक रहे थे ।

इसी अवसर में भामाशाह और उसके भाई ताराचन्द ने मालवे पर चढ़ाई कर २५००००० रुपये तथा २०००० अशर्फियां दण्ड स्वरूप वसूल कीं । इसके बाद "चूलिया" ग्राम में महाराणा को उपस्थिति की सूचना पाकर भामाशाह वहाँ उपस्थित हुआ और उसने दण्ड स्वरूप जो उक्त धन एकत्र किया था, और उसके पास जो कुछ और था वह सब महाराणा को भेंट कर दियां । महाराणा ने उसकी उदारता, स्वामिभक्ति और स्व-देश-प्रेम के लिए उसे छाती से लगाया । इस रुपए की सहायता से राणा ने ५००० का सैन्य एकत्रित की । जिसके ५ वर्ष के वेतन हेतु यह धन

यथेष्ठ था। उन्होंने दिवर के शाही थाने पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में राणा के पुत्र अमरसिंह ने भाले से मुगल सामन्त सुलतान खां का वध करके विजय श्री प्राप्त की थी। इसके बाद इस फौज ने कुम्भलमेर पर भी कब्जा किया। ओवरा ग्राम में डेरा डाल कर इस फौज ने जावरे को जीता। इन युद्धों में प्रधानमन्त्री भामाशाह तलवार लेकर लड़ते भी थे। सन१६४३ तक राणा का चित्तौड़ और माँडल गढ़ छोड़कर शेष सारे मेवाड़ पर अधिकार हो गया था। राणा प्रताप के बाद भामाशाह अमरसिंह के राजत्व काल में भी प्रधानमन्त्री रहा।

उदासी सम्प्रदाय का इतिहास-ग्रन्थ श्रीत मुनि चरितामृत नाम से १९२८ ई० मे प्रकाशित हुआ है जिसमें गुरु नानक के पुत्र श्रीचन्द्र जो का विस्तृत जीवन वृत्तान्त है। पुस्तक के पृष्ठ१८५ एवं१९५ पर वर्णित है कि श्री चन्द्रजी ने भामाशाह से सम्पर्क करके महाराणा प्रताप को यह धनराशि देने को प्रेरित किया था। महाराणा प्रताप सिंध स्थित ठट्टा नगर की ओर ही हारकर जा रहे थे, पर श्रीचन्द्र जी के भेजे भामाशाह मार्ग में ही उन्हें धन सहित मिले और उन्हें पुनः युद्ध-रत किया।

प्रायः साढ़े तीन सौ वर्ष होने को आये। भामाशाह के वंशज आज भी भामाशाह के नाम पर सम्मान पा रहे हैं। मेवाड़ की राजधानी उदयपुर में भामाशाह के वंशजों को पंच पंचायत और अन्य विशेष उत्सवों पर सर्व प्रथम गौरव दिया जाता है।

भामाशाह के वंशजों की परम्परागत प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए संवत् १९१२ (सन् १८५५ में) तत्सामयिक उदयपुराधीश महाराणा सरूपसिंह जी को एक आज्ञा-पत्र निकालना पड़ा, जिसकी नकल ज्यों की त्यों इस प्रकार है:—

"·········श्री रामोजयति श्री गणेशजी प्रसादात् श्री एकलिंग जी प्रसादात् भाल का निशान (सही) स्वस्तिश्री उदयपुर सुभ सुथाने महाराजाधिराज महाराणा जी श्री सरूपसिंघ जी आदेशात् कावड्या जेचन्द कुनणोवोदचन्दकस्य-अपं थारा बड़ा वा सा फामो कावढयो ईराजम्हे साम ध्रम्रासु काम चाकरी करी जी की मरजाद ठेठ सुय्या है। "महाजना की जातम्हे" बावनी त्था चोका को जीमण वा सीग पुजा होवे जीम्हे पहेलो तलक थारे होनी हो सो आगला नगर सेठ वेणीदास करसो कर्योंअर वेदर्याप्त तलक थारे नहीं करवा दी दो अबारु थारी सालमी दोखों सो मो कर सेठ पेमचन्द ने हुक्म की दो सो वी भो अरज करी अरन्यात म्हे हकसर मालम हुई सो अबे तलक माफक दसतुर के थे थारे करायया जाजो आगासु थारा वंश को होवेगा जीके तलक हुवा जावेगा पंचाने वी हुकुम कर दी य्यो है सो पेली तक तलक थारे होवेगा। प्रवानगी म्हेतां सेर सींघ संवत् १९१२ जेठ सुद १५ बुधे।"

उक्त आज्ञा पत्र भामाशाह के वंशज कावड्या जयचन्द कुनणा वीरचन्द्र को सम्बोधन कर लिखा गया है। इसका अभिप्राय यह है कि 'तुम्हारे बड़े बाबा भामाशाह कावड्या ने इस राज्य में स्वामि-धर्म से काम चाकरी की जिसकी मर्यादा ठेठ से यह है कि महाजनों की जाति में "बावनी तथा चौके का जीमण' (एक तरह का जातीय भोज) वा "सीग पूजा" हो, उसमें पहले तिलक तुम्हारे होता। सो अगाड़ी नगर सेठ वेणीदास बिना जाने तिलक तुम्हारे नहीं करने दिया। अब निगाह करके सेठ प्रेमचन्द को हुक्म दिया। सो उसने भी अर्ज की और जाति में अधिकार युक्त मालूम हुआ। इसलिये अब तिलक दस्तूरी के मुताबिक तुम तुम्हारा कराये जाओ। आगे से जो तुम्हारे वंश का होगा, उसके तिलक होता रहेगा। पंचों को भी हुक्म दे दिया है। सो पहले तिलक तुम्हारे होगा। आज्ञानुसार। महता सेरसिंघ संवत् १९१२ वृष ज्येष्ठ सुदि १५ बुधवार [सन् १८५५ ई०]।

अंगरेजी राज्य को समाप्त करने में वैश्यों का योगदान——

i) आगे दयानन्द सरस्वती का जिक्र होगा, जिन्होंने हर राष्ट्र हेतु पूर्ण स्वराज्य का उल्लेख अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश (आदिम) में १८७५ में ही किया था तथा नमक कानून ओर वन-कानून के उच्छेद की वकालत भी की थी। सन १९०५ तक तो उदार वादी नेतृत्व अंग्रेजों से सुधार और नौकरियां ही मांगता था। पर बंगभंग को तीव्र प्रक्रिया हुई। दयानन्द सरस्वती के एक पट्ट शिष्य लाला लाजपतराय [अग्रवाल वैश्य : जन्मस्थान जुगराव-पंजाब] ने १९०५ में बनारस कांग्रेस में प्रस्ताव लाया कि अंगरेजों से भीख मांगना बन्द करके देश को सशक्त बनाया जावे। पर उनका अंगरेजी राज्य का बहिष्कार(NON CO-OPERATION)और स्वदेशी का प्रस्ताव पास नहीं हो सका। लालाजी को अंग्रेजों ने देश से निकाल दिया था। परन्तु १९०६ की कलकत्ता कांग्रेस में वह प्रस्ताव पास हो गया तथा औपनिवेषिक स्वराज्य का ध्येय भी घोषित हुआ। उदारवादी इस प्रस्ताव से क्षुब्ध थे। अतः १९०७ के सूरत अधिवेशन में उदारवादी बहुमत ने इन तीनों को कांग्रेस से अलग कर दिया। यह तीन लाल [उक्त लाला जी], बाल [बाल गंगाधर तिलक] और पाल [विपिन चन्द्र पाल बंगाल के (वैश्य) नेता] ही इस क्रान्ति के प्रस्तोता थे।

इसके बाद लालाजी१९०८ से १९१६ तक माडले में कैद कर दिए गये। लाला जी १९०७ ही में देश निकाले की पहिली सजा काटकर लौटे थे।

लाला जी १९२० के कलकत्ता अधिवेशन के सभापति थे। तभी असहयोग का प्रस्ताव फिर पास हुआ। उन्होंने देशाभिमा का प्रचुर साहित्य लिखा जिसमें Unhappy India प्रमुख पुस्तक है। सन१९२५ में वे स्वराज्य पार्टी के टिकट पर लोकसभा हेतु चुने गये, पर '१९२६ में उसकी मुस्लिम-तुष्टीकरण नीति से क्षुब्ध होकर त्याग पत्र दे दिया। सन १९२८ में साइहमन कमीशन बहिष्कार के जुलूस में लाठी चार्ज में घायल हो वे मृत्यु को प्राप्त हुए।

ii) तदन्तर देश में जो क्रान्तिकारी आन्दोलन चला, उसमें झांसी के भगवान दास माहौर तथा मुरादाबाद के सूफी अम्बा प्रसाद, नलिनीकान्त सेनगुप्त (बंगाली वैश्य), विद्यावती शारदा, प्रभृति वैश्यों ने अपने को आहूत किया।

iii) सन १९२० से १९४८ तक देश में गुजरात के म्होड़ वैश्य कुलोत्पन्न मोहनदास करमचन्द्र गाँधी के नेतृत्व में स्वदेशी, असहयोग,

बहिष्कार, और भारत छोड़ो आन्दोलनों के कार्यक्रम द्वारा १५अगस्त १९४७ का शुभ दिन आया, जब भारत स्वतन्त्र हुआ।

इस आन्दोलन में वैश्य कुलोत्पन्न भातृद्वय विट्ठल एवं वल्लभ भाई पटेल, राम मनोहर लोहिया, देशबन्धु गुप्त, देशबन्धु गुप्त, चन्द्रभान गुप्त (बाद में उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री), बनारसीदास गुप्त नं०-२ (बाद में हरियाणा के मुख्यमन्त्री) मोहनलाल सुखाडिया (बाद में राजस्थान के मुख्यमन्त्री), प्रकाश चन्द्र सेठी बाद में केन्द्र के गृहमन्त्री), घनश्याम सिंह गुप्त (बाद में मध्यप्रदेश के स्पीकर), सीताराम केसरी (बाद में केन्द्रीय मन्त्री), स्व० गोपीनाथ विजय वर्गीय (बाद में राजस्थान के मुख्यमन्त्री) काशीराम गुप्त (अलवर), आचार्य रामसरन दास (मुरादाबाद) होतीलाल दास (एटा) राममूर्ति (बरेली), सीतारामूलु (आन्ध्र निर्माण में अनशन से आहूत), चांदकरण शारदा (अजमेर), बादशाह गुप्त (अयोध्यावासी वैश्य मैनपुरी), कृष्णदास जाजू (मध्यप्रदेश) के० टी० शाह, शहीद रमेशचन्द्र आर्य (माहौर वैश्य-विजयगढ़) शिवचरण गुप्त (दिल्ली), वेंकटरमन (बाद में सुरक्षामन्त्री) जयगोपाल गर्ग (सहारनपुर) डा. भगवानदास तथा श्री श्रीप्रकाश वाराणसी, भारतमाता मन्दिर के निर्माता श्री शिवप्रसाद गुप्त वाराणसी, सेठ गोविन्द दास जबलपुर, अतमूरि, राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द (ओसवाल वैश्य) डोंगी सेठी वेंकटिया गुप्ता (वारन्गल), व्यन्कट सुब्बइया (बाद में गृह राज्यमन्त्री), राया पूडी नारायन राव, वादम रामास्वामी (हैदराबाद), जगदीश शरण अग्रवाल (बरेली), के०रोसइया (तनाली गुन्टूर), श्रीमती टी० सत्यावती प्रभृति हजारों व्यक्तियों ने योगदान किया। इस सारे स्वराज्य आन्दोलन का व्यय सर्वश्री घनश्याम दास बिरला (माहेश्वरी वैश्य), रामकृष्ण डालमियाँ, (जैन, अग्रवाल) तथा जमुनालाल बजाज [अग्रवाल] पद्मपत सिंहानिया, पोद्दार एव पित्ती परिवार और उनके संस्थान उठाते थे।

स्वराज्योपरान्त

स्वराज्य के बाद वैश्यों ने राजनीति से मुंह मोड़ लिया और देश में उत्पादन बढ़ाने और उद्योग स्थापित करने में लग गये। दिनांक १४ अगस्त ४७ तक अंगरेज उद्योगपतियों से सब कल कारखाने और चाय बागान खरीद लिए गये। दिनांक १५अगस्त को उद्योग के सारे कल पहिये यथावत चालू थे। जो क्षेत्र निजी उद्योग हेतु छोड़े हैं, उनमें वैश्यों ने पंचवर्षीय योजनाओं के अनुकूल हजारों मिलें व फार्म खोले जिनमें लगभग दो करोड़ व्यक्तियों को काम मिला है और जिनसे लगभग १००० करोड़ रुपया के राजस्व का लाभ है। यह सब कारखाने लाभ में चल रहे हैं, सरकारी क्षेत्र में खुले कारखानों की भांति हानि में नहीं। वहां तो ३७००० करोड़ रुपए से बने सरकारी कारखानों में १९८३ तक ८९० करोड़ प्रतिवर्ष का घाटा है। इससे आगे की कहानी है, वैश्य महासम्मेलन की आवश्यकता वाला अंश। उसे पढ़ने का कष्ट करें।

धार्मिक क्षेत्र में वैश्यों का योगदान

भारत के प्राचीन गणराज्यों में लिच्छवी गणराज्यों को राजधानी वैशाली अपने सौभाग्य पर आज भी गर्वित है' जो वैश्यों द्वारा स्थापित थी, जहां आज भी बनियादरा ग्राम अवस्थित है। यही इसकी स्थापना राजप्रमुख विशाल ने की थी। उसके वंश को वैशालक कहते थे।

वैशालक वंश का प्रादुर्भाव मनु के चतुर्थ पुत्र नेदिष्ट नाभानेदिष्ट से हुआ था। नाभानेदिष्ट मनु के जीते जो वैश्य हो गया था। उनके पुत्र नाभाग ने वैश्य कन्या से विवाह किया था। उसका पुत्र भलनन्दन था। मार्कण्डेय पुराण में उसे चक्रवर्ती कहा है। इसी का पुत्र वात्सप्रि था। वत्स प्रिय का पुत्र मांकील था। यह तीनों वेदों के मंत्र दृष्टा थे।

i) आर्यों की वर्ण व्यवस्था में वैश्य-पद स्वीकार कर लेने पर पणि भी वेद पथ के अनुगामी बने। वेद के दृष्टा रूप में जिन ऋषियों का उल्लेख है, उनमें कई वैश्य ऋषि है। इनमें (१) भलनन्दन (२) वात्सप्री (३) मांकील तो प्रवरों के प्रस्तोता भी है। सभी वैश्यों के प्रवर तीन बारे कहे जाते हैं। ब्रह्माण्ड पुराण २/३६/१२१-२ में यह वर्णन उपलब्ध हैं:—

भलन्दनश्च वत्सश्च सांकलिश्चैव ते त्रयः।
एते मन्त्रकृतश्चैव वैश्यानां प्रवराः स्मृताः॥

मत्स्य पुराण [१४५/१/६-७] में भी यही बात कही गई है।

उपरोक्त नाभानेदिष्ट यजुर्वेद के निम्न मन्त्रों का दृष्टा ऋषि है:- अ०११/७५से ८३तक[उखासंवरण प्रकरण]। इसी प्रकार वत्सप्री भी निम्न मन्त्रों का दृष्टा ऋषि है:—

अ० ३३/१ [सर्वमेध प्रकरण]
अ० १२/१ तथा ६ से १० तथा १९ से २९ तथा ३३ व ४१ [उखाधारणादि प्रकरण]

ii) इस देश की पहिली क्रान्ति वैदिक यज्ञों में पशुबलि के विरोध मे हुई थी। और बौद्ध धर्म प्रस्तोता गौतम एवं जैन तीर्थ करों को प्रश्रय इस देश के श्रेष्ठियों ने ही दिया था। महान अशोक ने बुद्ध धर्म अपनाया था। जैन मन्दिर, वाङ्मय और संस्कृति का विकास वैश्यों के संकलित प्रयत्न का फल था। आबू पहाड़ पर स्थित भारत की संगमरमर की सर्वोत्कृष्ट कलाकृति रूप जैन मन्दिर एक श्रेष्ठी ने ही बनाया था। दक्षिण प्रदेश में कलवार बन्धु जैन हो गए थे और सारा प्रदेश जैन मूर्तियों से वैश्यों ने ही परिप्लावित किया था। यहां महावीर स्वामी का थोड़ा परिचय देना समीचीन होगा।

इसी वैशाली मे वर्द्धमान का जन्म २७ मार्च ५९८ ईसा पूर्व हुआ

था। वर्द्धमान के वीरोचित गुणों को देखकर उन्हें महावीर की संज्ञा दी गई थी। त्याग तप की अनूत पूर्व साधना में विशेष श्रम करने के कारण शास्त्रों में वर्द्धमान को ही श्रमण भी कहा गया है।

सत्य, अहिंसा, प्रेम की पावन त्रिवेणी में स्नान कराकर और सम्यकत्व दर्शन का दिव्य संदेश सुनाकर प्राची दिशा का यह ज्ञान सूर्य कार्तिक कृष्ण ३० तदनुसार मंगलवार १५ अक्तूबर ५२७ ईसा के दिन अस्त हो गया।

जैन धर्म एवं दर्शन में त्रिषष्टीशलाका पुरुषों की जो विशिष्ट परम्परा स्थापित हुई उसमें सर्वोच्च स्थान है—चौबीस तीर्थंकरो का जिनमें आदि तीर्थंकर हे ऋषभ जिन और अन्तिम तीर्थंकर है वर्द्धमान महावीर।

जिजीविषा के महत्व को स्वीकृति देकर तीर्थंकर महावीर ने प्राणी मात्र की सत्ता को स्वीकार किया और इस प्रकार अनूठे आध्याहिमक जनतंत्र का उद्घोष किया जहां चींटी और हाथी, बकरी और शेर, निर्धन और धनी सब समान हैं, समान जिजीविषा सम्पन्न। इस विलक्षण जनतन्त्र की कसौटी महावीर ने दी 'असत्य से रहित सुखद भाषा का प्रयोग कर, देख तेरे बोलने से किसी के व्यक्तित्व का हनन तो नहीं हो रहा है। और आज भी यह कसौटी लोकतन्त्र की परख के लिए पूर्णतः सक्षम है।

२— सदा से वैश्यवर्ग सिद्धान्त प्रिय रहा है। यज्ञों के हिंसा-परक होने पर वैश्य जैन हो गए थे। कृष्ण महाराज ने जब पशुबलि बन्द कराई तब हम पुनः वैदिक हो गए। परन्तु वैदिक धर्म अब बदल गया था। यज्ञ के अतिशय-वाद और कर्मकाण्ड के विरोध में जो भागवत धर्म भक्ति-परक होकर जन्मा, हम उसमें भी शामिल हो गये। वैष्णव परम्परा को महाराष्ट्र एवं गुजरात में पुनः फैलाने का श्रेय पाण्डुरंग के पुत्र तुकाराम को है। सन्त तुकाराम मोढ़ वैश्य थे। इनका समय १६०७–१६४९ है। वे यज्ञ की अतिशयता के विरुद्ध थे और सब जातियों की एकता के प्रचारक थे। उन्होंने विट्ठल (विष्णु) को कृष्ण मानकर कृष्ण-रुक्मिणी की भक्ति भाव पूरक पूजा प्रसारित की।

३— औरंगजेब के विरोध में गुरु गोविन्द सिंह ने हिन्दुत्व की रक्षा की थी। गुरु गोविन्द सिंह का तथा उनके पूर्वज सिक्खों का पटना से विशेष सम्बन्ध था। श्री गोविन्दसिंह जी महाराज वहीं जन्मे थे। अस्तु विहार में बसे माहुरी वैश्य राष्ट्र रक्षा के नाम पर नानकपंथ के दो पहलू हैं: आध्यात्मिक तथा सामाजिक। आध्यात्मिक पक्ष में वे अद्वैत ब्रह्म को मानते हैं। सामाजिक क्षेत्र में वे हिन्दुत्व की विरासत को कायम रखने वाले हैं। अपनी स्वाभाविक सत्यान्वेषिणी नीति तथा सत्ताधारियों के अन्याय के सम्मुख विद्रोह की नीति के कारण माहुरी वैश्य लोगों का नानक-पंथी बन जाना स्वाभाविक ही था। नानक के दूसरे पुत्र श्री श्रीचन्द्र जी सन्यासी (उदासी) हो गये।

यद्यपि श्री गुरु नानक देव जी ने मूर्ति पूजा वर्जित कर दी थी, तो भी नानक पंथी (उदासी) सम्प्रदाय के हिन्दू अपनी संगतों में हिन्दूधर्म के देवताओं और भगवान शिव की मूर्तियों की भी पूजा गुरु ग्रन्थ साहब के साथ करते हैं। सास्कृतिक विजय का एक उदाहरण है:—

४— अहलुवालिया वैश्यों द्वारा सिख धर्म की स्थापना गुरु अर्जुन देव के छठे पुत्र हरगोविन्द सिंह ने निश्चय किया कि धर्म प्रचार के साथ-साथ वीरता का वेश भी धारण करना आवश्यक है। स्वरक्षा, हिन्दु धर्म की रक्षा एवं देशोद्धार के लिए उन्होंने खड्ग धारण किया और सब शिष्यों को शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी। अमृतसर को सुरक्षित बनाने के लिए उन्होंने वहां एक किला बनवाया जो लोहगढ़ के नाम से प्रसिद्ध है। गुरु हरगोविन्द सिंह कैद करके ग्वालियर के किले में रखे गये, समझाने पर जहांगीर ने गुरु की इच्छानुसार उन्हें छोड़ दिया। जहांगीर की मृत्यु के बाद शाहजहां ने भी सिखों से वैर ठाना। तीन लड़ाइयां हुई, जिनमें गुरु की विजय हुई। इनकी मृत्यु के बाद गुरु हरिराय सातवें गुरु हुए। फिर उनके बाद उनके कनिष्ठ पुत्र हरिकृष्ण आठवें गुरु हुए, लेकिन ढाई वर्ष बाद ही उनकी असामयिक मृत्यु हो गयी।

नवें गुरु तेग बहादुर हुए। औरंगजेब से इनकी मुठभेड़ हुई। उसके अत्याचारों से लोगों को बचाने के लिए वे आसाम गये और और अपने पुत्र गोबिन्द सिंह को परिवार सहित पटने में छोड़ गए। फिर वहां से गुरु तेग बहादुर कश्मीर गए। वह हिन्दू पण्डितों का मुख्य स्थान था। औरंगजेब के अत्याचारों की वहां सीमा न थी। धर्म-परिवर्तन के लिए हिन्दू लोग तरह-तरह से तंग किए जाते थे। तंग आकर उन लोगों ने बादशाह को कहला भेजा यदि गुरु तेग बहादुर मुसलमान हो जायें तो हम भी मुसलमान हो जायेंगे। इस पर तेगबहादुर जी दिल्ली बुलाये गये। दिल्ली में उनको मुसलमान बनाने के लिए अनेक चेष्टाये की गयी। उनके साथ छल किया गया और ११ नवम्बर सन १६७५ ई० को उनकी हत्या कर दी गई। उनके बाद उनके उत्तराधिकारी पुत्र गोविन्दसिंह ९ वर्ष की अवस्था में गुरु हुए। ये सिखों के दसवें और अन्तिम गुरु थे। इन्होंने धर्म की रक्षा के लिए खालसा सैनिक सम्प्रदाय की सृजना की। हिन्दू देवालयों और देवताओं के प्रति श्रद्धा भाव रखने और गो हत्या न करने का भी आदेश दिया। और निम्न उत्साह-वर्द्धक उद्घोष किया।

ढादे मसीतां करदे मैदाना

परिणाम-स्वरूप हजारो लोग खालसा-पंथी बन गये और एक

जबर्दस्त सेना तैयार हो गयी। यह बात औरंगजेब को बरदास्त नहीं हुई और उसने छल से गुरु गोबिन्द सिंह के दोनों पुत्रों को पकड़वाकर ईंटों की दीवाल में चुनवा दिया। लेकिन इसके बाद ही खालसा सेना ने मुगल साम्राज्य को खोखला और खतम ही कर डाला।

५— अठारहवीं शताब्दी के रामसनेही संतमत के संस्थापक विजय वर्गीय वैश्य समुदाय के श्री रामचरण जी महाराज थे। संतजी (पूर्वनाम "रामकृष्ण कापड़ी") कि बखतराम जी विजयवर्गीय व माता देऊबाई के सपूत थे। सन् २७०९ को ग्राम सांडा (जयपुर राज्य) में आपका जन्म हुआ। पिता का कृषि एवं वाणिज्य ही पैतृक धन्धा था। कुछ सयाने होने पर अल्पायु में ही संस्कृत आदि भाषा का अध्ययन कर स्वाध्याय से प्रकाण्ड विद्वान बने।

तत्कालीन जयपुर नरेश ने इन्हें राजकीय नौकरी दे दी। वहां कार्य करते हुए इनकी ख्याति इतनी हुई कि तत्कालीन जयपुर नरेश सवाई जयसिंह जी ने अपना प्रधान-मन्त्री बनाने हेतु दूत बनवाड़ भिजवाकर इन्हें बुलवाया और दरबार में इनका स्वागत किया गया और लगभग २२ बर्ष की उम्र में ही इन्हें प्रधानमन्त्री का भार सम्भला दिया गया। बाद में एक दिन माया मोह के चक्कर छोड़ दक्षिण की ओर घर से निकल पड़े और दांतड़ा ग्राम के सन्त कृपाराम जी की सेवा में पहुंचे। उन्होंने क्षौर कर्म (मुन्डन) कराके राम सन्त्र का उपदेश इन देकर 'रामकृष्ण' को रामचरन बनादिया।

सन्१७५० में वे भीलवाड़ा चले गए। यहां नगर सेठ देवकरण-कुशलराम नवलराम ने इनसे शस्त्रार्थ किया और इतने प्रभावित हुए कि ये गृहस्थ में रहते हुए सन्त बन गए। ये तीनों माहेश्वरी वैश्य थे।

सन १७९५ में ७९ वर्ष को आयु में श्रीराम चरण, रामचरणों में, 'राम-राम" उच्च स्वर से पुकारते हुए शहपुरा श्मशान की छतरी में चिरनिद्रा में विलीन हो गये।

आपके काव्य में 'ग्रणभे वाणी' मुख्य है। आपने कुल २१ ग्रन्थों की रचना की। 'अमृत उपदेश' विमान बोझ भी उत्कृष्ट कोटि की काव्य रचनायें हैं। इन ग्रन्थों का साहित्य की दृष्टि से पर्याप्त महत्व है। सभी ग्रन्थों में कुल ३६.३३९ छन्द है। इन छन्दों की १३१जातियां हैं। हिन्दी साहित्य के उच्च कोटि के छन्दों में त्रिभंगी चंचरीक, शिखरणी आदि भी इनकी रचना में प्राप्त है। उनका आराध्य अमर निर्गुण व निराकार है तथा अनादि और अनन्त है।

सन्त पलटूदास

इनका जन्म १७२३ ई० में बानरी साहिब के पंथ की परम्परा में मध्यदेशीय कन्दू वैश्य कुल में हुआ था। उन्होंने स्वयं लिखा है:—

पलटूदास एक बनियाँ, रहे अवध के बीच।
देखो एक बनिया बौराना सान की करे दुकान।।

वे पूर्ण अद्वैतवादी एवं वैरागी थे।

लरिकैं कहैं भूख लगी चच्चा। पलट् कहैं भजन करि बच्चा।।

वे तीर्थ स्नान का खंडन यों करते हैं—

बरसा पानी नरक वहा सब सरिता बटुरा सोई।
तेहि बीच पाँडे वैठि नहाने शुद्ध कहां से होई।।

उन्होंने मूर्ति की पूजा का भी खंडन किया है।

जड़ पाषाण को छोड़िके पूजौ आतमदेव।

(७) थ्योसोफिस्ट आन्दोलन

पश्चिमी शिक्षा के प्रचार के साथ भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान की चर्चा चली। आध्यात्मिक क्षेत्र में अद्वैत और वेदान्त के सिद्धान्तों के व्यापक प्रचार के लिए भारतवर्ष में थ्योसोफिस्ट आंदोलन मैडम ब्लैडवस्टकी तथा कर्नल अर्काट ने चलाया था।

प्रगतिशील आन्दोलन में गया के तर्वे वैश्य परिवार तो इस आन्दोलन के अंग बन गये। श्री अदुनन्दन प्रसाद तर्वे ने कैम्ब्रिज से एम०ए० किया था। वे प्रसिद्ध थ्योसोफिस्ट तत्वेत्ता श्री जे०कृष्णामूर्ति के सेक्रेटरी थे। थ्योसोफिस्ट मिशन के प्रचारार्थ १९१६ में वे अमरीका गए और वहीं केलीफोर्निया में दिवंगत हुए। दो अन्य माहुरी वैश्य बन्धु श्री केशवलाल तथा मधुसूदन प्रशाद थ्योसोफिस्टों के भारतीय हैड क्वाटर आदियार (मद्रास) में जाकर बस गये और वहीं स्वर्गवासी हुए। एक अन्य बन्धु श्री दामोदर प्रसाद बी० ए० कामच्छा बनारस स्थिति थ्योसोफिस्ट कालेज के अवैतनिक प्रिंसिपल रहे। माथुर वैश्य वर्ग के प्रो० केदारनाथ गुप्त एम० ए० को उनकी पुत्री श्रीमती पद्मावती बी० ए० ब्याही थी। यह दम्पत्ति थ्योसोफिस्ट लोज कमच्छा बनारस में रह कर आन्दोलन की सेवा करते रहे हैं।

इसी परिवार की एक विदुषी मिसतर्वे(-११८ मंगल.मार्ग जयपुर) वहां के एक प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान की पहिले प्रिंसिपल और अब प्रबन्धक हैं।

(७) आर्य समाज

इस आन्दोलन के प्रस्तोता दयानन्द सरस्वती दो वर्ष तक (१८६७–१८६९) गंगा के किनारे के ग्रामों में घूमे और फर्रुखाबाद पहुंचे। यहां साध नाम का एक व्यापारी समुदाय था जिसके कोई २००० व्यक्ति वहां रहते थे। दयानन्द सरस्वती ने उनके यहां भोजन किया जबकि अन्य द्विज ऐसानहीं करते थे। स्वामीजी ने पाया कि साध लोग जन्मना जाति-प्रथा नहीं मानते थे। वे ब्राह्मण की मर्यादा भी नहीं मानते थे। वे एक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास

करते थे जिन्हें सत्यनाम कहकर पुकारते थे। वे पुनर्जन्म मानते थे। तथा चरित्र उन्नयन ही से मोक्ष को सम्भाव्य बताते थे। वे मूर्ति पूजा, तीर्थ-यात्रा, मृतक, श्राद्ध आदि में आस्था नहीं रखते थे। उनके यहां सप्ताह में एक बार सत्संग होता था जिसमें वे अपनी हिन्दी में लिखी धर्म पुस्तक पोथी का परायण करते थे। इसमें भी भक्ति रस के भजन हैं। उनमें कोई पुरोहित नहीं होता था। जो एक प्रौढ़ व सुशिक्षित साध होता था वही यह सारे कार्य कराता था। उनके यहां ३२ नियम तथा १२अनुसत्ताओं का प्रचलन था। वे शाकाहारी तथा अहिंसक वृत्ति के हैं, तथा नशीली वस्तुओं और ऐश की जिन्दगी के विरुद्ध थे। उनमें एक पत्नी व्रत का रिवाज था। हर साध को अपनी जीविका अर्जन का निर्देश था ताकि वह दान पर न रहे। साधों ने स्वामीजी को समर्थन दिया और आक्रमणकारियों से उनकी फर्रुखाबाद में जीवन रक्षा भी की थी। उनका एक दृढ़ संगठन था। बाद में सस्थापित आर्य समाज के नियमोपनियम एव दयानंद सरस्वती के स्वमन्तव्यामनतव्य इन्हीं भूमिकाओं पर आधारित हैं।

जनवरी १८७५ में दयानन्द सरस्वती ने अपनी जन्मभूमि के क्षेत्र राजकोट में प्रथम आर्य समाज स्थापित किया था। परन्तु पंडित गुट्टू लाल द्वारा गायकवाड़ राजा के राज्यच्युत किए जाने के विरुद्ध टिप्पणी किए जाने पर पोलिटीकल एजेन्ट द्वारा कड़ी कार्यवाही किये जाने से यह आर्य समाज ६ मास ही में समाप्त हो गई। अहमदाबाद में आकर किया प्रयत्न भी सफल नहीं हुआ क्योंकि प्रार्थना समाज वाले वेदों की अपरिहार्यता नहीं मानते थे। अत: वे आर्यसमाज में शामिल नहीं हुए। तब स्वामी जी बम्बई पहुंचे। यहाँ अमरगांव में १० अप्रैल १८७५ को आर्य समाज की विधिवत स्थापना हुई। इस प्रथम आर्य समाज में १०० सदस्यों में ४७गुजराती वैश्य थे। इनमें मूलजी ठकर्षी, तथा मन्साली सेठ छबील-दास लल्लू भाई, तुच्छराम चुन्नीलाल, खानजी भगवान सोनी प्रभृति मुख्य थे। विख्यात क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्णा वर्मा सेठ लल्लू भाई के दामाद थे। इस प्रथम आर्य समाज के प्रथम प्रधान श्री गिरधर लाल दयाल दास कोठारी एडवोकेट, मन्त्री पानाचंद आनन्द जी, तथा कोषाध्यक्ष सेठ करसन दास भी वैश्य ही थे।

यहां यह स्पष्ट कर देना अभीष्ट है कि भाटिया बन्धु भी बल्लभाचार्य के सम्प्रदाय में रहकर दुखी थे। और उन्होंने भी एक मासिक पत्रिका आर्य धर्म प्रकाश प्रारम्भ कर रक्खी थी। लक्ष्मी दास खिमजी इन्हीं में से थे। वे भी दयानन्द सरस्वती तथा प्रथम आर्य समाज के प्रमुख समर्थक थे।

दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ही में ६२ प्रश्नोत्तरों का पैम्फ-लेट बल्लभाचार्य सम्प्रदाय के खण्डन में लिखा। पुष्टि मत के बल्लभा-चार्य के सम्प्रदाय में जो अनीतियां आ गई थीं, उनमें से एक यह भी थी कि नव विवाहित वधु पहिले मठाधीश महाराज को समर्पित की जाती थी। कहीं-कहीं इस समर्पण के दुष्परिणाम भी हुये। तब इनका विरोध प्रारम्भ हुआ। विरोध ने जब संगठित रूप लिया तो आधार भूत मान्यताओं पर भी चिन्तन हुआ और उन्हें वेद और शास्त्रों के विरुद्ध पाया गया। इस आन्दोलन के जनक गुजराती वैश्य करशनदास मूलजी थे। उन्होंने सन १८५५ ई० में सत्य-प्रकाश नामक पत्रिका प्रकाशित करके बल्लभ मत का खण्डन प्रारम्भ किया। फलस्वरूप १८६० में महाराज जी ने मूलजी पर अदालत में बेइज्जती का दावा दायर दिया। और उसमें मूल जी विजयी हुये। इस मुकदमें में योरूप के विख्यात वेद भाष्यकार डा० जोन विलसन ने मूल जी के पक्ष में गवाही दी थी कि बल्लभाचार्य मान्य-तायें वेद के विरुद्ध हैं। मूल जी ने गुजराती में "वैदिक धर्म" नामक पुस्तक १८७३ में प्रकाशित की थी। उसमें उन्होंने प्रति-पादित किया था कि हिन्दू धर्म को आर्य धर्म कहना चाहिए जिसका आधार वेद है। उसमें पुराणों के अवैदिक होने का भी उल्लेख था। मूल जी के स्वर्गबास के बाद यह कार्य लखमीदास खिमजी, सेवक लाल कर्षनदास एवं मूल जी थाकर्षी ने अपने ऊपर लिया। बाद वाले दो वैश्य थे।

बम्बई में उन्होंने एक वेद सभा भी स्थापित की थी [घासीराम जी, लिखित दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र [पृष्ठ-३२२]। इन्हीं खिमजी के एक भाई श्री धरमसी ने १८७४ में दयानन्द सर-स्वती का १८७४ में बनारस में हुआ शास्त्रार्थ सुना और उन्हें बम्बई आने का निमन्त्रण दिया। सेवकलाल कर्षनदास ने अपनी "आर्य-मित्र' नामक पत्रिका में काशी शास्त्रार्थ का विवरण सितम्बर ७४ अंक में छापा [लिखराम कृत द०स० का जीवन चरित्र पृष्ठ २५९]। दयानन्द सरस्वती २०-१०-१८७४ को बम्बई पधारे। दि.१६-११-७४ को ही बल्लभ मठ वालों ने २४ प्रश्न लिखकर भेजे। उनके उत्तर में स्वामी जी ने पहिली बार उल्लेख किया कि वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के लिए आर्यों का सगठन होना चाहिए।

इस दृढ़ता से आकर्षित होकर वैश्यों ने आर्य समाज में प्रवेश लिया। उन्होंने गुरुकुल, कालेज, और स्कूल स्थापित किए। विद्या प्रचार ट्रस्ट बनाये। गुरुकुलों को सम्पत्ति दी और छात्र वृत्तियां दीं। अन्य संगठनात्मक प्रवृत्तियों में योग दिया। लोग उपदेशक बने, भजनीक बने, सन्यासी बने और प्रचारक बने। यहाँ पर बरबस उन महाशयों की याद आ जाती है जिन्होंने इस यज्ञ में अपना साकल्य दिया और विचारों की क्रांति में भाग लिया। लाला लाजपतराय, दीवान हरविलास शारदा, मिहर चन्द्र महाजन, सर गंगाराम, राजा ज्वाला प्रसाद, बाबू प्रीतमलाल वार्ष्णेय, बाबू कालीचरण मेरठ, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, स्वा० सच्चिदानन्द योगी, प्रो० बाबूराम गुप्त, श्री नरेन्द्र जी (स्व० सोमानन्द, प्रभृति सैकड़ों ने आर्य समाज को जीवन दान दिया। (मुंशी इन्द्रमणि (मुरादाबाद के माथुर

वैश्य) दण्डी स्वामी ब्रह्मानन्द जो, स्वामी मुनीश्वरानन्द, स्वामी शान्ति प्रकाश,(पंडित)मगलदेव, आचार्य द्वय रामनाथ व रामप्रसाद वेदालंकार श्री दीनदयाल सोनी, मा० अयोध्या प्रसाद (छिब्रामऊ), प० क्षेत्रपाल जी बमनोई, मुन्शीराम जी धौलेश्वर, बुलन्दशहर के बा० सन्नूलाल गुप्त और मेरे पिता श्री बाबूराम गुप्त इसी लिस्ट में हैं।

++ दैवी सम्पद मंडल

इसकी स्थापना स्वामी शुकदेवानन्द जी महाराज ने की थी, जो मैनपुरी के एक वैश्य परिवार में जन्मे थे। हरिद्वार में परमार्थ आश्रम और शाहजहाँपुर में मुमुक्षु आश्रम इन्होंने निर्मित कराये हैं, जहां अध्यात्म एवं भक्ति रस की धारा सतत प्रवाहित होती रहती है।

++ संत ब्रजमोहन लाल जी के शिष्य यशपाल जी रिटायर्ड इन्जीनियर देहली में एक आध्यात्मिक सत्संग लगाते हैं।

++ स्वामी सच्चिदानंद जी योगी हरिद्वार तथा नैटापल्ली (मेदक) आन्ध्र में पातञ्जल योग साधना केन्द्र चलाते हैं। इन्होंने प्रचुर साहित्य आर्ष योग प्रणाली पर लिखा है। पूर्वनाम है श्री राजेन्द्र नाथ शास्त्री। अग्रवाल वैश्य हैं।

++ स्व० हनुमान प्रसाद पोद्दार एवं जयदयाल गोयनका जी ने गोरखपुर में गीता प्रेस तथा कल्याण पत्रिका के माध्यम से सनातन धर्म की नींव सुदृढ़ की है। लाखों की संख्या में गीता, रामायण, श्रीमद्भागवत तथा अन्य साहित्य लागत मूल्य पर देश के कोने-कोने में वितरित किया है। द्वितीय महायुद्ध के पहिले गीता का मूल्य १० पैसे तथा रामचरित मानस का मात्र एक रुपया था। स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश) में गीता मन्दिर तथा निःशुल्क जलयान व्यवस्था ८० वर्ष तक चलाई।

++ खण्डेलवाल वैश्योत्पन्न भी स्वामी बलरामदास जी का तपोभूमि बाला हनुमान आश्रम लोदरा जि० उत्तरी गुजरात में है। वे स्व० सन्त सुन्दर दास जी के शिष्य हैं।

महाराज जी का जन्म सन १९११ को ग्राम पडासोली (जिला जयपुर) में हुआ। पिता सेठ लक्ष्मीनारायण जी व माता श्रीमती भूरी बाई थीं।

पिता चाहते थे कि पुत्र विवाह कर व्यवसाय में लगे, उधर पुत्र शनैः शनैः मायाजाल से मुक्त हो भगवत् सेवा एवं मानव सेवा की ओर अग्रसर हो रहे थे। सन १९२७ में महाराज श्री ने गुढा ग्राम जाकर श्री रामाज्ञादास जी से पक्की दीक्षा ग्रहण की। शिक्षा पूर्ण होने पर यात्रा में निकले, कई तीर्थ स्थलों का भ्रमण किया, ग्राम लोदरा में रामजी के मंदिर में सत्संग तथा कथा वार्ता करने लगे।

इस छोटे से लोदरा गांव को बलराम दास जी ने कस्बे का रूप प्रदान कर दिया। वहां तालाब, कुओं, वाटर वर्क्स, सार्वजनिक ग्रन्थालय, प्राथमिक शाला माध्यमिक शाला, आयुर्वेद कालेज, संस्कृत महाविद्यालय, सार्वजनिक अस्पताल, प्रसूतिग्रह, आयुर्वेदिक औषध निर्माण शाला इत्यादि का निर्माण हुआ है।

इसके अतिरिक्त कई नेत्र यज्ञ, श्री रामजी मंदिर आदि का जीर्णोद्धार, कई धर्म यज्ञ—जैसे तीन बार श्री रामजी यज्ञ, महा रूद्र यज्ञ, अनुपम विश्व शान्ति यज्ञ, जिसमे पंच देव पंच महायज्ञ व कई पुरश्चरण वृहद रूप से हुए। श्री बाला हनुमान आश्रम उनका प्रसिद्ध आश्रम है।

पूज्य महाराज केवल दुग्ध पान ही करते हैं, और बाकी दिन भर केवल गंगा जल पर ही रहकर इस नश्वर शरीर की परवाह न करते हुए इस वृत को पूर्ण कर रहे हैं।

बृन्दावन धाम साधु-समाज ने महाराज श्री को वैष्णव रत्न की उपाधि से सम्मानित किया है।

++ श्रीमती सानानंद जी साध्वी बिहार के गिरीडीह नगर में माहुरी वैश्य कुलोत्पन्न अद्वैतमतीय हैं तथा महात्मा विवेक साहब की शिष्या है। यह पंथ कबीर साहब द्वारा प्रतिपादित निर्गुण परमात्मा की उपासना का है। वे कवियत्री तथा सिद्ध साधिका है।

++ सन्त सत्गुरू ब्रह्मीभूत श्री रणनाथ प्रभानिकर मराठावाड़ा के आर्य वैश्य हैं। जन्म १८८९ ग्राम सोमपेठ (परवनी जिला)। वे पाण्डुरंग के उपासक थे। आजन्म ब्रह्मचारी रहे। विशाल साहित्य के अध्येता। ध्यानेश्वरी एवं अन्य वेदान्त दर्शन मे पारंगत। पन्ढ़रपुर में आध्यात्मिक उपदेश। स्वर्गारोहण १९७०।

मथुरासिनी देवी

मुगल अत्याचार से त्रसित हो आगरा व मथुरा से बिहार जाकर बसे माहुरी वैश्यों ने बिहार में शाक्त देवियों की पूजा देखी जिन पर पशु बलि होती थी। तब इन्होंने मथुरासिनी देवी की कल्पना की जो वैष्णव देवी है, यद्यपि उसे दुर्गा का अवतार बताया। इसकी पूजा के माध्यम से उन्होंने पूरी जाति को शाकाहारी बनाये रक्खा है।

वसावी कन्यकपर्मेश्वरी देवी

आन्ध्र, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं महाराष्ट्र में बसे वैश्यों ने इस देवी की स्थापना वैश्य कुल देवी के रूप में की है। चालुक्य राजा विष्णु वर्द्धन ने अपनी दिग्विजय यात्रा में पुनुगोडा की सुन्दरी कन्या बसावी पर मुग्ध होकर उससे विवाह करना चाहा। दक्षिण पथ के १०२ गोत्रों के वैश्यों ने एकत्रित होकर इसका विरोध किया। वे तथा

वसावी स्वधर्म रक्षा हेतु अग्नि दाह करने पर विवश हुये। नागेश्वर मंदिर में वसावी की मूर्ति स्थापित हुई और वे कुल देवी बन गई हैं। अब विभिन्न २६६ नगरों में वसावी मन्दिर निर्मित हो गये हैं।

साहित्य जगत के दैदीप्यमान वैश्य

यह सर्वविदित है कि प्राकृत भाषा जो कि आधुनिक हिन्दी भाषा की जननी है, का व्याकरण जैन मुनि हेमचन्द सूरि ने लिखा था, जो कि गुजरात अंचल के मोढ़ वैश्य थे।

हिन्दी गद्य के आद्य प्रस्तुतकर्ता बनारस के अग्रवाल कुलोत्पन्न श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी थे जिनका यह वाक्य सभी के कानों में सतत गूंजता रहता है।

निज भाषा अहै सब उन्नति को मूल।

श्री बालमुकुन्द गुप्त प्रो० गुलाब राय इसी माला की कड़ी हैं। ब्रज भाषा की कविता में जगन्नाथ दास रत्नाकर, राजा राधारमण, कवि बिहारीलाल, राय कृष्णदास, जैन रामायण के रचियता वृन्दावन लाल, प्रभृति अनेकानेक वैश्य कवियों का योगदान है।

खड़ी बोली की कविता में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त (गहोई वैश्य, झांसी) का नाम सर्वोपरि है जिन्होंने भारत माता के स्तवन में भारत-भारती लिखकर गाया था—

भगवान भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती।

खड़ी बोली के छायावादी कवि, कहानीकार एवं नाटक व उपन्यास लेखकों में श्री जयशंकर प्रसाद का नाम प्रातः स्मरणीय है। स्थानाभाव से अनेकानेक अन्यों का नाम नहीं दिया जा रहा है।

वैश्यों द्वारा दान परम्परा का अनुरक्षण

जो कर्त्तव्य वेद ने वैश्यों को सौंपा था कि सौ हाथ से कमाओ और सहस्र हाथ से बांटो—उसका पालन वैश्य वर्ग ने किया है। भारत के हर नगर में यात्रियों के विश्राम हेतु धर्मशालाओं का निर्माण वैश्य वर्ण की देश को विपुल देन है। इसमें वैश्यों का लगभग ५०००० करोड़ रुपया लगा है।

हर तीर्थ स्थल पर विशाल तथा हर नगर में वैष्णव एवं शैव कृष्णायन तथा रामायन एवं आर्य समाज मन्दिरों की शृंखला के निर्माण में वैश्यों का प्रतिशत लगभग ८० का है। इन धर्मस्थलों में पूजा, नैवेद्य तथा निःशुल्क भोजन-वितरण (सदावृत) की व्यवस्था हैं। सैकड़ों वर्षों से यह प्रथा अक्षुण्ण चली आती है।

फिर हर नगर में स्कूल कौलेज तथा यत्र तत्र गुरुकुलों और छात्रावासों के निर्माण में वैश्य की कमाई सदा लगी है और इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में जन-जागरण किया है।

इसके अतिरिक्त वैश्यों का धन स्थान-स्थान पर धर्मार्थ औषद्यालय खोलने तथा चिकित्सा शिविर लगाने में सदा लगता रहा हैं। कुआ तालाब, बाट-विश्रान्त-ग्रह व घाट इनके अलावा है। धम की जड़ हरी होती है। वैश्यों ने देश में कल्याणकारी सुविधाओं का जाल बिछा रक्खी है इसलिए उन पर ईश्वर की अनुकम्पा है। उनसे जब से व्यापारदि छीनकर राष्ट्रीय सरकारों (?) ने वैश्यों का उत्पीड़न किया है, यह प्रवृत्तियां रुक गई हैं। अब कच्चे पक्के रास्तों पर मीलों चले जाइये, कहीं निःशुल्क प्याऊ नहीं मिलेगी। नये वैश्येतर धन-कुवेर इन बातों में विश्वास नहीं रखते और वैश्य टैक्सों, कानूनों और उपेक्षा से कराहा रहा है।

वैश्यों में उपजातियों का सृजन

बर्धमान पुराण के रचियता ने वैश्यों की ८४ जातियां गिनाई हैं। फूलमाला पच्चीसी में ८४ जैन जातियां गिनाई हैं; टाड ने स्वलिखित इतिहास में वणिकों की ८४ उपजातियां लिखी हैं।

["अनेकांत"—अगस्त १९७४ पृष्ठ ५८]

डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल लिखित "गुप्त अभिलेख" नामक पुस्तक के पृष्ठ ५२ पर यह उद्धृत है कि गुप्त कालीन अभिलेखों से यह बात स्पष्ट है कि वैश्य जन छोटी-छोटी समितियां और निकाय बनाकर व्यापार करते थे। कालान्तर में जाति शब्द वर्ण अथवा श्रेणी दोनों के लिये व जाति विशेष के लिए प्रयुक्त होने लगा। यहीं से वैश्यों की उपजाति सृजन की शृंखला का प्रारम्भ है।

४.०१०१. संस्कृत साहित्य में श्रेणियों का उल्लेख

परन्तु इन निकायों अर्थात श्रेणियों का प्रारम्भ आदि काल में ही हो गया लगता है क्योंकि मनुस्मृति ८/४१ में व्यापारियों, धनाध्यक्षों तथा ब्राह्मणों की भी श्रेणियों (ऐसी समितियों) का उल्लेख है। नारद स्मृति १/७ में नाटककार एवं व्योपारियों के निकाय (Guilds) का वर्णन है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र (२/४) में तो मजदूरों और कारीगरों की गिल्डों का उल्लेख है। महाभारत (३/१४/१६) में व्योपारियों की श्रेणियों का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त श्रेष्ठी (अपभ्रंश सेठ) और सेथिया (सेठिया) का वर्णन निम्न स्थलों पर प्राचीन वाङ्मय में आया है :—

ऐतरेय ब्राह्मण=	३/३०/३, २/२५/८ व ९
शतपथ ब्राह्मण=	१३/७/११
छान्दोग्य उपनिषद=	५/२/६
कौशितकी उपनिषद=	४/२०, २/६, ४/१५
बृहदारण्यक उपनिषद=	१/४/१२

बाल्मीकि रामायण के अयोध्या काण्ड [८८/१-१५] तक में सुनारों, कुम्हारों, हाथी दांत के काम करने वालों, भरिया, पेन्टर, वाद्यान्त्र निर्माताओं, बख्तर बनाने वालों, चर्मकारों, लुहारों, ताम्र-कारों, बढ़इयों, मूर्तिकारों, गिलास काटने वालों को सगठित श्रेणियों (निकायों) का वर्णन है। इन्होंने राम को राजतिलक देने का समर्थन किया था। विष्णु पुराण (५/२७) में लिखा है कि कस और कृष्ण का युद्ध देखने हेतु विभिन्न श्रेणियों के पृथक प्रभाग (PAVI-LIONS) बनाये गये थे।

महाभारत के बन पर्व (२४८/१६) में उल्लेख है कि जब गन्धर्वों से हारकर दुर्योधन लौट रहा था तो शंकालु था कि श्रेणी ब्राह्मण उनका विरोध करेंगे। बौद्ध जातकों में १८ श्रेणी गिनाई गई हैं। उनमें मजदूरों की श्रेणी का राजा का परामर्श-दात्री समिति में विशेष स्थान होता था।

इससे प्रगट है कि हमारी व्यवस्था में रोजगार धन्धे भी व्यक्ति-गत उन्नयन हेतु न होकर सम्मिलित और सामाजिक विचार से अनुबन्धित थे। कालान्तर में उनमें रक्त सम्बन्ध होने लगे और वे श्रेणियां ही जातियों में बदल गई।

४.०१.०२ श्रेणियों का अनुशासन

इस प्रकार जाति एक धार्मिक, आर्थिक इकाई के अतिरिक्त कौटुम्बिक इकाई भी हो गई। यह जातियां अपने अनुशासन को कड़ाई से चलाती थीं। याज्ञवल्क्य स्मृति (१/३६) ने व्यवस्था दी थी कि राजा जाति-नियमों पर अमल करवाये। गौतम स्मृति (११/२०) ने अनुज्ञा दी कि जाति और श्रेणी के नियमों को जो कि वेद विरुद्ध न हों, माना जाये। मनु स्मृति (८/११) में कहा है कि राजा जाति नियम के अनुसार न्याय करे। नारद स्मृति (१०/३) भी यही कहती है। बृहस्पति स्मृति (१/२६) में कहा है कि रुपया उधार देने वाली श्रेणी के अपने अलग कानून होने चाहिए। उन्हें समविद या सामायिका कहते थे। इनकी एक कार्य-कारिणी समिति होती थी, जो आर्थिक कर्ज के भुगतान, जाति के व्यापारिक नियमों के उल्लंघन, साधारण मारपीट तथा मूल्य-वृद्धि या घटाने के सम्बन्धी मामलों की सुनवाई करके निर्णय देती थी। और वे दोषियों पर जुर्माना, जाति-निष्कासन, दावत देने का भार अथवा शारीरिक दण्ड या धार्मिक पश्चाताप की आज्ञा तक दे सकती थीं। विष्णु पुराण (२/१८७) तो इन उलङ्घन कर्त्ताओं को निर्वासित तक करने की अनुमति देता है। इन श्रेणियों के माध्यम से आर्थिक-सहयोग, परस्पर आश्वासन व बीमा, बैंक, शिक्षार्थ स्कूल तथा मृत की अन्त्येष्टि पर लकड़ी का एक टुकड़ा देने, विवाह पर कुछ भेंट देने, अनाथ व विधवाओं की सहायता देने, प्राविधिक शिक्षा देने तथा सम्मिलित पर्वादि मनाने के कार्य भी किए जाते थे।

नगरों में बढ़ई, कुम्हार, माली, नाई, धोबी की जिजमानी होती थी। फिर विभिन्न श्रेणियां नगर सम्बन्धी कार्यों के संचालन की भी जिम्मेवार होती थीं। बृहस्पति (१४/५) के अनुसार इनमें निर्णय बहुमत से होते थे। परन्तु बाद में भूमि-सुधारों, आर्थिक उन्नयन के प्रोग्रामों, औद्योगिक जीवन की स्थापना, आधुनिक व्यक्तिवादी सभ्यता, प्रजातान्त्रिक भावनाओं के विकास तथा भौतिक मूल्यों के कारण बेढीली पड़ गई और उसका फल हुआ है कृषि में गिरावट तथा स्वार्थता युक्त समाज सृजन। श्रेणी का एक प्रमुख होता था, उसे ज्येष्ठ कहते थे और उनके ३ कार्यकारिणी सदस्य होते थे, जिन्हें कार्यचिन्तक कहते थे [बृहस्पति स्मृति-१७/१०]। विभिन्न श्रेणियों के संघ बन जाते थे, जिन्हें निगम कहते थे। वैशाली की खुदाई में ३ सीले मिली हैं जिन पर श्रेष्ठिन, कुलिका, निगम का नाम अंकित है।

निग्रोह जातक में यह वर्णित है कि राजा ने माण्डलिक उपाधि उस श्रेष्ठी को दी जो सब श्रेणी के व्यापारियों के फसले करने को सक्षम था। उन्हें महाश्रेणी कहते थे। श्रेणी शब्द कालान्तर में सेन हो गया। इससे वैश्यों के महासेन वर्ग का ज्ञान होता है।

४.०१.०३ अपनी पाणिनी-परिचय पुस्तकमें डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ने पृष्ठ ११८ पर यह लिखा है कि श्रेणी शासन वह था जिसमें पहिले कुल संस्था का विकास होता था और वह समस्त कुल राजनैतिक इकाई के रूप में अपने आपको संगठित कर लेते थे। उन कुलों की संख्या पहले कम होती थी, बाद में क्रमशः बढ़ती जाती थी। प्राचीन जनपद प्रणालीमें प्रायः १८ श्रेणियों का संगठन होता था। उकका एक मुखिया होता था। लोग प्रेमवश अपने को उसकी संतान कहने लगते थे। पाणिनी ने लिखा है कि एक श्रेणी के सदस्य प्रायः भाई बहिन की तरह रहते थे।

उपरोक्त सिद्धान्तानुसार अग्रश्रेणी अर्थात अग्र नामक श्रेणी में मूल कुल संख्या १८ थी। यही आगे चलकर शत सहस्र हो गई अर्थात मूल १८ कुलों से बढ़कर एक लाख परिवार हो गये। पर उनका श्रेणी संगठन मूल बीज के अनुसार ही सम्बन्धित होता जाता था। अग्रजाति के अष्टादस कुलों ने अपनी श्रेणी संगठित कर ली। संभवतः यह अगर का व्यापार करते थे। बाद में दूसरे व्यापार भी करने लगे।

इसी प्रकार १२ कुलों की संगठित ईकाई का नाम द्वादस-श्रेणीया बारहसेनी पड़ा। यह लोग अलीगढ़ तथा आगरा अंचल में प्रचुर संख्या में है। एटा, बरेली व बदायूं और मुरादाबाद अंचल में चतुः श्रेणी चौसेनी माहौर वैश्य हैं। बंगाल में वैश्यों को सेन तथा सेन गुप्त कहते हैं।

हर्ष के समय फाह्यान भारत में आया था। उसके लेखानु

सार उस समय तक वैश्य पूर्णत:एक जाति हो गये थे जिनमें से पशुपालक, कृषक, लुहार, बढ़ई, कोली, तेली व माली आदि अपनी पृथक उपजातियां बना चुके थे।

४.०१.०४ वैश्यों के श्रेणी परक विभाजन के अतिरिक्त जनपद परक विभाजन भी हैं। व्यौपारार्थ जाकर जिस अंचल में वैश्यों की कोईशाखा बस गई, उसने अपने को वहाँ की मिट्टी में मिला दिया। वहाँ की वेषभूषा और बोली व संस्कृति अपनायी। वहीं बसे हुओं में गोत्र बचाकर विवाहादि करने लगे। कालान्तर में ईति बीतने पर या स्वेच्छया प्रवजन करके अन्यत्र जा बसने पर वे अपने मन में अपने पूर्व जनपद की स्मृति संजोये रहे और और इकट्ठे रहते तथा उस जनपद के नाम पर अपनी उपजाति बनाते रहे। निम्न उदाहरण वैश्यों में इस प्रणाली से हुये विभाजन की मान्यता को सम्पुष्ट करते हैं।

माहौर =	माहौरगढ़ जनपद
अग्रवाल =	अग्रोहा जनपद
बरनवाल =	बरन (बुलन्द शहर) जनपद
माथुर =	मथुरा जनपद
खन्डेलवाल =	खन्डेला जनपद
अवधवाल =	अवध जनपद
अयोध्यावासी =	अयोध्या जनपद
मध्यदेशी =	मध्यप्रदेश जनपद
मौर्य =	मौखरी जनपद
मालवीय =	मालवा क्षेत्र
गुल्हरे =	गौलेर क्षेत्र
जायसवाल =	रायबरेली के पास जायस जनपद
श्रीमाल =	श्रीमाल जिला झालौर (मारवाड़)
ओसवाल =	ओसवा नगर-राजस्थान
पोरवाल =	पोरबन्दर (गुजरात)
केसर बानी =	केसर का देश काश्मीर
महेश्वरी =	माहेश्वर (मध्यप्रदेश)
दोसर =	धूसर पहाड़ी (रैवाड़ी) राजस्थान
सूरसेनी =	मथुरा जनपद
महोत्रिया =	महोना (हमीरपुर उ०प्र०) जनपद
रैवाड़ी =	रेवारी (हरियाना)
मलिक, लाहा, सेत्र बराई, सलि आध्य, धर	= सप्तग्रामी (बंगाल)
कान्यकुब्ज वैश्य	= कन्नौज जनपद

वैश्यों के उपवर्ग

अ० भा० वैश्य महासभा [स्थापित १९८२ अब अकार्यरत] ने ८ जनवरी १९०१ को तत्कालीन सीमान्त प्रदेश [अब उत्तर प्रदेश] के चीफ सेक्रेटरी को एक पत्रोत्तर में लिखा था कि १९०१ की जनगणना में निम्न ४२ उपवर्गों को बनिया-बक्काल न लिखकर वैश्य लिखा जावे :—

१. अग्रवाल २. राजवंशी ३. बरनवाल ४. चुरुवाल ५. श्रीमाल ६. श्रावक ७. महेश्वरी ८. खण्डेलवाल ९. वीजावर्गीय १०. ओसवाल ११. नागर १२. बारहसेनी १३. माहुर [माहौर] १४. माथुर १५. रस्तोगी या रोहतिकी १६. गहोई १७. गुजराती १८ अग्रवाल (कदीमी) १९, गिन्दौड़िया या गन्धारिया २०. धाकड़ (माहेश्वरी) २१. मेड़नवाल २२. कोलवार २३. जाँगड़ २४. पुरुवाल २५. भगेरवाल २६. अटोड़ २७. मौढ (चतुर्वेदी) २८. पल्लीवाल २९. जैनी ३०. लोहनिया ३१. कुमारतनय ३२. पोकरे ३३. ३३. टोंकवाल ३५. पुरुवाल ३६. नेमे ३७. पद्मावती ३८. नरीसिंहपुरे जैनी ३९. दसौरे ४०. खटौरे ४१. चौसेनी ४२. डीडू

परन्तु प्रसिद्ध पुस्तक आइन अकबरी के पृष्ठ-१३२ पर बनियों के ८४. उपभेद लिखे हैं। अतः खोज जारी रही। इस बीच निम्न उपवर्गों का और पता लगा है—

४३. केसरबानी ४४. शिवहरे ४५. गुलहरे (गोलवारा) ४६. महाजन वैश्य ४७. झाँकड़े ४८ भटेवड़े ४९. यज्ञसेनी ५०. कान्यकुब्ज ५१. दोसर ५२. लोहिया ५३. मेहता ५४. वायम ५५. कसौंधन ५६. ओमर ५७. ग्वारेंमाहौर ५८. महावर ५९. माहुरी ६०. रौनियार ६१. जायसवाल ६२. चौरसिया (तम्बोली) [विवादास्पद] ६३. तैलिक [विवादास्पद] ६४. अयोध्यावासी ६५. अवधवाल ६६. अवधपुरिया ६७. सुनमानीय ६८. चतुर्श्रेणी माहौर ६९ अग्रहरि ७०. ७१. मध्यदेशीय ७२. शौण्डिक ७३. भगत ७४: आर्यवैश्य ७५. कौमुटी ७६. महाराजन ७७. मिहिर ७८. मिहिरया ७९. मउर ८०. मौर्य ८१. महावणिक ८२. उसमार ८३. कुंवरे ८४. खाबी ८५. पिसरवानी ८६ शूरसेनी ८७. बरसानी ८८. काठ ८९. जमेय ९०. कमलपुरिया ९१. कथ ९२. गुडिया ९३. कपोला ९४. पुरातन ९५. खण्डायत ९६. हरसोरा ९७. गोभुज ९८. ओसवाल ९९ सेठी (सेठ) १००. लिंगायत १०१. अडालज १०२. अानेरवाल १०३. ओरवाल १०४. अ[illegible]मेरी १०५. अडोरा १०६. अष्टवार १०७. अडालिया १०८. अचतवाल १०९. अरचितवाल ११०. उरवाल १११. अढय ११२. उवंला ११३. इन्दोरिया ११४. कठंरवाल ११५. कुरमी बनिया ११६. काकरिया ११७. कजोहीवाल ११८. कम्बोवाल ११९. करनेरा १२०. कन्दोइया १२१. कथोला १२२. कठोरा १२३. करटीवाल १२४. ककोला १२५. कोलापुरी १२६. कुन्थतरा १२७. कपड़िया १२८. कुरुवार १२९. कसमीरी १३०. काणु १३१. काखना १३२. कादू १३३. खड़ेता १३४. खातरवाल १३५. खोची १३६. ख[illegible]ल १३७. खारवा १३८. खेमवाल १३९. खडायचा १४०. खे[illegible]पाल १४१. गोलपुरी १४२. गसोरा १४३. गुजारवा १४४. गंगेरवाल १४५. गोगवार १४६. गठचक १४७. गजेरा १४८.

गोरी १४९. गौरत १५०. गढ़वाली १५१. गंगराडा १५२. गहिलवाल १५३. गांधरिया १५४. गोलाई १५५. गोरखे १५६. गंगापारी १५७. गोहले १५८. ग्रामी १५९. चिन्नवाल १६०. चोलोडिया १६१. चक्क चाप १६२. चकोड १६३. चतुरथ १६४. तलनडा १६५. तचलरा १६६. चीतोडा १६७. चूरुवाल १६८. छोटी १६९. जारोला १७०. जीवणवाल १७१. जैतवाल १७२ जम्बू १७३. जेमा १७४. जनोरा १७५. जमनिया १७६. जेतीवसार १७७. जलहरी १७८. जीगीपारी १७९. झालियारा १८०. झलोरा १८१. झरोल १८२. टटार १८३. टकचाल १८४. टटोरिया १८५. टीटोड़ा १८६. ठंठवाल १८७. ठाकरवाल १८८. ठाकर १८९. डीडोरिया १९०. डीसावाल १९१. डेढोउमर १९२. डाबनीनैस १९३. द्वारकावासी १९४. दसोरा १९५. दसारा १९६. दोइलवाल १९७. देशवाल १९८. दासादी १९९. देवारी २००. दिल्लीवाल २०१. धवल २०२. धारवाल २०३. धाडो २०४. धोई २०५. धवलकोष्टी २०६. नागेन्द्रा २०७. नाधोरा २०८. नरोड़ा २०९. नरसिया २१०. नराया २११. नाथचलला २१२. नडामे २१३. नागदह २१४. नवामरा, २१५. नोटिया २१६. नाछिला २१७. नानगहेसा २१८. नाणो २१९. नाडरा २२०. पटोलिया २२१. पदमीरा २२२. पलेवाल २२३. पंचमबाल २२४. पुष्करवाल २२५. परवाल २२६. पवाछिया २२७. पिवादी २२८. पडासिया .२२९. पचम २३०. पोसरा २३१. पत्त्वता २३२. पधारा २३३. पाँतीवाल २३४. पौकर २३५. प्रवरा २३६. प्रहराव २३७. पटानिया २३८. पटनापुरी २३९. पचमपोखरा २४०. पाउदास २४१. बैसवनिया २४२. बड़ेसा २४३. बुढल २४४. बोगार २४५. ब्रह्माका २४६. बगबस २४७. बावरिया २४८. बारहमासी २४९. बोहरा २५०. बरगास २५१. बदनोरा २५२. भूगडवाल २५३. भाकरिया २५४. भवनगेह २५५. भारीजा २५६. भगोरवाल २५७. भूंगडा २५८. भूत्यपुरी २५९. भाटिया २६०. भटेवरा २६१. भागऊ २६२. भृगत २६३. भ्रगादी २६४. मोध २६५. मेहवाड़ा २६६. मंगोरा २६७. मांडालिया २६८. मेडारा २६९. मटिया २७०. माया २७१. मथपर २७२. मांडारा २७३. मडोहड २७४. मैथल २७५. भूगडवार २७६. भैडावाल २७७. मिहिरवाल २७८. मीरनबाल २७९. मुईहार २८०. मोरको २८१. राजपुरी २८२. रोथाई २८३. रागोरा २८४. रुई २८५. रामा २८६. रहटी २८७. रजिया २८८. लाडीसाक २८९. लाड २९०. लुहानिया २९१ लाहू २९२. लाकम २९३. लवेच २९४. वरुरी २९५. विदियादा २९६. वैश २९७. वटीवरा २९८. वयाद १९९. विसलवार ३००. वोगरा ३०१. वगीवाल ३०२. वघ्र ३०३. वसमी ३०४. बायेदा ३०५. वायेच ३०६. वाइस ३०७. वस्ता ३०८. वादरवाल ३०९. वाग्रीवा ३१०. वरीरी ३११. वागरोरा ३१२. वदवइया ३१३. वपछवाल ३१४. वाचड ३१५. वेडनारा ३१६. वाहोरा ३१७. वाल्मीवाल ३१८. वहडा ३१९. बन्दरवाल ३२०. बारमा का ३२१. सोनी ३२२. सोजतवाल ३२३. सोहरवाल ३२४. सौराठिया ३२५. सूतल ३२६. सरहिया ३२७. सतवाल ३२८. सलाऊ ३२९. सरखरल ३३०. सुराणी ३३१. सौधत ३३२. सिलहरवाल ३३३. सान ३३४. स्तीगुरु ३३५ सहेल ३३६. सडाइया ३३७. स्वरिव ३३८. सारत्वेवाल ३३९ सिगार ३४०. सेतवाल ३४१. सौनैया ३४२. साध ३४३. सारविया ३४४. सिरक्टा ३४५. साचोरा ३४६. सुरसरवाल ३४७. श्रीखण्ड ३४८. हलोरा ३४९. होहल ३५०. हरद ३५१. हाकरिया ३५२. हूम ३५३. हरसोरा ३५४. हरदूई ।

५. पराधीन भारत में जातीय सभाओं की आवश्यकता और उनका जन्म

महामना मालवीय जी ने एक संस्कृत महाविद्यालय खोला था और एक विख्यात विद्वान को इसका आचार्य बनाया। इसके सब विद्यार्थी जन्मना ब्राह्मण थे और गुरुकुलीय शिष्टाचार के अनुसार वे प्रातः गुरु के चरण स्पर्श करते थे। एक दिन दोपहर को आचार्य जी के गांव से परिवार का एक व्यक्ति उनसे मिलने आया और कोठी के बाहर बैठे व्यक्ति से संदेश कहलवाया। विद्यार्थी ने पूरा पता पूछा। आगन्तुक ने कहा कि मैं तुम्हारे आचार्य का चाचा हूं। वे पण्डित हैं, मैं कायस्थ हूं क्योंकि कम पढ़ा हूं। विद्यार्थी अवाक रह गया। मालवीय जी से संवाद कहा गया। धीरे धीरे सब विद्यार्थियों ने आचार्य कहना बन्द कर दिया और वर्ष के अन्त तक मालवीय जी ने किसी बहाने से उन्हें विद्यालय से पृथक करके पीछा छुड़ाया। आचार्य जी को पृथक होने पर वास्तविकता का पता चला। तब उन्होंने प्रथम कायस्थ सभा की नींव डाली। एक चित्रगुप्त भगवान की वद प्रसारित की और कायस्थों का संगठन किया और जन्मना ब्राह्मणों की पूजा समाप्त कर दी। इसकी देखा देखी ही अन्य जातियों की सभायें बनी। आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

समाज में तिरस्कार से आत्म-सम्मान का प्रादुर्भाव हुआ परन्तु केवल नकारात्मक उत्तेजना से संस्थाओं तथा सगठनों की अमरता नहीं रहती। अतः इनका उद्देश्य दूरगामी निश्चित किया जाता है।

कुछ मध्यम स्थिति तथा विवेक के पुरुष अपने वंश में शिक्षा, सुविचार तथा सामंजस्य के पुण्य यज्ञ में अपनी आहुति देने लगते हैं। जाति जन्म से ही होती है। वह एक रक्त का सम्बन्ध है। एक जाति के व्यक्ति एक वंश से सम्बन्धित हैं। एक वंश जाति के लोग अध्यापक, फौज में सैनिक या व्योपारी बन सकते हैं। पर हर जन्मना जाति के अपने संस्कार हैं। जातीय सभा उनका

संगठन करके परिवार वाले संस्कार जिन्दा रखना चाहती है ताकि व्यक्ति वंश में भी स्वार्थी न होकर परिवार कल्याण हेतु बर्ते। सतत ऐसे संस्कार वाला व्यक्ति ही अपने सार्वजनिक जीवन मे वे विचार बर्तेगा; क्योंकि परिवार ही बदलकर वंश व जाति होगी और जाति ही समष्टि में लय होकर राष्ट्र की समष्टि बनेगी। जाति का एक वंश है। इसमें हम जन्मे थे। उस वंश के व्यक्तियों की गोद में हम फूले फले और बढ़े हैं। उस वंश के एक वृद्ध व्यक्ति ने अपनी कन्या हमें भेंट करके एक प्रियतमा दी है। और उस वंश के एक सकुलीन सुन्दर योग्य लड़के को ही हमने भी स्नेह-पालिता अपनी सुकुमार कन्या पढ़ा लिखा कर भेंट करनी है। जिस वंश के व्यक्ति हमारे सुख में दावत खा हमारा सुख बढ़ायेंगे और दुःख में ढ़ाढ़स देंगे और अन्त में मरणोपरान्त भी समशान तक हमारे न छूने योग्य शरीर को कंधे पर रख कर जो अग्निदाह करेंगे और फिर भी १०-२० वर्ष तक हमारे छोटे से छोटे नाम को यथा-सम्भव जीवित रखेंगे, उसका संगठन करना एक पुण्य का ही काम है।

जातीय सभाओं की स्थापना इन्हीं विचार धाराओं से प्रेरित होकर हुई। जाति के अनुशासन द्वारा कुमार्ग-गामी भाइयों पर ब्रेक लगाना अभीष्ठ था, क्योंकि राजकीय न्यायालय में तो धोखा देकर भी समाज-विरोधी कार्य करने वाला छूट जाता है। व्यक्तियों के झगड़ों का निवटारा जाति की न्याय सभायें कर देती हैं। गरीब बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध जाति के सामूहिक प्रयत्न से किया जा सकता है। कन्याओं के विवाह सम्बन्धी रिवाज सरल तथा अधिक सुन्दर बनाये जा सकते हैं। वशों को जनगणना कर परस्पर परिचय बढ़ाया जा सकता है, जो कि विभिन्न व्यवसायों, उद्योग धन्धों और नौकरियों के मामले में लाभप्रद होता है।

जातीय सभाओं की उपयोगिता के सम्बन्ध में स्वर्गीय राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी आत्मकथा नामक पुस्तक के पृष्ठ ३१९ अध्यास ६३ में सामाजिक सुधार में कायस्थ कान्फ्रेन्स के जन्म, उसकी उपादेयता और स्वय द्वारा १९२५ के उसके जोनपुर अधिवेशन की सदारत किये जाने आदि पर यों लिखा है :—

"अ० भा० कायस्थ कान्फ्रेन्स का जन्स प्रायः कांग्रेस के साथ ही हुआ था। मेरा ख्याल है कि पहिले अधिवेशन में यह जोर दिया गया था कि लड़की के पिता से कई नामो मे तिलक दहेज की रकमें लेने की प्रथा बहुत बुरी है। प्रायः प्रत्येक अधिवेशन में ऐसे प्रस्ताव पास किए गए हैं। परन्तु अनेक बार कान्फ्रेंस के कर्त्ता धर्त्ताओं ने ही इन प्रस्तावों की अवहेलना की है। अनेक बार तो कान्फ्रेंस से प्राप्त प्रतिष्ठा को अधिक तिलक दहेज लेने का कारण बना लिया गया। इसलिए कायस्थ कान्फ्रेंसें पुरानी होने पर भी अपने उद्देश्यों की सिद्धि में बहुत सफल नहीं हुईं।

इसके बाद उसी साल के अन्त में (१९२५ के दिसम्बर में) जब मैं कायस्थ कान्फ्रेंस के जौनपुर अधिवेशन का सभापति चुना गया तो मैंने उसे इसलिए स्वीकार कर लिया कि शायद वहां जाकर कम से कम इस कुप्रथा को रोकने में कुछ कृतकार्य हो सकूं। वहां उस कान्फ्रेंस में दो प्रस्ताव पुराने होने पर भी मांकें के पास हुए। एक तो तिलक दहेज सम्बन्धी था जिसमें हमने प्रतिज्ञा को और भी कड़ी बना दिया था। उसी प्रस्ताव ने ऐसी शादी में, जिसमें प्रस्ताव का उल्लघन होता हो, शरीक न होने की प्रतिज्ञा जोड़ दी गई। दूसरे में कायस्थों के विभिन्न वर्गों और शाखाओं में रोटी-बेटी के व्यवहार जारी करने पर जोर दिया गया। दहेज की बात तो हल नहीं हुई है क्योंकि अब तो युवक युवती भी नई नई शर्तें और मांगें पेश करते हैं यथा विदेश शिक्षा का खर्च। पर अन्तर्वर्गीय विवाह कायस्थों में होने लगे हैं। अब कम उम्र की विधवाओं की शादी भी होने लगी हैं। पहिले मैं इसका विरोधी था, पर बाद में मैंने इसका औचित्य मान लिया था। यही दो उद्देश्य सब जातीय संगठनों के रहे हैं।

जातीय संगठन में योगदान का एक और तीसरा पहलू है। हिन्दू की परिभाषा यही है कि जो किसी न किसी जाति का हो। जाति प्रथा ने हिन्दुओं की संख्या को स्थिर बनाए रक्खा है। एक हजार वर्ष के विधर्मी राज्य के बाद भी हम इस देश में ८५ प्रतिशत बने हुए हैं। यह जातीय अनुशासन की देन ही है। अतः जातीय संस्कार दृढ़ रहने से हमारी संस्कृति और संख्या की सुरक्षा होती है। जाति आन्दोलन सांस्कृतिक निष्ठा का सम्बल हैं।

६. उपरोक्त ध्येयानुसार निर्मित वैश्य-संगठन

०१) इस दिशा में प्रयत्न सन १८९२ में ही प्रारम्भ हो गये थे जबकि अ० भा० वैश्य महासभा की स्थापना हुई थी। इसके वार्षिक अधिवेशनों के सन स्थान व सभापति का क्रमवार विवरण निम्न प्रकार है :—

१-मेरठ १८९२ लाला दुर्गाप्रसाद फर्रुखाबाद, २-लाहौर १८९३ रा० ब० गंगाराम जी. सी. आई. ई., ३-सहारनपुर १८९४ रा. ब. ला निहालचन्द मुजफ०, ४-मथुरा १८९५ रा. बा. सेठ लक्ष्मनदास सी. आई. ई. मथुरा, ५-अजमेर १८९६ रा. ब. सेठ सुमेरमल अजमेर, ६-मेरठ १८९७ रा. ब. ला. निहाल चन्द जी, ७-देहली १८९८ रा. ब. ला. कृष्णदासजी देहली, ८-बरेली १८९९ साहू रामरतन दास ठाकुरद्वारा, ९-अलीगढ़ १९०० रा. ब. सेठ नत्थीलाल दिल्ली, १०-कानपुर १९०१ रा. स. गिरधारीलाल दिल्ली ११-आगरा १९०३ रा. ब. निहालचन्द्र जी १२-बना-

रस १९०५, रा० ब० लाला श्याम लाल किशनगढ़, १३–मुजफ्फर-नगर १९०६ रा. सा. ला. केदारनाथ जज झग, १४–अम्बाला १९०७ ला. चन्दूलाल जो हिसार, १५–मेरठ १९०८ रा. सा. मुरलीधर वकील अम्बाला १६–हिसार १९०९ रा. ब. कन्हैयालाल कानपुर, १७–मुरादाबाद १९१० ला. रामचन्द्र मेरठ, १८–इलाहाबाद ९१२१ ला. सुखबीर सिंह रईस १९–फैजाबाद १९१२ ला. कन्हैयालाल इन्जीनियर दिल्ली, २०–कलकत्ता १९१३ला. बल्देवसिंह देहरादून, २१–दरभंगा १९१४ रा.ब. द्वारिका-प्रसाद नहटौर, २२–देहरादून १९१५ आन० राय० ला० बिशम्भर नाथ कानपुर, २३–देहली १९१६ आन० मोतीचन्द सी० आई० ई०, २४–इटावा १९१७ रा. ब. ला. ज्वाला प्रसाद इन्जीनियर, २५–देहली १९१८ रा. ब. श्यामसुन्दरलाल अलवर, २६–बुलन्दशहर १९१९ रा. सा. चौ० बृजलाल एकाउन्टैंट जनरल, २७–अलवर १९२० ग्रान. ला. सुखबीर सिंह मु० नगर, २८–आजमगढ़ १९२१ रा. ब. ला. केदारनाथ रिटा० जज २९–कोटा १९२३ बा. मोतीलाल जी एडवो० इन्दौर, ३०–बरेली १९२४ रा. सा दीवान हरविलास शारदा, अजमेर ३१–अलीगढ़ १९३३ राजा ज्वालाप्रसाद बिजनौर, ३२–मुजफ्फरनगर १९३४ सेठ पद्मराज जैन कलकत्ता, ३३–जयपुर १९३५ आ.ब.रा.बा. जगदीशप्रसाद, ३४-देहली १९३७ आ. रा. ब. राजा गोविन्दलाल पित्ती बम्बई, ३५–हरिद्वार १९३८ सर पद्मपत सिंहानियां, ३६–सीतापुर १९४१ आन. राजा भूपेन्द्र नारायण M. L. C. कलकत्ता, ३६–मेरठ १९४४ रा. ब. कप्टन हीरालाल इन्दौर,

और जब वर्षो तक कोई उत्सव नहीं हुम्रा तो क्रियाशील लोगों ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद १९५०में वैश्यों को एक कान्फ्रैंस बड़ौत जिला मेरठ में बुलाई। इसमें सब उपजातियों के कोई १०,००० वैश्य उपस्थित थे। वहां भी सामाजिक सुधार के ही कुछ प्रस्ताव पास हुये।

इस आयोजन के फलस्वरूप सुप्त वैश्य महासभा फिर जागृत हुई। और १९५६ में उनका ३८वां वार्षिकोत्सव कानपुर में रा. बा. सेठ गूजरमल मोदी के सभापतित्व में बड़ी सजधज से मनाया गया। जे० के० ग्रुप के डायरैक्टर ला० शीतल प्रसाद जी स्वागता-ध्यक्ष थे। एक मील लम्बा एक जलूस निकला, जिसमें कानपुर में वैश्यों द्वारा संचालित ३५ स्कूल व कालेजों के छात्र थे। प्रथम बार वैश्यों के आर्थिक उन्नयन के भी कई प्रस्ताव पास किये गये। तथा अन्त: उपवर्गीय विवाहों की आज्ञा दी गई।

०२) दक्षिणाञ्चल में वैश्य=आर्यो के जो समूह उत्तर से दक्षिण पथ में जा बसे उनमें से मुख्य धारा आन्ध्र तक बसकर अपने को आर्य वैश्य कहती हैं। इन्हीं के कुछ लोग ग्रौर दक्षिण में तमिल-नाडु और केरल तक जा बसे। यज्ञ, यज्ञोपवीत और वसावी वैष्णव मन्दिर इनके संगठन के सूत्र बिन्दु हैं। एक संस्था दक्षिण भारत आर्य वैश्य समाज नाम से न० १७ गोडाउन स्ट्रीट-मद्रास-१ के मुख्य कार्यालय से काम करती है।

एक और सस्था अ० भा० वैश्य समाज है जिसका कार्यालय ६/१/९१ बसावी नगर, सचिवालय रोड। हैदराबाद-४ म है।

संस्था के पदाधिकारी यों हैं :–अध्यक्ष श्री कसल एम० विट्ठल (देवनगिरि, कर्नाटक) तथा महामन्त्री श्री के०सी० गुप्त(४-७-३१७) ईसामियां बाजार-हैदराबाद–२७ आन्ध्र। कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु एव बम्बई में उनकी प्रान्तीय शाखायें हैं। इनकी कन्यक वसावी नाम से मन्दिरों की शृंखला सारे दक्षिण में है और सब मन्दिरों की प्रबन्धक समितियों का भी संघ मार्च ८३ में बना है। अप्रैल ८४ में इस अ० भा० वैश्य समाज का देवनगिरि में विशाल सम्मेलन हुआ।

६. स्वाधीन भारत में वैश्य संगठन

परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद तीसरे आमचुनाव से राज-नैतिक पार्टियों ने विधायक एवं सांसद पद हेतु जाति के आधारों पर टिकट देकर सारा राजनैतिक वर्चस्व जातीय आधार पर बांट दिया है। वैश्य जन किसी एक क्षेत्र में बाहुल्य में नहीं नही हैं। अत: उनका इन शासन तन्त्रों में प्रवेश अत्यन्त दुष्कर हो गया है। साम्यवादी नीतियों के कारण उनका व्यापारादि भी उनसे छंना जा रहा है।

वैश्यों की सभी उपजातियों की आर्थिक, सामाजिक, राज-नैतिक एवं औद्योगिक स्थिति दिन-प्रतिदिन अत्यन्त दु:खद होती जा रही है, लगता है जैसे अपने ही देश में ये द्वितीय श्रेणी के नाग-रिक हैं।

७. अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन

हरियाणा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री बनारसी दास गुप्त, प्रधान अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन ने उड़ीसा के दौरों के बाद २६-४-८१ को धर्मभवन दिल्ली–४९ में भारतवर्ष के ३७ वैश्य वर्गों के १५० प्रतिनिधियों की उपस्थिति में वैश्यों के आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों के संरक्षण हेतु उक्त नाम से नये संगठन का सूत्रपात किया। अभी १९८४ में वे ही इसके सभापति तथा इस अध्याय का लेखक महामन्त्री है। इसका वर्णन पुस्तक के अन्तिम अध्याय में विशेष किया जावेगा।

वैश्यों के सब उपवर्गों तथा इनकी संस्थाओं का प्राक तथा आधुनिकविवरण संकलितकरके एक वृहद इतिहास संकलित किया जा रहा है जिसका यह प्रकरण द्वितीय अध्याय है। जो सज्जन इसमें मानसिक व आर्थिक सहयोग देने को उद्यत हों वे कृपया उपरोक्त पते पर इस अध्याय के लेखक से सम्पर्क करें। एकीकरण में इति-हास की अपनी भूमिका होती ही है।

अध्याय--३.००

अग्रवाल वैश्य समूह का इतिहास

हरियाणा में हमारी इस उपजाति के व्यक्ति वहाँ की कुल जनसंख्या का दस प्रतिशत हैं। उत्तरी-पूर्वी राजस्थान, पंजाब, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में अग्रवाल कुल जनसंख्या का आठ प्रतिशत हैं। कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, मद्रास, हैदराबाद एव भारत के अन्य प्रमुख नगरों में भी अग्रवाल जाति के व्यक्ति पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। विदेशों में बसने वाले भारतीय व्यापारियों में भी अग्रवालों की संख्या अधिक है।

पर्याय वाचक शब्द

i)–इस जाति के लिए "अग्रवाल" शब्द का प्रचलन जैन साहित्य के विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा ने संवत १४११ से अधिक प्राचीन पाया है। प्रद्युम्न चरित काव्य के रचयिता श्री सधारू जैन कवि ने अपना परिचय देते हुए स्पष्ट लिखा है—

"मइया मोकिड़ की यहु बखाण, तुम पसुन पायउ निखांण।
अगर वाल की मेरी जात, पुर अगरोए मुहि उतपति॥"

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मुद्रा तत्व विद् डा० परमेश्वरीलाल गुप्त ने पता लगाया है कि फिरोजशाह तुगलक के [illegible] १३७० ई० संवत् १४२७) में मोलान[illegible] की थी। पुरातत्व वेत्ता डा० वासुदे[illegible] के शासन काल (सन १५४० ई० सं[illegible]सी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पदमावत' मे[illegible] जाति का भी उल्लेख किया है।

ii) एक जैन विद्वान [illegible]स्तकाओं एवं शिलालेखों के आ[illegible] 'सन् ११०० से पूर्व प्रचलित भ[illegible]ल कहा जाता था। सन् ११[illegible]शीय राजा अनंगपाल तृतीय के [illegible]त "पासणाह चरिउ" में 'अ[illegible]३ में लिखी गई दातृ प्रशस्ति [illegible]ण पउतड़ रयण पालु" अग्रव[illegible]सके अतिरिक्त म० यशकीर्ति [illegible]रवंश पुराण में 'अयरवाल' शब्द का उल्लेख किया है। यथा—

(1) 'मिरि अयरवाल वंशहि पराणु,
सो संघ हे अच्छलु विनय पाणु-(पांडव-पुराण)

(2) तहि अयरवाल बसहि पहाणु,
सिरि गड़गनो गगेय भाण।
जो वंशणिज्जिय काम, वाणु दिउ चन्द साहू कि उपत्तदाणु।
(हरिवंश पुराण)

सोलवीं शताब्दी के कवि महाचन्द (संवत् १५८७) में लिखा है—

'अयरवाल संघहं सुह भायउ, गगा वोत्त-विम्मल गण सायर'
(शान्तिनाथ पुराण)

इसी प्रकार माणिक्य चन्द्र ने (१५७६ संवत) में अपने ग्रन्थ अमरसेन चरित में लिखा है—

'अयरवाल सुप्रसिद्ध विभासिउ, सिंघल गोत्तउ सुयण समासिउ'

iii)- कुछ विद्वानों के मतानुसार प्राचीन समय में अग्रवालों हेतु एक अन्य शब्द 'अग्रोतकान्वय' का भी प्रयोग होता था। तोमरवंशीय राजा अनंगपाल के शासनकाल (सन् ११३२ ई० संवत ११८९) में रचित 'पासणाह चरिउ'' में ही लिखा है—

'वरयांगजो जन राधीरिह राघवाख्यो।
ज्यामानमन्द मति रुज्झित चारुचेता॥'
अग्रोतकान्वय वयोगण पार्वणेन्दुः।
श्री माननेक गुण रज्जित-सर्वदोषरुः॥

इस ग्रन्थ में साहू जेजा के पुत्र राघव को अग्रवाल वंश रूपी आकाश का चन्द्रमा बताया है।

जैन ग्रन्थ प्रशस्ति-संग्रह में उन ग्रन्थों को लिखवाने वालों के नाम के साथ "अग्रोतकान्वय" शब्द का उल्लेख है।

"संवत्सरेस्मिन श्री विक्रमादित्य गताब्दा संवत् १३९१ वर्षे जेष्ठ सुदि गुरुवासरे अद्येह श्रीयोगिनी पुरे···स्थिता अग्रोतकान्वय शशांक सा० महिराल पुत्रः जिन चरण कमल चंचरि·· सा० सेतु, फेरा, साढ़ा, महाराजा लूपा ऐते···पठानाय उत्तर पुराण पुस्तकं लिखयितं। लिखितं गोडान्वय कायस्थ पंडित गंधर्व पुत्र बाहड राजदेवेन।

(अ) योगिनी पुर का शशाक (पृष्ठ—९२)
(ब) वहीं स्थित अग्रोतकान्वय परमश्रावक सागिया। (पृष्ठ ९७)

(iv) श्री जगन्नाथ दास रत्नाकर के मत में आदि शब्द अग्रवाल था, जिसका अर्थ है सेना के अग्रभाग के रक्षक।

अग्रवालों में सती पूजा

अग्रवालों में सतियों की पूजा करने की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। प्रत्येक परिवार 'सती माता' या 'दादी माता' के चरणों में सिर झुका' कर अपना दुःखड़ा कहता है। सुख-समृद्धि होने पर वे जात जडूला सवामणी आदि विविध भेंटों के साथ कृतज्ञता प्रकट करते हैं। अग्रोहा के आसपास और शेखावटी क्षेत्र में सतियों के मन्दिर अधिक हैं। इनमें से कुछ प्रख्यात सतियों की प्रेरक गाथाएं यहां प्रस्तुत हैं।

अग्रोहा की सती शीलादेवी

इस नगर में सेठ हरभजन शाह रहते थे। उनकी इकलौती पुत्री का नाम शीलादेवी था। शीला का विवाह सियालकोट के दीवान मेहता शाह के साथ हुआ था। शीला देवी अपने समय की अद्वितीय सुन्दरी थी। जब सियालकोट के राजा रिसालू ने शीला की सुन्दरता का वर्णन सुना, तब राजा रिसालू ने मेहता शाह को राज-कार्य के बहाने रोहतासगढ़ भेज दिया।

एक रात राजा रिसालू शीला के महल में जा पहुंचा। शीला देवी ने तत्काल सकट का अनुमान लगा लिया और झपट कर राजा के बाल पकड़ लिये। राजा को पृथ्वी पर गिराकर शीला उसकी छाती पर बैठ गई। अपने आँचल से कटारी निकाल कर जब शीला ने राजा की छाती में चभाना चाहा, तब राजा ने हाथ जोड़ कर क्षमा मांगी। शीला को दया आ गई और उसने राजा को छोड़ दिया।

रम १९०५, रा० ब० लाला श्याम लाल किशनगढ़, १३–मुज़फ्फर-नगर १९०६ रा. सा. ला. केदारनाथ जज झग, १४–अम्बाला १९०७ ला. चन्दूलाल जी हिसार, १५–मेरठ १९०८ रा. सा. मुरलीधर वकील अम्बाला १६–हिसार १९०९ रा. ब. कन्हैयालाल कानपुर, १७–मुरादाबाद १९१० ला. रामचन्द्र मेरठ, १८–इलाहाबाद ९१२१ ला. सुखबीर सिंह रईस १९–फैजाबाद १९१२ ला. कन्हैयालाल इन्जीनियर दिल्ली, २०–कलकत्ता १९१३ला. बलदेवसिंह देहरादून, २१–दरभंगा १९१४ रा.ब. द्वारिका-प्रसाद नहटौर, २२–देहरादून १९१५ आन० राय० ला० बिशम्भर नाथ कानपुर, २३–देहली १९१६ आन० मोतीचन्द सी० आई० ई०, २४–इटावा १९१७ रा. ब. ला. ज्वाला प्रसाद इन्जीनियर, २५–देहली १९१८ रा. ब. श्यामसुन्दरलाल [illegible] १९१९ रा. सा. चौ० बू[illegible] १९२० आन. ला. सुखबी[illegible] रा. ब. ला. केदारनाथ [illegible] मोतीलाल जी एडवो० इन्[illegible] हरविलास शारदा, अजमेर [illegible] बिजनौर, ३२–मुजफ्फर[illegible] ३३–जयपुर १९३५ आ[illegible] आ. रा. ब. राजा गोविन्दलाल पित्ती बम्बई, ३५–[illegible] सर पद्मपत सिंहानियां, ३६–सीतापुर १९४१ आन. राजा भूपेन्द्र नारायण M. L. C. कलकत्ता, ३६–मेरठ १९४४ रा. ब. कप्टन हीरालाल इन्दौर,

[illegible] के [illegible]
से निवेदन है कि वे निम्नलिखित
[illegible]

और जब वर्षों तक कोई उत्सव नहीं हुआ तो क्रियाशील लोगों ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद १९५० में वैश्यों को एक कान्फ्रेन्स बड़ौत जिला मेरठ में बुलाई। इसमें सब उपजातियों के कोई १०,००० वैश्य उपस्थित थे। वहां भी सामाजिक सुधार के ही कुछ प्रस्ताव पास हुये।

इस आयोजन के फलस्वरूप सुप्त वैश्य महासभा फिर जागृत हुई। और १९५६ में उनका ३८वां वार्षिकोत्सव कानपुर में रा. बा. सेठ गूजरमल मोदी के सभापतित्व में बड़ी सजधज से मनाया गया। जे० के० ग्रुप के डायरेक्टर ला० शीतल प्रसाद जी स्वागता-ध्यक्ष थे। एक मील लम्बा एक जलूस निकला, जिसमें कानपुर में वैश्यों द्वारा संचालित ३५ स्कूल व कालेजों के छात्र थे। प्रथम बार वैश्यों के आर्थिक उन्नयन के भी कई प्रस्ताव पास किये गये। तथा अन्त: उपवर्गीय विवाहों की आज्ञा दी गई।

०२) दक्षिणाञ्चल में वैश्य=आर्यों के जो समूह उत्तर से दक्षिण पथ में जा बसे उनमें से मुख्य धारा आन्ध्र तक बसकर अपने को आर्य वैश्य कहती हैं। इन्हीं के कुछ लोग और दक्षिण में तमिल-नाडु और केरल तक जा बसे। यज्ञ, यज्ञोपवीत और वसावी वैष्णव मन्दिर इनके संगठन के सूत्र बिन्दु हैं। एक संस्था दक्षिण भारत आर्य वैश्य समाज नाम से न० १७ गोडाउन स्ट्रीट-मद्रास-१ के मुख्य कार्यालय से काम करती है।

एक और संस्था अ० भा० वैश्य समाज है जिसका कार्यालय ६/१/९१ बसावी नगर, सचिवालय रोड। हैदराबाद-४ म है।

संस्था के पदाधिकारी यों हैं :–अध्यक्ष श्री कसल ऐम० विट्ठल (देवनगिरि, कर्नाटक) तथा महामन्त्री श्री के०सी० गुप्त(४-७-३१७) ईसामियां बाजार-हैदराबाद–२७ आन्ध्र। कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु एव बम्बई में उनकी प्रान्तीय शाखायें हैं। इनको कन्यक वसावी नाम से मन्दिरों की शृंखला सारे दक्षिण मे है और सब मन्दिरों की प्रबन्धक समितियों का भी संघ मार्च ८३ में बना है। अप्रैल ८४ [illegible] भा० वैश्य समाज का देवनगिरि में विशाल सम्मेलन [illegible]

[illegible]ाधीन भारत में वैश्य संगठन

[illegible]तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद तीसरे आमचुनाव से राज-[illegible]टियों ने विधायक एवं सांसद पद हेतु जाति के आधारों [illegible]देकर सारा राजनैतिक वर्चस्व जातीय आधार पर बांट [illegible] वैश्य जन किसी एक क्षेत्र में बाहुल्य मे नहीं नहीं है। [illegible] इन शासन तन्त्रों में प्रवेश अत्यन्त दुष्कर हो गया है। [illegible] नीतियों के कारण उनका व्यापारादि भी उनसे छंना जा रहा है।

वैश्यों की सभी उपजातियों की आर्थिक, सामाजिक, राज-नैतिक एवं औद्योगिक स्थिति दिन-प्रतिदिन अत्यन्त दुःखद होती जा रही है, लगता है जैसे अपने ही देश मे ये द्वितीय श्रेणी के नाग-रिक हैं।

७. अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन

हरियाणा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री बनारसी दास गुप्त, प्रधान अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन ने उड़ीसा के दौरों के बाद २६-४-८१ को धर्मभवन दिल्ली–४९ में भारतवर्ष के ३७ वैश्य वर्गों के १५० प्रतिनिधियों की उपस्थिति में वैश्यों के आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों के संरक्षण हेतु उक्त नाम से नये संगठन का सूत्रपात किया। अभी १९८४ में वे ही इसके सभापति तथा इस अध्याय का लेखक महामन्त्री है। इसका वर्णन पुस्तक के अन्तिम अध्याय में विशेष किया जावेगा।

वैश्यों के सब उपवर्गों तथा इनकी संस्थाओं का प्राक तथा आधुनिकविवरण संकलितकरके एक वृहद इतिहास सकलित किया जा रहा है जिसका यह प्रकरण द्वितीय अध्याय है। जो सज्जन इसमें मानसिक व आर्थिक सहयोग देने की उद्यत हों वे कृपया उपरोक्त पते पर इस अध्याय के लेखक से सम्पर्क करें। एकीकरण में इति-हास की अपनी भूमिका होती ही है।

अध्याय--३.००

अग्रवाल वैश्य समूह का इतिहास

हरियाणा में हमारी इस उपजाति के व्यक्ति वहाँ की कुल जनसंख्या का दस प्रतिशत हैं। उत्तरी-पूर्वी राजस्थान, पंजाब, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में अग्रवाल कुल जनसंख्या का आठ प्रतिशत हैं। कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, मद्रास, हैदराबाद एवं भारत के अन्य प्रमुख नगरों में भी अग्रवाल जाति के व्यक्ति पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। विदेशों में बसने वाले भारतीय व्यापारियों में भी अग्रवालों की संख्या अधिक है।

पर्याय वाचक शब्द

i)–इस जाति के लिए "अग्रवाल" शब्द का प्रचलन जैन साहित्य के विद्वान श्री अगरचन्द नाहटा ने संवत १४११ से अधिक प्राचीन पाया है। प्रद्युम्न चरित काव्य के रचयिता श्री सधारू जैन कवि ने अपना परिचय देते हुए स्पष्ट लिखा है—

"मइया मॉकिड़ की यहु बखाण, तुम पसुन पायउ निखांण।
अगर वाल की मेरी जात, पुर अगरोए मुहि उतपति ॥"

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मुद्रा तत्व विद् डा० परमेश्वरीलाल गुप्त ने पता लगाया है कि फिरोजशाह तुगलक के शासन काल (सन् १३७० ई० संवत् १४२७) में मोलाना दाऊद ने अग्रवाल जाति की चर्चा की थी। पुरातत्व वेत्ता डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार शेरशाह के शासन काल (सन १५४० ई० संवत १५९७) में मलिक मोहम्मद जायसी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पदमावत' में जातियों की एक सूची में 'अग्रवाल' जाति का भी उल्लेख किया है।

ii) एक जैन विद्वान श्री परमानन्द शास्त्री ने भी ग्रन्थों की पुस्तिकाओं एवं शिलालेखों के आधार पर लिखा है कि प्राकृत भाषा (सन् ११०० से पूर्व प्रचलित भारतीय जन भाषा) में अग्रवाल को अयरवाल कहा जाता था। सन् ११३२ ई० (संवत ११८९) में तोमर वंशीय राजा अनंगपाल तृतीय के शासन काल में कविवर श्रीधर द्वारा रचित "पासणाह चरिउ" में 'अयरवाल' जाति का उल्लेख है। संवत् १३९३ में लिखी गई दातृ प्रशस्ति में "ततिमध्झ पद्धर अयरवाल, णामेण पउतड़ रयण पालु" अग्रवाल रत्नपाल का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त म० यशकीर्ति (१४९२-१५००) ने अपने पाण्डव व हरिवंश पुराण में 'अयरवाल' शब्द का उल्लेख किया है।

यथा—

(1) 'सिरि अयरवाल वंशहि पराणु,
सो संघ हे अच्छलु विनय पाणु-(पांडव-पुराण)

(2) तहि अयरवाल बसहि पहाणु,
सिरि गड़गनो गगेय भाण।
जो वंश णिज्जिय काम, वाणु दिउ चन्द साहू कि उप्तदाणु।
(हरिवंश पुराण)

सोलवीं शताब्दी के कवि महाचन्द (संवत् १५८७) में लिखा है—
'अयरवाल संघहं सुह भायउ, गगा वोत्त-विम्मल गण सायर'
(शान्तिनाथ पुराण)

इसी प्रकार माणिक्य चन्द्र ने (१५७६ संवत) में अपने ग्रन्थ अमरसेन चरित में लिखा है—

'अयरवाल सुप्रसिद्ध विभासिउ, सिंघल गोत्त उ सुयण समासिउ'

iii)- कुछ विद्वानों के मतानुसार प्राचीन समय में अग्रवालों हेतु एक अन्य शब्द 'अग्रोतकान्वय' का भी प्रयोग होता था। तोमरवंशीय राजा अनंगपाल के शासनकाल (सन् ११३२ ई० संवत ११८९) में रचित 'पासाणाह चरिउ'' में ही लिखा है—

'वरयांगजो जन राघीरिह राघवाख्यो।
ज्यामानमन्द मति रुज्झित चारुचेता ॥'
अग्रोतकान्वय वयोगण पार्वणेन्दुः।
श्री माननेक गुण रज्जित-सर्वदोषरुः ॥

इस ग्रन्थ में साहु जेजा के पुत्र राघव को अग्रवाल वंश रूपी आकाश का चन्द्रमा बताया है।

जैन ग्रन्थ प्रशस्ति-संग्रह में उन ग्रन्थों को लिखवाने वालों के नाम के साथ "अग्रोतकान्वय" शब्द का उल्लेख है।

"संवत्सरेस्मिन श्री विक्रमादित्य गताब्दा संवत् १३९१ वर्षे जेष्ठ सुदि गुरुवासरे अद्येह श्रीयोगिनी पुरे···स्थिता अग्रोतकान्वय शशांक सा० महिराल पुत्रः जिन चरण कमल चंचरिक सा० सेतु, फेरा, साढ़ा, महाराजा लूपा ऐते···पठनाय उत्तर पुराण पुस्तकं लिखयितं। लिखितं गोडान्वय कायस्थ पंडित गंधर्व पुत्र बाहड राजदेवेन।

(अ) योगिनी पुर का शशांक (पृष्ठ—९२)
(ब) वहीं स्थित अग्रोतकान्वय परमश्रावक सागिया। (पृष्ठ ६७)

(iv) श्री जगन्नाथ दास रत्नाकर के मत में आदि शब्द अग्रवाल था, जिसका अर्थ है सेना के अग्रभाग के रक्षक।

अग्रवालों में सती पूजा

अग्रवालों में सतियों की पूजा करने की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। प्रत्येक परिवार 'सती माता' या 'दादी माता' के चरणों में सिर झुका' कर अपना दुःखड़ा कहता है। सुख-समृद्धि होने पर वे जात जडूला सवामणी आदि विविध भेंटों के साथ कृतज्ञता प्रकट करते हैं। अग्रोहा के आसपास और शेखावटी क्षेत्र में सतियों के मन्दिर अधिक हैं। इनमें से कुछ प्रख्यात सतियों की प्रेरक गाथाएं यहां प्रस्तुत हैं।

अग्रोहा की सती शीलादेवी

इस नगर में सेठ हरभजन शाह रहते थे। उनकी इकलौती पुत्री का नाम शीलादेवी था। शीला का विवाह सियालकोट के दीवान मेहता शाह के साथ हुआ था। शीला देवी अपने समय की अद्वितीय सुन्दरी थी। जब सियालकोट के राजा रिसालू ने शीला की सुन्दरता का वर्णन सुना, तब राजा रिसालू ने मेहता शाह को राज-कार्य के बहाने रोहतासगढ़ भेज दिया।

एक रात राजा रिसालू शीला के महल में जा पहुंचा। शीला देवी ने तत्काल सकट का अनुमान लगा लिया और झपट कर राजा के बाल पकड़ लिये। राजा को पृथ्वी पर गिराकर शीला उसकी छाती पर बैठ गई। अपने आँचल से कटारी निकाल कर जब शीला ने राजा की छाती में चुभाना चाहा, तब राजा ने हाथ जोड़ कर क्षमा मांगी। शीला को दया आ गई और उसने राजा को छोड़ दिया।

राजा ने दूसरे ही दिन मेहता शाह को सियालकोट बुला लिया। जब मेहता शाह घर पहुंच कर विश्राम करने के लिये शैया पर लेटा, तब उसकी कमर में कुछ चुभा। बिछौने की चादर उठाते ही सोने की अ गूठी दिखाई दी, उस पर राजा का नाम लिखा था। मेहता ने शीला को बुला कर पूछताछ की पर शीला देवी स तोषप्रद उत्तर नहीं दे सकी।

कुछ वर्षों बाद एक दिन मेहता की एक सेविका ने क्षमा मांगते हुए कहा—"शीला देवी सती है। शीला की शैया पर राजा रिसालू की अ गूठी मैंने छिपाई थी।" मेहता शाह इस तथ्य को सुन कर पागल हो गये। मेहता शाह का गिरते पड़ते अग्रोहा के निकट देहांत हो गया। शीला देवी को जब पति के निधन की सूचना मिली तो रोती हुई पति के शव के पास आई। शीला देवी अपने पति का शव अपनी गोद में लेकर चिता में बैठ गई। जहां शीला देवी सती हुई, उस स्थान पर एक मन्दिर बनवाया गया है। राजा रिसालू को इस घटना की जानकारी मिली तो आत्मग्लानि हुई। उसने भी आत्महत्या करने का विचार किया पर गुरु गोरखनाथ ने सलाह दी कि राज-मोह को त्यागकर योगी बन जा, इसी से तेरा कल्याण होगा। राजा रिसालू उसी गोरखनाथ का शिष्य बन गया।

२. झुझनूं की राणी सती (जालान परिवार)

तनधनदास जी का विवाह महम नगर के ठोकुआ ग्राम में सेठ गुरसामल गोयल की पुत्री नारायणी देवी के साथ हुआ था। समयानुसार तनधनदास जी मुकलावा (गौना) करवाने अपनी सुसराल पहुंचे। इसकी खबर किसी प्रकार नवाब को मिल गई। ससुराल से लौटते समय देवसर (भिवानी) के पास नवाब के सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। तनधनदास जी ने शत्रुओं से युद्ध किया पर फौजदार ने पीछे से वार कर उन्हें मार गिराया। नारायणी देवी ने तलवार सम्भाली और वह रणचण्डी बन शत्रुओं को मारने लगी। कुछ सैनिक मारे गये, कुछ प्राण बचाकर भाग गये। झुझनूं से जो व्यक्ति तनधनदास जी के साथ आये थे उनमें से राणा जाति का एक सेवक ही जीवित बचा हुआ था। नारायणी देवी ने उसकी सहायता से चिता बनाई। वह रात विक्रमी सम्वत १३५० की मार्गशीर्ष कृष्णा नवमी थी, जिस दिन नारायणी देवी सती हुई। उसी स्थान पर एक विशाल मन्दिर बनाया गया है जो रानी सती के मन्दिर के नाम से विख्यात हुआ।

३. झुझनूं की चिड़ो सती एवं मोलो सती

(केजड़ीवाल परिवार)

झुझनूं के सेठ हृदयराम जी दान-धर्म एव सदाचार के लिए प्रसिद्ध थे। इनके दो पत्नियां थीं—चिड़ी बाई और मोली बाई। सम्वत १३५२ में सेठ हृदयराम जी का देहान्त हो गया। इनकी दोनों पत्नियां उनके शव के साथ सती हो गईं।

४. झुझनूं की चाबो सती

(रूंगटा, भोजाग तथा खेतान परिवार)

बगड़ राजस्थान में सुरजमल जी का जन्म हुआ। इनका विवाह हिसार के तिगडना ग्राम के सेठ कालूराम अग्रवाल की कन्या चावली देवी के साथ हुआ। मुकलावा करवाने हेतु सूरजमल जी ससुराल जा रहे थे। उस समय मार्ग में डाकुओं ने घेर लिया। डाकुओं का मुकाबला करते हुए सूरजमल जी गम्भीर रूप से घायल हुए और दूसरे दिन प्राण त्याग दिये। उसी रात चावली देवी को स्वप्न में इस घटना की जानकारी मिली। चावली देवी तुरन्त ससुराल के लिए रवाना हो गई और ससुराल पहुंच कर पति के शव के साथ सती हो गई। सती के आदेशानुसार झुझनू में मन्दिर बनवाया गया था।

(५) झुझनूं की खेमी सती एवं मुकी सती

लगभग ८०० वर्ष पूर्व खण्डेला में तेजराम जी अग्रवाल एवं डालूराम जी अग्रवाल दो भाई थे। उनका विवाह डोकण ग्राम में प्रयाग शाह मित्तल की दो कन्या खेमी बाई एव मुकी बाई के साथ हुआ। अपनी पत्नियों के साथ ससुराल से लौटते समय डाकुओं ने उन्हें घेर लिया। युद्ध में दोनों भाइयों ने वीर गति प्राप्त की। उनकी पत्नियों ने डाकुओं का सामना किया। कुछ डाकू मारे गये और कुछ भाग गये। राणोली तालाब के पास चिता बनाकर दोनों वीरांगनाएं सती हो गयीं। झुझनूं में इन दोनों का विशाल मन्दिर बना हुआ है।

(६) मुकुन्दगढ़ की बरजल सती (हरलाल परिवार)

सीकर के बलग ग्राम में सेठ टोडरमल जी कानोडिया रहते थे। उनके पुत्र का नाम हरलाल था। हरलाल जी के सात पुत्रों में से सबसे छोटे पुत्र का नाम बोहितराम था। बोहितराम का विवाह ढाणी ग्राम की बरजल देवी के साथ हुआ। पति-पत्नी ढाणी ग्राम से बलारा आ रहे थे कि मार्ग में बोहितराम को सांप ने डस लिया। मुकन्द गढ़ से दो मील दूर कसेरु ग्राम के पास ही चिता बनाकर बरजलदेवी सती हो गईं।

(७) मुकुन्दगढ की बसन्ती देवी (हरलाल परिवार)

हरलाल परिवार के सांवलराम जी का विवाह मण्डावा में बसन्ती देवी के साथ हुआ। व्यापारिक कार्यों से सांवलराम जी अन्यत्र गये हुए थे। वहीं उनका देहान्त हो गया। पति के देहान्त की सूचना मिलते ही बसन्ती देवी ने सती होना चाहा, पर परिवार वालों ने रोक दिया। कुछ दिनों बाद अवसर पाकर बसन्ती देवी ने कुएं में गिरकर प्राण त्याग दिये। इस सती की समाधि भी सती माता बरजलदेवी के पास बनवायी गई थी।

(८) फतेहपुर की धोली सती (बिन्दल परिवार)

नारनौल में अग्रवाल कान्हा जी बिन्दल स्वाभिमान के लिए प्रसिद्ध थे। उनका विवाह धोली बाई से हुआ। नारनौल के मुस्लिम शासक ने नव-वधू को राज दरबार में शीश झुकाने बुलवाया। धोली बाई पति की देहली के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान पर शीश झुकाना अनुचित मानती थी। कान्हा जी भी इस कार्य को अनुचित मानते थे, परिणामतः युद्ध हुआ और कान्हाजी ने वीरगति प्राप्त की। फतेहपुर में दादी धोली सती का भव्य मन्दिर है।

(९) फतेहपुर की बीरा और बरजी सती (गोयनका परिवार)

फतेहपुर के सेठ गोयनदास जी का नाम दान-धर्म के लिए

विख्यात था। उनके पौत्र का नाम नन्दराम था। नन्दराम का विवाह लालचन्द बाजोरिया की पुत्री बरजी देवी के साथ हुआ था। नन्दराम का निधन अल्पावस्था में ही हो गया। बरजी देवी पति के साथ सती हो गई। इसी परिवार में वीरा देवी भी सती हो चुकी थी। दोनों सतियों का मण्डप फतेहपुर में बना हुआ है।

(१०) भन्डुदा (सीकरी) की माना सती (तोदी परिवार)

सीकर के सेठ नरपति शाहा के पुत्र गोपीराम जी का विवाह सिंघाणा ग्राम के एक सेठ की पुत्री मानादेवी के साथ हुआ था। एक बार गोपीराम जी अपनी ससुराल से सीकर आ रहे थे। रात हो जाने के कारण भन्डुद ग्राम के पास पति-पत्नि रुक गये। अर्द्धरात्रि को डाकुओं ने आक्रमण कर दिया। गोपीराम जी को मारकर डाकू धन लूटकर ले गये। मानादेवी शव के साथ चिता में बैठकर सती हो गई।

(११) रामगढ की अमरी सती (कन्दोई परिवार)

रामगढ़ (शेखावटी) के चौधरी रामचन्द्र जी का विवाह खेमका परिवार में अमरादेवी के साथ हुआ। सम्वत् १८९६ में फागुन कृष्णा चौथ, रविवार को मनिहार के घर से चूड़ी पहनकर आयी तब मार्ग में तपस्वी लंगड़दास मिले। उन्होंने शिष्यों के सामने अमरी देवी के सती होने की पूर्व घोषणा की। दो दिन बाद चौधरी रामचन्द्र का देहान्त हो गया। अमरी देवी ने सती होने की तैयारी की, पर परिवार वालों ने उन्हें ताले में बन्द कर दिया। सतीत्व के प्रभाव से ताले खुल गये और अमरादेवी सती हो गयी।

(१२) केड़ ग्राम की खेमी, तोली, ठुकरी व संतोखी सतियाँ (केड़ परिवार)

मुण्डाल ग्राम के चौधरी मुण्डन जी के चार पत्नियां थीं। इन चारों में से तोली बाई, ठुकरी बाई, व संतोखी देवी के कोई सन्तान नहीं थी। खेमी बाई के एक पुत्र सोमराज व एक पुत्री राधा थी। सम्वत ११३७ के भाद्र-पद की अमावस्या को मण्डवा जी का देहावसान हो गया और चारों पत्नियां सती हो गयीं।

(१३) जयपुर की रुकमा बाई सती (डीडवानियां परिबार)

डीडवाणा के अरजनमल जी शाह का विवाह बानातरा में रुकमा बाई के साथ हुआ था। एक समय अरजन मलजी अपनी पत्नी के साथ ससुराल से डीडवाणा जा रहे थे कि मार्ग में जयपुर के निकट उनका देहान्त हो गया। रुकमा बाई पति के शव के साथ सती हो गयी। जयपुर में गौड़ विप्र विद्यालय जालूपुरा के पास खण्डित मूर्ति पर अंकित लेखानुसार रुकमा बाई सम्वत् १७८८ की श्रावण सुदी ११ मगलवार को तीसरे प्रहर सती हुई थीं।

(१४) लक्ष्मणगढ़ की तीन सतियां (मुरारका व पोद्दार परिवार)

सम्वत् ११३२ की एक शाम को तीन बारातें लक्ष्मण गढ़ के पास से गुजरीं। डाकुओं के एक बड़े दल ने तीनों बारातों को घेर लिया। बाराती भाग गए। परिवार के कुछ व्यक्तियों के साथ तीनों वर मारे गये। तीनों नव-वधुएं अपने-अपने पतियों के साथ सती हो गयीं। उक्त बारातें थीं—मुरारका पोद्दार और एक ब्राह्मण परिवार की। लक्ष्मणगढ़ में इन सतियों के मण्डप बने हुए हैं।

(१५) ढाढण (सीकर) की टोड़ा व गेला सतियाँ
(भ्रातृ-स्नेह का आदर्श उदाहरण)

हिसार के पास एक गांव था सीसपाल। पन्द्रहवीं शताब्दी में अग्रवाल बालचन्द जी बंसल इस गांव में कृषि व्यापार करते थे। उनके चार सन्तानें थीं। दो पुत्र—जोखीराम और भोलाराम तथा दो पुत्रियाँ—टोड़ा बाई और गेला बाई। चारों बहन-भाइयों में प्रगाढ-प्रेम था। गायें चराते समय सांप डसने से दोनों भाइयों का देहान्त हो गया। दोनों बहनों ने अपने भाइयों के साथ चिता में बैठकर आत्मोत्सर्ग कर दिया। आदर्श भ्रातृ स्नेह की स्मृति में वहां विशाल मण्डप बनवाया गया है।

(१६) अन्य सतियाँ

आगरा के कागजी परिवार का मान्यता है कि उनके परिवार में अनेक सतियां हुयी हैं। उनका मण्डप पागलखाने के पास था। पंजाब हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश मे अनेक स्थानों पर सतियों के मण्डप, छतरियां व चबूतरे बने हुए हैं। अग्रवाल परिवार इन सतियों के स्थलों पर विवाह के बाद पत्नी सहित प्रणाम करने आते हैं, जिसे बोलचाल की भाषा में 'जात देना' कहते हैं।

सतियों के प्रसिद्ध मेले

प्रतिवर्ष भादव मास की अमावस्या को इन सतियों के मण्डपों पर मेले लगते हैं। झुन्झनूं में दादी राणी सती का विशाल मन्दिर है। वहां हर वर्ष भादव की अमावस्या को लाखों व्यक्ति सती माता के दर्शन करने आते हैं। अमावस्या को विशाल मेला लगता है। फतेहपुर लक्ष्मणगढ़, भन्डूदा और ढाढण ग्राम के मेले भी शेखावटी क्षेत्र में, विख्यात हैं। इन सतियों के वंशज दूर-दूर से भादव की अमावस्या को सतियों के मन्दिर में सपरिवार दर्शन करने आते हैं।

३.०१ अग्रवाल शब्द–पेशा-परक है या स्थान-परक ?

मि० क्रुक का मत था कि अग्र का व्यापार वाले अग्रवाल कहलाये। यज्ञ मय भारत में सुगन्धित लकड़ी के व्यापार वालों की पृथक श्रेणी सम्भव है। इनकी कुल देवी महालक्ष्मी की पूजा में भी अगर बत्ती प्रयुक्त होती रही होगी, शायद इसी लिये इन्हें काष्ठ संघी भी कहते हैं। परन्तु बेलदार, भाटिया, छीदी, केवट, कजर, कुम्हार, मल्लाह, मोची, पटवा और जोहियावार मुसलमानों में भी अग्रवाल उप-जाति है। अतएव अग्रवाल पेशा परक जाति न होकर स्थान परक जाति प्रतीत होती है, जैसेकि ओसवाल, पोरवाल, खन्डेलवाल, श्रीमाल आदि वैश्य वर्ग हैं। एग्गलिंग ने इपिग्राफिया इन्डिया पृष्ठ ६३ पर अग्रवालों का सम्बन्ध आगरा से जोड़ा है। पर मोनियर विलियम ने लिखा है कि आग्रायण आग्रदग, अग्रोहा या अग्र निवासियों का ही नाम बनता है। पाली भाषा में धर्म का धम्म बनता है, सो अग्र से अग्ग बना है। उसी से अगर बनता है। भारत में जातियों का प्रवाह उत्तर से दक्षिण को रहा है, अत: अग्रोहा से ही इनका फैलना अधिक सम्भाव्य है। सन् १८७१ की जनगणना की रिपोर्ट को भारत सरकार क आंकड़ा विभाग के महानिर्देशक ने १८७५ में छापा था। उसके बगाल सम्बन्धी अध्याय में जातियों पर टिप्पणी छपी है। उसके खण्ड-३ में अग्रवालों के सम्बन्ध में कुछ इतिहास छपा है, जो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने **मिस्टर शेरिंग**

को एक हस्तलिखित टिप्पणी में दिया था। उसके अनुसार

"उनका विश्वास है कि उनके पूर्वज धनपाल थे। धनपाल की पुत्री मुक्ता का विवाह याज्ञवल्क्य से हुआ था। उनके आठ पुत्र थे। ये सारे देश में फैले और इनके वंशज धीरे-धीरे अपनी जाति के रीति-रिवाज छोड़कर शूद्रों के साथ मिल गये। उनमें केवल एक अग्रसेन या अग्रनाथ सच्चे रह गये। ये कुलपति अग्रसेन अपनी पत्नी मधु के साथ अग्रोहा में रहते थे। वहीं ये शक्तिशाली बने।" **सर हेनरी इलियट** अपनी पूरक टिप्पणी में लिखते हैं कि अग्रोहा से अग्रवालों का निष्कासन उस स्थान पर ११९१ ई० में शहाबुद्दीन गौरी का कब्जा होने पर हुआ। भारतेन्दु जी मूल शब्द अग्रवाल मानते हैं अर्थात अग्रसेन के बालक।

३.०२-रक्त-परक इतिहास-अग्रसेन के वंशज

(१) अग्रवालों की इतिहास परक बातों का प्रारम्भ महालक्ष्मी व्रत कथा से हुआ है। इसके कथाकार शौनक ऋषि हैं और कृष्ण ने उनसे यह कथा पाण्डवों को सुनवाई बताई है। कहा गया है कि भविष्य पुराण में लक्ष्मी माहात्मय के केदार खण्ड में अग्रवशानुकीर्तिम नामक यह १६ वां अध्याय है। १६ वें अध्याय का निम्न अनुवाद किसी ने सम्वत १९११ में किया है। (पर उपलब्ध महालक्ष्मी व्रत कथा पुस्तकों में अग्रवंश का कहीं जिक्र नहीं है। भविष्य पुराण की किसी भी उपलब्ध प्रति में भी यह अध्याय नहीं है।)

"बल्लभ के २ पुत्र थे-अग्रसेन और शूरसेन। इन्द्र के प्रकोप से अपने राज्य में दुर्भिक्ष पड़ने पर उन्होंने महालक्ष्मी से वर प्राप्त कर कोलपुर में नाग राजाओं के यहां जा उनकी कन्या सुन्दरावती से विवाह किया और हरिद्वार से पश्चिम १४ कोस पर गंगा जमुना के बीच अग्रोक नगर की स्थापना की। विष्णु की प्रतिष्ठा में १७ यज्ञ किये पर १८ वें में घोड़े का मांस बोला कि हिंसा से कुछ न मिलेगा। तब १८ वां यज्ञ उन्होंने अधूरा छोड़ दिया। सुन्दरावती के अतिरिक्त उनकी १७ और रानियां थीं। हर रानी से ३ पुत्र व १ कन्या हुई। अग्रसेन विभु को राज्य सौंप कर ब्रह्मपुर पर तपस्या करने गये। और कलयुग में वानप्रस्थ लिया। इनकी ५ वीं पीढ़ी में राजा दिवाकर हुये। पाणिनी ने भी अष्टाध्यायी में गोत्रापत्य प्रकरण में अग्रनाम ही लिखा है। $17\frac{1}{2}$ का दो बार उल्लेख होने से ही अग्रवालों के $17\frac{1}{2}$ गोत्र माने जाते हैं। तथा वे नागों को मामा कहते हैं।" (२) चाम्पय जातक के अनुसार काशी के राजा अग्रसेन ने चंपावती नगरी (भागलपुर के पास) में अपना राज्य स्थापित किया था। ३) श्री बिहारी लाल जैन ने पुस्तक अग्रवाल इतिहास में विक्रम सं० २७ में अग्रोहा के राजा दिवाकर द्वारा लोहाचार्य से जैन धर्म की दीक्षा लेने की बात लिखी है। लोहाचार्य ने काष्ठ की प्रतिमा का पूजन कराया और अग्रवाल श्रावकों की संज्ञा काष्ठ-संघी पड़ी। इनका काष्ठ सब माथुर गच्छ, पुष्पकरण, हिसार पट्ट और लोहाचार्याम्नाय तभी से प्रसिद्ध हुआ। परन्तु किसी जैन इतिहास या पौराणिक वंशावली में अग्रसेन का नाम नहीं मिलता है। (४) डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने अग्रवालों का इतिहास लिखकर ५००० रु० का पुरस्कार अग्रवाल महासभा से प्राप्त किया था। उन्होंने संस्कृत साहित्य की दो पुस्तकों तथा भाटों की जन-श्रुति के आधार पर ही इस पुस्तक का संकलन किया था। एक पुस्तक का जिक्र ऊपर आ चुका है। दूसरी पुस्तक है "उरुचरितम"। उन्हें यह पुस्तक अ० भा० वैश्य महा सभा मेरठ के प्रचारक "पंडित" मंगल देव जी से प्राप्त हुई थी जिसकी नकल स्वयं पंडित जी ने मैनपुरी जिले के किसी गांव के लाला अवधबिहारी लाल के पास विद्यमान मूल हस्तलिखित ग्रन्थ से की थी। ऐसा श्री सत्यकेतु जी ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ-३६ पर लिखा है। (श्री मंगल देव जी तथा अवधबिहारी लाल ज्योति जि० मैनपुरी निवासी-दोनों माहौर वैश्य थे।)

"इस कथा को अग्रवालों के गौड़वंशीय पुरोहित अपने शिष्य को सुनाते हैं। इसमें ब्रह्मा-विवस्वान-मनु-नेदिष्ट-अनुमान-भलनन्दन-वात्सप्रिय-मोकौल की वंश परम्परा में धनपाल के प्रताप नगर के राजा बनाये जाने का वर्णन है। फिर उनसे शिव-आनन्द-अग्र-विशम हुये लिखे है। इसी वंश में बाद में सुदर्शन-धुरंधर-नन्दि वर्द्धन-अशोक-समाधि राजा हुये। फिर कई सौ वर्ष बाद इस कुल में मोहन दास हुये-उनके पड़पोते नेमिनाथ-वृन्द-गुर्जर-हरि-रंग-विथोक-मधु-महीधर-वल्लभ हुये। वल्लभ के २ पुत्र, अग्रसेन व शूरसेन हुये, ऐसा लिखा है। गर्ग मुनि की सलाह से अग्रसेन ने १७ यज्ञ किये। १७ वें यज्ञ के बाद उन्हें यज्ञ से घृणा उत्पन्न हुई। १८ वाँ यज्ञ अधूरा छोड़ दिया गया। इन यज्ञों के नाम से दोनों भाइयों की संतति के गोत्र निश्चित हुये जो यह हैं:—

गर्ग-गोयल-गावाल-कॉसिल आदि। शूरसेन के १० पुत्रों के पृथक गोत्र हुये। यज्ञ के बाद शूरसेन यात्रा पर निकले। मथुरा के पास उरु का राज्य था। वहाँ पहुंचे। वे वहीं बस गये और उसके राज्य को उन्नत किया और उस देश का नाम मथुरा की जगह-शौरसेन रख दिया। पुस्तक में गौड़ देश के ऊपर हिमाचल लिखा है और उसके पास गंगा जमुना के होने की बात लिखी है। वहीं अग्रसेन राज्य करते थे"। इसके बाद कथा का अंश उनकी प्रति में नहीं था। शूरसेन गण का उल्लेख पुराणों में भी पाया जाता है। और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने इसी लिये कृष्ण जी को भी वैश्य लिखा है।

(५) भाटों के गीत—ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी द्वारा संकलित भाटों के गीत में आई निम्न लाइनों से भी कुछ इतिहास परक निष्कर्ष निकाले गये हैं:—

छत्रवान अग्रवाल धनवान पुत्रवान सावरी वेल कल्याणवान राजा वासुक के दोहातमान अगर केशर तपे महा सुघर वन माँह शहर जो कहिये। अग्रोहा वसिया ताके नाम शहर बसाया अग्रोहा। जामे चारवर्ण सुखपाय सत्रा पुत्र भये ऋषिराई।

जाको सहस नाम घर व्याहि सहसनाग के घर।
पीताम्बर धोती बनी केशर तिलक चढ़ाये॥
अग्रोहा से निकल कर अठारा बास बसाये॥।

(६) बाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग ७१ पृष्ठ ४९२ में श्लोक नम्बर ३ यों आया है:—

ऐलधाने नदीतीर्त्वा प्राप्य चापरपर्वतान् ।
शिलामाकुर्वतीं तीर्त्वा आग्रेयं शल्यकर्षणाम् ॥

राजा दशरथ की मृत्यु के बाद शत्रुघ्न को इस मृत्यु का संदेश देने कैकेय देश भेजा गया था। भरत के कैकेय से अयोध्या आने के मार्ग में आग्रेय शल्यकर्षणम जनपद का उल्लेख है। आग्रेय से तात्पय शायद आग्रेय का हो, ऐसा डा० परमेश्वरी लाल गुप्त ने अपने लिखे अग्रवाल जाति के इतिहास में माना है।

इसकी सगति भाटों की अनुश्रुति की निम्न लाइनों से लगाइये :—

त्रेतायुग का था प्रथम चरण सुनो उस काल।
जन्मे सूरज वंश में अग्रसेन भूपाल ॥

और अनुश्रुति में अग्रसेन की परुष राम से भेंट की कथा भी भाट सुनाते हैं। जब धनुष टूटने की बात सुन वे क्रोध में जनकपुरी जा रहे थे, मार्ग में मिलने पर अग्रसेन ने उन्हें प्रणाम नहीं किया तो उन्हें निसतान होने का श्राप दे दिया। तब अग्रसेन विश्वामित्र के पास गये। ऋषि ने उन्हें क्षत्रिय धर्म त्याग कर वैश्य धर्म अपनाने की सलाह दी और राजक्षत्र व चंवर धारण किये रहने की सलाह दी।

अग्रोहा से ५ मील दूरी पर राजुली नामक ग्राम है जिसके सम्बन्ध में एक किवंदन्ती प्रसिद्ध है कि यहां दशरथ ने भूल से श्रवण कुमार को तीर मारा था।

३-०३ स्थान परक इतिहास

(१) महाभारत में उल्लेख हैं कि—

भदान रोहित काश्चैव आग्रेयान मालवानपि।
गणान सर्वान विनिजित्य कृत प्रहसान्वि ॥
[वन वर्ब कर्ण विजय २५५-२०]

हे भद्र, रोहतक, आग्रेय, मालव आदि सभी गणराज्यों को कर्ण ने नीति से ही जीत लिया।

ततो वहु धन रम्यं गबाढय धन धान्यवत् ।
कार्तिकस्य दयितं रोहितक मुपा द्रवत ॥
तत्र युद्धं महाम्यासी घुर मैत मयूर कै: ।
मरु भूमि कार्तिकस्य वहु धनम् ॥

वहां धन धान्य व गायों से भरपूर रोहतक के पास आग्रेय गणराज्य है, जहां प्रसिद्ध बलशाली युद्ध अभ्यासी गणराज्य है।

स्पष्ट है कि आग्रेय गणराज्य रोहतक के पास था। राजा कर्ण ने उसे दुर्योधन के लिये जीता था।

अग्रवालों के सभी गोत्र प्रवर ऋषि यथा गर्ग, गोतम, जैमिनी, धौम्य, वत्स, कुच्छल आदि महाभारत कालीन ही हैं।

परन्तु नकुल की दिग्विजय में इस गणराज्य का उल्लेख नहीं है। यह दिग्विजय कर्ण की दिग्विजय से २५ वर्ष पूर्व हुई थी। अत: यह संधिकाल ही अग्रोहा गणराज्य के निर्माण का समय है, और यह कलियुग से ८५ वर्ष पूर्व का है।

अष्टाध्यायी में भी आग्रेय गणराज्य का उल्लेख है। वहाँ के निवासियों को आग्रेय, आग्रायण एवं अग्र नाम से सम्बोधित किया गया है।

(२) एक और स्रोत के अनुसार वर्तमान हरियाणा में हिशार और रोहतक के पास आग्रेय गणराज्य की स्थापना एक युवक 'श्रुतायु' ने की जिसने अम्बष्ठआधिपति श्रुतायु अग्रसेन' की उपाधि प्राप्त थी। इस विशाल गणराज्य में हिसार, हाँसी, तोषाम, नारनौल, मत्स्य, विराट, आदि २२ क्षेत्रीय-गणपति सम्मिलित थे। कीचक, कर्ण, नकुल आदि के द्वारा इस गणराज्य पर स्थापना के २५ वर्ष में तीन आक्रमण हुये। धृतराष्ट्र की एक पत्नी आग्रेय गण की कन्या थी जिससे युयुत्सु का जन्म हुआ था। युयुत्सु पांडव पक्ष में था। इसी ने गान्धारी की अन्त्येष्टि की और जन्मेजय का राजतिलक किया था। महाभारत में यह भी उल्लेख है कि जरासंध के भय से भोजकुल के १८ गण राज्य पश्चिम को भाग गये थे। अग्रोहा के बाद अग्रसेन जी ने गंगा-यमुना नदी के मैदान में हरिद्वार के पश्चिम भाग मे २८ मील (१४ कोस) लम्बे चौड़े नगर की स्थापना की थी। इस नगर में लाल पत्थरों का एक महल था। यहीं श्वेत एवं धवल कमलापति शिव और विष्णु का मन्दिर भी था, जिसमें हीरे जवाहरात की जालियां, स्वर्ण के सिंहासन, चांदी के किवाड़. मन-मोहक मोर एव बतखों व हसों से भरपूर बावड़ियां बनी हुई थीं। इस किंवदन्ती के आधार पर अधुना सप्तर्षि हरिद्वार पर एक विशाल अग्रवाल आश्रम १९८४ में बनवाया गया है।

(३) आग्रेय गणराज्य की सीमा आगरे तक थी। आगरा शब्द भी अग्र शब्द से ही बिगड कर बना है। सिकन्दर लोदी के समय यहां अग्रमस टीला था। इतिहास कार पुरूषोत्तम ओक अग्र को आगरे का संस्थापक मानते हैं। ताजमहल को अग्रसेन द्वारा निर्मित होना भी कतिपय लेखकों के मत से है। आग्रेय गण राज्य लगभग २००० वर्ष चलता रहा। इस वंश में अग्रसेन जी के बाद १६ पीढ़ियों तक राज्य चलता रहा। मौर्य काल में चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा अग्र नगर (वर्तमान आगरा) के जीत लेने के पश्चात पुनः इस गण राज्य की मूलराजधानी अग्रोहा की उन्नति हुई। यही कारण है कि आज अग्रोहा में हमें २००० से २५०० वर्ष प्राचीन सामग्री ही मिलती है। ईसा से ३२६ वर्ष पूर्व जब सिकन्दर ने इस पर आक्रमण किया था, तब अग्रोहा के नरेश अग्रचन्द द्वितीय थे। उनकी सेना में साठ पदाति, १० हजार हाथी आदि थे। शिवि, आभीर, कठ, शाकल आदि गणराज्यों की वीर सेनाओं ने सिकन्दर से युद्ध किया था। आग्रेय गण राज्य की एक बाला के तीर से सिकन्दर घायल हुआ। विषमय बाण की मर्मांतक पीड़ा को ठीक नहीं किया जा सका। इस समय पुरू से सिकन्दर का समझौता हुआ जिसके अनुसार सभी विजितों की स्वतंत्रता तथा सिकन्दर का समुद्री मार्ग से वापिस लौटना तय हुआ था। अन्त में मार्ग में ही सिकन्दर की मृत्यु हुई।

अग्रोहा में जो मुद्रायें प्राप्त हुई हैं उन पर बैल का चिन्ह है, अगाच्य जनपदस लिखा मिला है। उत्तर भारत आक्रमणों की दृष्टि से सदैव ही असुरक्षित रहा है। काल यवन से लेकर सिकन्दर तक इस भू-भाग पर अनेक आक्रमण हुए। इसलिये महाराजा अग्रसेन ने दूसरी राजधानी बनाने का निश्चय किया होगा।

टीलों की खुदाई

राजर्स ने भी अगरोहा के खंडहरों की खुदाई के बाद कहा कि वहां एक वैभवशाली नगर था और रहने वाले अग्रवाल वैश्य थे जो कालान्तर में अन्य नगरों में जा बसे (The Revised List of objects of archeological interest in Punjab–पृष्ठ ७१) सन १९३८ में अग्रोहा की खुदाई श्रीवास्तव ने फिर की। वहां एक मुहर मिली है जिस पर 'अग्रोदक अगाच्च, जनपदस' लिखा है। टाल्मी के भूगोल तथा एरियल के वर्णन में एजेल साई जाति का वर्णन है जो अगोदक का अपभ्रंश लगता है। अग्रोहा के टीलों के साथ परम्परा रूप से भी अग्र शब्द जुड़ा है, तथा पास ही में अग्रोहा का आधुनिक नगर है। हंटर ने लिखा है कि ११९४ में मुहम्मद गौरी ने जब यहां का किला जीतकर नष्ट कर दिया तब यहां के निवासी शेष भारत में जा बसे। टाड ने इस स्थान को अग्रमेस लिखा है। यहां की ख्याति सुनकर सिकन्दर की सेना ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया था। सिकन्दर ने अग्लसोई नामक नगर पर अवश्य आक्रमण किया था। ऐसा यूनानियों के विवरण में मिलता है। भाटों की कथा में भी इस आक्रमण का उल्लेख है। वास्तव में वह इस जनपद के थोडे क्षेत्र ही में घुसा और पहिले श्रेणीकुल से लडकर लौट गया। यह आक्रमण लौटते समय सिकन्दर ने किये थे। अग्लसोई भी अग्रमेस का एक भाग था। स्मिथ ने Early History of India पृष्ठ ९७—९८ पर लिखा है कि अलसोई के पास ४०००० पैदल सिपाही और ३००० घुड़सवार थे, और वे साहस पूर्वक सिकन्दर से लडे। नगर में २००० निवासी थे। हार होते देख उन्होंने अपने नगर में आग लगा दी डायडोरस ने लिखा है कि नगर सिकन्दर ने जलाया था। डा० बार्नेट के अनुसार अग्लसोई शब्द अग्गल शब्द का यूनानी शब्दान्तर है।

यह जनपद बाद में मौर्यों के आधीन रहा। परन्तु शीघ्र फिर स्वतन्त्र हो गया। परन्तु शकों ने इसे फिर बर्बाद किया और जलाया। इसी लिये अग्रोहा की खुदायी में जली हुई चीजें मिलती हैं। फिर तोमर राजाओं द्वारा अग्रोहा विजित हुआ। तदन्तर वहां चौहानों का राज्य हुआ। तभी एक बार फिर गौरी ने इसे ध्वस्त किया। काल क्षेम से पटियाला के सिक्खों के राज्य में दीवान नन्नूमल के पुत्र ने वहां किला बनाया, जिसमें उनका ५१ करोड़ की खजाना दबा पड़ा बताया जाता है।

३.०४ इनके साढे सत्रह गोत्र

(A) अग्रवालों के १८ या साढ़े सत्रह गोत्रों के बारे में कई मत हैं। इन्हें संक्षेप में लिखते हैं :—

रक्त परक मान्यता :—

कहा जाता है कि राजस्थान के वल्लभी गणराज्य (प्रताप नगर) के गणपति अम्बष्ठाधिपति (राजा) वल्लभ के पुत्र अग्रसेन ने १७ विवाह किये थे। उन्होंने तत्कालीन प्रसिद्ध ऋषि को ब्रह्मा बनाकर हरेक रानी के साथ एक अश्वमेध या पुत्रेष्टि यज्ञ किया। और तदन्तर उस रानी की संतान उस यज्ञ के ब्रह्म ऋषि के नामधारी गोत्र की कही जाने लगी। यथा गर्ग ऋषि के यज्ञ की संतान गर्ग, गोभिल की गोयल, मैत्रेय की मित्तल कहलाई। इस पर मुख्य आक्षेप यह था कि एक ही पिता के पुत्र-पुत्रियां होने से तो परस्पर भाई बहिनों में विवाह होने लगा जो हीन बात लगती है। इसका एक समाधान अलीगढ़ से प्रकाशित पत्रिका अग्रवाल सन्देश में श्री मदन लाल अग्रवाल (अजमेर) के एक लेख में यों छपा है :—

कुछ समय व्यतीत होने पर राजा अग्रसेन की संतान विवाह योग्य हुई तो राजा ने सोचा इसका ब्याह कहाँ करूं। यदि क्षत्रिय कुल में करता हूं तो वैश्य धर्म नष्ट होता है और वैश्य जाति के दूसरे घर नहीं हैं। जब राजा को कोई उपाय न सूझा तो वह अपने गुरु विश्वामित्र के पास आए और अपना दुख कह सुनाया। ऋषि बोले कि—हे राजन्! अपने अपने गोत्र बचाकर तू अपनी संतान का आपस में ही विवाह करने का प्रबन्ध कर। कुछ दोष नहीं। क्योंकि सृष्टि की आदि में ब्रह्मा जी से एक स्त्री व एक पुरुष ही पैदा हुए थे। सृष्टि के नियमानुसार दोनों भाई बहन की भांति बड़े हुए थे। परन्तु दोनों में स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध होकर उनसे संसार की उत्पत्ति हुई।

राजा ने यह बात स्वीकार की और अपने नगर में आकर अपने पुत्रों को आज्ञा दी कि अपना अपना गोत्र बचाकर अपनी संतान के विवाह आपस में ही कर लो। गर्ग और गवन गोत्र का आपस में परस्पर सम्बन्ध न हो। यह सुन राजा के पुत्रों ने पिता की आज्ञानुसार अपने संतान के विवाह आपस में ही कर लिये।

(B) इनके गोत्रों का स्रोत=१७½ पुत्रों, १७½ यज्ञों, या १७½ रानियों से कहा जाता है परन्तु १७½ गोत्रों की बात से इन्कार करते हुये डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने एक और कारण १७½ गोत्रों का बताया है। उनमें १७ कार्यगत श्रेणियां थी। अग्रश्रेणी संविधान के अनुसार प्रत्येक कुल का एक प्रतिनिधि अग्रसेन सभा में जाता था, जो कि कुल-वृद्ध होता था। परन्तु कई बार किसी कुल में उसके वृद्ध कुलपति या स्थविर के अतिरिक्त युवक सदस्य भी जाता था, पर उसका वोट आधा होता था। उसे गण (यथा गार्गायाण) कहते थे। इस प्रकार १७½ गोत्र हुये। जनपद में कोई एक व्यक्ति सदा का राजा नहीं होता था, चुना जाता था। उदाहरणार्थ राजशब्दोपजीवी लिच्छवि जनपद में ७७०७ राजा होते थे, वास्तव में वे सब प्रतिनिधि होते थे। अग्रवालों में एक गोत्र ऐरन भी है जिसका शुद्ध रूप उरु है। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने जनपदों की आबादी के जाति में बदल जाने के कुछ उदाहरण अपने एक लेख में दिये हैं; जो गुरुकुल कांगडी की पत्रिका वैदिक-पथ के सितम्बर १९८१ के अंक में पृष्ठ-३३ पर छपे हैं। उन्हें हम साभार उद्धृत करते हैं—(१) मध्य पंजाब के क्षत्रिय जनपद (ग्रीक क्जथोरी) जनपद वालों की खत्री जाति (२) बौद्ध जातकों में वर्णित पीपलीवन के आस पास के मोर्य गण के लोगों की मुराव जाति जो अब उत्तरी बिहार में हैं। (३) अम्बाला तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में श्रेणी जनपद वालों का सैनी

जाति में परिवर्तित हो जाना (४) पंजाब के दक्षिण पश्चिमी भाग का महाभारत वर्णित अरत्त जनपद (ग्रीक अरातिरोई) वालों का अरोडा जाति में संगठित हो जाना (५) महाभारत में ही वर्जित आग्रेय एवं रोहितक गणों की रोहतगी जाति (६) यौधेय जनपद वालों का जाट बन जाना (७) कोलीय जनपद की कोली जाति (८) कम्बोज जनपद की कम्बोह जाति (९) अर्जुनायन जनपद (जिला सिरसा) क्षेत्र की अरैन जाति।

अग्रवालों का भी जनपदों के नाम पर भारत के कुछ भागों में विशेषतः पंजाब हरियाना और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कुछ जातियों का निर्माण अवश्य हुआ है। हमारे देश में जब केन्द्रीय शासन नहीं था, ग्रामों में पचायतें होती थीं, और उनका प्रबन्धक ग्रामिणी कहलाता था। एक क्षेत्र के १००० तक ग्रामों को मिलाकर एक जनपद बनता था। जनपदों में अपनी शासकीय पद्धति के अनुसार दो भेद होते थे:-(१) वर्त शास्त्रोपजीवी जनपद तथा (२) राजशब्दोपजीवी जनपद। प्रथम में आबादी प्रायः उत्पादक तथा रक्षक सैनिकों की होती थी और उनके प्रतिनिधि शासन करते थे। द्वितीय में हर प्रतिनिधि अपने को राजा कहता था। पश्चिमी भारत में प्रथम प्रकार के तथा पूर्वी भारत में दूसरे प्रकार के जनपद होते थे।

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में लिखा था कि हर जनपद की अपनी बोली, रहन-सहन, परम्परा, चरित्र, इतिहास, त्योहार व रीति-रिवाज होते थे। उसने केन्द्रीय सत्ता स्थापित करने वाले चक्रवर्ती राजाओं को सलाह दी थी कि जनपदों में अपनी सत्ता का विस्तार करते समय उन्हें हर जनपद के अपने व्यक्तित्व अर्थात संस्कृति और परम्परा से छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिये। और मौर्य, शिशुनाग, एवं गुप्त महाराजाओं ने इसी के अनुसार व्यवहार किया। फलतः धीरे-धीरे एक जनपद में बसे लोगों की एक जाति हो जाना सम्भव है। यह रोमन साम्राज्य विस्तारकों की पद्धति का ठीक उलटा था। वे जहां राज्य बढाते थे, रोमन कानून चलाते थे।

अग्रवाल जाति के प्रथम पुरुष या सस्थापक राजा अग्रसैन जी द्वारा स्थापित गोत्र तालिका इस प्रकार है।

गण प्रमुख का नाम	गोत्र	गुरु	वेद	शाखा	सूत्र	प्रवर
१– गुलाबदेवा	गर्ग	गगस्थ	यजुर्वेद	मास्यी	नीका	कात्यायनी
२– गेंदमल	गोयल	गोमिल	,,	,,	,,	त्रिप्रवर
३– कर्णचन्द्र	कच्छल	कश्यप	सामवेद	कोतमनी	कोमनी	,,
४– मनीपाल	मंगल	मांडव्य	ऋग्वेद	शाकल्य	अश्वला	,,
५– वेदमान	बिंदल	वशिष्ठ	यजुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायनी	,,
६– ठावदेव	ठालन	धौम्य	,,	,,	,,	,,
७– सिन्धुपति	सिहल	शांडिल्य	सामवेद	कौतसनी	कोमनी	,,
८– जेतमज	जीतल	जैमिनी	यजुर्वेद	माध्यंदिनी	कातपायनी	,,
९– मित्रपति	मीतल	मैत्री	,,	,,	,,	,,
१०– तांबेल	तुंगल	तांडय	,,	,,	,,	,,
११– कान्हचन्द्र	कांसल	कौशिक	,,	,,	,,	,,
१२– ताराचन्द्र	तायल	तैत्तिरीय	,,	,,	,,	,,
१३– वीरमान	बंसल	बत्स्य	सामवेद	कौतसनी	कौमली	,,
१४– नारसैन	नागल	पौण्ड्र	,,	,,	,,	पंचप्रवर
१५– मधुसैन	मुदगल	मुदगल	ऋग्वेद	शाकल्य	अश्वला	त्रिप्रवर
१६– इन्द्रदेय	इन्दल	आरणय	,,	माध्यदिनी	कात्यायनी	,,
१७– वारसेव	एरन	धातृ	,,	,,	,,	,,
१८– कौशंकर	गोयन (आधा)	गौतम	,,	,,	,,	,,

अग्रवाल सभा, सहारनपुर के सौजन्य से

गोत्रों के इस विवरण में गोइन गोत्र पर कुछ विशेष चर्चा अपेक्षित है। इसे आधा गोत्र माना है। अग्रवाल सभा इटावा की १९८१ की स्मारिका में श्री ब्रजभूषनदास (गोरखपुरिया अग्रवाल कोठी पुराना शहर इटावा) का एक लेख छपा है। इसमें गोइन को गौतम का अपभ्रंश माना है। वे गोयन शब्द को स्वीकार नहीं करते। गौतम गोत्रीय अग्रवाल गोरखपुर एवं इटावा में बसे बताये हैं। पर श्री निरंजनलाल "गौतम" (पूर्व निवासी जलेसर जि० एटा साकिन हाल ज्वालापुर-शाहदरा-दिल्ली-३२) ने अग्रोतकान्वय नाम से अग्रवाल वैश्य जाति का जो इतिहास लिखा है उसके पृष्ठ ८४ पर गोत्रों के क्रम में तीसरे नम्बर पर गौतम शब्द से अपभ्रंश हुये गोत्र का नाम गोयन लिखा है। गोइन शब्द स्वेच्छा से हटा दिया है। फिर पृष्ठ १०९ पर अग्रवालों के स्थान जन्य वर्ग गिनाते हुये नं० ४(३) पर एक वर्ग का विवरण यों दिया है:—

मथुरा से चलकर अगरपुर (अलैदादपुर) में (यह शाखा) जा बसी और मथुरिया अग्रवाल कहाई ।" पुनः पृष्ठ ११८ पर अग्रवालों के राजनैतिक (१) भेद बताते हुये एक भेद मथुरिया अग्रवाल बताया है कि १३०२ मे अलाउद्दीन खिलजी के साथ हुई मुठभेड़ में मथुरा में बसे अग्रवालों का एक दल परास्त होकर अलीगढ़ जिले में अगरपुर नगर बसाया तब वे मथुरिया अग्रवाल कहाये । अगरपुर (वर्तमान अलैदादपुर) भी १३०८ में नष्ट हो गया । तब वे लोग दतावली, बिजौली, बरला में बसे । इनमें १८०० से ही आर्य समाज का अच्छा प्रचार है। और पृष्ठ-७४ पर डा० परमेश्वरी दयाल गुप्त की पुस्तक का उद्धरण दिया है कि नं० ३ पर वर्णित गौतम, गौन, गोण, गोइन सब एक ही ग्रुप में हैं ।

वास्तव में श्री निरंजन लाल जी माहौर (महाजन) वर्ग के हैं। इन्हीं के वर्ग के लोग दतावली, बिजौली, बरला में रहते हैं । इन्होंने दिसम्बर १९४१ में ४-५ व्यक्तियों की बैठक में अपने वर्ग का नाम माहौर वैश्य से बदल कर माथुर वैश्य रख लिया, यद्यपि जलेसर के लोगों ने यह निर्णय नहीं माना । परन्तु आगरा अंचल के माथुर वैश्यों ने इन्हें अपना अंग नहीं माना । फिर दिनांक २७-८-४३ को उक्त बरला गाँव में मीटिंग करके अपना नाम मथुरिया अग्रवाल रख लिया यद्यपि इस निर्णय को इनके मुरादाबाद अंचल वाले बन्धुओं ने नहीं माना । फिर दि० १३ जून १९६५ को एक और बैठक करके अपनी संस्था के नाम में से मथुरिया शब्द भी हटाकर अग्रवाल सर्वहितकारी सभा नाम रख लिया, और अग्रवाल महासभाओं से सम्बन्ध करा लिया ।

श्री निरंजन लाल जी अपने नाम के आगे "गौतम" शब्द भी लिखने लगे । महाजन ग्रुप में इनका गोत्र गौन नामक था । इसका साम्य इन्होंने गोयन शब्द से देखा और पृष्ठ ७४ पर गोइन के साथ गोयन शब्द जोड दिया । डा० परमेश्वरी दयाल गुप्त की पुस्तक में गौन शब्द नहीं है । धीरे-धीरे वे अपने द्वारा प्रकाशित अखबारों और पुस्तकों में गोयन शब्द जोडते गये और फिर मथुरिया अग्रवाल की कहानी का भी यत्र तत्र प्रवेश कर दिया । देश में दिनांक २७-८-४३ से पहिले मथुरिया अग्रवाल शब्द था ही नहीं । न कभी अल्लैदाद पुर ग्राम का नाम अग्रपुर ही था और न अगरपुर से अल्लैदादपुर [उर्दू मुसलमानी नाम] बन सकता है । न अलाउद्दीन का १३०२ में मथुरा पर आक्रमण हुआ था । न किसी इतिहास की पुस्तक, किंवदन्ती या लोक कथा में इनके गौन बन्धुओं द्वारा कोई युद्ध लडने का जिक्र है । और न १३०८ में अल्लैदादपुर में बाढ़ आई थी । वहां तब २०-२५ झोपडियों का नंगला था, जिसमें केवल एक घर वैश्यों का था । सारी कथा कपोल-कल्पित है ।

हमारी इस पुस्तक के अध्याय एक में जो रिजले साहब का नोट दिया है कि किस प्रकार एक वर्ग ही में कुछ लोग अपने को शेष से उन्नततर मानकर पृथक कर लेते हैं, दूसरा नाम रख लेते हैं, अर्द्ध-साम्यता पर शब्दों की तोड-मरोड़ से अपना सम्बन्ध उनसे जोड लेते हैं जो उस समय उन्नततर माने जाते रहे हों और तथाकथित उन्नततम भी उन्हें अपना अंश भेद खुलने पर मानते नहीं हैं, और तब एक और नई जाति की रचना हो जाती है । मथुरिया अग्रवाल की कहानी रिजले साहब की पेशीन गोई में फिट हो जाती है ।

३·०५ अग्रवालों की उपजातियां

(१) धर्म के अनुसार—वैष्णव अग्रवाल व जैन अग्रवाल ।

(२ क्षेत्र के अनुसार—देशी व मारवाड़ी व दिलवारी ।

(३) बीसा, दस्सा व पंचा—

इस विभाजन के कई कारण बताये जाते हैं :—

(i) विधवा विवाह के विरोधी तथा समर्थक होने से ।

(ii) शुद्ध और मिश्रित रक्त के होने से ।

(iii) नाग कन्या से उत्पन्न बीसा [क्योंकि वे विष-कन्यायें थीं ।] तथा दासी रानी से उत्पन्न दस्सा ।

(iv) राजा टोडरमल द्वारा अपनी कन्या अकबर को ब्याह देने पर उसके विरोध व समर्थन के आधार पर ।

(v) व्यापार हेतु बीसा (VISA) रखने वाले तथा अन्य ।

(vi) जो पहिले जैन हो गये वे बीसा जैन और बाद वाले दस्सा जैन कहाये ।

[हम इनमें से किसी मान्यता पर अपनी सहमति या असहमति प्रगट नहीं कर रहे हैं । —पुस्तक लेखक]

(४) महता (५) राजवंशी (६) अग्रहरी (७) हरियानवे (८) बागड़ी (९) लोहिये (१०) रोहतके (११) पर्वतीय, (१२) गुजराती (१३) नेमा (१४) असाटी आदि ।

इनमें से कुछ का उपलब्ध विवरण देते हैं :—

कदीमी अग्रवाल - यह बन्धु अपने को दस्सा और बीसा दोनों से ऊंचा कहते हैं । उनकी मान्यता है कि राजा विशानन की सन्तान तो शेष अग्रवाल हैं और वे उनकी चचेरी बहिनों अर्थात् दशानन की पुत्रियों की सन्तान हैं । इनका मुखिया अमृत सेन था, जो सिकन्दर का सम-कालीन था । उस समय शेष अग्रवालों का राजा नन्द था ।

कदीमी अग्रवालों के साहित्य में एक विवरण आया है कि सिकन्दर के एक दूत ने नन्द के एक भाई गोकुल चन्द को अपनी ओर फोड़ लिया था । और गोकुलचन्द ने कदीमी अग्रवाल अमृतसेन के एक भाई रत्नसेन को फोड़ लिया । इन दोनों ने किले के फाटक खुलवा कर अग्रोहा पर सिकन्दर की विजय करवा दी । और इसमें दोनों नन्द व अमृतसेन मारे गये । नन्द के पौत्र उत्तमचन्द ने इसी बीच विभीषणी कार्य के कारण गोकुलचन्द को किले में ही मार दिया । सुलह होने पर सिकन्दर ने उत्तमचन्द को अग्रोहा की गद्दी पर बिठाया । और मृत राजाओं व कुमारों की १४०० रानियाँ सती हो गई । जलते समय उन्होंने श्राप दिया कि रतनसिंह की संतान (कदीमी अग्रवाल) तथा गोकुलचन्द की संतान (अग्रवाल) सदा हमारे शेष वंशों से पृथक रहेंगे । गोकुलचन्दी दक्षिण में गोहिले नाम से प्रसिद्ध हैं ।

(५) महता—यह शब्द महीतान से बना है अर्थात् महातान (तान्=वंश) में महान । श्री जिन दत्त सूर्य पंजाब के शहर महम में पधारे । इस समय कुरुक्षेत्र का राजा चंपक सेन का पुत्र मेघ सिंह (मेघुमल) था । उनका दीवान मयाचन्द तान था । यह क्षत्री था । उसने ५२५ तान (क्षत्रियों

घरों) सहित जैन धर्म स्वीकार किया। उनके पहले जो क्षत्रियों के गौत्र थे, वे ही रहे। उन्हें महीतान (बड़े तान) के नाम से जैन मुनि ने पुकारा। ये ही महतान शब्द बाद में महत्ता बन गया। जिन दत्त सूर्ग का पट्टाभिषेक संवत विक्रमी ११९६ में हुआ। उस समय कुरुक्षेत्र राजद्वन्द्व माना जाता था। अग्रोहा में ही कुरुक्षेत्र भूमि का नगर था। अर्थात् मेधोमल अग्रोहा का राजा भी था। मयाचन्द के वंश में महता हरभज शाह तथा भामाशाह हुये। महता हरभज शाह की पुत्री शीला थी। जो कि रोहतक विवाही थी। जब राजा मानसिंह काबुल को विजय करके वापिस लौटा तो, उसने महम को उजाड़ा था। मानसिंह के आक्रमण से पहले ही दूरदर्शिता से काम लेकर सेठ हरभज शाह व अन्य बन्धु दूसरे नगरों में चले गये।

पुराने ग्रन्थों के अध्ययन से सिद्ध होता है कि अग्रवाल शब्द मौहम्मद गौरी के समय तक चला नहीं था। तान शब्द ही प्रचलित था। इसके पश्चात् अग्रवाल शब्द चला। अग्रवाल का अर्थ अग्रोहा के निवासी है।

(६) राजशाही अग्रवाल उपवर्ग

इनके आदि प्रमुख पुरुष लाला रतन चन्द पहिले वैश्य थे जो इतिहास प्रसिद्ध सैय्यद बन्धुओं के १७०१ में खजानची बनकर, लड़ाई जीतते हुए १७१३ में मुगल दरबार देहली के पंच हजारी वजीर बने। राजा ने शाह का खिताब भी हासिल किया, और हिन्दुओं को अनेक लाभ पहुंचाये जैसे (१) बन्दा वैरागी को छुड़वाने का यत्न (२) जजिया खत्म कराना (३) जोधपुर की राजकुमारी को मुगल रनिवास से निकाल कर पुनः हिन्दू बनाया। उन्होंने रूढ़िवादिता के विरोध में एक संगठन बनाया जिसमें सजातीय गरीब सदस्यों को जिला बिजनौर, मुजफ्फरनगर, मेरठ एवं सहारनपुर के गांवों में राजकीय अधिकार देकर पटवारी व जमींदार बनवाया। वह संगठन व राजा की बिरादरी ही राजशाही बिरादरी कहलाई। उन्हीं की सन्तान अब वैश्य अग्रवाल राजवंश बिरादरी के नाम से विख्यात है। यह १८९४ की बात है। राजा रतन चन्द्र ने अग्रवालों में से अनेक कुरीतियों जैसे वैश्या नृत्य एवं आतिशबाजी के विवाहों पर प्रयोग को बन्द कराया।

इनकी आबादी मेरठ, मोदीनगर, बुलन्दशहर, रुड़की, सहारनपुर, बरेली, जानसठ, शामली, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, इलाहाबाद, कोटा, बीकानेर, जयपुर, कालागढ़, करनाल, कलकत्ता, जनकपुर (उड़ीसा), हरिद्वार, ज्वालापुर, गाजियाबाद, मुरादाबाद, आगरा, अलीगढ़, देहली, आदि नगरों में है।

३.०६ अग्रवालों के रीति-रिवाज

मुख्यतया छठी पूजा या जन्मोत्सव, मुण्डन, यज्ञोपवीत, विवाह तथा मृतक सस्कार मनाने का इनमें रिवाज है। इन संस्कारों पर सतिया, चौक सूर्य, चन्द्र, गणेश व गौरी की पूजा होती है। इन पर यज्ञ भी होता है। जैन सस्कारों के कारण यक्षों की पूजा का विशेष महत्व है। मंगल कलश से लक्ष्मी की पूजा और अपने मामा नागों को नाग पञ्चमी के दिन दूध पिलाने का विशेष माहात्मय है। लगभग हर पूजा में नाग के फन की प्रतिलिपि हाथ के थापे से लगा कर उसकी पूजा करते हैं।

आस्तीक मुनी की पूजा विशेष रूप से अग्रवाल करते हैं। बासुकि नाग की बहन जरतकारु इसी नाम के ऋषि को ब्याही थी। इन्हीं के पुत्र आस्तीक थे। इन्होंने जन्मेजय के नाग युद्ध में इन्द्र से तक्षक नाग की रक्षा की थी। तक्षक ने आस्तकी मुनि को वरदान दिया था कि जिस कुल में तुम्हारी व हमारी पूजा होती रहेगी, उस कुल को सर्प कभी नहीं डसेगा। नाग वेद-विरोधी व्रात्य थे। नागों की कुल देवी मनसा देवी हैं। अग्रवालों में अग्रोहा की सती शीला तथा झुझनू की सती-माता नाराणी आदि की भी पूजा होती है।

विवाह पर लगन, नित्यतेज, उबटन तथा भात का रिवाज है। पुरानी राजपूती प्रथा जिसमें दरवाजे को तोड़कर लड़की का हरण किया जाता था, तोरण मारने के रूप में प्रचलित है। पश्चात वरमाला, सप्तपदी, भाँवरें आदि तो अन्य द्विजों की भांति होती ही हैं।

६.०७ प्रमुख पुरुष :

०·१) **राजनीतिज्ञ —**(१) अकबर के दरबार में मधुशाह नामक दरबारी थे। मुसलमानी समय में वे टकसाल के इन्चार्ज थे।

(२) राय रामप्रताप–इन्हें अकबर ने राय का खिताब दिया था।

(३) लाला राधाकृष्ण–(१७१९ AD) इन्होंने बादशाह मुहम्मद शाह को करोड़ों रुपये उधार दिये थे।

(४) मनोहरदास शाह बनारसी–टीपू सुलतान के सहायक थे।

(५) दीवान परतीतराम-इन्हें १८९० में सुलतान सिकन्दर लोदी ने दीवान का पद दिया था।

(६) राजा बहादुर शंभू प्रसाद–हैदराबाद–हैदराबाद के नवाब ने इन्हें आसफजाही का खिताब दिया था। इनकी एक मुसलमान बेगम भी थी।

(७) राजा शिव प्रसाद बहादुर–निजाम ने इन्हें इन्तजामे फौजी तथा मनसबेहफ्त हजारी की उपाधि दी थी।

(८) लाला द्वारिकादास–रुहेल खंड में नवाबों के कानूनगो थे।

(९) लाला अमीचंद–के पूर्वज १६३६ में शाहशुजा के साथ बंगाल गये थे। यह अंग्रेजों को ऋण देते थे।

(१०) चौधरी चोखाराम–को औरंगजेब ने कानूनगो का खिताब दिया था। इनके पूर्वजों को जहांगीर ने जवंतुल इनामिल का खिताब दिया था।

(११) शाह गोविन्द चन्द–को नवाब अवध ने शाह का खिताब दिया था।

(१२) दीवान नन्नूमल परतीराम

(१३) राजा रतन चन्द

राजा रतनचन्द्र

प्रारम्भिक जीवन—राजा साहब का जन्म सन् १६६५ ई० में औरंगजेब के शासनकाल में मो० मुकलम पुरा कस्बा मीरापुर जि० मुजफ्फरनगर में लाला जयसिंह गोयल के यहाँ हुआ था, जो वहाँ पर ही अनाज का काम करते थे। श्री रतन चन्द जी ने मीरापुर में ही उर्दू हिन्दी व हिन्दी मुण्डी का अच्छी प्रकार ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इनकी कुशलता से प्रभावित होकर सन् १७०१ में आपको जानसठ के सय्यद भाइयों ने अपने यहां कोषाध्यक्ष नियुक्त कर दिया। राजा रतन चन्द के घर पुत्र विवाह पर जानसठ में उस समय की रीति रिवाजों के अनुसार जाति गिदौड़ा बांटा गया। उस समय जाति के बहुत से घरों ने गिदौड़ा लेने से इन्कार कर दिया क्योंकि रतन चन्द सैयद ब्रादर्स की नौकरी में थे। किन्तु जिन अग्रवाल व्यक्तियों को उन्होंने नौकरी दी थी, उन सबने गिदौड़ा ले लिया। सो जिन्होंने गिदौड़ा स्वीकार किया वे सब राजा रतन चन्द के अनुयायी माने गये। तब उन्होंने तमाम अग्रवालों तथा जैनी आदि को मिलाकर एक आदर्श तबका बनाने का यत्न किया, लेकिन वे आठ दस वर्ष बाद ही मुसलमानों द्वारा मार दिये गये, इसलिये अपना काम पूरा न कर सके। १८९७ के राजवंशी अधिकतर नौकरी पेशी, सभ्य, उदार पढ़े लिखे मिलते हैं।

(2) मुगल शासन :—औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात (१७०७) उसके पुत्र बहादुर शाह ने मार्च १७१२ तक राज्य किया। उसकी मृत्यु के पश्चात उसके चार पुत्रों में सिंहासन के लिये संघर्ष हुआ। अन्त में जहांदारशाह तीन शहजादों पर विजयी होकर शहनशाह बनने में सफल हुआ। लेकिन साथ ही साथ फर्रूखशियर ने अपने पिता अजीम उसमान जो जहांदार शाह के बड़े भाई थे, उनको शहनशाह के पद के लिए ऐलान कर दिया। लेकिन वे भी अप्रैल में जहांदार शाह से युद्ध करते हुये मार दिये गये। उनके पश्चात फर्रूखशियर ने सैय्यद भाईयों के भरोसे पर अपने आप को हिन्दुस्तान का बादशाह बनने की घोषणा कर दी। उस समय वह पटना में था, और उसके साथ केवल तीन चार सौ सिपाही थे। ऐसे विकट समय में उसकी मां हुसैन अली के पास गई। हुसैन अली ने उसको सहायता देने का वचन दिया। हुसैन अली ने अपने भाई सैय्यद अब्दुल्ला खां को भी जो उस समय इलाहाबाद में सूबेदार था फर्रूखशियर की सहायता के सहयोग के लिये राजी कर लिया और उसके पश्चात् फर्रूखशियर को अजीमाबाद में हिन्दुस्तान के शहनशाह पद पर गद्दी पर बैठा दिया और साथ ही साथ जहांदार शाह से युद्ध के लिये तैयारी आरम्भ कर दी। जहांदार शाह की व सैय्यद दोनों की फौजों में कटण मानकपुर पर टक्कर हो गई। राजा रतन चन्द तीन चार सौ घुडसवार सेना को लेकर, सैय्यदों के यहां पहुंच गया। रतन चन्द अपनी विजय लाभ करते हुये अब्दुल्ला खां के पास पहुंच गये।

जहांदार शाह तथा फर्रूखशियर की फौजों में अन्तिम युद्ध सिंहासन प्राप्त करने के लिए आगरे के समीप हुआ। फर्रूखशियर के विजय प्राप्त होने पर सैय्यद अब्दुल्ला खां को कुतुबउलमुल्क का खिताब और रतन चन्द को राजा का खिताब तथा मनसब दो हजारी और दिया गया।

वजीर सैय्यद अब्दुल्ला ने अपने दीवान रतन चन्द को तमाम सरकारी राज्य के सम्बन्ध में उनको अख्तयारात दे दिये थे जिसमें सरकारी नौकरी देना आदि भी शामिल था। राजा रतन चन्द ने उस अवसर पर बहुत से हिन्दुओं को नौकरी पर लगा दिया तथा उनको उन्नतियां कर दीं।

फर्रूखशियर के शासन के प्रथम वर्ष में हिन्दू मुसलमानों में अहमदाबाद में झगड़ा हो गया। होली की रात हिन्दू त्यौहार मनाते हैं। उस रात को एक हिन्दू अपने मकान के आंगन में होली जलाने वाला था, जिसका कुछ हिस्सा किसी मुसलमान के मकान से मिला हुआ था। इसलिये उसने आपत्ति की। हिन्दुओं ने कहा अपने मकान में सब स्वतन्त्र हैं। उन्होंने इस आपत्ति पर ध्यान नहीं दिया और होली की रस्म अदा कर दी। दूसरे दिन उस मुसलमान ने हिन्दू की दलीलों का उपयोग किया। उसने अपने मकान के चौक में एक गाय मारी।

जून, १७१६, गुरु बन्दा बैरागी की कैद के पश्चात जबकि १०० व्यक्ति रोजाना फांसी पर लटकाये जाते थे, सिवाय उनको छोड़कर, जो मुसलमान हो गये हों। उनमें एक ऐसा नौजवान था जिसकी मां ने रतन चन्द द्वारा बहुत से प्रार्थना पत्र कुतुबउलमुल्क के पास भेजे और उसने बताया वह विधवा है और उसके एक यह ही लडका है। और नाजायज पकडा गया है। वह गुरू का चेला नहीं है, न उसके मत को मानने वाला है। सो उसके लडके की जीवन मुक्ति की इजाजत मिल गई। वह मुक्त हो गया लेकिन उस युवक ने कहा कि मैं इस औरत को नहीं जानता यह कौन है और मेरे लिये क्या चाहती है। मैं सच्चा गुरू का मानने वाला हूं जिसके लिये मैं अपनी जिन्दगी देता हूं। सो वह फांसी पर लटका दिया गया। यह युवक बन्दा बैरागी था। किलों के अन्दर की साजिश में सैय्यद बन्धुओं ने मराठों आदि की मदद से फर्रूखशियर को मरवा दिया। पहिले रफी उदजात, फिर तीन दिन बाद उसके पोते को गद्दी पर बैठाया गया। राजा रतनचन्द ने पहिला आदेश जजिया कर हिन्दुओं पर बन्द करने की आज्ञा प्रसारित करवाई। तथा फर्रूखशियर की विधवा हिन्दू रानी को पुनः शुद्ध कर लिया गया।

कालान्तर में जब मुहम्मद शाह गद्दी पर बैठा तो उसने सैयद बन्धुओं के प्रभाव से मुक्त होने की कोशिश की और पहिले बड़े भाई हुसैन अली को सिपाही हैदर बेग डुगलस द्वारा मरवा दिया।

१० अक्टूबर १७२० को हुसैन अली के मारे जाने के पश्चात रतन चन्द के बहनोई केशु राम की रात को मृत्यु हो गई। वे देहली सूबेदार के सबसे बड़े अफसर थे।

उसके पश्चात वे रतन चन्द के पीछे लग गये। इत्माद उल्ला वजीर ने उनका बुलावा भेजा। रतन चन्द आते समय अपनी इज्जत बचाने के लिये तथा अपनी रक्षा के लिये हाथी से उतर कर पालकी में बड़ा डरा हुआ बादशाह के डेरे की ओर चल दिया। अबदुल रहमान खां और कुछ अफगान उसकी रक्षा के लिये आ गये और बोले हाथी पर चढ़ जाओ, उसने टालम टूल कर दी और चढ़ने को मना कर दिया। जो कुछ वह कर सका जल्दी से एक दो लाईन लिखकर ऊंट सवार द्वारा सय्यद अबदुल्ला खां को भेज दी। फिर शीघ्र ही दया राम

मारे गये। वजीर मौहम्मद अमीर खां का दूत उसके लिये आया और रतन चन्द ने अपने आपको उसके अर्पण कर दिया। दुश्मन के हत्यार बन्द व्यक्तियों ने उसको आगे बढ़ने से रोका और रास्ते में कुछ मुगल और गुंडे बाजार तथा मौहल्ले के आ गये और उसकी पालकी को घेर लिया और उसको लातों से मारना आरम्भ कर दिया। उसको बांध दिया और कपड़े पूर्ण रूप से फाड़ कर बिल्कुल नंगा कर दिया। एक हाथ में वह अपनी माला लिये हुए था दूसरे हाथ से आंसू पोंछ रहा था। फिर वे इसी हालत में इत्मादुदौला के पास ले गये। वहां उसने अपनी रक्षा की विनती की। उसने उसको कपड़े पहिनने को दिये और उसको हथकड़ी आदि पहना कर कैदी के तौर पर रखने का हुक्म दिया। उसका केस एक आदर्श बनाने के लिये कि जैसा तुमने किया है वैसा ही तुम्हारे साथ किया जायेगा, रखा गया। उसने सय्यदों के खजाने तथा दफीने के सम्बन्ध में हर उपाय से पूछने पर भी कुछ नहीं बताया। कुछ समय बाद जब उसको ले जाया जा रहा था उसने बच निकल कर भागने का यत्न किया। मुगल जो उसके पहरे पर थे उसको मार ही डालते, लेकिन उसको बाकायदे मारे जाने के लिये रोक दिया गया।

अब सय्यद अबदुल्ला और बादशाह के बीच फैसला हो जाने वाली आखिरी लड़ाई होने का समय आया था। तो पहले ही दिन बादशाह के हुक्म से ता० १३-११-१७२० को राजा रतन चन्द कैदी बादशाह के सामने पेश किया गया। उसको हाथी पर लाया गया। बादशाह ने हुकम दिया रतन चन्द को जो सय्यदों की बदनामी का कारण है, उसका सिर उसके गन्दे बदन से काट दिया जाये। सो उसका सिर काट कर बतौर शगुन बादशाह के हाथी के पैर के सामने फेंक दिया गया और उसके पैर के नीचे कुचलवा दिया गया।

छोटे सैय्यद अब्दुल्ला को अपने भाई की मृत्यु के समाचार से बडा दुःख हुआ और उसने उसके बदले की भावना से अक्तूबर १७२० को आगरे में मोहम्मद इब्राहिम को हिन्दुस्तान की गद्दी पर बैठा दिया और चूडामलजाट आदि की तथा सुल्तान की सब मिलकर करीब १ लाख फौज हुसैनपुर पर एकत्रित हुई। १३-११-१७२० को आखिरी लडाई राज्य के लिये मौहम्मद शाह तथा अब्दुल्ला के बीच हो गई। अब्दुल्ला बड़ी बहादुरी से लडा और उसके हाथ पर तलवार से तथा माथे पर तीर से बड़ा जख्म बन गया जिसके कारण उसका साहस टूट गया और उसने अपने शत्रु के सामने दया करके माफी के लिये इच्छा प्रकट की और कहा मैं सैय्यद हूं, दया का हकदार हूं। हैदुरकुली ने उसे दया करके बन्दी बना लिया। और मोहम्मद शाह के विजय की घोषणा कर दी गई। फिर अब्दुल्ला खां वजीर कैदी हाथी पर लाया गया और बादशाह के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। उसको जान से न मार कर हैदरकुली के सुपुर्द कर दिया गया, वह दो वर्ष बन्दी रहा फिर उसको विष देकर मारने का आदेश प्राप्त कर लिया गया और ११-१०-१७२२ को उसे मार दिया गया।

ब्रिटिश सरकार के विश्वास पात्र व विद्रोही :

(१) राय ख्याली राम बहादुर-को डिप्टी गवर्नर बनाया गया था।

(२) राजा पटनी मल बहादुर-१८०३ में वेलजली ने पंच हजारी मनसब और एक जागीर इन्हें गोहद व ग्वालियर के राजा से सन्धि कराने के उपलक्ष्य में दी थी।

(३) महाराजा देवीसिंह-ने क्लाइव को पलासी के युद्ध में सहायता पहुंचाई थी।

(४) सर सीताराम (५) बाबू भगवान दास-काशी (६) बा० शिव प्रसाद गुप्त (७) राजा राधारमण (८) सर जगदीश प्रसाद (९) लाला लाजपत राय (१०) सर शादी लाल (११) विरला परिवार (१२) सिंहानिया परिवार (१३) राम मनोहर लोहिया (१४) सर गंगाराम (१५) जमनालाल बजाज यह सब अंग्रेजी राज्यकाल के प्रमुख पुरुष थे।

६०७०२ साहित्यकार व कवि गण-(१) श्रीधर (सम्वत ११८९), (२) सधारू (स० १४११) (३) हरिचन्द (४) वीरूकवि (सं० १५८६) (५) मेधावी (६) छीहल (१५७५) (७) नन्दलाल (सं० १६६३) (८) बंशीदास (१६९५) (९) भगवती दास (१७०४) (१) रूपचन्द (सं० १६९२) (११) जगजीवन (सं० १७०१) (१२) धानतराय (सं० १७८३) (१३) कवि बिहारी लाल (१४) मानसिंह (१५) मिनोदीलाल (सं० १७३९) (१६) जगतराम (सं० १७८४) (१७) भाऊ गर्ग (स० १६७६) (१८) बूलचन्द (सं० १७१३) (१९) बृन्दावन लाल (स० १८४८) [जैन रामायण के रचियता] (२०) जोगीदास (२१) निहाल चन्द (स० १८६७) (२२) परमेष्ठि सहाय (१८९४) (२३) वासीलाल (१८८४) (२४ सन्तलाल (१८३४) (२५) ऋषभदास (१९४३) (२६) मेहरचन्द (२७) हरगूलाल (१९०३) (२८) तुलसीराम (१९१६) (२९) हीरालाल (१९१३) (३०) बख्तावर मल (३१) दयाचन्द (१९४५) (३२) शीतल प्रसाद १८७९ (३३) भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र (३४) बाल मुकन्द गुप्त (३५) जगन्नाथ दास रत्नाकर (३६) हनुमान प्रसाद पोद्दार (३७) राय कृष्ण दास,

परम पूज्य पंजाब केशरी श्रीमान् लाला लाजपतराय जी को दि० २८-१०-१९२८ को अग्रवाल सभा इटावा

द्वारा दिये अभिनन्दन के कुछ अंश

परम पूज्य श्रद्धेय लालाजी

भारतीय जाति, मातृभूमि और हिन्दू धर्म के प्रति अभी तक आपके द्वारा हो चुकने वाली सेवायें इतनी अगणित, महान और सार्वभौम हैं कि उनका विस्तार पूर्वक वर्णन हमारी शक्ति के बाहर है। हम तो केवल इतने ही से संतोष कर लेते हैं कि भारतोत्थान के वर्तमान आयोजन में अग्रवाल जाति के भी एक परम वीर और महारथी का हाथ है।

क्षत्री से वैश्य, वैश्य से बनिये और बनिये से बक्काल होकर, आज हम अपनी इन्हीं त्रुटियों के कारण, सबकी शिकार गिने जा रहे हैं । भगवान् ! अपने कर्मयोग के सहारे हमारे संतप्त हृदयों को अधिकाधिक हर्ष और संतोष से प्लावित कर, हमें अज्ञानान्धकार से निकल सकने की सामर्थ्य प्रदान कीजिये । विनीत :—

२८-१०-१९२८ अग्रवाल सभा इटावा के सदस्य

अग्रवाल जाति के बारे में राष्ट्रपिता गांधी जी द्वारा श्री जमनालाल जी बजाज को प्रेषित पत्र

भाई जमनालाल जी,

अग्रवाल भाइयों को मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की जो कोई कौम कुछ बलिदान दे सकती है, हिन्दुस्तान की और स्वधर्म की रक्षा कर सकती है, मेरी उम्मीद है इस समय अग्रवाल जाति स्वराज्य की महान जंग अपना पूरा हिस्सा दे देगी । मैं जानता हूं कि मारवाड़ी कौम में धन है, धर्म प्रेम है, दान देने का भाव है । आधुनिक पद्धति आत्म शुद्धि की और धर्म रक्षा की है, इसमें अग्रवाल भाई को बलिदान देने की शक्ति ईश्वर दे दे । ऐसी मैं प्रार्थना करता हूं ।

आपका—

मोहनदास गांधी

अग्रवाल विभूतियां, जिनके सम्मान में स्वतन्त्र भारत की सरकार ने स्मारक डाक टिकट जारी किए

क्रम	नाम	जन्म-मृत्यु दिनांक	दिनांक टिकट जारी का	टिकट मूल्य
१.	ला० लाजपत राय	जन्म २८ जनवरी १८६५ मृत्यु १६ नवम्बर १९२८	२८ जनवरी १९६५	१५ पैसे
२.	डा० भगवानदास	जन्म १२ फरवरी १८६९ मृत्यु १८ सितम्बर १९५८	१२ जनवरी १९६९	२० पैसे
३.	सेठ जमनालाल बजाज	जन्म ४ नवम्बर १८८९ मृत्यु ११ फरवरी १९४२	४ नवम्बर १९७०	२० पैसे
४.	श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	जन्म ९ सितम्बर १८५० मृत्यु ५ जनवरी १८८५	९ सितम्बर १९७६	२५ पैसे
५.	सर गंगाराम	जन्म १३ अप्रैल १८५१ मृत्यु १० जौलाई १९२७	४ सितम्बर १९७७	२५ पैसे
६.	महाराजा अग्रसेन जी		२४ सितम्बर १९७६	२५ पैसे
७.	डा० राममनोहर लोहिया	जन्म २३ मार्च १९१० मृत्यु १२ अक्टूबर १९६७	१२ अक्टूबर १९७७	२५ पैसे

अग्रवाल ध्वज

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा प्रमाणित ध्वज का विवरण इस प्रकार है । सूर्य की १८ किरणें १८ गोत्रों की सूचक हैं । एक रुपया और ईंट महाराज अग्रसेन के समाज वाद के प्रतीक हैं । ध्वज का रंग केसरिया है । सूर्य, रुपया तथा ईंट का रंग सिल्वरी है । ध्वज की लम्बाई २७ इंच, चौड़ाई १८ इंच है तथा अंग्रेजी अक्षर V के समान कटाव ९ इंच में है । नेफे का भाग २७ इंच के अतिरिक्त है । रुपये में १ का अक्षर देव-नागरी लिपि में है । इसी अनुपात से बड़ा तथा छोटा ध्वज बनाया जा सकता है !

झण्डा लहर लहर लहराये ।
अग्रवंश की कीर्ति सुनाये ।।

केसरिया रंग बहुत सुहाये,
त्याग भाव का पाठ पढ़ाये ।
सहानुभूति व प्रेम त्याग को,
हम सब जीवन में अपनायें ।।१।।

अठारह किरणों का गोला,
गोत्रों की बोली है बोला ।
राज व्यवस्था को बतलाकर,
अग्रसेन की याद दिलाये ।।२।।

एक रुपया संग ईंट जड़ी है,
इसमें समता बहुत बड़ी है ।
समाजवाद की यही कड़ी है,
अग्रोहा की याद दिलाये ।।३।।

ऊपर नीचे कूल बने हैं,
मिले बीच अनुकूल घने हैं ।
ऊंच-नीच का भेद मिटाकर,
समता हम जीवन में लायें ।।४।।

झण्डा लहर लहर लहराये ।
अग्रवंश की कीर्ति सुनाये ।।

अग्रवाल (राजवंश) समाज की शिरोमणि सभा का इतिहास

मुजफ्फरनगर की नुमायश में सन् १८९२ में आस पास के देहातों से बहुत से राजवंशी भाई आये थे। उसी समय ला० खैराती राम के प्रयत्न से यह विचार किया गया कि एक राजवंश सभा बनाई जाये। सन् १८९३ में मेरठ के नौचन्दी मेले पर फिर विचार विमर्श हुआ और सभा का गठन हो गया। १८९४ में प्रधान स्व० राय साहब दामोदर दास एवं मन्त्री श्री मूलचन्द नियुक्त हुए। सन् १८९७ में बिरादरी का रिसाला "हमदर्द कौम" छापने का भी निर्णय लिया गया, जो अप्रैल १८९८ से मेरठ में छपा।

राजवंश सभा के जलसे कब-कब और कहाँ हुए, वह इस प्रकार है।

वर्ष (सन)	स्थान	प्रधान	मंत्री
१८९७	मुजफ्फरनगर	ला० गंगा सहाय	लाला खैराती राम
१८९८	मेरठ	ला० लछमन प्रसाद	ला० हरनाम दास
१९००	,,	श्री अयोध्या प्रसाद	ला० मदन गोपाल
१९०२	,,	राजा ज्वाला प्रसाद	ला० जगन्नाथ प्रसाद
१९०३	,,	बाबू लछमन प्रसाद	ला० ज्वाला प्रसाद
१९०४	,,	ला० ज्वाला प्रसाद पेन्शनर जिलेदार	ला० मदन गोपाल
१९०७	,,	ला० निहाल सिंह	,, ,,
१९०९	,,	ला० दामोदर दास	,, ,,
१९११	,,	ला० रामजी दास	,, ,,
१९१३	,,	साहू किशोरी लाल	,, ,,
१९१५	मुजफ्फरनगर	ला० निहाल सिंह	ला० कूड़ामल

सन् १९१५ से १९३३ तक का कोई विवरण प्राप्त नहीं हो सका है। सन् १९३४ में अधिवेशन मेरठ में हुआ। आगे के अधिवेशनों का क्रमांक इस प्रकार है :—

अधिवेशन क्रमांक	वर्ष	स्थान	प्रधान	महामंत्री
३३ वां	१९४१	मेरठ	श्री नेमी शरण जैन	श्री श्याम सुन्दर लाल
३४ वां	१९४२	,,	,, सूरज बल	,, ,, ,,
३५ वां	१९४७	,,	,, ज्योति प्रसाद	श्री धनपत राय
३६ वां	१९५८	,,	,, किशन चन्द	,, बख्तावर सिंह गोयल
३७ वां	१९५९	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
३८ वां	१९६१	देहली	,, ,, ,,	,, ,, ,,
३९ वां	१९६४	,,	,, ,, ,,	,, ,, ,,
४० वां	१९६८	कानपुर	,, विश्वामित्र	,, ,, ,,
४१ वां	१९७१	देहली	,, पीताम्बर दास	,, ,, ,,
४२ वां	१९७३	लखनऊ	,, ,, ,,	,, ,, ,,
४३ वां	१९७४	मुजफ्फरनगर	,, शीतल प्रसाद	,, ,, ,,
४४ वां	१९७६	देहरादून	,, मुसद्दी लाल	,, ओमप्रकाश गोयल
४५ वां	१९७८	नजीबाबाद	श्रीमती चारु शीला	,, ,, ,,
४६ वां	१९८०	मवाना	श्री सागरमल गोयल	,, सुरेन्द्र कुमार गर्ग
४७ वां	१९८२	रुड़की	....	,, ,, ,,
४८ वां	१९८३	,,	श्री ओम प्रकाश	श्री रमेश चन्द्र बंसल

सन् १९१३ में स्व० मास्टर विश्वम्भर दयाल ने स्व० राजा ज्वालाप्रसाद चीफ इन्जीनियर की अध्यक्षता में मेरठ में वैश्य अग्रवाल राजवंश विद्या सभा स्थापित की जिससे राजवंश युवकों ने भरपूर लाभ उठाया है, और उच्च पद प्राप्त किये हैं।

इसके अलावा समाज में प्रगति लाने के लिये अनेक कार्य किये जैसे—

१- कुरीतियों के विपरीत आवाज उठाकर उनको बन्द करने का प्रयत्न किया।

२- दहेज प्रथा के रूप में परिवर्तन किया।

३- नवयुवकों की रुचि सामाजिक कार्यों की ओर एवं उद्योग की ओर बढाई।

४- समाज में प्रतिस्पर्धा (कम्पटीशन्स) में भाग लेने की भावना को जगाया।

५- अनेक शिक्षा संस्थायें हमारे राजवंश भाइयों की देन हैं। जिनमें रूड़की का कन्हैया लाल पौलीटैकनीकल डिग्री कालेज भी है।

६- समाज सहायता कोष एवं बहुउद्देशीय सहायता कोष की स्थापना हुई।

७- अखिल भारतीय जनगणना।

अग्रवाल वैश्य समूह के संगठन

समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन के लिये राष्ट्रीय नेता सेठ जमनालाल जी बजाज ने सन १९१८ ई० में कुछ सुधारवादी मारवाड़ी युवकों से मिलकर समाज सुधार के लिये **"अखिल भारतवर्षीय मारवाडी अग्रवाल महासभा"** की स्थापना वर्धा में की थी।

महासभा के अधिवेशनों की एक संक्षिप्त झलक

प्रथम—सन् १९१९, स्थान वर्धा। सभापति सेठ खेमराज श्रीकृष्ण दास जी, बम्बई (चूरू निवासी)।

द्वितीय—सन् १९२०, स्थान-बम्बई, सभापति-सेठ रामलाल जी गनेरीवाल।

तीसरा—सन् १९२१, स्थान कलकत्ता, सभापति जयपुर के सेठ नवरंग राय जी खेतान।

चौथा—सन् १९२२, स्थान-इन्दौर। सभापति—अमलनेर के श्री प्रताप जी सेठ।

पांचवां सन् १९२३, स्थान झरिया। सभापति-भिवानी के सेठ मेला राम जी वैश्य।

छठा—सन् १९२४, स्थान कानपुर, सभापति-बम्बई के सेठ समाज सेवी सेठ आनन्दी लाल जी पोद्दार।

सातवां—सन् १९२५, स्थान-फतेहपुर, सभापति-बम्बई के सेठ शिव नारायण जी नेमानी।

आठवाँ—सन् १९२६, स्थान-दिल्ली। सभापति-सेठ जमना लाल जी बजाज।

नौवाँ—सन् १९२७, स्थान-कलकत्ता, सभापति-बम्बई के सेठ केशवदेव जी नेवटिया।

दसवाँ—सन् १९२८, स्थान-बम्बई। सभापति-सेठ-हनुमान प्रसाद जी पोद्दार।

ग्यारहवाँ—सन् १९२९, स्थान-अजमेर, सभापति-बम्बई के राजा बहादुर सेठ गोविन्द दास जी पित्ति। इस अधिवेशन में स्पष्ट शब्दों में विधवा विवाह का समर्थन व्यक्त किया गया।

बारहवां—सन् १९३०, स्थान—उज्जैन, सभापति-श्री बाबू देवी प्रसाद जी खेतान। इस अधिवेशन में महासभा का नाम बदल कर 'अखिल भारतवर्षीय अग्रवाल महासभा' कर दिया गया और इसके मासिक पत्र 'मारवाड़ी अग्रवाल' का नाम भी बदल दिया गया। इस प्रकार महासभा के द्वार सभी अग्रवालों के लिए खोल दिये गये।

तेरहवाँ—सन् १९३१, स्थान-कलकत्ता, सभापति-लाहौर के ला० श्री फकीर चन्द जी एडवोकेट।

चौदहवां सन् १९३२, स्थान-लाहौर, सभापति-देशभक्त श्री पद्म राज जी जैन।

पन्द्रहवाँ—सन् १९३३, स्थान-इलाहाबाद, सभापति-कलकत्ता के कट्टर सुधारवादी श्री बसन्त लाल मुरारका।

सोलहवाँ—सन् १९३४, स्थान-जबलपुर। सभापति-विश्वमित्र, कलकत्ता के सम्पादक श्री मूलचन्द जी अग्रवाल।

सत्रहवाँ—सन् १९४८, स्थान—दिल्ली। सभापति—आचार्य जुगल किशोर जी।

अठारहवाँ—सन् १९५०, स्थान—अग्रोहा। सभापति—सेठ जमना लाल जी बजाज के सुपत्र श्री कमल नयन जी बजाज।

उन्नीसवाँ—सन् १९५३, स्थान—नागपुर। सभापति श्री ईश्वरदास जी जालान।

अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा अलीगढ़

यह कदीमी अग्रवालों की संस्था है। इनका एक मुख्य पत्र अग्रवाल सन्देश अलीगढ़ से निकलता है। मैसूर में जा बसे सेठ बद्री प्रसाद गुप्त इसके संरक्षक व प्रधान रहे हैं। वे सितम्बर ८४ में दिवगत हो गये। उनके अनुज श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त अलीगढ़, इसके महामन्त्री थे। दुर्भाग्य से दोनों भ्राता अगस्त-सितम्बर में दिवंगत हो गये। तब इनकी प्रतिनिधि सभा में १४-१०-८४ को निम्न प्रकार फिर चुनाव किया है—

अध्यक्ष—सेठ मलूक चन्द्र जी। मालिक मलूक चन्द काटन मिल। रामगंज, अलीगढ़।

महामन्त्री—श्री ज्वाला प्रसाद अनिल, सुरेन्द्रनगर अलीगढ़।

सेठ बद्री प्रसाद जी ने हरगोविन्द पारिवारिक ट्रस्ट बनाया हुआ था, जिससे ५०००/- प्रति माह की सहायता ८० विधवाओं को इस महासभा के माध्यम से दी जाती थी।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन

इस संस्था की स्थापना १९७६ में हुई थी। पुरानी चली आती अग्रवाल महासभा मृत प्राय थी। अतः इस नाम से नया सगठन किया गया। स्थापना के बाद दिल्ली दक्षिण विस्तार-I में महासम्मेलन द्वारा स्थापित एक स्वय सत्ता सम्पन्न ट्रस्ट ने धर्म भवन के विशाल वट वृक्ष को लगा डाला, जिसके अन्तर्गत मन्दिर, व्यायाम शाला, अतिथिशाला एवं अन्य सांस्कृतिक अंग हैं जिनसे अग्रवाल का दिल्ली में सुविधा पूर्वक रह सकते हैं।

सन १९८० में सम्मेलन के पुनः वे ही पदाधिकारी रहे। परन्तु विशाल त्रिसूत्रीय कार्यक्रम अपनाया गया :—

१– अग्रवालों के संगठन के साथ-साथ समस्त वैश्य समाज के घटकों का एक फैडरेशन के रूप में संगठन (२) कुरीति उन्मूलन तथा (३) अग्रवालों की पुण्य भूमि अग्रोहा का विकास।

पदाधिकारी गण सतत सारे देश का दौरा करते हैं और प्रान्तीय शाखायें स्थापित करते हैं। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र, मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उड़ीसा आदि में प्रान्तीय सम्मेलन सगठित हो गये हैं। विस्तार आसाम व अरुणाचल तक हुआ है। उडीसा में वैश्यों के प्रति हुये अत्याचार के प्रश्न को सम्मेलन ने हाथ में लिया और लोक सभा में चर्चा कराके प्रधान मन्त्री से संरक्षण का आश्वासन प्राप्त किया।

अग्रोहा में दिसम्बर १९८०, अगस्त १९८२, तथा अक्तूबर ८४ में विशालअग्रवाल कुम्भ आयोजित करने का श्रेय भी इस सम्मेलन को ही है, जिसमें हजारों अग्रवाल देश के हर भाग से आये। सम्मेलन ने डा० स्वराज्यमणि अग्रवाल द्वारा लिखित इतिहास पुस्तक "अग्रसेन, अग्रोहा अग्रवाल" के दो संस्करण अति सुन्दर और आकृष्ट कलेवर में छापे हैं। सम्मेलन देश में यथावश्यकता सामूहिक विवाहों का भी आयोजन करता है।

सम्मेलन ने ही २६ अप्रैल १९८१ को नई दिल्ली में भारत के सब वैश्य उपवर्गों का सम्मेलन निज व्यय पर आमन्त्रित किया। इसमें ३९ उपवर्गों के १५० से अधिक प्रतिनिधि आये और वैश्य महासम्मेलन की स्थापना हुई। इसका विधान बन कर अब सर्वत्र स्वतन्त्र रूप से संस्था सब वैश्यों के संगठन तथा उनके आर्थिक और राजनैतिक हित-संरक्षण हेतु बद्ध कटिकर है। अपने वाराणसी में आयोजित सप्तमवार्षिक अधिवेशन में अग्रवाल सम्मेलन ने अपने को वैश्य महासम्मेलन से सम्बन्धित कर लिया है।

सम्मेलन का आठवां वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में दिसम्बर १९८३ में हुआ। इसका उदघाटन श्री भगवती प्रसाद खेतान बैरिस्टर कलकत्ता ने किया था। इस अवसर पर श्री मति ज्ञानवती लाठ के सभापतित्व में एक महिला सम्मेलन तथा युवा सम्मेलन श्री पुरुषोतम गर्ग [दिल्ली] की अध्यक्षता में हुआ।

फिर जुलाई ८४ में दिल्ली में साधारण सभा ने कार्यों का सिंहावलोकन करके चले आते हुये अध्यक्ष व महामन्त्री पदों पर क्रमशः श्री बनारसीदास गुप्त भूतपूर्व मुख्यमन्त्री हरियाणा [विजय चौक, भिवानी] तथा श्री रामेश्वर दास गुप्त [D-३५ साउथ ऐक्सटैन्शन-I दिल्ली-४९] को पुनः एकमत से चुन लिया।

सम्मेलन के प्रस्ताव से हरियाणा में अग्रसेन जयन्ती पर वार्षिक छुट्टी हुई है तथा कतिपय दिवंगत अग्रवाल महापुरुषों की स्मृति में डाक टिकट निकले हैं। इनका सबसे गहन और सदा रहने वाला कार्य हैं अग्रोहा विकास ट्रस्ट की स्थापना जिसके द्वारा अग्रोहा के खंड़हरों पर एक नूतन नगर, सांस्कृतिक केन्द्र तथा तीर्थ का निर्माण हो रहा है। धर्मशाला, स्नानसर, सती मन्दिर, सभाग्रह और अग्रसेन प्रतिमा आदि उसके प्रमुख अंग हैं।

इस ट्रस्ट के १९८३ के अध्यक्ष हैं श्री बालकृष्ण गोयनका। [पोस्ट बोक्स–७५९–मद्रास–८] तथा मन्त्री हैं श्री रामेश्वर दास गुप्त [अग्रवाल सम्मेलन के महामन्त्री]। परन्तु १९८४ से अध्यक्ष हैं श्री चाननमल बसल हिसार। इन्होंने लाखों रुपये का दान इस तीर्थ के निर्माण हेतु दिया है हरियाणा सरकार ने भी पाँच लाख रुपये इस अग्रोहा विकास ट्रस्ट को दिये हैं तथा बिजली, पानी, सड़कें, पाठशाला और अस्पताल जैसी सुविधायें उपलब्ध करा दी हैं।

अखिल भारतीय अग्रवाल महासंघ

स्व० प्रोफेसर रामसिंह जी जो प्रसिद्ध हिन्दू महासभाई एवं आर्यसमाजी नेता थे, की प्रेरणा से १० जुलाई १९७७ को दिल्ली में कतिपय अग्रवाल वैश्य कार्यकर्त्ता एकत्रित हुए और इस संस्था की स्थापना की गई। इसके विधान में यह अनुज्ञा है कि वैश्यों के किसी भी उपवर्ग का व्यक्ति इसका सदस्य हो सकता है, पर वस्तुतः यह अग्रवाल वैश्यों का ही संगठन है। राजनैतिक संगठन न होते हुए भी, इनका एक मन्तव्य रहा है कि राजनैतिक क्षेत्र में वैश्य अग्रवालों को न्याय दिलाया जाये। इसका प्रथम अधिवेशन दिसम्बर ७८ में मुरादाबाद में हुआ, जिसमें उद्योग पति श्री केदारनाथ मोदी अध्यक्ष तथा श्री वशेश्वरनाथ गोटा वाले महामन्त्री चुने गये।

दूसरा अधिवेशन अगस्त ८१ में दिल्ली में हुआ जिसमें श्री प्रकाश चन्द सेठी भी आये थे और श्री रमाप्रसाद गोयनका आगामी सत्र के अध्यक्ष चुने गये। दिल्ली में तीस–हजारी कोर्ट के पास इन्हें समाज कल्याण न्यास हेतु सरकार से भूमि मिली है। एक पाक्षिक पत्र यशलोक भी दिल्ली से प्रकाशित होता है। देश में जगह-जगह इसकी शाखायें हैं। इनका स्थायी कार्यालय न० ४१३६ नया बाजार। दिल्ली–६ में है।

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा

इसकी रजिस्ट्री १९५१ में हुई। इसे श्री निरंजन लाल गौतम नं० ७/२८ ज्वालानगर शाहदरा (दिल्ली) से चलाते हैं। इनका परिचय पीछे दिया जा चुका है। इसके प्रधान श्री जे० आर० जिन्दल जी चले आते हैं। सन १९६८, १९७१, १९८३ में इसके वार्षिक अधिवेशन हुये हैं। अग्रोहानगर के पुनर्निर्माण का नारा इसी संस्था ने प्रारम्भ किया है। श्री गौतम जी ने अग्रोतोकान्वय नामक एक इतिहास ग्रन्थ भी प्रकाशित किया है। यह अपने को अखिल भारतवर्षीय अग्रवाल महासभा का ही क्रमगत बताते हैं जिसे श्री जमनालाल बजाज ने १९१८ में स्थापित किया था, परन्तु इससे अन्य कोई सहमत नहीं है।

हमारे सहयोगी (१)



रामचन्द्र अग्रवाल

(भूतपूर्व विधायक)

१८ मीरा पथ–इन्दौर–३

जन्म १४ जुलाई, १९३० को आश्विन बदी ५ रविवार को ग्राम रंगवासा, जिला इन्दौर में हुआ। इनके पूज्य पिता जी का नाम श्री गोपी लाल जी था। पास में राऊ गुरूकुल में ७वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की, तत्पश्चात् इन्दौर की एक फर्म में नौकरी की। परन्तु फिर गांव वापिस चले गये।

१९५१ के प्रथम चुनाव में वे ग्राम पंचायत के पंच एवं जनपद पंचायत के लिये चुने गये। १९६२ में इन्दौर तहसील निर्वाचन क्षेत्र से मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य चुने गये। १९६८ में इन्दौर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। १९७२ में मध्य प्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

१९७६ में इन्दौर में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के स्वागत अध्यक्ष थे। कांग्रेस विभाजन के बाद कांग्रेस आई में रहे। अनेकों बार जेल गये। १३ दिसम्बर, १९८० को मध्य भारत में प्रथम बार अग्रवाल समाज का सामूहिक विवाह आयोजन आपकी अध्यक्षता में हुआ जिसमें आपने अपनी सुपुत्री का विवाह भी किया। पश्चात् मध्य भारत में सामूहिक विवाहों की होड़ लगी। बाद में १९८२ में मध्य भारत अग्रवाल सभा के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये। इन्दौर में विशाल पैमाने पर एक अतिरुद्ध महायज्ञ कराया, समाज के बंधुओं से इन्दौर में धर्मशाला, प्याऊ आदि निर्माण कराई। इन्दौर में जो बच्चों का प्रसिद्ध वाइट स्कूल है आप वर्षों से उसके अध्यक्ष हैं। इन्दौर म० प्र० की सबसे बड़ी एवं प्रसिद्ध मण्डी है। इन्दौर के अनाज तिलहन-व्यापारी-संघ के निर्विरोध अध्यक्ष बने। प्रसिद्ध श्री राम मन्दिर ट्रस्ट मन्दिर पंचवईया के भी निर्विरोध अध्यक्ष। इस प्रकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री रामचन्द्र गुप्त सार्वजनिक कार्यों हेतु समर्पित हैं।

इस इतिहास प्रकाशन हेतु ५००/– इनसे प्राप्त हुये हैं।

अग्रहरि वैश्य

अग्रवाल समूह के अध्याय के साथ ही अग्रहरि वैश्यों का इतिहास देना समीचीन होगा। इनकी आबादी बिहार, सन्थाल-परगना और नेपाल जो तक में है। इनकी मान्यता है कि अग्रवंश की दो शाखायें हुई। जो युद्ध और आक्रमणों से त्रस्त होकर हथियार डाल कर वहीं हरियाणा पंजाब व राजस्थान में बस गईं वे अग्रवाल हैं क्योंकि उन्होंने मुसलमानी राजाओं के यहां नौकरियां आदि स्वीकार कर लीं और जो अपने रहन सहन के ढ़ंग और संस्कृति को नहीं बदलना चाहते थे वे देश के पूर्वाञ्चलों में जा बसे। इसमें कितनी सच्चाई है यह इतिहास के पन्नों में छिपी है। पर अग्रहरि विद्वान यही मान्यता प्रसारित कर रहे हैं। वे भी अग्रसेन की परम्परा का अपने को बताते हैं। उनकी अच्छी संख्या आजमगढ़, देवरिया, बस्ती, गोरखपुर, गोन्डा, फैजाबाद जौनपुर, सुलतानपुर, इलाहाबाद, बाराबंकी, प्रतापगढ़ लखनऊ, रायबरेली, कानपुर, और फतेहपुर प्रभृति यू०पी० के जिलों में है तथा पटना, भागलपुर, आरा से लेकर चम्पारण और नैपाल तक वे फैले हैं। सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं के बारे में बाबा रामदास के धौरारा पर प्रकाश डालने से कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

जौनपुर शहर से करीब दो मील पश्चिम में स्थित करारियापीर अथवा बाबारामदास धौरारा एवं जगच्छा नामों से प्रसिद्ध स्थान में ठीक गोमती नदी के कगार पर घने बगीचों के मध्य पुराने शिव मन्दिर व ठाकुरबाड़ी के भग्नावेष हैं। लग-भग तीन सौ वर्ष के करीब में ठीक इसी स्थान पर बाबा रामदास गृहस्थी साधुता में लीन भगवान की पूजा पाठ एवं जन्त्र-मन्त्र में बहुत ख्याति प्राप्त अग्रहरियों के पूज्य माने जाते थे।

इनके चार पुत्र थे बाबा रेनुदास (जौनपुर), बाबा होलीदास (शमसाबाद बाजार 'खांवनुर' आजमगढ़), बाबा धरणी धर दास (गोंसडी गोठाव) व बाबा निर्मतदास (सम्मनपुर फैजाबाद)। इन्हीं के गोत्र प्रचलित हैं। इन्हीं अग्रगोतों को जौनपुर, फैजाबाद, सुलतानपुर बस्ती, आजमगढ़ आदि जिलों के अग्रहरि भी अपना गोत्र बताते हैं।

इनकी चार शाखाओं में जौनपुर की शाखा तो समाप्त हो चुकी है। पर अन्य तीन स्थान आज भी सम्पन्न हैं। ये बाबा लोग गुरू खानदान के अग्रहरि बाबा या वैश्य ब्राह्मण एवं गोस्वामी बाबा के नामों से जाने जाते हैं। ठाकुर (मूर्ति) पूजा एवं कुंडली बनाना, गुरू दीक्षा देना, शादी ब्याह कराना ब्राह्मणों का सा आचरण रखना इन अग्रहरि बाबा के खानदान में आज भी देखने को मिलता है।

इनके शिष्य (जिजमान) फैजाबाद, सुल्तानपुर प्रतापगढ़, जौनपुर इलाहाबाद, बनारस, आजमगढ़ बस्ती व गोरखपुर एवं नेपाल के तराई में फैले हुये हैं। बाबा खानदान के गुरु महाराज अपने अग्रहरि शिष्यों (चेलों, के यहाँ प्रतिवर्ष पहुंचते हैं, अथवा शादी ब्याह धार्मिक यज्ञ इत्यादि शुभ अवसर पर इन्हें शिष्यलोग बुलाया करते हैं। अग्रहरि बिरादरी में कोई पचायत या धार्मिक उत्सव होने से पूर्व एवं उपरांत में बाबा रामदास की जय बोलने की प्रथा अब भी प्रचलित है। जब किसी अग्रहरि को समाज की तरफ से गलत काम कर बैठने पर उसे अर्थ दण्ड लगाकर पुनः बिरादरी में सम्मिलित किया जाता है

उस दशा में उक्त अर्थ दण्ड का कुछ भाग गुरू बाबा रामदास के नाम से निकाल कर रख दिया जाता है।

आज भी शिवरात्री या नौरात्र (नौरात) के समय बाबा रामदास के उक्त घौरारा पर लोग पहुंचकर गोमती नदी में स्नान करके शिवलिंग पर जल चढाते हुये बाबा रामदास की जय बोलते हैं। कहते हैं कि इस स्थान का दर्शन मात्र करने से भूत प्रेत बाधा सदा को दूर हो जाते हैं।

जहाँगीर के खानदान में बल खबोखारे का बादशाह गोमती के उस पार अपनी रियासत बनाकर रहता था। जब बाबा रामदास अपने ठाकुर जी की पूजा सुबह-शाम करके भोग लगाकर शंख घन्टा बजाते थे, वह आवाज चारों तरफ गूंजती थी। एक दिन संध्या समय बाबा के भोग लगाने का समय जान बादशाह कौतूहलवश नौकरों से रक्त (खून) से भरा एक घड़ा लड्डू कहकर बाबा के पास अपने ठाकुर जी को भोग लगाने को कहकर भेज दिया। बाबा भली-भाँति भगवान का भोग लगाये और नौकरों से कहा बेटा लड्डुओं का भोग लग चुका है। अब तुम इस प्रसाद को ले जाओ और बादशाह से कहना कि इसमें से प्रथम लड्डू अपनी बेगम को दे, बाद में सभी दरबारियों में उक्त प्रसाद बांट दिया जाये।

लड्डू का घड़ा सामने देख बादशाह को बडा आश्चर्य हुआ। उसने बाबा के बताये अनुसार प्रसाद बेगम व सभी दरबारियों में बांट दिया। कुछ दिन बाद निःसन्तान बादशाह को एक सुन्दर पुत्र पैदा हुआ। बादशाह अपनी उक्त गलती पर पश्चाताप करते हुये बाबा के पास पहुंचकर चरणों पर गिर कर क्षमा मांगने लगा। बाबा ने बादशाह को क्षमा प्रदान किया और सुबह शाम वहाँ आकर प्रसाद खाने का आदेश किया।

अग्रहरि वैश्यों की शिरोमणि सस्था

सर्व प्रथम ३० मार्च १९०८ सोमवार को जिला फतेहपुर के ग्राम शाह में कुछ जातीय सज्जनों ने पहिले पहल इकट्ठे होकर जो छोटे संगठन की नींव डाली थी, वही कालान्तर में वृहद वट०वृक्ष बन गया है। बाद में क्रमशः जो वार्षिक या बृहतर सम्मेलन हुये और उन पर जो पदाधिकारी चुने गये उनका विवरण निम्न प्रकार है। यह विवरण १९८३ तक का है। और अब १९८४ में अध्यक्ष हैं श्री रामप्रसाद राम [बख्तियार पुर–पटना] और महामन्त्री हैं श्री श्रीप्रकाश अग्रहरि नं० D–२६२ निर्माण विहार, दिल्ली–९२

जो मुख्य प्रस्ताव पास किये गये हैं, वे इस लिये उद्धृत किये जा रहे हैं कि सामाजिक–सुधार और संगठन का क्रम क्या रहा है? क्योंकि प्रायः यही क्रम सभी वैश्य उपजातियों के यहां रहा है—

१९२१—प्रत्येक स्थान पर बसे अग्रहरि भाईयों की जांच हो कि क्या वे एक ही स्रोत से हैं? तथा शिक्षा प्रचार, विवाह में अपव्यय रोकना, पारस्परिक झगड़ों का जातीय पंचायतों में निर्णय कराना, प्रत्येक घर में एक गाय रखने की संस्तुति, एक स्वजातीय बैंक स्थापित करना।

१९२४—बालक बालिकाओं की शादी की आयु क्रमशः १९ व १४ वर्ष स्थिर करना। और ४० वर्ष से ऊंचे वृद्ध को छोटी बालिकायें विवाह में न देना।

१९२५—स्वजातीय डायरैक्टरी का निर्माण करने का निश्चय। एक जातीय समाचार-पत्र निकालने का उद्बोधन। प्राइमरी तक शिक्षा की अनिवार्यता और उसकी समाप्ति से पहले विवाह न करना। सब सुजन्मा अग्रहरियों में परस्पर विवाह चलन की सिफारिश, पर विजन्मा को बचाकर। विवाह में रंडियों के नाच व आतिशबाजी के बहिष्कार का निर्णय।

१९२६—कन्याओं की न्यूनतम आयु १४ वर्ष निश्चित करना। अग्रहरि जाति की उत्पत्ति का अनुसंधान करने का निश्चय। स्वा० श्रद्धानन्द के बलिदान पर शोक प्रस्ताव।

१९३०—प्रो० मणिराम डी०ए०वी० कालेज लाहौर की मृत्यु पर शोक प्रस्ताव। श्री हरविलास शारदा को बालविवाह निरोधक कानून पास कराने पर बधाई। गांधी जी के आन्दोलन में भाग लेना और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का निर्णय। जिला नगरों में शाखायें बनाने का निश्चय।

१९४०—अग्रहरि लोक सेवा मण्डल और शिक्षा मण्डल की स्थापना।

१९६५—में केन्द्रिय अग्रहरि समाज नाम से अग्रहरि पुनः संगठित हुये और बाद में यह संस्था पूर्व के नाम से सम्मानित होकर कार्य करती रही। महिला एवं युवक संगठनों की स्थापना अन्तः वैश्य विवाह सम्बन्धों पर पत्रिका में विचार आमन्त्रित करना।

१९७७—एक सर्व वैश्य युवक सम्मेलन का आयोजन। पत्रिका के पुनः प्रकाशन का प्रबन्ध। शिक्षा प्रसार ट्रस्ट की स्थापना। कानपुर में धर्मशाला न बनाने का निर्णय, अग्रसेन जयन्ती मनाने का निश्चय, सर्व वैश्य एकता का समर्थन।

१९८०—बारात का रात्रि के बजाय शाम को चढ़ाना। जिलों में व प्रमुख नगरों में शाखाओं की स्थापना।

१९८३-८४—प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुये।

समय-समय पर पत्रिकायें भिन्न-भिन्न नामों से प्रकाशित और बन्द होती रहीं। यथा अग्रहरि सेवक (मोतीहारी १९२१), विकास (मोतीहारी १९३१), अग्रहरि वैश्य बन्धु (फतेहपुर १९२३), अग्रहरि जीवन (प्रयाग (१९३८), अग्रहरि मित्र (जौनपुर १९२०), अग्रहरि दूत (रायबरेली १९४०), अग्रहरि ज्योति (गोरखपुर १९५९), अग्रहरि समाज (कानपुर (१९६६), अग्रहरि संदेश (पटना १९६७), आदि। अब अग्रहरि समाज नाम से जबलपुर से पत्रिका जारी है। सम्पादक श्री प्रेम प्रकाश शास्त्री हैं।

अखिल भारतीय अग्रहरि महासम्मेलन एवं अ० भा०

महासम्मेलन का क्रम स्थान व दिनांक	सम्मेलन के सभापति	महासभा/केन्द्रीय अग्रहरि समाज के सभापति
१. जागेश्वर (फतेहपुर) उ०प्र० २८ फरवरी व १ मार्च १९१४	सेठ रामलाल, रईस व जमींदार सिमौर, (फतेहपुर उ०प्र०)	सेठ रामलाल, रईस व जमींदार सिमौर, फतेहपुर उ०प्र०
२. पटना (बिहार) १३, १४, १५ आश्विन शुक्ल सं० १९७७ (सन् १९२० ई०)	श्री लक्ष्मी प्रसाद गोयल वकील छपरा (बिहार)	श्री लक्ष्मीप्रसाद गोकुल वकील, छपरा (बिहार)
३. चन्दौली (मिर्जापुर) उ०प्र० ३१ अक्टूबर व १ नवम्बर सन् १९२४ ई०	श्री विश्वनाथप्रसाद गुप्त वकील रामनगर, वाराणसी उ०प्र०	कैप्टन इन्द्रजीत गुप्त रायपुर म०प्र० स्थानापन्न-श्री विश्वनाथ प्रसाद गुप्त, वकील रामनगर, वाराणसी
४. प्रयाग (उ० प्र०) १०, ११, १२ अप्रैल १९२५ ई०	रायसाहब कैप्टन इन्द्रजीत गुप्त जेल सुपरिनटेनडेन्ट, रायपुर	रायसाहब कैप्टन इन्द्रदत्त गुप्त, जेल सुपरिनटेनडेन्ट रायपुर म०प्र०
५. सुल्तानगंज (भागलपुर बिहार) २७,२८,२९,३० दिस० १९२६ ई०	श्री गंगासहाय गुप्त सिलमी, फतेहपुर उ०प्र०	श्री गंगासहाय गुप्त सिलमी, खागा, फतेहपुर
६. जौनपुर (उ० प्र०) १८,१९,२०,२१ अप्रैल १९३० ई०	श्री वैद्यनाथप्रसाद गुप्त वकील मोतीहारी (बिहार)	श्री वैद्यनाथप्रसाद गुप्त वकील मोतीहारी (बिहार)
७. प्रयाग (उ०प्र०) ४, ५,६,७ अक्टू० १९४० ई०	श्री विश्वनाथप्रसाद गुप्त रामनगर वाराणसी (उ०प्र०) स्थानापन्न-श्री वैद्यनाथप्रसाद गुप्त वकील मोतीहारी (बिहार)	श्री विश्वनाथप्रसाद गुप्त चीफ जज रामनगर स्टेट वाराणसी उ०प्र०
८. कानपुर (उ०प्र०) २८, २९ सितम्बर १९७४ ई०	श्री कैलाशचन्द्र एम०ए०एल०एल०बी० फतेहपुर	श्री सूरजप्रसाद, नई दिल्ली श्री बसंतलाल एडवोकेट जौनपुर श्री कैलाशचन्द्र फतेहपुर उ०प्र०
९. कानपुर (उ०प्र०) १, २, अक्टूबर १९७७ ई०	सेठ तीरथ प्रसाद गुप्त मानिकपुर, जि० बाँदा उ०प्र०	सेठ तीरथप्रसाद गुप्त मानिकपुर जि० बाँदा उ०प्र०
१०. मिर्जापुर (उ०प्र०) २२, २३, नवम्बर १९८० ई०	श्री दीनदयाल गुप्त भू०पू० मंत्री महाराष्ट्र प्रदेश सरकार, नागपुर	श्री श्यामाचरण गुप्त बी०ए०,एल०एल०बी. इलाहाबाद
११. वाराणसी (उ०प्र०) २६ एव २७ नवम्बर १९८३ ई०	——	श्री सीताराम गुप्त (गो०बी०बि०) गोरखपुर उ०प्र०

अवधवाल वैश्य

अग्रवाल समूह के साथ अवधवाल वैश्य परिचय देने का कारण यह है कि इनकी शिरोमणि सभा ने अग्रवालों की महासभा से सम्बन्ध बनाया हुआ है।

अवध प्रदेश से निश्रत होने के कारण ही इस जाति का नाम अवधवाल पड़ा है। इस जाति के पूर्वज पूर्व में अवध में आकर बसे थे। अवध में बसने का उनका प्रमुख कारण अवध का वैभव; अयोध्या की आर्थिक सम्पन्नता तथा व्यापारिक परिस्थितियों की अनुकूलता रही होगी।

सन् 1191 में शाहबुद्दीन गौरी ने भारत पर आक्रमण तथा वैश्यों के प्रमुख राष्ट्र अग्रोहा के पतन के पश्चात वैश्यों के एक बड़े

अग्रहरि वैश्य संगठन के पदाधिकारियों का विवरण

प्रधानमन्त्री	कोषाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष
लाला देवीदयाल पीलूतरे, फतेहपुर शहर	श्री गयादीन, गम्हिरी, फतेहपुर उ०प्र०	श्री नारायणप्रसाद, सरवल जिला फतेहपुर
श्री रामनारायणलाल पटना (बिहार)	----	सरदार गुरुचरन सिंह वकील पटना बिहार
श्री भवानीप्रसाद गुप्त प्रयाग उ० प्र०	श्री बैजनाथप्रसाद गुप्त चन्दौली, मिर्जापुर उ०प्र०	श्री बैजनाथप्रसाद गुप्त चन्दौली मिर्जापुर
श्री भवानीप्रसाद गुप्त प्रयाग उ० प्र०	श्री मसुरियादीन गुप्त, प्रयाग उ०प्र०	श्री रामनाथ मुनीम जौनपुर उ०प्र०
श्री हरिप्रसाद गुप्त सुल्तानगंज, भागलपुर (बिहार)	श्री गोपाल साह रईस सुल्तानगंज भागलपुर बिहार	श्री गोपाल साहु, रईस सुल्तानगंज, भागलपुर बिहार
डा० दीनदयाल गुप्त रईस व जमींदार सिमौर जि० फतेहपुर	सेठ बालचन्द्र शाह, अपर बाजार, रांची बिहार	श्री रामेश्वरदयाल, रईस खजांची जौनपुर उ०प्र०
डा० दीनदयाल गुप्त रईस व जमींदार सिमौर जि० फतेहपुर	श्री रामप्रसाद, बख्तियारपुर, पटना बिहार	श्री रामशरण गुप्त रईस कर्वी जि० बाँदा उ०प्र०
श्री उमेशचन्द्र, रक्सराई इलाहाबाद श्री नारायणदास, इलाहाबाद श्री प्रेमस्वरूप गुप्त फतेहपुर श्री लक्ष्मणप्रसाद 'आनन्द' जबलपुर	श्री चन्द्रशेखर, हरिहरगंज फतेहपुर श्री बदलूराम फतेहपुर श्री बाबूराम प्रधान जौनपुर श्रीमती कृष्णा फतेहपुर	श्री रामदास रानीगंज, वर्दवान (प० बंगाल)
श्री राजकुमार प्रसाद गुप्त एडवोकेट, बाढ (बिहार)	श्री बंगालीलाल, धनबाद बिहार कार्यवाहक-श्रीमती कृष्णा फतेहपुर	सेठ चैंतूराम गुप्ता बम्बई कार्यवाहक-श्री रामसरन गुप्त माँडले। सुल्तानपुर उ०प्र०
श्री सीताराम गुप्त, गोरखपुर उ०प्र०	श्री हरीशंकर अग्रहरि कानपुर कार्यवाहक-श्री हरिप्रसाद "	श्री विजयकृष्ण अग्रहरि मिर्जापुर उ०प्र०
श्री राजाराम, जबलपुर म० प्र०	श्री ओंकारनाथ अग्रहरि, इलाहाबाद उ०प्र०	श्री रामसेवक गुप्त वाराणसी उ० प्र०

समुदाय ने अवध में शरण ली। कालान्तर में कुछ वैश्य अवध के स्थाई निवासी बन गये।

भारत पर निरन्तर विदेशी आक्रमण और चार पाँच सौ वर्षों के कठोर मुस्लिम शासन में कष्टपूर्ण जीवन के कारण अवध के वैश्यों की स्थिति दिन-प्रतिदिन दैन्य होती चली गई। सन् 1857 की खूनी क्रान्ति और बाद में भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भी अवध के वैश्यों को अपार धन-जन की हानि उठानी पड़ी। "भारत में अंग्रेजी राज"—पुस्तक के लेखक का मत है कि "क्रान्ति की इतनी अच्छी तैयारी कहीं भी नहीं थी जितनी अवध में"। अवध का विद्रोह पूरी तरह राष्ट्रीय जन विद्रोह था। परिणामतः जीवन सर्वथा छिन्न-भिन्न हो गया।

अवध में रहने वाले वैश्य भाषा-भेद तथा स्थान भेद के कारण

अवधवाल, अवधी बनिया और अवधपुरिया आदि नामों से जाने जाते रहे हैं। अयोध्या विशेष में रहने वाले वैश्यों की एक अलग शाखा अयोध्यावासी वैश्य के नाम से प्रसिद्ध हुई है।

अवधवाल वैश्यों के सम्बन्ध में पंडित छोटेलाल रामी जयपुर-फुलेरा अपने ग्रन्थ 'जाति अन्वेषण' प्रथम भाग पृष्ठ 224 पर लिखते हैं कि "यह एक वैश्य जाति है, इन्हें अवधी बनिया कहते हैं। यह जाति बिहार तथा युक्त प्रदेश में है। हिन्दुओं की सप्तपुरी में अयोध्या भी पुरी है। प्राचीन इतिहास व पुराणों में अयोध्यापुरी की बड़ी महिमा है। भगवान राम के समय जो वैश्य थे उन पर मुसलमानी अत्याचार हुआ। औरंगजेब ने अयोध्या का नाश किया। वहां मन्दिरों की मस्जिदें बनवाई। तब वह वैश्य जाति भी विपत्ति वश इधर-उधर भाग निकली और दूर-दूर जाकर अवधी बनिया और अजुध्यावासी बनिया कहे जाने लगे।"

अखिल भारतीय वैश्य महा सभा मेरठ के अध्यक्ष (लाला दुर्गा प्रसाद जी रईस फरूखाबाद) ने भी सन् 1894—95 में भारत सरकार को अपनी महासभा से स्वीकृत वैश्य उपवर्गों की एक लिस्ट प्रेषित की थी जिसमें अवधवाल वैश्यों को अवधपुरिया के नाम से अपनी एक उपजाति बताया है।

डाक्टर स्वराज्यमणि अग्रवाल एम. ए. पी. एच. डी. अपने शोधपूर्ण ग्रंथ "अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल" के पृष्ठ 61 पर लिखती है कि "श्री परमानन्द जैन शास्त्री ने (जैन समाज की कुछ उप जातियां अनेकान्त 19 9 पृष्ठ 50-51) केवल जैन समाज में चौरासी भेद बताये हैं, जिनमें एक अग्रवाल भेद भी माना जाता है।

इसके अतिरिक्त अग्रवालों के समकक्ष, गोत्र, नाम, परम्परा आदि में जो जाति समानता रखती है, तथा अपने को अग्रवाल कहती हैं उसमें महमिए, गहोई वैश्य, अग्रहारी माथुर वैश्य, राजशाही गुजरा है अग्रवाल, मथुरिया अग्रवाल, वरगवाल मागधी अग्रवाल, मालवीय अग्रवाल, बहत्तरिया अग्रवाल, महाजन, केसरवानी, अवधी रोहतगी, जैन अग्रवाल आदि हैं।

"अवध की जातियां" नामक ग्रंथ के लेखक पंडित कृष्ण कान्त शास्त्री ने पृष्ठ 192 पर लिखा है कि अवधवाल वैश्यों का उदभव अवध से होने के कारण ही इनका नाम अवधवाल पड़ा है। यह एक श्रेष्ठ आचार विचार वाली वैश्य जाति है और यह लोग प्राचीन काल से अवध के वासी हैं। इनके कुल पुरोहित सरयूपारी ब्राह्मण होते हैं।

आल इण्डिया वैश्य समाज हैदराबाद से प्रकाशित उत्तर भारत में वैश्यों की उपजातियों सम्बन्धी पुस्तिका के पृष्ठ 3 पर अवधवाल को वैश्यों की एक उपजाति माना है।

अवधवाल समाज मुख्यतः वैष्णव धर्मी है। अवधवाल समाज में साधारणतः नामकरण, मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह तथा मृत्यु संस्कार होते हैं विवाह संस्कार वरमाला, सप्तपदी और भांवरों द्वारा सम्पन्न होते हैं। और उनमें वैदिक रीति से यज्ञ होता है। अवध से निष्कृत होने के कारण यह लोग भगवान श्री राम की भी पूजा करते हैं।

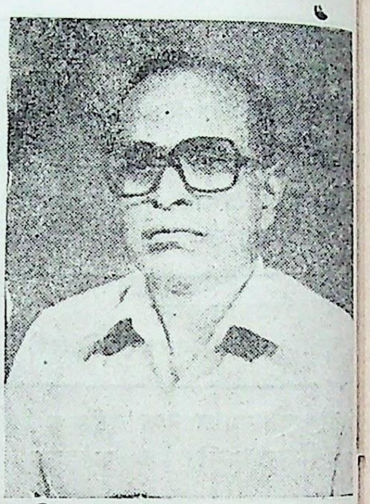
अवधवाल समाज में सबसे पहले लाहौर में सन 1902 में सुधार सभा की स्थापना की गई थी। जलसे का सभापतित्व वैश्य महा सभा के नेता रा. बा. ला. गंगाराम रईस ने की थी, ला. कालीचरन इसके संस्थापक थे। सन 1930 के आस पास भारत भर में 15 शहरों में सभाएं स्थापित हो चुकी थीं। परन्तु इन सभाओं में कोई आपसी ताल मेल नहीं था। सन 1950 में सब संस्थाओं को मिलाकर एक संस्था बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई और 1958 में एक अखिल भारतीय अवधवाल वैश्य महासभा की स्थापना श्री रामकृष्ण हर्ष के सभापतित्व में अम्बाला शहर में की गई। अधिवेशन के संयोजक अवधवाल समाज के वरिष्ठतम नेता श्री राम भोर मित्तल (अध्यक्ष नगर पालिका, अम्बाला) और स्वागताध्यक्ष श्री ओमप्रकाश बन्सल थे।

सन 1958 से अब तक अवधवाल वैश्य महासभा के, देहली मेरठ, सहारनपुर, अम्बाला, लखनऊ, गाजियाबाद आदि नगरों में कई अधिवेशन हो चुके हैं। सन 1958 से अब तक अवधवाल वैश्य महासभा के अध्यक्ष श्री ज्ञान वैश्य तथा महासचिव श्री रामकृष्ण हर्ष निर्वाचित होते चले आ रहे हैं।

अवधवाल वैश्य महा सभा एक रजिस्टर्ड संस्था है। यह अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन तथा अखिल भारतीय अग्रवाल महा सभा द्वारा मान्यता प्राप्त और उनसे सम्बद्ध संस्था है। अवधवाल वैश्य महा सभा ने शिक्षा, स्त्री समाज की स्वतंत्रता और सुधार, सहकारिता युवा प्रतिभाओं के प्रोत्साहन तथा प्रगतिशील समाज की रचना में कार्य किया है। अवधवाल समाज में आज दहेज, ठहराव, बन्धुओं का उत्पीडन तथा उनकी हत्या करने जैसी निन्दनीय बातें नहीं हैं।

हमारे सहयोगी (२)

श्री राम कृष्ण हर्ष



जन्म सन 1931, शिक्षा—बी०ए० प्राज्ञ

(राजीव भवन न0 12 A,

कल्याण नगर, गढ़ रोड़ मेरठ)

महासचिव—अखिल भारतीय अवधवाल वैश्य महा सभा (रजिस्टर्ड) मेरठ।

मंत्री (व्योपारेतर कक्ष)—अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन।

तथा मंत्री (1) अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा (रजिस्टर्ड) शाहदरा देहली।

(2) फ्रेन्डस् यूनियन स्पोर्टस क्लब (रजिस्टर्ड) मेरठ।

(3) टेलीग्राफ कोओपरेटिव क्रेडिट एण्ड थ्रिफ्ट सोसाईटी लि० मेरठ।

मेम्बर स्टेण्डिग कमेटी—अखिल भारतीय वैश्य समाज हैदराबाद।

सम्पादक मंडल में—वैश्य सम्मेलन 'हिन्दी मासिक मेरठ।

पैनल मेम्बर—बी०बी०सी० हिन्दी सर्विस बुशहाऊस लण्डन.

भू०पू० केन्द्रीय संगठन मंत्री—आल इण्डिया टेलिग्राफ ट्रेफिक इम्पलाईज यूनियन नई दिल्ली।

प्रादेशिक सहायक मन्त्री—आल इण्डिया टेलीग्राफ ट्रेफिक इम्पलाईज यूनियन, लखनऊ।

भूतपूर्व मन्त्री—आल इण्डिया टेलिग्राफ वर्कमैन्स यूनियन, मेरठ।

भूतपूर्व मन्त्री—यूनियन आफ पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ वर्कर्स मेरठ।

श्री रामकृष्ण हर्ष एक अच्छे लेखक और कहानीकार हैं। आपने कुछ कवितायें भी लिखी हैं आपका जन्म एक शिक्षित तथा साधारण परिवार में हुआ था। आपके पिता ला० कालू राम मण्डल कांग्रेस कमेटी के प्रधान और अपनी ईमानदारी के लिये विख्यात हैं। श्री रामकृष्ण हर्ष आर्य समाजी और सुधारवादी कार्यकर्ता हैं। 1960 में आपने बिना दहेज के अम्बाला के ला० छांगेलाल की पुत्री शीलाबाला अग्रवाल से विवाह किया था। आपके समाज सुधार के कार्यों के कारण ही 1983 में आपकी पुत्री संध्या गुप्ता का विवाह मेरठ के श्री बलराम मोहन अग्रवाल (इक्लैट्रीकल ईन्जीनियर) से बिना दहेज के सम्पन्न हुआ है। आप अपने दोनों पुत्र का विवाह भी बिना ठहराव या दहेज के करने को दृढ़प्रतिज्ञ हैं। 1984 में दावणगिरी (कर्नाटक) में हुए अखिल भारतीय वैश्य समाज के विशाल सम्मेलन में आप मुख्य अतिथि थे।

(सहयोग राशि—पांच सौ रुपया)

अध्याय --४

माहौर [महा+उरु] समूह के वैश्यों का इतिहास

सर हर्बर्टरिजले महोदय जो भारतवर्ष की जन गणना विभाग के ब्रिटिश शासन काल में अध्यक्ष थे, ने अपनी पुस्तक PEOPLES OF INDIA में नई-नई जातियां और उप-जातियां बनने के ६ मुख्य कारण लिखे हैं। १) नामकरण के आधार पर २) रक्त भेद ३) फैलाव का उदगम स्थान ४) धर्म भेद ५) व्यवसाय तथा ६) संस्कृति भेद। माहौर वैश्य समूह पर भी इन्हीं बिन्दुओं के अन्तर्गत विचार करेंगे।

४.०१ माहौर नामकरण

माहौर बहुत पुराना तथा ऐतिहासिक शब्द है। आसेतु हिमालय भारत में यह शब्द प्रयुक्त मिलता है। मथुरा, माथुर, महावर, महोरी, माहुर रोड, महोबा, मावाल, म्होड़ (महात्मा गांधी की जाति), माहुल, महोली, मावा, मोहार, माहौर रेवा, महाजन, मोहारन, महावन, माहौर गढ़, माहुरी,—आदि शब्द भारत में वैश्यों की जातियों, नगरों, दुर्गों और नदियों के नाम हैं। बिहार में यह लोग माहुरी वैश्य, राजस्थान में महावर वैश्य, संथाल परगना में बिलुलवार माहुरी, मध्य प्रदेश में ग्वारे माहौर, वाह-फतहाबाद-आगरा में माथुर कहलाते हैं। हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध समालोचक प्रोफेसर गुलाब राय का मत था कि —

माहुर और माथुर शब्द दोनों एक ही हैं। महाप्राण अक्षरों का व्यञ्जन निकल कर 'हो' रह जाता है। जैसे दधि का दही, साधु का साहु, वधू का बहू, कथना का कहना इत्यादि।

माहौर शब्द की Secular परिभाषा न देश से वाधित है न काल से। हिन्दी के विभिन्न उच्चारणों में महा+उरु की संधि से मिला शब्द भिन्न भिन्न प्रकार बोला जाता है। राजस्थानी में उ+अ मिलकर व बनाकर महावर बोलते हैं। ब्रज में अ+उ मिलकर औ होकर माहौर कहते हैं। बिहार में माहुरी कहते हैं, क्योंकि वहां ईकारान्त शब्द बोलने का रिवाज है।

वैश्य शब्द जनता जनार्दन के लिये भी प्रयुक्त होता है, सो जन में महा विशेषण लगाकर वही महाजन बनता है'। पजाब, हरियाणा, काश्मीर एवं मद्रास समेत सारे दक्षिणपथ और सिंहलद्वीप में भी महाजन शब्द विशिष्ट व्यापारियों के लिये ही प्रयुक्त होता है। पाली तथा संस्कृत के ग्रन्थों में उरुव्य, अर्य, भूमि, सपृक, विट, सिज, वणिक, पणिक, व्यवहर्ता, ऊर्व्वायन, वसु धर, अभियुक्त, द्रवण, दानवात एवं उरुज शब्द भी वैश्य के लिये आये हैं। और ईरानी जन्द अवस्ता में वाशय्य शब्द प्रयुक्त हुआ है। यास्क ने उसका अर्थ बहुत स्थान ढांकने वाला किया है।

इसी प्रकार महान और महत् शब्द भी एक ही धातु से निकले हैं। कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में ही महत् का महा हो जाता है। जिस शब्द के यह पहले लगता है उसके गुणों को उत्कृष्ट बना देता है। मह-शब्द के अर्थ की सीमा नहीं है। इससे अनेक पदार्थों का बोध होता है। आधिभौतिक पक्ष में शरीर-अन्न (सम्पत्ति) और चन्द्रमा, आधिदैविक पक्ष में समाज तथा आध्यात्म पक्ष में ब्रह्म-वेद-ज्ञान और व्यवस्था इस के अर्थ होते हैं। उरु शब्द का अर्थ अधिभौतिक पक्ष में 'शरीर का एकअङ्ग' आधिदैविक पक्ष में 'वैश्य' और अध्यात्म पक्ष में 'कर्म' के होते हैं।

४.०१.०१ उरु का भौतिक स्वरूप

शिर-दोनों भुजायें और दोनों पैरों के भाग को अलग कर देने पर शेष बचे हुए भाग को, जो पैरों से गर्दन तक और दोनों भुजाओं के बीच में स्थित है, उरु कहते हैं। यह शरीर का मध्य भाग कहलाता है।

२—शिर का भाग, बाहु और पैरों से यह पृथक है। सिर, बाहु और पैर एक दूसरे से सीधा सम्बन्ध नहीं रखते, वरन इन सबका सम्बन्ध उरु से होकर ही है।

३—उरु का विशाल होना स्वरूप से नहीं किन्तु समुदाय से है। इसमें यकृति, प्लीहा, वस्ति, वृक्क, क्लोम, स्तन, आंतें, आमाशय, हृदय, फुक्फुस, योनि, अंड-कोष, मेरुदण्ड, नस, नाडी, शिरा आदि हैं। इनके नाम अलग-अलग हैं; उरु नाम में सब आबद्ध हैं। ऐसे पूर्ण स्वस्थ और क्रियाशील अंग को 'गो' भी कहते हैं।

४—उरु का भाग रक्षणीय है; क्योंकि प्रकृति ने इसकी रक्षा हेतु ऊपर सिर रक्खा, नीचे दो पैर लगाये और दोनों किनारों पर भुजायें लटका दी हैं। दोनों जङ्घाओं के ऊपर गर्दन से मिला हुआ हड्डियों का एक बहुत बड़ा डिब्बा, जिसके पीछे का हिस्सा रीढ़ के गुरियों से और आगे का भाग एक लम्बा हड्डी और २४ पसलियों से बना है, रक्षा करता है।

५—उरु एक विशाल काय लय है, जहां प्रत्येक अङ्ग मर्यादानुसार कार्य करता है। उसका कार्य तीन प्रकार का है :—

(१) हजम करना—रस, रक्त, मांस अस्थि, मेद मज्जा व शुक्र उदर में ही बनते हैं। (२) वितरण— नस नाड़ी और शिराओं द्वारा रक्त को चहुं ओर भेजना। (३) रक्षण—सब अगों की रक्षा।

इसीलिये इसे समाज का मध्यम वर्ग भी कहते हैं। स+उर शब्द ही सुर हुआ है, अर्थात् उर सहित।

४.०१.०२ महा+उर दोनों का सम्बन्ध

१—मह और उरू दो प्रथक २ पदार्थ हैं। दोनों समानान्तर चलने वाले हैं। परन्तु दोनों का सहयोग माहौर नाम में है। दोनों एक दूसरे से दूर नहीं हैं, वरन एक वस्तु को समझने की दो दृष्टियां हैं। एक ही सिक्के की दो पीठें हैं। दोनों में अंग अंगी सम्बन्ध हैं।

२—मह ज्ञान का परिचायक है तो उरू कर्म का द्योतक है। जिनका साहचर्य होना अनिवार्य है।

३—शास्त्रकारों ने जीवन की कृतकृत्यता के लिये दो उद्देश्य अभ्युदय और निश्रेयस-बतलाये हैं। अभ्युदय सांसारिक लक्ष्य है और निश्रेयस से आत्मिक संसिद्धि प्राप्त होती है। उरू से सांसारिक क्रिया कलाप, कारोबार और मह से आध्यात्मिक निश्रेयस की सिद्धि अपेक्षित है।

४—मह या महन शब्दोद्भव पर एक पौराणिक आख्यान भी उपलब्ध है। स्कंध पुराण की एक कथा के अनुसार दशार्ण प्रदेश के समृद्धशाली पद्माकर वैश्य ने उस देश के राजा वज्रबाहु द्वारा अपनी रानी सुमति व राजकुमार भद्रायु को बनवास के समय, भरपूर सहायता की और बारह वर्ष के पश्चात वज्रबाहु की एक युद्ध में पराजय हो जाने पर पद्माकार ने भद्रायु को राजगद्दी वापिस दिलाने में भारी योग-दान दिया। युवराज भद्रायु के राज्याभिषेक के पश्चात् पद्माकर का पुत्र सुनय इस राज्य का अमात्य बना और प्रजा को सब तरह से सुखी निरापद बनाया। इस ऐतिहासिक कहानी के अनुसार राजमाता सुमति व महाराज भद्रायु ने ऋषि मुनियों व कुल गुरुओं से विचार-विमर्श कर पद्माकर को राज्य दरबार में सम्मानित व गंगा के पावन तट पर 'महान' की उपाधि से विभूषित किया। उस समय राज्य के कुल पुरोहित व गुरुवर्य के साथ-साथ गालव ऋषि भी उपस्थित थे। उस समय से पद्माकर वंश ने अपने नाम के पूर्व 'महान्' की उपाधि बोधक 'महा' शब्द लगाना प्रारम्भ कर दिया।

४.०२.०१ रक्त परक इतिहास

इस सम्बन्ध में विशद खोज माथुर-वैश्य (प्राचीन नाम माहौर-वैश्य) वर्ग के स्वर्गीय विद्वान धौलपुर निवासी बाबू यमुना प्रसाद जी की थी। उन्होंने एक पुस्तक खड्गनाद लिखी थी जिसे बहुत बाद में राजपूत ऐंग्लो-ओरियन्टल प्रेस आगरे में बाबू श्री रामगुप्त बी०ए० ने प्रकाशित किया था। उनका विचार है कि माहौर वैश्य लोग सूर्य-वंशी क्षत्रियों की औलाद हैं। स्व० बाबू चन्द्र शेखर ने भी "माहौर महत्व प्रकाश" नाम से जो ट्रैक्ट प्रकाशित करके इसी मत में कुछ संशोधन किया था। उनका ट्रैक्ट १० सितम्बर १९१४ को रत्नाश्रम फाइन आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स कसरट बाजार आगरा से प्रकाशित हुआ था।

उक्त सब मान्यताओं का सार है कि यह माहौर जाति का सूर्य, चन्द्र और अग्नि कुल के राजाओं के समूह से निकास है। इनके वंशज माथुर वैश्य, तीन बारे, सात बारे, माहौर, चौसैनी, बड़पतिया, गुलहरे, इग्गोहरे, विथमी आदि नामों से पुकारे जाने लगे। उत्तर प्रदेश के जिले आगरा, एटा, अलीगढ़, चन्दौसी, फर्रुखाबाद, धौलपुर, भरतपुर, रामपुर, रेवाड़ी, अलवर, मुरादाबाद आदि प्रान्त तो मानों इनका घर हैं।

यही विचार पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र कृत "जाति भास्कर" ग्रन्थ के १३९ पृष्ठ पर अंकित है जो सं. १९१७ में बम्बई में छपी थी।

एक पूर्व पक्ष: के अनुसार माहौर चन्द्रवंशी हैं पर चन्द्रवंश की उत्पत्ति श्री मद् भागवत के स्कन्ध 9 अध्याय 1 में यों दी है :—

सन्तान रहित मनु को पुत्रेष्टि यज्ञ वशिष्ठ ने कराया जिसमें इला नाम की एक कन्या उन्हें प्राप्त हुई। खिन्न होते देख वशिष्ठ ने उसे पुरुष बनाकर उसका नाम सुद्युम्न रक्खा। महादेव की अकृपा से वह पुन: स्त्री हो गया और चन्द्रमा के पुत्र बुध से उसका विवाह सम्बन्ध हुआ।

अध्याय १४ में बुध की जन्म कथा लिखी है। भगवान की नाभि से ब्रह्मा, ब्रह्मा से अत्रि और अत्रि की आंखों से चन्द्रमा जन्मे। चन्द्रमा ने गुरु बृहस्पति की पत्नी तारा का बलात हरण किया। चन्द्रमा और तारा से बुध की उत्पत्ति हुई। इन बुध ने मनु-पुत्री इला से विवाह करके पुरुरवा को उत्पन्न किया। पुरुरवा से स्वर्गीय वैश्या उर्वशी में आयु श्रुतायु रथ, और सत्यायु आदि पुत्र हुये। रथ के पुत्र नहुष और नहुष के पुत्र ययाति थे।

टाड ने भी अपने इतिहास के Vol. 1Ch.]] के पृष्ठ ३९ पर यों लिखा है कि बुध से ही चन्द्रवंश प्रारम्भ होता है।

भागवत ही के अध्याय १८ के श्लोक ३३ में ययाति की पत्नी देवयानी से यदु, तुर्वसु तथा शर्मिष्ठा से द्रह्यु, अनु तथा पुरु का जन्म लिखा है।

अग्नि पुराण अध्याय-२७३ में इसकी पुष्टि की गई है।

> नहुषस्य सुताः सप्तयोतर्प्यातिरुत्तमः।
> उद्भवा पंचकेश्चैवशर्य्याति मेघ पालकौ ।।२०।।
>
> यतिः कुमार भावेऽपि विष्णु ध्यात्वा हरियतः।
> देवयानी शुक्र कन्या ययातेः पत्नऽभूत्तया ।।२१।।
>
> वृष पर्वजा शर्मिष्ठा ययाते पंच तत्सुताः।
> यदु तुर्वसु चैव देवयानी व्यजायत ।।२२।।
>
> द्रुह्यं चानु पुरुं च शर्मिष्ठा वार्ष पर्वणी।
> यदुः पुरुश्चा भवतां तेषां वंश विवर्धनी ।।२३।।

कर्नल टाड ने किसी अज्ञात व्यक्ति के कथन के आधार पर एक स्थल पर यों लिखा है :—

> One great arm of the tree of Yayati remains unnoticed that of Uru or Orvasu written by others as Turvasu
> [Tod,s Rajasthan Vol 1st ch. IV page-48]

दूसरी ओर जगाओ ने निम्न वंश वृक्ष अपने साहित्य मे लिखकर सुरक्षित कर दिया।

ब्रह्मा के १० मानस पुत्र

मरीच अत्रि अंगिरा वशिष्ठ पुलस्त्य भृगु दक्ष मनु ऋतु पुलिह

दत्तात्रेय चन्द्रमा दुर्वासा

मनु की पुत्री इला का पति=बुध

पुरुरवा

रथ+५ अन्य

नहुष+४ अन्य

ययाति+५ अन्य

जदु उरु तुरु पुरा दग्ध

से उरु वंश चला

दंडक का भाई-पुरहोत-अडत-शान्तनु-भोजमान-कुकरर-वरही-अन्धक-देवक-सुदेव-सधिवन-महासेनि (कृष्ण का समकालीन)

सेमस (मथुरा में) सेम सुमन (मथुरा में) पाहिसेनि (पाली में) भीमसेनि (भैंसना में)

मानविद [माथुर वैश्यों का अग्रज] गोविन्द [ग्वार्रे माहौर वैश्यों का अग्रज]

सेमसुमन के तीन पुत्र थे। इनमें से देवदत्त एक था। उसके १३ पुत्र थे। देवदत्त ही एटा प्रान्तान्तर्गत माहोरों का आदि पुरुष था।

जगा ने यह भी लिखा है कि महाराज ययाति के पुत्र जदु से यादव वंश, तुरु से तुर्क वंश, पुरु से पुरुवंशी, उरु से उरुवंशी और दग्ध से कावा भील हुये। उर से उरवंश और उनके पुत्र दंडक ने दंडक देश बनाया। माथुर, ग्वार्रे—माहौर आदि सब उसी के संतान हैं।

उत्तर पक्ष-चन्द्रवँशी होने का खंडन

माहौर सूर्यवंशी हैं।

(1) उरु तुर्वसु का रूपान्तर नहीं है।

जगा की दी हुई वंशावलि से ययाति के ५ पुत्रों के नाम जदु तुरु, पुरा तथा दग्ध लिखे हैं। यह नाम गलत हैं। वास्तव में श्री मद्भागवत के अनुसार वे नाम यों हैं :— यदु, तुर्वसु, द्रुह्यु, अनु और पुरु।

इनमें से प्रथम दो तो शुक्राचार्य विप्र की पुत्री देवयानी से पैदा थे, जिसका (विधिवत विवाह क्षत्रिय चन्द्रवंशी) राजा ययाति से हुआ था। और बाद के तीन शर्मिष्ठा से थे जो एक अनार्य असुर राजा की कन्या थी और देवयानी की दासी बनकर दहेज में आई थी। अर्थात ये ३ अमानत में खयानत से पैदा हुए थे। उच्च ब्राह्मण वर्ण की देवयानी से क्षत्रिय ययाति का विवाह प्रतिलोम विवाह हुआ। ब्राह्मण स्मृतिकार प्रतिलोम विवाह से उत्पन्न सन्तान को सूत की संज्ञा देते आये हैं। पर ययाति के किसी पुत्र का नाम उरु नहीं है। फिर उरु वंश कैसे चल निकला? हां टाड ने एक स्थल पर तुर्वसु बंश को ही उरु बताया है। परन्तु तुर्वसु वंश तो दक्षिण पूर्व को मानधाता द्वारा ढ़केल दिया गया था। और वहां उसका वंश समाप्त हो गया था। बचे हुये तुर्वसु लाभ लोग ईरान में जा बसे थे। "भारतीय इतिहास की रुपरेखा" पुस्तक के लेखक स्व० काशी प्रसाद जयसवाल जी पृष्ठ १७० (प्रथम भाग) में इन पांच सन्तानों के बारे में यह निष्कर्ष लिखते हैं कि :—

१—ययाति के बाद पुरू के पास प्रतिष्ठानपुर (झूसी प्रयाग) का राज्य रहा, और उसके वंशज पौरव कहलाये।

२—दक्खिन पूर्व का देश तुर्वसु को मिला। उसने कारुषों (बघेल खंड) को अपने अधीन कर लिया।

३—उसके पश्चिम केन वेतबा और चम्बल के काँठे के देश यदु को मिले। उन्होंने यादव वंश चलाया।

४—चम्बल के उत्तर और जमुना के पश्चिम का भाग द्रुह्यु को मिला।

५—पूर्व में गंगा-जमुना का द्वाबा, अयोध्यादि अनु के हिस्से में आये।

तुर्वसु वंश में अन्तिम राजा मरुत्त हुआ। वह सूर्यवंशी सम्राट मानधाता का समकालीन था। मानधाता ने इसे समाप्त कर दिया था।

अपनी शोध में मिश्रबंधुओं (पृष्ठ २२३) का भी कथन है कि तुर्वसु वंश में एक कन्या मात्र बची थी जो पुरूवंश के प्रसिद्ध राजा दुष्यन्त की माता थी और इस प्रकार पुरू और तुर्वसु वंश मिलकर एक हो गये। बचे खुचे तुर्वसु वंशी यवन प्रदेशों में जा बसे और बहुतेरे अनुवंशी मलेच्छ देशों में जा बसे। इस प्रकार बहुतेरे तुर्वसु तथा अनुवंशी भारत से निकल गये"। पुराणों में लिखा है कि तुर्वसु के वंशज यवन हो गये थे। राजा ययाति ने तुर्वसु को श्राप भी दिया था कि तेरे पुत्रों का नाश हो जायेगा।

हिन्दी महाभारत मीमांसा पृष्ठ १४३ पर प्रसिद्ध इतिहासकार और मीमांसक श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य लिखते हैं। :—'पुराणों और महाभारत में वर्णित चन्द्रवंश का पता लगाने को ऋग्वेद से अच्छा आधार मिलता है। ये चन्द्रवंशी आर्य क्षत्रिय अग्नि के उपासक थे। इन्द्रादि देवताओं के भक्त थे। पहले ये गंगा की घाटियों से सरस्वती के किनारे आये और वहीं आबाद हो गये। इस तरह की बातें ऋग्वेद की ऋचाओं से सिद्ध होती हैं। ऋग्वेद १।१०८ में कहा है—

'यदिन्द्राग्नी यदुषु तुर्वशेषु यद्द्रुह्युष्वनुषु पुरुषु स्थ:। अतः परिवृष्णा वाहियातमथा सोमस्य पिवत सुतस्य।।'

अर्थात हे इन्द्र और अग्नि यद्यपि तुम यदुओं में और तुर्वसुओं में

इसी तरह द्रुह्युओं और पुरुओं में हो तथापि यहां आओ और निकाले हुये इस सोमरस को पिओ।

इससे अनेक अनुमान निकलते हैं। एक यह कि ये पुराने आर्यों की भांति इन्द्र और अग्नि के उपासक थे। दूसरे ये पाँचों एक ही वंश के होंगे, उसमें भी यदु और तुर्वसु सगे ही थे और द्रुह्यु, अनु एव पुरु सगे थे। चन्द्र वंशी ययाति की दो स्त्रियों से उत्पन्न पाँच पुत्रों का कथा यहाँ अभिप्रेत है।

स्व- लिखित "हिन्दू भारत का उत्कर्ष" नामक पुस्तक के पृष्ठ ४१७ पर भी उक्त श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य लिखते हैं :

इससे प्रतीत है कि ऋग्वेद के समय में यदुवंशी आदि के कुल वर्तमान गुहिलोतों, राठौरों आदि की तरह बन गये थे। उनका धर्म इन्द्राग्नि की पूजा करना था। और इन्द्राग्नि उनसे बहुत संतुष्ट थे। इस सूक्त के ऋषि कुत्स आंगिरस हैं।

पहले जो भरत आर्य इस देश में आकर बसे थे, उनके साथ उनके बाद आये हुये चन्द्रवंशी आर्यों का झगड़ा भी हुआ था। पहला युद्ध भरतों के दिवोदास राजा से हुआ था। दिवोदास बड़ा दानशूर था। दिवोदास और यदुर्वशुओं के युद्ध का वर्णन करने वाली ऋग्वेद मण्डल ६१, सूक्त २ की ९ वी ऋचा महत्व की है। इसमें ऋषि कहते हैं :—

"पुरुसद्य इत्याधिये दिवोदाशाय शम्बरम् ।
अधत्यं तुर्वशु यदुम् । ।"

अर्थात दिवोदास के लिये इन्द्र ने शम्बर के किलों और नगर को उध्वस्त किया तथा यदु तुर्वशों का नाश किया। इस ऋचा से जान पड़ता है कि यदु तुर्वसु एक साथ थे। तथा दिवोदास के शत्रु और यहाँ के आदिम निवासी शम्बरादि उनके मित्र थे। दूसरा उल्लेख भरतों और यदु तुर्वशों के युद्ध का मण्डल ४ सूक्त ३० मन्त्र १७—१८ में इस प्रकार है। यह दूसरा युद्ध था।

"उत त्या तुर्वशायदू अस्नातारा शचीपति : ।
इन्द्रो विद्वान अपारयत् । ।
उत त्या सद्य आर्या सरयोरिन्द्र पारत : ।
अर्णा चित्ररथावधी : । ।"

यह युद्ध सरयू तट पर हुआ था। इससे स्पष्ट है कि इस बीच यदु तुर्वशु पूर्व में सरयू तट तक फैल गये थे। सबसे महत्व का पूर्वोल्लिखित दाशराज युद्ध हुआ था। युद्ध का उल्लेख ऋग्वेद ७ वशिष्ठ के तीन सूक्तों में हुआ था। यह युद्ध भरतों के राजा सुदास (पुरोहित वसिष्ठ सहित) और पांच आर्य तथा पांच अनार्यों के बीच हुआ था। इसमें यदु जीते थे। इससे प्रकट है कि सूर्य वंशी पहिले से बसे हुये थे। और चन्द्रवंशियों ने आकर उन्हें तंग करना प्रारम्भ किया सूर्यवंशियों के कुलगुरु वशिष्ठ और इन चन्द्रवंशियों के कुलगुरु काण्व थे। इस युद्ध में सुदास का विरोध ५ अनार्य राजाओं ने भी किया था और सूर्यवंशियों को हरा दिया गया था। सुदास सूर्यवंशी राजा था। इस बार इन्द्र ने चन्द्रवंशियों की मदद की। यदु बने रहे पर इन युद्धों में तुर्वसु नष्ट हो गये। हरिवंश पुराण के अध्याय ६२ में भी लिखा है कि दक्षिण के चोल पाण्डय आदि राजा तुर्वसु कुल के हैं। परन्तु यह बात और खोज चाहती है। एक मान्यता यह भी है कि पाञ्चाल ने तुर्वसुओं को नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। पाञ्चाल ५ जातियों के समीकरण से बनी जाति का नाम है। शतपथ के अनुसार कुरु भी इनमें एक थे— सम्भव है तुर्वसु भी इनमें हजम हो गये हों।

पाञ्चालों के उपनाम अन्धक तथा सोमक भी आये हैं। सोमक का अर्थ सोम (शराब) प्रिय भी है। अस्तु तुर्वसु बेचारे निम्न प्रकार समाप्त हुये—

१— सूर्यवंशी मानधाता ने हराकर समाप्त कर दिया।

२— यदु तुर्वसुओं में भी गृह युद्ध हुआ।

३— हारकर वे पाञ्चालों में मिल गये। पांचाली में हीरामणि सोमक स्पष्टत: कलवार था। कलवार इतिहास के रचियता चिन्तमणि हटेला भी ऐसा मानते हैं।

संस्कृत शास्त्रों के उक्त प्रमाणों के सामने तुर्वसु को उरु मानना कोरी कल्पना है। फिर यदु और तुर्वसु की संतानें तो हैहय क्षत्रिय हैं। अस्तु यह निश्चित हो गया कि उरु का यदु और तुर्वसु से कोई सम्बन्ध नहीं है। तुर्वसु को पाञ्चालों, सोमकों आदि ने हजम कर लिया था।

ii) कुछेक इतिहासकार एव प्रकार से माहौर का सम्बन्ध चन्द्रवंशी से जोड़ते हैं। शर्मिष्ठा से उत्पन्न ययाति पुत्र द्रुह्यु के प्रपौत्र का नाम उरु था और उनके मत में उसी से उरु वंश चला और उसी उरु राजा ने केन नदी के तट पर माहौर देश बसाया था। परन्तु टाड ने पृष्ठ ४८ पर अपने इतिहास में आगे लिखा—

From Druhya a dynasty was established in the north. Ar with his son Khandar is said to have founded a state, Pritchita is said to have become a king of Melachhades or the barbarous regions

यह 'अर' तो अपने पुत्र कन्धार के साथ म्लेच्छ देश का राजा हुआ। इसने केन के तट पर माहौर देश कैसे बसाया। सूर्यवंशी माहौरों होना-जगा ने आगे चल कर लिखा है कि उस वंश का प्रारम्भ राजा दंडक से होता है। यह राजा दडंक कौन है। "जगा ने लिखा है कि महाराज ययाति के उरू पुत्र के वंश में राजा दडंक, (जिसने दंडक देश बसाया) और उसके पुरहोत नाम के दो पुत्र हुये। दोनों बातें गलत हैं, क्योकि चन्द्रवश में कोई राजा दडंक नहीं हुआ। राजा दंडक जिसने दंडक देश बसाया था सूर्यवंशी था। सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु के १०० पुत्रों में से वह एक प्रतापी पुत्र था। और पुरहोत यदुवशी कोष्टु के वंश में राजा दुर्वसु का न कि राजा द्रुह्यु के प्रपौत्र अर का पुत्र क्योंकि अर के वंश में कोई पुरहोत हुआ ही नहीं। इसके लिये भागवत् अध्याय ७ श्लोक ४/५ और अध्याय २३ श्लोक २९।३० देखिये।"

परन्तु भागवत के देखने से पुरहोत यदुवंशियों की लिस्ट में नहीं दीखता। अत: सिद्ध हो गया कि जिस पुरहोत को दडक का भाई दिखाया है व द्रुह्यु के प्रपौत्र अर का पुत्र नहीं था। यह नाम वास्तव में उरहोत था क्योंकि उसने अउत वंश चलाया। दोनों का उच्चारण एक है। इसी ने वान गंगा के किनारे पन्ना के पास महा+उर देश बसाया।

इन सूर्यवंशी द्वारा वान गंगा (केन) पर राज्य निर्माण की पुष्टि में और प्रमाण देते हैं :—

Some of the kosals had wandered to the South and settled south of the Vindhya and on the banks of Narbada and Wanganga=Charles Joppon's Atlas Page -67.

अर्थात् कौशल (अयोध्या) के कुछ राजपुत्र दक्षिण को चले गये थे और विन्ध्याचल के दक्षिण में नर्मदा तथा बान गंगा के तट पर बस गये थे। यह सिलसिला जारी रहा क्योंकि महाराज राम के साथ भी कुछ वणिक जातियां वनवास के समय गई थीं और चित्रकूट के आस पास बस गई थीं। और कौशल के राजा सूर्यवंशी थे।

इसी की कई पीढ़ियों बाद हुये महासेन के चार पुत्रों ने उत्तर में जाकर बसना प्रारम्भ किया। यहीं से माहोर चार स्थानों में बसे। इसके बाद जगा की वंशावली ठीक मिलती है। सिद्ध हुआ कि माहोर लोग सूर्यवंशी क्षत्रिय थे कालान्तर में वैश्य बन गये और यदु तुर्वसु वास्तविक चन्द्रवंशी क्षत्री थे। तुर्वसुओं की सन्तान सोमक बन गई। तुर्वसु ययाति राजा की रानी देवयानी से पैदा हुआ था। अतः ब्राह्मणी में क्षत्रिय के बीज से होने के कारण उसका वर्ण ब्राह्मण स्मृति कारों ने द्वेष वश सूत माना था।

हां मैं इतना निसन्देह कहूंगा कि दण्डक तो राजा था। पर उरहूत राजा न था। उसने वैश्य के कर्म अपनाये। इसीलिए उरु पर अपना नाम रक्खा और महाउरु पर उस नगर का नाम रक्खा। वे लोग और उनकी सन्तति व्योपारी हो गये।

४.०३ स्थान वाचक इतिहास

४.०३.०१ प्रथम जन्मभूमि माहौर गढ़ और उससे पलायन

पीछे यह कहा जा चुका है कि सूर्य वंशीय आर्य राजा भारत में पहिले आबाद हो चुके थे। और चन्द्रवंशी राजाओं का फैल व बाद में हुआ। वेद में वर्णित इन्द्र ने दिवोदास के समय तो सूर्य वंशियों की सहायता की थी पर बाद में सुदास के समय में उसने चन्द्रवंशियों की सहायता की थी, जबकि पांच आर्य (चन्द्रवंशी) और ५ अनार्य राजाओं ने मिलकर विजय प्राप्त की। सूर्यवंशी राजा हार कर दक्षिण मध्य भारत तथा राजपूताने की ओर चले गये और उन्होंने नये नये राज्य बसाये।

इन्हीं में से दण्डक ने दण्डकारण्य में अपना राज्य स्थापित किया था जो विन्ध्य पर्वत के दक्षिण में हैं। उर हूत (या पुरहूत) ने जो दण्डक का पुत्र था या भाई, वैश्य वृत्ति अपनाई। अपना और अपने वंश का नाम उरु शब्द पर रक्खा और दण्डकारण्य की पश्चिमी सीमा पर वर्द्धा और पैन गंगा के संगम पर एक नगर में जा बसा। उस समय यह बृहद राजपूताने का ही भाग था। गुजराती भाषा में इस नगर का नाम माहुर लिखा हुआ है। माहुर और माहोर दोनों नाम एक ही नगर के हैं। इसी नाम पर पन्ना के पास किलकिला नामक छोटी नदी है। उसका दूसरा नाम महाउर नदी है। प्रोफे०एस०बी० देव ने जो प्राचीन इतिहास के नागपुर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं, नागपुर के पास खुदाई करके माहुर झारी कोट का पता लगाया है। इस सारे काण्ठे का नाम पाणिनी के समय से महा+उरु की व्युत्पत्ति से महौर व माहुर नाम से प्रसिद्ध थे। इस नगर में सभी वर्णों के रहने वाले थे: क्षत्रिय, पणि, सुनार, बढ़ई, व्यापारी, कोली, काश्यप तथा चमार। परन्तु 'माहोर' शब्द केवल क्षत्रियों के लिये ही प्रयुक्त होता था।

व्याकरण का नियम है:—जनपदशब्दात् क्षत्रियादञ्

(अध्याय ४ सूत्र १६६)

(क्षत्रिय समान शब्दाज्जनपद शब्दात् तस्य राजन्य पत्यवत्)

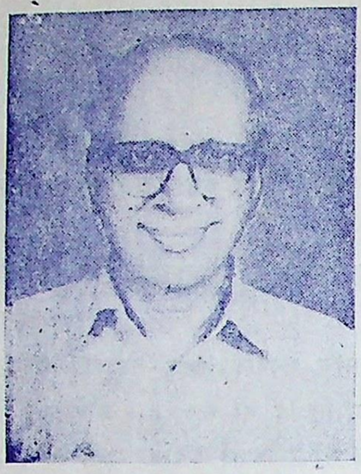
अर्थात जनपद देश विशेष को कहते हैं। और उस देश विशेष के नाम से ही उस देश के शासन कर्त्ता अर्थात राजा का नाम भी वही होता है। यदि यह राजा वर्ण का क्षत्रिय हो तो उसकी सन्तान की उत्पत्ति में राजा के देशवासी प्रख्यात नाम से अपत्य अर्थ में अञ प्रत्यय लगती हैं। अस्तु यदि जनपद का नाम महोर है तो देश का नाम माहोर होगा। यदि वह राजा क्षत्रिय है तो उसकी संतान की उत्पत्ति में अज प्रत्यय लगेगा।

इस प्रकार महोर+अज=माहोर कहलावेगा। यदि महोर का राजा ब्राह्मण होगा तो उसकी सन्तान माहोरि कहलावेगी। अस्तु इस देश के क्षत्रियों को माहोर कहते हैं। माहोर नाम वाली प्रजा मूल स्थान से निकल कर इधर उधर फैली। ब्राह्मणों और क्षत्रियों के अतिरिक्त उस देश की अन्य जातियां भी निकल कर इधर उधर बस उनके कर्मानुसार व्यवहार का नाम भी साथ साथ लगा हुआ है, जैसे माहोर सुनार, माहोर कोली, माहोर बढ़ई इत्यादि। इन बातों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि राजपूताने का ही दूसरा नाम माहोर है। वास्तव मे राजपूताने के मध्यस्थ भाग को महोर कहा जा सकता है। राजस्थान के इतिहास में महोर का अर्थ टाड साहब ने 'राजपुताना का हृदय' किया है। आगे चलकर प्रामाणिक व्याकरण का ग्रन्थ बतलाता है कि माहोर नाम वाली जाति राजवंशो है। चूंकि देश और राजा का नाम एक ही होता है जैसे विदेह और उनकी सन्तान तद्धति के अनुकूल अपत्य विषम में उसी देश के नाम से पुकारी जाती है। जैसे, गंगा देश के राजा की सन्तान गांगलह। द्वितीय माहोर जाति के भिन्न-२ गोत्र और अल्लें भी इस बात को प्रमाणित इतिहास से सिद्ध करती हैं कि माहोर जाति, एक बड़ा समूह राजवंशियों का है। जैसे निम्बोरिया, महाराज बोढा के चौदहवे पुत्र निम्बों से प्रचलित हैं। इसी प्रकार अन्य गोत्र भी हैं। माहोर जाति के एक सिरोह को शाह का खिताब भी था। उदाहरण के तौर पर हम यहां एक राजवंशी सूची देते हैं जो कर्नल टाड के राजस्थान में दिया हुआ है, जिससे हमारे पाठकों को पूर सबूत मिल जायगा कि माहोर जाति प्राचीन ३६ राजकुलों की गणना में से एक है।

४.०३.०२ राजवशी ३६ राजकुलों की नामावाली

१—इक्ष्वाकु २—सूर्य ३—सोम —[चन्द्र] ४—यदु —५ पुरु ६—चहुमान या चोहान७—चलुक या सोलंकी ८—परिहार ९—चोरा

हमारे सहयोगी (३)



श्री बजरंग लाल जाजू
प्रथम प्रधान अ० भा० वैश्य महासम्मेलन
नं० 1/11B आसफ़ अली रोड, दिल्ली-2

BIODATA

B. L. Jaju, born on 5th July, 1924, qualified Chartered Accountant. He has diversified the interests of the family and has direct control over 10 Industries and also acts as an advisor to the family business units. He has been the General Secretary of All India Marwari Sammelan, Executive member of Calcutta Chamber of Commerce and Industry and member of PHD Chamber of Commerce and Industry, Federation of Indian Chambers of Commerce and Industry and the Associated Chambers of Commerce & Industry of India. He is also Vice President of Indian Vanaspati Producers Association.

He is interested in joint ventures and can give technical know-how, Financial and Managerial collab ration for new ventures.

He can provide training in the following Industries in India :

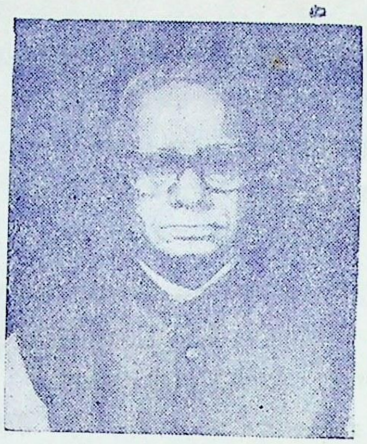
Solvent Extraction, Edible Oil, Paper, Plywood, Hydrogenated Oil and Soap.

He i planning to set up following Industries in joint collaboration with other Vaish Industrialists.

Plywood Factory, Sulphuric Acid Plant, Edible Oil Plant, Single Superphosphate, Caustic Soda, Steel Re-Rolling, Plastic Including PVC Pipes, Aluminium Properzy and Conductor, Animal Feed Plant, Industrial Gases, Oxygen, Acetylene, Nuts and Bolts, Vanaspati and Soap Plants.

He is Director of our Federation's Training and placement cell and has by now trained & found employment for scores of our youngmen of Vaish Community.

हमारे सहयोगी (४)



शुभ नाम—चानन मल नेवर (माहेश्वरी) वैश्य
जन्म स्थान—तलवड़ी (पटियाला स्टेट)
जन्म—सन् १९१४

शादी—१७ साल की आयु में मडदा (माहेश्वरी) गोत्र में।

५ लड़के व एक लड़की हैं। अभी १ लडका कुंवारा है। परिवार में लड़के का सम्बन्ध वैश्य मात्र में करने की दृढ़ प्रतिज्ञा। और सो भी दहेज रहित।

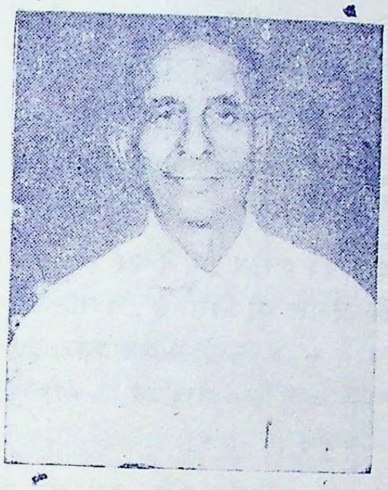
१६ वर्ष की आयु में कारोबार दुकानदारी में लग गये। पढ़ाई मैट्रीक तक। तीन साल तक कलकत्ता में (जूट ब्रोकर) का काम किया। उसके बाद तीन साल बिड़ला का सर्विस की। १९४० में North Bengal में, कालिगपांग, सीली-गुडी, गंगटोक (सिक्कम) में व्यापार संस्थान खोले १९८५ तक तिब्बत से बहुत कारोबार किया। यह संस्थान अब भी बहुत अच्छे चल रहे हैं।

हरियाणा में दो ईंट भट्टा और जमीदारी तथा एक फैक्ट्री मध्य प्रदेश में है जिसका नाम Rewa Gases (P) Ltd, Waidan, Distt Sidhi (M. P.) है। North Bengal में बाल किशन श्याम रतन के ना से तीनों संस्थान है। १९५५ से १९५८ तक Kalingpong Chamber of Commerce के प्रधान रहे। इस दौरान जिला दार्जिलिंग की कांग्रेस कमेटी के प्रधान १९३१-३२ से कांग्रेस के सक्रिय सदस्य। कांग्रेस महा सम्मेलन के लिये लाहौर त्रिपुरा, हरीपुरा, अमृतसर, गोहाटी, बतौर प्रतिनीधि जाते रहे व हरिजन उद्धार के लिए भी सामाजिक रूचि है व बहुत से संस्थाओं का प्रधान व आजीवन सदस्य रहे हैं जिनमें मुख्य हैं।

विश्व हिन्दू परिषद्, वैश्य उत्थान समिति, भारत-सोवियत सांस्कृतिक समिति, प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन एवं व्योपार मंडल।

हमारे सहयोगी (५)

बालकृष्ण गुप्ता, शकुन्तला भवन
१ कृष्णा गली बहादुरगढ़ (हरियाणा)
के सामाजिक कार्यकर्ता



लाला बाल कृष्ण गुप्ता का जन्म फरवरी सन् १९२८ में एक साधारण अग्रवाल परिवार में हुआ। इनके पिता लाला मक्खनलाल जी और माता अनार देवी दोनों धार्मिक विचार के थे। लाला बालकृष्ण जी ने यहीं के गवर्नमेण्ट हाई स्कूल से सन् १९४० में मैट्रिक और बाद में भूषण परीक्षा पास की। पश्चात लायडज बैंक चान्दनी चौक-दिल्ली में २ साल काम किया। सन् १९४२ में एक छोटी सी दुकान बहादुरगढ़ में बड़ी मेहनत से की।

पत्नी शकुन्तला देवी ने अपनी रात दिन सख्त मेहनत से साथ देकर घर को चार चान्द लगा दिए।

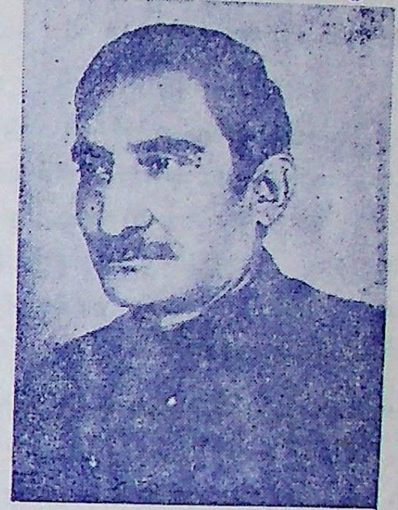
इनके आठ पुत्र हैं जो सभी मिल जुलकर पिता जी के साथ काम करते हैं।

लाला जी अग्रवाल समाज के अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। आपकी रुचि वैश्य अग्रवाल समाज की पत्र पत्रिकाओं व सामाजिक इतिहास पढ़ने व इकट्ठा करने में है। यह साहित्य इन्होंने अपनी लाइब्रेरी में रखा हुआ है। आप नगर की अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के मन्त्री भी हैं।

आपकी हार्दिक इच्छा है कि वैश्य समाज की शक्ति सम्पन्न और वैभव शाली बने तथा अपने पूर्वजों के आदर्शों के अनुसार देश की सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति में सक्रिय योगदान दे।

हमारे सहयोगी (६)

प्रिन्सिपल भोलानाथ केसरवानी एम०ए०
९१६ हाता चान्दापुर, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद



बचपन से ही देश सेवा और समाज सेवा की ओर उन्मुख प्रिन्सिपल केसरवानी जी ने १९३३ में अ० भा० बालक संघ की स्थापना कर गांधी जी के स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेकर जेल यात्रा की थी। बाद की समाज सेवाओं का क्रम यों है :—

१९३४—केसरवानी युवक मण्डल की स्थापना और सेवा कार्य।

१९३४—केसर विद्यापीठ इन्टर कालेज, इलाहाबाद के स० मंत्री।

१९३८—अ० भा० केसरवानी तरुण महासभा के मंत्री।

१९३८-४२—अ० भा० केसरवानी महासभा की कार्य समिति के सदस्य।

१९४०-४३—भारत स्काउट-एण्ड गाइड के जिला मंत्री।

१९४८-५२—लखनऊ केसरवानी सभा के महामंत्री।

१९७३-७६—सेवा समिति विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, इलाहाबाद के प्रिन्सिपल।

१९७८—केसरवानी ज्योति पत्रिका की स्थापना।

१९७८-८१—केसरवानी ज्योति के महामंत्री।

१९७८-८४—केसरवानी ज्योति पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक।

१९७९—से अब तक विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, इलाहाबाद के स० प्रबन्धक।

इसके अतिरिक्त केसरवानी जाति का संक्षिप्त इतिहास तथा अन्य अनेक पुस्तकों के रचयिता अन्य अनेक संस्थाओं से सम्बद्ध, धार्मिक एवं आध्यात्मिक अनुभूतियों से अभिषिक्त तथा योग विद्या में पारंगत।

१०—दोदिया ११—रैठोर १२—गोहित १३—डर्बी १४—भक्वाहन १५—नोकां १६—अश्वरिया १७—सलर १८—निद १९—सपित २०—हुन २१ किरजल २२—हूरेरा २३—राजपाली २४—धनवाली २५—अग्निपाली २६—वल्ला २७—भल्ला २८—भगदोल २९ मोतदन ३०—माहोर ३१—कुगेर ३२—कुर्जी ३३—चदलिया ३४—पोकी ३५—निकुम्भा तथा ३६—सुलल। [टाड राजस्थान पृष्ठ-७८]

उपरोक्त ३६ राजकुलों की नामावली में माहोर जाति की गणना से स्पष्ट है कि माहोर नाम चिर काल से चला आता है। अंग्रेजी पुस्तक में महोर की स्पेलिंग MOHOR or MAHOR करके लिखी है।

प्रारम्भ में महोर देश में क्षत्रिय राजा राज्य करते रहे। बाद में हैहय चन्द्रवंशी राजा कार्तिकेय अर्जुन बड़ा प्रतापी हुआ और उसने हिमालय के चरणों से लेकर नर्मदा तक और नर्मदा से लंका तक का सारा देश जीत लिया और यहां तक कि रावण को पराजित करके माहिष्मती में कैद कर दिया था। [श्री जयचन्द्र विद्यालंकार कृत भारतीय इतिहास की रूप रेखा पृष्ठ १७९]।

कार्तकेय अर्जुन ने इस माहोर राज्य को भी अपना करदाता राज्य बना लिया था। इस अर्जुन की मृत्यु के उपरान्त इसके पुत्रों ने जमदग्नि ऋषि को अपमानित किया और मार डाला। फलस्वरूप उसके पुत्र परशुराम ने व्रत लेकर हैहय साम्राज्य नष्ट कर दिया। कहावत है कि परशुराम ने २१ बार पृथ्वी को क्षत्रिय-विहीन किया। रोज-रोज के युद्ध से घबराकर माहोरों ने कहा कि हमें तो वैश्यवृत्ति अपनानी चाहिये फलतः परिवार के परिवार वहां वैश्य बनकर रहने लगे। इनमें आदि पणि वैश्यों को भी ले लिया गया। इसी समय टाड के कथनानुसार अनेक लोग जैन बन गये। बहुत से लोग उत्तर की ओर भाग गये। उन्होंने सुन रक्खा था कि उत्तर में मथुरा में शत्रुघ्न ने जो सूर्य वंशीय प्रतापी राजा राम के पुत्र थे, लवणासुर को मारकर मथुरा में अपना राज्य स्थापित किया है। मथुरा में लवणानुसार के छोटा भाई मधु के अन्तर्गत राज्य चलता था। इसी मधु के नाम पर मथुरा तथा मधुबन मथुरा के प्राचीन नाम पड़े थे। शत्रुघ्न के प्रपौत्र' शूरसेन ने इस जनपद का नाम बाद में शौरसेनी रक्खा था। [पुस्तक उग्र-गितम् में शूरसेन को अग्रसेन का भाई लिखा है। वे जब मथुरा में गये तो वहां उरु राज्य कर रहे थे। उसने शूरसेन को मन्त्री बनाया। उसका राज्य मथुरा के समीप था, जहां आज वटेश्वर है। उसे शूरसेनी प्रान्त कहने लगे।] कृपया अग्रवालों के इतिहास वाला अध्याय देखें। - सम्पादक] भाग्य ने यहां भी सूर्यवंशी माहोरों का साथ नहीं दिया। क्योंकि ययाति राजा की किसी पीढ़ी में भीम सात्वत नामक राजा ने मथुरा पुनः सूर्यवंशियों से छीन ली। भीम सात्वत के वंश में अन्धक और वृष्णि बहुत प्रसिद्ध हुये हैं। अन्धक के वंश में द्वापर में कंस और वृष्टि के वंश में कृष्ण उत्पन्न हुये। भीम सात्वत के पुत्र का नाम भी मधु (यदुवंशी) था और उसके वंश की राजधानी मुरानी (विदर्भ) में थी। उसने मथुरा सूरसेनियों (सूर्यवंशियों) से जीत ली थी। इन मधु के ही कारण कृष्ण का नाम माधव पड़ा था।

[देखो वृज का इतिहास द्वारा पं० कृष्णदत्त वाजपेयी]

उक्त कथा क्रम की पुष्टि में हम आगे कुछ और प्रमाण देते हैं— श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. बम्बई यूनिवर्सिटी के रिसर्च स्कालर ने "हिन्दू भारत का उत्कर्ष" भाग २ पृ० २१२ प्रकरण आठ में इस बात की पुष्टि यों की है—

क्षत्रिय वंश की हैहय शाखा की उत्पत्ति सहस्रबाहु अर्जुन से हुई है। पुराणों में लिखा है कि सहस्रार्जुन ने रावण को हराया था और लाकर महिष्मती के किले में कैद कर दिया था। हैहय लोग नर्मदा तटवर्ती स्थानों में रहते आये हैं। पुराणोतिहास से यह पता चलता है कि हैहयों ने अयोध्या के सूर्यवंशी राजा सगर का भी पराभव किया था। फिर थोड़े ही दिनों में हैहयों ने दक्षिण कोशल अर्थात छतीसगढ़ पर अधिकार कर लिया और नागपुर के भोंसलों के राज्य काल तक वह क्षेत्र इन्हीं के अधिकार में रहा।

हां इस बीच में थोड़े समय के लिये परशुराम ने क्षत्रियों का पराभव किया था, पर बाद में तालधन ने फिर राज्य स्थापित कर लिया था।

भागवत अध्याय २३ श्लोक १८ से २९ तक भी यही वर्णन है। वहां सहस्रार्जुन की उत्पत्ति यों लिखी है : ययाति→ यदु (+आदि ५ भाई)→ सहस्राजीत (+ ४ भाई)→ शतजित═हैहय (+२ अन्य भाई)→ धर्म→ नेत्र→ ⇒कुंति→ सोहजि → महिष्मान→ भद्रसेन→ धनक→ कृतवीर्य→ अर्जुन।

भागवत में अ० १५ के श्लोक १ से ३६ तक उन २१ युद्धों का वर्णन किया है जो हैहय वंशीय क्षत्रियों के राष्ट्रमहिष्मती के राजाओं और परशुराम से हुये थे। सहस्रबाहु ने ही अपने पुरखों के नाम पर महिष्मती या महेश राष्ट्र स्थापित किया था। इस युद्ध के कारण टाड ने भाग १ अध्याय ४ के पृष्ठ ४२ से ४५ पर लिखे हैं। उसका अनुवाद यों हैं :—

"सूर्य वंश के प्रतापी राजा हरिश्चन्द्र की २४ वीं पीढी का राजा परशराम का समकालीन था। सूर्यवंशी वैष्णव थे। अतः परशराम उनका समर्थक था। जमदग्नि का कामधेनु गाय सहस्रार्जुन बल पूर्वक ले आया था। हैहय लोग सर्वत्र सूर्य वंश पर विजयी होते गये।

It was to preserve the solar race from destruction which threatened it from the prolefic Lunar race that the Parusram armed evidantly proving that Brahmanic faith was held by the Solar race while the great religion of Budha, the great proginator of the Lunar race, still governed the descendants.

टाड० राजपूतों का इतिहास भाग १ अ० ३ पृष्ठ ४२

ब्राह्मण धर्म और उसके मानने वाले सूर्य वंशियों की रक्षा के लिये परशराम ने शस्त्र उठाये। चन्द्र वंशी बड़ी संख्या में जैन (बौद्ध) हो गये थे, इसलिये भी शस्त्र उठाना आवश्यक था। परशराम ने चन्द्र वंशीयों का विनाश किया। परन्तु सहस्रार्जुन की ५ वीं पीढ़ी में तालजंघ ने पुनः विजय प्राप्त की और यहां तक कि अयोध्या में अपने

समकालीन राजा सगर को अयोध्या से निकाल कर तिब्बत (अन्य देश) की ओर भगा दिया (पृष्ठ ४३)।

हिमालय में सगर की गर्भिणी स्त्री से जो संताने हुई उन्होने अयोध्या तालजंघियों से बाद में फिर वापिस ले ली। पर दक्षिण में कुछ न कर सके। दक्षिण में तो हैहयों ने इन माहौर राज्यों को कर-दाता बना डाला। सो माहौरों का भाग्य सूर्य वंशियों के वैभव की कहानी मात्र थी। हम अपनी कहानी आगे बढ़ाते हैं। पीछे कह चुके हैं कि कुछ माहौर शत्रुघ्न की मथुरा मे चले गये थे। वहां भी बाद में सात्वत यदुओं के पुनरोदय से सूर्य वंशी माहौर मथुरा में राज्य समर्थन से च्युत हो साधारण प्रजाजन मात्र और व्यौपारी बन गये।

आदि स्थान माहौर गढ़ या मथुरा।

कुछ माहौरों का कथन है कि उन्होंने अपने पूर्वजों से सुना कि उनके पूर्वज मथुरापुरी के बीच माहौरी पौरि में रहते थे और अब उस पौरि से निकल कर इधर-उधर बसे, तब माहौर कहलाने लगे। परन्तु किसी को ठीक ज्ञान इस बात का नहीं है कि उनके पूर्वज मथुरा पुरी में कौन थे ?

उपरोक्त गाथा से दो बातें सिद्ध होती हैं। एक तो यह है कि इस जाति का नाम पहले से माहौरी नाम होने के कारण से ही मथुरा में उस पौरि का नाम 'माहौरी पौरि' प्रख्यात हुआ। इसलिये कि गली और कूचा का नाम बहुधा उस समुदाय के नाम से भी पुकारा जाता है जिस जाति के लोग उसमें विशेषता से बसते हैं। अत: माहौरी पौरि से विदित होता है कि वह पौरि माहौर लोगों की पौरि थी और वहां से यह लोग निकल कर कालान्तर में माहौर ही कहलाये। यहां यह कह देना भी उचित प्रतीत होता है कि मथुरा से निकले हुए भी माहौर जाति के ही थे अन्यथा वहां से आये हुये या वहां रहने वाले मथुरिया कहलाते ?

४.०३.०३ मथुरा का अति संक्षिप्त इतिहास :

उरु चरितम नामक इतिहास काव्य का पहिले जिक्र आ चुका है। इसकी प्रति मैनपुरी जिले के ग्राम ज्योंति के वीरेन्द्र भारतीय को अपने पिता श्री अवधबिहारीलाल जी से विरासत में मिली थी। लिखा है कि जब शूरसेन मथुरा आये तो उ के पार्श्व में उरु राजा राज्य करते थे। उन्होंने शूरसेन को मंत्री बनाया। शूरसेन ने राज्य का उत्कर्ष किया और उस कांठे का नाम शौरसेनि रक्खा। इसके आगे के इतिहास हेतु हम ब्रज साहित्य मंडल द्वारा प्रकाशित और पं० कृष्णदत्त वाजपेयी लिखित इतिहास से बहुत कुछ जान सकते हैं। मथुरा को मय या मधु असुर ने बसाया था और नाम भी मथुरा रक्खा था। राम के पुत्र शत्रुघ्न और मय वंशज लवणासुर से युद्ध हुआ था। (भारतवर्ष का इतिहास द्वारा पं० भगवत दत्त बी० ए० रिसर्च स्कालर)।

शत्रुघ्न के पुत्र सुबाहु के हिस्से में मथुरा का राज्य पड़ा। सुबाहु का छोटा भाई ही शूरसेन था। इसी के नाम पर मथुरा जनपद का नाम शूरसेन पड़ा। (वा० रा० ७।७० श्लोक ६ से ९ में यह वर्णित है।) शूरसेन ने सौरिपुर बसाया था, जो बटेश्वर का पुराना नाम है। यहीं फतेहाबाद तथा मुरैना क्षेत्र हैं। सूर्यवंशियों से मथुरा चन्द्रवंशी यदुओं ने छीन ली। यदु ययाति का पुत्र था जिसका राज्य चम्बल की कछार में था। भीम सातको और फिर उसके पुत्र मधु के ३ पुत्र अंधक, वृष्ठिक आदि थे। इन्हीं वंशों में कंस, उग्रसेन व कृष्ण हुये। कृष्ण से मथुरा जरासिन्धु ने छीन ली जो मगध का राजा था। जरासिन्धु की विजय पर कृष्ण गुजरात चले गये जो गूजरों का देश था। जरासिन्धु से वह पाण्डवों के हाथ पड़ी और कृष्ण का वर्चस्व पुनः कायम हुआ। परीक्षित, जन्मेजय, शतानीकादि राजा हुये। इसके बाद राज्यवंशों के स्थान पर देश १६ जनपदों में प्रजातंत्रीय पद्धति से शासित होता रहा। यह गणतंत्र पद्धति वैदिकों की राज्यतन्त्र प्रणाली से भिन्न थी। [हरिवंश पुराण सृष्टि खंड–अ० १७] बाद में महापद्मनंद ने अपने राज्य में मिला लिया। क्रमश: मौर्य शुंग–मित्र, शक, सालव शकारि, दत्त वंश, पुन: नाग वंश, फिर नाग, गुप्त, हूण, मौखरि, वर्धन, गुर्जर, प्रतिहार और फिर गजनवी वंश का राज्य रहा। गजनवी से महावन के महाजन राजा फूलचन्द ने युद्ध किया था, जिसमें ५००० सैनिक खेत रहे थे। गजनी से गाहड़ वालों ने फिर छीना। तदन्तर तोमर-राष्ट्रकेतु, चालुक्य, कछवाहों का राज्य रहा। गुलाम-खिलजी तुगलक, लोदी, मुगल वंशों के राज्य के बाद फिर मुगलों का राज्य रहा और मुगलों से जाटों ने छीन लिया। जाटों से नादिरशाह ने और उसके बाद मराठा–शासन रहा। फिर जाट आये, रुहेले आये और रुहेलो से फिर मराठों ने छीना। मराठों से अंग्रेजों ने छीना। इस प्रकार यह लगता है कि मानो मथुरा का इतिहास ही लघु रूप में सारे भारत का इतिहास है, भारत के उत्थान–पतन की कहानी है। राजघरानों ने, सब विदेशी जातियों ने मथुरा को हथियाना चाहा। सक्षेप में सबका यही नारा रहा कि मथुरा चलो।

४.०३.०४ माहौर वैश्यों का मथुरा आ बसना

अत: यह आश्चर्य की बात नहीं कि माहौर देश के सूर्य वंशी माहौरों ने चन्द्र वंशियों से हारकर और परशुराम द्वारा सताये जाने पर सूर्य वंशियों के राज्य मथुरा की ओर पग बढ़ाया। जो रह गये वे जैन हो गये। और जब कृष्ण के द्वारा पुन: वैष्णव धर्म का पुनरुत्थान होते देखा तो पुन: शेष लोग भी मथुरा आ गये, और मथुरा के माहौरी पौरि मुहल्ला में बस गये। यह माहौरों में अब भी इसी नाम से विख्यात हैं। इसी पौरि में होकर महावन का मार्ग है। यहीं अवशिष्ट महावर बसे हैं और इसी मुहल्ले में मथुरासिनी देवी का मन्दिर है जिसकी मूर्त्ति को औरंगजेब ने तोड़ना चाहा था पर तोड़ न सका और जहां से कंस के किले को सुरंग जाती है।

४.०३.०५ मथुरा में माहौरों के उत्थान पतन की कहानी

वैदिक समय में ब्रज को ब्रह्मर्षि ब्रह्मावर्त्त कहते थे। (मनु २।१९)। बौद्ध काल में इसे मध्य प्रदेश कहते थे। इस मध्य प्रदेश के मत्स्य (अलवर) शूरसेन, कुरू, पचाल एटा, फर्रुखाबाद मैनपुरी जिले)

आदि ६ महा जन-पद थे और घेरा ८४ कोस का था। कृष्ण से पूर्व वहां बन्य संस्कृति, ग्राम्य सस्कृति, नगर-संस्कृति, वैदिक तत्व, आगम सूत्रानुगतता और पौराणिक संस्कृति रही है। उनके बाद जैन व बौद्ध प्रभाव भी रहा है।

श्रीमद्-भागवत में ब्रज के २ भाग किये गये हैं। [१०।५।२६] [१] वृहदवन और (२) वृन्दावन। इन्हें जमुना की धारा अलग करती थी। वृहदवन आज का महावन क्षेत्र है। यहां असुर संस्कृति का प्राधान्य था। पूतना, तृहणावर्त, मधु, शकट व लोहजंघ आदि असुर राजाओं का पराभव और वध यहीं हुआ था। इसमें निम्नलिखित बन शामिल हैं :—

भद्रवन, भांडीर वन, माट वन, बेलवन, लोहवन, महावन एवं गोकुल। इनमें आभीर (अहीर) बहुतायत से बसे हैं।

वृहन्नारदीय पुराण में कहा है कि इस क्षेत्र के नेता बलराम (हलायुध) बने। उनका जन्म स्थान भी महावन था। पद्मपुराण में भी यही कहा है कि यमुना के उत्तर वन समूह पर बलदेव का तथा दक्षिण के वन समूह पर कृष्ण का अधिकार हो गया था।

भविष्य पुराण में दक्षिण तट पर मथुरा तक ६२ वनों की स्थिति है। विष्णु रहस्य में ५५ वनों को भगवान के अंगों के रूप में भासित किया गया है। पर हरिवंश पुराण [१/५५/५४] में १२ वन तथा इनके २४ उपवन (उद्यान) बताये हैं। वनों का सम्बन्ध कृष्ण-बलदेव की लीला से है और उद्यानों का कृष्ण-राधा की लीला से।

ध्यान रहे कि वनों को काटकर नगर बसाने की प्रक्रिया शत्रुघ्न ने प्रारम्भ की थी। हरिवंश पुराण १/५४/५५ में यह भी लिखा है कि उन्होंने मधुवन को ही कटवा कर मथुरापुरी बसाई थी। उनके पुत्र का नाम शूरसेन था। बाद में बलराम ने महावन को कृषि संस्कृति में ढ़ाला। इस वन भूमि में ऋषि-मुनि तपस्या करते रहे हैं। ध्रुव और प्रह्लाद ने भी तपस्या की थी जहां ध्रुव टीला और प्रह्लाद कुण्ड हैं। कुमुदवन तो कपिलमुनि की तपस्थली है। अनुश्रुति है कि व्यास ने सेऊ (शम्य ग्राम) में भागवत लिखी। इस अंचल में सूर्य की पूजा होती थी।

कहा जाता है कि राजा शान्तनु ने सतोहा में सूर्य की उपासना की थी। कामवन में विमल-कुण्ड के पास सूर्य मन्दिर भी है और सूर्य-कुण्ड भी। जसोंदा नामक ग्राम में जशोदा ने सूर्य की उपासना की थी और सुयोग्य पुत्र की प्राप्ति का वर माँगा था। बरसाना, कमई, जाव, कोटवन और छाता में भी सूर्य कुण्ड हैं। स्वयं कृष्ण के गुरु घोर अङ्गिरस जिनके गुरुकुल में कृष्ण पढ़े थे, सूर्य के उपासक थे। सूर्य के स्थान पर बाद में इन्द्र की पूजा प्रारम्भ हुई। इन्द्र भी वैदिक देवता हैं। इन्द्र से भी कृष्ण का विग्रह हुआ था। ब्रज में स्त्रियों में आख्यानक गीत कृष्ण के ऊपर न होकर सूर्य वंशी राजा राम के प्रति ही हैं। विवाह पर गाया जाता है : "अब बैठ गई ज्योनार जनक नृप के अंगना"। धार्मिक गीत भी देवी पर अधिक हैं। पुरुषों के वैवाहिक प्रबन्ध गीत भी राम व सीता से सम्बन्धित हैं। हाँ एक गीत में रुक्मिणी को सीता का अवतार जरूर बताया है।

दूसरी ओर वृन्दावन=वृन्दा तुलसी का नाम है। वृन्दावन में तालवन, बहुलवन, कुमुदवन, छत्रवन, रवादिरवन, कोकिलवन और काम्यवन शामिल थे। [आदि वराहपुराण]। इनमें गूजरों का बाहुल्य था और पशु पालन पेशा था। कृष्ण इनके ही नेता बने थे। इन्हीं वनों के अंक में गोवर्द्धन, नंद गांव, बरसाना, कामवन और घाट प्रस्फुटित हुये। यह मुख्य रूप से ब्रज की पहाड़ियों के अचल का प्रदेश है। इस अचल में इन्द्र की पूजा होती थी। कालान्तर में इन्द्र पराजित भी यहीं हुआ और गोवर्द्धन पर्वत पूजा जाने लगा। इस भूभाग पर भी पहिले अरिष्ट असुर का राज्य था। पर्वत के दूसरे छोर पर जादों-क्षत्रियों का बाहुल्य है। वन्य संस्कृति को उन्हीं ने ग्राम्य संस्कृति में बदला। वे कृषक अधिक थे; अतः पशु-पालक गूजर, जाट व अहीर बस्तियां इधर नहीं पनपीं। पहले यहां शैव व शाक्त पीठ भरे पड़े थे। बाद में वैष्णवी-करण कर दिया गया। शाक्त प्रवृत्तियां राधापरक या सखीपरक वैष्णव शृंगार में परिणत हुई, जैसा बंगाल में हुआ। जादों का प्रावल्य गोवर्द्धन के दूसरे छोर पर राजस्थान की ओर होता चला गया है। गूजर लोग सटे हुये बुलन्दशहर व मेरठ क्षेत्र में बसे हैं।

इसी प्रकार चरण पहाड़ी क्षेत्र में जाट गूजर व जादों बसे हैं। इस चरण पहाड़ी पर एक पैर से खड़े होकर कृष्ण ने त्रिभंग मुद्रा में वेणुवादन किया था। कनिंघम के अनुसार ये कुशान, यूची या तोखारी जातियों से हैं। Archeologial Reports Vol II [पृष्ठ २१]। परन्तु आभीर (अहीर) यहां के मूल निवासी हैं क्योंकि राक्षस राज मधु की बहिन मधुमति का विवाह हर्षश्व से हुआ था। उनके पुत्र का नाम चन्द्र था। उसी से चन्द्र वंश चला। इसी में आगे चलकर कृष्ण जन्मे थे। पर महाभाष्य कार १/४/७५ में लिखते हैं कि आभीर भारत में ईसवी सन से बहुत पूर्व आये थे। यह हर्यश्व का ग्रुप रहा होगा। आभीर जाति कृष्ण के वासुदेव रूप की पोषक है। वासुदेव कनिष्क का भी देवता था। पतंजलि ने वासुदेव को भागवत कहा है। वासुदेव संस्कृति ही बाल कृष्ण की संस्कृति में संक्रमित हो गई। वे राजतंत्र प्रणाली के विरोधी थे। सो आभीर गण अनार्य गण माना जाता है। कृष्ण ने कंस का राजतन्त्र समाप्त किया था। महाभारत के अन्त में हुये राजसूय यज्ञ में उन्होंने राजतन्त्र और गणतन्त्र का समिश्रण किया था। शिशुपाल ने इसका विरोध किया था। बलराम भी कृष्ण के विरुद्ध थे। वे तो प्रारम्भ से ही कौरवों के पक्ष में थे।

हरिवंश पुराण के एक उल्लेख से स्पष्ट होता है कि कृष्ण ब्राह्मण या वैदिक धर्म के समर्थक नहीं थे। [सृष्टि कांड] + उनकी एक घोषणा वहां यों लिखी है "ब्राह्मण यज्ञ करते हैं, कृषक हलयज्ञ करते हैं, मैं बलात गोपूजा आरम्भ करूंगा।" निकटस्थ मत्स्य भी वेद-विरोधी थे। महाभारत सभापर्व ३२/१० में आभीरों को मत्स्यों का मित्र बताया है। गीता में वेद वादरत; विद्वानों की कृष्ण ने निन्दा की है।

परन्तु यह ऐतिहासिक सत्य है कि कृष्ण पर इतना साहित्य लिखा गया है कि पहिले तो वासुदेव कृष्ण को गोपाल कृष्ण में बदल दिया गया। भक्ति परम्परा राधापरक शृंगार में बदल गई। सब वर्गों के

समस्त धार्मिक आचार और अनुष्ठान वाद में प्रस्फुरित भक्ति आन्दोलन में लीन हो गये। कृष्ण का विकास एक गोप के रूप में हुआ। कृष्ण संस्कृति की रसात्मक संरचना अपने से पूर्व के सभी सांस्कृतिक रूपों पर आरोपित हो गई। रास-शृंगार के कृष्ण स्वरूप के विकास में बलराम की आगे जाकर उपेक्षा कर दी गई। बलराम ब्रज के एक क्षेत्र के स्वामी बनकर कृषि प्रवर्त्तक के रूप में ही रह गये। यों ब्रज में दाऊ जी के छोटे-बड़े मन्दिर स्थान-स्थान पर हैं। दाऊ जी मधु और आसव का पान करते थे। दाऊ जी ने अपने हल से यमुना जी के प्रवाह को आकर्षण करके मोड़ा था, तभी से उन्हें संकर्षण कहते हैं।

कृष्ण ने बौद्ध व जैन समय में लगी यज्ञों पर पाबन्दी उठाई और मद्य का कानूनी निषेध कर दिया। जैनों को भागवत धर्म में पुनः दीक्षित कर लिया। इसका उल्लेख पीछे कर आये हैं। इस इतिहास में भी तथ्य है कि अन्त में कृष्ण व बलराम में युद्ध हुआ। और उसमें कृष्ण मारे गये।

मगध तथा गया में बसी माहुरी वैश्यों की एक शाखा के माहुरी वैश्यों की लोक कथाओं में मथुरा-वृन्दावन समाया हुआ है। मथुरा के चौबे उनके यहां संस्कार कराने जाते हैं। विवाहादि पर यज्ञ मंडप के नीचे जमुना की बालू डाली जाती है। और वृन्दावन की समिधाओं से यज्ञ होता है। गया में वैतरणी नदी के तट पर भी इसी मथुरावासिनी देवी का विशाल मन्दिर निर्माण कराया गया है। यह सौभाग्य की बात है कि इस मन्दिर के उद्घाटन के दिन मैं गया में उपस्थित था। वहां मुझे गिरीडीह के श्री गोपालकृष्ण जी वैद्य ने अपने स्वर्गीय चाचा श्री गयाराम जी लिखित पुस्तक भेंट की। श्री गयाराम जी पचम्बा निवासी श्री मोतीराम जी के सुपुत्र थे। १८५४ में कलकत्ता से बी० ए० तथा वकालत पास की थी। ८५ वर्ष की आयु में दिवगत हुये। स्व० श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर उनके गुरु थे। पुस्तक में विहारस्थ माहुरी वैश्यों का उद्भव और पूर्ण इतिहास वर्णित है। इतिहास पुस्तक का नाम माहुरी भूषण है। जनवरी १८९२ के लगभग नवल किशोर प्रेस लखनऊ में मुद्रित हुई है। पुस्तक कविता में है। माहुरी वैश्यों के सारे इतिहास का वर्णन तो मैं बाद में करूंगा, पर मथुरा से निकास वाला भाग यहीं प्रस्तुत करता हूं।—यह पुस्तक मेरे आग्रह पर श्री सदानन्द प्रसाद मदानी ने १९८१ में झुमरी तिलैया में पुनः छपा दी है। प्रथम अध्याय वन्दना का है। फिर कुछ स्तुति हैं, जो सूर्यवंश के भानु महाराज रामचन्द्र की है।

सोरठा—बन्दौ सीताराम, जो नित शंकर उर बसै।
अवध कियो निज धाम, सुर साधुन हित अवतरै॥

इसके बाद कृष्ण स्तुति है :—

मोर मुकुटधारी जो ब्रज के बिहारी,
साज सुन्दर संवारी, संग राधा जाकी प्यारी है।
वृन्दावन सारी जो कीन्हो उजियारी,
रैन रास को बिलास ऐसो माधुरी मुरारी है।

ब्रज भाषा में कविता—ब्रज से १००० मील दूर पर और मगध देश में! यह स्वयं किन्हीं पुराने वंशानुगत संस्कारों के कारण है।

ब्रज के निवासी वैश्यों के बारे में लिखा है :—

चौदह हाट बाट विधि नाना, सुभग अटारी शुचि सोपाना।
धनिक बनिक कत धनद समाना, मणि गरभ लै करत दुकाना॥
ऐसे परम पुनीत पर, जहां वैश्य कुल वास।
मथुरा वसि भये माथुरी, कुल जग भयो प्रकाश ॥६६॥
मथुरा कुल देवी जाके इष्ट देव कृष्ण चन्द्र,
माथुरिया चौबे उपरोहित कहायो।
वृन्दावन लकरी सों यज्ञ को विधान जाको,
धूम्रपान मद्य पान हिंसा बरायो है।

यहां पर मद्य और हिंसा का निषेध, ब्राह्मण व गौ की पूजा रुप वैष्णव कर्म हमारी पूर्व स्थापित मान्यताओं की पुष्टि करते हैं। और अंत में निष्कर्ष निकाला है :—

प्रथम महावर गढव से, फिर मथुरा पुर वास।
एक नाम है माथुरी, फिर माहुरी प्रकाश ॥८॥

महावर गढ़ (पन्ना के पास वाला) फिर मथुरा बसाव का यह क्रम बिहारस्थ स्व० गयाराम जी ने भी लिखा है। माहौर वैश्यों के एक वर्ग ने जो माथुर वैश्य नाम रख लिया है, वह समस्या स्पष्ट हो गई। १६६५ में निर्मित जिस रम्भाशाह के मन्दिर (रजौरा स्थित) और कुंआ परके शिलालेख का निर्माणकर्त्ता के नाम के आगे माथुर फिर कोष्ठक में माहौर लिखा है, का भी स्पष्टीकरण हो गया।

४.०३.०६ मथुरा के इधर उधर बसना

मास्टर गोमती प्रसाद गुप्त (ताजगंज-आगरा निवासी) तथा प्रधान आगरा-जयपुर-प्रान्तस्थ माथुर वैश्य महासभा के सौजन्य से दो पुराने दस्तावेज प्राप्त हुये हैं जिनकी फोटो स्टेट कौपी हमने ले ली थी।

पहली प्लेट में सोरों तीर्थ (गंगा तट पर जिला एटा उत्तर प्रदेश में) के पंडा गोपीनाथ की बही से संवत १७७६ की इन्टरी की प्रतिलिपि निम्न प्रकार है :—

नकल बमूजब असल बही के। पंडा गोपी नाथ थापक सौरों जो संवत १७७६ मिति। सामन दो अधिकमास।

वासो ओर के गाव आगरो ताजगंज तुरसी चौतरा से जाति बनिए माहौर मथुरिआ औरो आ संवत १७७६ मिति अघेन सुदी ११ गंगा जी आऐ साह बेमराज दीनानाथ पंडा के सोफ दीनानाथ के बेटे केसो व पिता दीनानाथ के × × नेमचन्द भाई प्रेम चन्द्र भाई बेमराज भाई लालचन्द साथ स्त्री वा दोबेमराज की स्त्री किशनी के × × है।

दूसरा डोक्यूमैंट ३ फरवरी सन् १८६६ का एक बैनामा है जो किन्हीं महरबान वल्द सीताराम जाट मौजा मनकद जिला आगरा ने एक हकियत मुसम्मी अहमदलाल को मुबलिग १६० रु० में बेची है। उसमें अमरलाल की कौम मथुरिया माहौर लिखी है। यह दस्तावेज भी

माहोरों के मथुरा से निकल कर आगरा क्षेत्र में आ बसने का संकेत करता है। मूल दस्तावेज उर्दू में हैं और मेरे पास सुरक्षित है।

मथुरा त्याग का कारण

जयपुर में वरवा ग्राम निवासी जगाराम रिक्षपाल द्वारा दी गई जो वंशावलि पिछले अध्यायों में दी है, उसमें जगा द्वारा दिये हुये फुटनोट सम्मिलित नहीं हैं—उनका वर्णन यहां करते है। सिन्धुवान के पुत्र महासैनिक कृष्ण के समकालीन थे और उनके साथ कार्य किया था। उनके चार पुत्र निम्न प्रकार मथुरा और उसके बाहर बसे—

सेमस मथुरा में रहा। सेम सुमन भी मथुरा में बसा रहा और उसकी सन्तान मथुरिया माहौर कहलाई। पालि सैनी पाली में बसा और पलिया माहौर कहाया। भीम सेनी मैंसना में बसकर मैंसनियां माहौर कहाया। तदन्तर सेमस के २ पुत्र हुये। मानविन्द तो मथुरा में रहता रहा और गोविन्द ग्वालियर में जा बसा और इसकी सन्तान ग्वारें माहौर कहाई। महासैनी के द्वितीय पुत्र सेम सुमन भी मथुरा में ही रहे थे। उनके तीन पुत्र थे। उनमें एक देवदत्त था। देवदत्त के १३ पुत्र थे। यह वर्ग एटा की ओर जा बसा था। अब पाठक देखिये कि कहां जिला हजारी बाग (बिहार) और कहां जयपुर राज्य। परन्तु मथुरा त्याग के वर्णन का सामञ्जस्य दोनों में है। मथुरा से माहौरों का निष्क्रमण कई लहरों में हुआ है :—

[अ] कृष्ण के पावर में आने के पूर्व कंस के अन्यायों के कारण प्रथम पलायन—पिछले अध्याय में वर्णित माहुरी भूषण के उद्धरण से इस पर प्रकाश पड़ता है :—

नीति विरुद्ध अनेक विधि, देखी कंस की रीति।
कसि बसिहौं यह ग्राम में, जह नित होत अनीति ॥६७॥

× × × ×

यहां धर्म्म निबहै नहीं, अहै दुष्ट के राज।
बसौं जाय तेहि ग्राम में जहं बनिहै सब काज ॥७०॥

परिहरि मथुरा नगर कुल केतनी, बसेउ संकेत ग्राम वैश्य कुल एतनो।
'भद्रवन' वास करि ऊपर वनिक जो, भयेउ धनेपु तुल्य धन के धनिक सो।
'बन करहला' बसेउ जाय दूसरो, भये 'उरमणिकपुर' रहे जत ऊसरो।
तालबन बसि कोई बनिक समाज के, देत लेत करत व्योपार कुलकाज के
कोई 'कनवारो ग्राम' धाम तहां छायेऊ, कुलरीति रीतिकरि संपति। बढायऊ।
'लोह बन' दिउ दुकान जाय अपना, रोग शोक धन हीन कबहुं न सपना।
'नन्दग्राम, वास करि सुखी सब लोग सो,
जानत न कोउ दीन हीन शोक रोग सो।
बहुला बनहु योग्य उत्तम निवास के, धन जन पाय पूरो भये मन आस के।
'अष्टचर' नाम ग्राम बसे कोई जाय के, सुखी सब लोग भये मन सुख पाय के।
बसेऊ 'कुदरवन' जाके मन भायउ, धेनु धन सदन सकल कल पायउ।
कोई 'बरसाना' जानमांनि बर छायऊ, करि व्यवहार धन बहुत बढायेऊ।
ऊपर अलख 'गगानाम ग्राम' धान के, बसेउ बनिक तहां मन सुख पाइके।
'चरण पहाडी' ग्राम सब सुख साज के, सब विधिलायक सुलभ सब काज के।
बसई पुनीत ग्राम नाम सब काम के, बसेउ बनिक रचि रुचिर सोधाम के ।७१॥

यहि विधि मथुरा पुर तजे बसे दुसरे ग्राम।
जाके वास जहां भयो, खाता ताके नाम ॥

यह ध्यान रहे कि यह सारे वन बृहद वन के भाग हैं जो बलराम का क्षेत्र था। यह वृन्दावन के नहीं हैं। यही वह आबादी है जो मथुरा के चारों ओर स्थित वनों और कस्बों में तथा बृजमंडल में फैल गई। ब्रज की आबादी ८४ कोस के व्यास में मानी जाती है।

इत बरहद उत सोनहद, उत सूरसेन को गाम।
ब्रज चौरासी कोस में, मथुरा मडप धाम ॥

प्रायः मथुरा, आगरा, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी, अलवर, मौरेना आदि के जिले ही इस ब्रज के क्षेत्र में आते हैं। मौरेना का पूर्व नाम मोर वन है। इन्हीं जिलों में माहौर वैश्य बसते हैं।

[ब] शेष माहौरों का जरासन्ध के आक्रमण के समय कृष्ण के साथ निष्क्रमण।

जो बहादुर थे वे मथुरा में बसे रहे और कृष्ण के साथ क्रान्ति में शामिल हो गये। कृष्ण ने कंस को मार दिया और कंस के पिता को पुनः राजसिंहासन पर बैठा दिया। निदान इसी समय जरासंध का मथुरा पर आक्रमण हुआ। जरासंध से कृष्ण जी टक्कर नहीं ले सके। उस स्थिति का वर्णन हरिवंश पुराण श्लोक ११४ तथा ३८९ में आया है:-

'जरासंध के साथ हमारा विग्रह हो गया है। यह दुख की बात है। उसके साधन प्रभूत हैं। उसके पास वाहन, पदाति और मित्र भी अनेक हैं। यह मथुरा छोटी जगह है और प्रबल शत्रु इसके दुर्ग को नष्ट किया चाहता है। हम लोग यहां संख्या में भी बहुत बढ़ गये हैं। इस कारण अब हमारा इधर उधर फैलना आवश्यक है।''

इसी भावना का वर्णन महाभारत में भी आया है :—

वय चैव महाराज जरा सधि भयात्तदा।
मथुरा संपरित्यज्य गता द्वारावती पुरीम् ॥
महाभारत अ० २-१३/६५

[जरासन्ध के भय से हम मथुरा छोड़कर अब द्वारिका पुरी को जाते हैं।]

कृष्ण जी ने आज्ञा निकाली कि मथुरा खाली करो। पहिले जिन्हें द्वारिका से बुलाकर लाये थे, उसको घर वापिस चलने को कहा, यह आश्वासन देकर कि अच्छे दिन होने पर फिर यहां आ जावेंगे। बहुत से लोग उनके साथ चले गये। कहते हैं कि वे माहौर जो कंस के अत्याचार के समय भी वहीं डटे रहे थे, अब जरासंध के आक्रमण के समय भी मथुरा छोड़ने को तैयार नहीं हुए। यहां पर इतिहासकारों

ने लिखा है कि यह महान विश्वासघात था और कृष्ण ने इनकी बड़ी भर्त्सना की और सामाजिक बहिष्कार की आज्ञा दी और कहते हैं कि इसी घटना के कारण इस भूभाग में माहौरों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया और उन्हें घृणा से देखा गया। बाद में पाण्डवों ने कृष्ण की सहायता से फिर मथुरा जरासंध से छीनली, पर यह सामाजिक दुराभाव जन्म जन्मान्तर से अभी तक चला आता है।

प्रथम तो बहुत से घराने कृष्ण के साथ चले गये थे और इन्हीं में से कुछ मार्ग में मत्स्य देश अलवर में टिक गये। और कुछ द्वारिका में जाकर मौरे (म्होरे) वैश्य बने। और यदि कुछ रह भी गये तो वे शायद वीरता पूर्वक जरासंध का मुकाबिला करने को रह गये हों, यह भी सम्भव है। और शायद कुछ इसलिये कि उनसे अपना घर बार और सम्पति न छोड़ी जा सकी हो। १९४७ में भी भारत का राजनैतिक बटवारा होने पर ४ करोड़ के लगभग हिन्दु ईस्ट पाकिस्तान में और ८ करोड़ मुस्लिम भारत में रह गये थे।

मथुरा न छोड़ने का कारण महाभारत के सभापर्व अध्याय १४ में सम्राट कैसे बनता है, की व्याख्या करते हुये श्रीकृष्ण के कुछ विचार प्रतीत होते हैं, जो निम्न प्रकार हैं :—

"पहले जब परशुराम ने क्षत्रियों का संहार किया था, उस समय जो लोग भाग कर छिप गये थे, उन्हीं की संतान यह बचे हुये क्षत्रिय हैं। सो वे क्षात्र-तेज-हीन हैं। उन्होंने निश्चय किया कि जो बलवान राजा औरों को जीतेगा, उसी को हम सम्राट मानेंगे। इस समय जरासिन्धु बलवान है, पृथ्वी के सब ऐल और इक्ष्वाकु राजा उसे कर देते हैं। ऐल और इक्ष्वाकु राजाओं के सौ कुल हैं। उनमें भोजकुल के राजा बलिष्ठ हैं और जरासिन्धु ने सब को पादाक्रान्त किया है। उसी के भय से हम लोग मथुरा छोड़कर द्वारिका जा रहे हैं।' जरासिन्धु इक्ष्वाकु कुल का राजा था जो सूर्यवंशी थे। माहौरों ने सोचा कि सूर्यवंशीयों का पलड़ा फिर भारी हो रहा है। यहीं डटे रहना चाहिये। परन्तु अंत में जब पाण्डव सम्राट हुये तो उन्हें इसके बदले में अन्याय सहने पड़े।"

एक बात स्पष्ट है कि मथुरा में बहुत थोड़े माहौर रह गये थे। पहले वे बलराम के वृन्दावन वाले भाग के वृन्दवनों में चले गये थे।

कृष्ण ने उक्त कारणों से वैश्य का दर्जा ही समाज में कम करने का प्रयत्न किया। वैश्य के कर्म में खेती और गोपालन को बात सबसे पहिले गीता में ही जोड़ी गई है। यही नहीं, मुझे गीता का एक स्थल और खटकता है।

मां ही पार्थ ! व्यपाश्रीत्य येऽपि स्युः पापयोनिमः।
स्त्रियो वैश्यास्तया शुद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम॥

ए, पार्थ ये जो मेरी शरण में आते हैं चाहे वे पाप योनी और शूद्र,वैश्य और स्त्री ही हों, उनका निस्तार हो जाता है।

उस समय की राजनैतिक स्थिति का इस श्लोक में प्रभाव है। और राजनैतिक उद्देश्यों के न मिलने से कुछ माहौरों को कृष्ण की की खिलाफत मोल लेनी पड़ी थी। आभीर और गुजर अभारतीय जातियां थीं जिनके कृष्ण वंशज थे। माहौर इसी भूमि की संतान थे। इस विरोध का बाद में सम्प्रदाय रूप में परिणित कृष्ण-भक्ति के दार्शनिक सिद्धान्त से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह तो वैष्णवों का आविष्कार था, सो माहौरों ने उसे मान लिया और वैष्णव बने रहे। साहित्यिकों ने कृष्ण को विष्णु का अवतार प्रसिद्ध कर दिया।

माहौरों के निकास—विकास का यही क्रम माथुर वैश्य उपवर्ग के इतिहासकार श्री जगदीश प्रसाद गुप्त ने पत्रिका माथुर वैश्य संदेश के अक्तु० नव० १९५६ के अंक में प्रकाशित किया था।

(स) शेष माहौरों का मथुरा से व्योपारार्थ बिहार की ओर प्रयाण—

इतिहासकार मजूमदार और अटेकर ने अपनी पुस्तक न्यू हिस्टरी आफ इण्डियन प्युपिल के ६ठे संस्करण में पृष्ठ ४२ पर इस प्रकार लिखा है। "मघ राजा कौत्सी पुत्र पोटसिरि के राज्य काल सन् १४०—१७० ई० में माथुर व्योपारी मघों की राजधानी बांधवगढ़ गये, जहां उनके द्वारा कई धार्मिक कार्य निष्पन्न किये गये।" इससे सिद्ध हुआ कि माहौर व्योपारार्थ दूर दूर जाते रहे हैं।

इसी प्रकार उक्त स्व० गयाराम जी की पुस्तक में वर्णन है कि कैसे उसी परम्परा में व्योपारिक वस्तुओं से लदा एक जहाज लेकर व्योपारी मगध पहुंचे, कैसे वहां के सूबेदार विठ्टल द्वारा पटना पहुंचने पर वह जहाज लुटवा लिया गया। वे लोग धन-हीन होने पर वहीं बिहार में बस गये। उन्हें वहां माहुरी वैश्य कहते हैं। उस कविता मय वृतान्त का सारांश यह है :—

श्री महानन्द साहु सेठ और श्री भद्दू राम वणिक गया पहुंचे थे। वहां उन्होंने बहुत दान देकर पिण्डदान किया। अस्तु अब तक पंडा लोग प्रत्येक यात्री से एक पिण्डदान इन लोगों का भी कराते हैं। यह लोग मुख्यत: व्यापार के लिये पट-शाल-दुशाले-मलमल जड़ित जराव युक्त चूनरी, भूषण, हीरा, हेम, मुन्दरी इत्यादि सौदा लेकर पटना पहुंचे। बिहार के सूबेदार बिठ्ठल ने इनका सब सौदा सामान छीन लिया और मूल्य नहीं दिया। तब इन्होंने देहली जाकर बादशाह के यहां दरर्वास्त दी। बादशाह ने मलिक वैयों को सेना देकर भेजा। विठ्ठल के साथ छोटा सा युद्ध हुआ। उसमें विठ्ठल सूबेदार मारा गया। तब व्योपारियों का सारा सामानादि वापिस दिला दिया गया। तभी से माहुरियों में मलिक वैयो का सम्मान है। तब भद्दूराम ने यहीं व्यवसाय प्रारम्भ किया और वह परिवार भदानी कहलाया।' मलिक वैयो ग्वालियर राज्य का रिटायर्ड जनरल था। और यह घटना १५७० ई० केआस-पास है।

माहुरी वैश्यों का बिहार-उड़ीसा तक फैलाव।

सन् १८७५ ई० में भारत सरकार के तत्कालीन स्टेटिस्टीकल विभाग के डाइरेक्टर जनरल ने १८७१ की जनगणना की रिपोर्ट प्रकाशित की थी। उसके कई खण्डों में बिहार, बंगाल तथा बिहार में माहुरियों की जनसंख्या इस प्रकार लिखी है :—[देखो ट्राइब्स एण्ड कास्टस आफ बंगाल खण्ड - १ पृष्ठ — ४]:—

पुस्तकएस्टेटिस्टीकल एकाउन्ट आफ बंगाल १८३५ ई० में छपी। हुगली –४, बांकुडा –२१, वीरभूम–९५, मुर्शिदाबाद – ४, पटना

– ८९४६, सारन – ७२ गया – ८५५२, तिरहुत – २७, चम्पारन – ७८, भागलपुर –३६ मुंगेर – २२०६, पूर्णियां – २५५, हजारीबाग –१५४३, लोहरदगा – २, सिंहभूम – १०५९, मानभूम ११, शिवसागर आसाम– १०, कुल– २२९२४। इस सूची से प्रकट है कि व्यापार की तलाश में हमारे पुरखे कितनी दूर तक जाकर फैलते रहे हैं। इसी लेखक ने वैश्यों की इन उपजाति के इतिहास पर अगले अध्याय में कुछ लिखा है। बंगाल की मर्दम शुमारी की रिपोर्ट खण्ड ३–६–९ में बंगाल में बसने वाले माहुरियों के बारे में लिखा है :–खण्ड ३ –हुगली जिले में वैश्य उपजाति नं० २३ – माहुरी–ऐन अप कन्ट्री ट्रेडिंग कास्ट–देश के उत्तरी भाग (अब के उत्तर प्रदेश) की एक व्यापारिक जाति। माहुरी —इनकी संख्या चम्पारन में ७८ है। यह संख्यायें शेष भारत की कुल आबादी के अनुपात से ही १०० वर्ष में बढ़ कर लाखों लाख की हो गई हैं।

इस अंचल के निम्न शहरों में इनकी आबादी है।

झुमरी तिलैया, सिलाव, राजग्रह, नालन्दा कतरास गढ़, झरिया, रानीगंज, जमशेदपुर, टाटानगर, हरदीपोखर, कुसुमबन्दी, रायरङ्गपुर, खुरदारोड, जसीपुर, करंजिया, कोरूआ, चाइबासा, राजगंगपुर, रांची, झोंपड़ा, कलकत्ता, बेला, मखदूमपुर, देइटा, जहानाबाद, पटना, खिजरसराय, खुदागंज, गया, गोबिन्दपुर, फतेहपुर, लखीसराय, वजीरगंज, महुकलबाजार हसुआ, विजूनगीहा, रजौली, अकबरपुर, कुहलिया, नवादा, वारसलीगंज, इसलामपुर बिहार शरीफ, हिलसा, शेखपुरा, वरबिगहा आदि। यहां के जाति भाई अपने नामों के आगे जिन उपनामों को लगाते हैं वे ये हैं :—

गुप्ता, आर्य, लोहानी, अठघरा, नवदिया, कपसिमे, भदानी कन्धवे, बरहपुरिया, बड़गवे, तरवे, कुटरयार, वरबिधइया, पवनचौदह, कर्वे, वैशकियार, आदि। यह नाम अधिकतर उन ग्रामों पर हैं, जहां के वे रहने वाले हैं। कुछेक गोत्र सम्बन्धी भी हैं।

यहां के लोगों का मुख्य करोबार जमींदारी (जो अब समाप्त हो गई है), काश्तकारी, दुकानदारी मुख्य रूप से कपड़े का खुदरा व्यापार, महाजनी, सर्विस, खडसारी, खनिज पदार्थ अभ्रक आदि का व्यापार आदि। यह सब वही व्यापार हैं जो पश्चिम के लोग करते हैं।

४.०४ माहौरों का राजस्थान में बसना

पिछले वर्णन में यह स्पष्ट हो गया है कि कृष्ण महाराज के समय मथुरा से लोग राजस्थान के मार्ग से द्वारिका गये थे। इस आबादी के स्थान परिवर्तन में कुछ लोग मार्ग में राजस्थान में बस गये और महावर कहलाये। राजस्थानी भाषा में व का अधिक प्रयोग होने से माहौर का महावर करके ही उच्चारण होगा। महावर जातीय इतिहास नाम से दो पुस्तकें श्री रामचन्द्र गुप्त जरनलिस्ट जाट बहरोड़ (गुड़गांव) निवासी ने लिखी हैं। यह पुस्तकें देहली में १९३९ में छपीं। इनके विवरण लगभग वे ही हैं जो मैं इन पृष्ठों में लिख आया हूं। महा + उरू से शब्द बनना, महौर गढ़ और मथुरा में से निकास आदि इन्हें सब मान्य हैं। यह भी सूर्यवंश से सम्बन्ध मानते हैं। इस पुस्तक के पृष्ठ ३३ पर श्री रामचन्द्र जी लिखते हैं:

(१) "महावरों का असली निकास महौर गढ़ जो बरार प्रदेश में हैं, से है वहां पर युगों से तीर्थ वर्तमान है। महाउरू की सन्तानों ने महावर देश छोड़कर मथुरा में निवास किया। इनके पूर्वज मथुरापुरी के बीच महावर पौरि में आकर बसे। यही मत धर्मप्रकाश पुस्तक में दिया है, जो १९१० ई० में २७ मनुमार्ग अलवर में छपी थी। इसी प्रकार १९६१ में महावर वैश्य महासभा के प्रधान श्री सेठ कृष्ण नारायण (कानपुर) ने "महावर वैश्योत्पत्ति" नामक पुस्तक लिखी है। उसमें मांगी लाल कन्हैया लाल जागा का लेख है कि सम्वत् २२२ में माथू जी का निकास माहौरी पौरि मथुरा से हुआ। जगा ने ८४ गोत्र गिनाकर लिखा है कि इनमें से ४० महावरों के हैं और ४४ ऊंचा गाँव के माहौरों के हैं।

अलवर के महावर वैश्य

अलवर राज्य के पोलिटिकल ऐजेन्ट मेजर पैलट ने १८७६ में अलवर राज्य का गजेटियर प्रकाशित कराया था। उसमें उल्लेख है कि मुन्डावर तहसील में माहौर (MAHOR) उपजाति वैश्यों की रहती है जो अन्य वैश्य उपवर्गों से अधिक आदर का पात्र है। उच्चारण भेद से ही माहौर का महावर बोला जाता है। ज्यों ज्यों इतिहास प्रकाश मे आया इन महावरों और यू० पी० के माहौरों में परस्पर सम्बन्ध होने लगे। महावर वैश्य महासभा ने १९३८ में एक कमेटी की स्थापना की जिसने यू० पी० के इन जिलों का दौरा किया और एक रिपोर्ट इस कमेटी ने पेश की। यह रिपोर्ट १९३९ की है जब कि जाति बन्धन इतने ढीले नहीं हुये थे और हर वर्ग में दकियानूस लोग उपस्थित थे। इस कमेटी के प्रस्तोता बाबू काशीराम गुप्ता बाद में लोक सभा के सदस्य तक हुये, अतः इस रिपोर्ट का अपना पृथक महत्वत है।

४.०४.०१ गुजरात में बसाव

कृष्ण महाराज के द्वारिका प्रव्रजन पर कुछ माहौर वैश्य गुजरात पहुंच कर वहां बस गये। उच्चारण भेद से उन्हें म्होड वैश्य कहते हैं। गुजरात एवं काठियावाड़ में बसने वाले मोड़ बनिओं और साथ ही मोढ़ ब्राह्मणों की उत्पत्ति का वृतान्त पद्म पुराण के पाताल खन्ड और ब्राह्मण उत्पत्ति–मार्तण्ड नामक पुस्तक में दिया हुआ है। 'जाति भास्कर, ग्रंथ में भी इसका उल्लेख पाया जाता है। पहिले यह शब्द म्होड़ बोला जाता था और उनका निवास स्थान "माहौरपुर' दिया है जो दक्षिण में बताया है। म्होड़ बिगड़कर सर्व साधारण की बोली में उसे मोढ़ या मोर कहते हैं। उत्तर प्रदेश में माहुर–माहौर, या माथुर, राजस्थान में महावर, बिहार में माहुरी गुजरात में मोढ़ या मोर एक ही जाति की विभिन्न शाखा और भेद हैं। वस्तुतः जाति एक ही है।

जैसे मथुरा में माहौर वैश्य तथा ब्राह्मण हैं' वैसे ही गुजरात में भी म्होड़ वैश्य एवं म्होड़ ब्राह्मण हैं। उन्हें एक ग्राम गुजरात के

चावड़ा वंश के संस्थापक बनराज नरेश ने दान दिया था जिस का नाम मोढेरा पड़ गया था। अलाउद्दीन खिलजी ने अलफ खां को अणहलवाडा की विजय हेतु भेजा था। सन् १३०० ईस्वी में उस ने उस पर विजय करके कमला देवी रानी सहित राजा भीम वघेला का सर्वस्व लूट लिया था। तदन्तर आस-पास के मण्डलों को हस्तगत करने जब वह आगे बढ़ा तो पहिला युद्ध मोढेरा में ही हुआ था। इतिहासकार ब्रजलाल कालिदास शास्त्री लिखते हैं कि मोढ़ ब्राह्मण ३६ प्रकार के दण्डादण्डी युद्ध-शास्त्र और ६४ कलाओं में पारंगत थे। माण्डव्य गोत्रीय विट्ठलेश्वर इनका मुखिया था। दिवाली के दिन से होली तक यह वहाँ डटे रहे। तब गुजरात के राजा भीम के विश्वासघाती मंत्री माधव ने ५००० मुहरों के युद्ध व्यय का हरजाना दिला कर अलफखां को वापिस कर दिया। परन्तु मुसलमानों ने बहाना बना कर रात ही में नगर पर रात्री में धावा बोल दिया। तब सब मोढ़ ब्राह्मण मोढ़ेरा छोड़कर साबरमती के किनारे जा बसे। मुसलमानों ने मोढ़ेरा के कोट और देवालयों को नष्ट कर दिया और अनेकों को जबरदस्ती मुसलमान बना लिया। बहुत से मोढ़ ब्राह्मण निकल-निकल कर अलग-अलग स्थानों पर जा बसे। शान्ति होने पर विट्ठलेश्वर को कुछ गांव गुजारे के लिये दे दिये गये थे। (वहीं-पृष्ठ-३५८-३६०)

४·०४.०२ म्होड़ों के प्रमुख पुरुष। (१) महात्मागांधी

स्व० महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी मोढ़ बनिये थे। मोढ़ बनियों के रीति रिवाज, निरामिषता, जातीय-पंचायत, अहिंसक-प्रवृत्ति और जैन-सम्पर्क के विषय में महात्मा गांधी जी द्वारा लिखित उनके आत्म चरित्र में कुछ वर्णन आये हैं, जिन्हें हम उदधृत करते हैं और जिनसे निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं :—

गांधी जी की आत्म कथा (अनुवादक हरिभाऊ उपाध्याय)

भाग १—पृष्ठ १

गांधी—कुटुम्ब जान पड़ता है पहिले पंसारी का धन्धा करता था, पर मेरे दादा से लगाकर तीन पीढ़ियों से तो वह दीवानगीरी करता आया है।

अध्याय १२-बिरादरी से बाहर-पृष्ठ ५७- माता की अनुज्ञा की और आशीर्वाद लेकर मैं विदेश जाने के लिये बम्बई जा पहुंचा।

इसी बीच में खलबली मची। पंचायत बुलाई गई। कोई मोढ़ बनियां अब तक विलायत नहीं गया था और मैं जा रहा या तो मुझ से जवाब तलबी होनी चाहिये। मुझे पंचायत में हाजिर होने का हुक्म हुआ।

अध्याय—६ पृष्ठ ३६—एक दुःखद प्रसंग-गांधी कुटुम्ब वैष्णव सम्प्रदायी था। माता-पिता बड़े पक्के वैष्णव थे। नित्य हवेली जाते थे। अनेक मन्दिर तो हमारे कुटुम्ब के कहे जा सकते हैं। गुजरात में इस सम्प्रदाय का बड़ा जोर था। उनका प्रभाव हर प्रवृत्ति पर था। सो मांसाहारी का विरोध और तिरस्कार जैसा गुजरात में और जैनों तथा वैष्णवों में देखा जाता है, वैसा हिन्दुस्तान में या सारी दुनिया में और कहीं नहीं दिखाई देता। मैं इन्हीं संस्कारों में पला था।

अध्याय १२ पृष्ठ ५६

विलायत जाने की तैयारी—

'माँ ने विलायत जाने के बारे पूछने पर कहा कि बेचर जी स्वामी से पूछूंगी। बेचर जी स्वामी मोढ़बनिये थे। बाद में वे जैन साधू हो गए थे।

पुस्तक के भाग दो में विलायत से बैरिस्ट्री पास करके लौटने के बाद की चर्चा करते हुए गांधी जी लिखते हैं कि उनके जातीय बहिष्कार को लेकर—

'जाति का झगडा खड़ा ही था। दो दल हो गए थे। एक पक्ष ने मुझे तुरन्त बिरादरी में मिला लिया, दूसरा न लेने पर अड़ा रहा। बिरादरी ने मिलाने वाले पक्ष के सन्तोष के लिए राजकोट से जाने से पहले मुझे नासिक ले गए। वहाँ गंगा स्नान कराया गया। मुझे इस कार्य में कोई रस न आया।

जाति च्युत रखने वाले धड़े में प्रवेश करने का मैंने यत्न न किया। मैं बिरादरी के उस विभाग से बाकायदा बहिष्कृत माना जाता हूं, फिर भी उसने मुझे मान और उदार व्यवहार पाने का है ही अनुभव है।

उक्त वर्णन से मोढ़ों का माहोरों से सानिध्य स्वंय सिद्ध है। गांधी जी सारे जीवन में केवल एक जातीय सभा के अधिवेशन में गये और वह बिहार के माहुरों वैश्यों का उत्सव था जिसका वर्णन आगे दिया जा रहा है।

माहुरी महामण्डल में श्री गांधी जी

हजारीबाग महामण्डल का एक अधिवेशन स्थान खरगडीहा में हुआ। देशबन्धु कोष के लिए माहुरी महा मण्डल ने १०००) रुपये की थैली श्री गांधी को भेंट की तथा एक मानपत्र भी दिया।

३-१०-१९२५ को ६।। बजे महात्मा जी गिरीडीह पचम्बा होते हुए मोटर द्वारा खरगडीहा डाक बंगले में पहुंचे। जब महात्मा गांधी ने देशबन्धु कोष के लिये पैसा मांगा। देशबन्धु कोष के लिये जेवर मांगने पर कई स्त्रियों ने अपने कुछ आभूषण दे दिये।

सभा मंच पर बाबू राजेन्द्र प्रसाद एवं कृष्ण बल्लभ सहाय आदि सज्जन उपस्थित थे। प्राय: ४ बजे महात्मा जी का गोशाला टांड में शुभागमन हुआ। उपस्थिति लगभग ८ हजार की थी।

मंच पर आसीन होने के बाद एक अभिनन्दन पत्र श्री बबू टेकनारायण राम (मंत्री माहुरी महा मण्डल) की ओर से पढ़ कर अर्पित किया गया और श्री टेकनारायण जी ने एक हजार रूपये की थैली भी भेंट की उत्तर में गांधी जी ने कहा है :—

यह हमारा पहिला ही बार है कि माहुरियों से मुलाकत हुई है। सुनकर मुझे बड़ा हर्ष होता है कि आप लोगों ने अपनी जातीय संस्था में चरखे तथा खद्दर को स्थान दिया है तथा उसमें आपने कुछ उन्नति भी की है।

महात्मा गांधी का वक्तव्य

ता० १५-१०-१९२५ के साप्ताहिक 'देश' में महात्मा गांधी लिखते हैं। "इसी जगह खड़गडीहा में माहुरियों से मुलाकात हुई। ये वैश्य हैं। कई पीढ़ियों पहिले मथुरा और उसके आस पास के मुहल्लों से घूमाते हुये आकर ये बिहार में बस गये। ये धनी और उत्साही हैं। प्रधान धन्धा व्यापार है। ये खद्दर पहिनते हैं। ये राजनीति में भाग नहीं लेते; पर अपने समाज में सुधार करने पर उतारु हैं।

४.०५ धर्म परक इतिहास

माहौर वैश्य जाति का जैन धर्म प्रवेश—हैहयों और परशुराम की युद्धाग्नि से बचने हेतु वे क्षत्रियत्व से वैश्यत्व की ओर गये और फिर ब्राह्मणों के अनुशासन से बचने तथा यज्ञों की पशुबलि और आखेटों की हत्या से बचने के लिये वे जैन हो गये। जन ऋषि ऋषम देव को जैन साहित्य ने महाराजा दशरथ का सौतेला भाई लिखा है। वे सूर्य वंशोय थे। अत: सूय वंशी माहौर कालक्रम में उनके जैन धर्म में दीक्षित हो गये।

हैहय-यादव नरेश जैन विरोधी थे। उन्होंने जैन मन्दिरों की भूमि शैव मन्दिरों को दे दी थी।

[जैन इतिहास भाग ३, खण्ड ४, लेखक बाबू कामता प्रसाद जैन अलीगंज, एटा]

सूर्यवंशियों को पादाक्रान्त करने वाले हैहय वंशीय यदु बाद में सुरा के निर्माता बने। उनके यज्ञादि में पशुबलि के उपरान्त बचा मांस खाना भी चालू हो गया। अत। अहिंसक वृत्तीय माहौरों को बौद्ध जैन धर्म की निम्न घोषणा ने आकृष्ट किया।

1) मद्य मांस पलांडुश्च न क्षयेयं महासुने।
वोधिसत्वेर्महासत्वै भाषादभिजिन पुंगवे।
मांसानि च पलाडश्च मद्योन विविधानि च।
गृजनं लशनंमैव योगी नित्य नित्य विवर्जयत्"

[लका सूत्र द्वारा BUNYN NANGOS M.A. D.LITT. OTTAM UNIVERSITY JAPAN जिससे 443 AD में गुणभद्र द्वारा लिखित सूत्र से अनुवाद किया।

अर्थ—आत्म-विजयी लोगों ने कहा है कि बुद्ध सत्व शराब मांस और प्याज नहीं खाते थे। उपासक को सदा मांस, शराब, प्याज व लहसुन से दूर रहना चाहिये।

2) पंच इमा भिक्खने वणिज्जा उपासकेन अकरणीयः।
कतमे पच सत्य वणिज्या।

[अनगुतुर निकाय 5/177]

अर्थ—पांच व्यापार अकरणीय है :—

1) अस्त्र शस्त्र व्यापार 2) मांस 3) शराब 4) विष 5) जीवित-पशु।

3) रसजानां च बहूनाम जीवानाम् दानिरिष्यते मद्यं।
मध भजतां तेषा हिंसा सजायतेऽवध्यं ॥

[जैन समय सार अ०2 श्लोक ६३]

माहौर वैश्यों में उक्त मान्यताओं को मूल रूप से माना जाना उनके कभी जैन हो जाने का स्पष्ट प्रमाण है।

४.०५.०२ कालान्तर में भगवान कृष्ण द्वारा अपने राज्यकाल में सुधार के कई कानून बनाये। गीता में शरीर को कष्ट देने वाले कर्मकाण्ड और हिंसा-मय होने से यज्ञों का भी विरोध किया गया है। कृष्ण ने यादव होते हुये भी वैष्णव परम्परा को अपनाया। उनके समय में बने पारस्कर के गृह्य सूत्रों में सप्तपदी के समय विष्णु की प्रार्थना फिर प्रारम्भ की गई, यद्यपि आप स्तम्भ सूत्रों में उसका नाम नहीं था। महात्मा कृष्ण ने एक भरा पूरा प्रयत्न शराब बन्दी का भी किया। द्वारिका में राज्य करते समय उन्होंने शराब बन्दी के कानून बनाये थे।

तुलनात्मक धर्म विज्ञान; गुरुकुल विश्व विद्यालय हरिद्वार के प्रो० श्री चमूपति जी एम०ए० अपनी 'योगेश्वर कृष्ण' नामक पुस्तक के पृष्ठ ३३० पर लिखते हैं—मद्यपान की यादवों में बड़ी लत थी। सौम नगर के राजा शाल्व की चढ़ाई के समय इसकी मनाही कर दी गई थी। एक बार फिर आहुक, बभ्रु, कृष्ण इन सबके नामों से राष्ट्र भर में विज्ञप्ति कराई गई थी कि मद्य-निर्माण राजाज्ञा से वर्जित है और जो आज से मद्य पान करेगा उसे बान्धवों सहित प्राण दण्ड दिलाया जायगा। मौसल-पर्व १५/२८ से ३१ में इसका वर्णन यों है—

अधोषयश्च नगरे वाचनादाहुकस्य च।
जनार्दनस्य रामस्य बभ्रोश्चैव महात्मनः ॥
अद्य प्रभृति सर्वेषु वृष्णयन्धक कुलेष्विद।
सुराजवो न कर्तव्यः सर्वैर्नगर वासिभिः ॥
यश्चनो विदित कुर्यात् पेयं कश्चिनरः क्वचित्।
जोवन सशूलम.रोहेत स्वय कृत्वा सबान्धवः ॥
ततो राजभयात सव नियम मंचक्रिरे तदा।
नराः शासनमाज्ञाप रामस्याविलष्ट कर्मणः ॥

महाभारत के वनपर्व में भी इसका वर्णन (१५/१२) यों आया है:-

आघोषितं च नगरे न पातव्या सुरेति वै।

फलतः सारे देश में धर्म-परिवर्तन की लहर दौड़ गई। लोग धड़ाधड़ जैन धर्म छोड़कर वैष्णव धर्म में वापिस आने लगे। अनेकों ने उनके साथ जाकर उत्तर में बसना कबूल नहीं किया। क्योंकि सौराष्ट्र ने उनके सुधारों को कबूल नहीं किया। परन्तु जब इसका प्रभाव शीघ्र नहीं हुआ तो कृष्ण हस्तिनापुर की ओर चले पड़े। उनके साथ माहौर महाजन भी थे। जैमिनी पुराण में इस प्रस्थान का वर्णन है। अ० १० में श्लोक ३० से ५४ तक उन सबका उल्लेख है जो कृष्ण के साथ गये थे। उनकी लिस्ट इस प्रकार है:—

वेदव-ब्राह्मण, धनयुक्त-महाजन, कांसे के बर्तन बेचने वाले, जौहरी, अन्न बेचने वाले, बजाज, तबोली, माली, पटवा, तेली, अस्त्रज्ञ, कुम्हार, कहार, नट, बन्दीजन, मदिरा बनाने वाले (जिन्होंने इस व्यवसाय को छोड़ने की प्रतिज्ञा की थी), धर्मकार, योद्धा, लड़के पढाने वाले कायस्थ, नाऊ, दासी, सूती, गोड़िया। अध्याय १२ श्लोक में लिखा है कि जब महाराज युधिष्ठिर उन्हें स्वागत करने गये तो उनके साथ भी महाजन आये थे। सम्भवतः यह महाजन वे थे जो महोर देश में आकर पहले बस गये थे और अपने नये आगन्तुक पर पुराने सह-देशवासियों की अगवानी करने गये थे।

बेचारे कृष्ण को जन्म भर युद्ध करने पड़े। जरासन्ध के आक्रमणों के कारण उन्हें एक बार फिर मथुरा छोड़नी पड़ी। पर इस बार वे सब लोग उनके साथ पुनः द्वारिका नहीं गये जिन्हें वहाँ से वे साथ लाये थे। कृष्ण न जाने वालों पर नाराज भी हुये और उनसे कहा कि तुम बनी के साथी बनियां हो, बुरे दिन के साथी नहीं हो। बाद में इस घटना के ही कारण अन्य सब लोग बनियों से घृणा करते रहे।

कृष्ण जी पुनः द्वारिका लौट गये। उनकी गैर हाजिरी में उच्छृंखल यादवों ने सुरा के व्यसन को फिर बढ़ा लिया था। एक दिन प्रभास नगर में सभी इकट्ठे हुए। यदुओं में गृह युद्ध शुरु हो गया। किसी शिकारी के बाण से कृष्ण घायल हो गये और वे चल बसे, परन्तु असख्य जैनों को वैष्णव बनाकर। जैन ग्रन्थों में इसका बृहद उल्लेख है।

४.०५.०२ जैन प्रसार की दूसरी लहर १० वीं शताब्दी में आई

जैन धर्म के प्रसार-काल में लगभग दसवीं शताब्दी में जैनाचार्य 'श्री हेमचन्द्र सूरि अपनी शिष्य-मंडली के साथ मथुरा पधारे और वहां की जनता को जैन धर्म में दीक्षित किया। जैन धर्म में हिंसा वर्जित है और क्षत्री धर्म में रत रहकर उससे दूर नहीं रहा जा सकता था। अतः जीविका हेतु वैश्य वृत्ति अपनानी पड़ी। 'महाजन वंश मुक्तावली' में एक चार्ट पृष्ठ १६४ पर दिया गया है, जिसमें १६ ऋषियों के नाम, उनके नख, गोत्र, वेद, प्रवर, शाखा, क्षेत्र, वत्स, माता, मेरू, गणेश सहित लिखे हुए हैं। इनमें सबसे पहला नाम 'माथुर' ऋषि का है, जिनका नख-'मथुरिया', गोत्र-'कश्यप,' वेद-'ऋग', प्रवर-'त्रि', शाखा-'कोथमी', क्षेत्र-'जगन्नाथ', वास-'मथुरा' माता-'सच्चाय', भेरू-'रूरू', गणेश-'एक दन्त', बतलाये हैं। इससे प्रकट है कि ऋषि परम्परा में इनका गोत्र कश्यप है तथा प्रवर 'तीनवारे' है। दसवीं शताब्दी के लगभग 'माथुर' ऋषि होने का प्रमाण 'अमितगत श्रावकाचार्य' नामक जैन धर्म की पुस्तक से भी मिल जाता है। जैन धर्म में दीक्षित होने वालों की भी ऐसी परम्परा सी रही है कि जिस आचार्य से वह जैन धर्म की दीक्षा लेते थे, अपनी जाति के गोत्र का नाम उन्हीं के नाम के आधार पर रख लेते थे। इस प्रकार यह माहौर-क्षत्री-जाति क्षत्री कर्म को छोड़कर वैश्य वृत्ति करने लगी। इन्हीं कारणों से कुछ माहौर अपने नाम और जाति के आगे 'माथुर' शब्द भी लगाने लगे हैं।

४.०५.०३ जैन धर्म प्रसार में म्होड़ कुलोत्पन्न हेमचन्द सूरि का योगदान

विक्रम सम्वत् ११९९ में सिद्धराज जयसिंह के बाद पाटण (गुजरात) की गद्दी पर कुमार पाल बैठा। हेमचन्द सूरि उन्हीं के कुल में हुये थे। वे मोढ़ बनिये थे और गुजरात की दक्षिणी सीमा पर अर्द्धाष्टम देश में धुंधुका ग्राम के रहने वाले थे। देवचन्द्राचार्य उन्हें उसकी माँ से दीक्षा हेतु माँग लाये थे और राज्य मन्त्री उदयन ने उन्हें जैन धर्म की दीक्षा देकर नाम हेमचन्द रक्खा था उनके गुरु ने सूरि की पदवी दी थी उनके द्वारा लिखी पुस्तकों के नाम यों हैं:—

अभिधान चिन्तामणि, जिनदेव स्तोत्र, पवित्र योगशास्त्र, विंशति वीतराग स्तोत्र, द्वयाश्रय, योगानुशासन, अनेकार्थ कोष, अलंकार चूड़ामणि, उणादि सूत्र-वृत्ति, छंदानुशासन, शेषदेशीनाम माला, रत्नावली, धातुपाठ और वृत्ति, बलाबल सूत्र, शेष संग्रह सारोद्धार, लिंगानुशासन, परिशिष्टपर्व हेमन्यार्थमंजूषा संस्कृत द्वयाश्रय, महावीर द्वात्रिंशिका, पांडव-चरित्र, जातिव्यावृत्ति, उपदेशमाला, गणपाठ।

वे सूर्य के भक्त थे। राजा कुमार पाल द्वारा सूर्य की उपेक्षा के दोष उत्तर देते हुये उन्होंने कहा था।

अधाम धामधामाकं वयमेव हृदिस्थितम्।
यस्यास्तव्यसने ज्ञातेत्यजामो भोजनं यतः॥

[तेज में महिमावान भंडार सूर्य को मैं निरन्तर अपने हृदय में रखता हूं। और उसके अस्त होने पर मुझे इतना दुख होता है कि मैं भोजन नहीं करता हूं।]

उन्हीं के सुझाव पर कुमार पाल ने देवपट्टण स्थित सोमेश्वर के काष्ठमय देवालय का जीर्णोद्धार कराया था। इसे सोम अर्थात चन्द्रमा ने सोने का बनाया था। रावण ने इसे चाँदी से बनवाया था। वह लिंग मक्का के मनात नामक लिंग जैसा था।

हेमचन्द्र सूरि ने कुमार पाल राजा के सानिध्य में ही जीर्णोद्धार के समापन के समय द्विअर्थक श्लोकों से सोमनाथ महादेव की स्तुति की थी। वहीं चमत्कार दिखाकर उसने राजा से आजन्म मद्यमांस त्यागने की प्रतिज्ञा कराई थी। कुमार पाल की आज्ञा से लंका तक फैले उसके राज्य में जीव-हिंसा की मनाही कर दी गई थी। उसने यज्ञ में पशुबलि भी कानूनन बन्द करवा दी थी।

चौरासी वर्ष की आयु पर अपना अन्त समय निकट आया जान कर हेमचन्द्र सूरी ने शरीर त्याग दिया। शंकराचार्य के शिष्य देवबोधाचार्य ने उन्हें आकर जहर दिलाया था। यह वर्णन वढ़वाण के साधु मेरुतुंग ने लिखा है।

[गुजरात का इतिहास —रासमाला। लेखक अलेक्जेंडर किनालाक फार्वस। अनुवादक गोपाल नारायण बहुरा— पृष्ठ १७५ से १८५]

हेमचन्द्र सूरि के प्रभाव से राजा कुमार पाल ने सारे भारत में १४००० जैन विहार बनवाये थे। नैपाल नरेश ने उन्हें चन्द्र कान्त मणि से निर्मित २१ अंगुल की पार्श्वनाथ की मूर्ति दी थी जिसे उन्होंने वाग्भट के प्रासाद में स्थापित कर के प्रासाद का नाम कुमार विहार रख दिया था।

गजनी के सुलतान ने कुमार पाल पर आक्रमण किया था। पर १० वें व्रत के कारण कुमार पाल यात्रा न करने की प्रतिज्ञा कर चुका था। हेमचन्द्र के प्रभाव से तब गजनी नरेश स्वयं कुमार पाल के सामने उपस्थित हुआ और सन्धि हो गयी। टाड-साहब ने तो यहां तक लिखा है [Tod's Travels in Western India-पृष्ठ १८३-१८४] कि इस सन्धि के फलस्वरुप दोनों मुसलमान धर्म से प्रभावित हो गये थे और यह कि हेमाचार्य मरते समय अल्लाह अल्लाह पुकार रहे थे। उनके शव को न जला कर गाढ़ने की भी किंवदन्ती है और उस खड्डे को पाटण में हेमखाड़ा कहते हैं। [पृष्ठ २०६] परन्तु कुमार पाल प्रबन्ध में शव के जलाने की ही बात लिखी है।

४.०६.०४ मथुरासिनी देवी

मथुरासिनी देवी माहुरियों की पूज्य देवी हैं । बिहार शाक्तों का देश है; और वहां देवी-पूजा का प्रचुर चलन है। वहां की देवी पर बलि चढ़ाई जाती है और उसकी जिह्वा मूर्तियों में मुख के बाहर निकली बनाई जाती है, क्योंकि वह रक्त की प्यासी है। पर उस अचल में देवी—पूजकों के सम्पर्क में आकर भी माहुरी वैश्यों की कुल देवी की मूर्ति में जिह्वा मुख के अन्दर है । उस पर बलि नहीं चढ़ती। इनके राजा राधाकान्त लाल ने शाक्त देवी का रूप देकर बलि का समर्थन भी प्रारम्भ कर दिया था, पर सारी जाति विरोध में उठ कर खड़ी हो गई।

४·०६ श्रेणी-परक इतिहास

स्पष्ट है कि व्यवसायिक श्रेणियों में बंटने पर हमारे पुरखों ने अपनी श्रेणी का नाम महाश्रेणी रक्खा। महा शब्द से हमें बहुत लगाव था। यही अपभ्रंश होकर महासेन हो गया। इसीलिये जब उपश्रेणी बनने लगीं तो हमारे मुखिया ने अपना नाम महासेन रक्खा और उनके पुत्रादि विभिन्न कुलों से विभिन्न भू-भागों में बस गये। अग्रश्रेणी, बारह सेनी, प्रथक होते गये पर चौसेनी माहौर ही बने रहे। अध्याय दो के श्रेणी वाले भाग में यह सब स्पष्ट कर दिया है, अतः उसे यहां दुहराना अनावश्यक है।

४.०७ रीति-रिवाज परक इतिहास

माहोर जाति की मुख्य कुल रीतियां यों हैं :- बच्चा उत्पन्न होने पर सोवर में नग्न तलवार या शस्त्र का रखना, छठी के दिन धनुष बाण का चलाना व छूना। तेल ताई की रीति में भिन्न पदार्थों से परीक्षा करना और घूरा पूजना इत्यादि। यह सब क्षत्रियोचित रीति-रीवाज हैं। इनमें यह संस्कार प्रचलित हैं।

विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, गृह-प्रवेश, द्विरागमन, अन्त्येष्टि, तेरहवीं और वर्षी,। पर जातियों का निरुपण उनके विवाह संस्कार और रस्मों से ही होता है।

४.०७.०१ अतः विवाह-संस्कार पर विशद विचार करेंगे।

वैवाहिक रीति रिवाजों के उद्गम आदि के बारे में खोज करते समय अंग्रेजी पुस्तक "हिन्दू संस्कार" पढ़नी पड़ी। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भारतीय इतिहास तथा सभ्यता विषय के प्रोफेसर श्री राजबली पांडे एम० ए० डी० लिट० इस पुस्तक के रचियता हैं। विक्रम प्रेस भदनी बनारस में वह छपी है।

विवाह संस्कारों का वर्णन उन्होंने वैदिक काल से लेकर सूत्र काल, संहिता काल तथा उत्तर संहिता काल तक लिखा है। यह पढ़कर मैं बड़ा आश्चर्य-चकित हुआ कि वैदिक काल में उन्होंने विवाह संस्कार की कढ़ुआ पद्धति मात्र का होना लिखा है जिसमें कन्या को चुने बर के यहां भेज देते हैं और वहीं विवाह सस्कार होता है।

वाग्दान के स्थान पर कन्या वरण की यह पद्धति पारस्कर गृह्य सूत्रों में वर्णित है। इन सूत्रों के भाष्यकार गदाधर पंडित उनका यों वर्णन करते हैं :—ज्योतिष के अनुसार निश्चित शुभ तिथि को दो चार या आठ सज्जन, सुअलंकृत, भावी वर के पिता के साथ सकुन पक्षी के दर्शन कर कन्या के पिता के यहां जावें, और उसको यों कहें—"श्रीमान, अपनी कन्या मेरे पुत्र के लिए दीजिए"। कन्या का पिता अपनी स्त्री से सलाह करके यों कहे 'अमुक गोत्र में प्रसूत मैं अपनी अमुक पुत्री या कन्या इस शुभ दिन में आप को देता हूं"। फिर वह एक मन्त्र पढ़ता है, जिसका अर्थ यों है-यह कन्या मौखिक वायदे में आज मैंने वंश चलाने के लिए आपको दी है और आपने स्वीकार की है। अपना निश्चय करके कृपया कन्या का निरीक्षण कर लें। तत्पश्चात वर का पिता कहे, मौखिक वाग्दान से आपने कन्या दी है और मैंने स्वीकार की है। फिर कन्या को वर का पिता फल फूल वस्त्रादि दे।

परन्तु यह गृह्य सूत्रों के काल की बात है। इस संस्कार के बाद विवाह की क्या पद्धति थी इस पर हमें अथर्ववेद के प्रमाण प्राप्त हैं। ऋग्वेद के १० वें तथा अथर्ववेद के १४ वें अध्याय में विवाह संस्कार की विवेचना है । अथर्व की तत्सम्बन्धित ऋचाओं का संक्षिप्त अनुवाद हम यहाँ देते हैं :—

अध्याय १४ मंडल १ मन्त्र ६-१३=बधू सुन्दर वस्त्र पहिने हुए, आंखों में काजल लगाये हुए, ओपास अर्थात् कुटीर ढंग में वस्त्र पहिने हुए अपने घर से भावी पति के घर की ओर अपनी सखियों के सहित सुन्दर रथ में प्रस्थान करे। जो दहेज उसे दिया जाता है, वह भी उसके बटुआ में उसके साथ रथ में रक्खा रहे ।

अध्याय १४।१ मन्त्र १७ से २० तक=जब कन्या अपने घर से जाते तब मन्त्र पढ़े जाते थे, इनका अर्थ यह है 'हम अर्यमा की पूजा करते हैं जो कन्याओं के लिये सुन्दर जोड़े और मित्र ढूंढता है। मैं आज तुझे विदाई देता हूं। वहाँ के बन्धन में बांधता हूं। इन्द्र के साथ वह पुत्रों तथा धन वैभव वाली होकर रहे। मैं तुझे वरुण से उद्धरित करता हूं। सविता ने तेरा बन्धन स्थापित किया है। वर के घर वहाँ की गृह-लक्ष्मी होने जा और वहां उपस्थित व्यक्तियों से भद्र महिला के समान बात कर।'

अध्याय १४।१।४०=निश्चित विवाह के दिन कन्या को मंत्रोच्चार के साथ स्नान कराया जाता था और एक हल्का मंडप बनता था। मंत्रोच्चार के साथ उसे वस्त्र पहिनाये जाते थे। कन्या की मां को तब विरह व्यथा में आंसू आ जाते थे। अथर्व १४/१/४७/५१= वधू को एक पत्थर पर खड़ा किया जाता था। वर-कन्या को हाथ पकड़ कर उसके पोषण करने की प्रतिज्ञा करता था। मन्त्र ५३।५७= वर तब कन्या को वस्त्र भूषण भेंट करता था। तब मन्त्र ६०-६४ के अनुसार बारात का जलूस निकलता था। तब यह प्रार्थनायें गाई जाती थीं :—

अध्याय १४।२-२।११] यह वधू पहले सोम की स्त्री थी-फिर गन्धर्व की और उन्होंने ही इस पति को इसे आशीर्वाद में दिया है। फिर बारात वर के घर ही लौट आती थी। वर के घर में अग्नि पूजा और यज्ञ वर व कन्या साथ-साथ करते थे और उन्हें आशीर्वाद दिया जाता था। इसके तुरन्त बाद विवाह संस्कार प्रारम्भ होता था। उसी

रात्रि को वर कन्या एक दूसरे की आँख में काजल लगाते थे। [अध्याय १४.७।३६] यहीं वस्त्र परिवर्तन होता था। वर के वस्त्र ब्राह्मण को दे दिये जाते थे।

खादिल, गोभिल तथा सांख्यायन गृह्य सूत्रों में यह वर्णन भी आता है कि वर वधू को सफेद वस्त्र ही पहिरना चाहिए। [देखो गोभिल अ० २.१ से १० तक तथा सा० अ० १.११ तथा खादिल अ० १.३ से ६ तक।]

४.०७.०२

माहोर वैश्यों के सब उपवर्गों के रीतिरिवाज वैष्णवी परम्परा के हैं। उनको प्रथक-प्रथक वर्णन करने के पूर्व यह अनुसन्धान करना पड़ा कि सम्पूर्ण वैष्णवी परम्परा का वर्णन किस पुराण में है और उसे होता हुआ देखना भी अभीष्ट था। भविष्योत्तर पुराण के अध्याय २ से ११ तक विष्णु (श्री नारायण जी) के पद्मावती के विवाह का वर्णन है। इसे मैंने तिरुपति तिरुमल्लाई संस्थानम से प्रकाशित वेंकटाचल माहात्मय पुस्तक में पाया। सितम्बर ६३ में फिर वहाँ जाकर विवाह की सम्पूर्ण लीला विवाह-पर्व पर देखी। अनुवाद यों है: —

[इन वैवाहिक रीति रिवाजों को विस्तार पूर्वक लिखते हैं। भविष्योत्तर पुराण के अनुसार ही वहां ब्रह्मोत्सव हो रहा था जब कि वह विवाह प्रणाली दिखाई जाती है।] "देवताओं की प्रार्थना पर विष्णु बैकुन्ठ से वेंकटाचल पर आकर बसे। भृगु द्वारा वक्ष पर लात मारने से विष्णु को अवनत किया गया। लक्ष्मी जी उन्हें छोड़कर करवीर पुर में जा बसीं। (अध्याय ३) द्वापर के अन्त में चन्द्रवंशीय सुवीर राजा के पुत्र धर्म राजा के आकाश राजा तथा तोन्डमान नामक पुत्र थे। आकाश की पद्मावती नामक कन्या थी। (अ० ६) विष्णु ने हाथी की आखेट में जाते समय पद्मावती को देखा और उस पर आसक्त हो गय। (अ० ७) वकुलादेवी को भेजकर श्रीनिवास (विष्णु) ने अपना प्रस्ताव आकाश राजा के परिवार को भेजा। उधर सलाह हुई। जन्म पत्रिका का मिलान किया गया। उनका अत्रिगोत्र और मृगशीष नक्षत्र था। तथा श्रीनिवास का वसिष्ठ गोत्र एव श्रवण नक्षत्र था। वसिष्ठ ने यह सब पास कर दिया और विवाह निश्चित हो गया। राजा ने बन्धु-बांधवों से भी सलाह ली। संकल्प के उपरान्त राजा ने श्री निवास के पास पीली चिट्ठी ब्राह्मणों द्वारा भिजवाकर आगमन की प्रार्थना की। चैत्र शुक्ल दशमी लिखी गई। श्रीनिवास ने पत्रोतर मे इसकी स्वीकृति दे दी। श्रीनिवास ने ब्रह्मा, गरुण इत्यादि को निमन्त्रण पत्र भेजे। वे सब आये। दोनों ओर सजावट पूर्वक मण्डप आदि निर्माण किये गये। हव्य वाहन ने पाक शाला सम्भाली। करवीर पुर से लक्ष्मी को बुलाया। (अ० १०) तब सौभाग्यवती स्त्रियों ने श्रीनिवास को तेल से भरे सोने के पात्र लाकर उबटनादि करके स्नान कराया। हल्दी के चूर्ण से शरीर को साफ किया। केशों को धूप वासित किया। रति और शचि चवर डुलाती थीं। फिर वे पालकी में बैठे। कुबेर से धन उधार लेकर अन्य साज सजाये गये। फिर कुल देवी शमी-वृक्ष की एक शाखा तोड़ लाईं और एक वृक्ष का आरोपण किया। मांगलिक सूत्र खरीदे। एक वृहद दावत दी गई। फिर बारात ने प्रस्थान किया। रास्ते में बारात ने एक दिन शुकाआश्रम पर दावत खाई। सूर्यास्त के समय आकाशराज वस्त्रालंकृत कन्या को लेकर बारात के स्वागत को निकले। पुरोहित को साथ ले उन्होंने वस्त्राभरणों तथा गंध तैल से श्रीनिवास की पूजा की। पद्मावती तथा श्रीनिवास ने एक दूसरे को देखा। फिर गाजे-बाजे से बारात नगर में घुमी और मन्दिर में गई। तब तक ५ घडी रात बीत चुकी थी। और तब दावत हुई। दूसरे दिन प्रातः से उभय पक्ष ने उपवास रक्खा। दोनों पक्ष में वर-कन्या तथा उनके माता-पिता भ्राता और पुरोहित ने भी उपवास व्रत रक्खा। रात्रि को १३ नाडि (दण्ड) मुहुर्त्त भांवरों के लिये निश्चित हुआ। कन्या पक्ष शुक्रवार को सायं काल बारात को बुलाने गाजे बाजे से गया। कन्या की माता ने अरुंधती को आगे करके वर की पूजा की। वस्त्रादि भेंट किये। वर कन्या के घर गये। द्वार पर सासों ने कुंकुम और जल पात्र से वर की पूजा की। प्रवेश करके राजा चार स्तम्भ वाली सुवर्ण वेदी पर बैठे। आकाश राजा ने मंगल स्नान किया। ब्राह्मणों ने संकल्प पढ़ के मधुपर्क दिया। वर के पद-प्रक्षालन किये गये। पश्चात कन्यादान हुआ। इसमें आकाश राजा ने एक करोड़ निष्क दहेज में दिये। साथ में १०० भार का किरीट व कंठी, ५० भार की अन्य कठी, ७ पदक, मोतियों की माला, कान के भूषण, ३२ भार का कंचन, १ जोड़ा नाम भूषण, १० अंगूठी, पादुका आदि भी दिये। ६४ कम्बल भी दिये। दोनों के हाथ में तब कंकन बांधे गये। मंगल गीत गाये गये। वर ने मंगल सूत्र वधू के गले में बांध दिया। पुरोहित वशिष्ठ ने वधू की अजलियों से समर्पित लाजा का वर से अग्नि में होम कराया। शेष वैवाहिक पद्धति यजुर्वेद की शाखा से पूर्ण की। राजा ने पुरोहितों को नवरत्नों के अक्षत दिये, तथा ताम्बूल सहित भूरि दक्षिणा दी। उपस्थित बारात ने आशीर्वाद दिया। तब वर को सासों ने कुछ भोजन कराया। दूसरे दिन सुमंगली स्त्रियों ने वर वधू से परस्पर एक दूसरे का मज्जन, उबटन व स्नान कराया। चार दिन बारात ठहरी। पांचवे दिन व त्रालंकार से फिर जामाता को पूजा हुई। वधू को बिदा कराके उसे जनवासे में भेज दिया। तब वर श्वसुर घर में विदा की आज्ञा लेने गये। आज्ञा देते समय अन्य दहेज, भोजन, अन्न, बर्तन दास-दासियें भेट कीं। कुछ दूर तक श्वसुरादि बारात को भेजने आये। वहां राम जुहार हुई। वर ने सायुज्य किया और पिता पुत्रों को सान्त्वना देकर लौट गया। बारात लौट गई। [भविष्योत्तर पुराण अध्याय ११]

४.०७.०३ विधवा विवाह

विधवा का विवाह माहोरों में प्रचलन नहीं था और इसे हेय माना जाता था। मध्यकालीन स्मृतियों के अनुसार द्विजों में विधवा विवाह वर्जित था, पर नियोग की आज्ञा थी और वह प्रचलित था। नियोग के मोटे रूप से माने हैं कि अस्थायी रूप से विधवा का किसी दूसरे पुरुष से मात्र सन्तोनोत्पत्ति के लिये संसर्ग। रामायण और महाभारत के समय में यह नियोग प्रथा चलू थी।

परन्तु द्विजेतर व्यक्तियों के लिये विधवा विवाह का विधान था। द्विज होने से माहौरों ने इस विधान को नहीं अपनाया, परन्तु नियोग को भी न अपना सके। आधुनिक समय में तो नियोग की प्रथा विधवा विवाह से नीचे दर्जे की प्रतीत होती है। मध्यकाल में विधवा को सती कहकर पति की लाश के साथ जला देते थे, पर अंग्रेज सरकार ने सती प्रथा बन्द कर दी। अब जो विधवायें कुछ आर्थिक साधन नहीं रखतीं, उन्हें पुरुष जैसा परिश्रम, रोटी के लिये करना होता है। जो आर्थिक साधन रखती हैं, उनमें उनका भाग छीनने व नष्ट करने का उनके सम्बन्धी सदा निरत रहते हैं। आखिर इन्दिरा गांधी ने भी संजय गांधी की विधवा पत्नी का जेवर छीनकर घर से निकाल दिया। कभी वासना पूर्ति के लिये उन्हें इधर-उधर आंख दौड़ानी पड़ती है। कुछ किस्से भ्रूण हत्याओं के भी होते हैं। सब प्रकार के उदाहरण उपलब्ध हैं। इस रोग का केवल यही इलाज पाया गया कि समाज न केवल इच्छुक विधवाओं को पुनर्विवाह करने की छूट देवे, वरन् उन विवाह का प्रबन्ध भी करे। क्योंकि

यह कोई न्याय नहीं है कि एक बार के विवाहित पति के निधन पर एक स्त्री शेष जीवन सब सुखों से वंचित हो, तिल-तिल जल-जल कर काटे। भगवान् राम ने बाली को मार देने पर तारा के करुण रोदन पर उसके दुःख के निवारण के लिये उसका पुनर्विवाह उसके देवर सुग्रीव से करा दिया था। ऐसी आज्ञा वेदों में भी है :—

इयं नारी पतिलोकं वृणा ना निपयत उपत्वामत्यप्रेतम् ।
धर्म्मंपुराण मनु पालयन्ती तस्यै प्रजांद्रविणञ्चेहधेहि ।।

(अथर्ववेद। का० १०८। अनु० सू० ३। मंत्र १)

(यह स्त्री पति के मरने के बाद तुम्हारे पास आई है। धर्म पुराण और कानून को मानते हुए उसे प्रजा का दान दो—पुत्र लाभ कराओ।)

इमां त्वमिन्द्र मीढ़वः सुपुत्रां सुभगां कृणु ।
दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेकादशं कृधि ।।

ऋग्वेद १०।८५।४५

मनु भी इसकी आज्ञा देते हैं :—

यस्या म्रियेत कन्यायो वाचा सत्यकृतो पतिः ।
तामनेन विधानेन निजो विन्देत देवरः ।।

(मनुस्मृति अध्याय ९२ श्लोक ६९)

यहां देवर से विवाह की स्पष्ट आज्ञा है। यूरोप, अमेरिका, एशिया के अन्य सब देश, ईसाई, मुसलमान तथा द्विजेतर हिन्दू जिनका बहुमत है, सब में विधवा विवाह प्रचलित है। क्या यह सब पापी हैं, और नरक मात्र के अधिकारी हैं? कदापि नहीं। स्वर्ग-नरक कर्मों पर निर्भर हैं। यह तो रीति-रिवाज मात्र हैं, जो आवश्यकतानुसार बदले जा सकते हैं। हां जो विधवायें यों ही निर्वाह कर ले जा सकें, उन पर कोई जोर नहीं है कि अवश्य पुनर्विवाह करें। इन बीस वर्षों में माहौर वैश्यों के सब उपवर्गों की शिरोमणि सभाओं ने इच्छुक विधवाओं को पुनर्विवाह की आज्ञा दे दी है।

४.०७.०४ अलीगढ-मुरादाबाद, अंचल के माहौर [वर्तमान माथुरी या मथुरिया वैश्यों के रीति रिवाज

1936 में इनकी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक रीति-भांति-प्रकाश' से उद्धृत। **पुत्र जन्म यानि लड़के का पैदा होना।**

जन्म होने के पीछे जिस समय मुनासिब समझा जावे राशि गिनाई जावे, या जन्म समय आदि लिखाया जावे, छटी आदि की जावे और जन्म के दूसरे या तीसरे दिन जब शुभ समझा जावे नाई को लड़के की ननसाल और दूसरे दिन निकटस्थ (नजदीकी) नातेदारों के यहां रोचना के लिए (जिसे दूब भरना भी कहते हैं) भेजा जावे। नाई दूब के साथ बंधनवार भी ले जावें।

बाहिरी यानी जच्चा का बाहिर निकालना

बाहिरी की रस्म जहां तक मुमकिन हो देरी में की जावे। देवर आदि के हक्क बदस्तूर रहेंगे परन्तु जच्चा की तन्दुरुस्ती का लिहाज रक्खा जावे। मकान की शुद्धी की जावे। जहां तक मुमकिन हो लड़की का पिता अपने धेवते की छटी के दिन (छटी जिसको छेदक भी कहते हैं।) भेंट देवे। **दस्ठौन और नामकरण—**दसवें दिन मकान को फिर शुद्ध कराके, पुष्कल (काफी) सामग्री से वेदोक्त रीत्यानुसार प्रथम हवन करा कर नामकरण कराया जावे। **मुण्डन और करण भेदन**—(जिसको कान छिदना भी कहते हैं, बदस्तूर रहे। ननसाल से कनछेदन का भात (यानी बाली और कपड़े लड़के को यथाशक्ति दिये जावें। **यज्ञोपवीत**—लड़के की अवस्था बारह वर्ष की होने से पहले ही अवश्य होना चाहिये। **सगाई**—में अधिक से अधिक ११ रु० और अंगूठी, नारियल और मिठाई भेजी जावे। नाई सगाई लेकर जावे और उक्त (ऊपर कहा) सामान साथ ले जावे। लड़के वाले के यहां आदमियों के जमा होने पर सगाई चढ़ाई जावे। राम राम की रस्म अधिक से अधिक २५ होनी चाहिये। पीली चिट्ठी-हस्तदस्तूर साबिक दूब और शुभ हल्दी के चिन्ह से युक्त नाई या डाक के द्वारा (जरिये से) जानी चाहिये। **लग्न**—में एक-एक रुपया रक्खा जावे, और नाई लग्न को लेकर जावे। लग्न के साथ लड़की वाले की तरफ से अंगूठी और मिठाई लड़के के लिये और विदा के वक्त लड़के वाले की तरफ से अंगूठी और मिठाई, कलावा और मेंहदी आदि लड़की के लिए भेजी जावे।

निकरौसी—बारात जब कि गाड़ियों द्वारा जावे अधिक से अधिक २५ परीन जिसमें अधिक से अधिक १२५ आदमी कुल हों, और जो बारात रेल में जावे तो मय सागरपेशा १०० आदमी होवें। बेटे वाले को चाहिये कि रास्ते में बारात के खान-पान का उचित प्रबन्ध करे। पेशवाई के लिये लड़की वाले की तरफ के आदमियों को शान के साथ जाकर बारात को लाना चाहिये। बारात के जनवासे में आने पर कहार को शरबत लेकर भेजा जावे। मढ़वा जगाना (यानि पोरी दाबना या द्वार बार), खेत दूसरी लग्न, १ तीहल, कलसों की जंडी और अधिक से अधिक १००) और उचित (मुनासिब) जेवर दिया जावे। रात्रि को दावत (बढ़ार) और प्रातः काल नाश्ते का प्रबन्ध पश्चात् बारद्वार या बारौठी या दरवाजे का कृत होता है। भरीपुरी या बरीपुरी के साथ चढ़ावा (यानि लड़की के लिये जेवर आदि) जाता है। चढ़ावे में यह सामान भी होना चाहिये: खादी ५ गज, टूल की चकले की चादर, चोला आदि, तीहल भी दी जाये। फेरों के समय लड़का धोती पहने, हवन पुष्कल

सामग्री से किया जावे। हवन की सामग्री तथा धोती और घृत आदि का प्रबन्ध बेटी वाला करे। फेरे चार हों। ध्रुव दर्शन, शाखोच्चार, नियम पूर्वक उच्च स्वर में किया जावे। कन्यादान, गौदान आदि, इसके बाद रुपया मसने और नाथगुरू या बेड़ासई की रस्म एक हो। कुंवर कलेऊ में लड़के को एक थाली और एक ग्लास दिया जावे। बढ़ार के दिन लड़के की गोद में लड़की की मां लड़के को बुलाकर मिठाई और कुछ नकद डाले।

इसमें लड़की की रिश्तदार स्त्रियां भी जिनका लेना हो, शामिल हो सकती हैं। इसके बाद पलका चार व जौ धान कंगना खुलाना व मिलाप। परन्तु सिर्फ थामे को विधवाओं यानी लड़के की विधवा ताई, चाची, आदि के मिलाप गैर हाजिर होने पर भी हाजिरी वालों की तरह दिये जावेंगे। थाली में अधिक से अधिक १००) बेटे वालों को।

दसई या दसयारी, मढ़वा दबाना :—

यदि लड़का लड़की बालिग हों तो विवाह के समय पर ही पट्ठाफेर कर लिया जावे और गौने की सादा विदा भी साथ ही हों। अन्यथा गौना बाद में लड़के के साथ अधिक से अधिक दस आदमी भेज कर ही कराया जावे। वधू की विदा के बाद वर फिर अन्दर जाकर भट्टी को बन्द करता है और गूथ खोलकर विदाई लेता है। चूड़ी व बिछुआ, बामाङ्ग आने पर ही पहिना दिये जावें। मोहर उतारना बदस्तूर चालू। फिर वर का आरता या टीका होगा। लड़के के भाताई को मौर, जूता, जामा तथा लड़के के कपड़े लाना जरूरी है। इसके बाद समधियों को भेंट अर्थात् समधौरा होगा। ध्यान रहे यह व्यवस्था ६० वर्ष पूर्व की १९२०-३० के बीच की स्थिति की द्योतक है।

४.०७.०४ पांचाल प्रान्त के माहौर वैश्यों के रीति-रिवाज

यू०पी० के पांचाल प्रान्त से तात्पर्य एटा, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, अलीगढ़ से ही है। कुछ ब्रज का भाग भी इसमें है।

कन्या के अभिभावक ही इनके यहां वर तलाश करते हैं। जिस घर में लड़का देखने जाते हैं, वहां का भोजन नहीं करते हैं। सब बातें निश्चित हो जाने पर लड़की देखी जाती है। लड़की वाले के घर जाकर लड़की को देखकर स्वीकृति होने पर जेवर साड़ी आदि से उसकी गोद भरी जाती है। यथा-शक्ति भेंट देकर लड़की वाले उन्हें विदा करते है।

इसके बाद 'पक्की' की प्रथा होती है। इसमें थाल, परात, कुछ रुपया लेकर वधू पक्ष का व्यक्ति वर पक्ष के यहां जाकर चांदी के वर्क लगा कर एक पान वर को खिलाता है। नकद रुपये के अतिरिक्त 'नजरें' भी भेंट की जाती हैं।

तीसरी बड़ी रस्म 'टीका' कही जाती है। इस अवसर पर दहेज की रकम का मुख्य भाग लड़के के यहां पहुंच जाता है। इस अवसर पर चांदी के पांच बर्तन, कुछ साड़ियां, मिठाई और रकम आती है। कहीं कहीं वर पक्ष के लोग अपने जाति भाइयों की दावत भी करते हैं और कभी कभी बर्तन भी बांटते हैं। टीके को लेकर प्रायः नाई और पंडित आते हैं। टीका में वर पक्ष के मुख्य व्यक्तियों को नजरें भेंट करने की प्रथा भी है।

चौथी रस्म लगुन की होती है। पहिले लगुन महत्व की प्रथा थी। यह विवाह से १५ दिन पहले होती है। आजकल लोग टीका के साथ ही लगुन भेज देते हैं। लगन में १) या ११) या ५१) रुपया भेजा जाता है। साथ में साड़ी और धोड़े में जौ और मिठाई जाती है। इसी के साथ एक पीली चिट्ठी भेजी जाती है। जो Documentary Confirmation विवाह की लिखित स्वीकारी मानी जाती है। इसे वधू पक्ष का पुरोहित पीले कागज पर कलावे से बांध कर भेजता है। उस पर पुरोहित तेल, ताई तथा भांवरों आदि का समय व तिथि लिखता है। लग्न के बाद वर वधू द्वारा यात्रा निषिद्ध है। आजकल लोग प्रायः 'खेत लगुन' देते हैं, अर्थात् बारात के आ जाने पर खेत में लगुन का सामान पेश कर देते हैं।

लगुन तथा भांवरों वाले दिन के बीच में कुछ और रिवाज भी होते हैं। लग्न पत्रिका में तेलों की संख्या निश्चित कर दी जाती है। उतनी ही बार वर कन्या का तेल से उबटन होता है। ताई नाम की रस्म के दिन देवी देवताओं की पूजा किसी मन्दिर में जाकर होती है। इसके बाद भात मांगने की प्रथा होती है। वर तथा कन्या पक्ष की स्त्रियां वर व कन्या की ननसाल में गाती बजाती हुई भात मांगने जाती हैं। वहां जाकर दस्तूर का सवा रुपया पेश किया जाता है। सामर्थ्य वाले घर की स्त्रियां अपने भाई के घर भात मांगने की प्रथा में कुछ बर्तन ले जाकर जाति के हर एक घर में बांटती हैं। इसके एवज में ननसाल में वर कन्या के अभिभावक भात मांगने वाली स्त्रियों को कुछ बर्तन आदि की भेंट देते हैं। वर कन्या के मामा अपने साथ वस्त्रादि लेकर पहुंचते हैं। और वर पक्ष में बारात जाने से एक दिन पहले और कन्या पक्ष में बारात आने के बाद भात के ये वस्त्र कुटुम्ब के सब वृद्धों को मण्डप के नीचे चौक में पटे पर खड़ा करके पेश किये जाते हैं। भाई मानों भगिनी की स्नेह-मयी सन्तान के इस यज्ञ में अपनी एक आहुति डालकर अपना जीवन धन्य समझता है।

भात की रस्म के बाद बारात निकलने की तैयारी होती है। उस दिन प्रातःकाल दूल्हा को चौक पर बिठाल कर विवाह के कपड़े पहनाए जाते हैं। मस्तक पर मुकुट नाई बांधता है। कपड़े दर्जी पहनाता है। लड़के की बुआ वर की आरती करती है। वर के बहनोई पान खिलाते हैं। फिर वर को कुंए की प्रदक्षिणा के लिये ले जाते हैं। वहां पर मुहल्ले की सब स्त्रियां इकट्ठा हो जाती हैं। जाते समय वर की बहन सींकें मारते हुए पीछे जाती है। कुए की प्रदक्षिणा के समय वर सब मुहल्ले की स्त्रियों के सामने माता को बचन देता है कि वह बहू लाकर उसकी सेवा करेगा।

बारात में सगे-सम्बन्धी, मित्र-बान्धव तथा जाति भाई सामर्थ्यानुसार जाते हैं। बारात जब लड़की वाले के ग्राम में पहुंच जाती है तो, नगर के बाहर रुकती है। कन्या पक्ष के व्यक्ति अगवानी के लिये आते हैं। आते ही वर के पिता को एक 'खेत नजर' भेंट की जाती है। तदोपरान्त साधारण दावत जिसे खेत पांत कहते' हैं—के बाद बारात चढ़ती है। और बेंड, बाजा, आतिशबाजी, रोशनी

इत्यादि के साथ उस स्थान पर जा ठहरती है जिसे 'जनवासा' कहते हैं।

इसके बाद वैवाहिक कार्य-क्रम शुरू होता है। मिट्टी के एक छोटे बर्तन में थोड़े से जौ तथा एक रुपया होता है, उसे 'वरमनियां' कहते हैं। उसे लेकर नाई जाता है। उसका अर्थ वर के आने की अन्तिम स्वीकारी है। तब वर महोदय जाते हैं, और 'दरवाजे' की रस्म होती है। दरवाजे पर वर को चौकी पर स्थान ग्रहण करने की प्रार्थना की जाती है। यज्ञोपवीत कराया जाता है। दरवाजे पर कलश सहित कुछ बर्तन, कपड़े का एक थान और नकद रुपया भेंट किया जाता है।

उसके बाद वर लौट आता है। कन्या पक्ष की स्त्रियां 'पान-सुपाडी मांगने जनवासे पर जाती हैं। वहां वर के बहनोई साहब कुछ मिठाई देकर उन स्त्रियों को भेंट देने के लिये भेजे जाते हैं। उन स्त्रियों के मध्य बहनोई साहब की खूब आवभगत होती है।

तदुपरान्त वर संस्कार के लिये जाते हैं। कन्या के घर एक मण्डप तथा यज्ञ-वेदी सजाई जाती है, जिसके ऊपर हल गाढ़ा हुआ होता है। वर को आते ही आसन तथा मधुपर्क देकर स्वागत किया जाता है कुछ धार्मिक क्रियाओं के बाद कन्यादान होता है। कन्या के माता-पिता छोंक बांध कर बैठते हैं। वे दोनों कन्या का हाथ पकड़ कर वर के हाथ में दे देते हैं और फिर दोनों के पैर छूते हैं। कन्या के अन्य बुजर्ग सपत्नीक आकर वर वधू के पैर छूते हैं और कुछ भेंट करते हैं। फिर संस्कार प्रारम्भ होता है। पौराणिक प्रथा वाले घरों में यज्ञ संस्कार के बाद ४ भांवरे और सप्तपदी होते हैं। कन्या का भाई धान बोने की प्रक्रिया करके बहिन को सदा कुछ देने की प्रतिज्ञा करता है। ईंगुर की मांग वर ही वधू के भरता है और प्रतिज्ञाओं का आदान-प्रदान होता है। सम्मिलित चन्द्र दर्शन की प्रथा अब समाप्त हो गई है। यहीं पर वर की बहिन या पुरोहित कन्या को बिछिया पहनाते हैं। बहुत से घरों में यह कार्य वर के घर में कंगन उतारते समय होता है। वैवाहिक यज्ञ की समाप्ति पर दोनों पक्षों की ओर से दान दिया जाता है। सप्तपदी के बाद ही विवाह कानूनी तौर पर सम्पन्न माना जाता है।

मण्डप से वर को स्त्रियां अन्दर उठा ले जाती हैं। वहां वर को मुकुट लेकर उसे टोपी दी जाती हैं तथा सब स्त्रियां टीका करके वर को भेंट देती हैं। लौटते समय कन्या की बहन वर का रास्ता रोकती है और बदले में अपने जीजा से कुछ नेग पाती है। वर महोदय को अपने जूता गायब मिलते हैं जो उनकी साली साहब ने पहिले से ही छिपा दिये होते हैं। तलाश करने पर जब नहीं मिलते तो मिहनताना देकर ही वर अपने जूते फिर वापिस पाते हैं। जनवासे में वापिस आकर अपने से बड़ों के चरण स्पर्श कर वर महोदय आर्शीवाद प्राप्त करते हैं।

सन्ध्या समय ज्योतनी होती है। कन्या पक्ष के लोग जनवासे में जाते हैं और वर पक्ष के लोग उनका स्वागत करते तथा बिठलाकर इत्र पात्र, ताम्बूल पेश करतें हैं। इसी समय पढ़े लिखे परिवारों की बारातों में मान पत्र पढ़े जाते हैं। अन्त में कन्या पक्ष के लोग हाथ जोड़कर अपने घर आकर बृहदाहार (बढ़ार) में आने का निमन्त्रण देते हैं। जहां बारात दो दिन टटती थी, वहां दूसरे दिन भी ज्योतनी होती थी। यदि बारात एक दिन ही ठहरना हुई तो पहिले दिन की ज्योतनी के पहिले वर पक्ष अपने साथ लाये हुए वस्त्र आभूषण तथा (सालाबागा) अर्थात वर के सालों के लिये नये वस्त्र गाजे बाजे के साथ भेजते हैं। ज्योतनी में पुरोहित जी शिव पार्वती के विवाह की शिक्षाप्रद विवाह वार्ता सुनाते हैं। ज्योतनी में कुछ थालियां गुड़ चना, मेवा आदि भेजने की प्रथा थी। बृहदाहार के पहले बारात के बच्चों को लेकर वर महोदय कन्या के घर कुंवर क्लेवा के लिये जाते हैं। इसमें वर को चांदी के बर्तनों में (यथासाध्य) भोजन कराया जाता है, और कन्या की सखियों तथा अन्य बहिनों आदि के द्वारा वर को भेंट दी जाती है। सब आये हुए बच्चों को कुछ न कुछ भेंट किया जाता है।

बढ़ार की दावत बड़ी शानदार होती है। वर पक्ष के सगे-सम्बंधी ठीक मण्डप नीचे बैठते हैं। अन्य लोग अलग खुले में। भोजन प्रारम्भ करने के पहले बारात के जिन लोगों को वरपक्ष के लोग कहते हैं; उन्हें भेंट दी जाती है। मण्डप के नीचे वालों को विशेष भेंट दी जाती है। एक ओर भोजन कराया जाता है और दूसरी ओर स्त्रियां मनोहर गीत व उलाहने गाती हैं।

इसके बाद विदा की तैयारी होने लगती है। इसमें समानान्तर सम्बन्धी अर्थात वर कन्या के चाचा-मामा-मौसा-फूफा-बहनोई आदि परस्पर पटे पर मण्डप के नीचे खड़े होकर एक दूसरे के तिलक करते और मिलते हैं। वर पक्ष वाले जोड़े को भेंट मिलती है। बाहर हरेक बाराती की मिलनी कुछ बर्तन आदि देकर होती है।

बारात मे समधी की भारी मिलनी होती है। फिर समधी साहब का समधौरा होता है। इसमें वर के पिता को कन्या की माता मौसी आदि के सुपुर्द कर दिया जाता है। एक पर्दे के पीछे से उनके बेलन मारे जाते हैं और हर आघात के साथ कुछ मिलता है। लड्डू खिलाये जाते हैं, तब भी कुछ मिलता है। कन्या की मां वर के पिता के काजल लगाती हैं, । परन्तु केवल एक आंख में। कहीं २ समधी साहब को चोली और साड़ी भी मजाक में पहिना देते हैं। प्रत्येक पिता इसी दिन की प्रतीक्षा के लिये लालायित रहता है। यहीं वर पक्ष, कन्या वाले नाई नेगियों का खर्चा देते हैं। कन्या की विदा हो जाती है। वर के पिता मस्त हो थैली की बची खुची रेजगारी रास्ते मे लुटाते हुए बहू को ले जाते हैं। कन्या पक्ष वाले नगर के बाहर तक जाते हैं, और राम-जुहार करके अपनी अन्तिम भेंट वर के पिता को देकर वापिस लौट आते हैं।

दूल्हा कन्या की विदा के बाद कन्या के घर फिर ले जाये जाते हैं। वहां उन्हें दो काम करने होते हैं गूथ खोलना अर्थात मण्डप को उतारने की शुरुआत और भट्टी में लात मारना जो कि इस बात का द्योतक है कि उल्लास पर्व का समापन हुआ। इन दोनों कार्यों के एवज में वर को कुछ भेंट देकर विदा की जाती है।

जब बारात लौटकर पहुंचती है, वर की माता आरती लेकर तैयार मिलती है। वह पहिले उप सवारी को पूजती है जिस पर उसकी बहू आई है। फिर बहिन रास्ता रोके खड़ी मिलती हैं। उसे भेंट देकर वर-वधू घर में प्रवेश कर पाते हैं। पहिले दिन खीर खिलाई जाती है। परन्तु खीर खाने के पहिले वर वधू एक-एक बतासा एक दूसरे को खिलाते हैं।

पंडित कंगन उतारने की लग्न लगभग ३ या ४ दिन बाद की छांटता है। उस दिन वर कन्या के फिर हाथ मिलाये जाते हैं—कंगन उतारा जाता है। और एक बर्तन में पानी डाल कर आटा की मछली तैरायी जाती है और सींक से उसका वध किया जाता है; जो द्रोपदी स्वयंम्बर कथा का शेषांश है। फिर सात बार एक हलकी लकडी से वर कन्या एक दूसरे को धीरे से मारते हैं, जिससे एक का दूसरे पर कण्ट्रोल होने का अधिकार माना जाता है। तभी वर-वधू से संसर्ग का अधिकारी होता है।

(यह विवरण १९६७ में लिखा गया था। आर्थिक दबाव के कारण अब बारात आने के दूसरे ही दिन विदा हो जाती है और बहुत से रीतिरिवाज कम कर दिये गये हैं—संपादक)। फिर चार या सात दिन बाद वधू के भाई उसे लिवाने जाते हैं। इसे चौथी की रस्म कहते हैं।

४.०७.०५ आगरा-वाह अंचल के माथुर वैश्यों के वैवाहिक रीतिरिवाज

इन बन्धुओं में निम्नलिखित रिवाज पाये जाते हैं जो लोट लकार में लिखे हैं।

लड़की पक्ष को अपने निश्चय की सूचना स्वजनों के सम्मुख रखने के पश्चात केवल १) रुपया तथा एक पत्र पंचों के हस्ताक्षरों से युक्त नाई द्वारा लडके वाले के यहां शुभ दिन को भेज देना चाहिये। नाई के सगाई लाने के पश्चात स्वजनों को एकत्रित कर पंचों के मध्यस्थ सगाई भेंट को स्वीकार कर पंच के पास उस रुपये को रख देना चाहिये तथा पत्र पंचों एवं उपस्थित स्वजनों को पढ़कर सुना देना चाहिये। नाई को स्वीकारी पत्र देकर विदा कर देना चाहिये।

(२) **सिक्का**—सगाई के समय जो रुपया नाई लाता था, सिक्के के अवसर पर वह रुपया पंच से लेकर लड़के को दे दिया जाता है। इसके पश्चात् लडके को इस रुपया को अपनी माता को भेंट कर देना चाहिये। माता को अर्ध देकर उस रुपया को अपने माथे से लगाना चाहिये।

(३) **टेवा या पीली चिट्ठी**—विवाह की तिथि की सूचना जो नाई पत्र द्वारा लड़के वाले के यहाँ पर ले जाता है, उसी पत्र को 'टेवा' अथवा पीली चिट्ठी कहते हैं। पंचों में टेवा तथा मिठाई स्वीकार करने के पश्चात् आचार्य को टेवा पत्र उपस्थित सज्जनों को सुनाना चाहिये। स्त्रियों को मंगल गीत गाने चाहिये। उसी समय से दोनों पक्षो के यहाँ विवाह के कार्यो का आरम्भ हो जाता है। पीली चिट्ठी हो जाने के पश्चात विवाह का निमन्त्रण पूर्व समय में कोथरी गिदोड़े तथा सुपारी आदि भेजे जाते थे, किन्तु अब पोस्ट से निमन्त्रण जाता है। न्यौता पुरुष वर्ग को भेजा जाता है, और छेता स्त्री वर्ग को। छेता भेजने से तात्पर्य बहिन, भानजी तथा जिस को छेता भेजा गया हो उस व्यक्ति को निमन्त्रण करने से है। समधी को विवाह के अवसर पर निमन्त्रण करना है, तो उसके लिये ५१ सुपारी तथा एक रुपया न्यौता का भेजना चाहिये।

(४) **भात मांगना**—यह लडका एवं लड़की के मामा के यहां से मांगा जाता है। भात में मामा अपनी शक्ति के अनुसार विवाह में नकदी, सामग्री, कपडे आदि देता है। कन्या के विवाह पर भात आगोनी के दिन तथा लडके के विवाह पर ज्यौनार के दिन आना चाहिये। भात मांगने के लिये यथा सम्भव स्वयं लडके एवं कन्या के माता पिता को भातई के यहां जाना चाहिये। भात मांगने के समय भी मंगल गीतों का होना अति जरूरी है। इसी प्रकार भात मंगाने जब जावें, बहिन तथा मान आदि से टीका कराके जाना चाहिये। उस समय बहिन को यथाशक्ति द्रव्य भी दें। इसी प्रकार जब भात मांगने जावें उस समय पीतल की मथनियां में प्रचुर सामग्री ले जानी चाहिये।

जैसे ही भात मांगने वाला भातई के निवास स्थान पर पहुंचे, मालिक को उनके चरणों को धुलवाना चाहिए। गीतों के निमन्त्रण पर उपस्थित समस्त स्त्रियों को तल, चामरी के साथ तमोर बांटना चाहिए।

भात देने की रीति

(यदि किसी के भाई न हो)

तो ऐसे पवित्र कार्य को करने के लिये कोई न कोई प्रा ी तत्पर हो जाता है। जैसे ही भातई भात लेकर अपने बहनोई के निवास स्थान पर पहुंचे नाई को भेज कर भातई के चरण प्रक्षालन (पैर धुलाने) की व्यवस्था करे। इसके पश्चात पंच एव कुटम्बियों को साथ लेकर फिर भोजनातिथ्य करे। भात में जो सामग्री भातई लाया है, उसको सुन्दर रूप से सजाकर बहनोई के द्वार पर पहुंचाना चाहिये, जहां पर बहन कलश लिये हुए समस्त स्त्रियों के साथ मंगल गीत गाती हुई स्वागत करने के लिये प्रतीक्षा में खडी हुई होती हैं।

उपरोक्त सब बातें द्वार पर ही होती हैं। इसके पश्चात भातई को गृह-प्रवेश करना चाहिये। और सबसे प्रथम दो वागे अपने बहनोई आदि को भेंट करने चाहिये। और समस्त सामान और आभूषण तथा नकद द्रव्य सम्भाल कर देना चाहिये। भातई को मालिक द्वारा पानी लाकर चोक पर रखना चाहिये। और बहिन को साडी या जोडा जो बहिन के लिये भात में भातई लाया हो उसे बहिन की भेंट करना चाहिये। इसी प्रकार जो सामग्री जिन-जिन के लिये भातई लाया हो उन्हें दे देनी चाहिये। विवाह के पश्चात जब भातई बिदा हो उस समय मालिक को भातई के दो टीके करने चाहिये। भातई को श्रद्धानुसार भिटावनी देकर अपने गृह को वापिस लौट जाना चाहिये।

५-मथनियां

मथनियां लड़के वाले के यहां से लडकी वाले के यहां पर भेजी जाती है। मथनियां में विवाह में काम आने वाली सम्पूर्ण सामग्री रखकर लडके वाला ही लड़की वाले के यहां पर प्राचीन समय में भेजता था। मथनियां में निम्न सामग्री रखनी चाहिये :— हल्दी की गाठें, सुपारी, मुठिया जोड़े, कलावा, पान के बीडा, मखाने, छुआरे चिरोंजी, तथा चार थैली। इसी को ऐपन भी कहते हैं। लड़की के पहिनने के लिये एक चुन्दरी (साडी), एक कंघी, एक व्याली, सुनेरा सुनेरी के अलावा १ अंगूठी सोने की, २ चांदी की, और नगद रुपया तथा कोथरी मिठाई व एक कोथरी मेवाकी भी मथनियां के साथ दक्षिणा देकर विदा कर देना चाहिये।

६. लग्न तथा टीका

विवाह की लग्न तथा वर के लिए कपड़े आदि भेजने की प्रथा को लग्न एवं टीका कहते हैं। विवाह का शुभ मुहूर्त लग्न पत्रिका में लिखकर भेजा जाता है। इस पत्रिका में ताई से विदा तक की लगन शोध कर तैयार करना चाहिये, और इसे कलावा से बांधना चाहिये। इस लग्न के साथ वर के लिये अंगूठी तथा वस्त्रादि होते हैं।

सामग्री उपलब्ध करके आचार्य विवाह मण्डप पर चौक पूर कर कलश रखे। जो व्यक्ति कन्या दान करना चाहे, उसे स्नान करवा कर चौक पर बैठा कर पूजा करानी चाहिये।

लग्न चढ़ाने की रीति :—

सर्व प्रथम चौक पूरकर तथा कलश रखकर पट्टा पर वर को हजामत तथा स्नान कराके बैठाना चाहिये। तत्पश्चात् वर का तिलक करना चाहिये। नारियल, मुठिया, तथा गिन्नी या मोहर जो टीके के निमित्त, होवे, वह हाथ पर रखना चाहिये।

७. ताई की रीति :—

अग्नि, वायु जल आदि देवताओं की पूजा कर विवाह संस्कार निर्विघ्न शांतिपूर्वक समाप्त हो जाने की आकांक्षा ही इसका मुख्य ध्येय है। इस प्रथा का सूत्रपात घर की वयोवृद्धा स्त्री अर्थात ताई के द्वार होना होता है। उस दिन वर तथा कन्या के हाथ पर मेंहदी रचाई जाती है तथा एक सुपारी, हल्दी की गांठ तथा एक टका पैसा लेकर सकोरे में रखकर रसोई के स्थान पर अर्थात् चूल्हे के ऊपर गाड़ देना होता है। इसे वायु बन्द करना कहते हैं। उस रात्रि भर तेल का दीपक जलाया जाता है और स्त्रियां रात्रि जागरण करती हैं। विश्वास है कि उस रात्रि पितर जगन देखने और आशीर्वाद देने आते हैं।

८. वर के तेल चढ़ाने की रीति

तैल की संख्या आचार्य द्वारा निश्चित की जाती है। यदि दिन और तेल समान हों तो प्रति दिन एक तेल बढ़ाना चाहिये। यदि दिन कम हों तो सुविधानुसार। तेल चढ़ाने के समय वर के साथ विनेगरी (कुटुम्ब की कोई छोटी लड़की अथवा मामा फूफी की लड़की) को पट्टे पर बिठाना चाहिये।

९. घूरे की पूजा

घूरा तो देश की बड़ी सम्पत्ति है—जिससे खाद उत्पन्न होती है। शायद इसी भावना को महत्व दिया गया है। वर को घूरे पर लेजाकर पूजा कराते हैं।

१०. ज्यौनार (भोज)

लड़का तथा लड़की के विवाह पर सुविधानुसार स्वजातीय बन्धुओं, इष्टमित्रों एवं परिवार वालों को आदर सहित निमन्त्रण करके प्रीतिभोज देने की प्रथा प्राचीन समय से प्रायः सभी जातियों में पाई जाती है। लड़की के विवाह पर अनेक स्थानों पर स्वजातीय एवं इष्टमित्रों की ज्यौनार की प्रथा समाप्त कर दी गई है।

११. निकरौसी

वर का विवाह से पूर्व जाने के प्रस्थान को 'निकरोसी' कहते हैं। विवाह प्राचीन समय में युद्ध के ही समान होते थे। जिस प्रकार युद्ध में विजयी होने के लिये हर प्रकार से सुसज्जित होकर तथा निश्चित ध्येय की प्राप्ति के लिये शुभ आशीर्वाद प्राप्त करके जाते हैं, उसी प्रकार नवीन वस्त्र धारण करके तथा बहिन से टीका कराके तथा माता का स्तनपान करके घर से प्रस्थान करते हैं। आचार्य चौक पूरकर वर को पटे पर आसीन करावे, और लगुन में आये हुये वस्त्रों से वर को मान द्वारा सुसज्जित करावे। उसी समय वर के मुख पर "मरूहठ" कढ़वानी चाहिये, तत्पश्चात् सेहरा बांधना चाहिये। बहिन या सवासीन को आरता करना चाहिये। पंचों को तिलक कर उनको चार चार मुठिया देनी चाहिये।

'मरूहठ' सिंदरफ और घी के मिश्रित से बनाया जाता है। उपरोक्त रूप से वर को सुसज्जित करने के पश्चात् वर का घोड़ी पर सवार करना चाहिये। वर के साथ विनेगरी को भी बिठालना चाहिये। इसी को घुड़चड़ी कहते हैं। तथा घोड़ी की पूजा करके स्त्रियों को गीत आदि गाकर थोड़ी दूर यानी किसी देव स्थान तक पहुंचाकर विदा कर देना चाहिये। यहीं पर माता वर को स्तन-पान कराती है। लेकिन अब केवल यह भाव रूप में ही रह गया है। इसी समय दर्जी को वस्त्र पहिनाने के उपलक्ष में तथा बहिन को 'आरती' की दक्षिणा देनी चाहिये। वर के पिता को भी बहिन से टीका कराके तथा शर्बत पीकर तथा बहिन की थाली में श्रद्धानुसार दक्षिणा डाल कर जाना चाहिये।

११. मंडप छवाना

विवाह के लिये वेदी बनाई जाती है—उसी को मण्डप कहते हैं। चार बांसों को चार स्तम्भ के स्थान पर गाढ़ना चाहिये तथा चार चक्षा फूंस के बनाकर लगा देने चाहियें। मंडप को चोटी पर लाल वस्त्र तथा लोटा लगाना चाहिये। यह कार्य पुरोहित या ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिये।

१२. चाचा की करपनी

चाचा की करपनी (संकल्प) का भी यही लक्ष्य है कि लड़की के विवाह का प्रथम दिन का सम्पूर्ण व्यय लड़की के चाचा, ताऊ

एवं भाई द्वारा होवे। करपनी करने वाले को उस दिन व्रत रखना चाहिये, तथा स्नान करके मय अपनी पत्नी के मंडप में बैठकर लड़की के लिये हाथ में पहिनने की वस्तु तथा भोज्य पदार्थ की पत्तल, तथा सुपारी डालकर श्रद्धापूर्वक सकल्प करना चाहिये।

१३. जनवासा

धर्मशाला, होटल आदि स्थानों में बारात ठहरने के लिये उचित प्रबन्ध होना चाहिए।

१४. दैदल अर्थात् दइदल

जनवासा में कन्या पक्ष वाले को एक कलश लेकर तथा उसमें शर्बत डालकर तथा दो थालियों सहित भेजना चाहिए।

१५. मंडप जगाने की विधि

बारात की अगवानी से पूर्व मंडप जगाने के लिए दो सवासियों को बाजे के साथ कन्या के निवास स्थान पर भेजें। जब बारात आगवानो के लिये प्रस्थान करे, उसी समय मंडप जगाने को भेजें।

१६. दरवाजे की विधि

वर को निकरौसी के समय जो वस्त्र धारण कराये गये थे, उन्हीं वस्त्रों को धारण कराके तथा बाजे के साथ बारात चढ़ानी चाहिये। कन्या पक्ष को द्वार के समय जो भी सामग्री देनी हो, वह सम्पूर्ण सामग्री द्वार पर रखनी चाहिये। वर को बैठने के लिए एक चौकी का प्रबन्ध करना चाहिये। वर के द्वार पर आ जाने पर सर्वप्रथम उसे आसीन कराना चाहिए। कन्या के पिता को वर के टीका करके वर का पूजन करना चाहिए। आधुनिक समय में जैसे ही वर द्वार पर पहुंचता है, उसी समय कन्या वर के पुष्प-हार डालती है, यह प्रथा प्राचीन समय में किसी भी रूप में नहीं थी, किन्तु आजकल यह प्रथा बहुत ही प्रचलित होती जाती है। (पंजाबियों की नकल हैं)। पूजनादि के पश्चात् दरवाजे पर कुल १० बागे होते है। प्रथम बागा मामा का, दो बागे भाई के तथा दो बागे समधी के। इन बागों में एक नारियल, तथा कुछ रुपये देने चाहिये। लड़की का मामा वर के मामा को जो बागा अथवा मिलनी देता है, वह स्वयं अपने पास से देता है। उपरोक्त बागे हो जाने के पश्चात् लड़की के भाई से वर का पूजन होता है। द्वार की कार्यवाही होने के पश्चात् द्वार पर दी जाने वाली सम्पूर्ण सामग्री वर को भेंट कर देनी चाहिये। यहीं पर यदि वर के पितामह (बाबा) या नाना होवें, तो उनको यथा शक्तिनुसार भेंट देना भी आवश्यक है।

द्वार की कार्यवाही समाप्त हो जाने के बाद वर तथा वर के पिता को जनवासे में पुनः वापिस चला जाना चाहिये, तथा बारात को आदर सहित भोजन कराना चाहिये। "लाड़ परोसा"—वर तथा वर के पिता जब तक विवाह संस्कार सम्पन्न नहीं हो जाता, उस समय तक कन्या के गृह पर भोजन नहीं करते। अतः उनके खाने के लिये पत्तलें भेजने को ही लाड़ परोसा कहते हैं। बारात के भोजन करने के पश्चात् सवासी, को मंगल गाती हुई स्त्रियों को मेवा फेंकनी चाहिये।

१७. वर के घर पर ही सम्पूर्ण तेल चढ़ाने की प्रथा है—केवल एक तेल अन्तिम जनवासा में चढ़ाया जाता है। एक थाली में सोप, तेल तथा एक परात नाई द्वारा जनवासा में तेल चढ़ाने के लिए प्रातः काल भेजना चाहिये। और अंगुली से तेल स्पर्श कराना चाहिये।

१८. मामा अथवा भातई की करपना

दूसरे दिन के भोजन के खर्च का भार मामा के ऊपर रहता है।

१९. चवेनी

प्राचीन समय में कन्या की ओर से केवल एक ही बार भोजन देने की व्यवस्था थी। उस समय वर के पिता चवेनी बारातियों को कन्या के गृह पर वितरण करता था, किन्तु अब ऐसा नहीं होता है।

२०. दान ग्रहण विवाह से पूर्व होता है। इस अवसर पर वर का पिता कन्या को सुहाग की वस्तुओं के अतिरिक्त आभूषण दान रूपी में देता है। जो भी वस्तु इस अवसर पर कन्या को दी जाती है, वह उसकी पैतृक सम्पत्ति हो जाती है और उस वस्तु पर किसी का भी अधिकार नहीं होता। हिन्दू कानून एवं हिन्दू शास्त्र के अन्तर्गत दान ग्रहण के अवसर पर दी हुई वस्तु को स्त्रीधन के रूप में माना गया है। दान ग्रहण के पश्चात् स्त्रियों को मेवा फेंकनी चाहिए।

२१. कंकन विधि

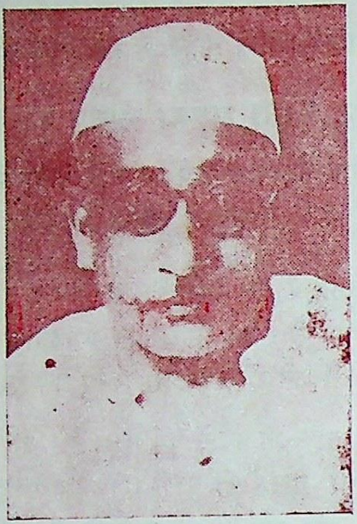
यों कंकन वर के घर पर बारात के प्रस्थान करने से पूर्व बांधा जाता है, किन्तु माथुर वैश्यों में पाणिग्रहण संस्कार से पूर्व कन्या के ग्रह पर ही वर तथा कन्या दोनों के करों में एक ही समय पर समान विधि द्वारा ही बांधा जाता है। कमर पर फेंटा तथा शुद्ध रेशमी या ऊनी वस्त्र धारण करना चाहिये। सिल पर मूसल द्वारा धानों से १२ चावल निकलवाने चाहिऐ। और सात चावल वर के कंकण में तथा ५ चावल कन्या के कंकण में काम आते हैं। चावल खण्डित नहीं होने चाहिये।

वर जिस चौकी पर आसीन है उसके चारों कोनों पर चार सवासी (दो कन्या पक्ष के और दो वर पक्ष के) चूनरी जो पूर्व मथनिया में आई है उसे वर के ऊपर तानकर छाया करें और फिर कलावे के सात तार पूर्ण सावधानी से ऐसे पूरे कि कोई तार टूटने नहीं पावे। टूटने पर गाठ नहीं बांधनी चाहिए। इस प्रकार कलावे को ककण बांधने के लिए तैयार करके तया सात पीपल के पत्तों में सात चावल जा पहिले सिल पर निकले थे, उनको पत्तों में रखकर कंकण बनावे, तथा एक लोहे की किरकटी कलावे में डालकर उस कंकण को वर के सीधे कर में सात गांठ लगाकर बांध दे।

कन्या को मडप में ही स्नान करना चाहिये। तथा वर के ऊपर जो चूनरी तानी गई थी, उसी को कन्या के ऊपर तानकर कलावा के ५ तार पूरे करने चाहिये तथा पीपल के पत्तों में ५ चावल रखकर कलावा में किरकिट बांधकर पांच गांठ बांधकर कन्या के बायें हाथ मे कंकण बांधना चाहिए।

हमारे सहयोगी (७)

जीवन परिचय स्व० लाला बिशम्बर दास अग्रवाल



१. नाम	लाला बिशम्बर दास अग्रवाल
२. पिता का नाम	लाला लक्ष्मी चन्द अग्रवाल
३. जन्म तिथि	८ जनवरी सन् १९०१
४. पत्नी	श्री मति लीलावती
५. बच्चे	दो पुत्र एवं दो पुत्रियां
६. व्यवसाय	व्यापारी सूती, रेशमी व ऊनी कपड़ा।

लाला जी सहारनपुर के मशहूर कपड़ा व्यापारी थे। पुरी उम्र बजाजा एसोशियेशन के चेयरमैन रहे एवं उनके हितों के लिये संघर्ष करते रहे। बिक्रीकर विभाग के खिलाफ उन्होंने एक केस लड़ा जिसमें वे कामयाब हुये। वह यह कि बनारसी साडी हैन्डलूम के कपड़े में आती है अतः इस पर बिक्री कर नहीं होना चाहिये और उन्होंने उस पर बिक्री कर नहीं दिया। बाजार के जितने आपसी झगड़े होते थे उनको हमेशा समझौता कराकर निपटाते रहे। जब १९४८ म शरणार्थी यहां आये तो उन्होंने काफी तादाद में कपड़े उनके लिये इकट्ठा किये।

सामाजिक सेवा उनका धर्म था। वह हिन्दू कुमार सभा, सहारनपुर में भी कार्य करते थे। सन् १९५२ में उन्होंने शाकुम्बरी देवी के मेले पर सुव्यवस्था की। वह जैन सेवा दल के भी अध्यक्ष रहे व अपने पम्पिन्ग सैट के साथ पानी की व्यवस्था करने के लिये लगातार १२ साल महावीर जी के मेले में जाते रहे। वह १९३० से कांग्रेस तहरीक के सिलसिले में शामिल हो गये। वे १९४२ में गिरफ्तार भी हुये।

वह व उनकी पत्नी धार्मिक थी, और बाकायदा पूजा-पाठ करते थे। एक बार लाला बिशम्भर दास सख्त बीमार पड़े। इनकी पत्नी लीलावती ने परमात्मा से प्रार्थना की कि मैंने कोई अधर्म नहीं किया है, मेरे पति को अच्छा कर दें ताकि मुझे विधवा होने का कष्ट न उठाना पड़े और उसके बाद इनकी तबीयत ठीक होती चली गई। श्रीलाला बिशम्बर दास जी का स्वर्गवास ८ जनवरी सन् १९६५ में हुआ।

उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री बृजमोहन अग्रवाल सभा के उपाध्यक्ष हैं। वे बजाजा एसोशियेशन सहारनपुर के अध्यक्ष हैं व श्री हिन्दू कुमार सभा में उपाध्यक्ष हैं और वे उन्हीं की तरह सामाजिक सेवा करते हैं।

लाला बिशम्बर दास आज नहीं हैं। पर उनके सभी साथी आज भी उनको प्यार भरे दिल से याद करते हैं।

[ला० बृजमोहन अग्रवाल के सौजन्य व सहयोग से]

हमारे सहयोगी (८)

डा० जयगोपाल भू०पू० विधायक सहारनपुर एवं प्रधान अ०भा० वैश्य महासम्मेलन-सहारनपुर जिलाशाखा



१ पिता का नाम	बा० हर स्वरुप
२- शैक्षिक योग्यता	डेन्टल ग्रेज्यूएट (बी०डी०एस-सी)
३- जन्म तिथि	१४ नवम्बर १९१४
४- पत्नी का नाम	श्री मती विद्यावती

५- पिछली तथा वर्तमान सामाजिक गतिविधियों का उल्लेख

(i) हिन्दू कुमार सभा १९३५-५५ अध्यक्ष-८२ से ८५ (ii) कांग्रेस सेवा दल १९४८-५१ (iii) बाजोरिया इन्टर कालिज कार्यकारिणी (iv) ट्रस्टी बापू वाचनालय, सहारनपुर १९४६-आज तक (v) मन्त्री सेवा निधि ट्रस्ट १९७६-आज तक (vi) चेयरमैन कन्हैया लाल इन्टर कालिज, रुडकी १९७२ से आज तक (vii) चेयर मैन कन्हैया लाल डिग्री कालिज रुडकी, १९८० से आज तक

६- पिछली तथा वर्तमान राजनीतिक गतिविधियों का संक्षिप्त उल्लेख

स्वतन्त्रता संग्राम में हिस्सा

(१) १९३०-६ महीने कैद महज (२) १९३२-४ महीने कैद सख्त ५०/- जुर्माना (३) १९४१-१ वर्ष कैद २०० रु० जुर्माना (४) १९४२ नजरबन्दी १४ महीने

कांग्रेस के कार्य

(i) अध्यक्ष व मन्त्री शहर कांग्रेस-अनेक बार
(ii) सदस्य प्रादेशिक कांग्रेस-१९६६-७८
(iii) सदस्य अखिल भारतीय कांग्रेस १९७०-७२
(iv) आनरेरी मजिस्ट्रेट (v) सदस्य विधान सभा १९५७-६७
(vi) सदस्य विधान परिषद १९७४-८०

लेबर क्षेत्र में कार्य

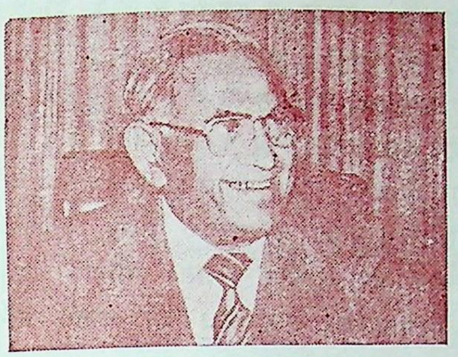
अध्यक्ष सिगरेट वर्क्स यूनियन सहारनपुर १९५२-६२ अध्यक्ष कपड़ा मिल मजदूर यूनियन १९७२-८५ उपाध्यक्ष प्रदेशिय (इन्टक) उ०प्र० १९५५-८१, स्वागत अध्यक्ष प्रदेशिय इन्टक सम्मेलन १९५५-५६, अध्यक्ष श्रमिक शिक्षा केन्द्र सहारनपुर (आगरा) १९६३-८५. सदस्य अखिल भारतीय (इन्टक) १९८१ आर. जी. इस्पात जयपुर में डायरेक्टर स्वरूप इन्जीनियरिंग कारपोरेशन, डायरेक्टर सहारनपुर

सहकारिता

मैटरनिटी कन्जूमर्स कोपरेटिव सोसाइटी सहारनपुर, १९४९ किसान कोपरेटिव शुगर मिल सरसावा को है, संगठित किया और पहली ऐ०जी०ए०ओ० की अध्यक्षता की १९५८ में।

११- स्थायी पता—चर्च रोड, सहारनपुर उ० प्र०

हमारे सहयोगी (६)



परिचयः–

Rotarian Kanhaiya Lal Gupta

Father's name : Late Lala Ram Gulam Gupta.

Place of Birth : Dhaulpur (Rajasthan).

Marriage . Rotarian Resham Devi Gupta.

Sons 3 : (1) Ashok Kumar Gupta.
(2) Lion Ajit Kumar Gupta.
(3) J. C. Raj Kumar Gupta.

Founder & Chairman etc.: (1) Banaras Beads (P) Ltd. An Export House, Varanasi, Delhi—1940.

(2) Prashant Glass (P) Ltd., Varanasi.

(3) Bead Co., V ranasi.

Rotary : R'tary Governor District 312 (1984—85).

Other Activities : Mathur Vaishya Bhawan in Agra and Tundla constructed during his regime.

President, Mathur Vaishya Maha Sabha (1977—83)

Occupation : Winner of Govt. of India Awards and U. P. Govt. Awards from 1973 to 1984 for best achievement in Export.

Certificate of Merit	5
National Award from Ministry of Commerce, Govt. of India, 1975—76	1
President of India Award	1
Special Awards	3
Award from U P. Govt. for top export	2
	12

Tour : Whole India, Nepal, Hongkong, Japan, America, Canada, Britain, France, Italy, Germany, Holland, Switzerland, Sweden, Norway etc.

२२. डढहर बजानां

प्राचीन समय में जब विवाह युद्ध द्वारा होते थे, उस समय चार भाई वर की सुरक्षा करने हेतु हथियारों सहित तथा वर के चारों ओर खड़े रहते थे, यह प्रथा उसी 'सुरक्षा' की संकेत की भावना का प्रतीक रूप मालूम होती हैं। वर के कंकण बधने के पश्चात बर के भाई वर के चारों ओर खड़े होकर डंडे बजाकर उन्हें परे डाल देते हैं।

२३. मोहर झपई

वर कंकण बांधवाने के पश्चात कन्या के गृह में प्रवेश करता है। उस समय कन्या की माता स्त्रियों सहित तथा वर का स्वागत एव आरता करने के लिये द्वार पर आती हैं—उसी को मोहर झ ई कहते हैं। उस समय वर का मामा वर को दरवाजे पर खड़ा करता है। कन्या की माता तथा अन्य स्त्रियां वर के मस्तिष्क पर दही चावल से टीका करके उसका स्वागत करती हैं। वर का मामा टीका करने वाली स्त्रियों को सुपारी देता है तथा कन्या की माता बूरे से पूर्ण एक कटोरा वर को भेंट करती है तथा वर के दक्षिणा हाथ की कनिष्ट अगुली में सोने की अंगूठी पहिनाकर वर को गृह के अन्दर ले जाती है। द्वार पर मोहर झपई पर जो कटोरा, अगूठी तथा पैसे व. को मिलते हैं, वे भातई या मामा के होते हैं। गृह मे प्रवेश हो जाने के बाद वर विवाह की यज्ञ वेदी पर आसीन हो जाता है–और संस्कार आरम्भ हो जाता है।

२४. विवाह

धर्मशास्त्रों ने विवाह सम्बन्ध को बड़ा पवित्र माना है। इस संसार को यज्ञ का रुप दिया है। विवाह संस्कार में स्त्री पुरुष को दश प्रतिज्ञायें यज्ञ-वेदी के सन्मुख करनी होती हैं। (हिन्दू कोड के अनुसार नवीन पद्धति चालू हो गई है, जिसके अनुसार रजि टरी कराने मात्र से कानूनी विवाह मान लिया जाता है। यह प्रथा हिन्दू शास्त्रों के पूर्णतया प्रतिकूल है)। अग्नि के समक्ष सात फेरे करते हैं। मन्त्र होम में सप्तपदी होना ही विवाह को पूर्ण करना है, इसके बिना बिवाह कानून की दृष्टि में भी अधूरा ही रहता है।

२५. विवाह विधि

कन्या का पिता स्नान करने के बाद मंडप में सपत्नीक आकर गणेश एवं नवग्रहादि का पूजन श्रद्धा सहित करे। वर के स्वागतार्थ आसन, पाद्य-अर्घ, मधुपर्क आदि देकर वर को सत्कृय करे। भातई भी गोदान कर कन्या दान का संकल्प विधिवत सम्पन करे। पश्चात कोटम्बिक लोग गोदान क्रम से करें।

२६.–कुंवर-कलेऊ–दूसरे दिन कन्या का पिता वर तथाउसके छोटे भ्राताओं को कुँवर कलेऊ के लिए निमन्त्रित करता है। यह प्रथम ही अवसर है जबकि वर कन्या के गृह पर भोजन करता है। यह प्रथा प्राचीन समय में भी पाई जाती थी। रामचन्द्र जी जब जनकपुरी में सीता को विवाहने गये थे, उस समय मानस में कुँवरकलेऊ के अवसर पर वर तथा वर के भाईयों से जो परिहास किया गया है, वह बहुत ही उच्चकोटी का है। यहां भी इस अवसर पर परिहास, रंग डालना आदि बातें होते हैं। कुंवर-कलेऊ के समय पर कन्या की भाबी वर तथा वर के भाइयों के काजल भी लगाती हैं। कुंवर कलेऊ के अवसर पर वर के कनोरा अर्थात जूता भी छिपा दिये जाते हैं। भेंट देने पर जूते वापिस मिल जाते हैं।

२७. न्योतनी

बढ़हार के दिन सायंकाल को कन्या पक्ष अपने इष्ट मित्रों सहित विनती के लिये जनवासे में जाता है। कन्या का पिता अपनी भूलों की क्षमा याचना, तथा अपने सायंकाल के भोजन के निमन्त्रण की विनम्र प्रार्थना करने के लिए वहां जाता है। इस अवसर पर शिक्षित सज्जनों में मानपत्र आदि के पाठ होने लगे हैं। उपरोक्त विनतियों के पश्चात सर्व प्रथम पक्ष का मामा तथा वर के पक्ष के मामा का मिलन होता है और प्रत्येक न्योछावर करता है। इसी प्रकार बन्धु तथा समधियों की मिलनी होती है। मिलनी पांच, सात अथवा नौ तक होती हैं। वर पक्ष जितनी भी मिलनी कराना चाहें उतनी ही मिलनी कन्या के पक्ष की ओर में होती हैं। अन्त में समधी की मिलनी होती है।

२८. बढ़हार

जो विशेष दावत कन्या के गृह पर होती है, उसी को बढहार कहते हैं। मंडप के नीचे वर के पिता, तथा अन्य पूज्यादि को बैठाना चाहिये। सर्व प्रथम भोजन मन्डप के नीचे परोसना चाहिये। प्रायः मन्डप के नीचे प्रत्येक वस्तु मिष्ठान आदि दूनी परोसी जाती है।

२९. समधौरा

बढ़हार के भोजन के पश्चात कन्या की माता समधी को लडुआ तथा खेल, खिलौना आदि सामग्री भेंट करती हैं और स्त्रियां गाली आदि गाकर समधी से परिहास करती हैं और कुछ सामग्री भेंट करती है।

३०. रहस वधांया

प्रत्येक व्यवहारी अपनी श्रद्धा एवं व्यवहार के अनुसार न्योता के रूप में धन कन्या तथा वर के विवाह के अवसर पर देता है। जिससे उनका सम्पूर्ण विवाह सम्पन्न हो जाता है। सब बन्धु बान्धवों द्वारा न्योता की रस्म पुरी को जाती है। यहां जो भी सज्जन न्योता देना चाहें, उन्हें देना चाहिये।

३१. पलिका

पलंग, गलीचा, तकिया, थाली, परात, बाल्टी, तामडी, चमचा लोटा, कटोरा, कढाई, हेसिया, दीपदान, तंल्ल मोहर की डलिया, जोड़ा जनाना, यह सब सामग्री एकत्रित करके पलंग के साथ दी जाती है तत्पश्चात दोनों समधियों को परस्पर गले मिलकर एक एक पान खिलाते हैं।

३२. जनवासा पूजन

पलंग होने के पश्चात वर-वधू दोनों को जनवासे जाकर उस का पूजन करना चाहिये। विवाह के अवसर पर काम करने वाले व्यक्तियों को जैसे धीमर, नाई, धोबी कुम्हार, भृडचडो के अवसर पर सईस, पनिहारा, माली आदि को नेग देने का यही अवसर है।

३३. ग्रन्थि (गूथ) खोलना

इसके पश्चात मन्डप अर्थात विवाह वेदी का भी कार्य समाप्त हो जाता है। अतः उस वेदी को भी समाप्त करने के लिये मन्डप का ग्रन्थि खोलने का कार्यक्रम शेष रह जाता। वर अपने मामा के साथ मन्डप की ग्रन्थि खोलता है। कन्या का पिता ग्रन्थि खुलाई का नेग श्रद्धानुसार वर को देता है—यह नेग मामा का होता है।

३४. गठ जोरा अर्थात् फेर पटा

पूर्व समय में गौने की विदा प्रायः ३, ५, ७ वर्ष में हुआ करती थी। इसका मुख्य कारण केवल यह था कि उस समय गौने की विदा के लिये भी बारात के समान ही सजधज से कार्य होता था। विदा के अवसर पर सैंकडों व्यक्ति जाया करते थे। गौने की विदा को Second Marriage कहा करते थे। किन्तु अब गौने की विदा विवाह के बाद वर्ष के अन्दर हीं करा ली जाती है। इसलिए गठजोरा विवाह के बाद ही करा लिया जाता है जिससे वधू की विदा वर्ष के अन्दर ही हो सके। मन्डप के अन्दर पृथ्वी लीपकर विधि पूर्वक वर-वधू को चौक पर आसीन कराना चाहिये, फिर देवताओं का पूजना इसके पश्चात वर तथा वधू का आसन परिवर्तित करना चाहिये अर्थात वधू को वामाङ्ग तथा वर को दक्षिणांग परिवर्तित करा देना चाहिये। उपरोक्त फेर पटा पश्चात वर तथा वधू दोनों के पैरों के नाखूनों पर नाई द्वारा महावर लगवाना चाहिये।

३५. विदा

आभूषण, एवं वस्त्र पहिनाकर, वधू को सुसज्जित करना चाहिये और महावर आदि लगाकर देहरी पुजवाकर विदा हेतु तैयार कर देना चाहिये। जेवर वर के पिता को सम्हलवा देने चाहिये, और अपनी भूलों की क्षमा याचना पुनः कर लेनी चाहिये। वर को कन्या के चार भाईयों को तिलक कर चार सुपारी भेंट देना चाहिए। कन्या को अपने सब कुटुम्बी तथा उपस्थित सम्बन्धी तथा सखियों आदि से मिलकर आशीर्वाद प्राप्त कर विदा हो जाना चाहिये। प्रस्थान करते समय नाईन को पानी पिलाना चाहिये। पानी पिलाई का नेग देना चाहिये। विदा के पश्चात वर की कोई बहिन, मान्य या पूज्य उस नगर में हो तो उससे टीका अवश्य कराना चाहिए, और उसको यथा शक्ति भेंट देनी चाहिये।

३६. टीका

मान या पूज्य को वर का टीका कर कुछ द्रव्य भेंट करना चाहिये। टीका मान पूज्य ही करते हैं।

३७. वर-वधू लेने की विधि

वर जब वधू को लेकर अपने नगर में प्रवेश करे, उस समय गाजे बाजे के साथ वर-वधू को गृह में ले जाना चाहिये। वधू के पैर धोना चाहिये। गृह प्रवेश के मुहूर्त पर वर-वधू को गांठ जोडकर द्वार पर चौक पूर कर उन्हें पटे पर खड़ा करना चाहिये। स्त्रियों को मंगल गीत गाने चाहिये सर्व-प्रथम वर की माता को वधू के गले में कोई आभूषण या हार डालकर आलिंगन एवं स्वागत करना चाहिये। तत्पश्चात कोठार में वर वधू को आसीन करना चाहिये, तथा दोनों के तिलक करना चाहिये। तथा स्त्रियों को वधू को मुंह दिखाई की नजर देनी चाहिये। फिर वधू को दूधावती करानी चाहिये। तत्पश्चात गांठ खोलकर वधू का हाथ गुड़ तथा घृत में माता को डलवाना चाहिए तथा पिता की थैली में हाथ डलवाना चाहिये।

३८ कंकरण छुटाने की विधि अर्थात माताबाबू का या बूढे बाबू का

माता बाबू का प्राय: बुधवार या शनिवार को ही होता है। 'माता-बाबू' शब्द अपभ्रंश है, जिसका कोई विशेष अर्थ नहीं है। 'माता बाबू या बूढे बाबू के दिन देवी का पूजन विशेष कर होता है। उस दिन देवी की मूर्ति को रखकर इक्कीस इक्कीस कच्चे खूट (रोटी) तथा पक्के खूट (पूरी) तथा सात सात खीकरी से वर और वधू से पूजन करावें। देवी की ज्योति जगवावे तथा नारियल को फोड़ कर उसमें से गिरी का अग्नि होत्र करे। तत्पश्चात वधू वर का कंगण खोले तथा वर वधू का। इस कार्यक्रम को वर की भाभी पूर्ण करती है।

३९. दसईं की विदा

विदा के लिये लड़की के भ्राताओं को ही विशेष कर भेजना चाहिये। दसईं को सामग्री लेकर जब वधू के भ्राता दसईं के लिये पहुंचे, उस समय उनका आदर सहित सम्मान करना चाहिये, तथा नाई को वधू के भ्राता के चरण धोने चाहिये। तथा निश्चित तिथि पर वधू की विदा कर देनी चाहिये। दसईं की विदा के समय निम्न सामान वधू के साथ भेजना चाहिये। पीड की डलिया जिसमें मट्ठे नमकीन पच्चीस, गुझा पच्चीस, लड्डू पच्चीस लुचई ९ या ११ तथा दसईं की डलिया जिसमें से निम्न सामान गुझा एक, लड्डू पूरी एक एक, कटोरा एक तथा जोड़ा निकालकर शेष सब सामान वापिस वधू के साथ भेज देना चाहिये।

४०. मान सवासी आदि की विदा

विवाह समाप्त हो जाने के पश्चात् सब रिश्तेदारों की विदा कर देना चाहिये। प्रत्येक मान को श्रद्धानुसार पैरावनी देनी चाहिये।

बहिन-भानजी आदि :—प्रत्येक बहिन भानजी, तथा अन्य न्यौतारिनी जो विवाह में उपस्थित हुई है, उन्हें धोती जोड़ा एक या एक लोई, अथवा रुपये, यथा शक्ति देना चाहिये, तथा बच्चों को कपड़े देना चाहिये।

४१. समधौरा (समधिन मिलन)

लड़के की माता तथा वधू की माता का मिलन होता है, उसी को समधौरा कहते हैं। विवाह से बाद समधी-समधिन को एक ही बार मिलनी देने का नियम है।

४२. बहौरा

विवाह होने के पश्चात सर्वप्रथम लड़का विवाहादि अवसर पर ससुराल के स्थान पर पहुंचे, उस समय कन्या के पिता को लड़के को अपने गृह बुलाकर टीका करना चाहिये।

४३. गौने की विदा

माथुर वैश्य समाज में विवाह के अवसर पर कन्या को किसी प्रकार के आभूषण तथा वस्त्र आदि दहेज के रूप में नहीं दिये जाते हैं। जो भी आभूषण वस्त्रादि दहेज के रूप में कन्या को दिये जाते हैं, वह केवल गौने की विदा के अवसर पर ही दिये जाते हैं। गौने की विदा के लिये जब लड़का जावे उस समय लघु भ्राताओं को साथ ले जा सकता है। गौने की विदा पर जब लड़का आवे उस समय बताशे अथवा मिठाई आदि ले जानी चाहिये।

गौने की विदा में देने वाली आवश्यक सामग्री-वर के लिये वस्त्र, व लड़की के लिए साड़ी तथा, शक्तिनुसार एवं श्रद्धानुसार आभूषण तथा ओढ़ने-बिछाने के कपड़े—दरी, रजाई, चादरा आदि।

४४. सोहगी की सामग्री

सोहगी भेजने का तात्पर्य केवल यह होता था कि विवाह के बाद वर्ष, दो वर्ष में विदा होकर बहू घर पर आती थी, अत: उस समय के लिये आवश्यक कपड़े आदि लड़के वाला सोहगी के रूप में लड़की के पहिनने के लिये भेजता था। [यह रीति-रिवाज स्वर्गीय श्री वैजनाथ कौशल-निवासी सदर, आगरा द्वारा लिखित पुस्तक से साभार सक्षिप्त किये गये हैं। —सम्पादक]

४.०७.०६ बिहार के माहुरियों के रीति-रिवाज

यों तो इस ओर निम्न मध्यम और निम्न श्रेणी के लोग चढ़ुआ विवाह करते हैं। अर्थात् कन्या वर के यहां भेज दी जाती है। वहीं जाकर पिता कन्यादान आदि ले आते हैं। इस प्रथा में विवाह बड़ा सस्ता पड़ता है। संभवत: भौतिकवाद और धर्म निरपेक्षता को लिये वही राष्ट्रीय पद्धति बन जावे। परन्तु चढ़ुआ प्रथा भी प्रचलित हो रही है, अर्थात् वर का बारात लेकर चढ़कर गाजे-बाजे से जाना। बारात को सुसज्जित जनवासे में ठहराया जाता है। जलपान के बाद ही वर पक्ष की ओर से वस्त्र तथा आभूषण एक पिटारी में गाजे-बाजे के साथ भेजे जाते हैं। आभूषण वही संक्षिप्त होते हैं, जिन्हें पहन कर कन्या मण्डप में बैठती है। शेष जेवर लड़की का पिता सामर्थ्यानुसार विदा के समय गुप्त रूप से दे देता है। माहुरियों में टीका या तिलक आदि नहीं होता है। दहेज का भी कोई स्थान नहीं था। [पर अब वह प्रारम्भ हो गया है—सम्पादक]

इसके बाद लगभग रात्रि के १० बजे बारात का जुलूस निकलता है। वर वही गुलाबी रंग के झगा में होता है। सिर पर मोहर और चेहरे पर सेहरा होता है। एक नायन पंखा डुलाती हुई, एक सेवक चवर डुलाता हुआ तथा एक सेवक शस्त्र लिए चलता है। पास में वर का छोटा भाई बैठता है अथवा भतीजा। जुलूस में आतिशबाजी बैंड बाजा तथा अन्य सजाई हुई चौकियां होती हैं। कुछ दूर चलकर उधर से आते हुए एक जुलूस में भेंट होती है। यह जुलूस उसी प्रकार गाजे-बाजे आतिशबाजी, व फूल-टट्टी इत्यादि से सजकर कन्या के पिता की ओर से आता है। मध्य मार्ग में दोनों पक्ष के समधी मिलते हैं और एक पक्ष के सदस्य उधर के समधी को मालायें पहिनाते हैं। भेंट आदि नहीं दी जाती हैं। कन्या के दरवाजे पर उनकी माँ वर के दोनों गालों पर दही लगाती है, और माथे पर अक्षत। यही यहां के तिलक का ढंग है। यहीं पर वर को सजे हुए स्थान पर बिठाते हैं। पांच सुहागिन सेवक स्त्रियां, पांच कलश लेकर आती हैं और वे वर पक्ष को भेंट दिये जाते हैं। नाई यहां पर वर पक्ष के सब जातीय भाईयों के पैर धोता है। फिर सबको शर्बत पिलाया जाता है। कन्या का पिता तदन्तर एक जल से भरे लोटे को हाथ में लेकर सब बारातियों की तरफ आमुख होता है। यहाँ दरवाजे पर कोई रकम नहीं दी जाती है।

रात्रि के २—४ बजे संस्कार होता है। उसमें लगभग सभी बाराती उपस्थित होते हैं। मण्डप फूल से सजाया जाता है। एक छोटा कुल मण्डप अलग बनता है। यज्ञ-स्थल की वेदी कन्या के हाथ से अढाई हाथ गहरी, उतनी ही चौड़ी वर्गाकार होती है। उसमें बालू बिछी होती है जिसको यह यमुना की पवित्र बालू बताते हैं। आम की लकड़ियों से यज्ञ होता है, जिन्हें यह वृन्दावन की लकड़ी बताते हैं। नौ व्यक्ति पहिले एक खरल के पास इकट्ठे होते हैं। और उनके बीच में वर। मंगल सूत्र इनके चारों ओर सात बार घुमाया जाता है। एक ऊंची चौकी पर वर का पिता बैठता है। एक ओर वर, एक ओर पुरोहित तथा एक ओर कन्या का पिता। कन्या की माँ मण्डप पर नहीं आती। एक धोती का छोर घर के अन्दर से लाकर कन्या के पिता के वस्त्र से बांध देते हैं। इसके उपरान्त वर पक्ष की ओर से कन्या को तथा उसके पिता की ओर से वर और उनके पिता को सफेद वस्त्र दिया जाता है। शेष संस्कार यह वस्त्र ही पहनकर कर किया जाता है। इन वस्त्रों को पहिने हुए वर तथा वधू बिल्कुल गुरुकुल के ब्रह्मचारी जैसे लगते हैं। कन्या के वस्त्र के ऊपर छपी हुई चूनर डाल देते हैं। शेष विवाह पद्धति सप्तपदी-भांवरें आदि वैदिक हैं। बालों में महावर भरना, चन्द्रदर्शन आदि सब विधिवत कराया जाता है। वधू का ज्येष्ठ गोद भरता है। इस अवसर पर गाली गाने का विनोद भी अन्दर से गाया जाता है।

इसके बाद कन्यादान की रस्म होती है। कन्या के हाथ में एक शंख रख दिया जाता है, उसके नीचे वर का हाथ होता है। एक नये पात्र से प्रत्येक कन्यादान करने वाला व्यक्ति उस शंख में पानी डालता है और फिर भेंट उस हाथ में दे देता है। यही मुख्य और अधिकृत दहेज लेने का स्थान है। इस दहेज का कुछ निश्चित भाग पुरोहित ले लेता है। यही पुरोहित की दक्षिणा होती है। संस्कार समाप्त होकर वर जनानखाने में अन्दर जाता है जहां स्त्रियां उसे भेंट देती हैं। यहीं पर सम्भवतः नाश्ता करने के कार्य में वर एक बार अपनी सास से रूठता है।

दोपहर को बारात का मुख्य भोजन होता है, जिसे इधर कलेवा कहते हैं। दावत के प्रारम्भ में पत्तल में थोड़ा कच्चा चना, नमक और अदरक परोसते हैं। दरवाजे पर एक कपड़े का थान देते हैं।

परन्तु अब इनके रीति-रिवाज इनके शिरोमणि संगठन ने १९७० में कोडिफाई कर दिया है और नियमों की अवहेलना करने पर दण्ड विधान भी निश्चित किया गया है। यह निर्णय निम्न प्रकार हैं—

१- प्रथम क्रान्तिकारी निर्णय था कि जाति में पौरोहित्य हेतु महामंडल से लायसेंन्स लेना पड़ेगा। अन्यथा उनकी वृत्ति ३ वर्ष को बन्द कर दी जायेगी। और ऐसे जाति भाई को जो उनसे पौरोहित्य करायेगा तीन वर्ष को पंगत च्युत कर दिया जायेगा।

(२) (क)—कन्या और वर निरीक्षण करने के पहले वर अथवा कन्या पक्ष वाले दोनों सभी बातों की अच्छी तरह जांच कर लें तब वे वर या कन्या का नियमानुकूल निरीक्षण कार्य सम्पन्न करें। ऐसे निरीक्षण के बाद किसी भी कारणवश विवाह सम्बन्ध तोड़ने का अधिकार वर या कन्या किसी पक्ष वाले को नहीं होगा। अथवा दण्ड विधान—निरीक्षण के बाद विवाह सम्बन्ध तोड़ने वाले पक्ष को २५१ रु० तक का आर्थिक दण्ड या दो वर्ष तक के लिये पंगतच्युत या दोनों दण्ड दिया जा सकता है।

(ख)—वर कन्या निरीक्षण के लिये समाज का कोई भी सदस्य अधिक से अधिक ११ व्यक्तियों को ले जा सकता है। और

(ग)—वर कन्या निरीक्षण के समय मिठाई के साथ प्रचलित सिक्का ११) इग्यारह रुपया तक चढ़ा सकते हैं। इससे अधिक कदापि नहीं। अथवा उलंघन करने वाले सदस्यों को २०१) दो सौ एक रुपया तक अर्थ दण्ड दिया जा सकता है।

३—सगुण और वरतुई : सगुण नगद—१)१० पैसा, जड़ावर १)१० पैसा, बिदाई १)१० पैसा, । कपड़ा पांचों टूक।

वरतुई—वरतुई का कुल खर्च १८.५० पै० होना चाहिये। कन्या पक्ष वाले को अधिकार है कि इस रकम को जिस प्रकार चाहे खर्च कर सकते हैं।

तत्पश्चात कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को अक्षत जाना चाहिये। अक्षत में धान, एक अगूठी सोने या चांदी की रहनी चाहिये जिससे पान काटा जाता है।

(क)—विवाह सम्बन्ध करने के लिये जहाँ निरीक्षण का रस्म न किया जाये और एक बारगी वरतुई हो जाये ऐसी दशा में वरतुई हो जाने के बाद विवाह सम्बन्ध कच्चा नहीं किया जा सकता है।

वरतुई हो जाने के बाद सम्बन्ध कच्चा करने या तोड़ने वाले को ५०१) तक आर्थिक दण्ड अथवा तीन वर्ष तक पंगतच्युत या दोनों किया जा सकता है।

(ख)—महामण्डल के अन्तर्गत किसी भी व्यक्ति को विवाह में कन्या पक्ष वाले से किसी तरह का रुपया या सोना या जेवर या अन्य कोई वस्तु विवाह पक्का करने के लिये विवाह के बीच में दबाव देकर शर्तरुप में स्वयं या किसी अन्य आदमी के द्वारा मांगना समाज के विरुद्ध घोर अपराध समझा जायेगा। ऐसे व्यक्ति को सामाजिक दण्ड दिया जायेगा। अथवा पाँच साल तक के लिये पंगतच्युत किया जा सकता है।

(ग)—माहुरी महा मण्डल के अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति अपनी कन्या के विवाह में खुले या छिपे रुप में वर पक्ष वाले से सीधे या दूसरों के द्वारा रुपये लेकर अपनी कन्या का विवाह नहीं कर सकता। अन्यथा तीन साल के लिये पगतच्युत किया जा सकता है।

(घ)—माहुरी समाज का कोई भी विवाहित पुरुष अपनी स्त्री के जीवित रहते दूसरा विवाह नहीं कर सकता। यदि किसी को कोई उपयुक्त और विशेष कारणवश दूसरा विवाह करना आवश्यक प्रतीत हो तो उस व्यक्ति को विवाह लग्न से कम से कम तीन माह पूर्व अपने मण्डल के द्वारा माहुरी महा मण्डल के प्रधान कार्यालय में आवेदन करना होगा। महामण्डल आवेदन पत्र मिलने पर पूरी जांच कर अपना निर्णय देगा। महामण्डल का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। अन्यथा उसे दस वर्ष तक पंगतच्युत किया जा सकता है।

(ङ)—समाज की भलाई की दृष्टि से ४० वर्ष या इससे अधिक आयु वाले व्यक्ति का विवाह बिना महामण्डल की आज्ञा के नहीं

हो सकता है। यदि ऐसा कोई व्यक्ति विवाह करने की इच्छा रखता हो तो वह अपने मण्डल के द्वारा महामण्डल के प्रधान कार्यालय में लगन के समय से कम से कम तीन महीने पहिले आवेदन करे और महामण्डल ने पूरी जाँच के बाद निर्णय देगा कि विवाह करने दिया जाये या नहीं। जाँच के सिलसिले में महामण्डलों को अधिकार है विवाह की इच्छा रखने वाले व्यक्ति की डाक्टरी जांच भी करालें जिसका खर्च उसी व्यक्ति को देना होगा।

दण्ड विधान—समाज का जो व्यक्ति इस नियम का उल्लघन कर स्वेच्छा से विवाह कर लेगा उस व्यक्ति को दस वर्ष तक पंगतः च्युत किया जा सकता है।

४—माहुरी जाति में विवाह का लग्न केवल तीन महीने वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ के रहने के कारण बहुत ही असुविधा होती है, इसलिये विवाह का समय दो मास माघ, फाल्गुन और बढ़ा दिया गया। अपनी सुविधा के अनुसार लोग माघ, फाल्गुन में भी विवाह कर सकते हैं।

५—विवाह के समय केवल एक ही न्यार ननिहाल में भेजना चाहिये। यदि ननिहाल में लोग जुदा-जुदा हों तो इच्छानुसार सबको या किसी एक को न्यार दें।

नोट—अन्य सम्बन्धियों को लेताहर वा निमन्त्रण दे कर बुलाया जाय। जिसके यहां ननिहाल में न्यार जाय केवल वही साज लेकर आवें। जो न्योता से आवें, वे केवल गोलसेकाई वा गोड लगाई लावें।

यदि ननिहाल में कोई न हो तो न्यार किसी अन्य सम्बन्धी के पास नहीं भेजना चाहिये अर्थात न्यार कहीं भी नहीं दिया जाय। [यह भात मांगने की प्रथा है—सम्पादक]

(ख) ननिहाल के सिवा यदि अन्य सम्बन्धी नियम विरुद्ध बिना न्यार दिए साज लेकर आवें तो उसी साज को बिना घटाए वा बढ़ाए उनके पास ज्यों का त्यों लौटा देना चाहिये।

६—विवाह में केवल दो ही भात मण्डपा और चुमावन में खिलाना चाहिये।

परन्तु चुमावन में पक्की कलेवा करने वालों के लिये चुमावन का अलग भात खिलाने की जरुरत नहीं है। अर्थात जो कलेवा करेंगे वह मण्डप का भात खिलावेंगे और चुमावन का पक्की कलेवा।

७ - चूड़ाकर्म के समय किसी कारण से यदि यज्ञोपवीत (जनेऊ) नहीं धारण कर सकें तो विवाह के समय यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए।

वेदी के समय जो पंच लोग वेदी चुकती की रकम निश्चय कर दें वही रकम दोनों पक्ष तथा ब्राह्मणों को मानना पड़ेगा, लेकिन यह रकम अधिक से अधिक १०१) होगा।

चढ़ुआ विवाह प्रथा

१—उपरोक्त विवाह सम्बन्धी सगुन बरतुई का रसम हो जाने के बाद अच्छत आ जाने पर वर पक्ष की ओर से ब्राह्मण, एक कुटुम्बी, एक खिदमतगार लग्न लाने के लिये कन्या पक्ष के यहां जाय। साथ लग्न का दौरा होगा जिसमें नीचे लिखी चीजें होनी चाहिये :—

साड़ी १, कुरती १, केना के बठरी में मिठाई, गौर गणेश की ढकनी, दही की चुकनी, घी की चुकनी। पूजा का सामान पान, कसैली, आम्र पल्लव, धूप, हल्दी, रोड़ी, आरती, अच्छा, मलयागिर चन्दन, केशर, चुमाना-नारा, पटवासी २, मौर फूल, डिबिया में सिन्दुर या चीट सिन्दुर, ऐना, कंगही, नारा में बधा कंगही, खोबन्धना। चांदी के कजरौटी में मगरा का काजल। चार कटोरी-एक में चन्दन एक में ऐपन, एक में तेल, एक में उबटन।

जो ब्राह्मण लग्न लेने आवें उनको ज्यादा से ज्यादा १)१० पैसे तक बिदाई देनी चाहिये।

२—लग्न आने पर लड़की पक्ष वाले के यहां लग्न के दौरा में नीचे लिखी हुई चीजें होनी चाहिये। ये सब चीजें उन्हीं ब्राह्मण और खिदमतगार के द्वारा भेजना चाहिये जो लग्न का दौरा लेकर आये हों।

दौरे का सामान

१—लग्न पत्रिका (जो लडकी के घर लिखा जाता है)।

२—इसके उपरान्त उभय पक्ष में अठमंगला, दालधोई हल्दी, धनछूई आदि विधान प्रचलित प्रथा के अनुसार होना चाहिये।

पुनः जितने दिन की आवश्यकता हो अन्तर रखना। तत्पश्चात मण्डप छाजन होना चाहिये। तब उभय पक्ष में लावा भुंजाई, धीढारी मातृपूजा, देवपूजा, छोटा मण्डपाच्छादन होना चाहिये। उपरान्त एक दिन का अन्तर रखना चाहिये।

४—कन्या पक्ष वाला जितने आदमी की सख्या बारात में मांगे, वर पक्ष वाला उतना ही आदमी लेकर बारात में जावें। उससे अधिक कदापि नहीं। यह संख्या किसी भी हालत में १०१ से ज्यादा न हो।

अन्यथा २५१ रु० तक का आर्थिक दण्ड दिया जा सकता है।

५—कुटुम्बी चिट्ठा नेवता का उठा दिया गया। केवल एगान्ती और दफा को नेवता देना चाहिये।

६—बारात को खिलाने के समय कन्या पक्ष वाले को केवल अपने गोतिया और एगान्ती को नेवता देना चाहिये। दफा वाले को नहीं।

विवाह के समय दो कुटुम्बी भात खिलाने का जो रिवाज है वे दोनों भात कन्या पक्ष वाले बरतुई और मण्डप के समय ही खिला दें।

७—वर पक्ष की ओर से बारात सजना, साथ में फरेहता का दौरा सजा रहना चाहिये।
फरेहता के दौरा में लड़की के लिए साड़ी, कुरती और जेवर हों।

८—लड़का का कपड़ा पसाहने के समय-धोती १, चादर १, गेंगा १, मोर १, पटवासी १, पगड़ी १।

९—लड़का पक्ष से वेदी का दौरा सजना-घुघुटा के कपड़ा, ब्रह्मा के पैर पूजा का कपड़ा, लावा, कौनी, मौनी, लावा छींटने वाले को धोती, चादर अथवा पाँचों टूक कपड़ा।

१०—लड़की की ओर से वेदी पर दौरा सजाना—गौर गणेश की ढकनी तथा पूजा का पूरा सामान, **वृन्दावन की लकड़ी**, बिहौती कपड़ा (उजला रंग का)। लड़की का भाई लावा छाँटेगा।

११—लड़की पक्ष की ओर से जिस रोज अन्तर रहे उसी दिन बारात आना सुविधा होगी।

जिस दिन बारात आवेगी उसी दिन लड़की तरफ का लिखा हुआ लग्न लड़का के घर पर चुमाया जायेगा।

१२—बारात आने पर बारात का दरवाजा लगाना, बारात का स्वागत करना अर्थात पैर धुलवाना, शरबत पिलाना और जनवासा में डेरा देना।

१३—लड़की पक्ष के एक ब्राह्मण के साथ ५ दाई के द्वारा मिट्टी अथवा पीतल के घड़े में धुआ पानी आना चाहिये। पांचों घड़ा एक ही लाल अथवा पीला कपड़ा से ढ़का रहना चाहिये। घड़ों में कुछ द्रव्य रहना चाहिये। साथ में कुछ पूजा का सामान चाहिये। धुआं पानी आने पर ब्राह्मण और लौंडी को वर पक्ष की तरफ से बिदाई देना।

१४—बारात को भोजन खिलाना।

१५—वेदी पर वर के पिता अथवा जो समधी बनकर बैठें, उनका पैर पूजा होना। कम से कम धोती १, चादर १, और पांचों टूक कपड़ा और नकद १ रु० से ५ रु० तक दे सकते हैं।

१६—वेदी पर से उठकर बाराती जब जनवासा जायें तो लड़की पक्ष के समधी आज्ञा मांगे और दिन में मर्यादा रखकर खिलावें। रात में भात खिलाकर सुबह बारात रुकसत कर दें।

परछनी :

परछनी का दौरा लड़की पक्ष से जाना चाहिये। परछनी में थाली कांसा १, हल्दी के लिए थाली १, ननकुट कपड़ा १, साड़ी कुरती १, धोती १, चादर १।

लड़के को रुकसत करना :

लड़के का कपड़ा जो इच्छा हो। ननकुट १, थइया १, वा जितनी श्रद्धा हो, केना १ या जितना चाहें।

१७—चौठारी लड़के के घर मे होना चाहिए।

१८—जिस समय से बारात आवे उस समय से लड़की पक्ष वाला सिवाय बाराती छोड़कर पंगति में दफा और कुटुम्ब को नहीं खिलावे। केवल एगान्ती को पंगत में सम्मिलित कर सकता है।

द्विरागमन प्रथा :

१—द्विरागमन की बारात की प्रथा उठा दी गई अर्थात इस प्रथा को अब से इस रूप में परिवर्तन की गई :—

कन्या और वर पक्ष वालों को अधिकार है कि यदि वे चाहें तो विवाह के बाद शुभ यात्रा देखकर कन्या को अपने यहां मंगा लें। इसमें देवोत्थान (जेठान) के पहिले या पीछे मांगने से द्विरागमन का कोई ठेक नहीं रहेगा।

खुलासा इस प्रस्ताव का यह मतलब है कि कन्या का कढ़ुआ विवाह होने पर लड़की वर के घर रह जाती है। उस कन्या का जेठान के पहिले मंगाने वाले को द्विरागमन का कोई ठेक नहीं रहेगा।

कन्यादान :

कन्या का कढ़ुवा विवाह हो सकता है पर अवकाश और श्रद्धा होने पर कन्या के पिता कन्यादान यथाशक्ति करें। अधिक से अधिक ५१ आदमी ही आवें अन्यथा १०१ रु० का दण्ड दिया जा सकता है। एक प्रस्ताव मथुरासिनी मन्दिर में भी मात्र १५ रु० व्यय करके विवाह सम्पन्न कराने का पास किया गया है।

४.०८.०१ गोत्र प्रकरण

अध्याय एक में कह आये हैं कि शास्त्र का मत है कि क्षत्रिय और वैश्यों का गोत्र स्वयं अपना नहीं होता। **पुरोहित तथा आचार्य का गोत्र ही उनका गोत्र माना जाता है**। शास्त्र का यह भी मत है कि अपना गोत्र तथा सपिण्डता तथा माता के कुल की सातपीढ़ी बचा कर विवाह किया जा सकता है। उपरोक्त कथनों के प्रमाण में (१) "क्षत्रिय वैश्य पुरोहित गोत्र प्रवरो" (श्रौतसूत; तथा (२) असपिण्डा च यामातुर सगोत्रा च या पितुः सा प्रशस्ता द्विजातीनाम् दार कर्मणि मैथुन (मनु) दिये जाते हैं। इस बात को सामने रख कर यदि हम गोत्रों के मौजूद व्यवहार के विषय में विवेचना करते हैं तो इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि प्रायः सभी जातियों के व्यवहार इस विषय में बहुत कुछ बदल गये हैं। गोत्र का तो कोई रूप ही नहीं रह गया है और **इसका स्थान विशेष कर शासन और अल्लों ने ले लिया है**। शासन को ही अल्ल कहते हैं। ये शासन या अल्ल अधिकतर ग्रामों अथवा कुटुम्बों के नाम पर आश्रित हो गये हैं।

माहौर वैश्यों की निम्न अल्ले हैं जिन्हें भ्रम वश गोत्र कह दिया जाता है :—

बिजौलिया, भोजपुरिया, राजपुरिया, जारौलिया, वितौरिया, महोरिया, महाबनिया, कमरिया, चन्दरिया, कुरेठिया, नरोहलिया, रमवारिया, सुनराखिया, सिवरिया, भागईयाः, परोरिया, तेनगुरियाः तहतगुरियाः, ररतिया, सहवरिया, हरतिया, धनसौरिया, सिकरवारिया, गोकुलिया, गरोलिया, छटीकरिया, मुखरिया, बिलोदिया, सनोठिया, महावरिया, मदारियाः, वरदियाः, सतहरिया, राधाकुण्डिया, भोज-

पुरिया, भजोरिया, सेमरिया, कनिया, बावरोइया, समेदया, मारवरिया, वृन्दावनिया, सोठिया, मदनपुरिया, भगसइया, भरथिया, नरवरिया, चितोरिया, सेंपउआ, परथिया, चचपुरिया, गंदगाइया, नन्दपुरिया, चन्दशरिया, मानाइया, विशालपुरिया, मडवरिया, सिकरौदिया, धौरिया, चिरौदिया, मडनरिया, नगाइया, ओरिया, नरोलिया, किरारिया, रनकतिया, सनकुतिया, गोधनिया, आतोरिया, गाढौलिया, बेलबनिया, दतोइया, परसइया, हरदिया, सुरीरिया, मितरोलिया, घनगइया, होरूखिया, बवेनीया, वीरपुरिया, घतवरिया, मारोठिया, कामवरिया, घनारिया, आगवरिया, कलोदिया, चन्दोरिया, वरेहातया, बछगइया, बसेनिया, वैरोठिया, विर्दजिया, सहरियन, सेजा, रेंपुरिया, खोरिया, दतोलिया, वरसैनिया, अजैपुरिया, उमरिया, जेहिया, टिकरिया, सलेमपुरिया, सैथरिया, सुनवरिया, इदोलिया, वलेजिया, तटकजिया, पचवरिया, खाजीया, साखुरिया, सुरेटिया, लोहगढिया, कमेरिया, बरसिरिया, बगुलिया, नदिया अगेनपुरिया, लबौआ, शलप, गोजस, कौवलस, बछल, गांगलस, ाशिव (यह वास्तविक गोत्र के द्योतक हैं—सम्पादक) अलीनपुरिया, बछरवाल, बासल, गरल, सुजानपुरिया, गढपतिया, पोतवान, मनकुरिया, चौसलिया, पथरकोरिया, रेजवारिया, पेगोरिया, बरूआ, राजपुरिया, मल्लपहाड़, मांडलपनवरिया, बरूआ, कितने ही गोत्र हैं। इनमें गोकुलिया, वृन्दावनिया, राधाकुण्डिया मथुरा से तथा चितौरिया राजस्थान के सम्पर्क व विकास के द्योतक हैं।

४.०८.०२ कुछ गोत्रों का स्थानवार विवरण इस प्रकार है -

१. राजपुरिया (रामपुर—अलेपुर—भदवास)।
२ विलासपुरिया (निधौली नथू का बुर्ज)।
३. आम्भि पुरिया (मन्द पचावर)।
४. सीरोठिया (केशो का बांस बरहन)।
५. मारोठिया (दिलोरवरा, मानेनई)।
६ तेनगुरिया (आगरा, अलीगढ़, मथुरा)।
७ लोहिया (पिलखतरा-शाहजहांपुर)।
८ वीरपुरिया (निधौली कलां)।
९ रामपुरिया (गजडुंडवारा, जैयरा, कसौलिया)।
१० मल्लपछार (ऊंचागांव, कचौरा, धौलेश्वर, कासगंज)।
११ सेपंउआ (अढ़ापुरा कन्चनगढ़ी, मोढ़ीपुर, मुरिगवां, अगसौली)।
१२ नन्दपुरिया (मारहरा, कासगन्ज, सोरों)।
१३ जमाधरिया (मध्यभारत-ग्वालियर, लश्कर, मुरैना)।
१४ सुथलिया (दिल्ली, f जयगढ़)।
१५ पेंगुरिया (पेन्तखेड़ा, आगरा)।
१६ सेंथरिया (निधौलीकलां, जयपुर, जलेसर)।
१७ गन्नालिया (कोटला, श्रीरामगढ़ी, ओखरा)।
१८ विशालपुरिया (खांडा, विरोनी, रुधनी)।
१९ पिपरोनिया (गन्जडुंडवारा, रामछितौनी)।
२० पाठक (पलोखरा, मेढ़ीपुरा, मध्यभारत)।
२१ श्यामपुरिया (भूरीगढ़ी, बिचपुरी, अन्नीका नगला)।
२२ राजौरा (हाथरस, अलीगढ़, कानपुर)।
२३ रमपुरिया (जंसराना, नौरंगाबाद, चिड़रई, मोहम्मदपुर)।
२४ कोसली वाल (गवे का नगला, धीर का नगला)।
२५ कृष्णापुरिया (कासगन्ज, बदरिया, दिल्ली)।
२६ कासवार (मंगरोजी, मितरोल, तकुआवर, हीराका नगला)।
२७ कोमल (गंगापुर, हसायन, सिकतरा)।
२८ सुधारिया (अलवर, रेवाड़ी)
२९ सुधर पुरिया (” ”)।
३० शिमेंपुरिया (” ”)।
३१. खेमकरनियां और खेमेंपुरिया (पटियाला, पंजाब)।
३२ खम्मोलिया (ढूंडार, जैसलमेर, राजस्थान)।
३३ जेतावथ (” ”)।
३४ बड़गोता (” ”)।
३५ रामावत (जोधपुर, बीकानेर)।
३६ घूढाडा (” ”)।
३७ हरदिवाणिया (नागर, चाल, राजस्थान)।
३८ से ४५ सोलंकी कुस्तोलिया, कारमणिया, डोवर, केसरोवाल, ढेलीवालडेमपुरिया=(बिहार)
४६ बहजिया (पिलखतरा व बिहार)।
४७ नीनोरिया (शमसाबाद, इरादत नगर)।
४८ से ५० परसलीबाल पथेरिया, कूमवार (इरादतनगर)।
५१ केन्सवार (दिल्ली, कोटला, गाजियाबाद)।
५२ विस्थारिया (भिंड, गोहद, महगवा)।
५३ बिमनपुरिया (जसराना, जाजूमई, धानूमई)।
५४ अल्लेपुरिया (हाथरस, मुड़सान)।
५५ चुगनादूत (धुमरी, हवेली)।
५६ पुन्डलीवाल (राजस्थान, सांगानेर, अजमेर, किशन गढ़)।
५७ से ६० श्यानपुरिया, गनेशपुरिया, गोवर्धनिया एवं नगापच (” ”)
६१ जौनपुरिया (दोसा, राजस्थान)।
६२ अस्थारिया (मिरहची)।
६३ जत्थारिया (घिरामई, नया बांस)।
६४ जमाधरिया (नन्दपुर, फिरोजाबाद)।
६५ नसलीवाल (मध्य भारत)।
६६-६७ नुसूलपुरिया, कुतकपुरिया (”)
६८ सेन्यलिया (निधौलीकलां)।
६९ गोकुलिया (दियाली का नगला, भैंस)।
७० जुलोसिया (खांडा)।
७१ सभारिया (कुतुकपुर, विनासपुर)।
७२ जेमपुरिया (मध्य भारत, बहादुरपुर)।
७३ तिवाडी (दिल्ली, भांडारेज, मेरठ)।
७४ कस्तूरिया [बिहार]।
७५ केन्मीवाल [अलीगन्ज, कायमगन्ज]।
७६ मथोरिया [फरुखाबाद]

७७ मिश्रा [नागपुर, खन्डवा, भुसावल]।
७८ जगनपुरिया (निधौली खुर्द, भोंडेरा]।
७९ जाजपुरा (कक्षार, कासौन)
८० वोंडिया (बीच का नगला, पहाड़पुर, महावनियां)
८१ गोंठडवार [सिद्धपुरा, कस्तुरी, सीतापुरा]।
८२ मगजिया [राजस थान]।
८३ कासोनियां (दिल्ली)।
८४ हरीपुरिया (मोहनपुर, अमांपुर)।

इन अल्लों के ९० प्रतिशत नाम ग्रामों और खेड़ों के ऊपर हैं जहां से चलकर टुकड़ियां सारे उत्तर भारत में यत्र तत्र सर्वत्र ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में फैल गई।

४.०८.०३—

सेठ कृष्ण नरायण महावर ने अपनी पुस्तक महावर वैश्योत्पत्ति में जगा मांगेलाल कन्हैयालाल के बहीखाते का हवाला देकर लिखा है कि इन ८४ में से ४० गोत्र (अल्लें) महावरों की हैं और शेष ४४ एटा (पांचाल) ग्रुप के महोरों की हैं। पर उनकी पत्रिक महावर—नवजीवन (जयपुर) में महावरों की अल्लें निम्न प्रकार गिनाई गई हैं :—

बच्छलस (वचलस), गिरगस, कुचलस, गांगलस, (गाँगल); विदलस, मुंदलस, मंडलस, सिगलस, गोयल, कुड़लस, मंगलस, बांक्षलस, घिरगस, कुचलिया, वान्दलस-पढ़ावाल, वच्छलस, रिवाड़ी वाला, गिरगस मोहलेदार गिरगस-बसई वाला, कोटवालिया, पैंतपुरिया; महावनिया, धौंधरा, जलबेरिया, बजाबड़ा, सिलपटबाला मढ़ेकर, बढ़ैया, मीरकासीनी, मालसा, मलैया, मवाल, लाघा-बालदी, सोनी, गिरगस, मनेटीवाल, चूखना, किकरस, ढीगी, लोहिया, कोठल, बनारसी।

४.०८.०४ ग्वारें माहौर वैश्यों के खाते

ग्वारें माहोरों में उक्त १२ में से ६ गोत्रों का प्रचलन है :— (१) गांगिल (२) चांदिल (३) वांदिल (४) गर्गस (५) वसल (६) गोलस। केवल उच्चारण भेद है। अल्लों के संदर्भ में ग्वालियर अचल में बसे महौरों के समुदायों पर उन्हीं के प्रमुख पुरुष श्री गोपाल दास बंसल आगरा निवासी ने "माहौर-संदेश" के दिसम्बर ६९ के अंक में कुछ प्रकाश डाला है। उन्हें उनके जातीय जगा श्री जवाहर लाल ग्राम सोनिड जिला जयपुर से जानकारी प्राप्त हुई थी। बंसल जी ने तुरु के पुत्र का नाम आहुक लिखा है।

"राजा आहुक के देवक, के देवदत्त, के सिन्धुमान के दो पुत्र हुए सोमकेतु और कृष्णानन्द। उसमें सौमकेतु के सूरसेन जिनके दो पुत्र हुए महासेन और अग्रसेन।

महासेन जी ने पांच वर्ष की अवस्था में महावन में करील के पेड़ के नीचे मचकुण्ड के किनारे बैठकर १२ वर्ष तपस्या की। उनकी तपस्या पूर्ण होने पर आकाशवाणी हुई कि हे राजा! तेरा वंश चलेगा और तेरी विजय होगी। इतना सुनकर राजा बड़े प्रसन्न हुए और वहाँ से चलकर कृष्ण भगवान का स्मरण करते हुए मेवाड़ में डोंगरपुर खेरा पुहुंचे। और उसके बाद सन ७४० में माहौर खेरा बसाया और ५२ परगनों का राज्य स्थापित किया। वैश्य मत का पालन किया और करील की पूजा की। इसलिये उनके समाज में करील काटना व जलाना और टेंटी का फल खाना निषिद्ध है।

महाराज महासैन जी ने उलटी भुजा से अमरसैन जी नाम का पुत्र उत्पन्न किया, जिनके जंगसैन जी हुए, जिनके हरदत्त जी, के कर्णसैन जी के आसकरण हुए, जिन्होंने सन ८४५ से मथुरा का वास किया। इनके पांच पुत्र उत्पन्न हुए।, बड़े पुत्र मथुरादास जी हुए जिन्होंने मथुरा का वास किया, जिससे मथुरिया माहौर हुए। दूसरे पुत्र शाह गोकरण जी हुए, जिन्होंने मथुरा छोड़कर ८४९ ई० में गोपाचल का वास किया जिससे ग्वारें माहौर कहलाये। तीसरे पुत्र विरथरजी ने मथुरा छोड़कर विरथरा जी का वास किया, जिससे विरथरिया माहौर कहलाये। चौथे पुत्र चन्द्रसैन जी ने दिल्ली का वास किया और दिल्लोवार माहौर कहलाये। पांचवें पुत्र भवानीदास जी ने भावनसर का वास किया, जिनसे भवनियां माहौर कहलाये।

[नोट—इनकी खोज अभी हमें करना बाकी है। —सम्पादक]

शाह गोकरनण जी ने सन ८४९ ई० में ग्वालियर का वास करके सिद्ध गवाले महाराज जी की सेवा की। तब सिद्धदेव [यह नूरावाद के पास है—सम्पादक] प्रसन्न होकर बोले कि हे राजा तू गंगा का स्नान कर, तेरी मनोकामना पूरी होगी। तब शाह गोकरन जी गंगाजी गये और १२ वर्ष तक गंगाजी के पास रहकर तपस्या की और गंगाजल के आधार पर रहे। तब धन तेरस की रात्रि को गंगाजी ने सपना दिया हे महाराज! मैं तेरी तपस्या पर प्रसन्न हूं और तेरे साढ़े सात पुत्र उत्पन्न होंगे। यह वाणी सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुये और लौटकर ग्वालियर आ गये। और गंगा जी की कृपा से शाह गोकरनजी की रानी दययावती (वरछावर गोत्र की) के आठ पुत्र पैदा हुए। बड़े पुत्र [१] गंगदेव जी हुए जिन्होंने गंगापुर का वास किया जिससे गाँगिल गोत्री कहलाये। इनके ८ पुत्र हुये जिनकी आठ खापें बनी। (१) गगदेव से गगवार गंगापुर के (२) घुन्डीधर से घुंडीवार (भवनपुरा के) (३) सुखर्ज न से सुखवार पड़ावली के (४) माधोदास से महलवार पाली गांव के (५) वेछोवार से कोथवार कोथोंदा के (६) श्यामदास के समौखिबान सौमिया के (७) आशाराम के अंसवार अंसा के (८) मोहजीत के। मोहवा मऊ के। इस गोत्र वालों को गंगोरी लगाने को वर्जित किया है। [इन्हीं के वंश में सन १४०० ई० के लगभग राजा सूरज सेन हुये जो लोदी खानदान के समकालीन थे। ग्वालियर के किले में इनका इतिहास सुरक्षित है। इनकी राजधानी ग्वालियर से चार मील दूर मऊ ग...

गांव में थी। जहां टीले आदि प्राचीन पाये गये हैं। —सम्पादक)

[२] दूसरे पुत्र मन्डल देव जी हुये जिन्होंने मांडोली खेरा का वास किया जिससे माडिल गोत्री हुये। इनको माधौ भगवान का इष्ट है। बिटिया के ब्याह में मन्डवा के नीचे दान देने की मनाई है। इनमें इनके ६ पुत्र हुए जिनकी ७ खांपें हुईं। (१) मन्डल देव से मन्डोलिया माडोली खेरा से। (२) खरगराय खाडौलिया बेखा के (३) बैनीदास से बिनौलिया कुथैना से (४) माधवदास के मंदोरिया मैदोली के (५) भीमसैन से मैसोलिया मैसाख के। (६) डोग शाह के ढंगरौलिया सिरमती के (७) डमरूशाह के इन्डौलिया कृतवार के।

[३] तीसरे पुत्र बीजल देव जी हुए जिन्होंने बिन्दौली खेरा का वास किया। जिससे बांदिल गोत्र हुए जिन्हें श्री विष्णु भगवान का इष्ट है। दिये में बत्ती नहीं जलाना। विवाह में पक्की मौहरी नहीं लगानी चाहिये। और कान में लटकन नहीं पहिनना चाहिये। इनके ६ पुत्र हुये और इनमें भी सात खापें हुईं। (१) बीजलदेव से बिजोलिया बिन्दौली के (२) मोहनदास से माहौलिया महापुर के (३) करनसैन से करमानिया छोले की सराय के (४) कन्हीदास के करकौलिया, करकोली के (५) गोपालदास के ग्वालिया ग्वालियर के (६) रुपसहाय के रूहेरिया रुअर के [७] मोहब्बत सहाय से महोबिया राउ महोवा के।

[४] चौथे पुत्र चन्द्रसैन जी हुए जिन्होंने चन्द्रवार खेरा बसाया और चांदिल गोत्री हुए। इनको चतुर्भुज नारायण का इष्ट है। चौथ के चन्द्रमा देखने की मनाही है। इनके ६ पुत्र हुए जिनकी ७ खांपें हुईं।

(१) चन्द्रसैन के चन्दौरिया चन्द्रवार के (२) बंशीधर के बनवारिया बिरंरुआ के (३) लखवीसैन के लाहौरिया लालौर के (४) चैतराम के चिनौरिया चिन्नौर के (५) मन्डलशाह के मडेनिया माडन के (६) पोखपाल के पवैरा पावई के (७) शकर सहाय के शकिरया सांखुरी के [भौन पुरा के पास]

[५] पांचवे पुत्र कुन्दन शाह जी हुए। इन्होंने करनपुर खेरा का वास किया और कौछल गौत्री कहलाये। इनको श्री कृष्ण भगवान का इष्ट है। तथा बच्चे की माता को अपना बच्चा अपनी गोद में से दूसरी स्त्री को देने की मनाई है। इनके ६ पुत्र हुये और ७ खाते हुये।

(१) कुन्दन सहाय के कोछलिया करनपुर के (२) बिजयराय के बिजोलिया घांकला के (३) कुन्दनदास के कुरथनियां कुतधार के (४) हनुमन्त सहाय के हरवालिया हडवा ी के (५) डूंगरदास के डिंहोसिया डडोली के (६) धर्म सहाय के धौकलया हड़वासी के (७) गोपीदास के गोंदिया गोहद के। [६] छटवें पुत्र बीसलदेव जी हुए उन्होंने बसई खेरा का बास किया और बांसिल गोत्री कहलाये। इनको श्रीविष्णु भगवान का इष्ट था। बांस काटने और जलाने की मनाही है। लड़की के बिवाह में बांस का पल्ला देने की भी मनाई है। इनके ६ पुत्र और ७ खांपे हुईं।

(१) बांसिलदेव जी के बंसल बसई के [२] हृदय साहजी के हरिदिया हिगौना के (३) विद्याधर जी के बडोखरिया बडोखर के (४) हीरामन के हररा जिया हरजूपुर के (५) लोमसहाय के लौहडिया लुहैटा के (६) तुलाराम के तिलोकिया बडोखर के (७) जमनादास जी के जमोनिया शेरपुर के।

[७] सांतवें पुत्र गोपाल देव जी हुए। इन्होंने गोपालपुर खेरा का वास किया। जिससे गोल गोत्री कहलायें। इनको श्री गोपाल का इष्ट था। गिरजा मूलदेवी की पूजा है। बेटी को अपने घर से सुई देने की मनाई है। इनके सात पुत्र हुए और ८ खांपें हुई।

(१) गोपालदेव जी के गलिया गोपालपुर के (२) बीसनदेव के बिसंनिया वासौनी के (३) कोदूमल जी के कुतवरिया कुतवार के (४) देवसहाय जी के दीवानिया वारा के (५) गेंदादास जी के गैंदौलिया कुतवार के (६) विनप्रराम के विदौलिया भन्दोली के (७) जौधा राम के जोधिया छिरेटा के [८] नवलदास नरवरिया नरवर के।

[८] आठवें पुत्र चन्द्रमणिजी हुए। यह साढ़े चार माह के गर्भ से पैदा हुए थे। माता का पेट चाक करके जन्म हुआ और भगवान की कृपा से जी उठे। चिरौली खेरा का बास किया जिससे अर्द्धगोत्री कहलाये। इनके केवल एक पुत्र चौखमल जी हुए और इनका गोत्र चौखरिया कहलाया।

इस प्रकार यह पक्ष है कि यह सब गोत्रादि पुरुष-वाचक हैं न कि स्थान वाचक।

४.०८.०५ माहुरी वैश्यों के गोत्र व खाते

इन्होंने अपने पूर्वजों में से प्रत्येक खाते का सम्बन्ध एक न एक गोत्र से जोड़ा है। इस प्रकार १५ खातों के १० गोत्र यों लिखे हैं:— खाता एवं गोत्र:— (१) अठघरा चन्द्रमुनि, (२) आरमराम कश्यप मुनि, (३) एकघरा कुन्डिल मुनि, (४) कंघवे कश्यप मुनि, (५) कपरि में शान्डिल मुनि, (६) कुटरियार शरण मुनि, (७) चरण पहाडी सर्वेश मुनि, (८) तरवे वत्स्य मुनि, (९) नवदिया वैशकियार भारद्वाज मुनि, (१०) पवन चोहद भा० मु०, (११) बशकियार भा० मु० (१२) बडगवे कण्व मुनि, (१३) वरविगहिया कश्यप मुनि (१४) वरहपूरिया बशिष्ठ मुनि, (१५) भदानी कुशा मुनि, (१६) लोहानी कपिल मुनि, (१७) शाहखाता लोहानी कश्यप मुनि, (१८) सेठ शान्डिल मुनि।

परन्तु इस विनिमय का श्रोत क्या है, यह ज्ञात नहीं हो सका। जयपुर के जगा लोग बिहार तक जाते आते नहीं रहे हैं। मेरा जहां तक अनुमान है कि इनमें कश्यप तो गोत्र हैं। शेष इनके ऋषि प्रवर हैं, और अधिकतर खाते मथुरा वृन्दावन के बनों के नाम पर हैं।

४.०८.०६—अलीगढ़-मेरठ व मुरादाबाद के इन बन्धुओं के गोत्र कश्यप व भारद्वाज बताये गये हैं। उनकी अल्लें कटास्म, चरारस और क्षौरसे बताई हैं। चूंकि अलीगढ़ के बन्धु अग्रवाल बनने में प्रयत्नशील है, अतः अब वे अग्रवालों के गोत्र व अल्लें ही प्रयोग करने लगे हैं।

४.०८.०७ माथुर वैश्यों के गोत्र

सम्वत १९६८ वि० में ला० ख्यालीराम पिनाहट वालों ने माथुर वैश्य व्यवहार विधि पुस्तक छपाई थी। जिसमें बताया है कि माथुर ऋषि के १२ पुत्र निम्न प्रकार हैं, और वे ही १२ गोत्र उनके हैं। तथा हरेक के छः खेड़े हैं, इस प्रकार सब मिलकर ७२ खेड़े होते हैं :-

गोत्र **खेड़े**

(१) गागलस— १ –नीम्बोरिया, २—मोरुपुरिया, ३—पनबरिया ४—चौसैया, ५—सादूपुरिया, ६ – पेगोरिया।

(२) चांदलस — १—नौगैया, २—मुड़वारिया ३—पचूनिया ४—अरवरिया ५—धोंटइया ६—महवनिया।

(३) वाक्षलस— १–फरसोइया २–रेन्भवार ३-पेन्तोवार, ४–ड़िबिगाटोका ५—अखारिया ६—तेरेमनिया, ७—मलइया।

(४) कोशलस— १—जबेनिया २—कठोरिया ३—कुतुकपुरिया ४—शनिचार ५—जवरेना ६—सल्ल

(५) मांउलमस— १—गिंदौलिया २—गेन्दनिया ३—रुनकुतिया ४—जरहरिया ५—बेन्वजिया ६—कंवई।

(६) गोलस—१–मईवार २—भितरकोठिया ३—अरवरिया ४—रोनेरिया ५—इकरेलिया ६—विरहरुआ।

(७) वासलस— १—सींगपुरिया २—हरकातिया मोहनिया ३–सिरोहिया ४—पंगोरिया ५—रेपुरिया ६—बलाईवार।

(८) भोलस १—चौदहराना २—भावलपुरिया ३-तेनघुरिया ४—विरजाजार ५—मोरेठिया ६—मेहरे।

(९) गर्गस— १—रेन्भार २—ओरिखा ३—रईभवार ४—ररहिया ५—मलईया ३—जाटोलिया।

(१०) भाबलस, कोक्षलस—१—भार्डेरिया २—पारोलिया ३-विरहरुआ ४—अटावर ५—बाबनिया ६—घोटइया।

(११) वांदलस (बच्छिलस)--१—पिचूनिया २—ओरिया ३—विरखिरिआवगुला ४—रेवरिया ५—रुनकुतिया ६—वारीवार।

(१२) बसलप— १—मांडेरिया २—दौदेरिया ३—दौनेरिया ४—तरतुरिया ५—बाजर बेरिया ६—खोहरिया।

इस प्रकार यह दोहा चरितार्थ हुआ :—

बारह गोत्र बहत्तर खेरे
पृथक पृथक जो बसत घनेरे।

४.०८.०९ चौरासी अल्लों का ऐतिहासिक विश्लेषण

अब हम खडगनाद पुस्तक में वर्णित इन ८४ शासनों के श्रोत व इतिहास पर कुछ विवेचना करते हैं कि किस प्रकार यह सूर्य वंश से सम्बन्धित हैं।

अ. इक्ष्वाकु वंश

१–वर्त खेरिया–सूर्यवंशी इक्ष्वाकु राजा ने विराट नगर में राज्य बसाया जहां पाण्डव वास किये थे। (पृष्ठ ८०)

ब. गहलौत वंश

२–७ पिपरा बटेश्वरा मेरौलिया गोहिल व सल्ल=कौशल के सूर्य वंशी राजा कनकसेन ने कौशल छोड़कर सौराष्ट्र में एक राज्य बसाया था। उन्हें वल्लभी कहने लगे थे। गजनी ने इसी वंश के राजा शिलादित्य को हराया था। उसके बाद राजकुल में केवल पुष्पवती रानी बची थी, जिसने भाग-कर पर्वत की गुफा में छिपकर समय बिताया और वहां एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम गोह रक्खा। बालक ने बड़े होकर ईडर के आस पास राज्य बसाया, और गुहिलौत कहाया। इसी से गिहलौट नाम है। [पृ० ६५]

गहलौतों की ६४ शाखायें पृ० ८४ पर लिखी हैं। पपिरा और भाटारे व बटेवरा, मारोठिया, गोहिल इन्हीं में से हैं।

८–मांडरिया—ईडर ही के जंगलों में एक इलाका भांडेर था। जो भाई वहां बसे उन्हें भाडेरिया कहा गया।

९–चांदलस जो परमार चन्द्रावती में राज्य करते थे, वे चांदलस कहलाते थे।

१०–इसी प्रकार वांसी के गहलौत वांसलस कहलाते हैं। ये राना मानसी के वंशधर हैं। [पृ० २१९]

स. कुशवाहा वंश

सूर्य बंशी राम की सन्तान कुश के वंशज कुशवाहा है। इनकी ५ शाखायें हुई। १३– काक्षलस १४-खोहरिया १५–पूचानियां १६–पचाधारी १७-शेखड़ा।

द. राठौर वंश

श्री मद्भागवत के अनुसार मनु के पुत्र कारुषक की सन्तान राठौर हैं। सूर्यवंशी राठौरों को गगा के द्वाबा से आकर बसने के कारण टाड़ ने गागलस गोत्रीय माना है। इस वंश से निम्न अल्लों का निकास है :— १८–गांगलस १९–जोरा २०–अखरिया २१–नागइया २२–दौनेरिया २३–पेंगोरिया २४–नीम्बोरिया २५-कठावल २६–कचौरवाल २७–रेवाड़ी।

सूर्य वशी मनु के पुत्र शर्याति के वंश में रेवत हुआ। उसने रेवड कुल चलाया। इसी ने रेवाड़ो को बसाया [श्री मद्भागवत ३/२७ से ३६ तक]

य–अग्नि वंश (जैन व बौद्धों की शुद्धि)

ऐसे समय में पृथ्वी परशुराम द्वारा क्षत्रिय–विहीन की जा चुकी थी, तब विश्वामित्र ने वैदिक क्षात्रधर्म के पुनरुत्थान का बीडा उठाया और आबूपर्वत पर विशाल शुद्धि का यज्ञ किया। इसका टाड राजस्थान के भाग २ अ० १ पृष्ठ ३६३ पर वर्णन है। यह यज्ञ क्षीर सागर के विष्णु की आज्ञा से क्षत्रियों के पुनर्जनन के लिए किया गया था। अर्थात वैष्णव धर्म के पुनर्स्थापन के लिये। एक विष्णु की मूर्ति बनाकर तालाब में फेंकी गई। उसमें से एक शक्ति निकली जिसके एक हाथ में तलवार थी, दूसरे में वेद था और गले में यज्ञोपवीत था। उसी का नाम अन्हुलपुर पातन रक्खा गया और वंश का नाम

चालुक्य या सोलंकी रक्खा गया। तीसरे कुल में रुद्र था जिस पर गंगा जल छिड़का गया और उसमें धनुष आ गया। उसके वंश का नाम परिहार रक्खा गया। क्योंकि राक्षसों के साथ युद्ध करते समय उसका पैर सरक गया था। चतुर्थ वंश विष्णु की मूर्ति के प्रतिरूप बना और चतुर्भुज चौहान नाम रक्खा गया। तात्पर्य यह कि बचे हुये क्षत्रियों से प्रायश्चित कराके उन्हें पुनः वैदिक धर्म ग्रहण कराया गया और उक्त ४ नाम दिये गये। उन्हें ४ पृथक राज्य भी तभी मिले। भविष्य पुराण में तो यह दन्त कथा आई है कि कण्व ऋषि भारत में एक भी क्षत्रिय न देख मिश्र देश जाकर १०००० म्लेच्छ मिश्र से लाये और उन्हें शुद्ध करके भारत के राजपूताना में बसाकर क्षत्रिय संज्ञा दी। नोट—उनसे निम्न अल्लों का विकास है :— २८- वाक्षलस २९-गोलास ३०-मलैया ३१- तेरह मनिया ३२— सौनगरा ३३- सिरोहिया ३४- सनैचरा ३५—रैमवार ३६- परौलिया ३७- कोतवाल ३८-ऐंतीवार ३९-बंकला ४०-कव ४१- चांद ४२- पन्नीवाल ४३- देवा ४४- कठोर ४५-नाचल

य- १० चौहान वंश

चौहानों का आदि प्रवर वत्स है। वत्स इन्हें आबू यज्ञ पर दिये गये मैकावती देश की राजधानी थी। इन्हीं के अन्य प्रवर गोल नामी हैं। इनको २४ शाखायें हैं। मलैया, तेरहमनिया, सौनगरा, सिरोहिया सनचोरा, रैमवार, परौलिया, कोतवाल, ऐनविर आदि।

र--भारशिव वंश

भारशिव के ३५ कुल कहे हैं [पृष्ठ ८७]। इन्होंने महिष्मति पर कब्जा किया था। इनसे निम्न अल्लों का निकास है :—४७–५१ भगेला, लंघा, रनकिया, रुठडा और माढास।

ल–सोलंकी वंश

इनका राज्य मुख्य रूप से पंजाब में था। इनकी १६ शाखायें हैं। [पृ० ९१] निम्न अल्लों का विकास इनसे है। ५२–५६ मुडवारिया चौधराणा, भोलन, वच्छवार और बल्लाईवार।

व–परिहार वंश

यह बहुत गौरव शाली नहीं हुए। इनकी १२ शाखायें हैं। इन्होंने ही राना से रावल तथा शीसोदिया उपनाम धारे। [पृ० २१७]

श- ५७ सं ७३ तक स्थान वाचक अल्लें हैं

कुछ केवल नगर वाचक अल्लें हैं जिनके साथ कोई इतिहास नहीं है :- महावनिया, बांदलस (बांदा से) गोकुलिया, नन्दपुरिया चायपुरिया, राजपुरिया, लोहगढिया, हन्द्वरिया, सलेमपुरिया, अजैपुरिया विराटपुरिया, बड़खेरिया, सिखशारिया, फुलवारिया।

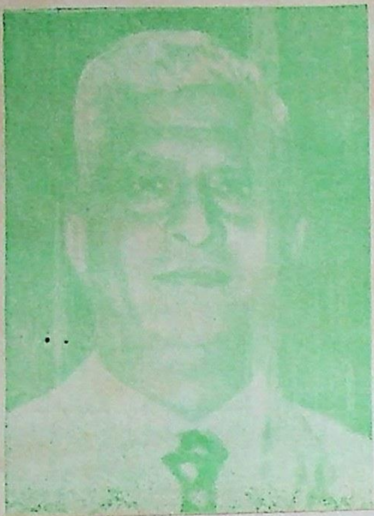
४.०९ माहौर जाति पर धर्ममहामण्डल फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) द्वारा खोज

जाति के इतिहास के अन्वेषण स्वरूप में एक पुरानी पुस्तक हाथ लगी। उसमें माहौर और माथुर वैश्य जातियों पर एक काफी बड़ी टिप्पणी है। मैं उसे यहां ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहा हूं। इस पुस्तक के मूल लेखक का नाम पंडित छोटे लाल शर्मा है। उन्होंने इस विषय में काफी परिश्रम किया है और स्वयं भिन्न-भिन्न स्थानों की यात्रा कर इस विषय पर अन्वेषण किया है और २२६ जातियों पर टिप्पणी या रिपोर्ट लिखी है। यह काम उन्होंने १९१२-१३ में 'हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल" के तत्वावधान में उसके आदेशानुसार किया था। सारी रिपोर्ट विस्तार के साथ और टिप्पणियां एवं पत्राचार की प्रतिलिपि के साथ पुस्तकाकार सन् १९१४ में प्रकाशित हुई। पुस्तक कामता प्रसाद प्रेस फर्रुखाबाद में छपी है। यात्रा आरम्भ करने से पहले पंड़ित जी ने, जो उस मण्ड़ल के महामन्त्री थे, भिन्न-२ संस्थाओं एवं जातियों के नाम एक बहुत बडी संख्या में और वृहत प्रश्नावलि प्रसारित की। उत्तरों के विश्लेषण पर आधारित ही उक्त "जाति अन्वेषण" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई थी।

उसमें माहौर पर निम्न वर्णन है–

माहोर नाम की एक जाति है। ये लोग अपने को वैश्य बतलाते हैं पर हमारे अन्वेषण में किसी ने इस जाति को वैश्य, किसी ने क्षत्रिय तो किसी ने इन्हें द्विजत्व से गिरे हुए बतलाया, परन्तु अपने कथन की पुष्टि में उन लोगों ने कोई प्रमाण पेश नहीं किये जिनके आधार पर यह जाति द्विजत्व से गिराई जाय। हां, किसी-किसी ने यह युक्ति दी कि यह शब्द माहोर का अपभ्रंश है जिसका अर्थ मां और बाप होता है। कदाचित ऐसा हो या न हो। परन्तु हमारे अन्वेषण में प्राय: इस जाति के भद्रजन कहीं अपने को माहोर, कहीं महावर व कहीं मथुरिया वैश्य बतलाते थे। एक योग्य विद्वान ने हमें यह राय दी कि यह जाति महुवार कहाते-कहाते कहीं माहुर कहीं माहोर कहीं माहोर, कहीं माओर, कहीं महावर तथा कहीं माथुर कही जाने लगी और महुवार का अर्थ भी उसी विद्वान ने ऐसा किया कि महुवा (जिसकी शराब बनती है) के व्यापार करने से महुवार और महुवाल वैश्य कहाये और उस विद्वान ने अपना नाम प्रगट करना भी नहीं चाहा है। हमारे अन्वेषण में हमने पता लगाया कि यह माहोर व माहुर नाम कई जातियों में मिलता है। यथा :—

माहोर कोली, महोर सुनार, माहोर कहार, माहोर कुम्हार, माहोर कलवार, माहोर किसान, और माहोर कोंहरी आदि। यह नाम अनेक जातियों के साथ में मिला है। अतः 'धर्म व्यवस्था सभा' निर्णय करे कि आगरा प्रान्त के माहोर इन्हीं में से कोई है या अन्य। मिस्टर C. S. '7. C. सरकारी अफसर ने लिखा है कि यह कलवार जाति का एक भेद है। देखो—(C. and T Page 107)। पुनः वे ही अफसर लिखते हैं कि In Agra we have the Mathuria or (Those of Mathura) who are also called Mahajan and deal in corn, having given up the l quor trade altogether. अर्थात् आगरे में मथुरियों का पता भी लगता है जो महाजन भी कहाते हैं और अनाज का व्यापार करते हैं, जिन्होंने शराब के धन्धे को बिल्कुल छोड़ दिया है। इसको पुष्ट करने के सम्बन्ध में हमारे पास शाहजहांपुर की ओर से महावर वैश्य के भिज-



हमारे सहयोगी (१०)

श्री वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल
सहारनपुर के पुज्य पिता
लाला राम लाल जी



हमारे सहयोगी (११)

सेठ सीताराम गुप्ता

श्री वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल-सहारनपुर के पूज्य पिता श्री लाला राम लाल जी

श्री राम लाल जी का जन्म ३१ अक्तूबर, १९१४ को अलमोड़ा के एक साधारण परिवार में हुआ था। वे अध्ययन हेतु अलमोड़ा से रामजस कालेज, देहली में गये, जहां से उन्होंने हायर सेकेन्डरी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। कुछ समय बाद उन्होंने अध्ययन छोड़ दिया और पूरी तरह स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने लगे। आपके जिम्मे क्रांतिकारी साहित्य छापने तथा उसके वितरण का कार्य लगाया गया, जिसे वे सोलह वर्ष की अल्पायु में पूरी जिम्मेदारी से करते रहें। अंग्रेज सरकार को छापे खाने की सूचना मिल जाने पर उन्हें देहली छोड़ना पड़ा और वह आकर चकरोता की पहाड़ियों में बस गये।

उन्होंने वहां से पहाड़ों व जगलों में घूम-घूम कर सही व गुणकारी जड़ी बूटियों की पहचान तथा उपयोगिता की जानकारी एकत्रित की और उन्हें इकट्ठा करा कर देहली व अन्य शहरों में सप्लाई करने की व्यवस्था की।

इसी प्रसंग में उन्होंने आयुर्वेदिक पशु औषधियों के निर्माण व विकास में अपने को लगा दिया ताकि देश के लाखों पशु पालकों व मूक निरीह पशुओं को राहत मिल सके। और वे पशुओं के पेट की बीमारी के इलाज हेतु "हिमालयन बत्तीसा" नामक औषधी का निर्माण कर सके, जिसे आगे चलकर फ्रांस व जर्मन जैसे विकसित देशों में भी मंगाया जाने लगा। बांझ पशुओं को प्रजनन एवं उत्पादन योग्य बनाये रखने हेतु भी विश्व प्रसिद्ध औषधी 'प्रजना' भी उन्हीं का आविष्कार है। हाल ही में उन्होंने दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु एक औषधी 'गेलोग' का निर्माण किया है।

आयुर्वेदिक अनुसन्धान क्षेत्र में अप्रैल सन् १९७६ में उन्होंने एक वैज्ञानिक गोष्ठी का विज्ञान भवन देहली में आयोजित किया था जिसका उद्घाटन उप राष्ट्रपति बी०डी० जत्ती ने किया था।

पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने अपना पूरा समय सामाजिक सेवा कार्यों के लिये व्यतीत करना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने सहारनपुर में 'मानव मन्दिर' के नाम से उस संस्था की स्थापना की जिसमें दीन-हीन, लाचार अपंगु व निराश्रित लोगों को सभी सुविधायें उपलब्ध हैं।

सेठ सीता राम गुप्ता

जयपुर के उच्च घराने से सम्बन्धित सेठ सीता राम १९५२ में बतौर लोहा व्यापारी गोबिन्दगढ़ आये और महवीर आयरन स्टोर का कार्यभार संभाला। गोबिन्दगढ़ के लोहा व्यापार व उद्योग को संगठित करने में आपका काफी योगदान है, स्टील चैम्बर गोबिन्दगढ़ भी आपके दिमाग की उपज है। उद्योग में सुरिन्द्रा स्टील रोलिंग मिल, दीपक आयरन स्टील रोलिंग मिल (गोबिन्दगढ़) एलोरा स्टील्ज लि०, औरंगाबाद, स्टार वायर (इण्डिया) लि० बल्लभगढ़ से आप सम्बन्धित हैं। रोलिंग उद्योग एवं उच्च श्रेणी के व्यापार में आपका प्रतिष्ठित स्थान है। आजकल दिल्ली स्थित मुख्य कार्यालय से सारा व्यापार कंट्रोल कर रहे है। आप एक कुशल एवं सुलझे हुये उद्योग-पति हैं और यही कारण है आपके नियन्त्रण ने व्यापार व उद्योग उन्नति कर रहा है। सच्चे और साफ सुथरे व्यापार में विश्वास रखने वाले श्री सीता राम जी को झूठ से सख्त घृणा है। साधारण स्वभाव की झलक आपके व्यक्तित्व में दिखाई देती है।

व्यापार के अलावा धार्मिक व सामाजिक कार्यों में आपकी काफी रुचि है। कहा जाता है इस दानी पुरुष के दरवाजे पर सामाजिक व धार्मिक काम के लिये आया व्यक्ति कभी खाली हाथ नहीं लौटता। गोबिन्दगढ़ की धार्मिक संस्थाओं में भी आपका काफी योगदान रहा है। महावीर वैश्य वर्ग, सहाउरु वैश्य संघ आदि संस्थानों को प्रचुर सहयोग व दान दिया है।

वे मुन्ना लाल गर्ल्स कालेज, चेतना विज्ञान संस्थान, योग साधना केन्द्र (मोक्षायातन), महाराज सिंह धर्मार्थ चिकित्सालय, जन सेवा समिति, आवास विकास समिति, जैन धर्मार्थ चिकित्सालय से भी सम्बन्धित रहे हैं।

उन्होंने कोढ़ियों के लिये भी ऐसी औषधि का निर्माण किया था जिससे कोढ़ियों के रिसते हुए घाव एवं गलते हुए शरीर ठीक हो जाते थे और सुन्न हो गये भागों में धीरे-धीरे चेतना आने लगती थी। वे उन्हें अपने घर के समीप स्थित कोढ़ी कालोनी में अपने हाथों से स्नेह से दवाई देते थे।

१९ जून, ७८ को उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया। उनके पुत्र ने पैतृक ऋण के रूप में हर्ब इन्डिया प्राइवेट लिमिटेड संस्थान शारदा नगर [सहारनपुर-१] में खोला है तथा सर्व वैश्य संगठन में विशेष रुचि रखते है।

वाये हुए पत्र भी आये हैं, जिनका सारांश इस प्रकार से है कि "आगरे प्रान्त के माहोरों से उच्च श्रेणी के लोग परहेज करते हैं। यहां तक कि उनके पात्रों से जल नहीं पीते। परन्तु यहां हमारी तरफ अभद्र व्यवहार कुछ नहीं है। ब्राह्मण आदि सब वर्णों में हेल-मेल, खान-पान यथोचित रीति से है।"

यह जाति सामान्यता तो सर्वत्र ही है परन्तु विशेष रूप से इस जाति की लोक संख्या आगरा प्रान्त तथा शाहजहांनपुर प्रान्त में है किन्तु इन दोनों प्रान्तों की स्थिति व जाति पद में बड़ा अन्तर है। हमें विश्वसनीय स्रोत द्वारा ऐसा भी निश्चित हुआ है कि आगरा प्रान्त में जो वैश्य हैं वे माहौर कहाते हैं और शाहजहांनपुर तिलहट आदि जिलों के आस-पास रहने वाला वैश्य समुदाय महावर कहाता है। आगरा प्रान्त के माहौर का समीपी सम्बन्ध चौसेनी वैश्य समुदाय से बताया गया है। यह सब जो ऊपर कहा जा चुका है, सर्व साधारण के मत व सम्मतियों के आधार पर है, परन्तु हमने बहुत दीर्घदर्शिता के साथ में अन्वेषण करने से परिणाम में उपर्युक्त [दोनों प्रान्तों के माहौर व महावर समुदायों में कोई कर्म ऐसा प्रचलित न देखा जिसके आधार पर इस जाति का नीचत्व प्रकट होकर यह जाति द्विजत्व से गिरायी जाती]। अत: हमारी निज की सम्मत्ति में यह जाति वैश्य वर्ण में नहीं है वरन् क्षत्रिय वर्ण में है, यद्यपि ये लोग अपने को वैश्य ही मानते हैं, परन्तु यह ठीक नहीं, क्योंकि क्षत्रिय वंश में महाउरु एक बड़े प्रतापी राजा हुए हैं। उनका वंश उन्हीं के नाम पर महाउरु कहाते कहाते विद्या के अभाव से माहुर कहाने लगा और उस माहुर का बदलते-बदलते माहौर, महावर, माहोर व माओर हो गया। जब इन वैश्यों पर अन्य द्विज समुदाय सन्देह व संकल्प विकल्प उठाने लगी। तब इनमें पठित समाज अपने को मथुरिया कहने लगा। हमारे जनरल नोटिस के अनुसार आगरा प्रान्त की इस जाति ने कोई प्रमाण नहीं दिया, पर शहाजहांनपुर प्रान्त वालों ने बहुत ही किंचित सा संकेत मात्र दृष्टान्त लिखा है जिसका भावार्थ यहां ले लिया गया है। हमें मंडल से इस जाति के कल्याणार्थ सुव्यवस्था निकाले जाने की दृढ़ आशा है।

महाउरु वैश्यों के संगठन के आधुनिक सूत्र

२– उदगम्	ऊरू तदस्य यद्वैश्य: (ऋग्वेद)
३– राजनीति	विशिराजा प्रतिष्ठन:। (यजुर्वेद)
४– पौराणिक	मथुरासिनी महादेव्यै: नम:।
५–ऐतिहासिक	श्रीणि अग्रजाय नम:
	महासेन भामाशाह–गांधी महाभागाश्च

६– जाति गीत :—

(१)

जयति जयति मां वसुन्धरे, आदि वैश्य कुल माता।
महावर गढ़ के नीरे, माहौर नद्दी तीरे,
पृथिवी माता जहां उगलती पन्ना मोती हीरे।
वही हमारी आदि भूमि है, आदि शक्ति सुखदाता ॥ जयति०।
वैष्णवी मथुरासिनी से प्रेरित भई स्वजाति।
सर्व विदित है पूर्ण देश में सूर्य वंश की ख्याति।
पश्चात मथुरा, तदन्तर ब्रज ग्रामों के वासी ॥ जयति० ॥

(३)

जय सरस्वती, जय जमना मैया, जय दामोदर जय गंगे
जय मत्स्यालवर, जय ग्वालियर, जय विहार, जय बंगे।
जय माहौर, महाबर, माहुरी, माथुर भाग्य विधाता ॥ जयति० ॥

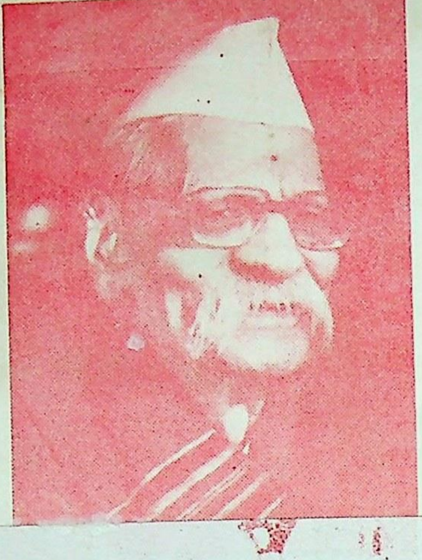
(४)

अमर रहे पूर्वज की कृति, अमर रहे गौरव निशान।
अमर रहे उरु, महासेन, भामाशा, गान्धी की सन्तान।
मंगल करिणी, 'सुमन'–वितरणी, गायें अमर गुण गाथा ॥ जयति० ॥
जयहे ! जय हे ! जय ! जय-जय-जय-जय हे !



हमारे सहयोगी (१२)

श्री रामेश्वर दास गुप्त



हमारे सहयोगी (१३)

श्री डालचन्द जैन एम० पी० के पिता उदारचेता स्व० श्री भगवान दास जैन, सागर

पिता का नाम — स्व० श्री मौजीराम गुप्त
माता का नाम — स्व० मा महादेवी जी गुप्ता
पता — डी-35, साउथ एक्सटैंशन भाग एक, नई दिल्ली-49
जन्म तिथि — 15, वैसाख विक्रम सम्वत 1980
जन्म स्थान — नरेला (दिल्ली)
धर्म पत्नी — श्रीमती कस्तूरी गुप्ता
सुपुत्र — 1) श्री रामावतार गुप्त
2) श्री अरूण कुमार गुप्त

आजीविका — 1939 में अखबार बेचने से कार्य आरम्भ किया। आज परिवार के लगभग बीस प्रतिष्ठान काय कर कर रहे हैं जो निम्न प्रकार हैं:—
शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों का प्रकाशन 1) गुप्ता प्रकाशन, 2) कैम्ब्रिज पब्लिशिंग हाउस 3) बुक्स एण्ड बुक्स 4) रामायण प्रकाशन 5) गुप्ता एण्ड गुप्ता

सार्वजनिक सेवा की गतिविधियां :— 1. रामेश्वर दास धर्मार्थ ट्रस्ट 2. अभिनव भारती स्कूल 3 मंगल मिलन मासिक पत्रिका 4. श्रीमती कस्तूरी देवी गुप्ता होम्योपैथी औषधालय 5. श्रीमती देवकी रानी गुप्ता योग साधना केन्द्र 6. धर्म भवन बृजघाट (गढ़मुक्तेश्वर) 7. धर्म-भवन, साउथ एक्सटैंशन भाग एक नई दिल्ली 8. अभिनव बचत एवम् ऋणदात्री सहकारी समिति 9. अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन 10. हिन्दी व्यवहार संगठन तथा अ. भा. वैश्य महासम्मेलन

इन संस्थाओं के अध्यक्ष रहे ;— 1- एजुकेशनल पब्लिशर्स एसोसिएशन, दिल्ली, 2- अभिभावक एवं शिक्षक संघ सनातन धर्म कन्या महाविद्यालय, लिंक रोड़, नई दिल्ली 3- सनातन-धर्म पब्लिक स्कूल, प्रबन्ध समिति, बीडनपुरा 4 रैजीडैंट वैलफेयर एसोसिएशन. साउथ एक्सटैंशन, 5- अभिनव बचत एवं ऋणदाता सहकारी समिति 6-कस्तूरी देवी गुप्ता ट्रस्ट

महामन्त्री अथवा मंत्री रहे :— 1- अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन 2 अग्रोहा विकास ट्रस्ट 3- एजूकेशनल पब्लिशर्स एसोसिएशन दिल्ली 4- चतुरामनाय जगदगुरु श्री शंकराचार्य प्रतिनिधि समिति 6- आर्य समाज, नरेला

कोषाध्यक्ष रहे :— राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, दिल्ली

इसके अतिरिक्त राष्ट्रभाषा से सम्बन्धित संस्थाओं जैसे दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा आदि में कार्य किया। तथा हिन्दी व्यवहार सगठन की स्थापना की। यह संगठन हिन्दी के व्यवहारि पक्ष पर कार्य कर रहा है।

और फिर साहित्य क क्षेत्र में पाठ्य पुस्तकों से सम्बन्धित लगभग पच्चीस पुस्तकों की रचना की। भिन्न-भिन्न विषयों पर लगभग दो सौ पचास से भी अधिक लेख लिखे। जिसमें से अधिकांश लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। योग से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों की रचना की आधुनिक एवं अनुपम विवाह पद्धति को संस्कृत के साथ-साथ हिन्दी की पद्य शैली में प्रकाशित किया।

धार्मिक क्षेत्र में प्रथम प्रयत्न अपने प्रकार का आपके द्वारा संकलित हुआ कि लगभग बारह-तेरह वर्ष के अथक प्रयास के बाद १ मई १९७९ को देश के चारों शंकराचार्यों श्रृंगेरी शारदा पीठाधीश्वर, द्वारका पीठाधीश्वर, गोवर्धन (पुरी) पीठाधीश्वर एवं जोशी मठ के पीठाधीश्वर महाराज को श्रृंगेरी में एक मच पर एकत्रित किया।

स्वतन्त्रता संग्राम में १९३६ से १९४७ तक नरेला कांग्रेस के अध्यक्ष रहें स्वामी स्वरूपानन्द जी के संरक्षण मे आजादी की लड़ाई में कार्य किया। और विशेष रूप से कांग्रेस का बुलेटिन बांटने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी श्री रामेश्वर दास गुप्त पर सारे वैश्य वर्ग को अभिमान है।

(धर्मपरायण, तीर्थ-भक्त, दान-वीर श्रीमंत समाज भूषण सेठ भगवान दास जी जैन-सागर म०प्र० ; (लेखक गुलाब चन्द राजेश-)

जन्म—दिनांक १०/१०/१८९९-चमेली चोक, सागर-(म०प्र०)
पिता—स्व० श्री मंत समाज भूषण सेठ पूरन चन्द जी जैन।
व्यवसाय—उद्योग स्तर पर बीड़ी निर्माता-'बालक छाप बीड़ी'।
प्रतिष्ठान—मेसर्स भगवान दास शोभा लाल जैन।
पत्नी—श्री मति सौभाग्य शीला धर्मपरायण काशीबाई जैन।
संतान—५ पुत्र एवं २ पुत्रियां- ज्येष्ठ सुपुत्र युवक राज सेठ डालचन्द जैन, संसद सदस्य- (१९८५ सत्र से)
कार्य क्षेत्र—अनेकों जैन-अजैन संस्थाओं के संरक्षक, अध्यक्ष, ट्रस्टी एव सदस्य।

राष्ट्रीय संकट-बाढ़, अकाल, सूखा एवं स्वतन्त्रता संग्राम के समय जनहित कार्यों में अग्रणी एवं मुक्त हस्त से सहयोग दिया करते हैं।

लोकोपकारी कार्य—देश की चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद के प्रति प्रेम होने से अपने ज्येष्ठ भ्राता स्व० श्रीमंत समाज भूषण सेठ मोहन लाल जी की चिरस्मृति में 'श्री मोहन सार्वजनिक धर्मार्थ औषधालय'' की गत ४०-४५ वर्ष पूर्व सागर नगर में स्थापना की जहां निशुल्क दवा दी जाती है। गत १५-२० वर्ष पूर्व सागर नगर के मध्य में एक भव्याकर्षक धमशाला का निर्माण कराया जहां सर्व प्रकार की आवासीय सुविधायें प्राप्त हैं।

श्री भगवान दास शोभा लाल चेरीटेबिल ट्रस्ट की स्थापना-जिसके द्वारा सभी धर्मों की संस्थाओं के सहायता योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां, रोगियो एवं असहायों को सहायता दी जाती है।

अपने प्रिय अनुज स्व० श्रीमंत समाज भूषण सेठ शोभा लाल जी की चिरस्मृति में डा० हरीसिंह विश्वविद्यालय सागर को मानसिक गौर-रोगों के परीक्षण हेतु २,५०,१०१ रुपयों का अनुदान सन् अक्तूबर ८० में दिया है।

धार्मिक श्रद्धा भक्ति—इस वृद्धावस्था में (८६ वर्ष की आयु में) धर्माराधना, धार्मिक कार्यों में रुचि, संतसमागम, तीर्थाटन इत्यादि महान कार्यों में लगन एवं निष्ठा जो युवावस्था से ही आपकी साथी है।

अध्याय ४ अ

इस समूह की शिरोमणि-संस्थायें

४अ. ०१ माथुर वैश्य समूह में सामाजिक चेतना का सूत्रपात अपेक्षाकृत बहुत पहिले हुआ। इस देश में राजनैतिक उथल-पुथल का सूत्र-पात्र १८७५ में आर्य समाज तथा १८८५ में कांग्रेस के जन्म के साथ ही हो सका, पर इसके संगठन का सूत्रपात्र १८६४ ही में हो गया था।

आगरा वाह अंचल के माथुर वैश्यों के संगठन—इनकी पहली पंचायत १८६४ में तथा दूसरी पिनहट भदावर स्टेट में १८६७ में हुई थी। कादिर गंज (जि० एटा) के रईस ला० मथुरा प्रसाद चौसेनी माहौर इसी में वैश्य ने आकर कहा था कि आप लोग माहौर नाम छोड़कर माथुर नाम रख ला क्यों कि पूर्व में कुछ कलवार बन्धु अपने को माहौर कहने लगे हैं। बीस वर्ष इस पर विचार होता रहा और १८८९ में १२०० बन्धु इस वर्ग के उपस्थित हुए और अपना नाम बदल कर माथुर वैश्य तथा संस्था का नाम माथुर वैश्य प्रतिनिधि सभा वाह रख लिया। भदावर महाराज के बाह में स्थित मन्दिर में यह सभा हुई थी। भदावर नरेश के अनुज महाराज कुमार आधारसिंह जू इसमें उपस्थित थे। इस हेतु एक उपसमिति बनाई गई थी। महाशय पन्नालाल जी एवं राबेलाल जी इसके स्वागताध्यक्ष तथा स्वागत मंत्री थे। लाला गणेशी लाल जी रईस शमसाबाद उसके प्रधान थे।

वहाँ रीति रिवाजों को कोडीफाई भी निम्न प्रकार किया गया।

(१) विवाह की आयु ४० वर्ष तक निश्चित की गई, पर निःसन्तानों को ५० वर्ष तक की छूट दी गई।

(२) बदले की शादी पर रोक लगा दी गई।

(३) मोल की सगाई अर्थात कन्या विक्रय को दण्डनीय करार दिया गया।

(४) विवाह से पहले यज्ञोपवीत अवश्य होना चाहिये।

(५) लगुन के लिये पूरी, कचौरी, खजला, जलेबी, पचफेना और सतफेना बारात को तथा नाई ब्राह्मण की दक्षिणा की सीमा बाँध दी गई।

(६) विवाह पर रण्डी का नाच तथा फूल टट्टी बन्द कर दी गई।

(७) आतिशबाजी के खर्च की सीमा ५) से १५) तक, तथा बारातियों की संख्या ८० से ३०० तक, की शादियों के लिये निश्चित हुई।

(८) चारों प्रकार के विवाहों में पुरोहित की दक्षिणा भी निश्चित कर दी गई।

(९) समधियों के बारात में जाने की संख्या निश्चित की गई।

(१०) महावरा गौने से पहिले किया जावे।

(११) हुक्का अन्य बिरादरी को न दिया जावे, न अन्यों का पिया जावे।

(१२) नियम तोड़ने वालों पर १००) दण्ड की व्यवस्था की गई।

(१३) दण्ड से प्राप्त रकम को जाति की निर्धन कन्याओं के विवाह करने या गरीब विद्यार्थियों को सहायता देने पर खर्च करना निश्चित हुआ। इन प्रस्तावों से तत्कालीन सामाजिक स्थिति का पता लगता है।

(०२१) इसके बाद एक सभा सन् १८९१ ई० में फतेहाबाद जिला आगरा में हुई। यहां निश्चय हुआ कि कादिरगंज व राजा के रामपुर क्षेत्र के बन्धुओं के बारे में नियुक्त शिष्ट मण्डल की जांच के आधार पर उन्हें अपने में मिला लिया जावे। उन्हें यह भी आदेश दिया गया कि वे अपने को माहौर न कहकर माथुर कहा करें। श्री बद्रीप्रसाद जी लहरा वालों के सम्पादकत्व में 'माथुर वैश्य सुखदायक' पत्रिका निकालने का निश्चय हुआ। यह पत्रिका ३-४ वर्ष चलकर बन्द हो गई।

(०२२)—फिर २३ वर्ष तक अर्थात सन् १९१४ तक कोई सभा नहीं हुई। १९१४ में सम्मेलन पुनः जाग्रत हुआ क्यों कि कादिरगंज वालों ने कोंच कालपी ग्रुप में विवाहादि कर लिये थे और इनका समाज इस पर क्रुद्ध था। अस्तु दो फरवरी १९१४ को शमसाबाद में ला० बच्चूलाल चन्दौसी वालों की अध्यक्षता में अधिवेशन हुआ। इसमें निश्चय हुआ कि (१) आगरा में छात्रावास बनाया जावे। (२) कोंच वाले मामले पर मुरादाबाद में १० दिसम्बर को जो कान्फ्रेंस कादिरगंज-वर्ग की होने वाली थी, उसके निर्णयों की प्रतीक्षा करने को ठहरी।

(०२३) —पुनः १९१६ को आगरा में बा० कन्हैयालाल जी एत्मादपुर वालों की अध्यक्षता में उत्सव हुआ जिसमें रीति रिवाजों में कुछ सुधार हुआ।

(०२४)—फिर तारीख मई १९१७ को सूरदास की जन्म भूमि रुनकता जि० मथुरा में प्रसिद्ध इतिहास शोधक बा० यमुना प्रसाद जी धौलपुर वालों के सभापतित्व में उत्सव हुआ, जिसमें महासभा के विधान में कुछ संशोधन किये गये। जनगणना करने का कार्य भी वशावलि कमेटी को सौंपा गया। 'माथुर वैश्य हितैषी' नाम से जो पत्रिका १९१५ से शमसाबाद से निकल रही थी, उसका प्रबन्ध महासभा ने अपने हाथों में ले लिया।

(०२५)—पुनः अक्तूबर १९२१ को शमसाबाद में बा० रामचन्द्र गुप्त वकील (बाद में सेन्ट्रल एसेम्बली के सदस्य) के सभापतित्व में अधिवेशन हुआ। महा सभा का पूरा विधान वहीं बना। दिसम्बर

२२ का उत्सव भी इन्हीं के सभापतित्व में आगरा में हुआ जहां रस्मों में कुछ संशोधन किया गया। भाग्यवशात २९ दिसम्बर १९२३ को जरार (जि० आगरा) के उत्सव के भी वे ही सभापति थे। यह सिद्ध पाया गया कि कादरगंज तथा कौंच कालपी के लोग एक ही श्रोत वाले हैं। फलतः कादरगंज वालों से विवाह सम्बन्ध बन्द कर दिये गये। और फिर जाकर दिसम्बर १९२४ के अधिवेशन में जो बा० यमुना प्रसाद के ही सभापतित्व में पिनाहट में हुआ, कादरगज-ग्रुप को पृथक ही कर दिया गया।

जनवरी १९२६ में फतेहाबाद में फिर उत्सव बा० तोताराम जी वकील के सभापतित्व में हुआ। इसमें अक्षत योनि विधवाओं के पुनर्विवाह की आज्ञा का प्रस्ताव आया पर पास न हो सका। यह प्रस्ताव तथा लघु भ्राताओं (बाद-बिसैरा ग्रुप-ताजगंज) को मिलाने के प्रस्ताव आगे को टाल दिये गये। (०२६) दिसम्बर १९२७ को मुरैना उत्सव पर भी जो बा० रामप्रसाद जी वकील के सभापतित्व में हुआ था, यह दोनों समस्याएं आगे के लिये टाल दी गईं। (०२७) मार्च १९३१ को एत्मादपुर में हुये उत्सव में [सभापति मु० द्वारिका प्रसाद जी इटावा] अक्षत योनि विधवाओं का पुनर्विवाह जायज करार दिया गया, पर लघु भ्राता का प्रश्न फिर टल गया।

(०२८)—लगभग ६ वर्ष तक राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति जनता की रुचि लगी रहने से कोई अधिवेशन नहीं हुआ। (०२९) फिर अक्टूबर ३७ को जाकर पुनः बा० रामचन्द्र जी एडवोकेट के सभापतित्व में वाह में फिर अधिवेशन हुआ। कुछ वैवाहिक नियमों में सुधार किया गया और विवाह की आयु १४ व १८ वर्ष निश्चित की गई। जातीय झण्डा स्वस्तिका युक्त केसरिया रंग का रक्खा गया। गोद भरने तथा महावरा की रस्म बन्द कर दी गई। (०२१०) अक्तूबर १९३९ में बा० हरिप्रसाद मुन्सिफ के सभापतित्व में फीरोजाबाद में हुये उत्सव पर ४ पीढ़ी तक के लघु भ्राता मिला लिये गये। (०२११) २८ सितम्बर १९४१ को सिरसागज जि० मैनपुरी में बा० श्रीराम गुप्त के सभापतित्व में हुये उत्सव में दण्ड-विधान को स्थागित कर दिया गया। माथुर वैश्य पाठशाला आगरा हाई स्कूल में परिणित कर दी गई। अन्तर्जातीय विवाह का मसला जनमत जानने को प्रसारित किया गया।

इसके बाद कार्यकर्त्ता पुनः राष्ट्रीय आन्दोलनों में चले गये और ६ वर्ष तक कोई अधिवेशन नहीं हुआ। (०२१२) स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अक्तूबर १९४७ को अजमेर के बा० श्यामसुन्दर लाल जी के सभापतित्व में शमसाबाद में फिर उत्सव हुआ। इसमें दहेज मध्ये दिये जाने वाले जेवर पर से लिमिट हटाली गई। (जो कि एक सुधार विरोधी कार्य था)। (०२१३) अक्तूबर १९५० में श्री शिवनारायन गुप्त (बाद में जनरल मैनेजर नेशनल इन्श्योरेन्स कलकत्ता) के सभापतित्व में उत्सव हुआ। नियम भंग करने वालों का प्रतिकार करने के लिये एक केन्द्रीय सेवादल का निर्माण किया गया। कलकत्ता के सेठ हुब्बलाल जी द्वारा ५०,०००) का दान आगरा स्कूल को देने और उसका नाम इनके नाम पर रखने की बात यहीं निश्चत हुई।

(०२१४) अक्तूबर ५५ को फतेहाबाद में अधिवेशन ला० रामचरन जी गुप्त कानपुर के सभापतित्व में हुआ। इसमें यह फैसला हुआ कि बादबिसैरा के बन्धु इनमें सम्मिलित नहीं किये जावेंगे। इस उत्सव पर प्रदर्शनी (कला-कौशल) व्यायाम, महिला, तथा कवि और नवयुवक सम्मेलन भी हुए।

(०२१५)—तदन्तर मक्खनपुर में अधिवेशन १९५८ में हुआ, जिसके सभापति डा० हरनारायण गुप्त एम० डी० (रिटायर्ड सिविल सर्जन) थे। प्रधान ने सारे देश में १६ दौरों में ५००० मील की यात्रा करके ३६ जातीय नगरों खाण्डार फतेहाबाद, एत्मादपुर, सिरसागंज, टूंडला, शमसाबाद, मुरैना, मनियां, ग्वालियर, इरादतनगर, भदावर, वटेश्वर, होलीपुरा, भदरौली, पिनाहट, जयपुर, दिल्ली, धौलपुर, कलकत्ता, झरिया, खड़गपुर, गया, बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ, उज्जैन, इन्दौर, भूपाल, होशंगाबाद, झांसी तथा मथुरा पालनपुर, सिद्धपुर, अहमदाबाद, वीरमगांव, बड़ौदा, बम्बई, मेहसाना, कल्लोल तथा अजमेर में शाखा सभायें स्थापित कीं। महिला शिल्प कला शिक्षण केन्द्र भी ७ स्थानों पर अर्थात् जरार मुरैना, अम्बाह सिरसागंज, एत्मादपुर, शमसाबाद और पिनाहट में स्थापित किये गये, जिनमें लगभग १००० छात्राओं ने ३ वर्ष में शिक्षा ली। लगभग ३७० नगरों में जातीय जन-गणना की गई। जातीय इतिहास की सामग्री भी संकलित की गई। माथुर वैश्य छात्रावास आगरा में वार्डन-हाउस का निर्माण हुआ। इन्हीं के कार्यकाल में सामूहिक विवाह के प्रश्न को महा सभा ने नैतिक समर्थन दिया। तथा परित्यक्ता नारियों को उनके पतिओं से भरण-पोषण व्यय दिलवाने वाले अभियोगादि में हर सम्भव सहायता देने का निश्चय हुआ। और माहौर, माथुर, महावर, मथुरिया माहुरी आदि वैश्यों के संघ निर्माणार्थ कान्फ्रेंस बुलाने के सम्मिलित निमन्त्रण पत्र पर भी डा० हरिनारायन गुप्त ने हस्ताक्षर करके इस आन्दोलन को बढ़ावा दिया। इन्हीं के समय में एक माथुर वैश्य नियमावलि भी प्रकाशित की गई जिसमें सामाजिक रहन-सहन के उदार नियम हैं। गोद, महावरा, जुहारी एवं चवेनी की प्रथा बन्द कर दी गई। लगन के दहेज की लिमिट मय सामान के १०००) तथा दरवाजे पर १००) तथा सामान न लेने की बात इसमें थी। (सन ६१ में आगरा के अधिवेशन पर इन्होंने नये पदाधिकारी अर्थात बौहरे द्वारिका प्रसाद को चार्ज दे दिया गया। पुनः २ जून ६४ को नये पदाधिकारियों की एक अन्त रंग सभा ने माहौर-माथुर वैश्य संघ में शामिल न होने का निश्चय किया। इस वर्ष की अन्त रंग बैठक ने ३१ छात्रों को छात्रवृति देने का निश्चय किया गया।

(०२१६)— अक्टूबर ६५ में ग्वालियर में अगला अधिवेशन श्री ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु की अध्यक्षता में हुआ। इसके स्वागताध्यक्ष श्री जगन्नाथ प्रसाद गुप्त वकील हाई कोर्ट ग्वालियर थे।

फिर दिनांक ५ जुन १९६६ को महा सभा की कार्यकारिणी की आगरा बैठक में अन्य विषयों के अतिरिक्त बाबू हरचरन लाल कौशल कलकत्ता निवासी द्वारा प्रस्तावित तथा बा० विद्या प्रकाश वकील अम्बाह द्वारा समर्थित महाउरू संघ प्रवेश के बारे में इस

आशय का वक्तव्य पेश हुआ कि माथुर वैश्यों को माहौर माथुर वैश्य संघ में व्यक्तिगत रूप जाने की छूट रहे। पदाधिकारियों ने सूचित किया कि सन १९६२ में कार्यकारिणी यह निश्चय कर चुकी है कि संघ में लोग व्यक्तिगत हैसियत से जा सकते हैं, पर वे वहां जाकर अपने को माथुर वैश्य महा सभा का प्रतिनिधि घोषित न करें।

(०२१७) पश्चात दो अधिवेशन १९६९ व १९७० में क्रमश: फीरोजाबाद एवं ग्वालियर में श्री धर्मपाल विद्यार्थी एव बा० श्री निवास गुप्त अम्बाह की प्रधानता में हुये।

(०२१८) अगला अधिवेशन दिनांक नवम्बर १९७६ में श्री नन्नेमल नगर (मेला ग्राउण्ड) ग्वालियर में सम्पन्न हुआ। नव निर्वाचित अध्यक्ष वाराणसी के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री कन्हैयालाल जी गुप्त) (मोती वालों) ने अधिवेशन की अध्यक्षता की।

यहां पर श्री हरिश्चन्द्र गुप्त आगरा के कर कमलों द्वारा औद्योगिक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया।

तत्पश्चात विभिन्न प्रस्तावों पर विचार प्रारम्भ हुआ। मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार थे :—

प्रस्ताव ३— "महा सभा एक रोजगार मार्ग दर्शक ब्यूरो की स्थापना करके उसका संचालन करे।

प्रस्ताव ९— माथुर वैश्य महा सभा का अधिवेशन यह निश्चय करता है कि समय की मांग को देखते हुये सम्पूर्ण देश में माथुर वैश्य माहौर, महावर तथा वैश्य वर्ग की अन्य उपजातियाँ जो अपने से रीति रिवाज, आचार विचार एवं खान-पान में सामन्जस्य रखती हैं; उनको अपने परिवेश में लेने के संकल्प को मान्य करता है।

ऐसे संगठनों से आवेदन आने पर भविष्य में माथुर वैश्य महासभा की केन्द्रीय कार्य समिति सभी पक्षों पर विचार विमर्श के पश्चात आगामी अधिवेशन में निर्णय हेतु प्रस्तुत करेगी।

सामूहिक विवाह—सायंकाल ५ बजे से विशाल मैदान में सुसज्जित मण्डपों में १५ युगल जोड़ियाँ सामूहिक विवाहों में आबद्ध हुई।

[४ अ. ०२. १९.] माथुर वैश्यों की अन्य संस्थायें

(०१) माथुर वैश्य सामुहिक विवाह परिषद ।

१९६६ में निर्मित । इसके प्रधान थे लाला रामचरन गुप्त कानपुर तथा मंत्री श्री हरचरण लाल कौशल । परिषद का उद्देश्य है कि माथुर वैश्य महासभा के उत्सव पर एक साथ सामूहिक विवाह सम्पन्न कराये जायें। इसके लिये केवल २१) व्यय हेतु प्रति दम्पति से लिये जाते हैं। कुछ अन्य नगरों में इसकी शाखायें स्थापित हैं। नवम्बर ६४ को फिरोजाबाद में सामूहिक विवाह का प्रोग्राम बड़े जोश के साथ सम्पन्न हुआ। वहां ९ विवाह एक साथ सम्पादित कराये गये, जिनमें ७ जोड़े फिरोजाबाद से बाहर से आये थे। सजातीय श्री शिवशंकर जी शास्त्री मथुरा ने पौरोहित्य किया। तब से प्रति वर्ष यह प्रोग्राम यत्र तत्र आयोजित होते रहे हैं।

(०२) माथुर वैश्य हितैषी सभा :—

यह सभा माथुर वैश्य हितैषी पत्र को चलाती थी, जो कि कानपुर से निकलता था । इसका अन्तिम वार्षिक उत्सव कानपुर में ६-९-६४ को श्री राधामोहन जी फरसैया के सभापतित्व में हुआ।

(०३) माथुर वैश्य शिक्षा परिषद (रजिस्टर्ड) आगरा :—

पुरानी संस्था के नियमों को ९ जुलाई १९६१ को अन्तिम रूप देकर इस संस्था की रजिस्टरी करा ली गई। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य जातीय स्कूल, कालेज एवं छात्रावास आदि खोलना और उनका प्रबन्ध करना तथा योग्य जातीय छात्रों को छात्रवृत्ति देना है। सन ४८ से ५६ तक ८६२१४) की आय तथा ७९७३६) का व्यय था। यह परिषद निम्न संस्थायें चलाती हैं :—

१—हुबलाल माथुर वैश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आगरा। सन ५३ में इसका भवन तैयार हुआ।

कालेज में १२०० छात्र एवं ३५ अध्यापक हैं। इसी के अन्तर्गत अन्य शिक्षा सस्थायें भी आयोजित हुई हैं।

२—श्री माथुर वैश्य पाठशाला आगरा।

इसकी स्थापना १९०३ में हुई थी। इस समय यह श्री चुन्नीलाल जी के भवन में दरेशी न० ३पर काम कर रही है। यह एक जूनियर हाई स्कूल है।

३—श्री माथुर वैश्य कन्या पाठशाला आगरा—इसकी स्थापना १९४८ में हुई थी। यह कक्षा ८ तक है और दरेशी में ही लगती थी। अब यह जूनियर हायर सैकण्डरी स्तर तक है।

(०४) माथुर वैश्य जनहित परिषद कलकत्ता—

सितम्बर १९५७ में कलकत्ता के माथुर वैश्यों ने सन ६० में ही ५००००) मूल्य से नं० ३५ नलिनी सेठ रोड, (बड़ा बाजार) पर धर्मशाला हेतु जमीन खरीदी गई। अब विशाल भवन बन कर तैयार होगया है जिस पर कोई १५ लाख रुपया व्यय हुआ है।

(०५)—हुबलाल माथुर शिक्षा प्रचार ट्रस्ट कलकत्ता। जाति में छात्रवृत्तियों द्वारा तथा अन्य ग्रान्टों द्वारा शिक्षा प्रचार हेतु स्व० सेठ हुबलाल जी ने यह ट्रस्ट बनाया था।

(०६)—पचकुइयां आगरा में माथुर वैश्य महासभा भवन २० लाख रुपये की लागत से १९८० में पुरा हुआ है। इसमें ४० कमरे हैं। अन्दर एक मन्दिर व कैन्टीन भी है।

(०७)—माथुर वैश्य-संघ पत्रिका :—

यह पत्रिका प्रगतिशील विचार लेकर आगरा से प्रतिवर्ष निकलती है। इसका उद्देश्य माथुरों के सब सम्प्रादयों को एक सूत्र में पिरोना है। इसके सम्पादक हैं श्री बंगालीमल गुप्त, गली काजी, रावतपाड़ा आगरा।

(०८) श्री ठाकुरदास मक्खनलाल धर्मार्थ ट्रस्ट—

इस ट्रस्ट ने वर्ष सन् ६६ में ३५ छात्र-छात्राओं को, विधवाओं तथा कुछ असमर्थ पुरुषों को भी सहायता दी गई है,

जिनकी संख्या ३६ है।

(.०९) ज्ञानोदय वाचनालय तथा जल क्षेत्र एवं मा० वै० महिला शिल्प कला केन्द्र राजा खेड़ा—

(.१०) श्री आशाराम रतनलाल विद्यालय जरार :

इस हेतु श्री आशाराम रतन लाल ने अपनी कोठी दान में दे दी थी।

(.११)–रामस्वरूप छात्रावास नया बाजार, लश्कर–स्थापित १९६५।

(.१२)–भगवान देवी कन्या विद्यालय (१९६७)

(.१३)–बैकुण्ठी देवी कन्या महा विद्यालय आगरा (स्थापित-१९६७)

कलकत्ता—निवासी श्री दाताराम पारोलिया की माता जी श्रीमति बैकुण्ठी देवी की स्मृति में उनके प्रभूत दान से स्थापित यह कालेज फोर्ट से सदर जाने वाली सड़क पर अब अपने निजी विशाल भवन में संचालित है।

(.१४)–इस समय देश में ९६ शाखा सभायें, ६ पंचायतें, ३६ सेवादल, ५२ महिला मण्डल इनके अन्तर्गत सारे देश में सेवारत हैं। मुख्य शाखाओं की सूची निम्न प्रकार है—

अध्याय=४ अ–२

आगरा-जयपुर प्रान्तस्थ माथुर वैश्य महासभा ताजगंज [आगरा]

—माहौर वैश्यों की एक सभा में ताजगंज, उसके आस पास के ग्रामों में तथा जयपुर नगर एवं टोंक आदि में बसी है। आगरा वर्ग के समुल्लास में वर्णित बन्धुओं के साथ ही इन्होंने भी अपना नाम माथूर रख लिया। माथुर वैश्य महासभा की एक उपसमिति ने बहीखातों, पुरानी इमारतों तथा तमस्सुकों की खोज बीन करके रिपोर्ट दी थी कि इनके पास ३०० वर्ष पुराने बादशाही जमाने के क्रय-विक्रय की रजिस्टरियां अब भी सुरक्षित हैं, जिनमें इन्हें मथुरिया माहोर लिखा है। परन्तु माथुर वैश्य महासभा के १९५४ के फतेहाबाद उत्सव पर ७८ और ८२ के वोटों के अन्तर से यह निश्चय किया गया किया कि यह लोग आगरा क्षेत्रीय माथुरों के अंग नहीं हैं।

तब इन्होंने १९५५ में अपनी प्रथक शिरोमणि सभा इन नाम से स्थापित की। आगरा के मुहल्ला ताजगंज में एक वृहद धर्मशाला, इनकी है। इसी वर्ग के ७०० परिवार मुगलों के राज्य काल में व्योपारार्थ बिहार की ओर गये थे, और जाकर वहीं के हो गये। वहां इन्हें माहुरी-वैश्य कहते हैं। इस वर्ग की भर पूर आबादी जयपुर में भी है, जहां उन्हें टिक्कीवाल कहते हैं। इस वर्ग के एक सज्जन टोंक में एम. एल. ए. रहे हैं। संस्था की रजिस्ट्री १९६६ में हुई थी।

अध्याय–४ अ ३ माथुर वैश्य (पूर्व नाम चौसेनी माहोर)

संगठन का परिचय

(१) पाठक पहिले पढ़ चुके हैं कि कादरगज के लाला मथुरा प्रसाद जी जिन्हें गदर के बाद काफी रियासत अङ्गरेजों से इनाम में मिली थी। १८६७ में पिनाहट नगर (भदावर स्टेट) में वहां के माहौर वैश्यों की एक बैठक में गये और उनसे प्रार्थना की कि उनके वर्ग को वे अपने में मिला लें। जमानत स्वरूप २००) ला० मथुराप्रसाद से जमा किया तब एक उप समिति की रिपोर्ट के आधार पर माथुर वैश्य महासभा ने उन्हें अपने में मिला लिया। यह सम्बन्ध ३२ वर्ष चला जबकि दिसम्बर १९२३ में जरार के उत्सव पर इस कारण उनसे विवाह सम्बन्ध बन्द कर दिये गये कि उन्होंने कोच–कालपी ग्रुप से विवाह कर लिये थे। और १९२४ के उत्सव पर उन्हें पृथक कर दिया गया।

(२)—इन लोगों की आबादी जिला एटा के कस्बों राजा का रामपुर व कादिरगंज एवं जि० मुरादाबाद में सम्भल, चन्दौसी एवं मुरादाबाद में तथा रामपुर में है। वहां मुहल्ला मण्डी बांस में एक माथुर वैश्य भवन भी है। ऐसा ही भवन सरतल की चौकी सम्भल में है। रामपुर नगर में श्रीकृष्ण सरन एम० एल० ए० (अब दिवंगत) जो लाला मथुराप्रसाद जी के धेवते हैं थे। इन्होंने माथुर वैश्य नाम रखना ही उचित समझा।

(३)–इनके मुख्य गोत्र बांदलस, बांसलस, मांगलस तथा मांडलस हैं, जो कि माथुर वैश्य (आगरा वर्ग) के पूर्ववर्णित १२ गोत्र में भी हैं। सेनी शब्द श्रेणी का अपभ्रंश हैं। चौश्रेणी व्यवसायिक संघ, महाश्रेणी संघ का पुरा–काल में अंग था। इसीलिये इनका नाम चौसेनी माहौर था। सेनी शब्द महा सेनी के वशज होने से है जो कृष्ण के समय तक इनके पूर्व पुरुष थे। यद्यपि मुरादाबाद जिले के १९१० में प्रकाशित डिस्ट्रिक्ट गजेटियर में चौसेनिओं को बारह सेनियों की एक शाखा लिखा है, परन्तु यह अङ्गरेज लेखक की शब्दों के अनुप्रास पर आधारित कल्पना मात्र है, क्योंकि बारहसेनियों से इनका कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं है।

(४)— दरवाजे से बारात लौटकर फिर भांवरे पड़ने का रिवाज इनमें भी है। विधवा विवाह का चलन प्रायः नहीं रहा है। इनका कोई केन्द्रीय संगठन नहीं है।

अध्याय-४ अ—४

मथुरिया वैश्यों के संगठन

[क] अलीगढ़ मेरठ, दिल्ली क्षेत्र। (गंगा के दक्षिण में)

(०१)—इस वर्ग के संगठन के विषय में इस वर्ग के एक महान कार्यकर्ता मास्टर रामछबीले राम एम० ए० (अब दिवंगत) मंडी सईद खां से हमें प्रचुर साहित्य प्राप्त हुआ था। इनके घटक गंगा के उत्तर में मुरादाबाद एवं रामपुर जिलों में भी बसें हैं और दक्षिण में अलीगढ़ व मेरठ जिलों में। कुछ दोनों ओर के लोग जाकर दिल्ली में भी बस गये हैं। उत्तर वालों का वर्णन हम भाग ख मे करेंगे।

(०२)—जहां तक ज्ञात हो सका है सर्वप्रथम ८ मई १९०६ को अतरौली जिला अलीगढ़ में स्वर्गीय लाला नारायण प्रसाद जी के

सभापतित्व में एक बैठक इस वर्ग के बन्धुओं की हुई, जिसमें निश्चय किया गया कि प्रतिवर्ष मुख्य २ जाति भाइयों की बैठक निश्चित स्थानों पर हुआ करेगी। उस संस्था का नाम माहोर वैश्य सभा था। यह अनौपचारिक बैठकें ६ वर्ष तक होती रहीं। इनमें मुख्य कार्यकर्त्ता थे :—

लाला शम्भूनाथ आगरा, मुन्शी इन्द्रमणि जी मुरादाबाद (स्वामी दयानन्द सरस्वती के सहयोगी), मुन्शी कृष्णलाल एवं नन्नूमल जी दतावली, मास्टर रघुनन्दन लाल कासगंज तथा बाबू कालीचरन जी मेरठ [सन्यास का नाम अखिलानन्द जी (मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा–१९६५)।

पहला मुख्य कार्य जो इनके सामने था गंगा के उत्तर और दक्षिण वालों का मिलन। अत: बा० लक्ष्मण प्रसाद जी के हस्ताक्षर से निम्न विज्ञापन वितरित किया गया।

विज्ञापन

समस्त माहुर वैश्य भाइयों की सेवा में निवेदन है कि इस कार्तिकी को गढ़मुक्तेश्वर में मुरादाबाद की ओर के गंगा तट पर एक कान्फ्रेंस माहुर वैश्य जाति की तिथि १२, १३, १४ मास कार्तिक सुदी सम्वत १९७० वि० तदनुसार १०, ११, १२ नवम्बर सन् १९१३ का निश्चित हुई है। अतएव आपसे प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर पर अवश्य पधारकर कृतार्थ कीजिये।" [इसकी प्रति मेरे पास सुरक्षित है। —सम्पादक]

इस मिलन के बाद १९१४ में एक सम्मेलन हुआ, उसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक के रीति रिवाजों की कोडीफाई किया गया और जो नियम अध्याय ४ में दे दिये गये हैं।

प्रोफेसर गुलाबराय जी की आगरा के माथुर वैश्य की नकल पर माथुर शब्द अपने वर्ग में प्रचलित करने के उत्सुक थे। १९३३ में उन्होंने आगरा में माथुर वैश्य सेवक मण्डल स्थापित किया गया और वे ही इनके प्रथम प्रधान थे। एक पत्रिका माथुर वैश्य के नाम से उन्होंने प्रसारित की। सात वर्ष तक वे इस नाम परिवर्तन के लिये जनता को समझाते रहे, परन्तु जन मानस ने स्वीकार नहीं किया।

०४—सन् ४० में प्रो० गुलाबराय जी छत्तरपुर स्टेट की दीवानी से स्तीफा देकर, आगरा कालेज में हिन्दी के प्रोफेसर होकर आ गये। तिथि २९-३-४० को आगरा में इस वर्ष की नगर माहोर सभा की साधारण सभा की बैठक बाबू रामस्वरूप जी के सभापतित्व में बा० प्रभूदयाल जी के मंडी सैय्यद खाँ मुहल्ला स्थित मकान में हुई। इसमें १२ व्यक्ति उपस्थित थे। सर्वसम्मति से बाबू गुलाबराय जी इनके प्रधान तथा लाला प्रभूदयाल जी मंत्री चुने गये। एक मासिक पत्र निकालना निश्चित हुआ। परन्तु अखबार का नाम "माथुर सेवक" ही रक्खा गया। और इसका प्रथम अंक नवम्बर १९४० में दिल्ली से श्री निरन्जनलाल गौतम के सम्पादकत्व में निकाला गया। पत्र के प्रथम पृष्ठ पर स्वामी दयानन्द का फोटो था और प्रस्तावना में कहा था कि संस्था का गठन जाति में शुद्ध वैदिक धर्म के प्रचार के लिये किया गया है। उस पर सजातीय बाबू शिवचन्द्र जी, तत्कालीन उप-मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का शुभ कामना सन्देश भी छपा था। सभा ने एक पुस्तक-बैंक तथा छात्रवृत्ति निधि भी स्थापित की थी। ऐसी ही एक बैठक ८-२-४१ को बरौली (जि० अलीगढ) में एक शादी के अवसर पर हुई। और एक शिरोमणि संगठन की स्थापना हुई। इसमें बाबू मोहन लाल आर्य का विशेष हाथ था, जो आगरा के प्रसिद्ध आर्य समाजी कार्य कर्त्ता थे। वहाँ मेरठ के ला० सूरजभान सर्राफ को प्रधान तथा बा० मोहनलाल आर्य को मंत्री चुना गया। दिनांक ११-१०-४१ को दतावली में एक जाति सम्मेलन हुआ और वहां रीति भांति प्रकाश पैम्फलेट द्वारा जातीय नियम प्रसारित किये गये। उन नियमों की अवहेलना करने वालों के यहां महासभा ने सत्याग्रह भी कराये। यह सत्याग्रह जलेसर, बिजोली आदि में हुये। लगभग २५ शाखा सभाएं बनाई गईं और अतरौली मण्डल ने एक महिला विद्यालय भी स्थापित किया।

दिनांक २३-१२-४१ को साधारण सभा की एक बैठक बा० मोहनलाल जी आर्य के मकान पर हुई जिसमें ५ व्यक्ति सर्व श्री मोहन लाल जी, बा० रामसरूप जी जेलर, श्री प्रभूदयाल जी, श्री गौतम जी, श्री किरण प्रकाश जी एवं श्री दुर्गा प्रसाद जी उपस्थित थे। यहां निश्चय हुआ कि नाम माथुर ही उचित है।

०५—इधर बरौली में गठित इतिहास निर्णायक समिति ने भी २५-१२-४५ को अपनी बैठक में प्रो० गुलाबराय जी के सभापतित्व में उन्हीं के निवास-स्थान गोमती निवास पर यह सिफारिश की कि हमारी जाति का शुद्ध नाम मथुरिया अग्रवाल है क्योंकि अग्रवालों के गोत्रों से हमारा साम्य है और क्योंकि हमारे पूर्वज पहिले मोढ़ेरा से अग्रोहा गये और फिर अग्राहा से मथुरा। पर मुरादाबाद अंचल के इनके बन्धु माथुर शब्द के ही पक्ष में थे। और जलेसर अंचल के लोग पूर्व नाम माहोर शब्द ही बनाये रखना चाहते थे।

दिनांक २७-६-४३ को बरला जि० अलीगढ़ में इस हेतु ९५ प्रतिनिधि आये थे। इतिहास कमेटी की मथुरिया अग्रवाल वाली सिफारिश पेश होकर १३ के विरूद्ध ६५ मतों से पास हो गई।

इसी अवसर पर एक महिला सम्मेलन श्रीमती सावित्री देवी की अध्यक्षता में हुआ, तथा महिला संघ की स्थापना हुई। संस्था की मंत्राणी श्रीमती प्रेमवती कासगंज चुनी गईं।

(०६.)-पुन: २४-२५ दिसम्बर ४४ को देहली में इस नव निर्मित मथुरिया अग्रवाल महासभा का उत्सव हुआ। फिर कार्यकर्त्ताओं के राष्ट्रीय आन्दोलन में चले जाने के कारण १९४४ से १९५५ तक कोई अधिवेशन नहीं हुआ। इस वर्ग के अनेक लोग जेल चले गये। मार्च १९५५ में श्री दयासागर शान्तजलेसर के प्रयत्न से मई १९५५ में अतरौली में पुन: उत्सव हुआ। इस अवसर पर आगामी

वर्ष के लिये प्रो० गुलाबराय जी के अनुज बा० रामचन्द्र गुप्त रिटायर्ड अन्डर सेक्रेटरी हिमाचल (शिमला) को प्रधान तथा प्रो० रघुवर दयाल शास्त्री एम० ए० को मन्त्री चुना गया। मुरादाबाद की माथुर वैश्य सभा ने १९-६-५५ को प्रिन्सी० वेद प्रकाश जी गुप्त के सभापतित्व में अपने वर्ग की आम बैठक करके माथुर वैश्य नाम को ही बनाये रखने का निश्चय प्रकट करते हुए मथुरिया अग्रवाल नामक संगठन से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया।

इस अधिवेशन के बाद श्री निरन्जन लाल गौतम ने दिल्ली से 'वैश्य समाचार' नामक पत्रिका १५ अगस्त ५५ को निकाली परन्तु उसका दूसरा अंक नहीं निकला।

१२, १३ जून १९६५ को उन्होंने मेरठ में अपनी अ० भा० मथुरिया अग्रवाल महासभा का वार्षिकोत्सव भी बुलाया था। मेरठ में ही इस संगठन ने अपना नाम बदलकर 'अग्रवाल सर्व हितकारी सभा' कर लिया। परन्तु समाज को स्वतन्त्रता दी कि वह अपनी जाति चाहे कुछ लिखावे और वैश्य मात्र में चाहे कहीं विवाह आदि कर सकेगा।

इसके बाद अग्रज्योति नाम से पत्रिका श्री निरंजन लाल गौतम ने दिल्ली से निकाली।

वहीं एक उपसमिति छर्रा नगर में हाई स्कूल बनाने हेतु बनाई गयी थी यह संस्था अब रघुनन्दन इण्टर कालेज के रूप में विकसित हुई है।

०८— इनकी ग्वालियर, शाहदरा, देहली, छर्रा, जलाली, खुरई, बरला, जलेसर, शिमला और मेरठ में नगर शाखायें हैं।

इस प्रकार एक परीक्षण नई दिशा में चल रहा है। श्री गौतम जी इसके सूत्रधार हैं। उनका कहना है कि माहौर अथवा माथुर और अग्रवाल बल्लभ नामक व्यक्ति के दो सहोदर पुत्रों की सन्तान हैं। माहौर, माथुर लोग अपने को माथुरवाल कहें और अन्ततः अग्रवालों में मिल जावें। जहां तक मेरा अनुशीलन है ऐसे बल्लभ नामक व्यक्ति का या उसके दो सहोदर भाईयों का कहीं किसी इतिहास, लोक-कथा या लोकगीत में कैसा भी वर्णन नहीं है।

गत अगस्त ८१ में मुझे अग्रवाल सम्मेलन के एक रुकुन (भूतपूर्व प्रधान) श्री शिवचन्द्र अग्रवाल से कर्त्तारपुर (जालन्धर) के विरजानन्द आश्रम के उत्सव पर यह ज्ञात हुआ कि उन्होंने श्री गौतम जी को ब्राह्मण समझकर अग्रवाल महासभा में वैतनिक पुरोहित रखा था। श्रीमती डा० स्वराज्यमणि अग्रवाल से भी मैंने भेंट की। उन्होंने अग्रवाल जाति का इतिहास लिखा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने गौतम जी तथा उनके मथुरिया या माथुर उपवर्ग को कभी अग्रवाल नहीं माना है। हां गुजरात के महाजनों के कुछ गोत्रों से साम्य स्वीकार किया है।

इसी उपवर्ग के मनीषी प्रो० हरप्रसाद मैय्या जी माहौर-माथुर वैश्य संघ के स्थापन-कर्त्ताओं में से हैं तथा २३-४-८१ को छर्रा में संघ की सार्वजनिक बैठक का सभापतित्व बिजौली के श्री जगवीर सिंह गुप्त (श्री चन्द्रभानु गुप्त के दूसरे भतीजे) ने किया और संघ की सदस्यता स्वीकार की। और फिर दिनांक १६ फरवरी ८२ को लखनऊ में पांच माहौर उप वर्गों की बैठक श्री शिव प्रसाद गुप्त उपाध्यक्ष विधान सभा (आगरा माथुर वर्ग) की कोठी १६ कालिदास मार्ग में हुई जिसका सभापतित्व श्री वीरेन्द्र पाल गुप्त डिप्टी जनरल मैनेजर रोडवेज (स्व० श्री चन्द्रभानु गुप्त मुख्य मन्त्री बिजौली निवासी के भतीजे) ने की। उनके बहनोई श्री सोमेन्द्र पाल गुप्त (आई० पी० एस०) भी वहां उपस्थित थे और उन्होंने संघ प्रवेश का समर्थन किया।

०९—मथुरिया वैश्यों के प्रमुख पुरुष :

(१) **श्री शिवचन्द्र** जी के पिता का नाम था ला० रामलाल सेक्रेटरी म्यू० अलीगढ़। जन्म सन १९०३ ई०। सर्वेन्टस आफ इण्डिया सोसाइटी के सदस्य। बाद में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-मंत्री। उन्होंने वहां हैदराबाद सत्याग्रह के संचालन में भाग लिया और विदेशों में आर्य समाज नामक पुस्तक संकलित करके प्रकाशित कराई। शोलापुर की आर्यन कांग्रेस के वे मंत्री थे। उन्होंने आर्य समाज का प्रचार ट्रावनकोर, आन्ध्र तथा कर्नाटक में भी किया।

(२) श्री चन्द्रभानु गुप्त

जन्म—१४ जुलाई सन् १९०२।

परिवार को आर्य समाजी विचारधारा ने स्वावलम्बन एवं समाज सेवा का बीजारोपण बाल्यकाल में ही किया। अलीगढ जिले के ग्राम बिजौली में ही आपका विद्यारम्भ हुआ। आगे की पढ़ाई के लिये आप लखीमपुर गये। यहीं से आर्य समाज के अखिल भारतीय संगठन के अन्तर्गत आर्य कुमार सभाओं में भाग लेना शुरू किया। लोकमान्य तिलक के चुम्बकीय व्यक्तित्व ने आपको इतना आकर्षित किया कि जब आर्य समाज व राष्ट्रभाषा सम्मेलन लखनऊ में हुआ तब तिलक जी के दर्शनार्थ लखीमपुर से भाग कर गुप्त जी ने उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया। गांधी जी के आह्वान पर पहली बार कांग्रेस के महाधिवेशन में भाग लेने प्रतिनिधि के रूप में अहमदाबाद गये। वकील के रूप में काकोरी काण्ड के देश भक्त क्रांतिकारियों की पैरवी भी निःशुल्क की।

साइमन कमीशन के विरोध में आप अग्रणी रहे। तत्पश्चात नमक सत्याग्रह में जेल गये। इसी बीच बिहार भूकंप-पीड़ितों के दुःखों के भागीदार बनकर उनकी सहायतार्थ कार्य किया। आपने स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भी देश-विभाजन को अनुचित ठहराते हुए विरोध में मतदान किया था।

आपने राजनैतिक जीवन में कभी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया, बदले में चाहे किसी भी प्रकार की कीमत क्यों न चुकानी पडी हो। गुप्त जी ने तीन बार उ० प्र० के सर्वोच्च मुख्य मंत्रित्व पद से त्याग पत्र देने में तनिक भी हिचकिचाहट न दिखाई। वे पदलोलुप न थे। आपने सदैव ईमानदारी के मार्ग का अनुसरण किया। आचार्य नरेन्द्र देव की समाधि के निकट मोतीमहल प्रांगण में ही स्थित गुप्त जी की समाधि उनके उनसे स्नेह बंधन की साक्षी

हैं। उन्होंने अपना परिवार तो नहीं बसाया, परन्तु कई दीन-हीन असहाय परिवारों पर अपना वरद् हस्त रख उनके पोषक बने।

आपके द्वारा स्थापित लखनऊ के चारबाग स्टेशन से लेकर शहर के दूसरे छोर तक विभिन्न समाज कल्याणकारी संस्थायें आपकी यशोगाथा का गान कर रही हैं। अतः वे लखनऊ के निर्माता के रूप में भी जाने जाते हैं। वहाँ खादी, हरिजन एवं श्रम कल्याण, चिकित्सालय, शिक्षण-संस्थायें, विभिन्न प्रकार की तकनीकी तथा गैर तकनीकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थाएं, उच्च स्तरीय बाल-विद्यालय, दक्षिण भारतीय भाषा-विद्यालय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सेवारत सर्व सुविधा सम्पन्न छात्रावास, पुस्तकालय, सांस्कृतिक समागम केन्द्र, दर्शनीय संग्राहालय, विभिन्न क्रीडा-केन्द्र, धर्मार्थ चिकित्सालय आदि उनके द्वारा स्थापित किये गये। वे अब मोतीलाल मेमोरियल सोसाइटी द्वारा संचालित हैं। जब लखनऊ ही नहीं अपितु आस पास के अनेक जिले बाढ़ की चपेट में बुरी तरह आक्रांत थे, उन बाढ़-पीड़ीतों के सहायतार्थ गुप्त जी ने तन्मयता से सेवा की। गुप्त जी देश की राजनीति पर अन्तिम क्षण तक आच्छादित रहे और उनकी कीर्ति पताका प्रदेशीय सीमा का अतिक्रमणकर सम्पूर्ण देश में फहराती रही। आपने राज्यपाल के पद के प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया।

कांग्रेस के लौह स्तम्भ श्री गुप्त जी सदैव राजनीतिक जय-पराजय से निर्लिप्त रहे और कांग्रेस संगठन व समाज सेवा के लिये आपने तन-मन-धन विद्या बुद्धि व शक्ति सर्वस्व समर्पित कर दिया। नव निर्मित जनता पार्टी के वे राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष तथा उस पार्टी के प्रधान मन्त्रि मुरार जी देसाई के वे दाहिने हाथ थे।

दि० ११ मार्च ८० को अकस्मात् ही परमपिता परमेश्वर की महाज्योति में वे विलीन हो गये।

समुल्लास-[४अ.०२ख]

उत्तर प्रदेशीय माथुर-वैश्य समाज-मुरादाबाद

०१) रुहेलखंड के इस क्षेत्र में भी माहौर वैश्य अधिक संख्या में बसे हैं। तत्कालीन यू० पी० सरकार द्वारा प्रकाशित डिस्ट्रिक्ट गजेटियर १९११ के पृष्ठ ७४ पर मुरादाबाद जिले में वैश्यों की आबादी के सम्बन्ध में निम्न अश दृष्टव्य हैं :—

Banias

The Mahores, who are found throughout the Western District, also live in this District in large numbers.

०२) सन १९१४ के गढ़मुक्तेश्वर तथा १९१५ के मुरादाबाद सम्मेलन में गंगा के उत्तर तथा दक्षिण के बन्धु एक सगठन में आ गये थे और इनमें विवाह सम्बन्ध होने लगे थे। शिरोमणि संगठन भी एक ही था।

०३) दिसम्बर ४१ में जब अलीगढ़, मेरठ क्षेत्र के इनके भाई माहौर नाम छोड कर अपने को माथुर कहने लगे तो इन्होंने भी जाति का नाम माथुर और संगठन का नाम माथुर वैश्य सभा स्वीकार किया। इनके पास इसके प्रमाण भी हैं कि बहुत पूर्व ही माथुर शब्द का कहीं कहीं प्रचलन हो चुका था। स्वा० दयानन्द के शिष्य मुन्शी इन्द्रमणि पर एक मुकदमा हिन्दू मुस्लिम दंगे के सम्बन्ध में चलाया गया था। और उसमें इस वर्ग के मुन्शी जी ने अपनी जाति माथुर वैश्य ही लिखाई थी। जो भी हो माथुर नाम यहां प्रचलित हो गया। और जब माथुर नाम को हटाकर अलीगढ़ पार्टी ने अपना नाम मथुरिया अग्रवाल कर लिया तो यह उनसे प्रथक हो गये और २५-९-४५ को माथुर वैश्य सभा मुरादाबाद की स्थापना की, जिसके प्रधान बा० हरीशकर जी गुप्त एडवोकेट तथा मंत्री बा० दयानन्द जी गुप्त एड्वोकेट थे। हसनपुर, पतई, रानी नागल, रामपुर इत्यादि नगरों में स्थानीय शाखायें बनी। इनकी जनसख्या कोई ५००० परिवार की है। इनकी सस्थाओं का हर मास सत्संग पहिले १० वर्ष तक होता रहा। एक बार विवाह सम्बन्धों के बारे में नियम बनाये गये थे।

०४) **उत्सवों का क्रम**—सन ४६ से ६२ तक ८ वार्षिक उत्सव हुये। मन्त्रि पद पर क्रमशः श्री इन्द्रदेव गुप्त जूडीशियल आफीसर, बा० शान्ति स्वरुप गुप्त रहे। पर सन ६४ में प्रिंसिपल वेद प्रकाश गुप्त तथा अक्तु० ६६ में बा० बुद्धदेव गुप्त एडवोकेट प्रधान रहे।

इसके बाद पार्टी बन्दी से सारा काम समाप्त हो गया। पुनः ८१ में एक बृहद सम्मेलन मुरादाबाद में हुआ जिसका उदघाटन श्री शिवप्रसाद गुप्त उपाध्यक्ष विधान परिषद लखनऊ ने किया। उसमें श्री दयाशंकर गुप्त इसके प्रधान चुने गये थे।

०५) अन्य संस्थायें—

१—हीरालाल माथुर वैश्य धर्मशाला ट्रस्ट, मुरादाबाद।

२—बल्देव दास शिक्षा प्रचार ट्रस्ट।

स्व० सेठ बल्देव दास के दान से बना। इसके द्वारा दयानन्द आर्य वैदिक डिग्री कालेज तथा बलदेव आर्य कन्या इन्टर कालेज मुरादाबाद संचालित हैं। नागली में भी बल्देव हायर सेकिन्डरी स्कूल है।

३—एक अन्य ट्रस्ट सुखदेवी इन्टर कालेज चलाता है जो श्रीमती सुखदेवी के ५००००) के दान से स्थापित हुआ था।

४—रामभरोसे लाल बालिका जूनियर हाई स्कूल मुरादाबाद भी कई वर्ष से स्थापित और एक जातीय ट्रस्ट द्वारा संचालित है।

५—भगवत शरण जूनियर हाई स्कूल जोया जि० मुरादाबाद १९६६ में बा० भगवतशरण वकील द्वारा प्रारम्भ किया गया था। अब १९८१ से वह इन्टर कालिज है। इस ट्रस्ट द्वारा एक बल्देव प्रसाद श्याम लाल संस्कृत विद्यालय मुरादाबाद में चलता है।

इस प्रकार यह वर्ग शिक्षा प्रसार में अग्रणी है।

०६) विशिष्ट पुरुष :—

१. स्व० आचार्य रामसरन जी संसद सदस्य (दिवंगत १९८०) माहौर-माथुर वैश्य संघ के प्रस्तोताओं में से थे। १९५४ से ६४ तक संघ की सारी मीटिंगे उन्हीं की कोठी में दिल्ली में होती थीं।

वे काशी विद्यापीठ में आचार्य रहे थे। और स्वराज्योपरान्त पालियामेंट के सदस्य भी १० वर्ष पर्यन्त रहे। वे मुरादाबाद जिला बोर्ड के चेयरमैन भी कई वर्ष तक रहे।

२. श्री दयानन्द गुप्त एडवोकेट कतिपय शिक्षा संस्थाओं के प्रस्तोता और १९८१ के हिन्दू मुस्लिम दगे के बाद अखिल भारतीय नागरिक परिषद के स्थापन कर्त्ता बने।

अध्याय [४अ. ०४]

(०१) पांचाल एवं कुमायु अंचल के माहौर वैश्यों के संगठन

गंगा, यमुना, राम-गंगा, कालिन्दी और ईशान नदियों के उत्तर-प्रदेशीय अंचल में उक्त दो कमिश्नरियां हैं। मथुरा से निष्कासित होने पर यह बन्धु-इस अंचल के ग्रामों में जा बसे। यह सब ब्रज के ८४ कोस के अर्द्ध व्यास के अन्तर्गत का अंचल है।

(०२) इनके संगठन का सूत्रपात १८९८ ई० में निधोली कलां कस्बा जि० एटा से शुरु होता है जब कि कार्त्तिक बदी तीज सम्वत १९५५ में मास्टर अयोध्या प्रसाद जी निवासी छिबरामऊ (जिला फर्रुखाबाद) ने एक ट्रैक्ट छपवाकर बन्धुओं को आमंत्रित किया और माहौर, शिवहरे, गुलहरे उपवर्गों की एक त्रिवर्गीय सभा स्थापित की। [देखें वैश्य संजीवनी मेरठ का नब० ३२ अंक] परन्तु यह आन्दोलन सफल नहीं हुआ।

(०३) गंगा के पार रूहेलखंड के संगठन का सूत्रपात—माहौर वैश्यों के दो थोक थे जो क्रमशः तीन वारे और सातवोर कहलाते थे। यह इनके पुराने प्रवर ही थे। एक गंगा के उत्तर में तो दूसरा दक्षिण में आबाद है। इनमें तीनवारे बन्धु सातवारों की लडकी ले लेते थे, देते न थे, कारण दक्षिण के लोग प्याज लहसुन आदि खाने लगे थे, जो उत्तर में निषिद्ध था। ग्राम दुनका जिला बरेली के रईस राय बहादुर ला० देवी दास ने सन १९१६ में बरेली में जाति बन्धु इकट्ठे करके महासभा की नींव डाली। जो १९१८ में विधिवत बन सकी। शान्त रह कर सन १९३३ पन्द्रहवें वर्ष में जातीय मन्दिर रोहली टोला बरेली में अधिवेशन फिर हुआ और बा० ब्रजभूषण लाल एडवोकेट [बाद में संसद सदस्य] इसके प्रधान चुने गये। यह संगठन १९३७ में शिथिल हो गया।

(०४) **पांचाल क्षेत्र की सभायें** –पांचाल अंचलान्तर्गत जिला एटा में भरगैन कस्बा [पूर्वनाम भार्गवायन] पांचाल की राजधानी थी। इसी जिले के ग्राम ऊंचागांव निवासी बा० चन्द्रशेखर (शिक्षा स्थल–डी०ए०बी० कालिज लाहौर) एडवोकेट ने एक अधिवेशन हाथरस के निकट बिपाना ग्राम (जि० अलीगढ़) में बुलाया। इसमें गंगा के उत्तर के विशिष्ट पुरुषों को भी निमन्त्रित किया गया था।

उसके स्वागताध्यक्ष ला० हरनारायन जी थे। जातीय अभ्युत्थान रीति–रिवाज सुधार, शिक्षा प्रचार तथा संगठन की आवश्यकता पर बल दिया गया था। उत्सव पर वेद भगवान की सवारी का जुलूस निकाला गया था और सामूहिक यज्ञोपवीत कराये गये थे। वहीं विद्या प्रचारिणी सभा को महासभा का अंग घोषित किया गया। एक जातीय अखबार निकालने का निर्णय हुआ। वैश्य महासभा मेरठ में प्रतिनिधि भेजने का भी निश्चय किया गया। अपने सब सम्प्रदायों के संगठन के सम्बन्ध में छानबीन करने के लिये एक उप समिति भी बनी। आगामी वर्ष के लिये सर्व श्री बा० नेवाराम जी गुप्त वकील एटा प्रधान तथा बा० चन्द्रशेखर जी एडवोकेट मन्त्री चुने गये। नवम्बर २३ में कार्यकारिणी में विधान स्वीकृत करके उसकी रजिस्ट्री करा ली गई।

(०५) अगला अधिवेशन—मार्च १९२४ को छोकरिया के पेंच कासगज में किया गया। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० श्री कृष्ण पाठक, पं० आचार्य मुरारी लाल जी एवं श्री इन्द्र वर्मा जी इसमें पधारे थे। श्री इन्द्रपाल जी की अपील पर ५०००) की धनराशि इकट्ठी हुई। ला० पन्नालाल राशि आगामी वर्ष के प्रधान चुने गये।

वहां विवाह सम्बन्धी निम्न नियम इस प्रकार बनाये गये—

लडके लडकियों की विवाह सम्बन्धी आयु १६ तथा १२ वर्ष निश्चित की गई। विवाह में आतिशबाजी, फूलटट्टी, नृत्य, आदि बन्द करने का प्रस्ताव पास हुआ। लडकी वालों को टीका पर और ननसाल वालों को भी भात के समय बर्तन बांटने से रोक दिया गया।

सगाई पर मात्र ५१) तथा मिठाई, लग्न पर २१) तथा कपडे का थान, टीका पर २५१) तथा कुछ सामान, दरवाजा पर २०१) तथा कुछ सामान और पहरावनी पर १) प्रति व्यक्ति तथा एक बर्तन की लिमिट बांध दी गई। बारातियों की संख्या १२५ से अधिक न होने का निश्चय किया गया।

(०६) सन १९२५ में छठा अधिवेशन गज गुदवारा (एटा) में ला० बिहारी लाल जी के स्वागताध्यक्षत्व तथा ला० द्वारिकाप्रसाद कादिरगंज वालों के सभापतित्व में हुआ। इस पर श्री प्रेमशरण जी प्रणत् कुछ खण्डन मण्डन का साहित्य यथा 'अल्ला मियां की हुलिया, बेटा की बहू से विवाह' आदि लाये थे, जिससे हिन्दू मुस्लिम दंगा हो गया, और उत्सव स्थगित हो गया। आगामी वर्ष के लिये डा० विजय नारायण गुप्त एल०एम०पी० (अलीगंज) मन्त्री चुने गये।

(०७) सन १९२६ में सातवां वृहद उत्सव जून में सिढ़पुरा (एटा) में हुआ स्वागत कमेटी के प्रधान तथा मन्त्री क्रमश: ला० बाबूराम जी तथा गोविन्द राम जी थे। इसमें भी सैंकडों व्यक्तियों को यज्ञोपवीत पहिनाये गये। एक स्कूल तथा एक पाठशाला स्थापित करने का निश्चय किया गया। यह भी निश्चित हुआ कि जिन जाति बन्धुओं को स्थान-स्थान पर जाति-बाहर कर रक्खा है, उन्हें प्रायश्चित करा के पुनः प्रवेश की व्यवस्था की जाये।

(०८) नवां उत्सव सन् १९३२ में मारहरा (एटा) में हुआ। यहां यह निश्चय हुआ कि कानपुर, फर्रुखाबाद क्षेत्र में स्थापित माहौरे-शिवहरे गुलहरे सभा से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। और जिन माहौरे बन्धुओं ने इसमें योगदान दिया था, उन्हें आदेश दिया गया कि उससे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लें। अगले वर्ष के लिए सभा के अध्यक्ष श्री बाबूलाल जी वकील कासगंज चुने गये।

इस उत्सव के अवसर पर इनके श्री मुन्नालाल गुलजारी लाल विद्या प्रचार ट्रस्ट की ओर से एक स्कूल की स्थापना की गई और उसका उद्घाटन भी हुआ।

एक निश्चय यह हुआ कि बाल विवाह करने वाले जाति भाईयों पर शारदा ऐक्ट के अनुसार अभियोग चलाये जावें। अन्य जातियों में कर दिये हुए विवाहों के प्रति सभा का भर्त्सना का भी एक प्रस्ताव बहुमत से पास हुआ परन्तु उसका काफी विरोध भी किया गया था। अकबरपुर के नुनहरे वैश्य पार्टी के साथ किये जाने वाले विवाहों पर भी रोक लगा दी गई। प्रस्तावों द्वारा 'माहौर मित्र' पत्र का प्रकाशन तथा कुछेक अभियोग शारदा एक्ट के मातहत दायर करना भी पास किया गया इनका कुछ ऐसा डर छाया कि जाति में बाल विवाह होना एकदम बन्द हो गया।

विद्यार्थी मुन्नालाल (बाद में मेजर आर्य अब दिवंगत), बाबूराम गुप्त (बाद में प्रोफेसर बाबूराम गुप्त एम० ए०) तथा विद्यार्थी हजारी लाल (अब डिप्टी कलक्टर) को छात्रवृत्ति देना निश्चय किया गया।

०९) सन् १९३८ में ९ वा० वृहद अधिवेशन पुनः कासगंज में हुआ। इस उत्सव का सभापतित्व बा० सियाराम गुप्त रिटायर्ड डिप्टी इन्सपैक्टर स्कूल बदायूं ने किया था और वे ही आगामी सत्र के लिये प्रधान चुने गये थे। यहाँ पर तेहरवीं पर का मृत्यु भोज बन्द कर दिया गया। एटा के ला० भूभद्रलाल मन्त्री (अब १९८१ में दिवंगत) चुने गये।

तदुपरान्त सारे मुख्य-मुख्य कार्यकर्त्ता कांग्रेस आन्दोलन में चले गये। भाई रमेश चन्द्र जी आर्य जेल में पड़ी मार से दिवंगत होकर शहीद हो गये। श्री राममूर्ति जी बरेली (बाद में उत्तर प्रदेश में मिनिस्टर), श्री होतीलाल दास एटा, श्री पन्नालाल जी, महारानी देवी एवं अशर्फीलाल जी (अलीगंज) श्री शिवचरण जी दिल्ली (बाद में एम० पी०) श्री श्यामबाबू (गंज डुडवारा); श्री भजन लाल जी (सराय अगस्त) श्री हुन्डीलाल जी (कासगंज) श्री क्षत्रसेन जी (मोहनपुर), श्री प्रेमशरण जी प्रणत (आगरा) प्रभृति अनेकानेक कार्यकर्त्ता आन्दोलन में जेल चले गये। अतः स्वराज्य प्राप्ति तक महासभा का आन्दोलन स्थगित रहा।

(१०) महासभा के पदाधिकारियों में स्फूर्ति न आते देख जाति के मनीषी श्री प्रेमशरण जी प्रणत ने १५ अगस्त ४७ को ही माहौर-वंश वैश्य सम्मेलन की स्थापना कर दी। नगर-नगर में शाखा सभायें स्थापित करने का अभियान प्रारम्भ किया गया। उन्होंने 'मित्र' नाम से एटा से एक मासिक पत्र भी निकाला। जनवरी ५१ तक ४६ व्यवस्थित शाखायें बनाकर विधिवत चुनाव इस संस्था का कर लिया गया। श्री धर्मदेव शास्त्री किचौरा इसके मंत्री थे।

वंश सम्मेलन का अक्टूबर ५१ को एटा में उत्सव सम्पन्न हुआ। उत्सव का सभापतित्व बा० मेवाराम गुप्त वकील ने किया। महिलाओं का सम्मेलन श्रीमती सुशीला देवी बी० ए० बी० टी० ने संयोजित किया। प्रसिद्ध सजातीय विद्वान श्री पंडित मंगल देव जी शास्त्री भी इसमें उपस्थित थे। जातीय इतिहास तथा डायरेक्टरी प्रकाशन के प्रस्ताव पास हुये। और सबसे बड़ी बात यह हुई कि संस्था ने अपने अस्तित्व की समाप्ति और मृत प्राय माहौर वैश्य महासभा के पुनरुत्थान की घोषणा भी की। शिवप्रसाद गुप्त को आगे का प्रधान तथा वैद्य राजबहादुर 'सरस' जी को मंत्री चुना गया।

(११) नगला बीच जिला आगरा में जून ५३ को वृहद अधिवेशन हुआ सेठ सियाराम जी बम्बई वाले स्वागत कमेटी के अध्यक्ष थे तथा ला० बाबूराम गुप्त मंत्री। परन्तु उत्सव की सारी व्यवस्था बा० कैलाश चन्द्र गुप्त ने की थी। प्रो० बाबू राम गुप्त एम० ए० ने उत्सव की प्रधानता की और आगामी वर्ष के लिये वे ही प्रधान चुने गये। तथा प्रस्ताव किया गया कि एक लाख रुपया इकट्ठा करके उसके मूलधन से शिक्षा कोष स्थापित करके उसके ब्याज से उच्च शिक्षा हेतु जातीय विद्यार्थियों को छात्र वृत्ति दी जावे। एक अन्य प्रस्ताव द्वारा जाति बन्धुओं से अपने नाम के आगे माहौर शब्द लगाने की अपील की गई। बा० सोहन लाल वकील एम० ए० एल० एल० बी० को मंत्री चुना गया।

(१२) अप्रैल १९५५ को अलीगढ़ में महासभा का वृहदधिवेशन हुआ। स्वागत मन्त्री मैं तथा बा० शिवचरण गुप्त (तब डिप्टी मिनिस्टर) इसके सभापति थे। उत्सव पर समाज सेवा नाटक तथा श्री नाथूराम माहौर के सभापतित्व में एक कवि-सम्मेलन और इतिहास गोष्ठी भी हुये। प्रथम बार उत्सव पर श्री बालकृष्ण गुप्त के सभापतित्व में श्री बंगाली गुप्त एम० ए० ने शिक्षा प्रचार सम्मेलन आयोजित किया जिस पर लगभग ४०००) छात्र वृत्ति हेतु प्राप्त हुआ। यहां देहली राज्य समेत अखिल भारतीय संगठन निर्माण करने का निश्चय हुआ। इस उत्सव पर सेठ प्रहलाद राय जी दिल्ली के नेतृत्व में महावर बन्धुओं का एक डेलीगेशन अलवर से आया था। तथा एक डेपूटेशन मुरादाबाद के माथुर वैश्यों का श्री शान्ति स्वरूप के नेतृत्व में आया था। आगामी वर्ष के लिये बा० बालकृष्ण गुप्त फिरोजाबाद प्रधान तथा मैं महा मन्त्री चुना गया।

(१३) गङ्गा के उत्तर तथा दक्षिण के संगठनों का विलय :-

मेरे प्रयत्नों से बरेली के महाशय रामधन दास जी ने संयुक्त प्रदेशीय महासभा का उत्सव बरेली में १९५९ में आमन्त्रित किया। इसी अवसर पर एक जातीय कान्फ्रेंस गङ्गा के उत्तर तथा दक्षिण दोनों भागों में बसे तीनवारे तथा सातवारे माहौरों की गई। इसके स्वागताध्यक्ष बा० विशम्भर नाथजी रिटायर्ड डिप्टी इन्सपैक्टर आफ स्कूल थे। तथा बरेली संगठन के मंत्री मास्टर अशर्फीलाल के भी इसके निमन्त्रण पर हस्ताक्षर थे। एटा के श्रीहोतीलाल जी दास एम० एल० ए० ने इस सम्मेलन का सभापतित्व किया। वहीं यह निर्णय किया गया कि संगठन का नाम बदलकर माहौर वैश्य महासभा कर दिया जावे और वह सारी जाति के सब वर्गों की तथा सब क्षेत्रों में बसे बन्धुओं की सर्वोच्च शिरोमणि सभा मानी जावे। इस प्रकार ५० वर्ष के प्रयत्न से (१९१९ से १९५९) दो संगठन एक में विलय हुए। तब से दोनों उपवर्ग एक हो गये और अब दोनों ओर से खुले रूप में विवाह सम्बन्ध दोनों ओर होते हैं।

इस उत्सव पर माथुर वैश्य महासभा आगरा के प्रधान डा० हरिनारायण गुप्ता विशेष आमन्त्रित होकर पधारे थे और उनके समर्थन पर माहौर, माहुरी, माथुर, महावर इत्यादि वर्गों को निकट लाने के लिये मेरे संयोजकत्व में एक उपसमिति गठित हुई थी। यहाँ कोआपरेटिव के विरुद्ध तथा व्यापारी वर्ग के साथ सरकार के दुराभाव के सम्बन्ध में भी प्रस्ताव पास हुये और एक उपसमिति प्लानिंग कमीशन तथा अ० भा० कांग्रेस कमेटी से मिलकर छोटे व्यापारियों की कठिनाइयां रखने को भी बनाई गई। सहकारी आढ़तों को अवांछनीय घोषित किया गया। देहातों में सीलिंग निश्चित करने के बाद बची भूमि का वितरण करते समय भूमि-हीन लोगों में गांव में बसे बनियों को भी शामिल करने की मांग की गई। यहीं पर घोषणा की गई कि जाति के धन व श्रम से जो निम्नलिखित शिक्षा संस्थायें संचालित हैं उनके प्रबन्धकों को चाहिये कि उन्हें जाति हित में संजोये रहें।

१-गंज डंडवारा डिग्री कालेज, २- हर नरायन इन्टर कालेज गंज डुडवारा, ३-मुन्नालाल गुलजारी लाल हाईस्कूल मारहरा, ४-डी० ए० वी० इन्टर कालेज अलीगंज, ५-माहौर जूनियर हाईस्कूल बिचपुरी, ६- पार्वती देवी विद्या प्रचार ट्रस्ट, ७-गांधी नेशनल हाईस्कूल सिढ़पुरा, ८-डी०ए०बी० इन्टर कालिज ज्योति, ९- डी० ए० वी० इन्टर कालिज कुराउली, १०-रामदयाल संस्कृत शिक्षा ट्रस्ट कुराउली ११-बालकराम मुखिया संस्कृत विद्यालय ट्रस्ट अलीगंज, १२-एस० के० इन्टर कालिज कोटला आदि आदि।

(१३) और फिर जुलाई १९६२ को अलीगज में १४ वां वृहदधिवेशन बड़ी शान से डी० ए० बी० इन्टर कालेज के प्राङ्गण में हुआ। उत्सव के प्रधान श्री होती लाल दास एम०एल०ए० का जुलूस बाजे गाजे से हाथी पर निकाला गया। स्वागताध्यक्ष थे बा० राजबहादुर गुप्त चैयर मेन टाउन एरिया। अन्तर्वर्गीय विवाह के बारे में यह स्थिति स्पष्ट हुई कि चूंकि माहौर वैश्य महासभा पहिले से ही अ०भा० वैश्य महासभा से सम्बन्धित है और वैश्य महासभा ने अपने से सम्बन्धित वैश्यों के ४२ उपवर्गों में विवाह की आज्ञा दी हुई है, अत: ऐसे विवाहों का यह माहौर वैश्य महासभा विरोध नहीं करेगी। यहां शिवप्रसाद गुप्त सभापति तथा श्री शंकरलाल अड्ङ्गा (एटा) को मंत्री नामजद किया गया।

जातीय कार्यकर्त्ताओं की डायरेक्टरी के प्रारूप की स्वीकृति हुई और मेरे द्वारा प्रस्तुत ५००० पतों की पुस्तिका बाद में प्रकाशित की गई।

अलीगंज उत्सव के अधूरे कार्य पूर्ण करने हेतु कुराउली जि० मैनपुरी में महासभा का एक प्रतिनिधि सम्मेलन सितम्बर ६३ में ला० मुन्शीलाल गुप्त घी वालों के आतिथ्य में हुआ। वहां विधवा विवाह के नैतिक समर्थन का प्रस्ताव भी पास हुआ। एक निश्चय यह हुआ कि हर उत्सव पर जातीय सभा का सर्वाधिक कार्य करने वालों को माहौर भूषण की उपाधि सम्मान दी जाया करे। एक न्याय समिति भी स्थान-स्थान में फैली हुई जाति भाईयों के बीच की पार्टी बन्दी को हल करने के लिए बनाई गई। ६५ वर्ष से ऊपर के साधन-हीन वृद्धों को सरकार से पेंशन दिलाने के लिये एक उपसमिति गठित की गई। मृत्यु-भोज की कुप्रथा भी बन्द करने का निश्चय फिर दोहराया गया। इन्डस्ट्रियल कोपरेटिव सुसाइटी का आदर्श विधान बनाने का प्रस्ताव भी स्वीकार किया गया।

एक और महत्वपूर्ण सम्मेलन इस अवसर पर जाति के शिक्षित उन महानुभावों का हुआ जो शिक्षा क्षेत्र में रत हैं और स्थान-२ पर माहौर वैश्य विद्यालय स्थापित करने का निश्चय किया गया।

कुछ उदाहरण एक पत्नी के होते हुये कुछ व्यक्तियों द्वारा दूसरा विवाह करने के सभा के समक्ष आये। इनकी भर्त्सना की गई और एक ऐसे केस में अभियोग में सहायता करने का निश्चय किया गया।

एक प्रस्ताव द्वारा ७ स्वर्गीय तथा ७ जीवित निस्वार्थ कार्यकर्ताओं को माहौर-भूषण उपाधि उत्सव पर देना स्वीकार हुआ।

(१४) जौलाई १९६३ को अलीगढ़ नगर में महासभा का स्वर्ण जयन्ती उत्सव बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। ला० रामगोपाल गुप्त सिकन्दरा राउ स्वागताध्यक्ष थे। यह उत्सव अलीगढ़ में माहौर वैश्य विद्या प्रचार ट्रस्ट ने आमन्त्रित किया था।

उत्सव के अवसर पर माहौर वैश्य विद्या प्रचार ट्रस्ट को शिक्षा प्रचार सम्बन्धी सब कार्य सौंप दिया गया कि फर्रुखाबाद, कानपुर, बरेली और हाथरस में माहौर-वैश्य विद्यालय लड़कों के तथा कासगंज और विजयगढ़ में लडकियों के विद्यालय स्थापित करें और इनकी प्रभूति हेतु एक लाख रुपया की स्थिर निधि इकट्ठी करें और उसका ब्याज उच्च शिक्षा हेतु दें। इसी अवसर पर माहौर वैश्य विद्यालय अलीगढ के भवन का शिलान्यास ला० दानसहाय (कौंछोर) ने किया।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा महासभा का झंडा निश्चित किया गया जो कि केशरिया आयताकार कपड़े पर तुला दिखाता है। माहौर सहकारी बैंक स्थापित करने हेतु एक उपसमिति निर्माण की गई। तथा श्री हरिशंकर गुप्त उझानी वालों को मन्त्री चुना गया।

कानपुर मन्डल के संयोजकत्व में एक उपसमिति कानपुर में माहौर विद्यालय स्थापित करने हेतु बनाई गई।

सत्र को चौथी अन्तरंग कासगंज में हुई जिसमें कासगज में एक जातीय संचालित विद्यालय खोलने का निश्चय हुआ। सत्र की पांचवी अन्तरंग दिल्ली में २६-१-६७ को लाला मोहन लाल की जोरबाग स्थित कोठी में हुई। वहां भी माहौर विद्यालय खोलने की योजना स्वीकृत हुई। उसी दिन सायं एक सार्वजनिक बैठक हुई। प्रधान बा० लक्ष्मन स्वरूप गुप्त मेकैनीकल इन्जीनियर (डिप्टी चीफ रेलवे) का मुद्रित भाषण पढ़ा गया। कमालगज में जातीय विद्यालय खोलने हेतु एक उपसमिति बनाई गई।

(१५) और अक्तूबर ६७ में आगरे में वार्षिकोत्सव सिटी धर्मशाला में हुआ। सेठ सियाराम गुप्त जलालाबाद वालों ने इसका उद्घाटन किया था। सभापति मैं ही था। निम्न प्रस्ताव पास हुये:—

१—परिवार नियोजन अपनाने सम्बन्धी।

२—ग्रामों में रहने वाले भूमिहीन जातिबन्धुओं से शहरों में आ बसने की अपील।

३—बच्चे, बच्चियों को कम से कम हाई स्कूल तक पढाने का निर्देश।

४—विवाह पर जेवर के प्रदर्शन का निषेध।

(१६) इसके बाद १९७३ में एक वार्षिक अधिवेशन कुरावली में हुआ। और फिर ७ वर्ष तक सारा कार्य बन्द पड़ा रहा, कारण माहौर प्रेस और उसकी किराये की बिल्डिंग को लेकर विवाद चलता रहा।

(१७) मार्च ८१ में पूर्व प्रधान श्रीमती प्रेमा देवी की अध्यक्षता में उत्सव हुआ। इसका उद्घाटन मैंने किया था। लाला डिप्टीराम गुप्त इसके स्वागताध्यक्ष थे। इसमें ६ व्यक्तियों ने वानप्रस्थाश्रम ग्रहण कर जाति सेवा का व्रत लिया। इस बार ला० रामगोपाल गुप्त (सिन्दरा राऊ) प्रधान तथा श्री किशन चन्द्र गुप्त मन्त्री कार्यवाह नियुक्त हुये। मैं सभा का आजीवन संरक्षक चुना गया। लाला बाबूराम गुप्त डालमियाँ नगर वालों ने दस हजार के दान की घोषणा शिक्षा प्रचार ट्रस्ट हेतु की। घटकों से राजनीति में भाग लेने की अपील की गई। माहौर वैश्य समाज रजि० मैनपुरी को महासभा का अंग मान लिया गया।

(१८) माहौर वैश्य सभा दिल्ली प्रान्त—

सम्भवत: १९३४ में स्व० रमेशचन्द्र जी आर्य के सुझाव पर माहौर वैश्य सभा दिल्ली की स्थापना हुई। १९४२ में कांग्रेस आन्दोलन के कारण शिथिल पड गई। उसी में सभा के मूल स्तम्भ बा० रमेश चन्द्र आर्य शहीद हो गये। बा० अयोध्या प्रसाद माहौर, श्री दिनेश चन्द्र जी इसके मन्त्री रह चुके हैं। १९५२ तक जाकर वो प्रथक-२ सभायें बनकर रजिस्टर्ड हो गईं। १९५६ में दोनों सभायें पुन: एक हो गईं। बा० बालमुकुन्द गुप्त प्रधान तथा बा० रामप्रकाश गुप्त बी० ए० १९६५ में १० वर्ष तक मन्त्री रहे। अक्तूबर ६६ में धर्मशाला हेतु भवन नई दिल्ली जंक्शन के निकट खरीद लिया गया है। सन् १९८५ में चुनाव होकर श्री हरस्वरूप गुप्त बहुमत से प्रधान चुने गये।

(१९) माहौर वैश्य-वंश सम्मेलन कोटला (दिल्ली)

एक धर्मशाला की भूमि खरीदते समय इसकी ट्रस्ट रुप में रजिस्ट्री हुई। यह अ० भा० मा० वैं० महासभा से सीधा सम्बन्धित है।

ला० लीलाधर गुप्त कनाट प्लेस वालों के प्रभूत दान तथा स्थानीय चन्दे से इन्होंने ८-१० वर्ष पूर्व कोटला में ही एक जमीन धर्मशाला हेतु खरीदी थी। १९६६ मे वह धर्मशाला निर्मित हो गई और उसका उद्घाटन बा० शिवचरण ऐम० पी० ने किया। श्री वासुदेव सहाय [दासुकोल डिपो-वापू पारक कोटला मुबारकपुर नई दिल्ली-३ अब दिवंगत इसके आदि मंत्री थे। पैरों से लकवा मारे हुये, दूसरों के कन्धों पर चढ़ कर चलने वाले, इन सज्जन का जातीय प्रेम और दौड़ धूप देखते ही बनती थी।

(२०) माहौर वैश्य कर्मठ मन्डल-पहाड गंज नई दिल्ली

केन्द्रीय महासभा में गुटबाजी तथा कार्य के प्रति निष्क्रियता देख कुछ कार्यशील नवयुवकों ने निष्ठावान कार्यकर्ता पैदा करने और उनकी शक्ति जाति हित में लगाने वाले इस संस्था की स्थापना सन १९६६ में की। इसके विधान की मुख्य बात यह है कि प्रत्येक सदस्य को एक प्रतिज्ञा पत्र भरना होता था जो इस प्रकार था :—

अ—माहौर वैश्य समाज की सेवा के लिये महीने में एक दिन का श्रम तथा अपनी आय का एक प्रतिशत सदा ईमानदारी से लगाता रहूंगा।

ब—मैं अपने या अपने लडकों तथा अन्य आश्रित बन्धु-बांधवों का विवाह बिना दहेज ठहराये करूंगा और विवाह संस्कार में प्रदर्शन नहीं करूंगा तथा मृत्यु भोज के विपक्ष में रहूंगा।

स—मैं सारा जीवन निरामिष भोजी रहूंगा और इस व्रत का जीवन भर प्रचार करूंगा।

द - अपनी जीविका में ईमानदारी बरतूंगा।

य—अपने पुत्र या पुत्री हरेक को कम से कम मैट्रिक तक शिक्षा अवश्य दूंगा।

र—११] वार्षिक मन्डल को शुल्क दूंगा।

मंडल ने माहौर-वैश्य नामक मासिक पत्रिका २ वर्ष तक निकाली थी।

(२१) मुन्नालाल गुलजारीलाल विद्या प्रचार ट्रस्ट मारहरा [एटा]

उक्त दोनों भाईयों के कोई पुत्र न होने के कारण उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति जाति में शिक्षा प्रचार हेतु दान करके एक ट्रस्ट बना दिया था। यह ट्रस्ट डीड लाला गुलजारी लाल जी ने ६ दिसम्बर १९३२ को समर्पित किया। उस समय उसके चार ट्रस्टी थे:—

ट्रस्ट को प्रारम्भ में ४८०००) का धन विभिन्न रुप में तथा इतनी सम्पत्ति जिससे ५०००) वार्षिक की आय थी, मिली। इससे मारहरा में पाठशाला खोली गई, जो अब इन्टर कालिज है। एटा में एक लड़कियों का हाईस्कूल कई वर्ष तक चलता रहा। ट्रस्ट ने 'ससम्मान कर्ज के रुप में जातीय छात्रों को आर्थिक सहायता भी दी। लेखक को स्वयं लगातार ४ वर्ष तक कालिज की पढाई में ट्रस्ट से सहायता मिली, जिसका वह सदैव कृतज्ञ रहेगा।

(२२) माहौर-वैश्य विद्या प्रचार ट्रस्ट अलीगढ [रजिस्टर्ड]

अगस्त ६२ को योजना रक्खी गई जो स्वीकृत हुई। बाद में एक विधान बनाकर उसकी रजिस्ट्री करा दी गई। ट्रस्ट ने अलीगढ़ में एक महाउरु जूनियर हाई स्कूल जोलाई ६३ में खोल दिया और इसे जोलाई ६५ में मान्यता मिल गयी। भवन हेतु ५ एकड़ भूमि फरवरी ६६ में दान में मिली थी।

भवन का शिलान्यास ला० दानसहाय कोछार निवासी ने किया और लगभग ५०००) का दान दिया।

(२३) अन्य जातीय विद्यालय एवं हाई स्कूल

(१) संस्था की रजिस्ट्री करवा के हाथरस में अपने अधीन विशाल धर्मशाला भवन में एक जूनियर हाई स्कूल जुलाई ६४ में स्थापित हुआ था।

(२) १९५४ में एक हाई स्कूल आगरा जिला में बिचपुरी में जातीय धन व श्रम से बना था।

(३) बी० जी० इन्टर कालेज ऐका जिला मैनपुरी=सजातीय लाला गेंदनलाल जी के ६००००) नकद तथा अन्य भूसम्पत्ति के दान से इस संस्था को स्थापित किया गया था।

४—हरनरायन इन्टर कालिज गंजडुंडवारा (जिला) एटा। सजातीय ला० हरनारायन जी पुत्र ला० काशीराम ने ३५०००) दान देकर पुरानी संस्था की जड़ मजबूत की और वह इन्टर कालिज हो गई।

५—माहौर हायर सैकेन्डरी स्कूल जलालाबाद जिला शाहजहांपुर की स्थापना बा० सियाराम गुप्त आनरेरी मजिस्ट्रेट जलालाबाद ने जुलाई १९६५ में की।

६—डी० ए० वी० इन्टर कालिज अलीगंज (एटा)—पूज्य पिता जी तथा मेरे द्वारा १९५६ में स्थापित विद्यालय अब इन्टर कालिज है। यद्यपि नाम डी०ए०बी० है, परन्तु इसके हेतु ९० प्रतिशत धन तथा उद्योग जाति बन्धुओं का है।

७—डी०ए०वी० अब वीरेन्द्र भारती इन्टर कालिज ज्योति (जिला मैनपुरी) इसे स्व० बा० अवधबिहारी लाल ने स्थापित किया था। अब इन्टर कालिज है। नाम आर्य समाज का है पर श्रम व ९० प्रतिशत धन जातीय स्रोत से है।

८ व ९—डी०ए०वी० इन्टर कालिज कुराउली [जि० मैनपुरी] तथा भारतीय विद्यालय कुराउली। जाति के २ ग्रुपों द्वारा प्रथक २ स्थापित। एक के मैनेजर थे बा० अटल बिहारी गुप्त तथा दूसरे के अधीन श्री मुनशी लाल गुप्त जो १९८१ में स्वर्ग-वासी हो गये।

१०—एक विद्यालय खुदागंज जि० शहाजहांपुर में जाति बन्धुओं के उद्योग से चलता है।

११-ऐस० के० इन्टर कालिज कोटला जि० आगरा की स्थापना में ५० प्रतिशत धन तथा ५० प्रतिशत श्रम सजातीय कोटला हाऊस का है। बा० बालकृष्ण गुप्त ग्लास इन्डस्ट्रियलिस्ट इसके कर्त्ता-धर्ता हैं।

(२४) माहौर मंडल

१—**अलीगंज**— अलीगंज स्थित धर्मशाला का विधान बनाकर ट्रस्ट रजिस्ट्री किया गया। श्री दिनेश चन्द्र गुप्त एम० ए० इसके मन्त्री १९८१ से हैं।

२—माहौर वैश्य सभा जि० फर्रुखाबाद मन्त्री श्री कृष्ण गुप्त एम० ए०। श्री ला० गिन्नी लाल ने स्वधन से माहौर धर्मशाला ५ लाख के मूल्य से बनाई है।

३—अवागढ ४—अलापुर (बदायूं) १९८१। ५—पिलखतरा ६— कलकत्ता मंडल ७— माहौर वैश्य क्लब आगरा स्थापित १९७२:-

इसने आगरा नगर व जिला में बसे माहौर वैश्यों की जनगणना कराके पुस्तकें प्रकाशित की हैं। रजिस्टरी सुसाइटी एक्ट में हुई है। क्लब प्रतिवर्ष होली मिलन भी सोत्साह मनाता है। ८—११ युवक क्लब फर्रुखाबाद, गंजडुंडवारा, बदायूं तथा बरेली में स्थापित हुये हैं, १२ से १६—महिला महासभा की शाखायें भी आगरा, मैनपुरी, एटा बदायूं और गजडुंडवारा में श्रीमती प्रेमा देवी एवं उषा गुप्ता एम. ए. ने स्थापित की हैं।

१७—माहौर वैश्य मंडल कासगंज—यहां एक जातीय धर्मशाला तथा उसकी अन्य प्रापर्टी है जसमें एक सज्जन स्कूल लगाने लगे हैं।

(२५) विशिष्ट पुरुष

स्व० बा० चन्द्रशेखर एडवोकेट ने डी० ए० वी० कालिज लाहौर के पुस्तकालयों का अध्ययन करके टाड का राजस्थान पढ़ कर अतीत के इतिहास को सम्मुख रक्खा। बा० मेवाराम जी ने जाति में विद्या-प्रचार के बीज बोये। जो फल दिखा रहे हैं। गंजडुंडवारे के संस्थान बा० मेवाराम जी द्वारा संस्थापित तथा संचालित थे। स्व० बा० अवधबिहारी लाल ज्योती निधौली कलां के आदि पूर्व अधिवेशन से लेकर जीवन के अन्तिम क्षणों तक के उत्सवों में भाग लेते रहे। उन्होंने "जातीय इतिहास" तथा 'माहौर शब्द मीमांसा" के रूप में अनुपम विचार जाति को दिये।

मुझे पक्षपाती न कहा जावे यदि मैं अपने पिता श्री बाबूराम गुप्त के बारे में कुछ लिखूं। यह वर्णन उनके स्वयं-अर्जित श्रम के फल स्वरुप है मेरे पिता होने के नाते नहीं। मैंने उन्हें अमरसिंह नगला में मलखानों की शुद्धि में देखा, हरिजनों उद्धार में व्यस्त देखा, सत्याग्रहों के संचालन में सन ३०—३१ में देखा, जाति संगठनों और दम्भी ब्राह्मणों का जो जाति से घृणा करते थे बाईकाट करवाते देखा, तथा डी० ए० बी० कालिज अलीगंज को स्थापित करते एवं आर्य समाज को पुनजाग्रत करते देखा, कांग्रेस में देखा और राष्ट्रीय स्वयं-सेवक-संघ में देखा, नागरिक अधिकारों के लिये लड़ते देखा और सार्वजनिक कार्यों में अपने को कुर्बान-बर्बाद करते देखा वे २१ अक्टूबर ८१ को दिवंगत हो गये। श्री पं० मंगलदेव जी उनके गुरु कहे जा सकते हैं। वे बर्मा, सिंगापुर और हैदराबाद के तैलगु प्रान्त में आर्य समाज का प्रचार करते रहे। गंजडुंडवारा की पद दलित जाति को ऊपर उठने, मुसलमानों से लोहा लेने और तत्रस्थित आर्य समाज के स्तम्भ वीर मास्टर महताब राय पर भी गर्व कर सकते हैं। सर्वोदय समाज तथा भारत सेवक समाज में डा० सत्यदेव आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी बी० टी० का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। बा० सोहन लाल जी वकील एक डिग्री कालिज की पुत्रवत पाल पोष कर अंचल को समर्पित कर गये।

अध्याय ४ अ.०५

ग्वारें (ग्वालियर बारे) माहौर वैश्यों के संगठन

(०१)—माहौर वैश्यों के इस वर्ग की आबादी मध्य प्रदेश के ग्वालियर, मुरैना, भिण्ड, जिलों में तथा यू०पी० झाँसी व आगरा जिले में केन्द्रित हैं। यह भी अपना निकास माहौरी पौरि मुहल्ला मथुरा से होना पुरखों से सुनते आये हैं। इनकी एक दूसरी कुल परम्परा यह है कि सन् ६५० के लगभग ग्वालियर के क्षेत्र के एक अंचल में गोकरनाथ नाम के एक बड़े धर्मनिष्ठ राजा राज्य करते थे और उन्हीं के वंशज ग्वारे कहलाये। श्री बन्शीलाल जगा ग्राम देवीपुरा जि० जोधपुर एवं श्री विजेलाल जगा ग्राम गिठौली पोस्ट पिचेवर स्टेशन नीमाड जिला-जेंपुर-इनके दो प्रसिद्ध जगा हैं, जिनके पास उनकी सैंकडों वर्षों की वन्शावली सुरक्षित हैं। वह वशावलि ब्रह्मा से आरम्भ होती है। इनमें विवाह के अवसर पर वर तथा वधू की ७ पीढ़ी तक की वंशावलि उच्चारने का नियम है।

(०२)—इनके संगठन का सूत्रपात कार्तिक शुक्ल ११ सम्वत १९७९ वि० सन १९२२ ई० को हुआ जबकि मुरार में सेठ गोकुल चन्द्र जी के मकान पर एक युवक मण्डल को स्थापना हुई। इसी युवक मण्डल के प्रयत्न से मुरैना नगर में अगली वर्ष एक बडा जातीय सम्मेलन बुलाया गया। सभापति पद के लिये मतभेद होने के कारण एक विजातीय प० जगन्नाथ प्रसाद शास्त्री को सामयिक प्रधान बनाया गया। उस समय तक ग्वालियर क्षेत्र के लोग अपने को माहौर तथा आगरा के लोग अपने को ग्वारें मात्र कहते थे। यहां यह निश्चय हुआ कि सब लोग अपने को माहौर (ग्वारें) कहा करें।

इधर सन १९२४ ई० में आगरा में भी नवयुवकों का संगठन बना जो सन १९३५ तक कार्य करता रहा। उसके प्रधान श्री रमाशंकर जो गांगिल एम० ए० शास्त्री थे। सम्वत १९८३ में ग्वालियर में फिर उत्सव करना चाहा, पर १८ वर्ष बाद सन १९४४ को आगरा नगर में प्रसिद्ध आर्य विद्वान हरिदत्त जी शास्त्री सप्त तीर्थ (बाद में अध्यक्ष संस्कृत विभाग डी. ए. वी. कालिज कानपुर तथा अब दिवगत) के संरक्षकत्व में एक जातीय सम्मेलन हुआ। उस समय श्री हरप्रसाद गुप्त एडवोकेट एत्मादपुर प्रधान, श्री पन्ना लाल गुप्त सम्पादक 'माहौर मित्र' लश्कर उपप्रधान एवं श्री दाऊदयाल बाँदिल आगरा मंत्री चुने गये थे।

(०३)-महासभा का अभूतपूर्व आयोजन अक्टूबर सन १९४५ को गोहद (जि० भिण्ड) में हुआ। इसके लिए ग्वालियर से स्पेशल ट्रेन छोडी गई थी। इस उत्सव पर विवाह पद्धति में कुछ सुधार किये गया चवेना का बांटना और रन्डी का नाच बन्द करना, टीका के समय वधू पक्ष द्वारा मुहरथाल भेजना बन्द करना, एक बार निश्चित हुई सगाई का बिना महासभा की स्वीकृति के केन्सिल न होने देना, आदि पास किया गया। उत्सव के परिणाम स्वरुप स्थान-स्थान पर जो जाति निष्कासित व्यक्ति थे, उन्हें पुन: जाति में ले लिया गया। विधवा-विवाह प्रचलित करने का प्रयत्न किया गया, एक ऐसा पुनर्विवाह हुआ भी पर बाद में उसकी जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई और तब से अब तक किसी ने ऐसा करने का प्रयत्न नहीं किया और महासभा का कार्य भी ठण्डा पड गया।

संगठन को पुन: जाग्रत करने के ३ प्रयत्न १५ वर्ष बाद फिर किये गए। एक व्यक्ति को एक वोट के आधार पर लोक प्रिय निर्वाचन दिनांक ३१-७-६० को कराए गए। दूसरा प्रयत्न था ग्वालियर में जून ६१ को वहां के नवयुवकों द्वारा एक अखिल भारतीय स्नेह सम्मेलन बुलाया जाना। यहां श्री बालमुकुन्द जी बंसल की अध्यक्षता में युवक संघ की भी स्थापना की गई। तीसरा प्रयत्न था १९६० को मुरैना माहौर (ग्वारें) वैश्य सभा की स्थापना। इसने भी विवाह सम्बन्धों के बारे में कुछ नियम बनाए। श्री जगन्नाथ प्रसाद चांदिल मंत्री चुने। इन सब प्रयत्नों को फलस्वरुप १९६२ में मुरैना में एक अखिल भारतीय माहौर (ग्वारें) वैश्य मण्डल की स्थापना की गई।

फिर अधिवेशन जाति के श्रीजगन्नाथ जी के मन्दिर आगरा में ३ मार्च ६३ को बुलाया गया। माहौर-संदेश पत्र निकालने का भी निश्चय हुआ। एक सामाजिक-बेकारी-उन्मूलन समिति बनाई गई। सगाई छोड़ने की प्रथा पर खेद प्रकट किया गया। सामूहिक विवाह पद्धति के पक्ष में जनमत तैयार करने का भी निश्चय हुआ। पुन: अप्रैल ६४ को लश्कर में अ० भा० मण्डल की बैठक में विधान में कुछ संशोधन पास करके इसे अन्तिम रूप दिया गया। खूबचन्द वाद-विवाद प्रतियोगिता भी मण्डल के ही संरक्षण में करना निश्चित हुआ। फिर फरवरी १९६६ को सजातीय मदन मोहनजी के प्राङ्गण में बैठक हुई जिसमें फिर वार्षिक चुनाव हुआ और गत वर्ष वाले प्रधान एवं मंत्री फिर चुने गये। ३१ जूलाई ६५ को लश्कर में पुन: बैठक हुई और वहीं मुरार की जातीय सम्पत्ति के ट्रस्ट निर्माण हेतु भी एक निर्मात्री उप समिति गठित की गई। नवम्बर ६६ के मुरैना में श्री विपिनचन्द जी बांदिल मुरैना के सभापतित्व में विशाल अधिवेशन मुरैना में ही फिर हुआ।

[०४] शाखा सभायें—

१-अजमेर-अखीरी चुनाव अगस्त ८० को अतिड़ माता के मन्दिर में हुआ।

२-एत्मादपुर १९८० में प्रधान श्री हरप्रसाद गुप्त एडवोकेट। मंत्री श्री मगन लाल गुप्त।

३-युवक मण्डल एत्मादपुर-१९८० के अध्यक्ष श्री विश्वाराम गोयल एवं मंत्री विपिन कुमार गुप्त।

४-मुरैना-१९८० में प्रधान श्री दाऊदयाल गोयल तथा मंत्री श्री धन्नालाल गोयल थे।

(०५)—मुरैना माहौर नवयुवक संघ

१-अध्यक्ष श्री सुभाषचन्द बांदिल २-मन्त्री हरचरणलाल मांडिल।

(०६) विद्यार्थी संघ-लश्कर में १९६४ में स्थापित हुआ था। इसका उद्देश्य था। लोकतन्त्र की शिक्षा देना तथा पुस्तक-बैंक की स्थापना और प्रसार।

(०७) नवयुवक संघ ग्वालियर (१९८०) प्रधान श्री ओमप्रकाश गोयल।

(०८) सितम्बर १९८० में माहौर वैश्य नारी संघ शाखा मुरैना में हुई।

(०९) स्व० सेठ बदलूराम दतहरा ने एक ट्रस्ट निर्माण कर उसे अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति लिख दी थी कि उसे बेचकर एक धर्मशाला का निर्माण किया जावे।

(१०) **श्री प्रभूदयाल ट्रस्ट आगरा**—इनके पास १९६४ में १००००) की निधि तथा अन्य सामान था।

(१३) माहौर वैश्य सिलाई विद्यालय मुरैना-१९८० में स्थापित।

(१४) श्री मदन मोहन जी का मन्दिर मुरार-यह ट्रस्ट बड़ा सम्पत्ति शाली है। इसके पास एक पूरा बाजार है, जिससे हजारों रुपया प्रति मास की आमदनी है। यहां एक सरस्वती जूनियर विद्यालय भी चलता है। ग्वार्रे माहौर वैश्यों को सात प्रसिद्ध देवियां सात नगरों में हैं। अब १९८१ में मुरार मन्दिर के विशालप्राङ्गण में निम्न सातों देवियों के छोटे छोटे सात मन्दिर बने हैं :—

१. मऊजमारपुर (मन्दिर में) बंसल कोचल आंदिल गोत्र की देवी हैं। २. गोहद (तालाब में)-गांगिल गोत्र की, ३. ऐस (निकट अम्बाह) बांदिल (खांप) गोत्र की ४. ऐनो (निकट गोहद) गांगिल गोत्र की। ५. मांडली (मुरैना) ६. जौरा (शेष गोत्रों की)।

(१५) ग्वार्रे ट्रस्ट आगरा—अगस्त ६१ में स्थापित और ग्वार्रे वैश्य सभा द्वारा संचालित।

(१६) श्री माहौर वैश्य समाज मन्दिर की प्रबन्ध कारिणी समिति नया बाजार लश्कर में है।

वर्ष १९६७ में श्री राम जी दास माहौर एडवोकेट हाईकोर्ट प्रधान तथा श्री केशवदेव चांदिल एम० ए० मंत्री थे।

(१७) **एत्मादपुर स्थित गंगा जी मन्दिर ट्रस्ट**—स्व० लाला खूबचन्द जी ने सन् १८९८ में गङ्गा जी के एक मन्दिर को बनवाकर एक जातीय ट्रस्ट बनाया और सारी सम्पत्ति उसके नाम कर दी जिसमें ५ दुकानें तथा ३ मकान हैं और मासिक किराया की आमदनी है।

(१८) श्री खूबचन्द वाद विवाद प्रतियोगिता समिति-केन्द्रीय सगठन के आधीन प्रतिवर्ष विद्यार्थियों की एक प्रतियोगिता में गोहद के बा० खूबचन्द जी द्वारा प्रदत्त ट्राफी दी जाती है।

(१९) काशीबाई धर्मशाला ट्रस्ट मुरैना-श्रीमती काशीबाई ने यह ट्रस्ट जाति उपकार हेतु बनाया था। इस ट्रस्ट ने एक धर्मशाला मुरैना में बनवा दी है। ट्रस्ट को ६५-६६ में ११७५६) की आय थी।

(२०) माहौर वैश्य वाचनालय रजिस्टर्ड मुरैना-यह ऐसी संस्था है जिस पर यह वर्ग नाज कर सकता है। सन् १९४४ से स्थापित है। इसे मध्य प्रदेश सरकार से मुरैना नगर पालिका से सहायता मिलती है। १९६५ मे वाचनालय में २८ मासिक पत्र-५ पाक्षिक पत्र, १४ साप्ताहिक पत्र तथा १२ दैनिक पत्र आते थे। वाचनालय में एक पृथक अलमारी है जिसमें माहौर वैश्यों के सब वर्गों की पत्र पत्रिकायें तथा प्रकाशन आदि एकत्रित करने का प्रयत्न किया गया है।

[२२] विशिष्ट पुरुष

१-इस वर्ग के दो विशिष्ट महापुरुषों का जिक्र किया जाना जरूरी है। स्व० नाथुराम जी माहौर (झांसी) हिन्दी साहित्य के गिने माने पुरानी परम्परा के महाकवि थे। ओरछा दरबार ने उन्हें कवि-रत्न की उपाधि दी थी। १९६१ में राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी ने उनका अभिनन्दन करके दुशाला तथा ५०१) भेंट किये थे।

२--कविवर माहौर जी के भानजे थे श्री भगवान दास माहौर। सन् १९३० में जब वह बी० ए० में पढ़ते थे, वे क्रान्तिकारी-प्रमुख चन्द्रशेखर आजाद और सरदार भगतसिंह के सम्पर्क में आये। वे अचूक निशाने बाज थे। भूसावल स्टेशन पर उन्होंने पुलिस दल पर गोली चलाई थी। मुकदमे में मुखबिर मलकापुरकर था। उसके बड़े भाई फणीन्द्र उसे खाना देने आते थे। आजाद की आज्ञा से चावल भात में रखकर पिस्तौल वहां पहुंचाई गई और भरी अदालत में माहौर जी ने दि० २०-२-३० को मुखबिर को गोली मार दी। दोनों मुकदमों में उन्हें कालेपानी की सजा मिली। स्वराज्य के बाद जब वे कालेपानी से लौटकर आये, विद्याध्यन में जुट गये। बी०ए०, एम०ए० तथा पी०एच०डी० पास किया और बुंदेल खंड डिग्री कालिज झांसी में प्राध्यापक हो गये। सन् १९६५ में महाउर संघ की दिल्ली सार्वजनिक बैठक का उन्होने उद्घाटन किया था। वे माहौर-माथुर संघ के प्रबल समर्थक थे। सन् १९८० मे दिवंगत हुये। हा हन्त कि उन्हें ग्वार्रे माहौर वैश्य सदा जाति-च्युत मानते रहे।

समुल्लास ४ अ. ०६

राजस्थान के महावर वैश्यों के संगठन

(०१) महावर वैश्यों की मुख्य आबादी राजस्थान के छोटे छोटे ग्रामों में थी। वहां भी इनके पास केवल व्योपार ही था, खेती की जमीन नहीं थी। इस कारण जब जमीन पर आबादी का दबाव बढ़ा, तो अन्य मारवाड़ियों की भांति यह भी व्योपारार्थ मुल्तान, (पंजाब), स्यालकोट, रोहतक, मथुरा, देहरादून, बम्बई, कलकत्ता, भद्रक, (उड़ीसा), रायपुर, (मध्यप्रदेश), आसाम नागालेंन्ड, मलाया, सिंगापुर, तक फैल गये। और अखिल भारतीय कम्युनिटी ब गये। एक बात विशेष रुप से कहने की है कि वे प्राय: उन्ही शहरों मे बसे जहां मिलिटरी सैन्टर थे और वहां सप्लाई का कार्य तथा दूकानदारी करते रहे।

(०२) सन् १९३८ में ग्राम तीतरका में अखिल भारतीय स्तर का उत्सव हुआ। उसमें यू० पी० कमेटी नाम से एक उप-समिति ला० काशीराम गुप्त के संयोजकत्व में बनी, जो मथुरा, आगरा, कासगंज, एटा, मुरादाबाद आदि सर्वत्र घूमी और माहौरों के सब वर्गों के रहन-सहन, कार बार तथा सामाजिक स्तर के बारे में आंकड़े इकट्ठे करके उसने रिपोर्ट दी कि मूलत: माहौर, महावर, माथुर एवं माहुरी नामक यह सब वर्ग वैश्य हैं और एक से सामाजिक स्टेटस के है।

इसके बाद एक उत्सव १९४४ में हुआ। फिर इनके मनीषी लोगों ने १९६० में १६ वर्ष बाद इसे अखिल भारतीय कार्यकर्त्ता मंडल के

नाम से फिर संगठित किया ताकि उसमें प्रवेश ही वे लोग लें जो जातीय कन्ट्रोल में नैतिक श्रद्धा रखते हों।

इसे सम्पन्न करने के लिये पहिले "महावर नवजीवन" पत्र अलवर से प्रकाशित किया गया। इसने ही अलख जगाई।

इस सम्मेलन में कोई ३५० डेलीगेट दूर-दूर से आये थे। इसका उद्‌घाटन बा० बद्रीप्रसाद गुप्त ने किया था जो तब राजस्थान सरकार में उद्योग मन्त्री थे। कानपुर के उद्योगपति ला० किशन नारायण जी (विजय मेंटल वर्क्स फजलगंज) इसके सभापति थे और वे ही आगामी वर्ष के लिये नव निर्मित संगठन के प्रधान चुने गये थे। इस सम्मेलन के प्रस्ताव निम्न लिखित थे। १--महावर वैश्यों की आबादी वाले ग्रामों का सर्वे करवाना ताकि लोगों को लघु उद्योगों को प्रारम्भ करने के बारे में प्राविधिक जानकारी दी जा सके। २-विद्यार्थी जीवन में विवाहों पर रोक लगादी गई। ३-स्त्री शिक्षा का प्रचार। ४- बाल विवाह निषेध, दहेज बन्दी, मृतक-भोज-बन्दी इत्यादि के जो कानून सरकार ने बनाये थे, उन्हें जाति में पालन करवाना। ५ माहौर, माथुर, महावर, माहुरी, मथुरिया वैश्यों के संघ निर्माण में सहयोग देना। ६ परिवार नियोजन का जाति में प्रचार। ७-एक अखिल भारतीय संस्था का निर्माण और उसके लिये कामचलाऊ विधान बनाना। ८. रीति रिवाजों का कोडीफाई करना और मुख्य रूप से यह संशोधन कि ४ के बजाय २ गोत्र बचा कर शादी की जा सके तथा कन्यादान पर ३५००) से अधिक का दहेज न हो। मिलनी और समधौरा भी बन्द कर दिये गये। आगामी वर्ष के लिये श्री चन्दगीलाल गुप्त मन्त्री घोषित किये गये। सो १९६४ तक जाते जाते यह संगठन बिल्कुल श्रीहीन हो गया।

सन १९६५ में सभा को पुनर्जागृत करने के लिये एक सम्मेलन किया गया। संस्था का नाम महावर वैश्य संघ रखा गया। इसका प्रथम वार्षिक अधिवेशन १९७० में अलवर में ही हुआ। पर संस्था फिर सुप्तप्राय हो गई।

अगला अधिवेशन नवम्बर ८१ को देहरादून में हुआ। श्री दीनदयाल गुप्त निर्मल बेकरी वाले इसके स्वागत मन्त्री थे। यहां संस्था का नाम महावर वैश्य महासभा रखा गया। विधान संशोधित किया गया। देहरादून में एक धर्मशाला बनाने का भी निर्णय हुआ। और एक स्मारिका भी निकाली गई। इसमें ४५० प्रतिनिधि आये थे।

(०३) महावर वैश्य संघ दिल्ली—

दिल्ली में बसे महावर बन्धुओं का यह एक संगठन है। इसका जन्म १९४८ में हुआ देहली स्थित अपनी आबादी की एक पूरी डायरेक्टरी भी संकलित करने में सफलता प्राप्त की है। महासभा भवन भी ३४०० गली हरी मन्दिर मार्ग-पहाड़गंज, नई दिल्ली-५५ में बन गया है।

सन ८४ के चेयरमैन—सेठ मदनलाल गुप्त थे।

(०४) महावर वैश्य संघ जयपुर—

कुछ व्यक्तियों ने इकट्ठा होकर जयपुर में संगठन करने की सोची और २४ अगस्त ५८ को ही संघ की विधिवत स्थापना हो गई। इस संघ ने तत्काल १०५) मासिक का एक बंगला किराये पर लेकर एक महावर वैश्य छात्रावास चालू कर दिया। इन्होंने आदर्श नगर जयपुर में महावर छात्रावास का निर्माण किया है।

(०५) महावर वैश्य सभा फीरोजपुर छावनी (पंजाब)-इसकी स्थापना मई १९६१ को हुई।

(०६) महावर वैश्य संघ मालाखेड़ा।

मार्च ६४ को इस शाखा की स्थापना हुई, और श्री मुरलीधर ठेकेदार एवं बनवारी लाल गुप्त इसके प्रधान व मंत्री चुने गये।

(०७) महावर वैश्य सभा जालन्धर छावनी।

स्थापना तिथि—जुलाई १९३०। सन् १९८१ के

प्रधान —ला० बनवारी लाल गुप्ता आर्मी कान्ट्रेक्टर।

(०८) महावर वैश्य संघ कलकत्ता।

इन बन्धुओं के कोई १५० परिवार कलकत्ता में रहते हैं। किसी समय और "भानु उदय" नाम से मासिक पत्रिका यहां से निकलकर जाति को सदेश देती थी। यहां की गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं जातिहितैषी धार्मिक पुरुष (अब स्वर्गीय) श्री रामकुमार जी धातरिया। इसका अधिकतर कार्य श्री मुकन्द किशोर जी महावर ही करते हैं। और उन्हीं की धर्मपत्नी श्रीमती शान्ति देवी महावर २२८ हरीसन रोड, कलकत्ता-१ महावर महिला संघ की मंत्राणी हैं।

(०९)—महावर वैश्य संघ आर्यनगर अलवर स्थापित १९८०।

(१०)—अ० भा० महावर वैश्य युवक संघ फिरोजपुर

—संरक्षक-श्री ज्ञान प्रकाश।

(११) महावर वैश्य सेवासंघ [रजि०] अलवर

महावर वैश्यों की यह गौरवशाली संस्था है जिसकी सेवा का अद्भुत रिकार्ड है। कार्य अबाध्य गति से चलता रहता है। इसके कार्य में बा० रामलाल गुप्त बी.ए.एल.एल.बी. ने अपने को आहुत कर दिया था।

महावर छात्रावास निर्माण का सूत्रपात मुलतान परिवार (सेठ रामनारायन, हरीशनारायन, मदनलाल व श्याम नारायन बन्धु) के ३५०००) के सात्विक दान से प्रारम्भ हुआ था। प्रारम्भ में ४५ छात्रों के रहने के कमरे, रसोई घर, हाल, स्टोर, सैप्टिक लैट्रिन आदि तैयार हुए थे। बाद में ६० छात्रों के रहने के कमरे और बन गये हैं। इस बिल्डिंग में इस समय तक कई लाख रुपया इस पर व्यय हो चुका है।

सन ८५ के चुनाव के अनुसार शान्ति स्वरुप डाटा तथा बा० शादीलाल गुप्त जयपुर इस सेवा संघ के प्रधान व मन्त्री हैं। संघ को अपने १११ सदस्यों से लगभग ८०००) वार्षिक और प्राप्त होते हैं, जिससे संघ अन्य जातीय कार्य करता है।

(१२) **महावर नवजीवन संस्थान**—इस पत्रिका को जयपुर शाखाके कार्यकर्ताओं ने १९६४ मे पुनः प्रकाशित किया था। इस समय पत्रिका बंद है।

(१३) **श्री गोविंद देव मन्दिर समिति अलवर**-यह मन्दिर जातीय धन से १०० वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था और मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा माघ शुक्ला ६ संवत १९२८ को हुई थी। सन १८५६ में

राजस्थान में 'सार्वजनिक न्यास अधिनियम १९५९' लागू होने पर यह आवश्यक हो गया कि ३०००) वार्षिक आय से अधिक के ट्रस्टों की रजिस्ट्री कराई जावे। अतः जून १९६४ में विधान बनाकर रजिस्ट्री हुई। मन्दिर में पुरानी परिपाटी के अनुसार उत्सव आदि मनाये जाते हैं विशेष प्रकार से श्रावण मास के झूले तथा कृष्ण जन्माष्टमी पर।

(१४) महावर वैश्य शिक्षा समिति ट्रस्ट मथुरा रजिस्टर्ड-इस ट्रस्ट की स्थापना सन् १९१० में हुई थी और इसके मातहत एक पाठशाला तभी स्थापित हुई। १९४८ में इसे मिडिल तक मान्यता मिली। विद्यालय का अपना भवन होली दरवाजा (तिलकद्वार) के निकट गली पंचपीर (पूर्व नाम माहोरी पौरि) में है। इसके एक भाग में ८ कमरों में विद्यालय लगता है और दूसरे में दाऊ जी महाराज का जातीय वैष्णवी मन्दिर है।

(१५) अखिल भारतीय महावर वैश्य धर्मशाला ब्रजघाट-(गंगा) गढ़ मुक्तेश्वर मई ७९ से बनी है। यहां २० कमरे तथा एक बड़ा हाल है। यह सदस्यों का ट्रस्ट है।

(१६) गोवर्द्धन व गोकुल और बरसाने में भी महावर वैश्यों की धर्मशालाऐं हैं।

(१७) महावर वैश्यों के विशिष्ट पुरुष :-

१-बाबू रामलाल गुप्त अलवर को हम महावर वैश्यों के विनोवा भावे कह सकते हैं जिनके अध्यव्यवसाय और तपस्या का ही फल महावर वैश्य छात्रावास अलवर व जयपुर तथा महावर वैश्य सेवा संघ रजिस्टर्ड की अन्य जाति को लाभ पहुंचाने वाली गतिविधियां हैं। पेशे से एडवोकेट और पाकिस्तान बनने पर मुल्तान से वापिस आकर इधर बसे। पुरखे राज घराने के कोषकार रहते आये थे। जनहित की भावना लिये शान्त पर लगातार एक प्रयोजन में पूर्ण रूप से जुटे रहने वाले ऐसे व्यक्तित्व का अन्यत्र उदाहरण दुर्लभ है। अप्रैल ८५ में दिवंगत हुये।

२. लाला काशीराम गुप्त तत्कालीन एम० पी०—प्रजा मण्डल के तत्वावधान में राजनैतिक उद्धार में रत लाला जी लोकसभा के निर्दली सदस्य रहे। सामाजिक चेतना के विचारक, माथुर-महावर-माहुरी वैश्यों के संगठन के आदि सयोजक लाला जी ही थे। राजस्थान और मध्य प्रदेश में स्लेट के पत्थर की खानों की आप पर लीज थी। ज्येष्ठ पुत्र हवाई सर्विस में पायलट आफीसर थे जो हवाई जहाज की रक्षा में दिवगत हुये।

अलवर उत्सव पर संगठन के प्रधान चुने गये थे।

३ —स्व० सेठ रापकुमार बातरिया कलकत्ता-प्रसिद्ध दानवीर, धार्मिक वृत्ति के सेठ जिन्होंने वरसाना में मन्दिर धर्मशाला तथा एक धार्मिक प्रतिष्ठान बनाया था।

४—सेठ मलखान जी मलाया वाले महावरों के एक विशिष्टतम व्यक्ति हैं जो बैरोड के पूर्व निवासी हैं।

सेठ मक्खनलाल जी सुदूर, मलाया, पिनाङ्ग और सिंगापुर तक गये और मलाया की नागरिकता प्राप्त की।

सन १९४२ में जब नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर में भारत की प्रथम आजाद हिन्द सरकार बनाई तो सेठ जी ने लाखों रुपये का कोष उन्हें भारतीय स्वतन्त्रता का संग्राम चलाने हेतु अर्पित किया। नेता जी ने उन्हे अपनी सरकार का कोषाध्यक्ष बनाया था। उन्होंने सैनिक वेश पहिना और ११ सैन्टरों के फौजी प्रशिक्षण का काम उन्हें सौंपा गया था। भारत के स्वाधीन होने पर अपने नगर बैरोड में एक आधुनिक साज-सज्जा से पूर्ण अस्पताल बनवाकर जनता को समर्पित किया, उसका उदघाटन १० अप्रैल ५५ को राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी ने किया था।

अध्याय ४अ .०७

क-बिहार प्रान्त में बसे माहुरी वैश्यों के मगध अंचल के संगठन

(०१)—पाठक पिछले अध्यायों में पढ चुके हैं कि किस प्रकार माहौरों के ६०० परिवारों की एक टुकडी व्यौपारार्थ गंगा के जल मार्ग से बिहार पहुंची और कैसे सूबेदार बिट्ठल से चुंगी मामले में लडाई होकर वे लूट लिये गये और उन्हें वहीं बस जाना पड़ा। बिहार शरीफ नगर में मथुरिया मुहल्ला बसाकर वे वहां बस गये। बिहार शरीफ से ही सूर्यवंशी राजा के नगर राजगृह को रास्ता गया है। क्रियाशील जाति होने के नाते कालान्तर में वे वहां से जीविकार्थ फैलते गये और ४ अंचलों में फैल गये :—मगध, हजारीबाग झाझा और दक्षिणी बिहार तथा झरिया। अपनी विद्रोही नीति के कारण ही वे गुरु गोविन्द सिंह के शिष्य बनकर नानक पन्थी बने। कुछेक थ्योसोफिस्ट हो गये। कुछ पर बिहार की शैव संस्कृति का भी प्रभाव पडा। पर यहां भी उन्होंने शाक्त-देवी-पूजा को वैष्णवी मथुरासिनी देवी में बदल दिया। संस्कृतियों का यह युद्ध और प्राचीन संस्कृति के विजयी होने की यह कहानी माहुरी संगठनों से स्वयं सिद्ध है। इनके संगठन के आदि प्रस्तोता बाबू कारूरामजी ही थे और मगध तथा हजारीबाग दोनों संगठन उन्हीं ने स्थापित किये। परन्तु मगध मे पहल हाने के कारण हम वहीं से प्रारम्भ करते हैं।

(०२) मगध माहुरी महा मंडल

०२) स्व० बाबू कारुराम जी अठघरा (सिलाव-निवासी) तथा स्व० बा० गयाराम भदानी (पचम्बा गिरीडीह निवासी ने सन् १९०० ई० में ग्राम गांडेरामनगर में सर्वप्रथम जातीय पचायत निरूपण की। पुन: सन १९०४ ई० में सिलाव में एक सभा की गई। वहां हर वर्ष एक छोटा सम्मेलन होता रहा। १९१० में बाकायदा एक सत्संग सभा बनी। उत्सव सन १९१२ ई० में धर्मतीर्थ राजगृह में हुआ। ध्यान रहे राजगृह सूर्यवशीय राजा जरासिन्धु की राजधानी थी। इसमें विद्या-प्रचार जाति सुधार और धर्म प्रचार के उद्देश्य त्रय से एक महामण्डल बनाना निश्चित हुआ। हसुआ के बडे जमीदार राजा राधा-कान्त लाल इसमें सम्मिलित थे। उन दिनों वे दो लाख रुपया साल के मालगुजार थे। इसकी स्थापना में इनके परिवारिक कुलगुरु का विशेष हाथ था। उनका नाम था पं० गंगाप्रसाद चतुर्वेदी। उन्हीं की प्रधानता में सम्मेलन हुआ। दूसरा अधिवेशन १९१४ में नानकपथी सम्प्रदाय के

महन्त गोपाल भक्त दास जी (रिजौलीगद्दी) के सभापतित्व में हुआ।

तृतीय अधिवेशन मई १९१५ में राजगृह में राजाराधाकान्त लाल के सभापतित्व में हुआ। राजा साहब शाक्त धर्मावलम्बी थे और यज्ञ में पशुबलि के समर्थक थे जो कि बिहार की संस्कृति का प्रभाव था। वहां कुल पुरोहित चतुर्वेदी जी ने पशुबलि के विरोध में व्याख्यान दिया और शास्त्रार्थ किया। और अपने यजमानों को वैष्णवी मथुरा संस्कृति की ओर खींचने में अपने सर्वस्व की बाजी लगा दी। परन्तु प्रधान की हैसियत से राजा साहब ने यज्ञ में पशुबलि समर्थन की व्यवस्था दी। बस जाति में हल-चल मच गई और विद्रोह स्वरुप हजारीबाग अंचल के मिर्जागंज में धुआंधार विशेष अधिवेशन शीघ्र ही फिर बुलाया गया और यह निश्चय किया गया कि मांस भक्षी को जाति-च्युत कर दिया जावे। फलतः राजा साहब संगठन से प्रथक हो गये। धनवानों के प्रथक होने से संस्था क्षीण हो गई।

परन्तु झरिया के वीर पुरुष बा० प्रभुदयाल गुप्त ने "माहुरी मयंक" पत्रिका का प्रकाशन करके जन जागृति की और सन १९१९ में चौथा वार्षिकोत्सव कलकत्ता के श्री रामचन्द्रराम जी के सभापतित्व में हुआ। ये रायबहादुर एवं बहुत बडे व्योपारी थे। वे भारत के मर्चेण्टस चैम्बर आफ कामर्स के प्रधान रह चुके थे। इन्हीं के परिवार के श्री गुरुशरनराम भदानी थे, जिनके ४००००) के स्तुत्य दान से गया में डिग्री कालिज की स्थापना हुई थी जो आज मगध यूनीवर्सिटी बन चुका है। इसी वर्ष भारत के युवराज (बाद में सम्राट जार्ज पंचम) भारत आये। माहुरी महामंडल ने उन्हें बधाई का तार भेजा था, और उनके हस्ताक्षर से उनके पास आया उत्तर महामंडल की फाइलों में सुरक्षित रक्खा है। उस वर्ष के "माहुरी मयंक" के प्रथम पृष्ठ पर 'जय ब्रितानियां' स्तुति है। उस युग में विशेषकर वैश्यों ने शताब्दियों के बाद अंग्रेजी राज्य में सुरक्षा अनुभव की थी। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन भी गाड सेव दी किंग की स्तुति से सन् १९२० तक प्रारम्भ होते रहे थे।

(०३)—इसके बाद अधिवेशन इस प्रकार हुये:—

सन	स्थान	प्रधान
१९२०	गया	श्री प्रभूदयाल गुप्त (झरिया)
१९२१	गया	श्री दामोदर प्रसाद (गया)
१९२२	बिहार शरीफ	श्री हरखूराम (हजारी बाग)
१९२३	बरबिघा	श्री प्रभुदयाल गुप्त (झरिया)
१९२४	नवादा	श्री भगवानदास जी (सिलाव)
१९२५	खुदागंज	श्री रामलाल भदानी
१९२६	मखदूमपुर	अज्ञात

तदन्तर १३ वां अधिवेशन सात वर्ष बाद १९३३ में राजगृह में हुआ। वहीं वैवाहिक नियमों को आद्योपान्त कोडीफाई किया गया।

अन्य उप वर्गों की भांति यहां भी राष्ट्रीय आन्दोलन में लोगों के चले जाने तथा युद्ध जन्य मंहगाई के कारण जातीय संगठन शिथिल हो गया। फिर जाकर कहीं १९४७ में भारतीय स्वतंत्रता के बाद लोगों में जोश आया। जब समाज व्यवस्था बदलने लगी तो जातियों को अपना अस्तित्व कायम रखने के लिये हर क्षेत्र में संगठित होना पड़ा। परन्तु यहाँ तदुपरान्त भी ६ वर्ष और लगे। सन १९५३ में कोडरमा के जाति बन्धुओं के श्लाघ्य प्रयत्न से भदानी परिवार के प्रमुख श्री छट्ठू राम भदानी ने प्रचुर धनराशि महामंडल को तथा "माहुरी मयंक" के पुनः प्रकाशन के लिये दी। एक विधान अप्रैल ५४ में पारित किया गया। इस बार सारा ध्यान विद्या प्रचार पर केन्द्रित किया गया। एक प्रमुख व्यक्तियों का डेपूटेशन सारे अंचल के शहरी और देहाती क्षेत्रों में घूमा और स्थान स्थान पर मंडल कायम किये गये। फलतः संरक्षक श्री हरिहर प्रसाद लोहानी गया तथा सभापति श्री छट्ठू राम भदानी माइका इन्डस्ट्रियलिस्ट कोडरमा चुने गये।

दिसम्बर ५७ में गया में धूम धाम से श्री छट्ठूराम भदानी के सभापतित्व में उत्सव एक जातीय बन्धु द्वारा निर्मित धर्मशाला में सम्पन्न हुआ।

एक सज्जन यह प्रस्ताव पेश करना चाहते थे कि जाति की गणना पिछड़े वर्ग में करवा के शिक्षा सम्बन्धी सुविधायें प्राप्त कराई जावें, परन्तु तीव्र विरोध और स्वाभिमान के प्रतिकूल होने से इसे तब पास न कराया जा सका। सन् १९७८ में यह बात मनवाई जा सकी और बिहार सरकार के नोटीफिकेशन द्वारा इन्हें पिछड़ा वर्ग की संरक्षण लिस्ट में शामिल कर लिया गया। विधवा-विवाह सम्बन्धी प्रस्ताव भी आया, पर उसे पेश करने की अनुमति नहीं दी गई। देवी के मन्दिर में मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा तथा उद्घाटन किया गया।

परन्तु दुर्दैव विपाक ऐसा कि इतने उत्साह से किये गये उत्सव के बाद ७ या ८ वर्ष तक न कोई अन्तरंग की बैठक हुई न अन्य उत्सव।

अगला उत्सव जनवरी ६६ को श्री दुर्गा चरण लाल वानप्रस्थी की अध्यक्षता में माहुरी छात्रावास गया के निज भवन में हुआ।

सत्रहवां वार्षिकोत्सव गया में २४-२५ मई १९७० को हुआ जिसमें मुख्य रूप से वैवाहिक नियमन के ही कार्य किये गये और उनकी अवहेलना पर दण्ड विधान भी बनाया गया।

माहुरी समाज में विवाहादि कार्य सम्पन्न कराने वाले माहुरी पुरोहित और आचार्य को माहुरी महामण्डल के प्रधान कार्यालय से एक प्रमाण-पत्र लेना अनिवार्य कर दिया गया।

अठारहवां वार्षिकोत्सव पुनः गया नगर में अप्रैल ७१ को हुआ। श्री कृष्ण प्रसाद भदानी स्वागताध्यक्ष थे।

वहीं श्री मथुरासिनी देवी के गया स्थित मन्दिर में मात्र १५) के खर्चे से विवाह सम्पन्न करवाने की योजना स्वीकृत हुई।

इसके बाद २१ वां वार्षिक अधिवेशन वरबिघा (जि० मुंगेर) में मार्च १९८० में हुआ। इसके स्वागताध्यक्ष श्री दयानन्द राम जी थे। तथा कथित नम्बर दो वाले सब बधुओं को साथ लेने का पुरजोर समर्थन किया गया और इन दोनों मुद्दों के समर्थन में प्रस्ताव भी पास हुये।

२२ वां वार्षिकोत्सव अप्रैल १९८१ को झरिया में मनाया गया।

इस बार डा० केदार राम गुप्त पी. एच. डी. भागलपुर तथा श्रीविजय चन्द भदानी (गया) क्रमश: प्रधान व महा मंत्री चुने गये। कई प्रस्ताव सोत्साह पारित हुये।

एक मुख्य निर्णय हुआ कि स्वजाति बन्धुगण एक दूसरे का अभिवादन 'जय मथुरासिनी' कह कर ही किया करें।

(०४) सर्व माहुरी नवयुवक समिति का गठन मार्च ८० में हुआ जिसके अध्यक्ष—श्री भोलाप्रसाद चरण पहाड़ी-बिहार शरीफ चुने गये।

इन्होंने निश्चय किया कि प्रतिवर्ष शीतलाष्टमी पर मथुरासिनी महोत्सव अपनी आबादी वाले शहरों में मनाये जाया करें।

(०५) महामंडलाधीन स्थानीय मंडल

१ - सिन्दरी —माहुरी समिति की एक बैठक दिनांक २६-६-८० को श्री सुरेन्द्र मोहन जी के निवास पर हुई। वहां जाति उन्नति की एक निम्न प्रकार नई स्कीम बनाई गई।

'माहुरी सहयोग कोष' एक ऐसा कोष होगा जिसमें सदस्यगण अपनी इच्छानुसार कुछ राशि जमा करते रहेंगे और इस तरह की संचित राशि से सिन्दरी में रहने वाले किसी भी माहुरी स्वजातीय बन्धु को आसान किस्तों पर और आसान ब्याज पर ऋण दिया जा सकेगा। ऋण द्वारा प्राप्त आय सदस्यों में उनके द्वारा निवेसित पूंजी के अनुपात में आबंटित कर दी जायेगी।

२—लखीसराय-श्री मधुसूदन राम सभापति।

३—रानीगंज - जनवरी १९८१ की बैठक में सभापति, मन्त्री श्री कैलाश नन्दन गुप्त।

४—झरिया मंडल-इसकी पुनर्स्थापना १९५६ में विधि पूर्वक हुई थी।

(अ)—मंडल गठन के पश्चात् झरिया, धनबाद, केन्दुआ, करकेन्द, सिन्दरी, इत्यादि निकटवर्ती इलाके के बन्धुओं की जनगणना की गई। श्री रामदास गुप्त कमला प्रेस इसके प्रधान थे।

५—गया—माहुरी मंडल बहुत पुराना मंडल है। इसका अपना बड़ा सुन्दर छात्रावास गया नगर में है, जिसमें छात्र निशुल्क रहते हैं और उनका एक बुक-बैंक भी है। गया नगर में माहुरियों के दो हजार घर हैं।

६—माहुरीमण्डल **नूरसराय** की स्थापना ५ जन० सन ६६।

७—झुमरी तिलैय्या-पुनर्जागरण १३-६-६५।

८—तिलाव-स्थापना १५ दिस० सन ६५।

९—अकबरपुर — मण्डल-पुनर्जागरण १६-३-६६। आदि प्रधान रामकृष्ण राम अठघरा। इनका गणेश सभा भवन भी है।

१०—रजौली मण्डल-पुर्नसंगठन मार्च ६१। सभापति रामचन्द्र बड़गवे।

११-गोविन्दपुर मण्डल स्थापना मार्च ६६। सभापति माणिकचन्द।

१२—जहानाबाद मण्डल—पुर्नजागरण २३-१-६६। आदि प्रधान श्री शिवनारायन प्रसाद।

१३ - वारसलीगंज मण्डल—इसके स्थापनकर्त्ता थे श्री रामगोपाल आर्य "गोप"।

१४—बिहार शरीफ।

१५—पटना।

१६—वर-विघा जिला मुंगेर– स्थापना जन० ७०।

(०६) माहुरी वैश्य महासभा झरिया (बिहार)

झरिया अंचल में एक और उपवर्ग सरीखे कुछ परिवार हैं जो उड़ीसा तक फैले हुए थे। इनका सामाजिक व्यवहार अन्य उप वर्गों से नहीं था। इनके प्रमुख पुरुष श्री दामोदर प्रसाद गुप्त ने मार्च ६६ को झरिया में अपने उपवर्ग के बन्धुओं का सम्मेलन बुला कर उनका उक्त नाम से संगठन किया। वे इसके प्रधान बनाये गये।

प्रतीत होता है कि इस ग्रुप में यदा-कदा विधवा विवाह होते रहे हैं, जिसे गये युग में हेय समझा जाता था। ये लोग विधवा विवाह को समय की आवश्यकतानुसार सामाजिक मान्यता देने के पक्ष में थे।

अध्याय ४ अ.०७ [ख]

गिरीडोह (जिला हजारी बाग) क्षेत्र के माहुरी वैश्यों के संगठन

०१) इस क्षेत्र के माहुरी बन्धु ग्रामीण अर्थ व्यवस्था और खेती बारी में लगे हुए थे। राजगृह में मगध माहुरी मंडल स्थापित कर स्व० बाबू कारूराम जी गिरीडोह पधारे और सन १९१३ में ही इस अंचल के लोगों का सम्मेलन खरगडीहा में ज्येष्ठ बदी सप्तमी को किया। इसका उद्‌घाटन भी कुल पुरोहित पं० गङ्गाप्रसाद चतुर्वेदी ने किया। दूसरा सम्मेलन भी वहीं १९१४ में बाबू हरखू राम के सभापतित्व में हुआ और वे आजीवन स्थायी सभापति बना दिये गये। तृतीय अधिवेशन ग्राम रेम्बा में सन १९१५ में हुआ। ब्रह्मचारी भागीरथ बाबा और अभयानन्द पडित इसमें उपस्थित थे। बाद के उत्सव—सन १९७३ से ७९ तक लगातार पचम्बा, गाण्डे, चन्देरी, खरगडोहा, बेंगाबाद एवं मिर्जागंज में सम्पन्न हुये। उदासी महन्त इनमें उपस्थित थे।

इस अधिवेशन में बाल-विवाह निषेध का प्रस्ताव पास हुआ। विद्या प्रचार के लिये प्रत्येक जाति भाई पर वृत्ति लगाई गई। ग्रामों में पाठशालायें खोलने का निश्चय हुआ। विवाह के रीति रिवाज कोड़ो-फाई किये गये।

यह भी पास किया गया कि जो भाई बीड़ी, चुरुट, तम्बाकू, गांजा इत्यादि व्यवहार करते पाये जावेंगे उन्हें पंगत च्युत कर दिया जावेगा।

फिर दसवाँ उत्सव ४ अप्रैल १९२३ ई० को पचम्बा में सिलाव निवासी बा० भगवान दास के प्रधानत्व में हुआ । इसमें उनका जुलूस निकाला गया था । यह निश्चय किया गया कि हर भाई प्राइमरी तक शिक्षा अवश्य ले । एक केन्द्रीय स्थान में छात्रावास खोलने और निर्धन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने का निश्चय हुआ। जाति की जनगणना करने का निश्चय हुआ । एक स्त्री के रहते दूसरी स्त्री से विवाह करने वालों के लिए महामण्डल से आज्ञा लेने का नियम बनाया गया । जुआ खेलने वालों को जाति दण्ड देने का प्रस्ताव पास किया गया । अपने नाम के आगे जातीय गोत्र लिखने का भी आदेश दिया गया । सतत जाति प्रयत्न में लगे रहने के कारण बाबू भगवानदास जी को 'जाति शुभ चिन्तक'' की उपाधि दी गई। एक सज्जन को चेतावनी दी गई कि यदि वे शीघ्र अपनी परित्यक्ता स्त्री को वापिस नहीं बुलावेगें, तो उन्हें पंगत-च्युत कर दिया जावेगा ।

इस मौडल पर १९४० तक अधिवेशन विधिवत होते रहे । १९४० से १९५२ तक जैसा कि अन्यत्र हुआ राष्ट्रीय आन्दोलन तथा युद्ध-जन्य तेजो के कारण महामण्डल सुप्त रहा । पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ३० वाँ वार्षिकोत्सव १९५३ में गिरीडीह में सम्पन्न हुआ। श्री रामप्रसाद राम स्वागताध्यक्ष थे और श्री उमाचरण लाल तरवे सभापति थे । मई ५४ में ३१ वां उत्सव पुनः गिरीडीह में हुआ। इन दोनों उत्सवों में उपस्थिति चार चार हजार की थी । वास्तव में महामण्डल का यह तरवे युग था । तरवे जी ने देश-विदेश में घूमकर वापिस आकर महामण्डल को रिवसकॅन्टन टाइप विधान दिया और माइका उद्योग में स्वयं प्रवेश करके बीसियों जातीय घरानों को अभ्रक का उद्योगपति बना दिया । जाति ने उन्हें आजीवन प्रधान बना दिया ।

३२ वां उत्सव गिरीडीह में ही हुआ था । उत्सव में उदासी सन्त महन्त कृष्णवक्सदास जी रजोली, १०८ स्वामी हंसमुनि देव, परमपूज्य स्वा० कूटस्थानन्द जी भी उपस्थित थे । इनके अतिरिक्त राज्य सरकार के मंत्री बा० कृष्णबल्लभ सहाय भी पधारे थे, और उन्हें मानपत्र भेंट किया गया था। वहाँ से गिरीडीह में जो छात्रावास बा० छट्ठु राम भदानी ने बनवाया था, उसका प्रबन्ध महामण्डल ने अपने हाथ में ले लिया । ३३ वां वार्षिकोत्सव खरगडीहा में अप्रैल ५६ में हुआ।

३४ वां उत्सव पचम्बा में १९५७ में तरवे जी के ही सभापतित्व में हुआ । डा० गोपीकृष्ण राम आयुर्वेदाचार्य स्वागताध्यक्ष थे । उपस्थिति ४००० के लगभग थी ।

३५ वां उत्सव भरवट्टा में अप्रैल १९५८ में हुआ । स्वागताध्यक्ष थे श्री कमलापति राम तर्वे ।

३६ वां उत्सव अप्रैल ५९ में चकेरी में हुआ ।

३७ वां उत्सव १९६० में बेंगाबाद में श्री रघुनन्दनराम एम० एल० ए० की अध्यक्षता में हुआ था ।

सन १९६१ में ३८ वां उत्सव-महामण्डल को स्थापित हुये ५० वर्ष होने के उपलक्ष्य में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के रूप में मनाया गया।

१९६२ में ३९ वां उत्सव मिर्जागंज में हुआ । १९६३ में ४० वां उत्सव गान्डे में हुआ ।

इन सब उत्सवों के मुख्य निश्चय इस प्रकार हैं :—

१—पुरोहित और आचार्य को जाति में कार्य करने के लिये महा-मण्डल से लायसैन्स लेना होगा और किसी जाति भाई को प्रमाणपत्र-हीन पण्डित से विवाहादि नहीं पढ़वाने चाहिए। अन्यथा उन्हें पगत च्युत कर दिया जावेगा ।

(२) कन्या देखने जाते समय ५ से अधिक व्यक्ति नहीं ले जाना चाहिए, (३) एक स्त्री के होते दूसरा विवाह किसी भी कारणवश नहीं हो सकता । यदि विशेष कारण हो तो विवाह लग्न से २ मास पूर्व अपने मन्डल से अनुमति मांगनी चाहिए । अन्यथा ५०१) तक दन्ड या ५ वर्ष को पंगतच्युत । (४) ४० वर्ष से ऊपर आयु के व्यक्ति का विवाह बिना महामण्डल की आज्ञा के नहीं अन्यथा ५०१) तक अर्थ दण्ड या ५ वर्ष के लिए पंगतच्युत या दोनों ।

(५) हरेक विवाह की रजिस्ट्री महामन्डल में करानी होगी, अन्यथा १०१) तक अर्थ दन्ड । (६) दबाव देकर या दिलाकर दहेज वसूल करना जघन्य अपराध है और अन्तरंग कमेटी उसे कोई भी दण्ड दे सकती है ।

(७) कन्या क्रय या विक्रय करने वाले को अन्तरंग कितना भी कठोर दण्ड दे सकती है । (८) वेदी चुकती पर ५१) से अधिक नहीं मांगना चाहिए । (९) बारातियों की संख्या ५१ से अधिक नहीं होनी चाहिए ।

(१०) जो जातीय सज्जन महामण्डल की वृत्ति न दे, उनसे अन्य सदस्य किसी प्रकार का सामाजिक सहयोग नहीं रख सकेगा । अर्थात उसके घर न जाना, उससे किसी प्रकार का सरोकार न रखना । (११) विवाह पर वेदी चुकती रकम का चौथाई भाग महामण्डल को देना होगा अन्यथा उसकी डयोढ़ी रकम दन्ड में देनी होगी । इतना कठोर दण्ड विधान केवल कागजी प्रस्ताव नहीं हैं । उस पर अमल होता है । हर उत्सव पर न्याय-समिति बैठकर उभय पक्ष की बात सुनती है और फिर खुले जलसे में दन्ड घोषित करती है । जलसे वाली पंगत से ही उसका बहिष्कार प्रारम्भ हो जाता है, और फिर उससे कोई विवाह सम्बन्ध करने को जुरंत नहीं करता । (Political Pluralism) के सिद्धान्त के समर्थन में इस महामन्डल की कार्य-विधि प्रमाण है ।

और ५४ वें उत्सव में जो अप्रैल ६५ को पचगढ़ी (जि० धनबाद) में हुआ प्रधान श्री तरवे जी का जलूस निकाला गया । और निश्चय हुआ कि वृद्ध विवाह और बहु विवाह करने वालों को अर्थ दन्ड न देकर पंगतच्यूत ही किया

जावेगा। माहौर-माथुर वैश्य संघ के विधान की स्वीकृति और उससे सम्बन्धित होना यहां निश्चित हुआ।

५५ वां वार्षिकोत्सव अप्रैल ६६ को गिरीडीह में श्री ठाकुरदास भदानी गिरीडीह वालों के सभापतित्व में हुआ। प्रसिद्ध सत्संगी, विचारक तथा कवि भूषणराम जी इसके स्वागताध्यक्ष थे। अधिवेशन में बिहार के मुख्य मन्त्री श्री कृष्णवल्लभ सहाय भी पधारे थे और विचार भी प्रगट किये थे।

५७ वां वार्षिकोत्सव जून सन १९६८ को गिरीडीह में सम्पन्न हुआ। श्री खगपति राम महामंत्री चुने गये। फिर ५८ वां अधिवेशन मिरजगज में अप्रैल ६९ में हुआ। निश्चय हुआ कि गिरीडीह में एक सार्वजनिक पुस्तकालय तथा कन्या विद्यालय खोला जावे। पश्चात ५९ वां वार्षिकोत्सव पचम्बा में अप्रैल १९७० को हुआ। श्री रामप्रसाद कुटरियार तथा खगपति राम पुनः अध्यक्ष व मंत्री चुने गये। इस उत्सव पर एक स्मारिका प्रकाशित की गई। फिर मई १९७१ को ६० वां वार्षिकोत्सव स्वर्ण जयन्ती उत्सव के रुप में श्री सदानन्द प्रसाद भदानी की अध्यक्षता में मनाया गया।

मुख्य प्रस्ताव निम्नलिखित के अनुसार थे।

(१)—जाति की गणना आर्थिक रुप से पिछड़े वर्ग में कराने के प्रयत्न सरकार के साथ किये जायें।

(२. — बिहारस्थ माहुरी तथा सर्व वैश्यों का एक शीर्षस्थ महा संघ बनाने का प्रयत्न किया जावे।

(३)—प्रतिवर्ष मथुरासिनी देवी का एक मेला लगाया जाया करे।

(४)—एक गोष्ठी जाति की औद्योगिक प्रगति में मार्ग दर्शन हेतु की गई और हर उत्सव पर ऐसी गोष्ठियां करने का निश्चय किया गया।

इस अवधि में महामण्डल द्वारा १६२ विद्यार्थियों की सहायता शिक्षार्जन में दी गई और प्रचुर सहायता निराश्रितों तथा विधवाओं को दी गई।

स्थाई सभापति श्री कमलापति तरवे, श्री रामप्रसाद राम कुटरियार, सभापति श्री सदानन्द प्रसाद भदानी और मंत्री श्री सत्यनारायन राम तरवे पचम्बा चुने गये।

दो महत्वपूर्ण अधिवेशन ६९ वां एवं ७० वां १९८० व १९८१ में हुये। पहिला ग्राम चन्दौरी (गिरीडीह) में हुआ। और बाद वाला हुआ गिरीडीह में। सामूहिक व्यवसाय करने पर भी बल दिया गया।

(०२) माहुरी वैश्य महामंडल के अन्तर्गत ग्रामों की सूची—

(१) गिरीडीह मंडल (२) महेशलुन्डी मंडल, (३) पालगंज मंडल, (४) नाबाडीह मंडल (५) इसरी मंडल (६) परसाबाद मन्डल (७) कतरासगढ़ मन्डल (८) टाटानगर मन्डल (९) पचम्बा मण्डल (१०) लेदा (नगडी) मण्डल (११) भरकट्टा मण्डल (१२) कोयरीडीह मंडल (१३) बेंगाबाद मंडल (१४) गांडेय मण्डल (१५) खरगडीहा मंडल (१६) अहिल्यापुर मन्डल (१७ चन्दौरी मन्डल (१८) रेम्बा मन्डल (१९) कोडरमा मंडल (२०) पुरनाडीह मंडल (२१) डोरन्डा मंडल (२२) धुजी मंडल (२३) करम्बा मण्डल (२४) केन्दुआ करकेन्द-माहुरी युवक कल्याण समिति का गठन श्री काशी राम गुप्ता के निवास स्थान पर हुआ जिसके पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गये। (२५) माहुरी विकास समिति जमशेदपुर (२६) माहुरी शिक्षा न्यास

प्रधान श्री गुरुप्रसाद भदानी कोडारमा, मन्त्री श्री निखिल चन्द गुप्त झरिया। इनके पास एक लाख रुपये की स्थिर निधि है।

अध्याय ४ अ .०७ [ग]

बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल

पूर्वनाम बिछलवार माहुरी महामण्डल झाझा (बिहार)—आगरा-बाह अंचल के माथुर वैश्यों की तरह ही बिछलवार माहुरियों का एक गोत्र है। यह सम्भवतः बछलस का अपभ्रंश है। राजस्थान के महावरों में समकक्ष रूप से बचलम गोत्र है। बिछलवारों की आबादी मुख्यतः मुंगेर, भागलपुर, गया और धनबाद जिलों में ही है।

(०२) माह दिसम्बर ५९ को नगर नौला ग्राम में श्री दुखनराम जी के सभापतित्व में इस संगठन का श्रीगणेश हुआ। प्रधान-श्री धर्मलाल जी-निवासी झाझा (मुंगेर)। मन्त्री-श्री शिम्भूनाथ राम M.A, LLB निवासी ग्राम करकट्ठा, पोस्ट हरिहरपुर जिला धनबाद।

श्री धर्मपाल जी के स्वर्गवास के बाद बा. रामनारायन गुप्त एजेंट हि० क० बैंक (सुदामा सदन डोरान्डा-हिनू-रांची-२) इसके सभापति हुए। इनकी आबादी १०००० परिवारों की है। इनके खाते, अल्लें व गोत्र वही हैं जो पूर्व वर्णित दो महामण्डलों में संगठित माहुरी वैश्यों के हैं। पर इनसे रोटी-बोटी का व्यवहार नहीं होता था।

(०३) पिछली दशाब्दी में यह बिहार माहुरी वैश्य महामण्डल के नाम से संगठित हुये जब इनके युगपुरुष श्री बासुदेव प्रसाद रांची सुपरि० इन्जिनियर (विद्युत) ने रांची से आकर इस काम को अपने हाथ में लिया। दिनांक ४-११-७९ को प्रतिनिधियों की एक बैठक रांची में हुई जिसकी अध्यक्षता श्री शिम्भूनाथ राम (अब पर्सनल मैनेजर कोल फील्ड लिमिटेड मुगमा धनबाद) ने की।

श्री प्रसाद ने संक्षेप में 'माहुरी' शब्द के उद्भव के विषय में भी अपने विचार प्रकट किये। उन्होंने बताया कि प्राचीन उर्दू लेखों में माहुरी जाति के लिये महुरिया सौदागर शब्द का उल्लेख आया है। साधारण बोलचाले में भी माहुरी के लिये, महुरिया शब्द प्रचलित है। अगर हम तत्सम शब्दों-मौर्यं, मौर्या, मऊरिया,

महुरिया, माहुरी पर ध्यान दें तो ऐसा लगता है कि माहुरी मौर्य शब्द का ही अपभ्रन्श है। निश्चय ही इस विषय पर ऐतिहासिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

आज से कोई तेईस सौ वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्यवंश की स्थापना की। एक कुलीन मध्यवर्गीय परिवार में उत्पन्न चन्द्रगुप्त वीर पुरुष था जिसने अपने बाहुबल से बृहत्तर भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया। वह वैष्णव धर्मावलम्बी था और चाणक्य उसके कुल पुरोहित थे। यह गलत धारणा है कि चन्द्रगुप्त मौर्य दासी-पुत्र थे। इतिहासकारों ने साफ शब्दों में लिखा है कि मुरा (स्त्री०) शब्द से किसी भी प्रकार मौर्य शब्द का सृजन नहीं होता। अपितु महावन्शों पुस्तक के अनुसार चन्द्रगुप्त क्षत्रिय था। पाणिणी के अनुसार मौर्य गणपथ में एक चन्द्रगुप्त मौर्य गोत्र के रूप में आता है।

Note—Refer page 9 of the book "Chandragupta Maurya and his Times by Radha Kumud Mookerjee (2nd Edition) and page 146 of the book "History of Ancient India" by Dr. R S. Tripathi (2nd Edition)

यद्यपि मौर्य की राजधानी पाटलीपुत्र थी, उनका साम्राज्य विशाल था। इसी कुल में उत्पन्न अशोक सम्राट होने के पूर्व उज्जैन का गवर्नर था। इतिहास से यह भी पता चलता है कि मौर्य वंश के पतन होने पर इसके वंशज पश्चिम की ओर भागे थे। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया परन्तु उसमें धार्मिक सहिष्णुता थी और यह आवश्यक नहीं कि सभी मौर्य वंश धर्म परिवर्तन कर लिये थे। सच तो यह है कि आदि शंकराचार्य के प्रादुर्भाव के बाद बौद्ध धर्म भारत से प्राय: लुप्त ही हो गया। बौद्ध धर्म से हिन्दू धर्म में पुनः प्रवेश के पश्चात् लोगों की जातियां निश्चित की गयीं। इस प्रकार क्षत्रिय-मौर्य वैश्य-मौर्य बने। कुछ माहुरी परिवारों में अभी भी मौर्यकालीन सिक्के सुरक्षित हैं जो माहुरियों की मौर्यवंशी होने की बात सिद्ध करते हैं। (हम से सम्पर्क होने के बाद श्री प्रसाद ने अपने उक्त विचार अब त्याग दिये है-संपादक)

माहुरी जो मुख्यत: तीन गुटों में विभाजित हैं, वास्तव में एक ही हैं। संरक्षक निम्न प्रकार चुने गये थे—

(१) श्री हीरालाल साव, परैया (२) श्री रामनारायण गुप्ता रांची

(३) श्री रामेश्वर राम, करकट्टा और (४) श्री जगदीश प्रसाद

अध्यक्ष—श्री काशीनाथ राम, पावापुर, पो० सिहडीह (धनवाद)।

उपाध्यक्ष-श्री विष्णु राम वित्त पदाधिकारी, रांची बिहार विश्व-विद्यालय रांची (बिहार)। मंत्री : श्री वासुदेव प्रसाद विद्युत अभियन्ता थर्मल पावर स्टेशन, पतरातू जिला हजारी बाग, (बिहार)।

(०४) इनका द्वितीय अधिवेशन मार्च ८१ को झाझा नगर में श्री कमलापति राम तरवे स्थायी-सभापति हजारीबाग माहुरी महा-मण्डल के उद्घाटन भाषण से प्रारम्भ हुआ। मुख्य अतिथि थे डा० केदारराम गुप्त, भागलपुर। इसके स्वागताध्यक्ष थे डा० राजेन्द्र प्रसाद भदानी M.B.B.S नगरनौसा वाले।

अध्याय ४ अ .०७ ग

सब माहुरियों के एकीकरण का महायज्ञ

(०१) एकीकरण महायज्ञ का सूत्रपात

१९६६ में नवोदित माहुरी-मयंक के ५ वर्ष के प्रयत्न से तीनों महामंडलों के जनता जनार्दन का एक विशाल प्रतिनिधि सम्मेलन गणेश धर्मशाला वारिसअलीगंज में माह दिसम्बर ६८ को श्री गुरुप्रसाद राम जी के सभापतित्व में हुआ। इसमें १३७ प्रतिनिधि उपस्थित थे। निश्चय हुआ कि एक सर्वोच्च स्तर का माहुरी मंडल कार्य करे। इसके निम्न एडहाक पदाधिकारी वहीं चुने गये।

संरक्षक—श्री छट्ठूराम भदानी। मंत्री श्री पूर्णानन्द तरवे परन्तु यह परीक्षण अधिक दिन नहीं चला।

(०७) एकीकरण यज्ञ का १९७९ में उपसंहार हुआ जब तीनों महामंडलों के कार्यों में एकरूपता एवं प्रगाढ़ सम्बन्ध स्थापित करने के लिये झुमरी तिलैया (कोडरमा) में दोनों समिति की बैठक श्री कमलपति राम के सभापति पद लेने से प्रारम्भ हुई।

१—सभी के निर्विरोध चयन के बाद इस समिति के पदाधिकारियों का चयन नीचे लिखे के मुताबिक किया गया :—

अध्यक्ष :—श्री सदानन्द प्रसाद भदानी; मन्त्रि :—श्री बनमाली राम।

इस महामन्डल का निम्नलिखित उद्देश्य सर्व सम्मति से निर्णय किया गया। (१)-सभी माहुरी संगठनों का सर्वाङ्गिण विकास। (२)-राष्ट्रीय स्तर पर समान सजातीय संगठनों से सम्पर्क।

इस संस्था का प्रथम वार्षिकोत्सव दिस० ८० को झुमरी तिलैया में हुआ। तीनों महामन्डलों के प्रतिनिधियों सहित नई कार्य कारिणी बनाई गई।

अध्याय ४अ .०७ [घ]

पंजाब के महाजन वैश्यों के संगठन

जम्मू काश्मीर एवं पंजाब क्षेत्र में कार्यरत् इस संगठन की स्थापना सन १८९२ में स्व० लाला हंसराज जी एडवोकेट जम्मू ने की थी। सन १९६६ में लुधियाना में एक कांफ्रेंस हुई जिसमें पदाधिकारी निम्न प्रकार थे। संरक्षक:—श्री डा० मेहरचन्द महाजन चीफजस्टिस सुप्रीम कोर्ट। २-प्रधान:—महाशय कर्मचन्द महाजन वकील ३-मन्त्री:—श्री रामचन्द्र महाजन एम० ए० राजकीय कन्ट्रेक्टर जम्मू। इन तीनों ने ३७ उप प्रधान, तथा ५ क्षेत्रों (दिल्ली, यू०पी, पंजाब, हिमाचल और जम्मू से) लगभग १७ क्षेत्रीय मंत्री नामजद किये थे। इनकी दो पत्रिकायें (१)-महाजन समाचार और

(२)–'महाजन शिरोमणि सभा' नाम से निकलती हैं। जिनके सम्पादक क्रमशः हैं : श्री रामचन्द्र महाजन एवं मास्टर सांझी राम, बी०ए०। यह दोनों सज्जन दिल्ली के ही हैं।

(०२)—अक्टूबर सन ६७ में हुई दिल्ली के इनके ४७ वें वार्षिकोत्सव में कुमारी सुदेश महाजन ने स्वागत गान में एक कविता पढ़ी. उसके दो दोहे यों हैं—

भामेशाह बांगू चिन्ह जापदे ने,
प्रताप बांग खतरा तेरे इमान तू नहीं।
राणे बांग एहदा प्रताप दिसे,
हर ख्याल एहदां ऊंची शान वाला।

[यहां भामाशाह का उल्लेख है। पंजाब में वे खत्रियों से पृथक हैं और नाम के आगे गुप्ता लगाते हैं]।

(०३) महाजन जाति का इतिहास लाला देवी चन्द जी सथोई वर्तमान जवाली कांगडा ने तैयार किया है। एक महाजन डायरेक्ट्री भी तैयार की गई है। एक प्रान्तीय सम्मेलन १९६६ में चम्बा जिला-कांगडा में हुआ था। लगभग १५० स्थानीय संस्थायें शिरोमणि सभा से सम्बन्धित हैं। जिनके मुख्य स्थान निम्न प्रकार हैं।

(१)–शिमला (२) मण्डी (३) गोहर (४) पांगणां (५)-करसोग जिला मण्डी (६) तत्तापानी (७) सोना मण्डी (८) आरकी (जिला-महासू) (९) बिलासपुर (१०) सुन्दरनगर (मन्डी) (११) घनोन महासू (१२) घन्नापटी (हिमाचल) (१३) घी (महासू) (१४) घियारगी (मण्डी) (१५) सधोट मण्डी (१६) रवालसर (मन्डी) (१७)-थौना (मण्डी) (१८) रामशहर (शिमला) (१९) अलसडी (शिमला) (२०) नालागढ़ (शिमला) (२१) पट्टी (महासू) (२२) सूरिज पखवाड़ा (मन्ड़ी) (२३) ज्योट (मण्डी) (२४) भाम्भला (मन्डी) (२) जनपद सभा मन्ड़ी।

सभा विद्यार्थियों और छोटे व्यापारियों दोनों को ऋण देती है। वृद्ध पुरुषों तथा विधवाओं को भी सहायता दी जाती है। जम्मू, अमृतसर, अखनूर, कृष्णनगर दिल्ली और पठानकोट में इस सभा के महाजन भवन हैं।

०४)—विशिष्ट पुरुषः—

श्री मेहरचन्द जी महाजन—विभाजित भारत में लाहौर हाई कोर्ट के जज थे। सन १९४७ में जम्मू–काश्मीर स्टेट के प्रधान मंत्री बने। काश्मीर राज्य का भारत में विलयन कराने में उनका मुख्य हाथ था। स्वतन्त्र भारत में पहिले जज फिर सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश होकर रिटायर्ड हुये।

आर्य समाज जगत में प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी, और टंकारा के ऋषि निर्वाण ट्रस्ट के वे वरसों प्रधान रहे। २–श्री रामचन्द्र महाजन : आर्य समाज के शुद्धि आन्दोलन में उनका बलिदान हुआ था।

३—श्री विक्रम महाजन : जस्टिस मेहरचन्द महाजन के सुपुत्र। पहिले जज और अब १९८२ में केन्द्रीय सरकार में ऊर्जा राज्य मंत्री रहे।

—: ० :—



अध्याय ४ अ. ०८

वृहतर संगठन की ओर

अनेकता में एकता, यह संसृति से संस्कृति का उपक्रम रहा है। सर हर्बर्ट रिजले ने लिखा है कि हिन्दुओं में एक जाति से फट कर दूसरी स्वतंत्र जाति सदा बनती रही है। यह दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति है। अतः देश के हर शुभ चिन्तक ने इस प्रवाह को उलटने का प्रयत्न किया है। स्व० बाबू चन्द्र शेखर एडवोकेट एवं प्रो० गुलाबराय जी ने यह प्रयत्न किया था। महावर वैश्यों ने १९३९ में यू० पी० कमेटी बनाकर जांच की थी। सन् १९५५ में मुरादाबाद के शान्ति स्वरूप गुप्त तथा १९५७ में हरी नारायन गुप्त ने यह प्रयत्न किया फिर १९५७ में माहौर वैश्य महासभा ने एक उपसमिति बनाकर इसका संयोजन मुझे सौंपा कि संगठन महायज्ञ आयोजित हो।

सर्वप्रथम एक भ्रमण पत्रिका सन् १९५७ में, २००० छपवा कर माहुरी मयंक, माथुर-वैश्य-हितैषी, कानपुर, 'माहौर-मित्र एटा, माहौर-सन्देश ग्वालियर, माथुर वैश्य-सन्देश कानपुर में उद्धृत कराके सब वर्गों में वितरित की, उसके उत्तर में सब वर्गों के चिन्तकों से समर्थन के पत्र आये। अपने-२ समाचार पत्रों में भी लोगों ने लेख लिखे। इनमें बा० शिवनरायन गुप्त कलकत्ता एवं श्री बहादुर सिंह तत्कालीन एम० एल० ए० धौलपुर, श्री जगराम गुप्त, प्रो० हरप्रसाद मैया जी (मथुरिया वर्ग से), श्री मदनलाल गुप्त (महावर वर्ग से), श्री शिव प्रसाद लोहानी, श्री जनकदेव आर्य तथा भूषण राम (माहुरी वर्ग) से थे।

०२—प्रारम्भिक प्रयत्न-मेरी योजना यह थी कि सब वर्गों की शिरोमणि सभाओं के प्रधानों के हस्ताक्षर से एक निमन्त्रण पत्र सब वर्गों के प्रमुख व्यक्तियों को एक कांफ्रेंस में दिल्ली पधार कर इस विषय पर विचार करने को भेजा जावे। कान्फ्रेंस की स्वागत समिति पर हर वर्ग की शिरोमणि सभा से उनके दिल्ली निवासी घटकों में से, दो नाम मांगे जावें तथा २०-३० नाम उनसे अपने-२ वर्ग के विशिष्ट पुरुषों के इस कान्फ्रेन्स पर प्रतिनिधित्व करने के लिये मांगे जावें।

इस प्रकार एक स्वागत समिति बन गई। प्रधान श्री मदन लाल गुप्त महावर वर्ग, उप प्रधान श्री दीन दयाल सोनी माथुर वर्ग तथा मैं [स्वयं प्रधान मंत्री माहौर वर्ग]। स्वागत समिति की बैठकें दिल्ली में प्रो० रामसरन एम० पी० (मथुरिया वर्ग) की कोठी पर होती रहीं। स्वागत समिति ने प्रस्तावित संघ के विधान की एक रूप रेखा भी कान्फ्रेंस पर विचारार्थ बनाई।

(.०३) जनवरी ६४ में ग्वारे माहौर वैश्य महासभा ने संघ निर्माण हेतु बुलाये जाने वाले सम्मेलन का व्यय भार वहन करने का निश्चय किया।

इस प्रकार ९, १० मई १९६४ को अचल हाल आगरा में सम्मेलन श्री शिवप्रसाद लोहानी एम० ए० सम्पादक माहुरी मयंक के सभापतित्व में हुआ। अलवर, जयपुर, दिल्ली, ग्वालियर, मुरैना, एटा, बदायूं, अलीगढ़, अतरौली, फीरोजाबाद, पटना, गया, गिरीडीह, झरिया, कोडरमा, कबूलपुर आदि स्थानों से प्रतिनिधि आये थे। यह निश्चित हुआ कि संघ का निर्माण किया जावे। वहीं पर संस्था का प्रस्तावित विधान पास किया गया। संघ का नाम माहौर-माथुर वैश्य संघ रखा गया जिसमें माहौर शब्द प्राचीनतम तथा माथुर नवीनतम है। विधान की मुख्य बातें यह थीं कि पांच वर्गों की आठ शिरोमणि सभाओं को बराबर प्रतिनिधित्व दिया जाय। संघ का विधान संघीय पद्धति पर बना और यह निश्चय किया गया कि संघ के निर्णयों की भाषा सिफारिश की होगी और उन पर शिरोमणि सभायें तभी अमल करेंगी जब वे उनको अपने यहां भी पारित कर लें। डा० हरीनरायन गुप्त एम० डी० रिटायर्ड सिविल सर्जन संघ के प्रधान तथा मैं प्रधान मंत्री चुना गया। उत्सव के अन्त वाली रात्रि को बाद-विसैंरा (माथुर) वर्ग की ओर से उनकी ताजगंज स्थित जातीय धर्मशाला में शानदार दावत दी गई और दूसरे दिन नये प्रधान जी ने अपनी कोठी पर चाय पार्टी दी। इस प्रकार संघ निमित हो गया।

प्रथम अन्तरङ्ग की कार्यवाही-प्रो० हरप्रसाद मैय्या जी एम० ए० की कोठी पर अलीगढ़ में २६ जुलाई ६४ को हुई। यहीं इन वर्गों के राजनीति में रत् सर्व श्री रघुनन्दन राम एम० एल० ए० गिरीडीह (माहुरी वर्ग), श्रीमती पारवती देवी एम० एस० सी० गया तथा श्री काशीराम गुप्त एम० पी०, श्री चन्द्रभानु गुप्त मुख्य-मंत्री उत्तर प्रदेश, श्रीमती गङ्गा डाटा भूतपूर्व एम० एल० ए० अलवर, बा० बद्रीप्रसाद गुप्त भू० उद्योग मंत्री राजस्थान, श्री मन्साराम एम० एल० ए० शिकोहाबाद, श्री राममूर्ति जी मिनिस्टर यू० पी०, श्री शिवचरन जी गुप्त भूत० डिप्टी मिनिस्टर दिल्ली राज्य, श्रीहोतीलालदास एम० एल० ए० एटा, श्री राममूर्ति जी अध्यक्ष जिला परिषद पीलीभीत, श्री बा० रामचन्द्र गुप्त एम० पी० आगरा, बा० शिव प्रसाद गुप्त मिनिस्टर लखनऊ, डा० प्रकाश नारायण गुप्त डिप्टी मेअर आगरा, बा० बहादुरसिंह एम० एल० ए० धौलपुर तथा प्रो० रामशरण जी एम० पी० मुरादाबाद प्रभृति १९ जातीय विधायकों की अनौपचारिक कान्फ्रेंस बुलाने का आदेश प्रधान जी को दिया गया।

इसमें श्री निरंजन लाल गौतम (दिल्ली, मथुरिया वर्ग) का आया पत्र पढ़ा गया जिसमें उन्होंने संघ का नाम अग्रवाल वैश्य रखने का सुझाव दिया था, परन्तु उससे कोई सहमत नहीं हुआ।

दूसरी अन्तरङ्ग बैठक लाला काशीराम गुप्त एम० पी० के दिल्ली निवास स्थान पर दिसम्बर ६४ में हुई।

अंतरग की तृतीय बैठक मार्च ६५ को फिरोजाबाद में संघ के उप प्रधान बा० बालकृष्ण गुप्त (माहौर वर्ग) की कोठी पर हुई। यहां विधान में यह संशोधन आगामी उत्सव पर पेश करना तय हुआ कि जिन वर्गों की शिरोमणि सभाएं सुप्त हैं या अभी संघ प्रवेश निश्चय नहीं किये हैं, उनमें संघ-निष्ठ लोगों को व्यक्तिगत रूप से संघ का सदस्य बनाया जा सकेगा। यह भी निश्चित हुआ कि संघ को अखिल भारतीय वैश्य महासभा से सम्बन्धित करा लिया जाये। उसके लिये डा० प्रकाश नारायन गुप्त प्रतिनिधि चुने गये।

संघ का प्रथम वार्षिकोत्सव अलवर में १२, १३ जून ६५ को हुआ। दिल्ली के महावर बन्धु एक पूरी बस गाड़ी लेकर पहुंचे थे। एक नियमित स्वागत समिति बनी जिसके अध्यक्ष थे श्री श्यामलाल जी मानेठरिया जयपुर और मंत्री थे डा० शान्ति स्वरूप डाटा। महावर छात्रावास के विशाल प्रांगण में यह उत्सव सम्पन्न हुआ। कोई १००० व्यक्ति उपस्थित थे। झरिया, इस्लामपुर, कलकत्ता, रामपुर, बम्बई, आसाम, आगरा, दिल्ली, जयपुर, बरेली, अजमेर, भिण्ड, मुरैना, एटा, फीरोजाबाद इत्यादि से प्रतिनिधि आये थे। निम्न निश्चय किये गये :- (१) श्री राम औतार गुप्त के सुझाव पर सब वर्गों में खोज करके माहौर वैश्यों का इतिहास प्रकाशित करने के लिये एक उप समिति बनाई गई। (२) सब वर्ग विवाह सम्बन्ध जहां तक हो अपने वर्ग ही में करें। पर यदि कोई सज्जन किन्हीं श्रेष्ठ कारणों से वर्ग के बाहर विवाहादि सम्बन्ध करना ही चाहें तो उन्हें चाहिये कि सदस्य वर्गों ही में करें। शासन से बल पूर्वक मांग की गई कि वैश्य वर्ग को व्यापार से वंचित न किया जाये। आपद धर्म के रूप में विधवाओं के विवाह की आज्ञा देने की अपील की गई। अगले सत्र हेतु वहां प्रधान—डा० शान्ति स्वरूप डाटा रघुमार्ग अलवर, प्रधान मंत्री डा० प्रकाश नारायन गुप्त, आगरा चुने गये।

इस उत्सव पर ८१२२) एकत्रित हुआ था और ७१३४) व्यय हुआ और शेष धन ९८८) संघ का बचा जो डाटा जी के पास जमा रहा। अपनी पत्रिका ने एक उत्सव विशेषांक भी निकाला।

दूसरे सत्र की पहली बैठक मुरैना (मध्य प्रदेश) में ग्वारे बन्धुओं के स्नेह पूर्ण आतिथ्य में २५-७-६५ को हुई। सायं काल एक सार्वजनिक बैठक सब वर्गों की सम्मिलित हुई जिसमें २०० व्यक्ति उपस्थित थे। इसके प्रधान थे श्री बहादुर सिंह जी एम. एल. ए. धौलपुर।

जुलाई ६५ में आगरा में एक बैठक इतिहास उप समिति की मास्टर राम छबीले राम एम० ए० (मथुरिया वर्ग) के निवास पर हुई, जिसमें मथुरिया वर्ग का इतिहास संकलित किया गया और एक डेपूटेशन गुजरात भेजने का निश्चय हुआ।

नवम्बर ६५ में गिरीडीह (बिहार) में श्री उमाचरनलाल तरवे की कोठी पर अन्तरङ्ग की द्वितीय बैठक हुई। अलवर, जयपुर, कलकत्ता, इत्यादि से सदस्य आये थे। यहां सब वर्गों के संस्कार निश्चित करने के लिये एक उपसमिति बनाई गई। रात्रि में एक सार्वजनिक बैठक बा० रघुनन्दन राम एम० एल० ए० के सभापतित्व में हुई जिसमें २५० के लगभग उपस्थिति थी। इसमें संघ प्रधान, संघ उप प्रधान लाला काशीराम, बा० रामनारायन गुप्त बी० काम० रांची (प्रधान बिछलवार शिरोमणि सभा), श्रीमती गङ्गा डाटा विधायक अलवर, प्रिंसिपल रामलखन राम एम० एस० सी० (माहुरी वर्ग) बा० हरीराम गुप्त कमिश्नर सेल्स टैक्स रांची (माहुरी वर्ग), बा० शादीलाल गुप्त (महावर वर्ग) जयपुर ने ओजस्वी वक्तृतायें दीं। अतिथि लोग बाद में पावापुरी, राजगिरि, नालन्दा घूमते हुए गया पहुंचे। मार्ग में पदाधिकारी कोडरमा में श्री छट्टू राम भदानी प्रधान मा० वै० म० से मिले और उन्होंने संघ आन्दोलन की सफलता का आशीर्वाद दिया।

नवम्बर में ही कलकत्ता नगर के सब वर्गों की सार्वजनिक बैठक ला० दाताराम पारोलिया (माथुर वर्ग) की कोठी पर हुई जिसमें १५० व्यक्ति उपस्थित थे। वहां दूसरी सम्पर्क बैठक १३ फरवरी ६६ को श्री ताराचन्द बिंदावाला (महावर वर्ग) की कोठी में बा० शिवनारायन गुप्ता भूतपूर्व प्रधान माथुर वैश्य महासभा के सभापतित्व में हुई। तीसरी बैठक दिनांक मार्च ६६ को ला. मातादीन गुप्त की कोठी नं० ३ बैकुण्ठसेन लेन कलकत्ता-७ (प्रधान माथुर वैश्य जनहित परिषद कलकत्ता) के यहां ला० किशोरीलाल घातरिया के सभापतित्व में हुई। श्री सन्तशरण माहुरी बी० काम० तथा ताराचन्द महावर को संयोजक चुना गया। इसकी दूसरी मीटिंग ४-१२-६६ को हुई जिसके सभापति बिहार के श्री रघुनन्दन राम माहुरी थे।

इस सत्र की तीसरी अन्तरङ्ग बैठक २५ जनवरी ६६ को डा० शिवचरण गुप्त एम० पी० (माहौर वर्ग) की कोठी ५० दरियागंज दिल्ली में हुई इसमें एक डेलीगेशन श्री उमाचरन लाल तरवे के नेतृत्व मे गिरीडीह से तथा दूसरा बा० बुद्धदेव गुप्त एडवोकेट के नेतृत्व में मुरादाबाद से आया था। निश्चय हुआ कि स्थान स्थान पर शाखाएं बनाई जायें। दूसरे दिन आर्य समाज दीवान हाल में सब वर्गों के ५०० व्यक्ति उपस्थित थे। प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता डा० भगवानदास माहौर (पी० एच० डी०) (ग्वारे माहौर वैश्य) झांसी सभापति थे और बा० शिवचरण गुप्ता स्वागताध्यक्ष। बैठक में संघ प्रधान, प्रधान मंत्री, प्रकाशन मंत्री, लाला काशीराम एम० पी०, श्री निरंजनलाल गौतम मंत्री अ० स० हि० सभा (मथुरिया वर्ग), डा० मुरारीलाल (माथुर रामपुर) श्रीमती गङ्गादेवी डाटा, श्रीमती शांतीदेवी गुप्ता (माथुर वर्ग) शिकोहाबाद, के व्याख्यान संघ की सराहना या समर्थन में हुये। श्री भगवान दास जी माहौर का

सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया। सत्र की चौथी अन्तरङ्ग बैठक दिनांक १४-८-६६ को इलाहाबाद शाखा के निमन्त्रण पर डा० मुरलीधर गुप्त बी० ए० की बाई के बाग स्थित शान्ति निवास में हुई, इसमें स्थानीय शाखाओं के लिये आदर्श विधान पास किये गये।

सायंकाल सब वर्गों की एक सम्मिलित बैठक बा० चन्द्रप्रकाश गुप्त (प्रोपराईटर मैजेस्टिक होटल मेस्टन रोड कानपुर) के सभापतित्व में हुई। इसका उद्‌घाटन ला० काशीराम गुप्त ने किया। वहां श्री रामदीन गुप्त का संघ समर्थन में ओजस्वी भाषण हुआ। इसके स्वागताध्यक्ष बाद—विसेरा माथुर ग्रुप के (अब स्वर्गीय) लाला बांके लाल गुप्त थे। अगली सार्वजनिक बैठक बरेली में ३०-१०-६६ को डा० मुरारीलाल गुप्त एम० बी० बी० एस० रामपुर (मथुरिया वर्ग) के सभापतित्व में माहौर मन्दिर रोहली टोला बरेली में हुई। इसके स्वागताध्यक्ष श्री व्रजभूषण लाल गुप्त (चैयरमैन नगरपालिका बरेली और बाद में लोक सभा के सदस्य) थे। यहां सब उपवर्गों के व्यक्तियों ने अपने अपने रीति रिवाज विस्तार से बताये और उनमें सामन्जस्य पाया गया। इसके बाद दो सार्वजनिक बैठके ग्वालियर और आगरा में अप्रैल एवं दिसम्बर ६७ को सम्पन्न हुई।

(०४)—अगला वार्षिक अधिवेशन श्री दयानन्द गुप्त स्वागताध्यक्ष के प्रबन्ध में दिनांक १९ मई ६७ को दयानन्द गर्ल्स कालेज मुरादाबाद में प्रिन्सिपल वेदप्रकाश गुप्त एम० ए० के सभापतित्व में हुआ। इसका उद्‌घाटन बा० किरण प्रकाश गुप्त (उद्योगपति, माथुर वैश्य आगरा) ने किया था। मुरादाबाद के निश्चय निम्न प्रकार थे:—

(१) संघ का नाम बृहद माथुर वैश्य संघ बहुमत से पारित कर दिया गया।

(२) बिहार प्रान्तीय माहुरी वैश्य महासभा झरिया तथा माथुर वैश्य नवयुवक मण्डल (पूर्वनाम चौसेनी माहौर) मुरादाबाद को संघ में प्रविष्ट किया गया। (३)—संघस्थ उपवर्गों की शिक्षादि संस्थानों में सारे उपवर्गों को सुविधा देने की अपील की गई। यहां श्री दयानन्द गुप्त संघ के प्रधान एवं श्री राजाराम बांदिल मुरैना मंत्री चुने गये। पर नाम बदलने की भीषण प्रतिक्रिया हुई कि महावर एवं माहुरी वर्ग के कार्य कर्त्ताओं ने संघ से अपना हाथ खींच लिया और जब १-६-६९ को प्रो० हरप्रसाद मैय्या जी की कोठी पर अलीगढ़ में कार्यकारिणी की बैठक हुई तो वे नहीं आगे। फिर ४-९-६९ को कानपुर में कार्यकारिणी को बैठक लाला किशन नारायण की कोठी पर हुई उसमें परिवर्तित विधान भी पास किया गया। पर इन दो वर्गों की प्रतिक्रिया पूर्ववत ही रही।

(०५) तदन्तर सितम्बर ७० व ७२ में आगरा में कार्यकारिणी की बैठकें विद्या भवन में हुई। और सन ७२ वाली बैठक में संघ का नाम फिर पूर्ववत कर दिया गया।

(०६) सन ७९ में पिछड़ा वर्ग कमीशन स्थापित होने पर मैंने उरुतन्त्र पत्रिका का एक अंक निकाला और उसमें कार्य कर्त्ताओं का मत जानना चाहा कि क्या कमीशन के समक्ष कोई प्रतिवेदन संघ की ओर से दिया जाए क्योंकि माहुरी बन्धु बिहार में अपने को पिछड़ा वर्ग घोषित कराने में सफल हो चुके थे। तदन्तर जून २६-१-८० को श्री शिवचरन गुप्त एम० पी० की कोठी पर फिर सारे देश के कार्यकर्त्ता उपस्थित हुए। इसका सभापतित्व श्री ओम प्रकाश गुप्त डिप्टी चीफ इन्जीनियर रेलवे [ग्वारे माहौर वर्ग] ने किया था। बिहार से बड़ी संख्या में प्रतिनिधि आये थे। इस बार यहां संघ का एकात्मक (UNITARY) विधान फिर पास किया गया। श्री सदानन्दप्रसाद भदानी माइका मैगनेट (झुमरी तिलैय्या) इसके प्रधान तथा मैं महा-मंत्री चुना गया। यहां नाम माहौर (महावर, माहुरी, माथुर) वैश्य संघ कर दिया गया।

(०७) जुलाई अगस्त ८० से देशभर के व्यापी दौरे करने की योजना कार्यरूप में परिणित की गई। संघ प्रधान श्री सदानन्द प्रसाद भदानी (डायरैक्टर सी० एच० लिमिटेड झुमरी तिलैया) स्ववाहन से श्री शिवप्रसाद लोहनी जी, श्री बनमालीरामजी एवं विद्यालङ्कार जी के साथ बनारस पहुंचे। वहीं मैं इनसे आ मिला। पहिली गोष्ठी वहां माथुर वैश्य महासभा के प्रधान श्री कन्हैयालाल गुप्त की लंका मुहल्ला स्थित कोठी में हुई। तदन्तर यह काफिला इलाहाबाद, कानपुर गुरुसहाय गंज (श्री ओमप्रकाश गुप्त के आतिथ्य मे), फर्रुखाबाद (मिन्नी देवी माहौर धर्मशाला में), बरेली (महाशय रामधन की कोठी पर), बदायूं (बा. प्रभु प्रकाश एडवोकेट की कोठी पर), मुरादाबाद (श्री दयानन्द गुप्ता के एक विद्यालय में), अलीगढ़ (प्रो० हरप्रसाद मैय्या जी की कोठी पर), सिकन्दरा राऊ (श्री रामगोपाल गुप्त की कोठी पर), एटा (श्री सुरेन्द्र कुमार के ऊंचा गांव हाउस में), फीरोजाबाद (श्री बालकृष्ण गुप्त की कोठी पर), आगरा सघ उपप्रधान श्री प्रकाश नरायन गुप्त—डिप्टी मेयर व मनिस्टिर की कोठी पर, मथुरा में (श्री लक्ष्मण स्वरुप गुप्त रिटायर्ड चीफ इन्जीनियर रेलवे की कोठी पर), अलवर में (महावर छात्रावास में, तथा डा० शान्ति स्वरूप डाठा भूतपूर्व प्रधान अ० भा० संघ के आतिथ्य में); जयपुर में महावर क्षात्रावास में, मुरैना में (माहौर धर्मशाला मे), ग्वालियर में (माहौर मन्दिर में) तथा श्री रामजीदास गुप्त एडवोकेट उपप्रधान अ० भा० संघ के आतिथ्य में), विशाल सार्वजनिक बैठकें करते हुए इन सब जगह संघ की स्थानीय शाखाओं के बनाने में सफल हुये। मथुरा में संघ प्रधान ने जातीय इतिहास से सम्बद्ध स्थान 'माहौरी पौरि' मुहल्ला और उसी में स्थित मथुरासिनी देवी का मन्दिर देखा तथा आगरे में ताजगंज मुहल्ला में स्थित तुलसी चौरा (चबूतरा) जहां से लोग बिहार ३०० वर्ष पूर्व गये थे, भी देखा। झांसी में डा० भगवान दास माहौर की विधवा पत्नी से वे मिलने गये। इस दौरे में आगरा से श्री दाऊदयाल बांदिल (सहकारी मन्त्री अ० भा० संघ) तथा श्री देवलाल गुप्त भी साथ हो लिये थे।

सितम्बर ८० में मेरे (महामन्त्री) साथ संघ के उपप्रधान श्री राम अवतार आर्य, कार्यालय मन्त्री श्री लीलाराम गुप्त (सीनियर

इञ्जीनियर बी०एच०ई०एल०, हरद्वार शाखा के प्रधान श्री निरंजन लाल गुप्त (महावर वर्ग अब सीनियर मैनेजर बी०एच०इ०एल०) ने उत्तराखण्ड में रुडकी, डोईवाला देहरादून, डाकरा, पण्डित बाडी और विकासनगर का दौरा करके वहां भी शाखायें स्थापित कीं और इन क्षेत्रों में बसे महावर बन्धुओं में अखिल भारतीय महावर वैश्य संघ का १७ वां वार्षिकोत्सव करने की प्रेरणा जागृत की। इसकी बैठकों में भी लाला श्री राम डोईवाला तथा श्री दीनदयाल गुप्त देहरादून, हमारे साथ रहे और अपने नगर में आतिथ्य किया। १८ नवम्बर ८१ को मैंने कलकत्ता में जाकर वहां की शाखा को पुनर्जागृत किया। और बीस नवम्बर को पटना पहुंचा। वहां श्री शिवचरन गुप्त (भूतपूर्व सांसद) तथा श्री जय प्रकाश गुप्त (संघ कोषाध्यक्ष) दिल्ली से हवाई जहाज से पहुंच चुके थे। दिल्ली से श्री रामऔतार आर्य, लाला मोहन लाल तथा आगरे से श्री डिप्टीराम जी एवं हरिश्चन्द्र गुप्त भी आ गये थे। बिहार से माहुरी-मयंक के सम्पादक श्री शिवप्रसाद लोहनी जी तथा संघ प्रधान श्री सदानन्द प्रसाद भदानी। हम लोगों का मैसर्स सी० एच० लिमि० के वाहन में बिहार का दौरा करवाये। पटना, सिलाव, नालन्दा, वरविघा, गिरीडीह, गया, झुमरी तिलैया, कतरास गढ़, झरिया, बोकारो एवं रांची में सर्वत्र बडी सार्वजनिक बैठकें अत्यन्त उत्साह से हुई। गया में श्री पूर्णानन्द तरवे के आयोजन में वहां के माहुरी नवयुवक मण्डल ने एक सांस्कृतिक प्रोग्राम प्रस्तुत किया। कहीं हजारों और कहीं सैकडों की उपस्थिति थी। झरिया में स्वागत आतिथ्य श्री निखिलचन्द्र गुप्त, बोकारो स्टीलसिटी में प्रतिनिधि मन्डल का आतिथ्य मेरे छोटे भाई ओमप्रकाश देव गुप्त एकाउन्ट आफिसर बोकारो स्टील लि०, तथा फकीर चन्द राम एवं श्री डी०एन० गुप्त सुपरिनटिनडैन्ट ने किया। रांची की बैठक बिहार माहुरी वैश्य महामन्डल ने आयोजित की थी और उसमें उनके बिहार भर के प्रतिनिधि आये थे। उक्त सभी स्थानों पर संघ की शाखाएं गठित की गईं।

वहां से मैं सीधे जालन्धर पहुंचा। दिल्ली से श्री रामअवतार गुप्त तथा बी० एन० गुप्त हमारे साथ हो लिये थे। पंजाब में जालन्धर के अतिरिक्त फीरोजपुर कैन्ट, मन्डी गोविन्दगढ़ एवं अम्बाला में संघ की शाखाएं बनीं। इन सब स्थानों पर प्रायः महावर उपवर्ग के ही बन्धु हैं। संयोजक तथा मेजबान क्रमशः जालन्धर में श्री किशनलाल जी गुप्त, मण्डी गोविन्दगढ़ में सेठ सीता राम गुप्त तथा अम्बाला में श्री गिरधारी लाल जी थे।

दिसम्बर १९८० में मैंने श्री दाऊदयाल वांदिल तथा डा० प्रकाश नरायन गुप्त के साथ मथुरा, अलीगढ़, बबराला तथा अतरौली जि० अलीगढ में, गोष्ठियां कीं और संघ की शाखायें बनाईं। बबराला के संयोजक महाशय तोताराम जी थे। फिर मैं अकेला ग्यूली (एटा) तथा कासगंज, मीरानपुर कटरा (जिला–शाहजहांपुर) में संघ की शाखायें जाकर बना आया। मैनपुरी में डाक्टर प्रकाश नारायण गुप्त जी भी आ गये थे। वहां आतिथ्य श्री प्रमोद चन्द गुप्त भूतपूर्व चैयरमैन ने किया। बच्चों ने सांस्कृतिक प्रोग्राम भी प्रस्तुत किया।

जनवरी ८१ में सब उपवर्गों के मासिक पत्रों के सम्पादकों की गोष्ठी महावर भवन दिल्ली में हुई। गाजियाबाद, पीलीभीत व इटावा में संघ शाखायें गठित हुई। मैंने फरवरी ८१ में गंज डुण्डवारा (एटा), सिढपुरा (जिला एटा), लखनऊ तथा चण्डीगढ (पंजाब) में शाखायें गठित की। और इसके बाद हम आदरणीय बा० शिवप्रसाद गुप्त (प्रधान) माथुर वैश्य शिक्षा परिषद, आगरा तथा उपाध्यक्ष (उत्तर प्रदेश विधान परिषद) से समय प्राप्त करने में सफल हो गये। उनके दौरे निम्न प्रकार हुए।

अक्टूबर ८० को दिल्ली में मनाए गए स्मारक दिवस पर बा० शिवप्रसाद गुप्त आगरा (भूत पूर्व होम मिनिस्टर उ०प्र० माथुर वैश्य) संघ की विचार धारा के कायल होकर इस आन्दोलन में समय देने को कृत संकल्प हुए। यह बडे सन्तोष एवं गौरव की बात है।

(१)—उनका पहिला दौरा २३ अप्रैल ८१ को प्रारम्भ हुआ जिसमें उनके साथ में (महामन्त्री) लाला रामगोपाल गुप्त एवं किशन लाल गुप्त फर्रुखाबाद (अब क्रमशः प्रधान एवं मन्त्री अ० भा० माहौर वैश्य महासभा) श्री बांदिल जी तथा प्रो० हरप्रसाद भैंगरा जी (अलीगढ मथुरिया वैश्य) भी थे। इसके अर्न्तगत सार्वजनिक बैठकें हाथरस में (माहौर धर्मशाला) में श्री रमेश चन्द बर्तन वालों के आतिथ्य में, छर्रा (पंचायती धर्मशाला) में श्री सत्यप्रकाश आर्य के संयोजकत्व एवं श्री महेशचन्द्र गुप्त के आतिथ्य में हुई। स्व० चन्द्रभानु गुप्त पूर्व मुख्य मंत्री के भतीजे श्री जंगबीर सिंह गुप्त इसके सभापति थे। कासगंज में लाला दरबारी लाल गिलटवालों के आतिथ्य में, गंज डुण्डवारा में पीलीकोठी एवं डिग्री कालिज के प्रांगण में तथा डा० सुरेश चन्द गुप्त के आतिथ्य में, अलीगंज (जिला एटा) में माहौर धर्मशाला में श्री दिनेश चन्द्र गुप्त प्रवक्ता के आतिथ्य में तथा एटा में श्री दिनेशदास की कोठी पर तथा श्री आदित्य कुमार गुप्त के आतिथ्य और शिकोहाबाद में माहौर धर्म शाला में प्रिन्सिपल वेदप्रकाश माथुर के सभापतित्व में सोत्साह सार्वजनिक सभाएं हुईं और चारों नगरों में संघ की नई शाखाएं गठित हुई।

(२)—श्री शिवप्रसाद जी गुप्त ने ३० मई ८१ को मुरादाबाद में उत्तर प्रदेशीय माथुर वैश्य समाज (मथुरिया ग्रुप) के स्थापना सम्मेलन का उदघाटन किया और महामन्त्री ने शाहजहांपुर, तिलहर एवं हलद्वानी (नैनीताल) में संघ की शाखायें स्थापित की।

(३)—जुलाई ८१ में महामन्त्री ने डिवाई (जि० बुलन्दशहर) एवं उझानी में शाखाएं स्थापित की। (४)—बा० शिवप्रसाद गुप्त जी, महामंत्री, अ० भा० संघ उपप्रधान लाला मोहन लाल गुप्त दिल्ली, सेठ सीताराम गुप्त दिल्ली, लाला पन्नालाल गुप्त प्रधान अखिल भारतीय ग्वारें माहौर वैश्य महासभा तथा मंत्री श्री सीता राम गुप्त एडवोकेट ने राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा उ० प्र० का दौरा किया और वहां संघ की शाखायें स्थापित कीं।

सार्वजनिक बैठकें इस प्रकार हुई।

स्थान :-	मीटिंग स्थल -	आतिथ्यादि
१-धौलपुर	कोठी डा० बहादुर सिंह	(बा० शिवनारायन जी)
२-मुरैना	ग्वारें माहौर वैश्य धर्मशाला।	(श्री चोखाराम बांदिल)
३-डबरा	ग्वारें माहौर वैश्य भवन	(श्री गोपालदास मांडिल)
४-ग्वालियर	माथुर वैश्य धर्मशाला	(श्री पन्नालाल गुप्त प्रधान)
५-गोहद (भिन्ड)	ग्वारें माहौर मन्दिर	(श्री रामेश्वरदयालगुप्त एडवोकेट
६-इटावा	पंचयाती धर्मशाला	(श्री हरिशंकर गुप्त एडवोकेट)
७-जसवन्तनगर	आइल मिल	(माथुर वैश्य महासभा की शाखा)
८-एत्मादपुर	कोठी बा० हरप्रसाद गुप्त	(उन्हीं के द्वारा)

संघ के महामन्त्री ने दिनांक २२ अगस्त ८१ को जालन्धर सदर में श्री बनवारी लाल गुप्त के सभापतित्व में संघ की शाखा की बैठक श्री सुशील गुप्त के स्थान पर सम्पादित की। शाखा ने प्रस्ताव पारित किया कि पंजाब के महाजनों के बारे में ऐतिहासिक छानबीन की जावे क्योंकि वे अपने नाम के आगे गुप्त लगाते हैं और भामाशाह को अपना पूर्वज मानते हैं। अतः अखिल भारतीय महाजन शिरोमणि सभा के संरक्षक लाला ईश्वर महाजन बस्ती नू (आदर्शनगर) जालन्धर से महामन्त्री जी मिले जो कि स्पोर्ट के सामान के निर्माता तथा निर्यात कर्त्ता हैं। उन्होंने अपने समाज की पत्रिका महाजन समाचार के अंक दिये और एकीकरण में रुचि प्रगट की। महामन्त्री मण्डी गोविन्दगढ और फिरोजपुर केन्ट की पुरानी शाखाओं को पुनः जागृत करते हुये गाजियाबाद पहुंचे और वहां भी नई शाखा स्थापित की। सितम्बर ८१ में बा० शिवप्रसाद गुप्त एवं श्री राममूर्ति जी भूतपूर्व मिनिस्टर। बरेली के साथ महामन्त्री ने देवचरा, अलीगंज (बरेली), आँवला, रामपुर, तिलहर, तथा जलालाबाद, नवाबगंज, क्लटरबुकगज एवं मीरगज में सार्वजनिक बैठकें करके संघ की शाखायें स्थापित कीं। पुनः श्री शिवचरण गुप्त, श्री बालकृष्ण गुप्त उद्योगपति (फिरोजाबाद) डा० बहादुर सिंह (धौलपुर), श्री राम अवतार गुप्त एवं श्री सेठ सीताराम जी गुप्त (उद्योगपति मण्डी गोविन्द) को लेकर संघ के महामन्त्री निम्न नगरों में नीचे दर्शाये प्रोग्राम के अनुसार मीटिंग किये।

रैवाडी—दिनांक १६ सितम्बर : व्यवस्थापक श्री प्रेमस्वरुप डाटा। **खैरथल**—१७ सितम्बर : व्यवस्थापक रामविलास डाटा। **अलवर**—१८ सितम्बर : उद्घाटन कर्त्ता श्री बद्रीप्रसाद गुप्त एम० एल० ए० भूतपूर्व स्वशासन मिनिस्टर : सभापति डा० हरीराम गुप्ता **मालाखेडा**—१९ सितम्बर : प्रधान श्री शिवदयाल जी। आतिथेय फर्म रामेश्वर दयाल राजेन्द्र प्रसाद। **राजगढ**—१९ सितम्बर। व्यवस्थापक श्री जगदीश प्रसाद गुप्त। **बांदी कुई**—१९ सितम्बर प्रधान बाबू बाला बक्स जी गुप्त एड्वोकेट। **जयपुर**—दिनांक २० सितम्बर। स्थान-महावर छात्रावास दीपक रोड। सभापति-श्री रामकुमार माहौर। सयोजक श्री राजपाल गुप्त एम०ए०। आतिथेय—श्री बनवारी लाल गुप्त।

इन प्रयत्नों के फलस्वरुप संघ का १७ वां वार्षिकोत्सव दि० २१-२२ नवम्बर ८१ को रेलवे इन्स्टीटयूट हाल बरेली में सम्पन्न हुआ। इसमें कोई १२०० डेलीगेट सारे देश से आये थे। झंडारोहण श्री कमलपति राम तर्वे मिरीडीह वालों ने किया तथा मथुरासिनी देवी की पूजा भी दर्शकों का केन्द्रबिन्दु रही। अधिवेशन पर संघ का नाम अखिल भारतीय महाउरु वैश्यसघ कर दिया गया और उसका प्रवेश चौसैनी-माहौरों तथा पंजाबी महाजनों के लिये खोल दिया गया। विधान भी पूर्ण रुपेण संशोधित होकर अमेरिकन मॉडल का कर दिया गया। एक प्रस्ताव द्वारा भाईयों से अपील की गई कि वे अपने नाम के आगे गुप्त शब्द का ही प्रयोग करें, पर यह स्वतन्त्रता दी गई कि वे गुप्त शब्द के आगे या पीछे अपने उपवर्ग का नाम भी जोड सकते हैं।

यहां श्री सदानन्द प्रसाद भदानी पुनः प्रधान चुने गये और उन्होंने २१ मन्त्रियों तथा ३१ कार्यकारिणी सदस्यों को नामजद किया। महामन्त्री मैं ही बना रहा। श्री शिवप्रसाद गुप्त न्यायाधिकरण के प्रधान तथा ४ संरक्षक भी चुने गये।

प्रचारार्थ दौरे

वाराणसी—२ नवम्बर ८२। आतिथेय श्री प्रमोद चन्द्र गुप्त

पटना—दि० ३ नवम्बर ८२। सार्वजनिक सभा। आतिथेय एवं प्रधान श्री राधेश्याम प्रसाद एडवोकेट, महेन्द्र पटना। इसमें श्री समस्तीपुर के जिला जज श्री माहुरी जी भी पधारे थे।

बिहार शरीफ— दि० ४ नवम्बर। श्री शिवप्रसाद गुप्त आगरा का अभिभाषण, अध्यक्ष डा० सुरेशचन्द्र, संचालक प्रो० केदारराम गुप्त भागलपुर। एक प्रस्ताव पारित हुआ कि माहुरी वैश्य लोग उदासी सम्प्रदाय में हैं पर वे अकालियों द्वारा उठाये उस आन्दोलन का विरोध करते हैं जो उदासियों को सिक्खों का अंग मानकर सारी उदासी धार्मिक सम्पत्ति को प्रस्तावित अखिल भारतीय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के मातहत लेना चाहता है।

गया- दि० ५ नवम्बर। सार्वजनिक बैठक माहुरी भवन, पुरानी गोदाम गया। मथुरासिनी देवी के मन्दिर में पूजा, सार्वजनिक सभा के अध्यक्ष श्री पूर्णानन्द तर्वे।

झुमरी तिलैया— दि० ५ नवम्बर, बैठक स्थल—मैसर्स सी० ऐच० लिमिटेड प्राङ्गण। अध्यक्ष श्री मुरली मनोहर भदानी। उपस्थिति लगभग एक हजार।

गिरीडीह—दि० ६ नवम्बर, सार्वजनिक बैठक। प्रधान श्री कमलपतिराम तर्वे। वे ही आतिथेय थे। माहुरी छात्रावास में अभिनन्दन।

मिर्जापुर— दि० ७ नवम्बर—सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता श्री रामलखन राम ने की। आतिथेय श्री प्रभूदयाल गुप्त। संघ का जातीय गान श्री गणेश प्रसाद सुमन ने गाया।

झाझा—दि० ८ नवम्बर। सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता श्री काशीनाथ पांवापुर वालों ने की। संचालक डा० राजेन्द्र प्रसाद भदानी। यहां से डा० शिवप्रसाद गुप्त आगरा लौट गये तथा महामंत्री का दौरा चालू रहा। वैद्यनाथ धाम के दर्शन।

कतरास गढ़—दि० १० नवम्बर। सार्वजनिक सभा अध्यक्ष श्री काशीनाथ गुप्त, आतिथेय भी वहीं।

करकेंद—दि० ११ नवम्बर, यहां गोष्ठी हुई।

झरिया—दिनांक १२ नवम्बर, सार्वजनिक सभा के अध्यक्ष श्री जागोराम माहुरी

बोखारो स्टील सिटी—दि० १२ नवम्बर, आतिथेय श्री फकीर चन्द राम, आतिथेय अनिल कुमार गुप्ता।

कार्य कारिणी की एक आवश्यक बैठक

दिनांक—२७ जनवरी ८३ कार्यकारिणी की बैठक, स्थान डा० गांगिल का कचहरी घाट आगरा स्थित विद्या मन्दिर, सामयिक सभापति श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त (सेठ गली वाले)। यहां सिफारिश की गई कि जिन नगरों में केवल एक ही वर्ग के लोग रहते हों, वहां उस वर्ग के मंडल को ही संघ की शाखा मान लिया जावे। अन्यत्र संघ की शाखायें खुलती रहें। यहाँ महामन्त्री ने अपने ऊपर वैश्य महासम्मेलन का कार्य भार आ जाने से संघ के महामन्त्री पद से त्याग पत्र दे दिया और बांदिल जी महामन्त्री चुने गये। डा० वीरेन्द्र गांगिल को सयुक्त मन्त्री चुना गया। विवाह सम्बन्ध तय करने हेतु मथुरिया चौबों की तरह मनीआर्डर प्रथा अपनाने की सिफारिश की गई।

मध्य प्रदेश के दौरे

मुरैना—सरक्षक की हैसियत से मैं तथा नये महामन्त्री मुरैना में दि० ३० जनवरी ८३ को पहुंचे। माहौर वैश्य वाचनालय में गोष्ठी। आतिथेय श्री बाबूलाल गुप्त एडवोकेट, सार्वजनिक सभा की अध्यक्षता श्री विद्याराम गुप्त एडवोकेट द्वारा।

डबरा—दि० ३१ जनवरी, आतिथेय श्री गोपाल दास गोयल।

लश्कर—दि० ३१ जनवरी, बैठक स्थल—माहौर मन्दिर; संयोजक श्री गप्पूलाल बांदिल, आतिथेय श्री बाबूलाल सर्राफ।

जयपुर—दि० १२ मार्च ८३, संगठन मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र गुप्त का दौरा। गोष्ठी स्थान गोलीमार गार्डन स्थित श्री प्रकाश चन्द्र गुप्त का परिसर।

छर्रा (जिला-अलीगढ)—दि० १८-३-८३ आतिथेय श्री महेश चन्द्र गुप्त।

कासगंज—दि० १९ मार्च ८३ [संगठन मन्त्री द्वारा ही]

बदायूं—दि० २० मार्च, आतिथेय श्री लज्जाराम सर्राफ आतिथेय बा० प्रभूप्रकाश गुप्त एडवोकेट।

सिकन्दराराऊ (अलीगढ़)—दि० २४-४-८३ द्वारा संरक्षक महाउप वैश्य संघ डा० रामेश्वर दयाल गुप्त। आतिथेय श्री रामगोपाल गुप्त।

छर्रा (अलीगढ़)—दि० २४ अप्रैल। आतिथेय सत्यप्रकाश आर्य।

अतरौली (अलीगढ़)—दि० २६ अप्रैल। आतिथेय श्री हरी मोहन गुप्ता।

मुरादाबाद—दि० १८ मई। माथुर वैश्य महासभा के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

अमरोहा—दि० १९ मई। आतिथेय खजान्ची जी।

सैय्यद नगली—दि० २९ मई। अध्यक्षता—नन्दकिशोर गुप्त।

हसनपुर—दि० १८ मई। मीटिंग स्थल-माथुर वैश्य धर्मशाला। अध्यक्षता—श्री साहू शिवकुमार गुप्त। प्रतिनिधि मण्डल में, श्री सत्य पाल गुप्त (अब स्वर्गीय) बरेली तथा दयाशंकर गुप्त जी भी थे।

कासगंज—दि० २३ मई। संघ की कासगंज शाखा का पुनर्गठन। आतिथेय श्री कुंवर महाराज गुप्त।

गंजडंडवारा (एटा)—दि० २४ मई।

सिढ़पुरा (एटा)—दि० २६ मई। आतिथेय ला० शंकरलाल गुप्त बजाज।

अमाँपुर (एटा)—दि० २५ मई माहौर धर्मशाला का प्रकरण। आतिथेय श्री सुनहरीलाल गुप्त।

एटा—दि० २६ मई। सम्पादक माहौर मित्र से भेंट। संघ शाखा का पुनर्गठन।

नगला बीच (आगरा) दि० २७ मई। पिछले क्षेत्रीय सम्मेलन का हिसाब। आन्तरिक मतभेद तथा मुकद्दमा बाजी हल करना।

टूंडला (आगरा)—२८ मई। सार्वजनिक मीटिंग तथा शाखा की स्थापना। आतिथेय (अब स्वर्गीय) श्री शंकर लाल गुप्त।

एत्मादपुर (आगरा)—दि० २९ मई। संघ शाखा का पुनर्जागरण। स्थान ग्वार्रे माहौर वैश्यों का गंगा मन्दिर। आतिथेय श्री घूरेलाल गुप्त।

आगरा—दि० २९ मई। आगरा संघ शाखा की बैठक तथा वादविसैरा वर्ग की शिरोमणि सभा के बारे में निर्णय।

महामंत्री श्री वांदिल जी का गुजरात व राजस्थान प्रान्त का दौरा

महसाना—दि० २० अप्रैल ८३। ग्वार्रे तथा माथुर वर्ग का समुच्चय।

बड़ौदा—दि० २१ अप्रैल ८३। ग्वार्रे तथा माथुर वर्ग का समुच्चय।

अजमेर—दि० ४ मई ८३। जन सभा स्थान निवास श्री बाबूलाल हलवाई। ग्वार्रे तथा माथुर वर्ग का सम्मिलन।

मथुरा—दि० ३० अगस्त ८३। गौरीदाल मिल में स्थानीय महावर सभा के आतिथ्य में संघ की कार्यकारिणी की बैठक तथा इसमें

विधान संशोधन हेतु एक उपसमिति बनी। सायं काल श्री चूजीमल दाऊदायल की कोठी में सार्वजनिक सभा। अध्यक्ष श्री दाऊदयाल महावर।

दिल्ली—दि० ११ मार्च ८४ कार्यकारिणी की बैठक श्री शिव चरण गुप्त की कोठी पर। विधान संशोधन पर विचार दौरे और दान के प्रोग्राम बने। पर कोई प्रोग्राम पूरा नहीं किया जा सका।

अध्यक्ष श्री सदानंद प्रसाद मदानी के दौरे,

आगरा—दि० २३ मई ८४। विद्या मन्दिर में श्री चन्द्रभान (तेल मिल वाले) की अध्यक्षता में गोष्ठी।

जयपुर—२४ मई श्री बनवारी लाल गुप्त की कोठी पर गोष्ठी आयोजित। आतिथ्य श्री प्रकाश चन्द गुप्त अजमेर वाले।

अलवर—२५ मई। आतिथेय बद्रीप्रसाद दोषी।

दिल्ली—२७ मई। श्री शिवचरन गुप्त की कोठी पर गोष्ठी। आतिथेय भी वहीं।

संघ का १८ वाँ वार्षिकोत्सव नगर झुमरी तिलैय्या (बिहार) में,

यह उत्सव २२-२३ जून ८४ को बड़े उत्साह से सम्पन्न हुआ। इसमें कोई ५००० व्यक्ति उपस्थित थे। एक मुसलमान डिप्टी मिनिस्टर भी बिहार सरकार की ओर से आये थे। यहां मथुरासिनी देवी की भाव भीनी पूजा हुई। परन्तु संघ की अनेक शाखाओं को तथा ५००० साधारण सदस्यों को आमन्त्रित ही नहीं किया गया। महावर वर्ग के भ्रातृ द्वय श्री बनवारी लाल एवं उनके दामाद भ्रातृ द्वय बद्री प्रसाद दोषी और डा० देशबन्धु गुप्त यह तै करके आये थे कि संघ केवल शिरोमणि सभाओं की मार्फत काम करें तथा न शाखायें बनावे और न साधारण सदस्य। परन्तु उनकी एक न चली। विधान में अवैधानिक रूप से आद्योपान्त बदलवाने और पारित करने का नाटक रचा गया।

यहां पूर्व से ही निर्वाचित श्री शिवचरण गुप्त (दिल्ली) ने अगले सत्र के लिये श्री पूर्णानन्द तर्वे को महामंत्री नियुक्त किया। श्री वांदिल इससे रुष्ट हो गये और उन्होंने पत्रिका वैश्यों का उरुतन्त्र (आगरा संस्करण) का प्रकाशन बन्द कर दिया। फिरोजाबाद में फिर सितम्बर ८४ में कार्यकारिणी की बैठक श्री बालकृष्ण गुप्त के आतिथ्य में उन्हीं की कोठी पर हुई। वहां तर्वे जो ने इस पत्रिका को गया से प्रकाशित करने की घोषणा की परन्तु यह बात निभाई नहीं जा सकी। एक वर्ष हो गया। शिरोमणि सभायें तो वैसे ही सुप्त थीं। उनके माध्यम से कभी न कुछ कार्य हुआ है न हो सकेगा। उनकी अपनी आन्तरिक गुट बन्दियां हैं। एक और शिरोमणि सभावादी थे श्री बनमाली राम जी। वे "युवकों" को आन्दोलन में लाये और १८ वें उत्सव की स्टेज उन्हीं को सौंपते गये। परन्तु न किसी शिरोमणि सभा ने आर्थिक सहायता दी और न कोई युवक कार्यकर्त्ता ने ही युवकाई दिखाई। आन्दोलन समाप्त सा होता देख आजीवन संरक्षक होने के नाते मुझे फिर इस आन्दोलन हेतु बद्ध परिकर होना पड़ा। बरेली में पारित विधान ही संस्था को जीवन दान कार्यरत रख सकता है। अतएव सब शाखाओं को कार्यरत और साधारण सदस्यों को संस्था का स्तम्भ मानकर यह पुण्य कार्य जुलाई ८५ से पुनर्जीवित किया गया। पदाधिकारी वे ही रहेंगे जो जून ८४ में झुमरी तिलैय्या में बनाये गये थे। सभी का सहयोग वाञ्छित है।

(.०८) संघ की उपलब्धियां

पहिले उपसमितियों के रूप में और अब विभाग के रूप में संघ ने निम्नगति विधियों का ११ सूत्री कार्यक्रम हाथ में लिया।

(१)—पिछड़ा वर्ग कमीशन से पत्र व्यवहार। इस हेतु संयोजक श्री दयानन्द गुप्त मुरादाबाद एवं श्री राम खिलाड़ी गुप्त आगरा ने तथ्यपूर्ण प्रतिवेदन कमीशन को दिये। कमीशन की रिपोर्ट पर केन्द्रिय सरकार के निर्णयों की प्रतीक्षा है।

(२)—वैवाहिक परामर्श : अंत: उपवर्गीय विवाहों हेतु सहयोग देकर अनेक सम्बन्ध सम्पन्न कराये गये हैं।

३—एलोपैथी, आयुर्वेद एवं होम्यो० आदि के जातीय डाक्टरों की लिस्टें तैयार की जा रही हैं ताकि मेडिकल कौन्सिलों मे प्रवेश हो सके।

४—जातीय वकीलों की लिस्टें एक विभाग तैयार कर रहा है ताकि बार कौंन्सिल में प्रवेश पाया जा सके।

५—दिल्ली में एक जातीय भवन निर्माण हेतु उप समिति गठित है।

६—अलवर के निकट भामाशाह के पूर्व निवास वाले ग्राम में भामाशाह स्मारक एवं तीर्थ निर्माण की एक योजना है।

७—यह वर्ग दर्जनों डिग्री कालेज और सैकड़ों हाई-स्कूलों का निर्माण करके चला रहे हैं। इनकी, उनके अध्यापकों तथा अन्य जातीय स्नातकों की लिस्टें बनाई जा रही हैं ताकि अपने इस क्षेत्र की सेवा को जनता एवं सरकार के सामने पेश कर सकें। और स्नातक तथा अध्यापकों के चुनाव मण्डल से विधान परिषदों में प्रवेश पाया जा सके।

८—एक उद्योग परामर्श विभाग है जो जाति का उद्योगोन्मुख करने हेतु साहित्य, सामग्री तथा अर्थ जुटाती है तथा उद्योगों में जाति भाइयों की ट्रेनिंग व नौकरी की व्यवस्था करता है।

९—जातीय इतिहास प्रकाशन।

१०—स्थानीय निकायों में जातीय बन्धुओं को प्रवेश कराने में उद्योगरत भी एक विभाग है।

११—संघ की अपनी एक पत्रिका मासिक उरुतन्त्र नाम से हरिद्वार से निकलती है जिसका मैं सम्पादक हूं। संघ द्वारा जातीय इतिहास पर अनुसन्धान नामक मेरे द्वारा प्रकाशित पुस्तक अब पुनः प्रकाशित की गई। संघ ने तुला सहित ओ३म् जो सूर्य के घेरे में है,

को इन जातियों का ऐम्बलम घोषित करके इसका प्रचार प्रचार किया है कि जिसे सब जाति बन्धु लैटर हैड, साइन बोर्ड, कैश मीमों और मकानों के बाहर तथा कारों पर लगाने लगे हैं। सेठ सीताराम गुप्त ने बैजों के प्रचार हेतु १०००) का दान दिया हैं। संघ ने एक जातीय राष्ट्रीय गान (झण्डा अभिवादन हेतु) श्री गनेश प्रसाद 'सुमन' परैया (गया बिहार) निवासी से धुन-लय युक्त बनवाकर प्रकाशित व प्रसारित किया है। एक केशरिया रंग का झंडा जिसकी लम्बाई, चौड़ाई से दो गुनी हो तथा अन्दर उपरोक्त ऐम्बलम तुला सहित ओम व सूर्य वाला बना है, सब के हेतु मान्य किया है : एक पूर्वजों की लिस्ट और उनके स्मारक दिवस की योजना भी निम्न प्रकार से कार्यान्वित की है।

विशाल और प्राचीन होते हुए भी माहउरु जाति का पृथक कोई निश्चित पर्व या त्यौहार नहीं था जो समान रूप से सारी जाति में मनाया जाता हो और जिससे शुभ प्रेरणा जाति को मिलती हो। अत: इनका श्री गणेश करना अत्यावश्यक था।

पर्व—(१)—दीपावली पर लक्ष्मी पूजा—द्वीपमालिका वैश्यों का त्यौहार है। यह ऋतु के आधार पर है। रामचन्द्र जी के लङ्का विजय के बाद स्व जन्म भूमि को उस दिन लौटने की किंवदन्ती के कारण यह पर्व देश-भक्ति का भी प्रतीक है।

(२) दूसरा पर्व-जन्म से शूद्र सब होते हैं पर संस्कार से द्विज होते हैं। समाज का दूसरा जन्म जो विद्या और संस्कारों के योग से हुआ और जिससे उसे द्विजत्व प्राप्त हुआ वह उस दिन था जब उसके संगठन बने। हर वर्ग को अपनी शिरोमणि सभा का जन्म दिन मनाना चाहिए। [उदाहरणार्थ सम्वत १९५५ विक्रमी की कात्तिक बदी तीज (सन १८९८) वह दिन है, जब पान्चाल प्रान्त के माहौर बन्धुओं का सर्व प्रथम बृहद अधिवेशन एटा जिले के कस्बा निधौली कला में हुआ था]।

पूर्वज—(१)—पुराण और महाभारत के समय तक में हमें अपने पूर्वज महासेन का जिक्र मिलता है जो कृष्ण जी के समकालीन थे और हमारे वर्ग के अगुआ था। गवारें माहौर वैश्य प्रतिवर्ष उनका जुलूसादि निकालते आये हैं। उन्होंने ग्वालियर के प्राचीन किले से उनका चित्र उत्कीर्ण कर लिया है। हमारे सब जगाओं की वंशावलियों में उन्हें इनका द्वापुर-कालीन पूर्व पुरुष करके बताया है।

(२)—हमारा दूसरा पूर्वज महाराणा प्रताप का महामंत्री भामाशाह महाजन था, जिसने अपनी सब सम्पत्ति स्वातन्त्रय-युद्ध हेतु महाराणा प्रताप को समर्पित करके नये कीर्तिमान स्थापित किये थे। उनका सम्पूर्ण जीवन पिछले अध्याय में दे आए हैं।

(३)—हमारे तीसरे पूर्वजों में अग्रगण्य महात्मा गांधी जी थे। उनका जन्म पोरबन्दरपुरी में दो अक्टूबर १८६९ को हुआ था। यह तो राष्ट्रीय पर्व मान लिया गया है। (म्होड़) होने के सम्बन्ध में पृथक अध्याय दिया जा चुका है। अत: इन तीन महापुरुषों का जन्म दिन हमें मनाना ही चाहिये। दुर्देश विपाक से प्रथम दो की जन्म तिथि हमें ज्ञात नहीं है। गांधी जी की जन्म तिथि दो अक्तूबर हमें ज्ञात है। उस दिन छुट्टी भी होती है। अत: संघ ने उसी दिन तीनों महापुरुषों का स्मारक दिवस मनाने की घोषणा की है और उसका श्री गणेश दो अक्टूबर ८० को कर भी दिया गया जबकि उसके उप प्रधान लाला मोहन लाल एवं कोषाध्यक्ष श्री जय प्रकाश गुप्त के अनथक परिश्रम से उसका प्रथम समारोह आई० एम० ए० के विशाल हाल में दिल्ली में यह पर्व मनाया गया। इसका उदघाटन श्री बद्री प्रसाद गुप्त (स्वास्थ्य मंत्री) राजस्थान सरकार (महावर वर्ग) ने किया था। इसमें बिहार, आगरा, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश से ३०० प्रतिनिधि आए थे, जिनका भोजनातिथ्य का प्रबन्ध लाला भगवान दास ने अपनी शाहदरा-स्थित कोठी मे किया था। हाल में कोई तीन हजार व्यक्ति उपस्थित थे। श्री भदानी जी ने उसका सभापतित्व किया था। वहां सेठ सीताराम जी मण्डी गोविन्द गढ़, गुरु प्रसाद भदानी कोडरमा, प्रधान (मगध माहुरी महा मण्डल बिहार), बा० शिवप्रसाद गुप्त आगरा राम गोपाल गुप्त सिकन्दराराऊ, हरप्रसाद भैय्या जी अलीगढ़, बुद्धदेवगुप्त एडवोकेट मुरादाबाद, लाला गणेशदास मथुरा आदि सब उपवर्गों के नेता उपस्थित थे। लाला मदन लाल गुप्त महावर वर्ग का यह प्रस्ताव पास किया गया कि दिल्ली में महासेन-भामाशाह-स्मारक भवन निर्माण हेतु एक ट्रस्ट बनाया जाए।

यह निश्चय हुआ कि प्रति वर्ष दो अक्टूबर को दिल्ली में और सप्ताह में किसी दिन सुविधानुसार यह स्मारक-दिवस अपनी आबादी वाले शहरों और कस्बों में सोत्साह मनाया जाया करे।

(२) सन ८१ का अग्रज स्मृति समारोह हिन्दी पार्क दरियागंज दिल्ली में सम्पन्न हुआ। सारे नगर में पैम्फलेट तथा बैनर लगाए गए थे और ५००० विज्ञापन संघ की शाखाओं और शिरोमणि सभाओं को भेजे गये थे। स्वागताध्यक्ष श्री महेश चन्द्र गुप्त (माथुर वैश्य) सेक्रेटरी नई दिल्ली म्यु० कारपोरेशन ने अपना छपा हुआ भाषण पढ़ा। बा० शिवप्रसाद गुप्त ने उद्घाटन भाषण दिया। जिसमें मा शब्द से प्रारम्भ होने वाले वैश्य वर्गों के संगठन को राष्ट्रीय एकता के ध्रुवीकरण की प्रथम सीढ़ी बताया और रहीम का प्रसिद्ध दोहा पढ़ा कि अपने गोत को बढ़ते देख किसे प्रसन्नता नहीं होती है। पश्चात मुख्य अतिथि श्री बनारसी दास गुप्त भूतपूर्व मुख्य मंत्री हरियाणा तथा प्रधान अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी ओजस्वी वक्तृता ४५ मिनट तक जारी रखी। उड़ीसा में वैश्यों के ऊपर हुए अत्याचारों का मर्मान्तिक वर्णन करते हुए उन्होंने बताया कि उन्होंने सब वैश्यों को संगठित करने का बीड़ा उठाया है। वैश्य ही टैक्स के रूप में सरकार को तथा चन्दे के रूप में राजनैतिक पार्टियों को धन देते हैं पर उन्हीं को सरासर सरकार के हर अंग द्वारा तिरस्कारित व अपमानित किया जाता है। इसके निराकरण हेतु ८ करोड़ की जनसंख्या वाले वैश्यों को संगठित होना पड़ेगा। तब उनका कोई बालबांका नहीं कर सकेगा। इसके पश्चात श्री बद्रीप्रसाद गुप्त भूतपूर्व स्वशासन मंत्री राजस्थान सरकार ने भी अपने व्याख्यान में गांधी जी को श्रद्धांजली अर्पित करने के बाद वैश्यों के संगठित होने का आह्वान किया, ताकि वे देश के

वर्चस्व में अपना भाग प्राप्त कर सकें। शम्भूदयाल गुप्त रिटायर्ड श्री डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट राजस्थान ने वैश्य संगठन को पुनीत कर्त्तव्य बताया और महावर वैश्यों का पूर्व नाम माहौर बताया। उन्होंने भामाशाह के महाजन होने और अलवर निवासी होने की बात बताई और उसके भवन के खण्डहरों को जाति की राष्ट्रीय सम्पत्ति बताया। महामंत्री डा० रामेश्वर दयाल गुप्त ने सरकार द्वारा रोजगार धन्धे करने की कटु आलोचना की और किसान की पैदावार का सरकार द्वारा रेट बढ़ाये जाने को तेजी की व्यवस्था का कारण बताया। डा० प्रकाश नारायण गुप्त, श्री बाल कृष्ण गुप्त, श्री रामनारायन गुप्त भूतपूर्व अम्बासैडर सूरीनाम व श्री शिवचरन गुप्त ने भी संघ समर्थन में वक्तृता दी। इसमें मुख्य प्रस्ताव एक करोड़ रुपये की स्थिर निधि बनाने का पारित हुआ जो श्री दयानन्द गुप्त ने उपस्थित किया था। दूसरा प्रस्ताव-संघ के उपप्रधान श्री भगवत प्रसाद ऐडवोकेट ने रक्खा था कि राजस्थान व उत्तर प्रदेश में स्थानीय निकायों के चुनाव हो रहे हैं, उनमें संग्रस्थ उपवर्गों को चाहिये कि किसी पार्टी से टिकट लेकर या स्वतन्त्र रूप से घटकों को चुनाव में खड़ा करें। हर सीट से अपना एक ही व्यक्ति खड़ा रहे, अन्य बैठ जावें और इस प्रकार विजयी हो। विधान परिषद के लिये भी प्रत्याशी बनें, जहां लोकल बाडीज के सदस्यों का ही वोट होता है। तीसरे प्रस्ताव में यह मत प्रगट किया कि मात्र वितरणात्मक व्यापार में अब जातीय बन्धुओं का बने रहना श्रेयस्कर नहीं रहा है। उन्हें लघु उद्योगों में लगाना चाहिये। सवस्थ उद्योगपति पथ प्रदर्शन करें और कुछ बड़े उद्योग स्थापित करें जिनमें हजारों जाति भाइयों को रोजगार व कार्य मिले।

अग्रज स्मृति समारोह १९८२ में भी उसी २ अक्तूबर को सेन्ट्रल रेलवे के बैडमिन्टन हाल नई दिल्ली में हुआ। इसका उद्घाटन श्री विक्रम महाजन [राज्य ऊर्जा मंत्री केन्द्रीय सरकार] ने किया। उपस्थिति ५००० के लगभग थी। पंजाब, बिहार एवं मध्यप्रदेश से जातिबन्धु आये थे। स्वागत भाषण श्री आर० ऐन० गुप्त I. A. S ने दिया। कोटला के बच्चों ने सांस्कृतिक प्रोग्राम प्रस्तुत किया। बरेली उत्सव की स्मारिका का विमोचन श्री बद्रीप्रसाद गुप्त केबिनेट मिनिस्टर राजस्थान ने किया। और श्री जे० ऐन० गुप्त I. A.S का अभिनन्दन किया गया। युवकों की एक वाद विवाद प्रतियोगिता हुई जिसमें कुमारी सरिता, जयप्रकाश, देवेन्द्र माहौर एवं धर्मेन्द्र कुमार (कोडरमा) को पुरस्कृत किया गया। इस समारोह के साथ राम० अवतार आर्य मंत्री महावर महासभा ने विश्वास घात किया और उसी दिन उसी समय एक बैठक महावर सभा की अन्यत्र रख ली। तथा स्मृति समारोह हेतु बाहर से आये सब विशिष्ट महावर बन्धुओं को उपवर्ग की दुहाई देकर वहाँ बुला ले गये और इस प्रकार संघ का पीठ में छुरा भोंका गया।

आगरा—जो शृंखला देश भर में अग्रज स्मृति दिवस मनाने की प्रारम्भ की गई थी उसी में १० अक्तूबर ८२ को यह दिवस सोत्सह आगरा में मनाया गया। उस दिन एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। इसमें कई बैन्ड थे। माथुर वैश्य बन्धुओं ने महासेन की आरती उतारी। सायं काल बृहत सार्वजनिक बैठक का संचालन डा० वीरेन्द्र गांगिग ने किया।

अहमदाबाद--मुख्य अतिथि श्री हीरालाल गुप्त। उद्घाटन कर्त्ता मदन गोपाल जी असि० कमिश्नर सेन्ट्रल स्कूल्स।

झुमरी तिलैय्या—में १० अक्तूबर को। उद्घाटन कर्त्ता श्री पुनीचन्द राम गिरीडीह। मुख्य अतिथि श्री वासुदेव प्रसाद सुपरिन-टैन्डिग इन्जीनियर—पतरातू थरमल।

पलिया कलाँ (खीरी उ०प्र०)—ध्वजा रोहण, प्रभात फेरी। संयोजक सेठ खेमकरन लाल। इसमें नैपाल के बन्धु भी आये।

इस सत्र में एक नई बात यह हुई कि क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किये गये जिन सब में मैं उपस्थित था।

एटा—दि० २१ अक्तूबर ८२। स्वागताध्क्ष बा० जयन्ती प्रसाद गुप्त एडवोकेट।

अवागढ—बृहत यज्ञ तथा ५०० आस पास के व्यक्तियों का सामूहिक भोजन। श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त (न्युली वालों) का कविता पाठ। निकटस्थ २५ ग्रामों के लोग आये थे।

अध्यक्ष—बा० हरिप्रसाद गुप्त एडवोकेट एत्मादपुर।

अलीगंज (एटा)—दि० २१ अक्तूबर ८२ को यहां स्व० श्रीमती बाबूराम गुप्त [मेरे पूज्य पिता जी] की वर्षी भी साथ ही जोड़ दी गई। उनकी स्मृति में दिये दान के पत्थर आर्य समाज, माहौर धर्मशाला एवं डी०ए०वी० इन्टर कोलेज में जिसे उन्होंने स्थापित किया था लगाये गये।

बोखारो स्टील सिटी—दि० ६-९-८२ को। प्रबन्धक श्री फकीर चन्द राम असिस्टैन्ट मैनेजर।

नगला बीच—दि० २७ जनवरी ८३। अध्यक्ष श्री प्रमोदचन्द गुप्त मैनपुरी स्वागताध्यक्ष श्री छेदालाल गुप्त नेता जी। उद्घाटन कर्त्ता बा० शिवप्रसाद गुप्त आगरा। निकटस्थ २५ ग्रामों के २०० जाति भाई आये तथा फ्रीलंगर चला। श्री मती हरी देवी ने ५०० वर्ग फुट जगह जातीय स्कूल हेतु देने की घोषणा की।

—:०:—

हमारे सहयोगी (१४)

श्री माधुरीशरण अग्रवाल । नर्मदा इन्डस्ट्रीज गोविन्द नगर (भोपाल)



पिता—दानवीर श्री गोपीनाथ जी । वल्लभ सम्प्रदाय में श्री नाथ जी (वृन्दावन) के भक्त, गोभक्त (नियम से प्रति वर्ष कुछ दिन बल्लभगढ़ की गोशाला में रहकर गो-सेवा करना । व्यवसाय-सोडा (थोक व फुटकर)

मातृ श्री - श्री मती अंची देवी ।

जन्म स्थान व तिथि—मथुरा दि० 5 फरवरी 1929

शिक्षा—बी०ए०

भाई-बहन—एक बहिन और 5 भाई जिनमें ज्येष्ठ **श्री वंशीधर** जी अत्यन्त उत्साही एवं आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्त्ता और अतएव विविध सामाजिक सुधार की गति विधियों में अग्रणी । मथुरा में वैदिक साधन आश्रम, विरजानन्द न्यास, डी०ए०वी० हाई स्कूल एवं चम्पा अग्रवाल कॉलेज, बी०ऐस०ए० डिग्री कालेज, तपोवन आश्रम देहरादून के कभी अध्यक्ष, कभी मंत्री कभी ट्रस्टी ।

पत्नी—श्रीमती प्रेमवती अग्रवाल ।

पुत्र—(1) विजय कुमार अग्रवाल इन्जीनियर (सतत छात्रवृत्ति प्राप्त कर्त्ता)

(2) विनोद कुमार अग्रवाल इन्जी० में पी०ऐच०डी० कनाड़ा में प्रोफेसर ।

सामाजिक गतिविधियाँ—

(1) मथुरा में 1948 में मंडलीय ट्रेडर्स अधिवेशन और बिक्री कानून के विरुद्ध मोर्चा ।

(2) सन् 1951 में व्यापार-पत्रिका का प्रकाशन ।

(3) सन् 1953 में आक्ट्राय पद्धति की समाप्ति हेतु उ०प्र० व्यापार मंडल का अधिवेशन मथुरा में कराके प्रस्ताव पारित कराना ।

(4) मध्य प्रदेश अग्रवाल सम्मेलन का 1961 में गठन और तदन्तर किसी न किसी पद पर रह कर सेवा ।

(5) लायन्स क्लब BHEL भोपाल के अध्यक्ष (1983)

(6) अध्यक्ष आर्य कन्या विद्यालय इन्टर कोलेज—भोपाल (ऐम०पी०)

(7) शिक्षा कोर्स की पुस्तकों के प्रकाशक । (8) कई निशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन और मार्च 83 में नेत्र शिविर ।

(9) गुरुकुल होशंगाबाद का पुनर्निमाण (10) प्रचुर यज्ञों के कर्त्ता ।

(10) गरीब विद्यार्थियों को क्षात्रवृत्ति देना ।

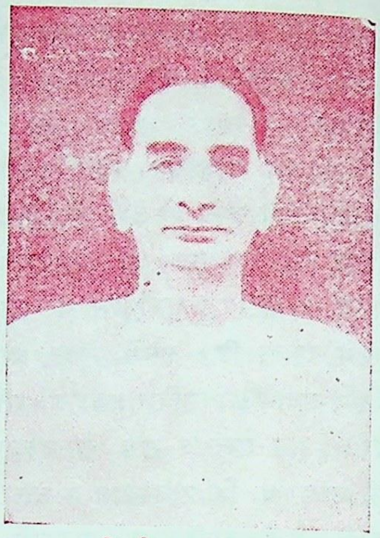
(11) मध्य प्रदेशीय आर्य महा सम्मेलन 1982 के प्रबन्धक ।

निजी व्यापार—1950 शक्कर का व्यापार, 1951 में मुद्रण व प्रेस, सरस्वती प्रकाशन भोपाल ।

1966 मे नर्मदा इन्डस्ट्री भोपाल जिसमें केबिल बनाती हैं ।

हमारे सहयोगी (१५)

डा० शिवप्रसाद गुप्त ऐम० ए०ऐल० बी० चन्द्रा भवन । सिंगी गली । आगरा



महान पिता के महान पुत्र

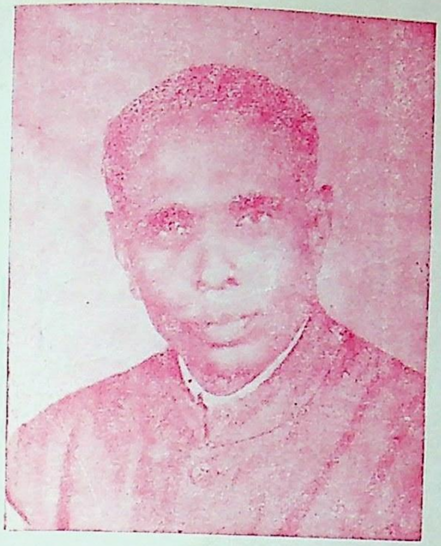
अंगरेजी शासन काल की सेन्ट्रल ऐसेम्बली के सांसद तथा आगरा महापालिका के सन् १९३७ से १९६० तक लगातार महापौर (MAYOR) स्व० श्री रामचन्द्र गुप्त स्वतत्रता प्राप्ति के समय निर्मित विधान-निर्मात्री मडल (CONSTITUENT ASSEMBLY) के भी सदस्य थे । उन्हें आगरा विश्वविद्यालय ने DOCIOR OF LAW (Honrary) से विभूषित किया था । उन्होंने अनेक स्कूल कोलेजों की स्थापना की तथा फिर माथुर वैश्य शिक्षा परिषद का निर्माण और पंजीयन कराके वे सब संस्थायें उसे सौंप दी । वर्षों अखिल भारतीय माथुर वैश्य महासभा के अध्यक्ष रहे ।

ऐसे महान पिता के प्रथम पुत्र श्री डा० ओ० पी० गुप्त तो गुजरात में डायरेक्टर आफ सिविल होस्पिटल हैं तथा द्वितीय पुत्र हमारे चरित्र नायक श्री शिवप्रसाद गुप्त हैं । पहिले तो व्यापार में रहे और ग्लास फैक्टरी, दाल मिल और भट्टों के स्वामी रहे परन्तु फिर सार्वजनिक जीवन में आ गये और 1952 में आगरा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के निर्विरोध चैयरमैन चुने गये । और 1960 में यू० पी० विधान सभा में गये । स्व० चन्द्रभान गुप्त के मंत्रिमंडल में गृह राज्य मत्री [MINISTER OF STATE FOR HOME] रहे । पश्चात विधान परिषद में Graduates स्नातक परिमंडल से तीन बार चुने गये । इमरजेंसी से दुखी होकर लोकदल में प्रवेश किया । विरोधी दल में होते हुये भी 1980 से 1984 तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद के डिप्टी चैयरमैन रहे । सन् 1985 में पुनः स्नातक मंडल से MLC चुने गये । अब विधान परिषद में लोक दल के नेता तथा विरोधी दलाध्यक्ष हैं ।

माथुर वैश्य शिक्षा परिषद के दर्जनों वर्ष अध्यक्ष रहे और एक पोस्ट ग्रेजुएट कोलेज कन्याओं का स्थापित किया । माहोर, माथुर, माहुरी और म्होड़ वैश्यों का संघ बनाने, में जी तोड़ परिश्रम किया । नगर-नगर और गांव-गांव में घूम कर उसकी जड़ें परिपक्व कीं जिसका वर्णन इस पुस्तक के अध्याय 4 अ (०८) में पाठक देख लें ।

सत्तर वर्ष की आयु मे भी सार्वजनिक जीवन में कार्य-रत और हजारों जाति भाइयों तथा अन्यों के अनेकों काम करवानें में सहायता देने वाले जाति-हितैषी गुप्त जी की चिरायु की हम कामना करते हैं । [18-7-८6]

हमारे सहयोगी-१६



A glimpse of the several fields of Social Service of SRI A.V GUNDAPPA SETTY, Arkalgud, Hassan District, Karnataka State

A.V. Gundappa Setty S/o A. V. Nanjunda Setty Born in 1912 founder of all Vysya Co-operative Banks and Societies in Karnataka State and Brother of A. N. Varadarajulu doner of many Educational and charitable Institutions in Bangalore and Hassan District.

Gundappa Setty is a freedom fighter and entered the field of service to the public when he was only 32 years old. He has done and even now doing his best in serving his fellowmen at his town, Taluk, District and also at State level He was the first non-official president for both Arkalgud Town Municipality and Taluk Board.

He has started two Colleges, one for women at Hassan and another General, and one at Arkalgud Town. As Chairman he is responsible for opening a maternity Hospital, Muncipal High School, one General Hostel, Water Supply Scheme from river to Arkalgud town, Electrification, setting up of Girls High School etc.

He has served the Vysya Community as President and Secretary at his town and has earned community's good will.

He is the active Secretary of the Educational Trust and Institutions of a budget of four to five lakhs and founded by his brother Sri A. N. Varadarajulu of a very high charitable disposition.

Political—He was a member at the Pradesh Congress Committee (Old Mysore State) and was the General Secretary at Hassan District and President at Arkalgud Taluk and Mandal Congress Committee. He is also associated with a number of Eduational Societies enumerated below :—
1. President, of Sharadamba Educational Society. (2) Yoganarasihma Educational Society. (3) Amildar Rangappa's General Hostel. (4) Arkalgud Municipal High School.

His activisties extend to Economic fields also as President of (1) Arkalgud Taluk Farmers Association. (2. First Circle Co-operative Society (3) Taluk House Building Co-operative Society. (4 Arkalgud area Marketing Co-operative Society. (5) Arya Vyshya Co-operative Society. (5) Arya Vyshya Mandali Arkalgud. (7) Anjanaya Potters Co-operative Society. (8) Land Mortagage Co-operative Society. (9) Arkalgud Municipal High School welfare Committee, (10) Arkalgud Taluk scholarship Commi.tee, (11) Hassan District Central Co-operative Bank (12) Arkalgud Taluk Industrial Co-operative Society.

He founded several Public utility trust viz. (1) A. V. Suryanarayana Setty and Brothers Trust. (2) Arkalgud Dasappa Setty Trust (3) A.N. Varadarajulu Trust. (4) A.V. Nanjunda Setty Trust.

Such is the record of service of this gentleman in line with the tradition of his father: indeed a great son of a great man.

हमारे सहयोगी-१७



1. Name T. N. VENKATAGIRI SETTY
Fathers's Name THALLAM NARAYANAPPA
Address: Sree Kanyaka Parameswari, Temple Street, Y.N Hosakote-572141, Pavagada Taluk, Tumkur District, Karnataka State.

2. Ex-Vice-President, Taluk Development Board, & Sree Shani Mahatma Karya Nirvahaka Sangha, Pavagada (Karnatak),

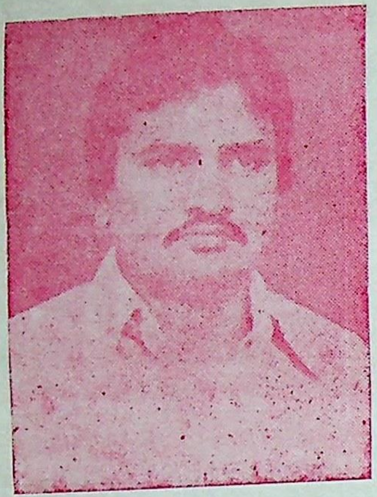
3-4. Ex-President, Sri Kanyaka Parameswari Arya Vysya Sangha. Shishu Vihar, High School and Town Municipal Council, Y.N. Hosakote.

5. Ex-Director, State Co-operative Housing Corporation, Bangalore.

Political 1. Ex-Secretary, Town Congress Committee, Y,N Hosakotei
2. Secretary Taluqa Freedom Fighters Association.
3. Nominated Member, State Level Recruitment Committee for Education, Youth Affairs and Housing and Urban Development, Government of Karnataka, Bangalore.
4. Chairman-Agricultural Produce Market Committee Pavagada.

Religious-1. President, Sri Sathyasayi Seva Samithi, Pavagada. 2. President, Sri Venkataramanaswamy Devasthanada Jeernodhara Samithi Y.N Hosakote.
5. Social—Executive Committee Member, Karnataka Arya Vysya Mahasabha, Bangalore, and All India Vysya Samaj Hyderabad.
6. Director, Taluk House Building Co-operative Society, Ltd , Pavagada.

हमारे सहयोगी (१८)



श्री जय प्रकाश मन्नी लाल गुप्ता बी. काम.
गुप्ता निवास लोहार पुरा नागपुर-४४००१८

विकासोन्मुख सामाजिक जीवन

1-सन् १९७२ में जी. एस. कामर्स कालेज में रजत जयंती वर्ष पर छात्र संघ के महासचिव चुने गये, जिसमें भारत के राष्ट्रपति प्रमुख अतिथि थे।

2-सन् १९७६ में २० सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत २०० बेरोजगारों को बैंक से कर्ज वितरित करवाया।

3-सन् १९७६ में द. प्रा०दोसर वैश्य नवयुवक संघ के महामन्त्री चुने गये, जबकि अनेक सामुहिक विवाह सम्पन्न कराये। सन 79 में कोषाध्यक्ष बनाये गये।

4-सन 1978 में विदर्भ उत्तर भारतीय संघ के मंत्री नियुक्त।

5-सन १९८० में पंकुज प्रभा को. हाउसिंग सोसायटी के अध्यक्ष चुने गये।

6-सन१९८० में श्री बद्री नारायण मंदिर ट्रस्ट नागपुर के कोषाध्यक्ष चुने गये।

7-सन १९८० में विदर्भ में सर्व वैश्य सभा का गठन किया व मत्री चूने गये।

8-सन १९८१ में चार अप्रैल को अ० भा० वैश्य सम्मेलन का नागपुर में आयोजन किया। इसमें श्री सीताराम केसरी (केन्द्रीय मंत्री) प्रमुख अतिथि थे।

9-१९८१ में २६ अप्रैल दिल्ली में अ० भा० वैश्य महा सम्मेलन के गठन के विचार हेतु धर्म भवन दिल्ली की सभा में भाग लिया। और एक मंत्री चुने गये।

१०-सन १९८१ में महाराष्ट्र शासन ने विशेष कार्यकारी दंडाधिकारी नियुक्त किया।

११-सन १९८२ में महाराष्ट्र शासन ने महाराष्ट्र स्टेट माइनिंग कारपोरेशन का डायरेक्टर नियुक्त किया।

१२-सन १९८३ में विभिन्न सेवाओं को देखते हुये नगर की सामाजिक संस्थाओं की ओर से अभिनन्दन किया गया।

१३-सन१९८३ में महाराष्ट्र रेफ्रेक्टरीज एन्ड सेरामिक्स लिमिटेड (महाराष्ट्र शासन) के डायरेक्टर नियुक्त हुये।

१४-सन १९८४ में सर्व वैश्य सम्मेलन के अन्तर्गत विभिन्न प्रान्तों व महाराष्ट्र का दौरा किया।

१५-१९७० से १९८३ तक युवक कांग्रेस, कांग्रेस, एन० एस० यू० के पदाधिकारी रहे।

हमारे सहयोगी (१९)



दानवीर श्री शान्ता प्रसाद अग्रवाल
ज्वालापुर (सहारनपुर) उ० प्र०

जन्म— जुलाई १९१५

व्यौपारिक संस्थान—

(१। मैसर्स रोढामल शान्ता प्रसाद सर्राफ बैंकर्स एण्ड ज्वैलर्स सर्राफा-बाजार, ज्वालापुर।

(२) शिवालिक फिलिंग स्टेशन (पेट्रोल पंप) निकट रेलवे स्टेशन-ज्वालापुर।

पारिवारिक वृक्ष.—तीन पुत्र सर्व श्री विष्णु प्रसाद, श्री सूरज भान एडवोकेट एवं अश्वनी कुमार इन्जीनियर।

सामाजिक जीवनः—

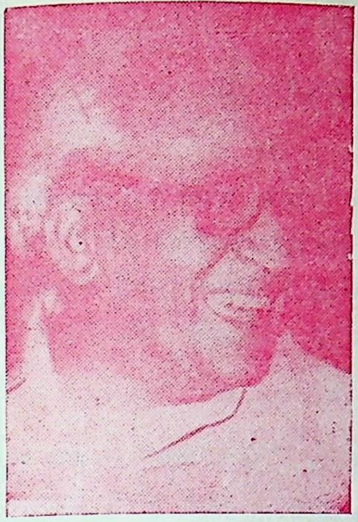
(१) लगातार ६ वर्ष से निर्विरोध नगर की प्रमुख संस्था वैश्य पंचायत (रजिस्टर्ड) के प्रधान।

इस पंचायत की दो धर्मशालायें हैं। एक तो नई बनी है जिसमें श्री शान्ता प्रसाद जी ने ३५०००/ का पुष्कल दान दिया है।

(२) रोटरी क्लब के पदाधिकारी और इसके द्वारा निर्मित ज्वालापुर इन्टर कौलिज में ७०००/ के दान से कमरे बनवाये।

नगर की हर वैश्योन्मुख तथा धार्मिक वृत्ति में सदैव मनसा, वाचा, कर्मणा अर्पित।

हमारे सहयोगी (२०)



श्री शिवचरण गुप्ता

भूतपूर्व सांसद एवं उप मंत्री तत्कालीन दिल्ली राज्य।

S-51B पंचशील पार्क। नई दिल्ली-17

(१) जन्म तिथि—२२ फरवरी १९२२

(२) दिल्ली के एक साधारण परिवार में पैदा होकर अपने पैरों पर खड़े हुये।

१९४२ की भारत छोडो क्रांति में आपने सक्रिय कार्य किया। और १९४६ में आप दरीबा क्षेत्र काँग्रेस कमेटी के महामन्त्री चने गये। आप १९५८ से १९६० तक प्रदेश काँग्रेस के अध्यक्ष पद पर रहे। २० वर्ष तक आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। इसी कारग १९७२-७३ में आपको गोवा, दमन व दीव प्रदेश कांग्रेस कमेटी का संगठक बना कर भेजा गया।

(३) संसदीय कार्य - दिल्ली के हर स्थानीय निकाय में रहकर जनता की सेवा की। आप दिल्ली विधान सभा के समय पहले संसदीय सचिव और पश्चात उप मन्त्री बने। आप दिल्ली और नई दिल्ली नगर पालिकाओं के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रहे। नगर निगम की स्थाई समिति के लगातार ४ वर्ष अध्यक्ष रहे। आप सदर बाजार क्षेत्र से लोक सभा के लिए चुने गये। आप दिल्ली महानगर परिषद में विरोधी दल के नेता रहे। आप डी०डी०ए० तथा दिल्ली परिवहन निगम के सदस्य रहे। आप मुगल लाईन्स के डायरेक्टर रहे। आपको १९७२ और १९७९ में गोवा में चुनाव व प्रमुख बनाकर भेजा गया।

४) शिक्षा प्रचार के क्षेत्र में—शिक्षा के क्षेत्र में आपकी प्रारम्भ से ही रूचि रही है। विद्या भवन महाविद्यालय, लोदी रोड के आप प्रबन्धक रहे प्रधान रहे और अब संरक्षक हैं। कमलेश बालिका विद्यालय के आप प्रधान हैं। किरोडीमल कालेज की प्रबन्ध समिति के आप सदस्य व प्रधान रहे। भगतसिह कालिज के आप कोषाध्यक्ष रहे। सीटिजन को-आपरेटिव बैंक में आप अध्यक्ष हैं।

(५) जातीय क्षेत्र में आप अखिल भारतीय महाउरु संघ के 1985 में अध्यक्ष हैं।

(६) दिल्ली की सेवा—दिल्ली की विभिन्न समस्याओं के समाधान में आप लगातार प्रयत्नशील हैं। दिल्ली का व्यौपार कैसे प्रगति करे; यहां का वितरण केन्द्र कैसे बना रहे, इसकी ओर आप सदा प्रयत्नशील रहे। यह आपका ही प्रयास था कि दिल्ली के पहले मास्टर प्लान को बनाने में आपका विशेष योगदान व सहयोग रहा। आपने ११२ अनधिकृत कालोनियों को १९६१ में अधिकृत किया और झुग्गी झोंपडी वालों के हित में १९६७ व ६८ में आन्दोलन चलाया और जेल गये। चावडी बाजार को गिराने की योजना को आपने रद्द कराया है।

हमारे सहयोगी [२१]



श्री जयप्रकाश गुप्त

पता - लक्ष्मी निवास नं० 7/12 ईस्ट पटेल नगर, दिल्ली—8

मूल निवास स्थान—ग्राम ऊंचा गांव (एटा) उ०प्र०

पिता—श्री स्व० लाला ओमप्रकाश गुप्त बैन्कर्स

परिवार—तीन भाई तथा दो बहिने, दो पुत्र एवं दो कन्यायें।

व्यौपारिक संस्थान—१) फ्रेन्डस आटो मोवाइल

२) मारूति ओटोसैन्टर शाहदरा तथा कारखाना मोम, झरना नाला, कानपुर रोड, आगरा

३) प्रकाश आटो सैन्टर, तलावली-आगरा रोड, इन्दौर (M.P.)

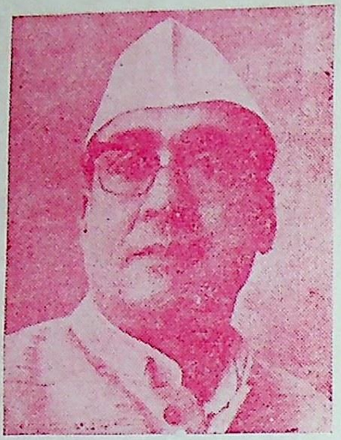
४) भारत पैट्रोलियम कारपोरेशन सेवला, ग्वालियर रोड, आगरा

मैनूफैक्चरर— रिफान्ड पैराफिन मोम, व फुट आयल तथा कैन्डिल। झरना नाला। कानपुर रोड। आगरा

सामाजिक—(१) आजीवन संरक्षक एवं कोषाध्यक्ष अखिल भारतीय महाउरू वैश्य संघ।

(२) कोषाध्यक्ष— अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन।

हमारे शीर्षस्थ नेता



श्री बनारसी दास गुप्त का जीवन परिचय

श्री बनारसी दास गुप्त का जन्म ५ नवम्बर सन १९१७ को पंजाब स्थित तत्कालीन जीन्द राज्य के ग्राम मानहेरू में एक साधारण अग्रवाल जाति के घराने में हुआ। उनके पिता स्वर्गीय लाला रामस्वरूप दास जी ग्राम में ही खेती बाडी के साथ दुकानदारी तथा लेन-देन का व्यवसाय करते थे। श्री गुप्त जी की प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम के ही प्राईमरी स्कूल में हुई। प्राइमरी शिक्षा हेतु उन्हें ग्राम कितलाना में रोजाना तीन मील पैदल चलकर जाना पडता था। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिये उन्होंने बिडला इन्टरमीडिएट कालेज पिलानी में प्रवेश लिया।

राजनैतिक जीवन—लुधियाना में जून ३८ में पं० जवाहर लाल नेहरू के सभापतित्व की एक बैठक में पंजाब की देशी रियासतों में प्रजा मण्डल स्थापित कर राष्ट्रीय आन्दोलन चलाने के लिए किए गये आवाहन से प्रेरित होकर श्री गुप्त जी पढ़ाई छोड़कर कार्य क्षेत्र में ज़ा कूदे और जीन्द राज्य में प्रजामण्डल स्थापित किया।

जींद सरकार के दमन चक्र का शिकार गुप्त जी को होना पड़ा। जेल की सजा वह भी कडी पैरों में लोहे की बेडियां और उस पर कठिन श्रम इत्यादि की यन्त्रणाएं भोगनी पडी।

1942 के आन्दोलन के पश्चात महाराजा जीन्द ने बदले हुए हालात में कुछ प्रशासनिक सुधारों की घोषणा की। श्री गुप्त जी जीन्द राज्य असेम्बली के निर्विरोध सदस्य चुने गए। फिर सन् 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद 1947 में जीन्द राज्य में समानान्तर सरकार की स्थापना की गई।

इसके पश्चात श्री बनारसी दास गुप्त ने जिला हिसार के भिवानी नगर को अपना कार्य क्षेत्र बना लिया। श्री गुप्त ने 'राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस' के अन्तर्गत भिवानी में श्रमिकों को संगठित किया और उनके हितों की रक्षा के लिये एक बार 17 दिन तक अनशन भी करना पडा। बाद में श्री गुप्त ने जिला कांग्रेस कमेटी हिसार का कार्य, अध्यक्ष के नाते सम्भाल लिया। इधर भिवानी नगर पालिका के भी वे प्रथम गैर सरकारी अध्यक्ष चुने गए।

सन 1965 में श्री गुप्त को भिवानी इम्प्रूवमैन्ट ट्रस्ट का चेयरमैन नियुक्त किया गया। सन 1968 में जब हरियाणा विधान सभा के मध्यावधि चुनाव हुए तो उनमें श्री बनारसी दास गुप्त भिवानी चुनाव क्षेत्र से कांग्रेस टिकट पर विधायक निर्वाचित हुए और चौ० बन्सी लाल के राज्य सभा के मेम्बर बनने पर वे प्रदेश के मुख्यमन्त्री बने। उनको हरियाणा प्रदेश कांग्रेस का महामंत्री भी नियुक्त किया गया।

सन 1972 के चुनावों में श्री गुप्त जी पुनः भिवानी क्षेत्र से हरियाणा विधान सभा के लिए चुने गये। इस बार श्री गुप्त जी को नव निर्वाचित विधान सभा की प्रथम बैठक में ही सर्व सम्मति से हरियाणा विधान सभा का अध्यक्ष चुन लिया गया। श्री गुप्त ने अध्यक्ष के कार्य काल में विधान सभा की समस्त कार्यवाही पूर्ण रूप से हिन्दी में चला कर राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति में अपनी प्रगाढ़ श्रद्धा का परिचय दिया। श्री गुप्त ने विधान सभा के अध्यक्ष के नाते मध्य अफ्रीका में स्थित मलावी देश में होने वाली कोमन वेल्थ, पालियामेंट्री एसोसिएशन के अधिवेशन में भाग लिया। इसी समय श्री गुप्त जी ने कीनिया मिश्र, रोम, स्वीटजरलैन्ड, पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस, इंग्लेण्ड तथा रूस की संसदीय प्रणालियों का अध्ययन करने के लिए दौरा किया।

सन 1973 में श्री बनारसी दास गुप्त को श्री बंशी लाल जी ने अपने मंत्री मंडल में मन्त्री के रूप में शामिल कर लिया। श्री गुप्त के पास जहां बिजली और सिंचाई, कृषि, सहकारिता, जन स्वास्थ्य, नागरिक प्रशासन जैसे महत्वपूर्ण विभाग रहे, वहां मन्त्रि मण्डल में वरियता के हिसाब से उनका दूसरा नम्बर था।

दिसम्बर सन १९७५ को जब चौ० बन्सी लाल जी को केन्द्रीय मन्त्री मण्डल में शामिल कर लिया गया तो श्री गुप्त जी ने हरियाणा के मुख्यमंत्री के पद का भार सम्भाल लिया। श्री गुप्त का मुख्य मंत्रीत्व काल दुर्भाग्य से आपात काल का अरसा रहा। परन्तु आपात काल में ही की गई गलतियों तथा ज्यादतियों के परिणाम स्वरूप जब 1977 में लोक सभा के चुनावों में कांग्रेस पार्टी की करारी हार हुई तो श्री गुप्त पहले मुख्य मत्री थे जिन्होंने हरियाणा विधान सभा में अपनी गलतियों को स्वीकार किया।

भूदान आन्दोलन में भी श्री गुप्त ने आचार्य बिनोवा जी के साथ पद यात्रा कर अपना योगदान दिया।

साहित्यिक अभिरुचि - उन्होंने 'अपना देश' तथा 'हरियाणा केसरी' हिन्दी साप्ताहिक का वर्षों तक सम्पादन एवं संचालन किया। और स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व ही एक पुस्तिका 'पंचायती राज क्यों और कैसे ? शीर्षक से लिखी। श्री गुप्त हरियाणा प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रहे।

सामाजिक कार्य—वे अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की गतिविधियों में सक्रिय भाग भी लेते हैं। उन्होंने मन्त्री होते हुये इन्दौर में अग्रवाल सम्मेलनों में भाग लिया। आजकल अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन तथा अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन के अध्यक्ष हैं। और वैश्य समाज में फैली कुरीतियों को निर्मूल करने में प्रयत्नशील हैं। इसके अतिरिक्त अग्रवालों की जन्म भूमि तथा अग्रवाल समाज के प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन की तत्कालीन वैभवशाली राजधानी अग्रोहा के पुर्ननिर्माण तथा उसको तीर्थ के रूप में विकसित करने में लगन एवं निष्ठा के साथ लगे हुए हैं।

शिक्षा प्रेम—स्वाधीनता पूर्व उन्होंने बिडला एजूकेशन ट्रस्ट की ओर से सैकडों ग्रामों में प्राईमरी तथा मिडल स्कूलों की स्थापना करवाई। जब वे नगरपालिका भिवानी के अध्यक्ष थे तब उन्होंने नगर के प्राईमरी स्कूलों की दुर्दशा में काफी सुधार किया।

भिवानी में लडकियों की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिए आदर्श महिला कालेज की स्थापना की। श्री गुप्त इस कालेज की प्रबन्ध-समिति के लम्बी अवधि तक अध्यक्ष रहे हैं।

हरियाणा की बहुत पुरानी एवं श्रेष्ठ सस्था वैश्य कालेज भिवानी की प्रबन्ध समिति के भी श्री गुप्त जी अध्यक्ष हैं।

अध्याय ५

केसरवानी जाति का इतिहास

०१)—**गोत्र प्रवर्तक**— "महर्षि कश्यप" के एक वंशज केसरवानी समाज का भी एक गौरवमय इतिहास है। यों हम केसरवानी समाज के क्रमबद्ध इतिहास बतला सकने में असमर्थ हैं फिर भी जो कुछ भी तथ्य अनेक लेखकों की खोजबीन से प्राप्त हुआ निम्न प्रकार है।

०२) **शाब्दिक अर्थ**— "केसरवानी" दो शब्दों से मिलकर बना है: केसर+वानी अर्थात केसर जिनका वाणिज्य हो। बहुत पूर्व यह झेलम नदी के तट पर निवास करते थे। केसर की खेती और उसका व्यवसाय करते थे। धीरे-धीरे केसरवणिक से केसरवाणी हुआ, उससे केसरवानी बना।

ऋग वेद में, "पणि," जाति का उल्लेख किया गया है, ये उन्हीं का एक अंग हैं। धीरे-धीरे जब इस केसरवणिक समाज का विस्तार हुआ, यह मोहन-जोदारो-हड़प्पा के प्रसिद्ध नगरों तक फैल गयी।

०३) **आदि निवास स्थान**—केसरवणिक समाज का मूल स्थान काश्मीर में झेलम नदी के तट पर ही था जहां इस समाज के हजारों परिवार बसे हुये थे जिनके मुख्य स्थान पासपुर. उन्नीपुर, नींवा, शिवपुर, श्रीनगर आदि थे। केसर की खेती बिना जोते बोये होती है और एक बार का लगा हुआ पेड अनेक वर्षों तक फलता फूलता रहता है। उनका यह व्यापार भारत के विभिन्न भागों में तथा उसके बाहर चीन, अफगानिस्तान, फारस, तिब्बत और मिश्र आदि देशों तक होता था।

०४) **ऐतिहासिक तार तम्य**—जिस समय महाराज हर्षदेव १० वीं शताब्दी में काश्मीर के राजा थे, उस समय इस जाति का राजदरबार में बडा सम्मान था। महाराजा जयसिंह जो १२ वीं शताब्दी में काश्मीर के महाराजा थे, उनके समय तक इस समाज का मान दान बढ़ा हुआ था। उस समय की प्रथा के अनुसार अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग करना वे भली भांति जानते थे और इन राजाओं के युद्धों में भी सहायता करने में अग्रगण्य रहे हैं।

११ वीं शताब्दी में महमूद गजनवी भारत विजय के बाद वापस जाने पर अपना एक सेनापति भारत छोड गया। इस सेनापति ने अपने मुख्य सलाहकार और मंत्री भोज को मिलाकर काश्मीर पर घोर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। उसका प्रतिकार करने के लिये काश्मीर के महाराज जय सिंह और अन्य राजाओं की फौजों और गजनवी की फौजों में घमासान युद्ध चलता रहा जिसमें केसरवणिक समाज ने महाराज को बहुत सहायता की और अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया। इन युद्धों में केसरवणिक समाज के हजारों लोग हताहत हुए। उधर दूसरी ओर महमूद गजनवी की सेनाओं ने केसरवणिक समाज से बदला लेने के लिये उनके गांवों को घेर लिया और अमानुषिक यातनायें देना आरम्भ कर दिया। सारी प्रजा ने एक साथ मिलकर इसका वीरतापूर्वक सामना किया और शत्रुओं को अपने क्षेत्र से निकाल बाहर किया।

बुरी तरह से परास्त होने पर भी गजनवी की सेनाओं के हमले बन्द नहीं हुए और आये दिन उसकी फौजें इस केसरवणिक समाज पर अत्याचार करती रहीं। इधर हजारों की संख्या में युद्ध में बलिदान हो जाने के कारण केसरवणिक समाज की शक्ति भी क्षीण होती गयी। संख्या की दृष्टि से भी वे कम होते गये। फलस्वरूप उन्होंने अपने समस्त परिवार को लेकर हजारों की संख्या में दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। धीरे-धीरे १२ वीं १३ वीं शताब्दी में हजारों की संख्या में इलाहाबाद (उ० प्र०) के निकट गंगा के किनारे कड़ा मानिकपुर में अपना पडाव डाला। यहां कौर वंश के गौड ब्राह्मण पंडित श्रोणीधर ने इन पूर्वजों की बडी सहायता की। आज भी पं० श्रोणीधर महाराज के वशज, "कर गोसाई" के नाम से जाने पहचाने जाते हैं और आज भी उनके पधारने पर केसरवानी समाज के लोग उनका स्वागत एवं सम्मान करते हैं।

०५) **पूर्वीया और पश्चिमियाँ नामक दो भागों में विभाजन।**

कड़े मानिकपुर में भी केसरवानी समाज की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गयी और धीरे-धीरे वे पूरब की ओर फैलते गये। अत: एक दूसरे से वे अलग-थलग न हो जाये और पुन: मिलने पर एक दूसरे की पहचान कर सकें, जाने वालों ने अपनी संख्या निर्धारित की और अपना संकेत भी रखा। ये संख्या, "बान" कहलाती है। ९६ दल पूरब की ओर निकल पड़े और कलकत्ते तक फैल गये। हर दल ने अपनी संख्या और संकेत कायम रखा। उदाहरण स्वरूप ३१ बान संख्या का संकेत "चन्दन की चरी", ४३ बान संख्या का संकेत "टंडुसी", ४९ बान संख्या का संकेत, "पटहा", ५२ बान संख्या का संकेत, पिपरिया', ६९ बान संख्या का संकेत, 'मुलहटिया', ७४ बान संख्या का संकेत, 'लका का सोना', ९१ बान संख्या का संकेत 'सोने की चौकी,' ९५ बान संख्या का संकेत, 'सोने की पहरी', ९६ बान संख्या का संकेत 'हाट भर कहे बिकाय।" रक्खा गया········

इन ९६ 'बान' शाखाओं के अतिरिक्त ३३ और शाखाओं का पता चलता है। किन्तु ऐसा लगता है कि यह ३३ शाखायें इन्हीं ९६ मूल शाखाओं की उपशाखायें हैं।

पूरब की ओर जाने वाले लोग 'पुर्वीया' कहलाये। इनका क्षेत्र बनारस से आगे कलकत्ते तक था और जो नेपाल, बिहार और बंगाल में फैले हुये थे। पश्चिम में बसे हुए केसरवानी बन्धु 'पश्चिमीया' कहलाये, जिनका क्षेत्र दिल्ली से वाराणसी तक फैला है और जो उत्तर-प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली और महाराष्ट्र में भी फैले हुये थे। धीरे-धीरे इन दोनों थोकों के लोगों के रहन-सहन, खान-पान और आचार-विचार में अन्तर पैदा होता गया, जिसके फलस्वरूप उनकी रोटी-बेटी और विवाह-शादि आपस में बन्द हो गये। इस प्रकार यह विशाल जाति दो बडे भागों में (पूर्वीया केसरवानी और पश्चिमिया केसरवानी में) अनायास विभाजित हो गयी।

०६) **इन दोनों विभागों का एकीकरण**— इस दिशा में पश्चिमीया थोक में बाबू प्यारे लाल जी गुप्त इन्श्योरेन्स मैनेजर, मुन्शी राजाराम जी, श्री गया प्रसाद जी, श्री छोटे लाल जी, बाबू सालिग राम जी, श्री महेश प्रसाद गुप्त, श्री लल्ला राम जी श्री राजाराम, चौधरी श्री चिरोंजी लाल जी, श्री रामकृष्ण जी, कर्वी (बांदा) के बाबू शम्भूनाथ जी, वाराणसी के श्री भरत प्रसाद जी, जबलपुर के श्री पुरुषोत्तम दास 'नेता' आदि तथा पुर्वीया थोक में पदम भुषण डा० दुःखन राम जी पटना, बाबू ब्रह्मदेव नारायण पटना श्री हरि प्रसाद पालित गया आदि महानुभावों के सद्प्रयासों के फलस्वरूप केसरवानी वैश्य सभा प्रयाग (स्थापित १६०५) की ओर से सन १६१८ में एक अखिल भारतवर्षीय केसरवानी महासभा की स्थापना हुई जिसका विराट अधिवेशन भी प्रयाग में हुआ, जिसमें पुर्वीया और पश्चिमीया थोकों को मिलाने के समर्थन में अनेक भाषण हुए और मिलाप का अच्छा वातावरण बना। इसके पश्चात महासभा का तृतीय अधिवेशन सन १६३५ ई० में जबलपुर में हुआ वहां भली-भांति अनुभव किया गया कि बिना इस मिलाप के हुए केसरवानी समाज आगे नहीं बढ सकता है। और फिर सन १६३८ में प्रयाग में सागर के श्रीमान सूरजदीन के सभापतित्व में महासभा का चतुर्थ अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में पुर्वीया और पश्चिमीया थोक के केसरवानियों के मिलाप का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ और दोनों थोकों ने एक साथ बैठ कर भोजन भी किया और इसी स्थल पर प्रोफेसर संकटाप्रसाद वाराणसी (पश्चिमी थोक) का जो विवाह सम्बन्ध बिलासपुर के श्री प्यारे लाल जी (पूर्वी थोक) की सुपुत्री श्रीमती सुशीला देवी के साथ हुआ था उसको वैध घोषित किया गया। अन्य विवाह सम्बन्धों की भी घोषणा हुई। इसी महासभा में अ० भा० केसरवानी तरुण महासभा की भी स्थापना हुई, जिसके अध्यक्ष पटना के श्री ब्रह्मदेव नारायण हुए और मंत्री श्री ओंकार नाथ गुप्त और प्रिन्सिपल श्री भोलानाथ केसरवानी हुए। इस नवनिर्मित दोनों थोकों की मिश्रित महासभा और तरुण महासभा की कार्य समिति की प्रथम बैठकें क्रमशः कलकत्ते में श्री प्रेमलाल शाह के निवास पर और पटना में श्री ब्रह्मदेव नारायण के निवास पर हुई। तरुण महासभा मंत्री मिलाप के संदेश का क्रियात्मक प्रचार करने के लिये देश के अनेक भागों में गये।

(०७) बाद के सत्रोत्सव

नवम्बर १६५६ को रीवां में महासभा का पंचम अधिवेशन हुआ जिसमें केसरवानी एवं समाज के अन्य अनेक थोकों को मिलाने का प्रस्ताव भी पारित किया गया। इसी प्रस्ताव में खरे–खरैया एवं दूसरे आदि उपशाखाओं के केसरवानियों के साथ टाँवडा शब्द भी जोड़कर प्रस्ताव को पारित तो करा लिया पर इनका कड़ा विरोध इलाहाबाद में हुआ।

(०८) केसरी शब्द का प्रचलन----

सन् १६३६ के आस-पास गया से 'केसरी' नाम की एक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके सम्पादक थे गया के श्रीनाथ जी पालित। इस पत्रिका के कारण ही केसरवानी समाज के कुछ लोग अपने नाम के आगे "केसरी" शब्द का प्रयोग करने लगे। बिहार में इस पत्रिका का प्रचार अधिक था इसलिये यहां के अधिक लोग आज भी अपने नाम के आगे केसरवानी के स्थान पर केसरी शब्द का प्रयोग करते हैं। यद्यपि देश के बाकी भागों में केसरवानी शब्द का ही प्रयोग होता है। बिहार के श्री सीताराम केसरी शब्द से यह स्पष्ट है।

(०६) पत्र और पत्रिकायें----

पत्र और पत्रिकायें किसी भी समाज की प्रगति की सूचक हैं। केसरवानी समाज में भी १६२१ से ही पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हो गया था। सागर (म० प्र०) से श्री कन्हैया लाल शिवरत्न वकील ने 'केसरवानी मार्ग दर्शक' नाम की एक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। १६२५-२६ में इलाहाबाद से 'केसरवानी समाचार' आरम्भ हुआ। १६३५-३६ में गया से 'केसरी' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ हुआ। फिर 'केसरवानी–संसार' और 'केसरवानी–सन्देश' पत्रों का आरम्भ भी इलाहाबाद से हुआ।

वर्तमान में लखनऊ से 'निशान्त' नामक पत्रिका पहले वार्षिक और अब अर्द्ध वार्षिक रूप में पिछले कई वर्षों से प्रकाशित हो रही है। १६७८ से प्रयाग के प्रिन्सिपल भोलानाथ केसरवानी द्वारा 'केसरवानी-ज्योति' नाम की त्रयमासिक पत्रिका का उदय हुआ। यह पत्रिका नियमित और समय से प्रकाशित होती है और सारे देश और विदेशों में भी इसका प्रचार और प्रसार हो गया है। एक और खुशी की बात है कि इनके पास अपना लगभग अस्सी हजार रुपयों का स्थायी कोष बैंक के फिक्स खाते में इस समय जमा है। अभी पिछले वर्ष से दिल्ली से श्री मोहन लाल गुप्त के सम्पादकत्व में 'संरचना' नाम की त्रैमासिक पत्रिका आरम्भ हुई है। उत्तर प्रदेशीय सभा की ओर से "समाज दूत" का प्रकाशन अभी आरम्भ हुआ है। इस प्रकार अनेक स्थानों से स्मारिकायें और पत्रिकायें प्रकाशित हो रही हैं जो प्रगति की सूचक हैं।

(१०) संगठन और सभायें––

किसी भी समाज के उत्थान के लिये संगठित सभाओं का होना अति आवश्यक है। इस समय (१६८४) लगभग सभी बड़े नगरों में केसरवानी समाज की सभायें सगठित होकर कार्य कर रही हैं। एक केन्द्रीय सभा व अखिल भारतीय केसरवानी वैश्य महासभा के नाम से

१९१८ से ही गठित है। इसके बहुत बड़े-बड़े अनेक अधिवेशन हो चुके हैं जिसमें दस हजार से पचीस हजार तक केसरवानी बन्धु एकत्रित हो जाते हैं। इसका प्रधान कार्यालय मीरगंज, इलाहाबाद में है। इसके 1984 के अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी गुप्त सतना और महामंत्री श्री रामबृक्ष राम पटना हैं। इस तरह से यह केसरवानी समाज उत्तर में दिल्ली से कलकत्ते तक और दक्षिण में सागर, नागपुर या महाराष्ट्र (बम्बई) तक फैला है। इस समाज के लोगों की संख्या पाँच लाख के लगभग अनुमान की जाती है जिसमें सर्वाधिक संख्या इलाहाबाद और उस जिले में भरी पड़ी है।

अखिल भारतीय केसरवानी महासभा का प्रथम अधिवेशन १९१८ में प्रयाग में लखनऊ के स्व० श्री रामदास जी रईस के सभापतित्व में हुआ था। इसका दूसरा अधिवेशन सागर के स्वनाम धन्य स्व० श्री कन्हैया लाल "शिव रत्न" की अध्यक्षता में हुआ। इनका कार्यकाल १९२३ से १९३५ तक रहा। इन दो अधिवेशनों के कारण समाज में जागरण का सूत्रपात हुआ और दूर-दूर के बन्धुओं का आपस में परिचय हुआ। १९३५ में महासभा का तृतीय अधिवेशन जबलपुर में डा० दुःखन राम जी पटना की अध्यक्षता में हुआ जिसमें पूर्वीय केसरवानी और पश्चिमीय केसरवानी थोकों के मिलाप का वातावरण बना। महामंत्री थे श्री मोतीलाल जी वैश्य, बुरहानपुर। १९३८ में सागर के स्व० बाबू सूरज दीन की अध्यक्षता में प्रयाग में महा-अधिवेशन हुआ जिसमें पूरब-पश्चिम के केसरवानी बन्धुओं के मिलाप का प्रस्ताव पारित हुआ। महासभा का पांचवा अधिवेशन १९४३ में स्व० लाला रामनारायण वैश्य की अध्यक्षता में हुआ। १९५३ में स्व० श्री भरत प्रसाद जी गुप्त वाराणसी की अध्यक्षता में महासभा का छठवां अधिवेशन सम्पन्न हुआ। सन् १९५६ में रीवां में इसके सातवें अधिवेशन के सभापति स्व० श्री ब्रह्मदेव नारायण पटना हुये जिसमें केसरवानी समाज को उप-शाखाओं को मिलाने का प्रस्ताव पारित हुआ। प्रयाग के श्री केदारनाथ गुप्त १९३८ से १९६१ तक इसके महामंत्री रहे। १९६१ में महासभा का आठवां अधिवेशन वाराणसी के सकटा प्रसाद जी की अध्यक्षता में वैद्यनाथ धाम में हुआ और महामंत्री हुये सतना के श्री रामगोपाल जी गुप्त। नवां अधिवेशन १९७५ में प्रयाग में हुआ जिसके अध्यक्ष सतना निवासी बाबू रामगोपाल जी एडवोकेट एवं भूतपूर्व विधायक हुये। तथा महामंत्री का कार्यभार पटना के श्री रामबृक्ष राम ने संभाला। १९८३ में जबलपुर में और पुनः १९८४ में दिल्ली में कार्य समिति की बैठकों में महासभा के अगले अधिवेशन की अध्यक्षता के लिये प्रयाग के श्री केदारनाथ जी बी. ए. एल. एल. बी. का नाम मनोनीत किया गया है जिसका अधिवेशन २८, २९ अक्टूबर ८५ को अमरावती (महाराष्ट्र) में रक्खा गया है।

(११) सामूहिक विवाह--

समाज में फिजूली खर्ची से बचने के लिये, दहेज, दिखावा तथा अनेक अनावश्यक रीतिओं को हटाने के लिये आजकल केसरवानी समाज में सामूहिक विवाहों की प्रथा का उदय हुआ है। इसकी पहल मध्य प्रवेश से हुई है। जबलपुर, व्यवहारी, सतना, सागर, चाकघाट (रीवाँ) डभौरा आदि स्थानों में एक से अधिक बार सामूहिक विवाह हुये हैं। उत्तर प्रदेश में सर्वप्रथम शंकरगढ़ में १९८३ में सामूहिक विवाह का आयोजन हुआ। इसके उपरान्त जसरा, (इलहाबाद) में तो एक सौ से अधिक सामूहिक विवाह सम्पन्न हुये थे।

(१२) इलाहाबाद में एक शिक्षा समिति है जो एक इन्टर कालेज चलाती है। श्री केदारनाथ गुप्त [20 जवाहर स्क्वायर इलाहाबाद] इसके अध्यक्ष है।

(१२) प्रमुख व्यक्तित्व---

(१) न्यायमूर्ति प्रेम शंकर गुप्त। इलाहाबाद हाई कोर्ट के जज।
(२) उमाशंकर I PS खागा। (फतेहपुर) निवासी।
(३) डा० रूप नारायण गणित विभागाध्यक्ष। ओटावा यूनीवर्सिटी कनाडा।
(४) जनार्दन प्रसाद केसरी। ऐग्रीकल्चर इन्जीनियर १५ बचाई अनातोले ७५७०० पेरिस।
(५) डा० प्रमोद कुमार गुप्त। सैन्ट पीटर्स अस्पताल। सरे (U.K)
(६) प्रेमचन्द गुप्त इलाहाबाद। महामंत्री पत्थर चट्टी रामलीला कमेटी।
(७) मोहनलाल गुप्त। संपादक संरचना। नं० १ अन्सारीरोड दिल्ली-२
(८) सुन्दर लाल केसरवानी। संस्थापक केसरवानी महाविद्यालय जबलपुर।
(९) कैलाशनाथ केसरवानी। अध्यक्ष अ० भा० MES Enginers Association.
(१०) डा० अरुण केसरी। आजाद पथ-पटना।
(११) सीताराम केसरी भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री दिल्ली।
(१२) मंसूरी लाल केसरवानी। M.Com. LLB अधिकारी बड़ौदा बैंक। लखनऊ।

अध्याय-६

अयोध्यावासी वैश्य वर्ग

(०१) माइथालोजीकल कथानक तथा क्षत्रियों का वैश्य बनना—

संवत ३७७ के लगभग जबकि भारत में जैन धर्म और बौद्ध धर्म का प्रचार जोरों पर था एवं वैष्णव धर्म मृत प्राय: हो रहा था, उस समय दक्षिणी भारत में सहस्त्रार्जुन, मयूरध्वज, ययाति एवं खडगसेन आदि पौराणिक राजाओं का राज्य चलता था। राजा खडगसेन खन्डेला में राज्य करते थे। यह नि:सन्तान थे। पुत्रेष्टि यज्ञ के प्रताप से उन्हें ए‹ पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। जिसका नाम-कुंवर सुजान रखा गया। कुंवर सुजान ने जवान होने पर अपने पिता का राज काज संभाला। कुंवर सुजान भी बौद्ध धर्म के अनुयायी हुये।

एक समय वह अपने राज्य के ७२ उमरावों भाटों को साथ लेकर अपने पिता राजा खडगसेन द्वारा मना की गई दिशा की ओर आखेट के लिए जा निकले। वहां उन्होंने ऋषियों को यज्ञ करते देखकर अपने उमरावों को यज्ञ नष्ट करने की आज्ञा दी। राजा कुंवर सुजान की आज्ञा पाकर उन उमरावों ने ऋषियों द्वारा बहुत समझाये जाने के बावजूद भी उस यज्ञ को नष्ट कर दिया। जिस पर क्रोधित होकर ऋषियों ने उन सभी को श्राप दिया जिसके कारण राजा कुंवर सुजान सहित सभी पाषाण के हो गये।

जब राजा खडगसेन को यह समाचार ज्ञात हुआ तो वह अत्याधिक दुखी व व्याकुल हुए एवं पुत्र वियोग में उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये।

राजा कुंवर सुजान की पत्नी चन्द्रावती समस्त उमरावों की पत्नियों को साथ लेकर उत्तर दिशा की ओर जा निकलीं। उन्होंने ऋषियों के यज्ञ स्थल पर पहुंचकर अपने-अपने पति के जीवन दान हेतु क्षमा याचना की।

ऋषियों द्वारा बताये गये श्राप-मुक्ति के मार्गानुसार उन्होंने अपने अपने इष्ट देव की आराधना की जिसे इष्ट देवों द्वारा स्वीकार की जाकर उनके पतियों को पुनः जीवनदान दिया गया। जिससे राजा कुंवर सुजान सहित सभी ७२ उमराव जीवित हो उठे। भगवान शंकर-पार्वती द्वारा राजा कुंवर सुजान को सभी उमरावों का जोगा बनाया गया व उन्हें यज्ञ स्थल के समीप बने कुण्ड में स्नान करने को कहा गया। उसमें स्नान करने से सभी के शस्त्र गल गये व उन्हें तलवार के स्थान पर तराजू धारण कर वैष्णव धर्म के पालन करने का निर्देश दिया गया।

इस प्रकार वहां से सभी विभिन्न दिशाओं की ओर प्रस्थान कर गये। भगवान राम के उपासक अयोध्या की ओर बढ़े और वे अयोध्यावासी कहलाये। इसी प्रकार भगवान महेश के उपासक महेश्वरी, एवं कृष्ण के उपासक बृजवासी कहलाये। इस प्रकार अन्य क्षत्रियों द्वारा भी वैष्णव धर्म स्वीकार किया जाने लगा। जिसके आधार पर श्रीराम उपासकों की ८५ खापें तैयार हुई। इन्हीं खापों के आधार पर गोत्रों का उदय हुआ जो एतद्-पश्चात सामूहिक लोगों के कार्यों के आधार पर अलग-अलग विभक्त हो गई।

प्रारम्भ में श्री राम के उपासक अयोध्यावासी वैश्यों में ३ खापें हुईं जो (१) अयोध्यावासी वैश्य (२) अयोध्यावासी स्वर्णकार एवं (३) अयोध्यावासी कास्यकार के रूप में पाई गई। अयोध्यावासी स्वर्णकार २ दीर्घ खापों में बंट गये एवं अयोध्यावासी कांस्यकार भी ३ छोटी खोपों में विभक्त हो गये।

अयोध्यावासी स्वर्णकार धीरे-धीरे अपने व्यवसाय के साथ उत्तर दिशा की ओर विभिन्न स्थानों पर चल दिये। अयोध्यावासी कांस्यकर प्रयाग, बनारस, लखनऊ, कानपुर, आगरा एवं विंध्यप्रदेश में पहुंचकर अपना व्यवसाय करने लगे। जहां वे हैहयवंशीय एवं चन्द्रवंशीय के रूप में माने जाने लगे। अन्य परिवार मलेरा, भाण्डेर, लहार, भरतपुर जयपुर एवं अलवर आदि स्थानों पर जा पहुंचे।

कुछ अयोध्यावासी अयोध्या से चलकर फैजाबाद, बाराबंकी, गौंडा, बहराइच, फरुखाबाद एवं खागा आदि स्थानों पर पहुंच कर साधारण व्यवसाय करने लगे जो अयोध्यावासी वैश्य कहे जाते थे। व्यवसाय की प्रगति के अभाव में यहां के अयोध्यावासी उत्तर प्रदेश से निकलकर पश्चिम की ओर रवाना हुए। पश्चिम यात्रा के पूर्ण न होने पर कुछ लोग मध्य में ही अपना व्यवसाय करने लगे।

यह है श्री अयोध्यावासी वैश्य समाज की उत्पत्ति का पौराणिक इतिहास, जो इनकी भोपाल नगर सभा ने अपनी पुस्तिका श्रीराम पुष्पाञ्जलि में जन० 80 में छापा था जिसके सम्पादक इनके श्री रवि शंकर गुप्त थे।

(०२) प्रागैतिहासिक वर्णन—

अयोध्यावासी अपना विस्तार रामायणकाल से प्रारम्भ होना मानते हैं।

महाराज रामचन्द्र के राजतिलक का निर्णय करते समय राजसभा की बैठक में सब वैश्य महाजन बुलाये गये थे। और इसी प्रकार रामचन्द्र जी के वनगमन के समय कुछ वैश्य अयोध्या जी वापस नहीं लौटे और चित्रकूट पहुंच गए। चित्रकूट के निकटवर्ती स्थानों के अतिरिक्त कुछ वैश्य बन्धु मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आदि प्रदेशों में फैल गए एवं वैश्योचित कृषि, व्यापार एवं उद्योगों से सम्बन्धित कार्यों में लग गए। मूलतः अयोध्या के निवासी होने के कारण वे 'अयोध्यावासी वैश्य' कहलाये।

(०३) संगठन का सूत्र पात—

इस समाज के पुर्वजों ने स्थानीय स्तर पर तो संगठन कार्य किए, किन्तु समाज के बृहतस्तरीय सुव्यवस्थित संगठन का आविर्भाव चैत्रकृष्णाष्टमी संवत् १९६५ विक्रमी सोमवार दिनांक १५ मार्च १९०९ ई० को उत्तर प्रदेश के मैनपुरी नगर में स्वजातीय दाऊ जी के मन्दिर में 'अखिल भारतीय श्री अयोध्यावासी वैश्य महासभा' के नाम से हुआ। उनके वार्षिक अधिवेशनों का क्रम निम्न प्रकार रहा और वे सन् १९०९ से विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न हुए, जिनका विवरण निम्न प्रकार है—

अधिवेशन क्रम अध्यक्ष	अधिवेशन स्थल	कार्यकाल
१ ला रघुवरदयाल गुप्त टिकैतनगर जि०. बाराबंकी (उ. प्र.)	मैनपुरी	१९०९
२ रा. महादेवप्रसाद गुप्त कानपुर (उ० प्र०)	कानपुर	१९१०, २४व२८ से३२
३ रा मगलीप्रसाद गुप्त सौरिख जि० फरुखाबाद	फरुखाबाद	१९३८।२५से२६
४ था जगन्नाथ प्रसाद रामनगर (उ०प्र०)	गुरसहायगंज	१९२७ से २८
५ वा शिवराज चूडीवाले वर्धा (महाराष्ट्र)		१९३२व१९३६,से१९४६
६ वा कन्हैयालाल गुप्त ग्वालियर (म० प्र०)	कानपुर	१९३४ से ४४तक
७ वा देवीप्रसाद गुप्त ओहागपुर	प्रयाग	१९३७ से १९३९ तक
८ वां डा० रामदुलारे गुप्त प्रयाग (उ०प्र०)	कानपुर	१९४६ से १९४९ तक
९ वां अमरनाथगुप्त प्रयाग (उ०प्र०)	जबलपुर	१९४९ से १९५४ तक
१० वां रामप्रसाद गुप्त कानपुर (उ०प्र०)	जहानाबाद	१९५४ से ६१ तक
११ वां सोमनाथ गुप्त प्रयाग (उ०प्र०)	अयोध्या	१९६१ से ६५ तक
१२ वां गुलाब गुप्त जबलपुर (म०प्र०)	अतर्रा	१९६५ से ६७ तक
१३ वां वीरेन्द्रनाथ गुप्त एटा (उ०प्र०)	जदलपुर	६७ से १९८४ तक
१४ वां भगवानदास गुप्त प्रयाग (उ०प्र०)	इटारसी	१९७२ से ८२ तक

१५ वां श्री मदनचन्द्र कश्यप—नागपुर—तथा

मंत्री प्रो० एस के दास कानपुर

०४ प्रमुख संस्थाएं

१ अखिल भारतवर्षीय श्री अयोध्यावासी वैश्य महासभा
(वर्तमान केन्द्रीय कार्यालय नागपुर)।

२ अखिल भारतीय श्री अयोध्यावासी वैश्य नवयुवक संघ
(वर्तमान केन्द्रीय कार्यालय-जबलपुर)

३ अखिल भारतीय श्री अयोध्यावासी वैश्य महिला सभा
(वर्तमान केन्द्रीय कार्यालय-जबलपुर)

४ उत्तर प्रांतीय श्री अयोध्यावासी वैश्य सभा
(वर्तमान कार्यालय -कायमगंज)

५ मध्यप्रान्तीय श्री अयोध्यावासी वैश्य सभा
(वर्तमान कार्यालय-भोपाल)

६ मध्यप्रान्तीय अयोध्यावासी वैश्य नवयुवक संघ
(वर्तमान कार्यालय-बिदिशा)

७ इसकी शाखायें निम्न नगरों में हैं—
नागपुर, बम्बई, भोपाल, सगमनेर, आमगांव (करेली, जबलपुर, फर्रुखाबाद, कायमगंज, गुरसहायगंज, अलीगज, बांदा, मौदहा, फतेहपुर, कानपुर, पुखराया, इटावा, नागपुर, कानपुर, इटावा, मैनपुरी, अतर्रा, खातेगाव, गजंबासोदा, बम्बई, हरंई, होशंगाबाद, अयोध्याजी, सिरसागंज, भोपाल, ईटारसी, शाहपुरा (बैतुल), शहपुरा (मडला), राहीकवारा सतना), ककबरपुर (कानपुर), बैकुंठपुर (म० प्र०), रायपुर (म०प्र०), (करेली)।

(०५) प्रकाशन पत्र-पत्रिकायें आदि

१) मंगल तारा—१००/३, नेहरुनगर;
कानपुर (उ. प्र.)

२) अयोध्यावासी वैश्य समाचार पत्र
४२, गुजरपुरा, भोपाल (म. प्र.)

(६) सामूहिक विवाह

वर्तमान प्रगतिशील युग में दहेज; फिजूलखर्ची, ठहरौनी, गाजे-बाजे अगवानी आदि वैवाहिक कुरीतियो के विरुद्ध अयोध्यावासी वैश्य समाज ने आदर्श विवाह पद्धति के रूप में सामूहिक विवाह समारोहों का शुभारम्भ किया। यह सम्पूर्ण हिन्दू समाज के लिए एक आदर्श आन्दोलन है। अयोध्यावासी वैश्य समाज में अब तक विगत वर्षो में मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में कई सफल सामूहिक विवाह समारोहों का आयोजन हुआ है। सामूहिक विवाह समारोहों का श्रृंखला जारी है महासभा प्रायः समाजके सभी बन्धुओं से निवेदन करती रही है कि वे सामूहिक विवाह समारोहों को सफल बनावे।

(०७) प्रमुख व्यक्ति

(१) श्री बादशाह गुप्त (अब स्व०) मेम्बर पालियामैन्ट-मैनपुरी

(२) श्री प्रो० भूदेव शास्त्री एम. ए. प्राध्यापकदयानन्द डिग्री कालेज अजमेर। अब स्वर्गीय

अध्याय-७

चतुर्सैनी या चौसेनी वैश्य

यह वैश्य उपजाति चौसैनी माहौर (उपनाम माथुर) से भिन्न है, जिसका वर्णन अध्याय 4 में कर आये हैं। परन्तु श्रेणी वद्ध व्योपार करने से 12 श्रेणियों के सम्मिलन से बारह सेनी बन्धुओं की तरह ही इनमें 4 श्रेणियां समाविष्ट होने से यह चतुश्रेणी उपवर्ग कहलाता है। यह बन्धु अपना अग्रज च्यवन ऋषि को बताते हैं। ऋग्वेद 19-39-9 में च्यवन शब्द आया है :—

युवां च्यवानं सवयं यथारथं पुनर्युवा नं चरथा य तक्षयुः ।।

[आप दोनों सुवैध च्यवन (जीर्ण देह वाले) ऋषि को सनय अर्थात पुराने रथ के समान विचरण करने के लिये फिर युवा बना दो]

भारतीय आयुर्वेद में च्यवन ऋषि को च्यवन प्राशावलेह द्वारा यौवन लाने की किंवदन्ती अति प्रसिद्ध है। प्रतीत होता है कि चौसेनी लोग पहिले वैद्य थे और वैद्य का पेशा वैश्य वर्ण के आधीन माना जाता रहा है। इस वर्ग के मुख्य व्यक्तियों से वृहद इतिहास मांगा गया, परन्तु उन्होंने भेजा नहीं।

परन्तु इसका एक वर्ग शब्द को चतुरश्रेणी मानता है और आदि पुरुष के रूप में चातुर भगवान की कल्पना की है।

शिरोमणि संस्थायें :-

अखिल भारतीय चतुर्सैनी वैश्य महासभा

जनमानस में प्रसिद्ध नाम चौसेनी है।

प्रधान=श्री शिवनारायण गुप्त प्रवक्ता c/o माया मेडीकल स्टोर्स, जनरलगंज, मथुरा।

मंत्री—श्री कन्छिद लाल गुप्त M. A. नरसेना (बुलन्दशहर)

महामन्त्री—सर्वेश कुमार गुप्त [चन्दौसी टाइम्स] चन्दौसी जिला—मुरादाबाद

मासिक पत्रिका का नाम =चतुश्रेणी।

इनकी पत्रिका चतुर श्रेणी निकलती है जिसके आदि

सम्पादक=ईश्वरी प्रसाद गुप्त M. A.

नं 931 त्रिनगर- दिल्ली-35

अब पत्रिका खुर्जा से निकलती है। श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त [नं० 78 खुशीपुरा] इसके 1984 में संपादक हैं।

चतुरसैनी वैश्य सेवा समिति—स्थापित 1980

अध्यक्ष-श्री रामचरन लाल एटा

महामंत्री—श्री किशन लाल गुप्त, सराय शेख आलम, खुर्जा

चतुरश्रेणी वैश्य सभा दिल्ली

महामंत्री—श्री प्रकाश चन्द्र गुप्त

नं० २६५।१२

थानसिंह नगर। आनन्द पर्वत दिल्ली-5

एटा शाखा=श्री किशनसरुप वैश्य बारादरी-कासगज।

चतुरश्रेणी भवन खुरजा (बुलन्दशहर)

मंत्री —सर्वेश कुमार गुप्त

यह संस्था प्रचुर संख्या में छात्र वृत्ति विद्यार्थियों को तथा अनुदान विधवाओं को देती है।

यह वर्ग चौसेनी माहौर वर्ग से प्रथक है जो अब अपने को माथुर कहने लगा है।

—०—०—०—०—

अध्याय--८

गहोई वैश्य समाज

०१) **शाब्दिक अर्थ**—सर्व प्रथम यह बतलाना अत्यन्त आवश्यक है कि उनका नाम 'गहोई' क्यों पड़ा तथा 'गहोई' शब्द का प्रयोजन तथा व्युत्पत्ति क्या है ? कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके अनन्त काल के प्रचलन होने पर उनके समय और परिस्थितियों वशात अपभ्रंश हो जाया करते हैं। इनके कुछ विद्वानों के अनुसार इसका शुद्ध स्वरुप 'गोहोयी' है। वास्तव में इन तीन अक्षरों के शब्द से वैश्यों के सम्पूर्ण धर्म व कर्म का बोध हो सकता है।

गो + होयी = गोहोयी। गो–अर्थ में, 'गौ' इन्द्री, पृथ्वी, माता, वाणी, पशु, वायु, एवं सूर्य। सुरा गौ की संताने इनका द्योतक है [देखिये महानिधि शब्द कोष में]

'होयी' शब्द के भी अनेक अर्थ हैं। होय शब्द 'हु' धातु से बना है, हु धातु का अर्थ है देना, लेना व खाना। इन शब्दों की व्याकरण से सिद्धि इस प्रकार से है 'औणादिक गमेर्डोः'। इस से गम धातु से उने प्रत्यय होकर गो शब्द बना है। गम धातु के भी तीन अर्थ हैं, ज्ञान, गमन, और प्राप्ति। इसी प्रकार से हु धातु से मन प्रत्यय होकर 'होय' शब्द बना है। फिर गो और होय शब्दों का समास होकर 'गोहोय शब्द हुआ, फिर 'अतइनिठनौ' इस पाणिनीय सूत्र से इनि प्रत्यय होकर 'गोहोयी, शब्द बन गया. जिसका विग्रह इस प्रकार है—

ऽगवां होयं गोहोयप गोहोय मस्तियेषान्ते गोहोयिनः

उपरोक्त एक गोहोयी शब्द से मनुस्मृति में वैश्यों के सात कर्मों का प्राववान है।

> पशुनां रक्षणन्दान मिज्याध्ययन मेव च
> वणिक्यथं कुसीदञ्च वैश्यस्य कृषि मेव च
>
> (मनु. अध्या. १ श्लोक ९०)

पशुनां रक्षणम् (पशुओं की रक्षा करना) २ दानम् (दान देना) ३- इज्या (यज्ञ करना) ४- अध्ययनम् (पढ़ना) ५- वणिक्पथम् (व्यापार करना) ६–कुसीदम् (ब्याज लेना) ७- कृषि (खेती करना) गीताकार वैश्यों से चिढ़ते थे, सो उन्होंने ७ को घटाकर ३ कर्म ही वैश्य के बताये।

> कृषि गोरक्ष्य वाणिज्य वैश्य कर्म स्वभावजम्।
>
> (गीता अ. १८ श्लोक. ४४)

[कृषि. खेती करना, २- गोरक्ष्य—गोपालन करना, ३- वाणिज्यं व्यापार अर्थात उन्हें यज्ञ व अध्ययन से वंचित कर दिया।

०२) गोत्र और उनसे सुनिश्चित इतिहास

प्राचीन काल में राजाओं के इतिहास लिखने की परम्परा रही थी, परन्तु ऋषि या मुनियों के इतिहास उपलब्ध नहीं हैं।

गहोई वैश्य समाज में १२ गोत्र होते हैं और गोत्रों के अन्तंगत ७२ आंकने भी प्रचलित हैं। यह आंकने अपने नामों के पश्चात जोड़े जाते हैं। इस विषय में एक पाणिनीय का सूत्र है " अपत्यं पौत्र प्रमृति गोत्रम्" पुत्र पौत्रादिक संताने गोत्र कहलाती हैं। तथा यह १२ गोत्र ऋषियों की संताने हैं, जो इस प्रकार हैं :—

१—आविशल ऋषि से—वाशर या वाशिल गोत्र प्रारम्भ हुआ
२—गोभिल्य ऋषि से—गोल या गोयल " "
३—कौत्स ऋषि से—कोच्छिल या (कौशल) " "
४—वसिष्ठ ऋषि से—बांदल " "
५—जैमिनी ऋषि से—जैतन " "
६—गार्ग्यायिण ऋषि से—गांगल " "
७—भारद्वाज ऋषि से—भाल या भारत " "
८—कश्यप ऋषि से— कसाव " "
९—कुशिक ऋषि से—कोहिल " "
१०- वतसार ऋषि से—वाच्छिल " "
११—काल्वायन ऋषि से—काच्छिल " "
१२- वादरायायण ऋषि से—बादरायण " "

अब यह ७२ आंकने क्या है ? यह आंकने व्यापार परक तथा निवास स्थान परक उपनाम के स्थान पर प्रचलित हैं। पुरातन काल में शिष्टाचार के नाते एक दूसरे का नाम लेकर पुकारना अशिष्टता का व्योहार माना जाता था। इसलिये जो व्यक्ति लेन-देन या ब्याज का कार्य करता था उसे सेठ कह कर पुकारना पड़ता था। यदि कोई लोहे की दुकान करता था तो उसे लोहिया कह कर पुकारा जाता था। इसी प्रकार निवास परक में भी कोई कुल पहाड़ का निवासी है तो पहारिया कहकर पुकारना श्रेष्ठ माना जाता था। वह प्रचलन आज भी चल रहा है।

०३) **निवास क्षेत्र**—यह गहोई वैश्य समाज बुन्देलखण्ड का निवासी रहा है और यही इनकी जन्म भूमि भी रही है। इसके बाहर जो भी बसे हैं। उन सभी के पूर्वज बुन्देलखण्ड के ही निवासी रहे हैं।

इनके एक वंशज को मराठा राजाओं ने सम्भल का सूबेदार बना दिया था। उसने योग्यता पूर्वक शासन किया। अतः कुछ आबादी मुरादाबद जिले में भी है। कुछ लोग मथुरा क्षेत्र में भी जा बसे हैं।

०४) संगठन एवं शिरोमणि संस्थायें—हर वर्ग का बुद्धि जीवी वर्ग उसे जाग्रत करने हेतु प्रयास करता है। इसके लिये वह सभा, सोसाइटियों का क्रम बद्ध निर्माण करता है। इसी क्रम में सन १९१४ में सर्व प्रथम गहोई वैश्यों का नागपुर में श्री रघुबर दयाल जी मरेले की अध्यक्षता में ३ दिन का अधिवेशन सम्पन्न हुआ और वहीं अखिल भारतीय गहोई वैश्य महासभा अवतरित हुई। यह भी निर्णय हुआ कि यह सारी योजनायें व निर्णय जो महासभा में पारित हुये हैं। सारे समाज तक पहुंचाये जाने चाहिये तभी एक प्रबुद्ध जन श्री नाथूराम जी रेजा नरसिंह (म०प्र०) निवासी ने 'गहोई वैश्य पत्रिका' का सन १९१५ में शुभारम्भ किया।

समाज में पत्रिका के माध्यम से अनेकों प्रचलित कुप्रथाओं का धीरे-धीरे ह्रास होता गया तथा हर १—२ वर्ष में महासभा के अधिवेशन सम्पन्न किये जाते रहे। इस सन्दर्भ में विशेष उल्लेखनीय बात यह भी है कि सन १९४० के कालपी अधिवेशन के अध्यक्ष श्री प्रागदत्त जी सोनी सब जज [ग्वालियर] की अध्यक्षता में विधवा विवाह का प्रस्ताव पास कर उसे समाज में प्रचलन की दिशा दी गई। अधिवेशन जबलपुर, कटनी, सागर, कानपुर, दतिया, ललितपुर, बांदा, पछार सागर, ओरछा, सिहोरारोड, उरई, सेवढ़ा मऊरानीपुर चित्रकूट, भोपाल, छतरपुर वारा सिवनी, अयोध्या आदि उ०प्र० व म०प्र० के नगरों में सम्पन्न किये जाते रहे।

अ०भा० गहोई वैश्य महासभा का रजत जयन्ती अधिवेशन कोंच जि० जालौन में १९७० में सम्पन्न हुआ। इसमें सबसे प्रमुख कार्य यह हुआ कि महासभा का विधान व नियमावली का पूर्ण रूप से नया रूप देकर प्रस्ताव पास किया।

सन १९७१ में महासभा का २६ वाँ अधिवेशन बडा गांव [झांसी] में आदर्श विवाहों की परम्परा को दृढता के साथ प्रचलन करने की शुरुआत की गई। सन १९७९ में उत्सव दमोह, (मध्य प्रदेश) में फिर १९८३ में सत्राधिवेशन बांदा में श्री उदय नारायन कनकने [झांसी] के सभापतित्व में हुआ।

उपरोक्त सभी अधिवेशनों में समाज में व्याप्त कुरीतियों के निवारण हेतु जन-जागृति का क्रम चलता रहा तथा इसी के साथ समाज के प्रबुद्ध बुद्धिजीवी वर्ग ने पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य भिन्न-२ स्थानों से भिन्न-२ नामों से प्रकाशन का क्रम चलाते रहे जो इस प्रकार है— गहोई वैश्य सेवक, गहोई वैश्य पताका, गहोई वैश्य समाज सुधार गहोई मित्र, गहोई समाचार, नव ज्योति, गहोई वैश्य बन्धु, आदि नामों से पत्रिकाओं का संचालन किया गया। वर्तमानसमय में दो पत्रिकायें निर्बाध गति से सम्पादित हो रही हैं— प्रथम है गहोई वैश्य बन्धु जो महासभा द्वारा संचालित है। दूसरी पत्रिका, गहोई समाचार जिसके श्री रामदास जी गुप्त मालिक हैं। शेष पत्रिकायें समय के चक्र के साथ उत्थान पतन देखती रहती हैं।

०५] साहित्य क्षेत्र में योगदान

गहोई वैश्य समाज के उच्चकोटि के कवि एवं साहित्यकारों का परिचय—

I] राष्ट्रकवि डा० मैथिलीशरण गुप्त चिरगांव (झांसी) निवासी थे जो हिन्दी के शीर्षस्थ साहित्यकार व कवि के रूप में जाने जाते रहे; उनकी काव्य कृतियों ने देश के जनमानस को आन्दोलित कर राष्ट्र में चेतना का प्रादुर्भाव किया। देश को आजादी दिलाने में, हिन्दी को आगे बढाने में और स्वदेशी भावना को जाग्रत करने का जो उपक्रम उनकी रचनाओं में आलोकित है, वह किसी से छिपा नहीं है। उनके प्रमुख प्रकाशन इस प्रकार हैं —भारत-भारती, साकेत, जयद्रथवध, यशोधरा, द्वापर, जयभारत, मेघनाद वध, चन्द्रहास नाटक, तिलोत्तमा, सिद्धराज, अनघ, पंचवटी आदि। बीसों अन्य प्रकाशन भी हैं जिन्हें शिक्षा क्षेत्र में स्नातकोत्तर विद्यालयों में आज विद्यार्थी गण उक्त प्रकाशनों के माध्यम से अपनी प्रतिभा को बढ़ा रहे हैं।

II) श्री सियाराम शरण गुप्त जो डा० मैथिलीशरण गुप्त के अनुज थे। इन्होंने भी इस काव्य धारा में अपना उज्जवल एवं सशक्त सहयोग प्रदान किया था। इनकी प्रकाशित प्रमुख पुस्तकें इस प्रकार हैं —आर्द्रा, विषाद, मौर्य विजय, अनाथ, आत्मोत्सर्ग मृण्मयी, उन्मुक्त नारी, अंतिम आकाँक्षा और मानुषी आदि। अन्यान्य ग्रन्थों की रचनायें भी भारत में प्रेरणा के स्रोत बनी हुई हैं।

III] श्री सुखदेव प्रसाद जी बड़ेरिया माड़ेर [म०प्र०] निवासी थे, जिन्होंने तो वैश्य समाज के लिये व्यापार विषयक काव्य शैली में वह मार्ग दर्शन कराया है जिससे सारी व्यापार की गुत्थियां सुलझाई जा सकती हैं। उस पुस्तक का नाम 'वणिक प्रिया' है। आप ज्योतिष शास्त्र के भी विद्वान थे। आपने देश को एक अनूठी देन दी है जिसके द्वारा आपका नाम अमर रहेगा।

IV) श्री श्यामलाल जी पहारिया—आप कोंच निवासी थे। इन्होंने व्यापारी वर्ग की हिसाब जोडने की तमाम कठिनाइयों को दृष्टिगत रखते हुये हिसाबी मशीन नामक पुस्तक तीन भागों में प्रकाशित की। उसके पश्चात हिसाबी दर्पण नामक पुस्तक का प्रकाशन करके व्यापारी वर्ग की हिसाब सम्बन्धी सारी गुत्थियों को सरल बनाकर प्रस्तुत किया था'। जब शासन ने दशमलव प्रणाली में तौल सिक्के व नाम का प्रचलन किया तभी आपने हिसाबी खजाना नामक पुस्तक का प्रकाशन कर दशमलव प्रणाली में (Convert) बदलकर व्यापारी वर्ग की कठिनाइयों को तुरन्त हल करके देश में इस नवीन दशमलव प्रणाली के प्रचलन में राष्ट्र का सहयोग किया।

V] श्री द्वारिका प्रसाद जी 'रसिकेन्द्र' कालपी निवासी थे। आपने भी इस काव्य क्षेत्र में जनता को नई दिशा देने में अपनी काव्य कला से उद्वेलित किया जिनके कुछ प्रकाशन 'न्यूनाधिका भेद' बालविभूति, सती सारन्धा मनहर वीर ज्योति आदि ग्रन्थों की रचना

की थी जो आज भी जनता के लिये प्रेरणा स्रोत बनी हुई हैं।

VI) श्री घनश्याम दास नौगरैया 'श्याम' उर्फ कक्का कवि इन्होंने जबल के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की थी। आपकी कुण्डलियां व होली के हुलदंग में रस भरी हास्य रस की कवितायें उ०प्र० व म०प्र० का पत्रिकाओं में अक्सर प्रकाशित रहती थी।

VII) डा० गगा प्रसाद जो बरसैंयां आपका साहित्य पर पूरा वर्चस्व है। आप कवि होने के साथ ही आकाशवाणी छतरपुर द्वारा आपकी परिचर्चायें प्रायः सामाजिक आध्यात्मिक व राजनीतिक विषयों पर होती हैं।

०६] विकास कार्यों में योगदान

इन वैश्यों ने देश में अनेक उद्योग स्थापित किये जैसे, लकी बिस्कुट फैक्ट्री पटना, जय पेपर प्रोडक्ट्स इन्दौर, फ्लोरा फार्मा कानपुर, वायोसिंध गाजियाबाद।

०७] राष्ट्रीयता के क्षेत्र में

राष्ट्र के स्वतन्त्रता संग्राम में अनेकानेक गहोई बन्धु राष्ट्र सेवा में समर्पित हुये, पर कोच का पहारिया परिवार ने तो सन १९३० के नमक आन्दोलन में तो एक साथ तीन पीढ़ियों के बन्धुजनों ने (पिता, पुत्र और पौत्र) स्वतन्त्रता संग्राम में जेल जाकर भारत में अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया था।

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त का राष्ट्रपति द्वारा राज्य सभा में मनोनयन हुआ। श्री रामेश्वर प्रसाद नीखरा गादरवाड़ा से दो बार सांसद चुने गये हैं। श्री लक्ष्मी नारायण गुप्त बिछोर म०प्र० शासन में एक मन्त्री के रूप में कार्यरत रहे हैं। स्व० श्री श्याम सुन्दर गुप्त एड्वोकेट विधान सभा के सदस्य रहे। नगर निगम, नगर पालिका अध्यक्ष व सदस्य, ब्लाक प्रमुख, सरपंच या ग्रामप्रधान के पदों पर तो अनेकों गहोई वैश्य रहे हैं।

देश में आई. ए. एस., आई. पी. एस, पी. सी. एस. अधिकारी तथा विदेश सेवा में राजपत्रित अधिकारी, डाक्टर, वकील इंजीनियर बैंक अधिकारी, डिस्ट्रिक्ट जज, मुंसिफ-मजिस्ट्रेट, आदि पदों पर अनेक गहोई वैश्य हैं। 'शिक्षा जगत' में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में रहकर अनुसन्धात्मक कार्यों में कई लोग कार्यरत हैं। श्री प्रेम-नारायण ससिया शिक्षा उप निदेशक भोपाल मध्य प्रदेश ने शिक्षा में अनुसन्धान पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा ८०० डालर का पुरस्कार प्राप्त कर भारत का गौरव बढाया।

बहुजन-हिताय, बहुजन-सुखाय को सार्थक रूप देने में भी गहोई समाज पीछे नहीं रही। अनेकानेक, धर्मशालायें, विद्यालय, मंदिर एवं अन्य दातव्य संस्थाओं का निर्माण कर सुचारू रूप से संचालन करते हुये राष्ट्र के विकास कार्यों में अपना योगदान दिया है।

०८] अन्य संगठन

1] अखिल भारतीय गहोई वैश्य महासभा

अध्यक्ष—(१९८५ से) श्री छक्कीलाल रावत। रावत भवन।
चौर बाजार-बांदा

2) अ. भा. गहोई वैश्य महिला सम्मेलन

अध्यक्ष—श्रीमति कमला कन्देले। कन्देले भवन। सुभाषगंज।
डबरा (ग्वालियर)

3] अ. भा. गहोई वैश्य युवक मण्डल

अध्यक्ष—श्री राजेश खेरा M.L.A. (१९८५) ललीतपुर, (झांसी)

4] गहोई वैश्य एसोसियेशन (रजि०) दिल्ली

पता—D-636 सरस्वती-विहार। दिल्ली—34

5] गहोई वैश्य विकास संगठन मथुरा।

अध्यक्ष—श्रीराम किशोर वाणी। सेठ स्टेट। महाराजाधिराज बाजार
मथुरा—1

———

अध्याय ९

वरनवाल वैश्य जाति का इतिहास

(०१) शाब्दिक अर्थ

इन बन्धुओं की मान्यता है कि वरनवाल शब्द वरन+वाल शब्द से बना है और अर्थ हुआ वरन नामक नगर या सम्मान वाले लोग। उत्तर प्रदेश के जिला नगर बुलन्दशहर का पुराना नाम वरन था। वहीं के राजवंश या राज्य प्रजा वरन वाल बन्धु थे। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में प्राय: सभी वंशों ने अपना उद्‌भव क्षत्रिय कुलों और राजवंशों से जोड़ा था, यही परम्परा इस वर्ग के इतिहास-कारों की खोजों में दिखाई देती है। स्वयं वरन नाम भी इस जनपद का राजा अहिवरन के शासन काल में पड़ा था। अत: अहिवरन के राज्य कुलादि पर विचार किया गया है। अहिवरन को सूर्यवंशी क्षत्रिय बताया है।

(०२) अहिवरन का वंश वृक्ष

सूर्यवंशी चक्रवती सम्राट महाराज मान्धाता जो २१ वीं पीढ़ी में थे।

महाराज अम्बरीष
| कई पीढ़ी
| के बाद
राजा धर्मपाल
| सातवीं पीढ़ी
राजा समाधिर

राजा गुणाधीश — राजा मोहन दास

राजा धर्मदत्त — राजा शुभंकर — (राजा मोहन दास से) | दसवीं पीढ़ी — राजा अग्रसेन

राजा धर्मदत्त
कई पीढ़ी | के बाद |
राजा हर्षवर्धन
(वैशवंशी राजकुल के आदि पुरुष)

राजा शुभंकर
कई पीढ़ी | के बाद |
राजा तेंदूमल
कई पीढ़ी बाद |
राजा वाराक्ष [महाभारत युद्ध में पाण्डव पक्ष में लड़ा था।
| "
राजा धुरधर
| "
राजा परमाल
| "
राजा अहिवरन
(बरनवाल जाति कुल के आदि पुरुष)

राजा अग्रसेन
(अग्रवाल जाति के आदि पुरुष)

जाति भाष्कर नामक ग्रंथ के रचयिता पं० ज्वाला प्रसाद शास्त्री ने भी ग्रंथ के पृष्ठ ११९ व १४१ में लिखा है कि महाराज धनपाल प्रतीप नगर (चन्द्रावती) के राजा थे। उनकी सातवीं पीढ़ी में "महाराज समाधिर" हुये। उनके दो पुत्र हुये। बड़े का नाम गुणाधीश" व छोटे का नाम मोहनदास था। मोहनदास की दसवीं पीढ़ी मे महाराज अग्रसेन पैदा हुये। और गुणाधीश के वंश में धर्मदत्त व शुभंकर दो पुत्र पैदा हुये।

शुभंकर की सन्तानों में कई पीढ़ी के बाद महाराज तेंदूमल पैदा हुये। शताब्दियों के बाद भीषण तूफान आने के कारण उनके वंशज चन्द्रावती से चल कर बुलन्दशहर के "अहार" नामक स्थान में आकर आबाद हुये। उन्हीं के वंशज प्रतापी राजा वरन थे।

राजा लक्ष्मण सिंह, डिप्टी कलक्टर बुलन्द शहर, द्वारा लिखित "इतिहास-बुलन्द शहर के पृष्ठ १९४ व २९७ से भी प्रकट होता है कि कस्बा बरन (जिसको आज बुलन्दशहर कहते हैं) को महाराज अहिबरन ने आबाद किया और उनकी सन्तान अब तक इस कोट पर आबाद हैं।

इसी पुस्तक के पृष्ठ १९५ व २४४ पर लिखा है कि कस्बा "अहार" पाण्डवों की हुकूमत ने एक सूबे का सदर मुकाम था परन्तु जब पाण्डवों की सन्तान "राजा जन्मेजय" ने "अहार" में यज्ञ किया तो "अहार" और उसके निकटवर्ती इलाकों को ब्राह्मणों को दान में दे दिया था।

"अहार" ही महाभारत काल में ख्याति प्राप्ति 'खाण्डव वन" था। राजा अहिबरन ने महाभारत के चार सौ वर्ष बाद अपने नाम पर उसका नाम बरन शहर रक्खा।

[०३] वरन पर इस्लामी आक्रमण और प्रभाव

अहिबरन की सन्तानें ३८ सौ वर्ष सन् ९९१ इस्वी तक राज्य करती रहीं। परन्तु दसवी शताब्दी के अन्त में समय ने पल्टा खाया। सन् ९९७ ई० में अलीगढ़ के राजा हरदत्त डोर ने बरन शहर पर आक्रमण करके रुद्र पाल को हराकर उनका बध करके "बलाय कोट" दुर्ग का निर्माण किया।

सन् ११९१ ई० में शहाबुद्दीन गोरी ने बरन शहर पर आक्रमण किया। परन्तु दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान की सहायता के कारण पराजित होकर लौट गया।

सन् ११९२ ई० में शहाबुद्दीन गोरी ने जब पृथ्वीराज चौहान को पराजित कर लिया तब उसके सेनापति कुतुबुद्दीन ने किला बरन को जा घेरा : 'इतिहास बुलन्दशहर' के पृष्ठ १९६ व २०४ के अनुसार बरन दुर्ग के राजा के दो नमकहराम नौकरों अजय पाल डोर व हीरा सिंह द्वारा लालच में आकर दुर्ग का द्वार खोल देने के कारण सेनापति कुतुबुद्दीन ने सेना के साथ किले में घुस कर राजा चन्दर्सन डोर का बध कर डाला और बरन शहर की बागडोर गोरी सुलतान के दोस्त काजी नूरद्दीन गजनीवाल को सौंप दी।

सन् १३३० ई० को बादशाह मुहम्मद तुगलक का वरन शहर पर निर्दयता पूर्ण आक्रमण हुआ। बादशाह ने सम्पूर्ण वरन शहर के निवासियों के इस्लाम धर्म स्वीकार न करने पर सामूहिक वध कराया और प्रतिष्ठित पुरुषों के सिर कटवाकर दुर्ग के कंगूर पर लटकवा दिये। उसी समय काफी वैश्य जन जिन्हें हिन्दू धर्म से प्यार था अपना सर्वस्व छोड़ कर देश के अन्य भागों में विशेष कर देश के पूर्वी भाग में जाकर बस गये। कुछ लोग इस्लाम धर्म स्वीकार कर के वहीं तथा आस पास व दिल्ली के पास जाकर बस गये। जो बरनी मुसलमान नाम से आज भी पाये जाते हैं।

सोलहवीं शताब्दी के अन्त में अकबर बादशाह ने परगना बरन की कानूनगोई बरनवालों के लिये तजबीज की और लाला सन्तोष राय बरनवाल जाति के पहले कानूनगोय हुये। लगभग ढाई सौ साल तक यह पद इसी खानदान में बना रहा।

औरंगजेब बादशाह के समय में उन्हीं सन्तोष राय के वंशज कालेराय इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिये और उनका नाम अजमत उल्ला हुआ। उन्हें पुरस्कार स्वरूप शाही दरबार में नवाब का पद और ८४ ग्राम की जागीर प्रदान की गई।

कालेराय की दो सन्तानें श्री फतहचंद व गोपीनाथ व पोता हकीकत राय अपने धर्म में दृढ़ रहे—किन्तु पिता द्वारा धर्मच्युत हो जाने से लज्जित होकर बरन शहर छोड़कर बाहर चले गये। कालेराय उर्फ अजमतउल्ला के संतानों की इतनी अधिक वृद्धि हुई कि वे बुलन्दशहर व आस पास के इलाके हापुड़, मेरठ, सम्भल, बिसौली आदि स्थानों में बरने मुसलमान या शेख के नाम से जाने जाते हैं।

'इतिहास बुलन्द शहर' पृष्ठ २०२ व २०४ से प्रकट होता है कि १८७६ ई० में बरनवालों से बने मुसलमान मुहम्मद शहाबुद्दीन मेवाड़ में सम्मानित पद पर रहे। और इन्होंने बलाय कोट में एक मस्जिद का निर्माण कराया जो अभी भी है।

बरन शहर (बुलन्द शहर) के अन्तिम ख्याति प्राप्त बरनवाल वंश के प्रसिद्ध पुरुष लाला शीतल दास सन् १८३० ई० में कानूनगोय हुये। उन्होंने बरन शहर में अपने नाम से शीतलगंज बसाया। यात्रियों के विश्रामार्थ शीतल सराय का निर्माण कराया और कई ग्रामों की जमींदारी भी खरीदी जो आज भी उनके सन्तानों के हाथ में सुरक्षित है।

सन् १७९८ ई० में शहर बरन से माला गढ़ तक मराठा सरदार माधव राव फालांकिया ने आक्रमण कर यवन बादशाहों को पराजित कर अधिकार कर लिया। सन् १८०४ में कर्नल जेम्स ने आक्रमण कर मराठों को पराजित किया।

[०४] विभिन्न उपनाम व अल्ले

शहर बरन के पतन के बाद बरनवाल जाति नेतृत्व विहीन हो जाने के बाद तितर बितर हो गई और निम्न उपनाम अपने नाम के साथ लगाने लगी :–

लाला, बख्शी, हकीम, कानूनगोय, पिंडारे, मोदी, गोयल, कांकियां, अतरासीवाल, मुसद्दी, चिकरिया, बेरिया, सतपुत्रा, गुहिया, गुंधेले, लेडिया, इमिलिया, कटारिया, कोटवाले, चौधरी, पटवारी, कटरावाले, कठेरिया, कशिजिया, परतरिया, नागर, बजाज, परोतन, सिमरिया।

हकीम लिखने वाले बनरवाल शाही समय से ही ताम्रपत्र प्राप्त ख्याती प्राप्त हकीम हो चुके हैं। और उनके वंशज अभी भी हकीम पेशा में हैं–बुलन्दशहर में हकीम मुकुट लाल अभी भी प्रसिद्ध हैं।

बरनवाल जाति के मुंगेर व फैजाबाद के कुछ लोग, जो काफी साधन सम्पन्न रहे हैं, वे अपने नाम के आगे सिंह भी लिखते रहे हैं।

[०५] जाति-एकत्रीकरण का प्रयास

बरनवाल जाति के विद्वान लोगों ने चिन्ता न कर अपने समाज के एकत्रीकरण के लिये तथा एक स्थान से दूसरे स्थान के बनरवाल बन्धुओं तक अपनी बात पहुंचाने के लिये एक पत्रिका की आवश्यकता महसूस की। पत्रिका सन् १९२१ से सन् १९२४ तक बा० कुञ्ज बिहारी लाल जी मुरादाबाद, सन् १९२४ से १९३१ तक डा० त्रिवेणी प्रसाद बरनवाल बनारस, फिर सन् १९३५ के बाद तक बा० बेचूलालजी जफराबाद (जौनपुर), तथा पुनः डा० त्रिवेणी प्रसाद जी के संपादकत्व में सुचारू रूप से चलती रही।

अधुना सम्पादक डा० प्रेमप्रकाश शास्त्री वाराणसी हैं।

[०६] श्री भारतवर्षीय बरनवाल वैश्य महासभा
[१९०५ से १९८४ तक]

सम्मेलन	वर्ष	स्थान-शहर राज्य	अध्यक्ष
प्रथम	१९०५	काशी, उ० प्र०	स्व० गौरी शंकर (बलिया)
द्वितीय	१९०६	बुलन्दशहर उ०प्र०	स्व० प्रसादी लाल (बुलंदशहर)
तृतीय	१९०७	मऊ आजमगढ़ उ० प्र०	स्व० महादेव प्रसाद (गोरखपुर)
चतुर्थ	१९०८	अयोध्या उ० प्र०	स्व० विन्ध्याचल प्रसाद रईस (गोरखपुर)
पंचम	१९०९	देवरिया	स्व० विन्ध्याचल प्रसाद रईस (गोरखपुर)
छटा	१९१८	मुंगेर बिहार	स्व० रायबहादुर दिलीप नारायण सिंह (मुंगेर)
सातवां	१९१९	सुल्तानपुर उ०प्र०	स्व० धर्म नारायण सिंह (मुंगेर)
अठवां	१९२०	बरहज	स्व० गोविन्द प्रसाद (बलिया)
नवां	१९२१	फूलपुर, आजमगढ़	श्री भरत प्रसाद (कोइरीपुर)

सम्मेलन	वर्ष	स्थान शहर, राज्य	अध्यक्ष
दसवां	१९२२	सैदपुर (गाजीपुर)	श्री भरत प्रसाद (कोइरीपुर)
ग्यारवां	१९२३	काशी उ० प्र०	स्व० शिवशंकर प्रसाद मुख्तार (आजमगढ़)
बारहवां	१९२४	मिर्जापुर उ०प्र०	स्व० केसरी लाल जी (बहजोई)
तेरहवां	१९२५	कानपुर उ० प्र०	स्व० बाबू हरिदास जी (आजमगढ़)
चौदहवां	१९२६	मैरवा (छपरा)	स्व० ब्रह्मचारी रामानंद (दरभंगा)
पन्द्रहवां	१९२७	आजमगढ़ उ० प्र०	स्व० हरिहर प्रसाद (बलिया)
सोलहवां	१९२९	काशी उ० प्र०	स्व० देवकीनंदन प्रसाद (मुंगेर)
सत्रहवां	१९३१	जौनपुर उ० प्र०	स्व० रायबहादुर दिलीप नारायण सिंह (मुंगेर)
अठारहवां	१९३२	देवरिया उ० प्र०	स्व० रायबहादुर दिलीप नारायण सिंह (मुंगेर)
उन्नीसवां	१९३७	रक्सौल	स्व० मास्टर गणेश प्रसाद गुप्त (बरहज)
बीसवां	१९३८	मऊ	स्व० देवकीनंदन प्रसाद (मुंगेर)
इक्कीसवां	१९३९	गोरखपुर	श्रीमती गोदावरी देवी (लखीमपुर-खीरी)
बाइसवां	१९४०	हाजीपुर (मुजफ्फरनगर)	स्व० डा० त्रिवेणी प्रसाद (काशी)
तेइसवां	१९४१	शेखपुर मुंगेर	श्रीमती गोदावरी देवी (लखीमपुर-खीरी)
चौबीसवां	१९४४	महराजगंज (सारण)	बाबू धर्मदत्त गुप्त (आजमगढ़)
पच्चीसवां	१९४४	बेतिया	स्व० प्रो० जयदेव प्रसाद गुप्त (चन्दौसी)
छब्बीसवां	१९४५	बारसलीगंज (गया)	स्व० कृष्ण प्रसाद रईस (मुंगेर)
सत्ताइसवां	१९४६	खमरिया, बनारस	बाबू विष्णु लाल जी (भागलपुर)
अट्ठाइसवां	१९४७	लखीमपुरी-खीरी	बाबू हरि नारायण प्रसाद (बेतिया)
उन्तीसवां	१९४८	बहजोई (मुरादाबाद)	बाबू शिव गुलाम प्रसाद (बेतिया)
तीसवां	१९५०	काशी उ० प्र०	स्व० खेद हरण लाल (बिहार शरीफ)
इकतीसवां	१९५१	गिरीडीह	श्री गदाधर प्रसाद (छपरा)
बत्तीसवां	१९५२	बैजनाथ धाम	स्व० शीतला प्रसाद (मिर्जापुर)

सम्मेलन	वर्ष	स्थान शहर, राज्य	अध्यक्ष
तेतीसवां	१९५३	झुमरी तलैया	श्री राम वृक्ष लाल (बेतिया)
चौतीसवां	१९५५	पटना	श्री भुवनेश्वर प्रसाद (पटना)
पैंतीसवां	१९५७	गया	श्री भुवनेश्वर प्रसाद (पटना)
छत्तीसवां	१९५८	आसनसोल	स्व० डा० त्रिवेणी प्रसाद (काशी)
सैंतीसवां	१९६०	काशी	श्री कृष्ण चन्द्र प्रसाद (बेतिया)
अड़तीसवां	१९६४	गोरखपुर	श्री भुवनेश्वर प्रसाद (पटना)
उन्तालिसवां	१९६७	वाराणसी	श्रीमती गोदावरी देवी (लखीमपुर-खीरी)
चालीसवां	१९६८	बुलंदशहर	प्रो० रघुनाथ प्रसाद (गोरखपुर)
इकतालिसवां	१९६८	सम्भल (मुरादाबाद)	श्री सत्य नारायण प्रसाद (आजमगढ़)
बयालीसवां	१९७१	लखनऊ	श्री सत्य नारायण प्रसाद (आजमगढ़)
तेतालिसवां	१९७६	राजगृह	श्री जमुना प्रसाद (गया)
चौवालिसवां	१९७८	वाराणसी	श्री निवास गोयल (बरेली)
पैंतालिसवां	१९७१	झंझारपुर (मधुबनी)	श्री विन्ध्याचल प्रसाद (वाराणसी)
छयालिसवां	१९८४	लखीमपुर-खीरी	श्री विन्ध्याचल प्रसाद (वाराणसी)

कार्यालय का पता—बरनवाल धर्मशाला बड़ी पियरी—वाराणसी

महामन्त्री का पता—डा० जगदम्बाप्रसाद बरनवाल

नं० ४३ प्राध्यापक निवास। काशी विद्या पीठ—वाराणसी।

[०६] अन्य संस्थायें

(१) भारतवर्षीय बरनवाल युवक संघ

अध्यक्ष—कैलाश नारायण बरनवाल। कैलाश रंग इन्डस्ट्री। खमरिया (बिहार)

मंत्री—प्रवीण प्रकाश बरनवाल। संकटा देवी मार्ग (लखीमपुरी-खीरी)

(२) अ० भा० (पश्चिमी क्षेत्र) वैश्य बरनवाल महासभा। मुरादाबाद

अध्यक्ष—श्री महेन्द्र पाल गुप्त M.A.

(प्राध्यापक—सम्भल (मुरादाबाद)

महामन्त्री—श्री भगवत स्वरूप गुप्त। नवाबपुरा। मुरादाबाद

(३) बरनवाल समिति लखीमपुर खीरी

अध्यक्ष—इन्द्रेश कुमार। बरनवाल।

(४) बरनवाल धर्मशाला बड़ी पियरी, वाराणसी।

(५) बरनवाल धर्मशाला वैद्यनाथ धाम (बिहार)।

अध्याय-१०

कसौंधन वैश्य

(०१) शाब्दिक विश्लेषण

कसौधन—शब्द 'कसौन्दन' का अपभ्रंश है, ऐसी कुछ लोगों कि मान्यता है। कसोन्दन शब्द व्याकरण से 'कस+उन्दन' से मिलकर बना बताते हैं। कस=कम ('गति शासनयोः) 'कस्' धातु से 'अच' प्रत्यय होता है।

'उन्दन'=उन्दी क्लेदने 'नन्द्यादि गण होने से ल्यू प्रत्यय बना। अतः उन्द+अन=उन्दन बना। 'द्रव्यादि साहाय्येन राष्ट्र प्रगती शासनम् दृढ़ी करोति।' यानी राष्ट्र की प्रगति में शासन को द्रव्यादि से सहायता कर जो राष्ट्र को दृढ़ करता है वह 'कसोन्दन' है

कसौंधन शब्द की एक और भी व्याख्या है। ऋक् ३।४।४।५।६ की एक ऋचा के अनुसार निघुट 'धेनोः शब्द 'वाक्य या कशा' का पर्याय है। प्राचीन काल में संपन्नता 'गोधन' से ही आंकी जाती थी। धेनोः अर्थात् कशा में धन शब्द जुड़ने से 'कशाधन' बना। जिसका अर्थ हुआ गोयें ही हैं धन जिनका ऐसा 'कशाधन' ही कालान्तर में 'कसौधन' बन गया।

'भार्गव आदर्श हिन्दी शब्द कोशानुसार 'कसौधन' कशाधन' कुत्सधन, कसोन्दन का शाब्दिक अर्थ इस प्रकार से होगा। कसौधन=क=प्रकाश। स=ज्ञान। औ=अनंत। ध=धर्म न=धन। अर्थात, वह व्यक्ति (या समुदाय) जो अनंत ज्ञान, धर्म, धन (आध्यात्मिक भौतिक दोनों), से प्रकाशित (परिपूर्ण) है।

अथवा कशाधन=क=प्रकाश। श=शास्त्र। आ=महेश्वर। ध और न का पूर्वानुसार। अर्थात-जिसने शास्त्र धर्म से धन प्राप्त कर (प्रकाशित कर) उसे ईश्वरार्पण कर दिया है।

एक विचित्र संयोग

कसोन्दन, कसौधन कश्यपधन का मूल्यांकन बीजगणितानुसार इस प्रकार होगा। स्वरों में अ-आ-इ-ई आदि को १-२-३-४ आदि के अंकों से तथा व्यंजनों में क-ख आदि को १-२ आदि के क्रम से अंक दें। ऐसा करने पर मूल्यांकन इस प्रकार होगा॥

कसोन्दन—क१+स३२+ओ६+न२०+द१८+न२०=१०० सौ

[०२] प्रागैतिहासिक कथाओं में

महर्षि अङ्गिरा के वंश में एक कुत्स ऋषि हुये हैं। इन्होंने धन सम्बन्धी एक ऋचा का दर्शन किया था: एवेन्द्राग्नि पयिवांसा सुतस्य विश्वा स्मभ्यं सजयतं धनानि। तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मदितिः सिन्धुः पृथ्वी उतदयोः ॥ऋग. ।१।।१६।१०८।७३॥" अर्थात्—हे इन्द्र अग्नि इस प्रकार सोमपान कर हमें मारा धन दो, जिससे मित्र वरुण, अदिति, समुद्र, पृथ्वी और आकाश हमारे धन को पूजे। कुत्स ऋषि द्वारा 'प्राथित' इस धन सम्बन्धी ऋचा को लेकर लोग उन्हें 'कुत्सधन' कहने लगे जो आगे किसी समय में इनके वंशजों का उपनाम हो गया जिसका अपभ्रंश 'कसौधन' है।

[०·२१] कुछ लोग उपजाति का स्रोत कश्यप ऋषि से मानते हैं

उनका तर्क यह है कि इस मन्वन्तर के प्रारम्भ के सात ऋषियों में से कश्यप हुये हैं। इन्हीं के नाम पर इस पृथ्वी को (काश्यपी) कहा गया है। यथा—"ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि त्वया स्पृष्टानि काश्यपि। तेनेमां मृत्तिकां त्वत्तो गृहच स्यास्येऽय मेदिनि।' (वराह प्र० अ० ३६।३७ मिट्टी लेने का मंत्र)॥ जहां पर श्री कश्यप जी ने प्रथम सृष्टि की वह स्थान 'कश्यप मेरू' नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसी को बाद में कश्मीर कहा गया। काश्मीर में केसर की खेती होने से भी पहिले केसर धन तदुपरान्त कसौंधन कहा जाने लगना सम्भाव्य है। 'कश्यप' की पत्नी 'अदिति' से विवस्वान' हुये। इनकी 'संज्ञा' नाम्नी पत्नी से 'वैवस्वत मनु' हुये। वैवस्वत के इक्ष्वाकु, नृग धृष्ट शर्याति, नरिष्यंत प्रांशु, नाभाग, दिष्ट, वरुण, पृषध्र ये दस पुत्र हुये। इनमें आठवें दिष्ट से वैश्य वंश चला। यथा दिष्ट पुत्रों नाभागो इयता मगमत्त स्माब्दं बलं धनः पुत्रोऽभवत् ॥वि० प्र० ४।१।१६॥ अर्थात्:—दिष्ट से नाभाग, नाभाग से 'बलंधन' हुये। बलधन वैचप, सस्कृति ये तीन 'वैश्य'। मंत्र, द्रष्टा ऋषि हुये। यथा— बलधनश्चैव वन्दनश्च संस्कृतिश्चैव ते त्रसः ते य मंत्र कृता सेषा वैश्या नाम प्रवराः सदा ॥म०पु०१३२॥" इन्हीं बलंधन के वंशजों ने पूर्वषा कश्यप के नाम में बलंधन का 'धन' जोड़कर अपने को 'कश्यप धन' कहना शुरु किया जो कि अपभ्रंश हो 'कसौंधन' नाम से आज भी विद्यमान है॥ बलंधन का एक नाम 'भलनदन' भी मिलता है। यथा दिष्ट पुत्रस्तु नाभागो कर्मणा वैश्यतां गतः। भलनंदन सुतस्तस्य वत्स प्रीतिर्मन्दनात् ॥ (वर्ण विवेकानुसार चं० शु० ६ सं० १७५६ को प्रकाशित पंडित [भीम सेन की पुस्तक से। ब्राह्मण प्रेस इटावा]

[०३] प्रवर और गोत्र

'महर्षि देवल' का प्रवर 'काश्य' 'असित' 'देवल' है। शाण्डिल्यादि साठ प्रयन्त हैं। यथा 'शाण्डिलाः कोहलाः उदमेधा इत्यादच षष्ठच वत:।' महर्षि देवल के ही वंश में 'ऊर्जोदत' हुए हैं। ऊरुजा 'वैश्य' हैं। यथा 'अरूजा वैश्यः इत्यम इन्ही ऊर्जोदत्त के वंश में 'धनदत' हुये हैं। धनदत के वंशजों ने अपने पूर्वज 'कश्यप' के नाम में धनदत का 'धत' जोड़ अपने को 'कश्यप धन' कहना प्रारम्भ किया जो 'कसौधन' के रूप में रूढि हो गया॥

०४] कसौधन वंश का गोत्र कश्यप

शाखा—कौस्पुनी। सूत्र—गोभिल। वेद—साम। पाद—बाम शिखा—बाम। और देवता विष्णु, हैं। ['गोत्र प्रवर्तक कश्यप जी की जन्म तिथि चैत्र शु० एवम् पुरी पीठाधीश्वर के अनुसार है।

पत्रिकाओं का नाम

1. **कसौंधन बन्धु।** प्रधान कार्यालय कसौंधन संस्थान।
संचालक—श्री सज्जन लाल कसौंधन। गांधी नगर-सुलतानपुर उ० प्र०

2. **कसौंधन जागृति**—प्रधान सम्पादक-आचार्य केदारनाथ गुप्तM.A मुहल्ला—रमेड़ी-हमीर पुर। (उ०प्र०)

3. **कसौंधन प्रगति**—सम्पादक-डा०आर०ऐस० गुप्ता।

नं 18 सिनेमा लाईन। राजनंद गाँव (M P.)

अखिल भारतीय कसौंधन महासभा

अध्यक्ष—डा० दाऊ जी गुप्त M.A., Ph.D. भूतपूर्व मेअर। कारपोरेशन। नन्द निकेतन। नाका हिंडोला। लखनऊ
महामन्त्री—श्री राम गुलाम गुप्त। किला बाजार-बरेली

राष्ट्रीय सम्मेलन

1982 — सतना (म० प्र०)
1983 —जबलपुर (म०प्र०)

प्रमुख संस्थान-पंचायती मंदिर एवं अतिथि भवन। अयोध्या (उ०प्र०)

—०—०—

अध्याय ११

माहेश्वरी वैश्य

०१) ऐतिहासिक किवदन्ती

चौहान जाति के सूर्यवंशी राजा खडगल सेन खड़ेला नगर में राज्य करते थे। खडगल सेन बहुत ही दयालु और न्यायप्रिय थे। उनके राज्य में प्रजा बहुत ही सुखी थी। राजा को सदैव एक ही चिन्ता थी कि मेरे एक भी पुत्र नहीं है। एक समय राजा ने बड़े आदर भाव से ब्राह्मणों को बुलाकर बड़ा सत्कार किया। राजा की सेवा भक्ति से प्रसन्न होकर ब्राह्मणों ने वर मांगने को कहा। तब राजा ने ब्राह्मणों से कहा कि मेरे पुत्र नहीं है। तब ब्राह्मणों ने राजा से कहा कि यदि आप महेश भगवान की उपासना करोगे तो आपको एक होनहार पराक्रमी और चक्रवर्ती पुत्र होगा। परन्तु उसे १६ वर्ष तक उत्तर दिशा में न जाने देना। सूर्य कुण्ड में स्नान न करे और ब्राह्मणों से द्वेष नहीं करेगा, तो राज करेगा।

राजा के चौबीस रानियाँ थी। कुछ समय बाद रानी चम्पावती के पुत्र जन्म हुआ। राजा ने बड़े हर्षोल्लास के साथ आनन्द मनाया और नवजात शिशु का नाम सुजान कुंवर रक्खा। सात वर्ष की अवस्था मे ही राजकुमार घोड़े पर चढना व शस्त्र चलाना सीख गया। राजा ने इस बात का ध्यान रक्खा कि सुजान कुंवर उत्तर दिशा में न जाने पाये।

इसी समय में एक प्रबुद्ध जैन साधु ने आकर राज-पुत्र को जैन धर्म का उपदेश देकर शिव के मत के विरुद्ध कर दिया। १४ वर्ष की अवस्था में शिव मत के विरूद्ध होकर जैन धर्म मानने लगा। देव पूजा नहीं होने देता था। तीनों दिशा पूर्व, पश्चिम, दक्षिण जाकर जैन धर्म का प्रचार करता था। उसने ब्राह्मणों को बड़ा दुख दिया। राजा के भय से राजकुमार उत्तर दिशा में नहीं जाता था। लेकिन राजकुमार एक बार अपने ७२ उमरावों के साथ उत्तर दिशा में सूर्य कुन्ड पर चला ही गया। वहां पर ब्राह्मणों को यज्ञ करता देख क्रोधित हुआ। राजकुमार की आज्ञा से उमरावों ने इन ब्राह्मणों को बहुत कष्ट दिया। तब इन ब्राह्मणों ने क्रोधित होकर शाप दिया कि तुम सब इसी समय पाषाणवत हो जाओ। तब ७२ उमराव और राजकुमार घोड़ों सहित पाषाण वत हो गये। राजकुमार के शाप ग्रसित होने की खबर से महाराजा खडगल सेन ने इसी दुःख में प्राण तक त्याग दिये। इनके साथ इनकी १६ रानियां भी सती हो गयीं। शेष आठ रानियां रावले में रहीं। जब राज्य की रक्षा करने वाला कोई नहीं रहा तो आस-पास के राजाओं ने राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया और जीता हुआ राज्य अपने राज्य में मिलाते रहे। इधर राजकुमार की रानी और ७२ उमरावों की पत्नियां रोते हुये रुदन करती उन ब्राह्मणों की शरण में गईं, जिन्होंने उनके पतियों को शाप दिया था। और उनके चरणों में गिर पड़ीं। यह हाल देखकर ब्राह्मणों को दया आ गई और कहा कि हम शाप तो दे सकते हैं लेकिन शाप मुक्त करना अपना काम नहीं है। तुम लोग पास की गुफा में जाकर शिव की आराधना करो। शिव भगवान और पार्वती ही शाप से छुटकारा दिला सकते हैं। सब ही स्त्रियां पास की गुफा में गईं और भक्ति के साथ शिव की साधना करने लगी। एक दिन भगवान शिव पार्वती के साथ घूमते-घूमते उधर आ निकले जहां राजकुमार अपने ७२ उमरावों और घोड़ों के साथ पत्थर के होकर पडे थे। इन मूर्तियों को देखकर पार्वती ने भगवान शिव से इन मूर्तियों के बारे में पूछा। तब शिव जी ने मूर्तियों को देखकर पार्वती जी को पुरानी कहानी बता दी।

इसी समय राजकुमार की रानी व ७२ उमरावों की पत्नियां आकर पार्वती जी के चरणों में गिर पड़ीं और रुदन करते हुये अपनी व्यथा प्रकट करने लगीं। पार्वती जी से इन स्त्रियों की व्यथा सुनी नहीं गई तो उन्होंने शिव जी से इनको शाप मुक्त करने की प्रार्थना की। इस पर शिव भगवान ने उनकी मोहनिद्रा को छुड़ाकर उनको चेतन किया। सब चेतन हो भगवान शिव को प्रणाम करने लगे। राजकुमार जैसे ही चेतन अवस्था में आया पार्वती जी के स्वरुप से लुभायमान हो गया। यह देखकर मां पार्वती ने उसे शाप दिया कि हे कुकर्मी तू भीख मांग कर खायेगा। और तेरे वंश वाले हमेशा भीख मांगते रहेंगे। वे ही आगे चलकर "जागा" कहलाये।

बहत्तर उमराव बोले कि हे भगवान अब हमारे घर बार तो नष्ट हो गये। अब हम क्या करें ? तब शिव जी ने कहा तुमने पूर्व काल में क्षत्रिय होकर स्वधर्म त्याग दिया और इसी कारण तुम क्षत्रिय न होकर वैश्य पद के अधिकारी होगे जाकर सूर्य कूण्ड में स्नान करो। सूर्य कुण्ड में स्नान करते ही तलवार से लेखनी, भालों से डांडी और ढालों से तराजू बन गये। भगवान महेश के द्वारा प्रतिबोध देने के कारण ये बहत्तर उमराव "माहेश्वरी" वैश्य कहलाये।

जब यह खबर ब्राह्मणों को मिली कि महादेव जी ने बहत्तर उमरावों को शाप-मुक्त किया है तो उन्होंने आकर शिव जी से प्रार्थना की कि हे भगवान आपने इनको तो शाप से मुक्त कर दिया लेकिन हमारा यज्ञ कैसे पूरा होगा ? तब शंकर जी ने इन उमरावों को उपदेश दिया कि आज से ये ऋषि तुम्हारे गुरु हुये। इन्हें तुम अपना गुरु माना करना। शिव जी ने ब्राह्मणों से कहा कि इनके देने को इस समय कुछ नहीं है, परन्तु इनके घर में मंगल कार्य होगा तब यथाशक्ति दान दक्षिणा दिये जायेंगे। तुम इनको स्वधर्म में चलने की शिक्षा दो। ऐसे वर देकर भगवान शिव और पार्वती अन्तर्ध्यान हो गये।

ब्राह्मणों ने इनको वैश्य धर्म धारण कराया। तब ७२ उमरावों में से एक-एक ऋषि के १२-१२ शिष्य हुये। वे ही अब यजमान कहे जाते हैं। कुछ समय बाद खण्डेला छोड़कर ये सब डीडवाना आ बसे। वे बहत्तर उमराव खांप के डीड माहेश्वरी कहलाये। यही दिन ज्येष्ठ सुदी नवमी का दिन था जब माहेश्वरी वैश्य कुल की उत्पत्ति हुई और दिन प्रतिदिन यह वंश बढ़ने लगा।

[पत्रिका माहेश्वरी-मित्र-मंडल मेरठ से साभार]

०२) अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा—

अध्यक्ष (1984-85)—श्री हरी कृष्ण मुन्द्डाल,
M T Cloth Market—इन्दौर

महामन्त्री—श्री रघुनाथ दास सोभानी।
नं० – P-16 New C.I.T.Rd+कलकत्ता—73

०३) अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन—

अध्यक्ष (1984/85)—श्रीमती ज्ञान कुमारी हूंडा।
नं० 36 बाबर रोड। दिल्ली -1

मंत्राणी " ,, —श्री मति मनोरमा लड्ढा—ग्वालियर

०४) अखिल भारतीय माहेश्वरी युवा संगठन का मासिक सूचना पत्र

—'युवा महेश्वरी" नाम से निकलता है जिसका कार्यालय 84/22 फजलगंज। कानपुर-12 में है। इसके सम्पादक श्री पुरुषोत्तम लढा [शारदा भवन नं० 8/193 आर्यनगर-कानपुर-२] हैं। वे ही युवा सगठन के महामन्त्री हैं।

अध्यक्ष—श्री चन्द्रमोहन नागोरी। सम्पादक नवप्रभात सर्राफा बाजार ग्वालियर मध्य प्रदेश।

०५) निम्नलिखित नगरों में इनकी आबादी तथा शाखायें हैं :—

उत्तर प्रदेश—माहेश्वरी पंचायती धर्मशाला, 30/5 चावल मंडी कानपुर-1, माहेश्वरी धर्मशाला बालाबार। सहारनपुर-1, उझानी [बदायूं], हाथरस (अलीगढ), नजीबाबाद (बिजनौर), बिल्सी (बदायूं), सहसवान (बदायूं), बदायूं, मथुरा, मैनपुरी, अतरौली (अलीगढ़), लखनऊ प्रयागपुर (बहराइच), सिकन्दराबाद, हापुड, इटावा, भरथना, जलेसर, फर्रूखाबाद, वाराणसी महेश्वरी इन्टर कॉलेज कासगंज, छर्रा, उरई, मेरठ

मध्य प्रदेश—महेश्वरी रामोला मन्दिर बडाबदा (रतलाम), उदयपुरा (रायसेन), सनाबद (निमाड़), आगर (मालवा), माहेश्वरी भवन पिपरिया, भोपाल, बैरसिया, बुरहानपुर, मन्दसौर, महेश्वरी समाज भवन नीमच, जावद, महेशनगर इन्दौर मुरैना, रतनगढ़, बालोद, राजनन्द गांव, रायपुर, छिन्दवाड़ा, इटारसी सिवनी, माहेश्वरी भवन सीहोर, बामोरा, गादरवाडा, जबलपुर, कुम्भ राज (गुना), सिरपुर (कागजनगर)।

राजस्थान—माहेश्वरी भवन चौडा रास्ता जयपुर।, बांरा (कोटा), भीलवाड़ा, राजगढ (अजमेर), माहश्वरी पंचायत भवन सांभर लेक, माहेश्वरी भवन किशन गढ़, माहेश्वरी भवन नाथद्वारा कपासन (चित्तौड गढ़), मसूदा, छबडा, महेश्वरी भवन नारायणा (जयपुर), महेश्वरी भवन (जैसलमेर), नसीराबाद, निवाहेडा, भीनमाल, महेशभवन बीकानेर, सरदार शहर, महेश्वरी पंचायत भवन कुचामन सिटी, बनेड़ा, माहेश्वरी भवन ब्यावर, फलोदी सुजान गढ, शाहपुरा, नागौर, अजमेर, श्री गंगानगर महेश्वरी धर्मशाला जोधपुर, बाडमेर, अलवर, पर्वतसर, डीड़वाना, जुनिया।

महाराष्ट्र—बाला जी मन्दिर नासिक, गुरुकुन्ज आश्रम (अमरावती), माहेश्वरी भवन अमरावती, माहेश्वरी भवन अकोला, वर्धा, यवतमाल, जलगांव, परभणी, अहमदनगर, भिवंडी, थाना, माहेश्वरी भवन नागपुर, खामगांव, माहेश्वरी भवन धामण गांव, गोंदिया, उस्मानाबाद, अकोला, सोलापुर, पढरपुर, धूलिया, जालना, नान्देड, इगतपुरी।

हरियाणा—सिरसा, सोनीपत

कर्नाटक—बांन्ड नगर दाण्डेली, रायचूर

बंगाल—कलकत्ता

गुजरात—अहमदाबाद, जामनगर

दिल्ली—सीताराम बाजार,

आसाम—महेश्वरी भवन सिलीगुड़ी गोहाटी, कालिमपांग।

बिहार—महेश्वरी भवन रांची, पूर्णियां, झरिया,

उड़ीसा—सम्बलपुर

आन्ध्र—बेलचपल्ली, हैदराबाद, विजयवाड़ा, वारंगल

०६) **जाजु स्मार्क ट्रस्ट**—कार्यालय नं० १ इजरा स्ट्रीट कलकत्ता-7 जो दस लाख रुपये की पूंजी से स्थापित है। छात्रवृत्तियाँ तथा असहायसहायतादि हेतु निर्मित। मैनेजिंग ट्रस्टी 1984/85—श्री राधेश्याम चित्रलाँकिया।

शारदा प्लाई वुड इन्डस्ट्री लिमिटेड नं०—4 राम सेठ रोड। कलकत्ता-8

०७) **महेश्वरी मित्र मंडल मेरठ**—कार्यालय नं० 388 ब्रह्मपुरी-मेरठ सिटी

०८] **समाचार पत्र**

1. महेश्वरी—काटन मार्केट नागपुर।
2. महेश्वरी सेवक—बीकानेर (राजस्थान)
3. महेश्वरी संदेश—
4. महेश्वरी संगठन—नं० 108 सीतला माता बाजार। इन्दौर
5. महेश्वरी संकल्प—सम्पादक श्री महेशराठी। मालवानी गली। ब्यावर (राजस्थान)
6. श्री अभय छत्रलानी का इन्दौर से प्रकाशित—नई दुनिया
7. श्री रामगोपाल महेश्वरी द्वारा संचालित नव भारत जो नागपुर, एवं रायपुर, भोपाल और जबलपुर से दैनिक प्रकाशित होते हैं।' तथा अंग्रेजी में M.P. Chronicle भोपाल एवं रामपुर से प्रकाशित होता है।
8. श्री चन्द्रमोहन नागौरी का "नव प्रभात" दैनिक ग्वालियर से प्रकाशित है।

०९) प्रमुख पुरुष

१) सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में श्री कृष्णदास जाजू का नाम उल्लेखनीय है, जो विनोबा भावे के पट्ट शिष्य थे। उन्हीं की स्मृति में महेश्वरी बन्धु प्रति वर्ष एक रक्त दान मेला लगाते हैं जिसमें स्वस्थ बन्धु रोगियों हेतु अस्पतालों में जाकर रक्त देते हैं। यह आयोजन उनके जन्म दिवस 29 अगस्त को प्रति वर्ष होता है।

२) स्व० दामोदर राठी जन्म शताब्दी 16-1-83 से एक वर्ष तक मनाई गई। उनको तिलक युग में राजनैतिक आन्दोलन का प्रचुर आर्थिक सहायक कहा जाता है।

३) आर्थिक क्षेत्र में बिरला परिवार से सभी परिचित हैं। अब 1985 में वे टाटा-ग्रुप को पीछे कर के भारत के सर्वोच्च उद्योगपति के पद पर पहुंच गये हैं। रुई और पटसन का कलकत्ता में लदान व्यापार से प्रारम्भ करके वे अब कपड़ा, जूट, मोटर-कार आदि सभी कुछ बनाते हैं।

राजा जुगल किशोर बिरला की धार्मिक प्रवृति थी और वे हिन्दू संगठन के पक्षधर थे। भारत के हर नगर और हर धार्मिक स्थल (हिन्दू, बौद्ध एवं आर्य) पर बिरला मन्दिर और धर्मशालायें उन्होंने बनवाई थीं।

पर उनके अनुज श्री घनश्याम दास बिरला ने SECULAR प्रवृतियों में स्वअर्जित धन अर्पित किया। रांची और पिलानी के विशाल इन्जीनियरिंग कौलेज तथा दर्जनों ग्रेजुएट एवं पोस्ट ग्रेजुएट कौलेज, कलकत्ता आदि का प्लेनेटोरियम उनकी देन है। स्वराज्य आन्दोलन के समय पुष्कल धन उन्होंने कांग्रेस तथा अन्य देशोद्धारक संस्थाओं को दिया था बिरला बन्धुओं के बिना इस देश की कल्पना ही नहीं है। अद्यतन 1984 से उनके पुत्र श्री कृष्ण कुमार बिरला राज्य सभा के सदस्य भी हैं।

—०—०—०—

अध्याय-१२

कमलापुरी वैश्य

(०१) प्रागैतिहासिक

स्मृतिकारों और उनके अनुयायियों ने सभी उप-जातियों को संकर वर्ण की कोटि में रखने की परिपाटी चला दी थी। चाहे जिस कारण (नाम भेद या निवास-स्थान भेद) से जातियों का जन्म हुआ हो तथा अनुलोम और प्रतिलोम विवाह के फलस्वरूप स्मृतिकार तथा उनके अनुयायीगण ब्राह्मणेतर जातियों को किसी-न-किसी प्रकार संकरवर्ण में सम्मिलित करते रहे हैं।

[अ] "जातिमाला" ग्रन्थ में कमलापुरी वैश्य :—रुद्रजामल 'तन्त्र-शास्त्र" के रचियता ने 'जातिमालान्तर्गत' कमलापुरी वैश्य को संकरवर्ण माना है। प्रसंगानुसार रूद्रजामल के शिव-परशुराम सम्वाद' में "जातिमाला" में जातियों, उप-जातियों का वर्णन आया है। उसी में वर्णन करते हुए वैश्य वर्ण की उप-जातियों में कमलापुरी वैश्य का भी उल्लेख हुआ है। इस पर एक टिप्पणी श्रोत्रिय बदरीनाथ शर्मा ने दी है। प्रसंग इस प्रकार है : सर्वप्रथम चतुर्वर्ण की सृष्टि हुई। इसके पश्चात् काल-क्रम में अन्यान्य जातियों व उप-जातियों की उत्पत्ति हुई। "जम्बूदीप में दस प्रकार के विप्र हुए—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल, उत्कल, द्राविड़, महाराष्ट्री, तेलङ्गी, गुज्जर और काश्मीरी।" ये सभी स्थान-बोधक विशेषण मात्र हैं। तदनन्तर संकरवर्णों का वहां वर्णन है।

संकरवर्णों के वर्णन के प्रसंग में लिखा है—

वैश्य से अम्बष्ट-कन्या में राजपुत्र पैदा होता है जो राजवशी के नाम से प्रसिद्ध है। अम्बष्ट से राजवंशी-कन्या में गन्धिक वणिक हुआ जो गन्ध बनिया के नाम से प्रसिद्ध है [जिसमें से गान्धी जी थे।] गन्ध बनिये की स्त्री में राजवंशी द्वारा शङ्ख कारक हुआ जो सखेरा के नाम से विख्यात है। उसके वश में ताम्रकूट से काँसकार पैदा हुआ जो कसेरे के नाम से प्रसिद्ध है। ताम्रकूट से शंखकाट स्त्री में मणिकार हुआ जो मणिहारी बनिया के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मणिकार से ताम्रकूटी में मणिबन्धक पैदा हुए जो 'कमलापुरी वैश्य" के नाम से प्रसिद्ध है" (देखिये—जातिमाला", पृष्ठ-५।)

[ब] परन्तु कमलापुरी वैश्य के विषय में यजुर्वेद भाष्यकार विद्यावारिधि पंडित श्री ज्वाला प्रसाद मिश्र, महामहोपदेशिक, भारत-धर्म महामण्डल, बनारस ने अपने "जाति-भास्कर' नामक ग्रन्थ में निम्न प्रकार लिखा है—

"कमलापुरी वैश्य—यह वास्तव में कमलापुर के रहने वाले हैं, पीछे जौनपुर आ रहे। इनमें कुछ धनी भी हैं और कमलापुरी उपनाम जौनपुरी कहाते हैं। वाचस्पत्य बृहद्विधान में कमलापुर का वर्णन है (कमलालय महालक्ष्मी: कमलाख्यं महेश्वर:)। राजतरङ्गिणी में तरङ्ग ४; श्लोक ४८४ (राजा मल्हान पुरकृच्चक्रे विपुल केशवम्। कमला सापि नाम्ना स्वं कमलाख्यपुरं व्यधात्॥) कर्मविपाक संहिता के नवतितम (१६०) अध्याय में (पश्चिमायां महादेवी जवनस्यपुरं महत्) है। इन प्रमाणों से जवनपुर पाया जाता है। वैश्य लोग लक्ष्मी के पूजन करने वाले होते हैं। लक्ष्मी का नाम कमला है। कमलापुर के रहने से कमलापुरी कहाये। भलन्दन और काश्यप आदि इनके गोत्र हैं।" (देखिये—"जाति-भास्कर", पृष्ठ १४०-४१, विद्यावारिधि पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र कृत एवं श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई द्वारा मुद्रित।)

इस वर्णन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि कमलापुरी वैश्य कमलापुर के निवासी थे। बाद में रोजगार व्यापार के सिलसिले में वे किसी जवनपुर में जा बसे जिससे उस स्थान का विशेषण भी कमलापुरी विशेषण के साथ सम्बद्ध हो गया। ये लोग जवनपुरी-कमलापुरी या कमलापुरी जवनपुरी या कमलापुरी और जवनपुरी के विशेषण से अपना निर्देश करने लगे।

०२) आधुनिक ऐतिहासिक तथ्य

भारतीय वैश्यों की उपजाति "कमलापुरी वैश्य' उस प्राचीन वैश्य-वर्ग की सन्तान है जो कश्मीर-स्थित 'कमलापुर' स्थान के मूल-निवासी थे। कमलापुर कश्मीर में ८ वीं शताब्दी-काल में एक समृद्ध नगर था, जिसका वर्णन १२ वीं शताब्दि में विरचित कश्मीर के महाकवि कल्हण के प्रख्यात संस्कृत इतिहास-ग्रन्थ-'राज-तरंगिणी' में अंकित है। कमलापुर के मूल-निवासी होने के कारण यह उपजाति 'कमलापुरी वैश्य' के नाम से जानी-पहचानी जाती है।

कमलापुर का इतिहास

कमलापुरी वैश्य की परिस्थिति से पूर्णतः परिचित होने के लिए कमलापुर का इतिहास समझना आवश्यक है। इसका इतिहास कश्मीर के इतिहास के साथ सम्बन्ध है। इस कमलापुर का निर्माण काश्मीर के कारकोट वंशी राजा जयापीड़ की गौड़-देशीया द्वितीया भार्या (पत्नी) द्वारा हुआ था, जिसका नाम कमला देवी था। यह स्थान कश्मीर में है।

कश्मीर के प्राचीन गोनदीय राजवंश के अंतिम राजा बालादित्य को कोई पुत्र नहीं हुआ। अतः उसने अपनी एकमात्र कन्या अनङ्ग-लेखा को अपने एक राज-कर्मचारी दुलर्भवर्द्धन के साथ ब्याह दिया। दुलर्भवर्द्धन को एक उच्च पदाधिकारी भी बना दिया गया। बालादित्य की मृत्यु के बाद दुलर्भवर्द्धन का राज्याभिषेक हुआ। सन् ६०२ ई० में बालादित्य के निधन के साथ प्राचीन गोनन्दी राजबंश का अन्त हो गया।

दुर्लभवर्द्धन ने अपने नये राजवंश का शुभारम्भ किया जिसका नाम अपने कुल-वंश के रक्षक 'कारकोट' नामक नाग देवता के नाम पर 'कारकोट वंश' नामकरण किया। श्री सी० वी० वैद्य दुर्लभवर्द्धन को स्थानीय नागवंशी वैश्य जाति का मानते हैं। (देखिये—History of Mediavel Hindu India Vols I & II–C. V. Vaidya, M. A. LL. B.) और वैश्योचित उपाधि 'वर्द्धन' भी इस कथन को पुष्ट करती है। अतः यह भी एक वैश्य राजवंश का प्रादुर्भाव हुआ। इस काल में इधर भारत में महाराजा हर्षवर्द्धन का एकाधिपत्य था। वे भी वैश्य वंशीय राजकुल के थे।

इस 'कारकोट राजवंश' में कुल १७ राजा हुए। इन्होंने २५४ वर्ष तक राज्य-शासन किया जिसकी कालावधि सन् ८५६ ई० तक है। इस वंश के शासन-काल में कश्मीर की सभी प्रकार से वृद्धि-समृद्धि हुई।

दुर्लभवर्धन ने ३६ वर्ष तक कुशलतापूर्वक राज्य-संचालन किया था। सन् ६३७ ई० में उसका स्वर्गवास हो गया। उसके उपरान्त कश्मीर के राज्य-सिंहासन पर उनका उत्तराधिकारी दुर्लभक पदासीन हुआ। उसने अपना नया नाम 'प्रतापादित्य' रखा। इनकी पत्नी रानी प्रकाश देवी भी श्री सी०बी० वैद्य के मतानुसार एक वैश्य कन्या थी। दुर्लभक को चन्द्रापीड, तारापीड और मुक्तापीड नामक तीन पुत्र रत्न हुये थे।

राजा दुर्लभक के देहावसान के पश्चात चन्द्रपीड राजा बना। वह अपने पिता की भांति सुशासक के रूप में प्रसिद्ध हुआ और ८ वर्षों तक राज्य का शासन-दायित्व वहन किया। इसके लोभी भाई तारापीड ने तन्त्र-मन्त्र शक्ति से इसकी हत्या करवा दी। बाद में वह स्वयं राजा बन बैठा। वह अत्यन्त क्रूर और निरंकुश शासक था। इसके अत्याचार-अनाचार से क्षुब्ध होकर इसकी प्रजा ने ही इसे मौत के घाट उतार दिया। इसने केवल ४ वर्ष तक ही शासन की बागडोर सम्भाली।

ललितादित्य :—तारापीड के मरणोपरान्त तीसरा भाई ललितादित्य मुक्तापीड़ ने राज्यग्रहण किया। यह कश्मीर के इतिहास में एक महान् प्रतापशाली राजा के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इसकी यशकीर्ति अनेक देशों के इतिहासों के पृष्ठों में अंकित है। विश्व के इतिहास के विजेता राजाओं की भांति इसने भी हर्षवर्द्धन और समुद्रगुप्त के जीवनादर्शों को दृष्टि-पथ में रखकर विश्व-विजय अभियान के लिये अपने सैन्य-दल-बल के साथ प्रस्थान किया।

'राजतरंगिणी'—में कल्हण ने ललितादित्य की दिग्विजय का उल्लेख किया है। सन् ७०० ई० में ललितादित्य राज–सिंहासन पर पदारूढ़ हुए। इसने कन्नौज के राजा यशोवर्मन को पराजित किया और इसके अतिरिक्त गौड, कलिंग, कर्नाटक, कावेरी की समतल भूमि, सप्तकोङ्कण, सौराष्ट्र, अवन्ति आदि प्रदेशों को जीत कर अपने अधीन कर लिया। इनकी मृत्यु कश्मीर से दूर कहीं अन्यत्र हो गई थी।

दिग्विजय से उपलब्ध असीम धन-वैभव से ललितादित्य ने कश्मीर को आपूरित कर दिया। बिहार, मठ, मंदिर आदि धार्मिक कार्यों के निर्माण में धन-राशि व्यय की गई। उसने भूतेश नामक शिवमन्दिर को करोड स्वर्ण-मुद्रा दान दिया। उस ने परिहासपुर नामक नगर बसाया। उसमें परिहास-केशव की रजत-प्रतिमा प्रतिष्ठापित की। बहुत से अन्यान्य मन्दिर आदि बनवाये।

कमलाहट्ट का निर्माण-कार्य :—ललितादित्य की रानी कमलावती ने अपने नाम से "कमलाहट्ट" नामक बाजार बसाया।

> राज्ञी कमलावत्यस्थ कमलाहट्टकारिणी।
> राजत विपुलाकारं कमलाकेशव व्यधात् ॥२२८॥
>
> —राजतरंगिणी, तरंग-४

और उस बाजार में कमला-केशव की चांदी की मूर्ति स्थापित की। यही 'कमलाहटट' आगे चलकर जया पीड़ के राज्य काल में कमलापुर के नाम से ख्याति लाभ किया। जिसका कारण जयापीड की एक प्रेमिका कमला देवी थी। अतः वहां तक का इतिहास देना अभीष्ट हैं। ललितादित्य की मृत्यु सी० वी० वैद्य, के अनुसार सन् ७६६ ई० में हुई।

ललितादित्य के निधन के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र कुबलियापीड़ ने राज्य-संचालन का भार ग्रहण किया। वह बडा बहमी राजा था। एक वर्ष और पन्द्रह दिन राज्य करके वह सिंहासन छोड़कर जंगल में चला गया। इसके उपरान्त इसका वैमात्रेय राजा बना। वह भोगविलास में लिप्त रहा। सात वर्ष तक राज्य-संचालन कर वह दिवंगत हुआ।

उसके अनन्तर वैमात्रेय के दो पुत्र पृथिव्यापीड और संग्रामपीड सिंहासनारूढ हुए। पृथिव्याहीड ने चार वर्ष और संग्रामपीड ने सात वर्ष तक राज्य शासन चलाया।

जयापीड़:—फिर वज्रादित्य के कनिष्ठ पुत्र जयापीड़ ने राज्य के शासन-सूत्र को सम्भाला। उसकी छत्र-छाया में एक बार फिर से कश्मीर के सुख सौभाग्य का सूर्योदय हुआ। 'राजतरंगिणी में कविइतिहासकार कल्हण ने २५७ श्लोक में इस यशस्वी राजा के शासन काल का चित्रण किया है।

जयापीड अपने दादा ललितादित्य मुक्तापीड की भांति लोक प्रसिद्ध कथानकों के नायक हुए। इसने 'विनयादित्य' की उपाधि ग्रहण की थी जो मिश्रित धातुओं से निर्मित कारकोट सिक्के पर अंकित पाई जाती है।

राज्याभिषेक के पश्चात शीघ्र ही राजा जयापीड़ ने अपने पिता महाराजा ललितादित्य मुक्तापीड़ की यश-कीर्ति को पुर्नस्थापन करने के निमित्त दिग्विजय के लिये सैन्य-शक्ति के साथ प्रस्थान किया।

प्रयाग में अपनी सेना को सेनापति के अधीन सौंपकर राजा जयापीड छद्मवेष में अकेले भ्रमण करते हुए गौड़ (बंगाल) पहुंच गये। वहां पर भ्रमण-क्रम में वे पौण्ड्र वर्द्धन (आधुनिक राजशाही) नगर में पहुंचे। वहाँ का शासक जयन्त था जो गौड़ नरेश के आधिपत्य में था।

इस समृद्धिशाली नगर को अवलोकन-निरीक्षण कर छद्मवेषी राजा जयापीड़ मंत्र-मुग्ध हो गये। वहाँ कुछ दिन वे रुक गये। एक दिन वे कौतूहलवश कीर्तिकेय के मंदिर में नृत्यावलोकन करने गये। राजा जयापीड स्वयं भारत-नाट्य कला में प्रवीण थे। वे वहीं एक किनारे एक शिला के सहारे बैठ गये। उसकी देदीप्यमान शौर्यपूर्ण मुखाकृति ने कमला नाम की नर्तकी को मोहाक्रांत कर दिया। उसने सोचा, ऐसा प्रतीत होता है कि यह कोई राजवंशी पुरुष है। उसने उसमें राजा के गुण-लक्षण देखे। उसने अपनी एक सहनर्तकी को छद्मवेषी राजा के निकट भेजा और उसे अपने निवास स्थान पर बुलवा लिया। राजा कुछ दिनों तक वहीं कमला के सम्पर्क-साहचार्य में रहकर भोग-विलास में लिप्त रहे।

एक दिन की घटना है। राजा जयापीड सन्ध्या करने नगर से दूर नदी के किनारे पर गए थे। उनके आने में विलम्ब होने के कारण कमला अत्यधिक चिन्तित हुई। राजा के पहुंचने पर उसने वहां एक विशालकाय सिंह के रहने के विषय में चर्चा की। यह सुनकर जयापीड़ सन्ध्या समय कृपाण धारण कर नगर से बाहर निकल पड़ा उसने सिंह को चुनौती देकर आमन्त्रण किया। सिंह ने बाहर निकल कर राजा जयापीड़ पर आक्रमण किया। राजा ने अपनी बांह सिंह के मुख पर डाल दी और साथ ही कृपाण से सिंह का हृदय विदीर्ण कर दिया। सिंह तत्क्षण मर गया। राजा जयन्त स्वयं उस घटना-स्थल पर गये जहाँ सिंह का प्राणान्त किया गया था एक राजकर्मचारी ने मृत सिंह के जबड़े से एक केयूर निकाल कर दिया जिस पर राजा जयापीड़ का नामांकित था।

राजा जयन्त अपने मत्री और पुरजनो के साथ कमला के घर ठहरे हुये छद्मवेषी राजा जयापीड़ के पास पहुंचे। वे उन्हें अपने यहां ले आये। अपनी एकलौती पुत्री कल्याण देवी का विवाह राजा जयापीड़ से कर दिया। तब जयापीड़ ने अपने श्वसुर को गौडाधिपति से युद्ध करके उन्हें स्वतन्त्र कर दिया। फिर अपने देश कश्मीर के लिए प्रस्थान किया। गौड़ देश की विजय के साथ कमला देवी और कल्याण देवी को साथ लेकर वे कश्मीर चल दिये।

कश्मीर लौट कर राजा ने विजयोत्सव मे अपनी प्रियाओं के साथ नगर इत्यादि बसाये, मन्दिर इत्यादि बनवाये। जयन्त की पुत्री कल्याण देवी ने अपने नाम पर 'कल्याणपुर' नामक नगर बसाया। राजा जयापीड़ ने 'मल्हाणपुर' बसाया और वहां पर विपुलकेशव नामक विष्णु का मन्दिर बनवाया। कमला देवी ने अपने नाम पर 'कमलापुर' नामक नगर बसाया।

जयापीड़ विद्या और कलाओं को प्रोत्साहन-प्रश्रय देकर अपने दादा ललितादित्य मुक्तापीड़ से भी नाम-यश में बहुत आगे बढ़ गये। ३१ वर्ष तक राज्य-सुख भोग कर शासन संचालन का कार्य दायित्व अपने पुत्र ललितापीड़को सौंप सन् 78‿ ई० में वे इस धरती से उठ गये।

उत्पल के पुत्र अवन्ति वर्मन ने कारकोट-वंश के अन्तिम राजा अनंगापीड़ को गद्दी से उतार कर स्वय सिंहासनरुढ होकर 'उत्पल-राजवंश' का आरम्भ किया।

'कमलापुर' नगर-निर्माण :—इसकी निर्माण विधि ७५१ ई० और सन ७८२ ई० के मध्य का समय माना जाता है।

इसका व्यापार-कार्य सम्पूर्ण उत्तरापथ तथा मध्य भारत और भरोच आदि बन्दरों से विदेशों के साथ होता था। राजाओं के वैश्य-वंशीय होने के कारण व्यापारी लोगों को विशेष प्रश्रय एवं-सुविधायें उपलब्ध थीं। काश्मीरी वैश्य समुदाय श्रेणीबद्ध होकर कश्मीर से वाराणसी, पाटलिपुत्र, कन्नोज, गौड़, अग, अवन्ति आदि स्थानों पर व्यापार के लिये जाते-आते थे।

कमलापुर से कलमपोर :— भाषा विज्ञान के आधार पर 'कमलापुर' का 'कमलपोर' होना अत्यधिक स्वाभाविक तथा समीचीन है,।

भास्क ने भी अपने 'निरूक्त' नामक ग्रन्थ में इस प्रकार के ध्वनि परिवर्त्तन के विषय में लिखा है—'अथाद्यन्त विपर्ययों भवति स्तोक रज्जुः सिकता इति'। इससे उचित प्रामाणित होता है कि 'कमलापुर' भी 'कलमपोर' में बदल गया। आज यही नाम प्रचलित है।

यही सोपियन से श्री नगर को जाने वाले मार्ग के किनारे ७४°५४' अक्षांश तथा ३३°४८' देशांतर पर बसा हुआ 'कमलपोर' गांव है।

—०—●—०—

.०२ मूल निवास से निर्गमन एवं प्रसार

कालान्तर में कश्मीर के अन्तर्गत मुसलमान शासकों के शासन काल में हुए उत्पीड़न एवं दुर्व्यवहार के फलस्वरुप अथवा वाणिज्य व्यापार के क्रम में कमलापुरी वैश्य समुदाय कश्मीर से निकल कर पंजाब में निवास करने के उपरान्त विभिन्न दलों में भारत के अन्यान्य क्षेत्रों में जी-जाकर बसते गए। परिणाम स्वरुप, एक दल गंगा-यमुना के उत्तरवर्त्ती व्यापार-मार्ग से आगे बढ़ता हुआ वर्तमान उत्तर-प्रदेश के विभिन्न नगरों में, और फिर धीरे-धीरे उत्तर बिहार, नेपाल तराई, बंगाल तथा असम प्रदेश के क्षेत्रों में फैलता गया। दूसरा दल गंगा-यमुना के दक्षिणी मार्ग से अवन्ति, महा कोशल (वर्तमान मध्य प्रदेश), महाराष्ट्र और दक्षिण बिहार को बढ़ता गया। कालक्रम से स्थानान्तरों में 'कमलापुरी वैश्य' के 'कमलापुरी' विशेषण में यदा-कदा अन्तर आता गया और अपभ्रंश रूप में 'कवलापुरी, कमालपुरी, कमलापति, कमलापुरी जैसे नामों से भी इस समुदाय के सदस्य परिचित होते रहे। बाद में वर्तमान शताब्दि के द्वितीय दशक से समुदाय की सगठन-संस्था अखिल भारतीय कमलापुरी वैश्य महासभा' के तत्कालीन कर्णधारों के प्रयासों के फलस्वरुप सभी विकृत नामों का निराकरण हो एक संशोधित नामकरण 'कमलापुरी वैश्य' प्रचलित होता आ रहा है।

आधुनिक निवास के अंचल

कमलापुरी वैश्य समुदाय के लोग वर्तमान समय में भारत के निम्नांकित अंचलों में प्रमुख रूप से पाए जाते हैं :—

बिहार—छपरा, दरभंगा, पटना, पलामू, रांची, मुजफ्फरपुर, सहरसा जमशेदपुर, चम्पारण, मधुबनी, सीतामढ़ी, भागलपुर, नालन्दा, नेपाल तराई।

उत्तर प्रदेश—गोंड़ा, बस्ती, बहराइच, इलाहाबाद, कानपुर, गोरखपुर देवरिया, फैजाबाद, जौनपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, गाजीपुर नेपाल, तराई।

मध्य प्रदेश—सरगुजा, रायगढ, जबलपुर, सतना।

प० बंगाल—कलकत्ता, टीटागढ़, आसनसोल, कूचबिहार, बीरभूम।

असम—कछार एवं अन्य निकटवर्ती क्षेत्र।

महाराष्ट्र—बम्बई नागपुर।

.०३ गोत्र एवं धार्मिक संस्कार

कमलापुरी वैश्य जाति में विशेषतया, भलन्दन, गर्ग, नाग, कर्कट पराशर आदि गोत्र हैं। इनमें कुछ गोत्र वंश-जन्य है, जैसे नाग इस नाग वंश का कारकोट राजवंश भी था), और कर्कट (जो कार कोट राजवंश का ही द्योतक है)।

आजकल कमलापुरी वैश्य समुदाय के सदस्य विशेषतया वैष्णवी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। कुछ शैव, कुछ शाक्त, कुछ नानकशाही तथा कुछ आर्य समाज के मतावलम्बी भी हैं। ये यज्ञोपवीत धारण करते हैं और द्विजात्योजित धार्मिक संस्कार एवं कर्मकाण्डों का आचरण करते हैं। सामान्यतः खान-पान में निरामिष भोजी हैं।

.०४ रीति रिवाज

विवाह संस्कार सम्बन्धी कमलापुरी वैश्य समुदाय की कुछ निजी विशेषताएँ हैं। जिनका निर्वाह परम्परागत तौर पर ये अभी तक करते आ रहे हैं। उदाहरणार्थ—

(क) विवाह के पूर्व वर-पक्ष और कन्या-पक्ष क्रम से कन्या और वर का निरीक्षण अनिवार्यतः करते हैं तथा अधिकांशतः जन्मकुण्डलियों का भी मिलान किया जाता है।

(ख) तिलक-दहेज के रूप में किसी भी रकम का कोई प्रचलन नहीं है।

(ख) तिलक के रस्म पर (जिसे 'वर-रक्षा' कहा जाता है) कन्या पक्ष वाले वर का पूजन फूल-पान, मिष्ठान एवं वस्त्रादि से करते हैं।

घ) विवाह के अवसर पर-पक्ष वाले वधू के लिये एक डोरे में बंधा और रेशम में लपेटा आभूषण (जिसे ताग-पाट-ढ़ोलना' कहते हैं) एक लाल रेशम की चोली और एक कुसुम रंग में रगी चुनरी लाते हैं।

मृतक श्राद्ध संस्कार स्थान-भेद से कमलापुरी वैश्यों में भी कहीं 13 दिन और कहीं 15 दिन पर सम्पन्न होता है।

.०५ आबादी

सारे भारत में कमलापुरी वैश्य समुदाय की अनुमानित कुल आबादी १० लाख के लगभग है। इस कुल आबादी का प्रादेशिक विभाजन अनुमानित इस प्रकार है :—

बिहार 4 लाख, उत्तर प्रदेश 3 लाख, मध्य प्रदेश 1 लाख, प० बंगाल 1 लाख, महाराष्ट्र 50 हजार, असम 50 हजार

2—Census of India, 1901 Vol. VII, Bengal Part II (भारत की जन-गणना, खण्ड-7, बंगाल-2) जाति का उल्लेख= पृष्ठ 223 पर।

3—Census of India 1921, India Part II (भारत की जन गणना 1921, भारत भाग-2) बनिया भाग के अन्तर्गत जाति का उल्लेख।

4—Census of India 1931 United Provinces of Agra & Oudh Chapter XII (भारत की जनगणना 1931, आगरा और अवध का संयुक्त प्रांत) अध्याय-12 में कमलापुरी वैश्य जाति की उत्पत्ति, संगठन, गोत्र, धर्म एवं आचार-व्यवसाय पर समसामयिक तथ्यात्मक विवेचना-पृष्ठ 691।

5—Census of India 1941, Vol. VII Bihar Appendix) (भारत की जनगणना 1941, खण्ड-7, बिहार परिशिष्ट) बिहार प्रदेश में अधिविकसित कमलापुरी वैश्यों की जनसंख्या के तत्कालीन आकडे पृष्ठ 28।

.०६ दिवंगत विभूतियां

कमलापुरी—समाज की दिवंगत विभूतियें में कुछ प्रमुख के नाम जो वर्तमान शताब्दि के पूर्वार्द्ध तक प्रतिष्ठित रहे, निम्न हैं:- जो शिरोमणि सभा के अध्यक्षादि पदों पर रहे हैं:—

(१) श्री रघुवीर साहु गुप्त, छपरा (२) वैद्य रघुवीर प्रसाद गुप्त, छपरा (३) श्री भोलानाथ कमलापुरी, केराकत, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, (तत्कालीन ऑनरेरी मजिस्ट्रेट) (४) श्री रामनारायण साहु गुप्त सहरसा (सम्मानित जमींदार व रईस)। (५) डा० छेदीलाल, गोरखपुर उ०प्र०। (६) अध्यापक गणेश प्रसाद, लखनऊ उ०प्र०। (७) श्री गया प्रसाद, इलाहाबाद, उ०प्र०, प्रख्यात कागज-व्यवसायी। (८) लाला महावीर प्रसाद, इलाहाबाद, (९) डा० रघुनन्दन प्रसाद, छपरा, (१०) डा० रामकृष्ण प्रसाद गुप्त, पटना सिटी. आर्य समाज के नेता (११) श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त, मधुबनी (स्वतन्त्रता-सेनानी एवं उद्योगपति) (१२) श्री सुन्दर लाल, पटना सिटी, उद्योगपति। (१३) श्री मातादीन गुप्त, उतरौला। (१४) श्री रामनाथ कमलापुरी केराकत, जि० जौनपुर, (१५) श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त, छपरा प्रख्यात जौहरी,। (१६) श्री शिवनन्दन प्रसाद, छपरा। (१७) श्री राम दयालु प्रसाद गुप्त, कलकत्ता (लाह-व्यवसायी) (१८) श्री राम नारायण साहु, पलामु बिहार। (१९) श्री रघुनन्दन साहु गुप्त छपरा

वर्तमान शताब्दि के उत्तरार्द्ध-काल की दिवंगत विभूतियों में प्रमुख निम्न थे :-

(१) श्री रामेश्वर प्रसाद, पटना सिटी, महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष (२) श्री रामचन्द्र प्रसाद महाशय, छपरा, (प्रख्यात जौहरी आर्य समाज नेता एवं महासभा के भू०पू० अध्यक्ष) (३) श्री भूषण प्रसाद गुप्त, वकील सहरसा स्वतन्त्रा सेनानी। एवं भूतपूर्व बिहार विधान सभा सदस्य। (४) लाला चुन्नीलाल, इलाहाबाद, (स्वतन्त्रता सेनानी। टाइप फाउन्ड्री उद्योगपति) (५) श्रीमति लखराजी गुप्ता MA, महिला—संघ की संस्थापक अध्यक्ष। (६) श्री मति कामिनी गुप्ता, M.A., B.T. (प्रिंसिपल, आर्य कन्या महाविद्यालय, जबलपुर)

.०७ जीवित प्रमुख व्यक्ति

(१) श्री बालेदीन गुप्त, लखनऊ, भू०पू० अध्यक्ष। (२) श्री दूखन प्रसाद गुप्त, सहरसा, (चीनी—उद्योगपति, तथा भू०पू० अध्यक्ष) (३) श्री रघुवर प्रसाद गुप्त, छपरा (सोना-चांदी के प्रमुख व्यवसायी) कांग्रेस, आर्य-समाज तथा बुलियन मर्चेंट्स एसोसियेशन के मान्य नेता वर्तमान महामन्त्री, (४) डा० रामानन्द गुप्त लखनऊ। इण्डियन सोसाइटी ऑफ टर्माटोलोजी के भूतपूर्व अध्यक्ष, (५) डा० भरत प्रसाद गुप्त M.B.B.S D.T.M.S.H, Ph.D, F.I.A.N.S. पटना, पटना मेडिकल कालिज होस्पिटल के अवकाश प्राप्त चीफ मेडिकल आफिसर, इंडियन सोसायटी आफ ब्लड ट्रांसफ्यूजन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष 'कमलापुरी' पत्रिका के प्रधान संम्पादक), (६) डा० देवेन्द्र कुमार गुप्त M.D. Z.D.V, F.D.S, जबलपुर, जबलपुर मेडिकल कालेज के एक विभागाध्यक्ष। (७) श्री सरयू प्रसाद गुप्त, B.Sc. (Eng. Hons.) VDE (Germy), विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी। (८) डा० अयोध्या प्रसाद साहु MA. Ph D. भागलपुर विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के अध्यक्ष,। (९) डा० शत्रुघन प्रसाद, M.A. Ph.D. किसान कालेज, मोहसराय के हिन्दी विभागाध्यक्ष (१०) श्री राम आधार गुप्त M.A. (११) श्री राम प्रताप गुप्त, गढवा निपलामू, महासभा के वर्तमान कार्यकारी अध्यक्ष हैं। १२) श्री बाबू साहेब, दानापुर, विहार (दानापुर, पटना नगर पालिका के भूतपूर्व अध्यक्ष (१३) श्री सदागंगा प्रसाद, छपरा नगर पालिका के अध्यक्ष। (१४) श्री कामता प्रसाद गुप्त, सहरसा, (बिहार विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य,) स्वतन्त्रता सेनानी (१५) श्री गोर्वधन दास गुप्त, कानपुर उ०प्र०, समाज सेवी, (१६) श्री पन्नालाल सिविल इंजिनियर, समस्तीपुर। (१७) श्री रामबाबू गुप्त 'राज' एम. ए, पटना, पत्रकार 'कमलापुरी' पत्रिका के सम्पादक), (१८) श्री मती रामरती देवी, महिला सघ की वर्तमान अध्यक्षा),

.०८ जातीय शिरोमणि सभा का संक्षिप्त परिचय

'अखिल भारतीय कमलापुरी वैश्य महासभा' की स्थापना १९१५ ई० में उत्तर बिहार के अन्तर्गत छपरा नगर में हुई थी। यह संस्था रजिस्टर्ड संस्था है।

स्थापना—काल से १९८० तक महासभा के अखिल भारतीय स्तर पर आठ महाधिवेशन देश के विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न हुए हैं। इनमें से प्रथम और द्वितीय १९१५ और १९१८ में छपरा में, तृतीय १९२८ में राजचैनपुर में, जि०पलामू में, चतुर्थ १९६२ में जयनगर में, पंचम १९६४ में बलराम पुर में, छठा १९६८ में जि० पलामू में, सातवां १९७७ में, जि० सरगुजा (मध्य प्रदेश) में तथा आठवां १९८० में इलाहाबाद में सम्पन्न हुए थे।

यह महासभा के प्रयासों का परिणाम है कि कमलापुरी वैश्य समुदाय के बिखरे दलों का सम्मिलन एवं एकीकरण होकर विभिन्न विकृत नामों का निराकरण करते हुए एक शुद्ध नामकरण 'कमलापुरी वैश्य' से समुदाय के सभी सदस्य परिचित होते आ रहे हैं। १९७८ से बिहार सरकार द्वारा कमलापुरी वैश्य जाति को पिछडे वर्ग के अन्तर्गत मान्यता भी दी जा रही है।

देश में तिलक-दहेज की बढ़ती हुई कुप्रवृत्ति के बावजूद महासभा के प्रयत्नों के फलस्वरूप समाज में बहुत पहले से चली आ रही परम्परा का निर्वाह होता आ रहा है।

समाज के निर्धन-सह-मेधावी कालेज-छात्रों के सहायतार्थ लगातार १५ वर्षों से छात्रवृत्ति-वितरण का कार्य सुचारू रूप से संचालित।

'रीति-रस्म अधिनियम' १९६४ में पारित और तबसे वह प्रभावी ढ़ंग से सर्वत्र प्रयुक्त।

.०९—त्रैमासिक मुख-पत्रिका 'कमलापुरी' का १९६३ से लगातार २१ वर्षों से सफल प्रकाशन।

अध्याय १३

बाथम वैश्य

अखिल भारतीय वैश्य महासभा की सूची में बाथम वैश्यों को भी गिनाया गया था। अग्रवाल सभा लखनऊ की स्मारिका के एक लेख में बाथम वैश्यों को पुराने अग्रवालों में से ही एक वर्ग माना गया था। बाथम वैश्य समुदाय वैश्यों की एक पुरानी शाखा है जो शुरू में कदीमी वैश्य कहे जाते थे।

०१) बाथम वैश्य शब्द का अर्थ

बाथम शब्द बास्थम्, वास्थमः, वास्तुमः और बाहु स्थम्भ आदि शब्दों का अपभ्रंश है। इन शब्दों का अर्थ बड़ा व्यापारी' या 'विदेशों से आयात-निर्यात करने वाला व्यापारी' है।

(i) वागतौ । ष्ठा (स्था) स्थितौ वातितिष्ठति यत्कुलं स्थिति शीलंगमनशील लब्वयत्कुलं तद्वास्थम् पृषोदशदित्वात्स लोपेवाथम् वैश्यानां व्यवहारादीगमनं क्रय विक्रयार्थ-स्थितिश्च, धर्मः अतः वैश्यार्थ सूचकोऽयं शब्दः सुतराम्भवितुमर्हति (ति)

'वा' धातु का अर्थ है 'गतिशील' और 'स्था' का 'स्थिर' होना है। सयुक्त शब्द वास्थम् का अर्थ है घूम फिर कर और ठहर कर व्यापार करने वाला।

(ii) वातीतिवाः तिष्ठतीतिस्थः वाश्चस्थश्च वास्थौ, वास्थौ माति इति वास्थमः पृषोदरादित्वात्सलोपे वाथमः।

जो व्यापारी जल या जलयान का प्रयोग करके व्यापार करता हो वह बाथम या बाथम वैश्य है।

(iii) वार्पु तिष्ठति यत्कुलं (वाणिज्यार्थं नोकादौस्थित्वा व्यवहार करोति) तद्वार्थम् तस्यापभ्रंशः बाथम् इति एतेनसमुद्रयानेन व्यावहारादिक कुर्वातितेश्यः इत्ययमर्थः अस्माच्छद्वात् सूचितोभवति।

(iv) वास्तौ (वासग्रहे) मा (लक्ष्मीः) यस्य सः वास्तुमः तस्यापभ्रशः बाथमः

जिस घर में लक्ष्मी का वास हो वह वास्तुमः है। इसी शब्द का अपभ्रंश बाथम हो सकता है।

(v) बाहु+स्तमं शब्दों का संयुक्त शब्द 'बाहुस्तम्भ' का अपभ्रंश बाथम हो गया जिसका अर्थ है:—स्तम्भ के समान भुजाओं वाली बली या पराक्रमी जाति।

कुछेक का अन्य मत भी

(vi) **सामवेद की १००० शाखाओं** में से १३ के नाम जैमिनी गृह्य सूत्र [१/१४] में मिलते हैं। सामतर्पण के अवसर पर इनके नाम तर्पण का विधान मिलते है। इनमें कैथुभि का नाम है। पर इन १३ में से केवल ३ की शाखायें ही मिलती हैं। इनमें सर्वाधिक प्रचलित कौथुमि की शाखा है। कौथुमि ही बाथम हो गया है। इसी शाखा का ब्राह्मण ताण्डव-ब्राह्मण है। छान्दोग्य उपनिषद भी इसी शाखा की है।

०२) पेशापरक इतिहास

प्रारम्भ में इसकी कई शाखायें की जो कदीमी वैश्य के नाम से राजपुताना, दिल्ली, गुजरात, कन्नौज तथा समुद्रतट आदि स्थानों में फैली थीं। उत्तर भारत में विशेषतया कन्नौज के लोग कल कारखाने स्थापित करके विभिन्न रासायनिक पदार्थों जैसे-इत्र, तेल, औषधियां, शकर, और गुड़ आदि का उत्पादन करते थे। इनमें से कुछ पदार्थ देश के विभिन्न भागों में तथा शेष विदेशी व्यापारियों के हाथ बेचे जाते थे। कुछ लोग इन वस्तुओं को विदेशी व्यापारियों को देने व उनसे मसाले आदि विदेशी वस्तुओं को खरीद कर देश में घूम-घूम कर बेचने का कार्य करते थे। मुगल काल में समुद्र तट के अतिरिक्त विदेशी व्यापारियों को भारत के अन्दर आने व कोठियां बनवाकर व्यापार करने की आज्ञा मिल गई। अंग्रेज, फ्रेंच, डच, डेन और पुर्तगीज व्यापारियों के मुकाबले में देशी व्यापारियों का धन्धा टिकने न पाया। ऐसी अवस्था में कुछ लोग तो तटीय प्रान्तों गुजरात, बम्बई और मद्रास आदि में बस कर दूसरे धन्धे करने लगे तथा वहीं के वैश्य बनकर रह गये। बहुत से लोग वापस अपने पुराने सम्बन्धियों के पास आ गये। वापिस आकर पंजाब, राजपूताना, दिल्ली तथा कन्नौज क्षेत्रों में तत्कालीन राजाओं की सेना को रसद व अन्य सामग्री सप्लाई करने के ठेके लेने लगे। कुछ ने लेन देन का काम अपना लिया, कुछ जमीन-जागीर खरीद कर जमींदार बन गये, जिनमें एक वर्ग बांगरमऊ के आसपास आज भी विद्यमान है। राजस्थान के तत्कालीन व्यापारियों ने विनाशन के निकट एक अपनी बस्ती 'बाथमी' या 'बाथमपुरी' भी बसाई थी जो आक्रमणों के कारण बाद में उजड़ गई।

मुगलकाल के अन्तिम दिनों में ये जाति पुनः बिखर गई। और थोड़ी-थोड़ी संख्या में जिन प्रान्तों मे गई वहीं की वैश्य जातियों में समा गई। उत्तर भारत के प्रमुख क्षेत्र कन्नौज के लोग भी व्यापार के कारण अन्य स्थानों जैसे शाहजहाँपुर, लखीमपुर, कानपुर, सीतापुर, हरदोई, बांगरमऊ व उन्नाव, मुरादाबाद आदि जिलों में बस कर मुख्यतया ईत्र-तेल, शकर-खांडसारी, गल्ले, कपड़े, बर्तन, कृषि आदि धन्धे अपनाने लगे। मुरादाबाद नगर में इनका एक अपना मोहल्ला बस गया था। कुटीर उद्योग (कल-कारखाने) का काम करने के कारण ही शायद इनको अन्य समाज के लोग कल 'कारखाने वाले' या 'कलवाले' तथा 'कलवाल' कहने लगे। इन शब्दों का जायसवाल बिरादरी के मिलते जुलते आधुनिक नाम 'कलवार' से स्रोत नहीं है, ऐसा बाथम वैश्य लोग कहते हैं।

इस बिरादरी का अपनी शेष शाखाओं से सम्बन्ध (बिहार-वासियों को छोड़कर) समाप्त हो गया। वर्तमान में उत्तर प्रदेश, व बिहार में सीमित होकर अब इनकी बिरादरी ईत्र, तेल, तम्बाकू

खंडसार (केशर, के अतिरिक्त अन्य सभी उद्योगों को अपना रही है। इस बिरादरी के रीति-रिवाज शादी-विवाह और रहन-सहन की विधि साफ-सुथरी रही है।

.०३) कदीमी वैश्य बिरादरी के प्रमुख गोत्र हैं-कौशिक, कश्यप, वशिष्ठ, शांडिल्य, भारद्वाज, भृगु, मरीचि, अत्रि, कुलस्तय, गौतम, धनन्जय, कपिल, पाराशर और गर्ग।

.०४) अखिल भारतीय बाथम वैश्य महासभा

यद्यपि १८३३ से १८४३ के बीच शाहजहांपुर में बिरादरी की बैठकें होती रहीं थीं पर १८९४ में विधिवत संगठन बना दीखता है और तब यह आगरा व अवध प्रान्त की सभा मानी जाती थी। इसके संस्थापक ला० बिहारी लाल वैवदा, मुहल्ला बहादुरगंज निवासी थे। इसके अधिवेशन फिर १८९६, १९००, १९०१, १९०६, १९१४, १९१५, १९२३, १९२४ और १९२७ में शाहजहांपुर, सीतापुर, बिसवां तथा खीरी में होते रहे। इस सभा ने जातीय जनगणना कराई और मुजफ्फरपुर (बिहार) में बसे अपने वर्ग से विवाह सम्बन्ध स्थापित करके उन्हें अपने में आत्मसात कर लिया।

अखिल भारतीय स्तर की महासभा का सूत्रपात १९५६ से लखनऊ से हुआ। और सन १९५८ तक विधिवत केन्द्रीय संस्था का गठन हो गया। इसमें प्रमुख कार्यकर्त्ता थे श्री चन्द्रिका प्रसाद जिज्ञासु, श्याम सुन्दर गुप्त, लक्ष्मी नारायण, लाला टीकाराम सर्राफ तथा आनन्द बिहारी लाल आदि। यह सज्जन ही क्रमशः महामन्त्री भी हुए।

महासभा समाज सुधार के कार्यक्रम में व्यस्त है।

अध्यक्ष—१९८४/८५ श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त विधायक तथा उ प्र० विधान सभा में विरोधी दल के उपनेता।

महामन्त्री—श्री बल्देव बिहारी गुप्त ऐम०ए० नं० ५९४ आलम नगर सीतापुर-१

कार्यकारी अध्यक्ष—श्री श्याम सुन्दर गुप्त, शाहजहांपुर

.०५) धर्मशालायें—(१) लखीमपुर खीरी। अध्यक्ष राम किशोर गुप्त

(२) गोला गोलकरण नाथ स्थित प्रसिद्ध तीर्थ पर स्थित शिव मन्दिर जहां सारे देश के लोग पैदल कांवर में गंगा जल लाकर अर्पित करते हैं, उसका पुनरुद्धार एक बाथम वैश्य सेठ ने ही कराया है।

(३) नया धर्मशाला ग्रीक गज। सीतापुर

.०६) पत्रिका—बाथम वैश्य दीप।

सम्पादक—ज्वाला प्रसाद गुप्त। M.A., M. Com., B.Ed.

प्रकाशक-श्री मदन लाल गुप्त। गोलारोड। लखीमपुर खीरी।

.०७) स्थानीय शाखायें

(i) बाथम वैश्य नवयुवक संघ सीतापुर (उ०प्र०)
संरक्षक—श्री बल्देव बिहारी गुप्त
अध्यक्ष—[१९८४] रामकुमार गुप्त,
मन्त्री—प्रेम किशोर गुप्त

(ii) बाथम वैश्य सभा शाहजहांपुर (उ०प्र०)
अध्यक्ष—८४/८५-श्री परमानन्द गुप्त
मन्त्री—श्री त्रिवेणी सहाय गुप्त एडवोकेट

(iii) बाथम वैश्य सभा लखनऊ [स्थापित-१९५६]
सभापति-८३/८४-श्री कालिका प्रसाद गुप्त
नं० १७७/१३३ जगत नारायण रोड
मन्त्री—श्री शिवकुमार गुप्त नं० ९५ बान वाली गली-(चौक लखनऊ)

नवम्बर ८१ में रजत जयन्ती मनाई गई। जिसके
सभापति—८४/८५-प्रमोद कुमार गुप्त एडवोकेट तथा
स्वागत मन्त्री—उमेश चन्द्र गुप्त थे।

(iii) बाथम वैश्य सभा लखीमपुर खीरी [स्थापित मई १९६८]
संस्थापक—श्री कृष्ण शरण
अध्यक्ष—८३/८४-डा० हरशिव नारायण
मन्त्री—श्री मदन लाल गुप्त
इनका अपना सभा भवन है।

—०—०—०—

अध्याय १४

खण्डेलवाल जाति का इतिहास

०१) प्रागैतिहासिक एवं शाब्दिक और स्थान परक इतिहास

फरवरी सन 1915 के 'खण्डेलवाल हितैषी' के अंक में इनके एक मनीषी स्व० ला० घनश्याम दास भाटानी ने इनके इतिहास पर प्रकाश डाला था।

स्कन्द पुराण में रेखा खण्ड के वें 35 अध्याय से 40 वें अध्याय तक एक कथानक आया है। विश्वामित्र ऋषि ब्रह्म ऋषि बनने के लिये वन में जाकर घोर तपस्या करने लगे। उस अवसर में हरिश्चन्द नाम के अयोध्या के राजा ने 'नर मेध यज्ञ' का आरम्भ किया और वनवासी ऋषि मुनि उस यज्ञ में पधारे। जिस वक्त विश्वामित्र ने यज्ञ के लिये लाये हु नर पशु को देखा (जिसका नाम शुनः शेप था) तो उनका कलेजा करुणा और दया के दरिया में गोता खाने लगा। शुनः शेप ने जब इनका दर्शन किया, उसके हृदय में भी आशालता के अंकुर फूटने लगे और मौका पाकर वह विश्वामित्र के पास जा पहुंचा। उनके चरणों में सिर रखकर अभय दान की भिक्षा मांगने लगा। महर्षि विश्वामित्र के हृदय में उस पर दया उत्पन्न हो चुकी थी इसलिये अभयदान देने में देर नहीं हुई। फौरन दो मन्त्र ऋगवेद के उसको दिये और कहा कि इनको जपते रहने से तेरी प्राण रक्षा होकर राजा का मनोरथ जो देवता तृप्ति का है पूर्ण हो जावेगा। शुनः शेप उन दोनों मन्त्रों को जपता हुआ यज्ञ वेदी के पास पहुंचा तो इन्द्रादि देवता बहुत प्रसन्न हुये और राजा को वरदान देकर यज्ञ को समाप्त करने को कहा और शुनः शेप को प्राण दान देकर अपने-अपने स्थान को चले गये। यज्ञ समाप्त होने पर ऋषि-महर्षि गण जब अपने-अपने आश्रमों को जाने लगे तो शुनः शेप भी विश्वामित्र के साथ हो लिया। विश्वामित्र ने उसको धर्म पुत्र मानते हुए अपने आश्रम में आकर अपने मधुच्छन्दादि 100 पुत्रों को बुलाकर कहा "यह मेरा धर्म पुत्र है सो तुम इनको अपना भाई समझ कर अपने साथ पंक्ति मे बैठाओ।' इस बात को सुनकर 50 पुत्रों ने तो कहा कि 'यह न जाने किस कुल और जाति का मनुष्य है. हमारे साथ नहीं बैठ सकता।' इस उत्तर को सुनकर विश्वामित्र ने क्रोध करके उनको श्राप दिया कि 'तुमने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया, इसलिये तुम भ्रष्ट और पतित हो जाओ।" फिर अपने दूसरे 50 पुत्रों से वही बात कही तो उन्होंने पिता की आज्ञा का पालन कर अपना धर्म समझकर शुनः शेप को बड़ा भाई मानना मंजूर किया। इस पर विश्वामित्र बहुत प्रसन्न हुये। कुछ अरसे के बाद परशुराम जो पिता की आज्ञानुसार मातृहिंसा, भ्रातृहिंसा, क्षत्रिय-वध के पाप निवृत्ति के लिए पृथ्वी परिक्रमा तथा तीर्थ यात्रा करते हुये लोहार्गल तीर्थ में पहुंचे (जो कि जयपुर राज्य में है और लोहागल नाम से प्रसिद्ध है)। वहां ऋषि तपस्या करते थे और परशुराम जी के पितामह (बाबा) होते थे। उनके पास जाकर अपना सब वृतान्त कहा और उनकी आज्ञा से महाविष्णु यज्ञ आरम्भ किया। इस यज्ञ में बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि, ज्ञानी-ध्यानी आदि सब इकट्ठे हुए और बड़े आनन्द से यज्ञ समाप्त हुआ। उस यज्ञ में परशुराम जी ने अपनी जीती हुई सारी पृथ्वी को यज्ञ कराने वाले ब्राह्मणों के लिये दक्षिणा में दे दी। सब कुछ दे सकने के पीछे विश्वामित्र के शुनः शेप आदि 51 पुत्रों को देखकर विचार किया कि इनको क्या देना चाहिये। अब कोई चीज बाकी नहीं रही। सिर्फ सुवर्ण की वेदी (अग्निकुण्ड) अभी तक किसी को नहीं दी गई थीं क्योंकि अव्वल तो सुवर्ण दीयत अग्निकुण्ड इसके लेने की इच्छा किसी ने नहीं की थी। परशुराम ने उन विश्वामित्र के पुत्रों से कहा यह सुवर्ण की वेदी मेरे पास दान से बची हुई है। इसको आप लोग ग्रहण करो। यह कहकर वेदी के सात खण्ड (टुकड़े) किये और फिर एक-एक खण्ड के सात सात कुल 49 टुकड़े किये। और 50 वाँ बाकी रह गया। उन्होंने उन वेदी के 49 टुकडों को फायदे के साथ खरीद लिया और व्यापार करने लगे। सुवर्ण के खण्डों का दान लेने के कारण खण्डेलवाल नाम से प्रसिद्ध ब्राह्मण कहलाने लगे और उन खण्डों को खरीदकर वैश्यवृत्ति (व्यापार) करने से वह खन्डेलवाल वैश्य कहाने लगे और वहां उस लोहागल स्थान में ही कहीं इर्द गिर्द एक ग्राम बसाकर निवास करने लगे जिसका नाम खण्डेला पड़ा। इस तरह यह कथा स्कन्द पुराण से उद्धृत हुई प्राचीन पुस्तकों में मिलती है और अनुमान से भी यह समझ में आती है कि जितने (खण्ड़ेलवाल) ब्राह्मण और वैश्य इस देश में हैं, दूसरे देश में नहीं हैं, तो वह लोग भी अपना अपना निकास इस स्थान का ही बयान करते हैं। और महाभारत वनपर्व अध्याय 117 श्लोक 10 से 19 तक यही कथा है। [वास्तव में यह कथा मूल में ऐतरेय ब्राह्मण में विश्वामित्र के 50 पुत्रों द्वारा शुनः शेप को अपना परिवारी जन मान लेने तक आई है। —संपादक]

०२) एक विशेष कथा

भूतकाल में इस देश ने जीतने पर हारे हुए राजा की कन्या ब्याह लिया करते थे। जब यह रिवाज बन्द हो गया तो उसकी एवज में यह रखा कि विजय चिन्ह भी कुछ होना चाहिये तो उसके द्वार के तोरण को तोडकर भीतर जाना रखा गया। धीरे-धीरे लकड़ी का तोरन बनाना फिर उसको मारना-जारी हो गया। राजपूताने में यह आम रिवाज है।

कई कोषों में तोरण शब्द का आशय यह पाया जाता है कि उत्सव आदि में बाहर के दरवाजे पर लकडी वगैरा की बनाई हुई चीजें और फूल व पत्तों की मालाओं के जो शोभा के लिए सजावट की जाती हैं उसको तोरण कहते हैं। खन्डेल वालों में कन्या के विवाह में काठ या चून के पक्षी बनाकर उसको दरवाजे पर लगाना और दूल्हे (बींद) का छड़ी से उसको गिराना या स्पर्श कर देने की परम्परा है। खण्डेलवाल जाति का प्राचीन निवास स्थान राजपूताना होने से उस पुरानी बात की नकल का चिन्ह यह तोरण मारने की रस्म ही है।

०३) खण्डेलवाल जैन सरावगी एवं विजयवर्गीय बन्धुओं से इनके रीति रिवाज में साम्य है ।

०४) खण्डेलवाल वैश्यों के गोत्र मय ऋषि व प्रवर के

क्रमांक	गोत्र (अल्ल)	ऋषि	प्रवर
१.	आटोरिया	शांडिल्य	शांडिल्य, असित, देवल
२.	आकड़	अव्य	अव्य, बलि, सारस्वत
३.	आमेरिया	आलम्यान	आलम्यान
४.	औढ	गौतम	गौतम, वशिष्ठ, वार्हस्पत्य
५.	कट्टा	अत्रि	आत्रेय, शातातप, सांख्य
६.	कठोरिया	भारद्वाज	भारद्वाज, आंगिरस, वार्हस्पत्य
७.	काइथवार	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
८.	काठ	अनावृक	गार्ग्य, गौतम, वशिष्ठ
९.	कासलीवार	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांस्कृति
१०.	किलकिलिया	आंगिरस	आंगिरस, वशिष्ठ वार्हस्पत्य
११.	कूलवार	शांड़िल्य	शांडिल्य; असित, देवल
१२.	केदावत	गौतम	गौतम, वशिष्ठ, वार्हस्पत्य
१३.	कौडिया(गोरेवाल)	कांचन	अस्वत्थ, देवल, देवराजा
१४.	खारवाल	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
१५.	खूंटेटा	काश्यप	काश्यप, अवत्सार, नैध्रव
१६.	गोंढ़ालिया (गोलिया)	शांडिल्य	शांडिल्य, असित, देवल
१७.	घेया	वशिष्ठ	वशिष्ठ, शक्ति, पाराशर
१८.	जघीनिया	शांडिल्य	शांडिल्य, असित, देवल
१९.	जसोरिया	वशिष्ठ	वशिष्ठ, शक्ति, पाराशर
२०.	झालानी	काण्वायन	काण्वायन, आंगिरस, वार्हस्पत्य अवत्सार, नैध्रव
२१.	टटार	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
२२.	ठाकुरिया	वशिष्ठ	वशिष्ठ शक्ति पाराशर
२३.	डंगायच	सौकालीन	सौकालीन, आंगिरक, वार्हस्पत्य
२४.	डांस	वैयाघ्र पद्य	सांकृति, प्रवत्सार, नैध्रव
२५.	तमोलिया	जैमिन	जैमिन, उतथ्य; सांकृति
२६.	ताम्बी	वासुकी	अक्षोम्य, अनन्त, बासुकी
२७.	तोडवना	अत्रि आत्रे	आत्रेय, शातातप, सांख्य
२८.	दुसाद	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
२९.	धामानी	शुनक	शुनक, शोनक, गृत्समद
३०.	धोकरिया	कौंडिल्य	स्तिमिक, कौत्स, कौड़िल्य
३१.	नारायनबार	वशिष्ठ	वशिष्ठ, शक्ति, पराशर
३२.	नाटानी	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
३३.	नैनामा	कृष्णात्रेय	कृष्णात्रेय, आत्रेय, वास
३४.	नैवीवार	अत्रि	आत्रेय, शातातप, सांख्य
३५.	पचलोरा (बड़गोती कुड)	शांडिल्य	शांडिल्य, असित, देवल
३६.	पागूवाल(पावूवाल)	मौदूगल	और्व्य, च्यवन, मृगु, जमदग्नि, आप्नुवान
३७.	पाटोदिया	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
३८.	पीतलिया	विश्वामित्र	विश्वामित्र, मरीची, कौशिक
३९.	फरसोइया	वशिष्ठ	वशिष्ठ, शक्ति, पाराशर
४०-	बटवारा	सौपायन	और्व्य, च्यवन, मृगु, जमदग्नि; आप्नुवान
४१;	बडाइगा	पाराशर	पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
४२।	बडहरा	जमदग्नि	जमदग्नि, परसराम, वशिष्ठ
४३.	बनाउडी	शक्ति	शक्ति, पाराशर, वशिष्ठ
४४.	बम्ब	सावर्णि	सावर्णि
४५.	बाजरगान	कात्यायन	अत्रि, मृगु, वशिष्ठ
४६.	बावरिया	पाराशर	पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
४७.	बोमवार	विष्णु	विष्णु, वृद्धि, कौरव
४८.	बुडवारिया	वासुकी	अक्षोम्य, अनन्त, बासुकी
४९.	बुपर	पाराशर	पाराशर, शक्ति, वशिष्ठ
५०.	भण्डारिया	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
५१.	भांगला (महता)	शुनक	शुनक, शौनक, गृत्समद
५२.	भुकमारिया	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
५३.	महरवाल	काण्व	काण्व, अश्वत्थ, देवल
५४.	माठा	वात्स्य	और्व्य, च्यवन, मृगु, जमदग्नि आप्नुवान
५५.	मानिक बोहरा	सांकृति	अभ्याहार, अत्रि, सांकृति
५६.	मामोडिया	शांडिल्य	शांडिल्य, असित, देवल
५७.	माली	पाराशर	पाराशर. शक्ति, वशिष्ठ
५८.	मागोलिया	अलाम्यान	अलाम्यान
५९.	माचीवाल	शक्ति	शक्ति, पाराशर, वशिष्ठ
६०.	मेठी	अगस्ति	अगस्ति, दधीच, जैमिन
६१-	राजोरिया	शुनक	शुनक. शोनक गृत्समद
६२.	रावत	आलंवायन	आलंवायन, शालकायन, शकटायन
६३.	लाभी	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
६४.	वैद	गर्ग	गार्ग्य. कौस्तुभ, मांडव्य
६५.	साखोनिया	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
६३.	सामरिया	काण्व	काण्व, अश्वस्थल, देवल
६७.	शाहरिया (शाहरा)	जैमिन	जैमिन, उतथ्य, सांकृति
६८.	सिरोहिया	सौपायन	और्व्य, च्यवन, मृगु, जमदग्नि, आप्नुवान
६९.	सीगोदिया	काण्व	काण्व, अश्वत्थ, देवल
७०.	सेठी (सोन)	गर्ग	गार्ग्य, कौस्तुभ. माण्डव्य
७१.	सोखिया	कृष्णात्रेय	कृष्णात्रेय, आत्रेय, वास
७२.	हुलिदया	शांडिल्य	शांडिल्य, असित, देवल

.०५) शिरोमणि संस्था अखिल भारतीय खण्डेलवाल वैश्य महासभा

अब तक के हुये अधिवेशनों की सूची निम्न प्रकार है :—

स्थान	वर्ष	अध्यक्ष	प्रधान मंत्री
दिल्ली	१६१५	स्व० श्री शिवप्रताप खूंटेटा, जयपुर	स्व० श्री रघुमल मुखमारिया
दिल्ली	१६१८	स्व० श्री गणेशराम रावत ब्यावर	,, ,, ,,
इन्दौर	१६२०	,, रघुमल मुखमारिया, देहली	,, ,, ,,
एचलीपुर	१६२१	,, गुलराज गोपाल, देहली	,, ,, ,,
अजमेर	१६२३	,, राधा बल्भ वकील, आगरा	,, ,, ,,
कानपुर	१६२४	,, ,, ज्वालाप्रसाद वकील, हाथरस	स्व० श्री मदनमोहन गुप्ता
मथुरा	१६२७	,, ,, रामचन्द्र शाहरा, जबलपुर	,, ,, गुलराज गोपाल आमे०
कलकत्ता	१६२८	,, ,, मांगीलाल कानूनगो, जयपुर	,, ,, ,, ,,
कोटा	१६३०	,, ,, राजकुमार बटवाड़ा, अलवर	,, ,, ,, ,,
आगरा	१६३३	,, ,, बनवारीलाल मुखमारिया, देहली	,, ,, ,, ,,
राजगढ़	१६३५	,, ,, रामचन्द्र दुसाद, बरेली	,, ,, ,, ,,
दौसा	१६३७	,, ,, रामप्रसाद दुसाद, बरेली	,, ,, बनवारीलाल झालानी
गया	१६३८	,, ,, रामप्रसाद अटोलिया, बम्बई	,, ,, देवकीनन्दन विभव
गोवर्धन	१६३६	,, ,, गंगासहाय माठा, राजगढ़	,, ,, दामोदर दास खण्डेलवाल
बम्बई	१६४६	,, ,, जगन्नाते ताम्बी, सेन्दुरझना	,, ,, श्य मसुन्दर डंगायच
बांदीकुई	१६५१	,, देवकीनन्दन विभव, आगरा	,, ,, जवाहरलाल रावत ,, गणपतसिंह आमेरिया
जयपुर	१६५३	स्व० श्री रामप्रसाद अटोलिया, बम्बई	स्व० श्री रामेश्वर प्रसाद धामान
देहली	१६५७	श्री गोविन्द सहाय मेठी, गोंदिया	,, ओंकारनाथ बटवाड़ा
मथुरा	१६६०	स्व० श्री बिहारीलाल अटोलिया, कलकत्ता	स्व० ,, जगनप्रसाद बटवाड़ा
कोटा	१६६३	,, राधाकृष्ण मुखमारिया, देहली	श्री दयाप्रसाद खण्डेलवाल
उज्जैन	१६६६	,, गोरधनदास मुखमारिया, जयपुर	श्री चिरंजीलाल गुप्ता
जयपुर	१६६६	,, विशम्भरदयाल मुखमारिया, देहली	श्री केशरीलाल झालानी
बरेली	१६७३	,, विशम्भरदयाल मुखमारिया, देहली	श्री श्रीराम गोटेवाला
इन्दौर	१६७६	,, केशरीलाल झालाणी, बम्बई	श्री ताराचन्द खण्डेलवाल
सरसा	१६७६	,, महादेवप्रसाद शाहरा, इन्दौर	,, ,, ,,

और २६ वाँ वार्षिक अधिवेशन अजमेर में मई ८३ में सम्पन्न हुआ। इसके स्वागताध्यक्ष श्री शिवचरणदास कोडिया थे। यहीं पूर्व प्रधान श्री महादेव प्रसाद शाहरा (इन्दौर) ने नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री जयनारायण सेठी को चार्ज दिया। इस वर्ष एक उद्योग स्थापना सहायता समिति की स्थापन की गई। तथा एक प्रदर्शिनी लगाई गई जिसमें खण्डेलवालों के औद्योगिक संस्थानों में निर्मित वस्तुयें रक्खी गईं। एक स्मारिका भी प्रकाशित हुई। इनके पूर्व पुरुष सन्त सुन्दरदास के जीवन पर आधारित एक नाटिका का भी प्रदर्शन रात्रि में हुआ। एक परित्यक्ता कन्या से उसी पिण्डाल में दहेज रहित विवाह एक अविवाहित युवक ने किया। मुख्यतया तीन नारे लगाये गये।

हरेक को काम, हरेक को शिक्षा, हरेक का एक मकान और बारात निकालना बंद करने का प्रस्ताव विरोध होने से वापिस ले लिया गया।

इन्दौर के श्री चिरंजी लाल गुप्त आगामी सत्र के महामंत्री चुने गये। महासभा को निम्न उपसमितियाँ हैं :—

छात्रावास समिति, विद्यार्थी सहायता, युवा संगठन, पत्रिका सम्पादन, जनगणना, साहित्य प्रकाशन, महिला जागरण, आदर्श-विवाह, रोजगार ब्युरो, प्रचार समिति, उद्योग व्यवसाय, सामूहिक विवाह, प्रतिभा-सम्मान, भवन-निर्माण, क्षेत्रीय-सगठन, विधवा सहायता, अर्थ संग्रह।

.०६) मुख्य सम्बन्धित संस्थायें

१. श्री खण्डेलवाल वैश्य सघ। गणेश मन्दिर, गांधीनगर। भीलवाड़ा (राज०)

२. खण्डेलवाल नवयुवक संघ अजमेर ३/७६, धान मण्डी, दरगाह बाजार, अजमेर।

३. श्री खण्डेलवाल युवा संगम जयपुर द्वारा–मै० बिहारी एण्ड कंपनी २४८, त्रिपोलिया बाजार

४. श्री खण्डेलवाल वैश्य पंचायती सभा इन्दौर नं० ३३, मौलाना आजाद मार्ग लुहार पट्टी;

५. श्री खण्डेलवाल वैश्य समाज मेहसाना, मै० मूलचन्द घन्नालाल खण्डेलवाल पांच हटरी बाजार, कलोल।

६. श्री खण्डेलवाल नवयुक संघ अहमदाबाद द्वारा–श्री खुशीराम बी० लाला, कालपुर दरवाजा, (गुजरात)

७. श्री खण्डेलवाल वैश्य सभा मथुरा द्वारा–खण्डेलवाल रायसाहिब जानकीप्रसाद बद्रीप्रसाद, कोतवाली रोड।

८. श्री खण्डेलवाल वैश्य पंचायत। बुधवारिया, उज्जैन (म०प्र०)

९. श्री खण्डेलवाल समाज कल्याणकारी संघ द्वारा–श्री रूपनारायण झालानी, बम्बई मिठाई वाले, कपड़ा बाजार। अहमद नगर।

१०. श्री खण्डेलवाल युवा संघ महा १०२६, बुधवार पेठ, श्रीनाथ टाकीज के सामने, पूना।

११. श्री खण्डेलवाल वैश्य पंचायत मन्दिर श्री गोपाललाल जी महाजन रामपुरा बाजार। कोटा (राज०)

१२. श्री खण्डेलवाल वैश्य समाज मुरादाबाद द्वारा–श्री वित्तेदीलाल जसोरिया, मंडी चौक (उ०प्र०)

१३. श्री खण्डेलवाल वैश्य परिषद् बीकानेर मै० खण्डेलवाल पापड़ उद्योग, फड बाजार।

१४. श्री खण्डेलवाल वैश्य सामूहिक विवाह समिति, कोटा मै० संजय किराना स्टोर्स, रामपुरा बाजार, कोटा (रजि०)

१५. श्री खण्डेलवाल वैश्य सेवा संघ कानपुर ४८/२४०, जनरल गंज।

१६. श्री खण्डेलवाल मण्डल अलवर लक्ष्मी निकेतन, पतासे वाली गली

१७. श्री खण्डेलवाल परिवार एल–३८ नवीन शाहदरा। दिल्ली–११००३२

१८. श्री खण्डेलवाल समिति दिल्ली द्वारा–कालीचरण कुन्दनलाल, ५०११/१२ ख बाजार सिरकीवालान, हौज काजी, दिल्ली–११०००६।

१९. श्री अलवर जिला खंडेलवाल वैश्य संघ, २३, विकास पथ; अलवर (राज०)

२०. श्री खण्डेलवाल तरुण संघ रतलाम मै० रतलाम इलैक्ट्रिक स्टोर्स, डालू मादी बाजार।

२१. श्री खण्डेलवाल संघ उज्जैन। द्वारा–सोनल मेडिकल एजेन्सीज, ६८, सती मार्ग।

२२. श्री खण्डेलवाल समिति नं० ४१/२०७, पन्तनगर, घाटकोपर, बम्बई–४०००७५

२३. श्री खण्डेलवाल वैश्य पंचायत ब्यावर द्वारा—श्री मालीराम खण्डेलवाल, चम्पा नगर, ब्यावर। (अजमेर–राज)

२४. श्री खण्डेलवाल वैश्य संघ बांदीकुई द्वारा–ओमप्रकाश गुप्त एडवोकेट।

२५. श्री खण्डेलवाल सभा अकोला द्वारा—खण्डेलवाल ट्रेडर्स, मंगलदास मार्केट।

२६. श्री खण्डेलवाल सभ भोपाल। एजूकेशनल सेन्टर, सुलतानिया रोड,

२७. श्री युवा खण्डेलवाल नाथद्वारा द्वारा—श्री जगदीश गुप्ता, मै० खण्डेलवाल एण्ड सन्स, मन्दिर मार्ग।

२८. श्री खण्डेलवाल नवयुवक संघ भरतपुर। द्वारा—श्री रमेशचन्द एडवोकेट, जामा मस्जिद, सब्जी मन्डी,

२९. श्री खण्डेलवाल वैश्य सेवा मन्डल आगरा। ६/७९ कचौड़ी बाजार, बेलनगंज।

.०७) प्रमुख व्यक्ति

(१) लाला हंसराज गुप्त। दिल्ली के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यवाह। तथा भूतपूर्व मेयर दिल्ली नगर निगम। अब दिवंगत
(२) श्री जवाहर लाल रावत। न्यायाधीश राजस्थान अजमेर।
(३) श्री बी० ऐल० रावत—लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष (१९८३)।
(४) " देवकी नन्दन विभव आगरा M.L.A.।
(५) सन्त बलरामदास। (६) श्री राम गोटे वाला राज्य मंत्री राजस्थान (१९८३)। (७) पद्म भूषण लाला रामप्रसाद आरोलिया। बम्बई। (८) साहित्यकार रामेश्वर लाल तरुण भीलवाड़ा। (९) गुलाब चन्द गुलाब साहित्यकार। गया।
(१०) श्री देवकीनन्दन विभव। आगरा। राजनैतिक स्वतंत्रता सेनानी। सन् १९३१ के देहली अ० भा० कांग्रेस अधिवेशन के स्थानापन्न अध्यक्ष। बाद में उ० प्र० के मिनिस्टर। (११) साहित्यकार रूपचन्द खण्डेलवाल (१२) डा० मोतीलाल गुप्त भरतपुर।
कार्य।

.०८) अन्य सामाजिक कार्य

पुष्कर में धर्मशाला।
सत्यनारायण भगवान मंदिर अजमेर।
सन्त सुन्दर दास क्षात्रावास दौसा (राज०)
गीता देवी वार्षिक निबन्ध प्रतियोगिता समिति—अकोला
बसन्त पंचमी पर सारे देश में आयोजन।
खण्डेलवाल वैश्य धर्मशाला। बस स्टैंड रोड। अलवर

.०९) पत्रिका

१. खण्डेलवाल महासभा पत्रिका (मासिक)।
प्रबन्ध सम्पादक=राजेन्द्र प्रसाद बटवाड़ा।
गंगामन्दिर–स्टेशन रोड। जयपुर–१

२. खण्डेलवाल परिवार (साप्ताहिक)
सम्पादक राजेन्द्र खण्डेलवाल (कठारिया)
नं० ४२/१५४ बिल्लोचपुरा। आगरा–२

३. खण्डेलवाल हितैषी अजमेर।

हमारे सहयोगी (२२)



संक्षिप्त जीवन परिचय
स्वर्गीय श्री सेठ रामशरण दास
ज्वालापुर (सहारनपुर)—

अनेक सामाजिक संस्थाओं के जन्म दाता, सेठ रामशरण दास अग्रवाल का जन्म सन 1920 में ज्वालापुर के एक निर्धन परिवार में हुआ था। आपका बचपन अनेक विषमताओं से गुजरा। आपकी माता जी (पिता जी का स्वर्गवास हो जाने के कारण) ही एकमात्र सहारा थीं। लगभग 14 वर्ष की आयु में ही अपनी जीविकोपार्जन हेतु जुट जाने के कारण आपकी शिक्षा भी अधूरी ही रह गई। परन्तु भाग्य ने आपका साथ दिया। और छोटी सी हलवाई की दुकान, दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। आपने अपने जीवन काल में लाखों रुपये अर्जित किये। जैसे-जैसे आपके पास लक्ष्मी की कृपा होती रही वैसे-वैसे दीन दुखियों की सहायता करने की आपकी पिपासा भी बढ़ती गई। शायद ही हरिद्वार क्षेत्र में कोई सामाजिक संस्था ऐसी हो जो इनकी दानवीरता से वंचित रही हो। आपने पर्वतीय क्षेत्र की जनता के लाभार्थ "सेठ रामशरण दास जनता हायर सेकेण्डरी स्कूल" तिलवाडा (रुद्र प्रयाग जिला—चमोली) की स्थापना वर्ष 1965 में की थी। आज भी यह विद्यालय क्षेत्र की जनता की सेवा सुचारु रूप से कर रहा है। अपने अंतिम समय में आपने ज्वालापुर में महिला चिकित्सालय की स्थापना के लिये अंकन 51,000 रुपये को धनराशि माता वैष्णो देवी ट्रस्ट ज्वालापुर को प्रदान की। महिला चिकित्सालय की स्थापना शीघ्र होने की संभावना है। अपनी एक मात्र अधिष्ठात्री माता के लिए आपका स्नेह इस सीमा तक पहुंच गया था कि आपने जीवन पर्यन्त अविवाहित रहने का प्रण किया, जिसका पालन आपने अपने जीवन में बड़ी दृढ़ता से किया। संक्षेप में, आपके जीवन में राजकीय ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज हरिद्वार में प्राईवेट वार्ड, रामकृष्ण मिशन चिकित्सालय कनखल में प्राईवेट कक्ष और वैश्य पंचायत ज्वालापुर के प्रधान पद पर रहते हुए समाज की दोनों धर्मशालाओं में लगभग 1 लाख रुपये की लागत से निर्माण कार्य आदि आपके विशेष उल्लेखनीय कार्य हैं। इनके अतिरिक्त अनेक मंदिरों में बिजली पानी की व्यवस्था एवं निर्माण, निर्धन कन्याओं के विवाह हेतु आर्थिक सहायता, सार्वजनिक स्थानों पर पानी के नलों की व्यवस्था आदि अनेक ऐसे कार्य हैं जिनका आंकलन यदि हम करें तो लगभग 10 लाख रुपये होगा।

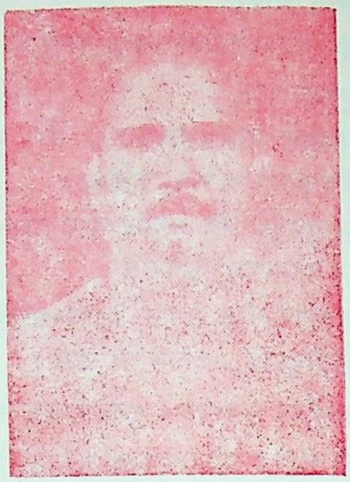
अपने जीवन की संध्या में आपने सेठ रामशरण दास धर्मार्थ ट्रस्ट ज्वालापुर की स्थापना की और अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति हमेशा के लिए छोड़कर 10 सितम्बर 1981 को परलोक सिधार गए; परन्तु सदैव के लिए अपना नाम अमर कर गये।

सेठ जी द्वारा स्थापित ट्रस्ट आज समाज के अनेक पीड़ित व्यक्तियों के लिये अनेक कार्य कर रहा है। विशेष रूप से रामशरण दास महिला शिल्प कला केन्द्र में अनेक बालिकायें सिलाई कढ़ाई व बुनाई की निशुल्क शिक्षा प्राप्त कर अपना जीवन यापन कर रही हैं अथवा एक सुयोग्य गृहणी बनने की तैयारी में हैं।

सेठ रामशरण दास धर्मार्थ ट्रस्ट ज्वालापुर के पदाधिकारी—
श्री रामकृष्ण अग्रवाल एम॰ए॰ सर्राफा गली-ज्वालापुर अध्यक्ष
एवं प्रिन्सपल आनन्द प्रकाश एम॰ए॰
म्युनिसिपल इन्टर कालेज—ज्वालापुर मंत्री हैं।

[नोट :—पदाधिकारियों का नाम उनके आदेश के विपरीत इसलिये दिया है कि वैश्य दीन-दुखी सहायतापेक्षी जन उनसे पत्राचार कर सकें—सम्पादक]

हमारे सहयोगी (२३)



श्री मुकन्दकिशोर महावर।

उपाध्यक्ष अ॰ भा॰ महाउरु वैश्य संघ कलकत्ता-7

जीवनवृत :

पिता—श्री नित्यानन्द महावार मूल निवासी अलवर राजस्थान।

जन्म तिथि=4 नवम्बर 1931

आपके तीन भाई सब व्यापार रत हैं जिनके व्यापार स्थल अहमदाबाद एवं जयपुर तक हैं।

पुत्र—तीन पुत्र सर्वश्री राजेश्वर कुमार, राजेन्द्र कुमार एवं राजकुमार महावर है। जो तीनों B. Com., LLB. हैं।

कलकत्ता के व्यापारिक प्रतिष्ठान।

1-राजेश्वर कुमार एण्ड ब्रादर्स।

2-राज उद्योग।

नं॰ 228 महात्मा गांधी रोड (फस्ट फ्लोर) कलकत्ता-7

सामाजिक-अलवर में महावर ज्ञान मन्दिर विद्यालय की स्थापना में प्रचुर सहयोग। मुख्य अतिथि महावर वार्षिकत्सव 1985



डा० दाऊ जी गुप्त

M. Com. Ph. D.

नन्द निकेतन । नाका हिण्डौला । लखनऊ

जन्म एक अत्यन्त समृद्ध परिवार में नवम्बर १९४० में हुआ। उनके पिता श्री गोपाल जी गुप्त का मुख्य व्यापार करड़ा सस्ता भंडार अमीनाबाद तथा परफ्यूमरी केमिकल्स जर्दा व किमामका व्यापारगुप्ता जी गोपाल जी की प्रसिद्ध फर्मों के नाम से विख्यात था। वह आयुर्वेद के महान ज्ञाता तथा रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर थे। देश के स्वतन्त्रता संग्राम में खुलकर भाग लिया था तथा नेता जी सुभाष चन्द्र, चन्द्र शेखर आजाद, भगत सिंह आदि के सहयोगियों में रहे थे।

दाऊ जी गुप्ता योग्य पिता के योग्य पुत्र सिद्ध हुए तथा उन्होंने अत्यन्त कम आयु में सक्रिय राजनीति में भाग लिया। छात्र जीवन से ही वह कालेज यूनियनों में सक्रिय रहे।

१९५५ में लखनऊ क्रिश्चियन कालेज से उन्हें सर्टिफिकेट आफ मेरिट प्राप्त हुआ। १९५६ व १९५७ में वह लखनऊ विश्वविद्यालय बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन एसोशियेसन तथा कामर्श एसोशियेशन की कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये। १९५७ में दाऊ जी चुनावों के पिछले रिकार्ड तोड़कर प्रचंड बहुमत में विश्वविद्यालय छात्र यूनियन में चुने गये। उनकी प्रखर वक्तृता तथा सेवाओं के कारण ही तत्कालीन प्रधान मन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू व रक्षा मंत्री वी० के० कृष्ण मेनन तथा उत्तर प्रदेश के राज्यपाल वी०वी० गिरि (बाद में राष्ट्रपति) ने उन्हें सर्टिफिकेट विभिन्न समारोहों में प्रदान किये।

विद्यार्थियों के लिए विद्यार्थी जीवन में डा० दाऊ जी ने सक्रिय आन्दोलनों में हिस्सा लिया। सत्याग्रह करके कारागारों की भी (लखनऊ, फैजाबाद तथा वाराणसी आदि) यात्रायें कीं।

छात्र जीवन में ही उन्होंने अंग्रेजी में हावीज तथा बंगला में (वंदना) पत्रिका का सम्पादन कार्य भी किया। उनके लेख तथा कवितायें भारी संख्या में प्रकाशित होते रहे। १९५७ में बी०काम०, १९५९ में एम०काम० करने के उपरान्त उन्होंने कामर्स में १९६४ में सबसे कम आयु के पी०एच०डी० होने का गौरव प्राप्त किया।

उनकी योग्यताओं को देखते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें लखनऊ यूनिवर्सिटी कोर्ट का सम्मानित सदस्य मनोनीत किया। १९६५ में डा० दाऊ जी को एक शैक्षिक प्रतिनिधि मंडल का सदस्य होकर अमेरिका, कनाड़ा आदि देशों का दौरा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ उन्होंने अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों तथा जन सभाओं में सारगर्भित भाषण दिये, जिससे न्यूयार्क के विश्वविद्यालय ने उन्हें प्राच्य ऐशियाई साहित्य पढ़ाने के लिये अनुबन्धित किया।

अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त डा० दाऊ जी का अंग्रेजी के साथ हिन्दी, संस्कृत, बंगला, उर्दू, तामिल आदि भाषाओं पर आश्चर्यजनक अधिकार है। अमेरिका से लौटने के उपरान्त वह राजनीति में कांग्रेस में सम्मिलित हुये तथा प्रदेश के लौह पुरुष श्री चन्द्रभानु गुप्त को अपना नेता माना।

वह उत्तर प्रदेश के युवक कांग्रेस के १९६९ में प्रदेश संयोजक तथा अध्यक्ष चुने गये। नगर कांग्रेस के कोषाध्यक्ष और उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य चुने गये। कांग्रेस पार्टी में अनेक प्रदेशों से चुनावों में उनकी मांग होने लगी तथा कर्नाटक, हैदराबाद, गुजरात आदि प्रांतों में न केवल कांग्रेस के अधिवेशनों में उनकी वक्तृता हुई बल्कि सैकड़ों चुनाव सभाओं को उन्होंने सम्बोधित किया। १९७१ के मध्य-प्रदेश के चुनाव में वह कांग्रेस संगठन से प्रमुख नेता बनाकर भेजे गये।

उन्होंने ३१ वर्ष की आयु से पूर्व भारत के सबसे कम आयु के मेयर चुने जाने का सौभाग्य प्राप्त किया। वह देश के सबसे बड़े प्रदेश की राजधानी के दो बार प्रमुख अर्थात मेयर चुने गये।

मेयर का दोबारा चुनाव आश्चर्यजनक था जिसमें कांग्रेस (आई) तथा जनसंघ द्वारा समर्थित एक करोड़पति उम्मीदवार को उन्होंने चुनाव में पराजित किया। इसी मध्य वह हास्पिटल बोर्ड के सदस्य तथा नागरिक सुरक्षा के प्रधान बनाये गये।

अपनी योग्यता के बल पर वह बम्बई में होने वाले महापौरों के सम्मेलन में उसकी कार्य समिति के सदस्य चुने गये। उनके चित्र सहित प्रमुखता से समाचार प्रकाशित किया गया। यही नहीं बल्कि हवाई (अमेरिका) में होने वाले विश्व के महापौरों (मेयरों) के सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिये जो तीन महापौरों का प्रतिनिधिमण्डल गया उसके लिए भी वह चुने गये तथा अमेरिका में संसार के महापौरों व सहस्त्रों नगर पालिका अध्यक्षों के विश्व सम्मेलन में उसके उपाध्यक्ष व डाईरेक्टर सर्वसम्मति से चुने गये। उन्होंने देश के नाम को गौरवान्वित किया।

रुस आदि देशों ने भी उन्हें निमंत्रित किया तथा अमेरिका से १९७१ में विदेश लौटते समय उन्होंने इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, सोवियत रूस का आतिथ्य स्वीकार किया व वहां स्वायत-शासी संस्थाओं का निरीक्षण किया। सोवियत 'क्रेमलिन'से मास्को (दूरदर्शन) टेलीवीजन ने आपकी सोवियत केन्द्रीय मन्त्री को गोल्डिन तथा मास्को की मेयर की वार्ता को साथ प्रसारित किया।

व्यवसायिक संगठनों के क्षेत्र में वह सर्वप्रथम १९६४ में लखनऊ मर्चेन्ट एसोशियेसन के संगठन मंत्री, महामंत्री तथा अध्यक्ष चुने गये। वह उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मण्डल के लखनऊ अधिवेशन के अध्यक्ष को तथा संगठन के प्रदेशीय उपाध्यक्ष रहे। आज कल भी वह (यू०पी० मर्चेन्ट्स फैडरेशन) के अध्यक्ष हैं। वह अवध चैम्बर्स आफ कामर्स की कार्यकारिणी समिति के सदस्य रहे। वह फैडरेशन आफ एसोसियेशन आफ स्माल इन्डस्ट्रीज के यू०पी० चैम्बर के अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं। डा० दाऊ जी प्रदेश के स्माल इन्डस्ट्रीज सर्विस इन्सटीट्यूट (एस०आई०एस०आई०) कानपुर की सलाहकार परिषद के सदस्य तथा प्रदेश की सेंट्रल ऐक्साइज एडवाई-जरी कमेटी के सदस्य रहे।

शिक्षण संस्थाओं का क्षेत्र :—शिक्षा के क्षेत्र में लखनऊ की दर्जनों संस्थाओं से सम्बोधन हैं। वह इस समय नेशनल डिग्री कालेज तथा स्कूल आफ साऊथ इण्डियन लैंग्वेज की प्रबन्ध समिति के सदस्य तथा वैदिक कन्या इण्टर कालेज की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष तथा वैदिक प्राईमरी पाठशाला, वैदिक मांटेसरी स्कूल व अनेकों विद्यालयों की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष हैं।

वह श्रावस्ती के जेतवन विद्यालय तथा संकिसा के महात्मा बुद्ध विद्यालय के भी अध्यक्ष हैं। नेशनल कालेज सहित लखनऊ की इतनी शिक्षण संस्थाओं में उनका योगदान है कि उसका वर्णन असम्भव है। श्री चन्द्र भानु गुप्त द्वारा संस्थापित भारत सेवा संस्थान की प्रबन्ध

हमारे सहयोगी (२५)



वीर सतीश चन्द्र जैन

अध्यक्ष वैश्य पंचायत [1985] ज्वालापुर सहारनपुर उ० प्र०।

जन्मतिथि—4 फरवरी 1948।

पारिवारिक—सुपुत्र श्री शेखर चन्द्र जैन एवं श्रीमती विरमी देवी।

पत्नी श्रीमती सन्तोष जैन। तीन पुत्री एवं एक पुत्र।

शिक्षा—M. Com.

व्यापार—औटोमोबाइल्स (पैट्रोल पम्प आदि)

साहित्यिक एवं सामाजिक जीवन

संस्थापक सदस्य—स्नातक क्लब ज्वालापुर।

सक्रिय सदस्य—रश्मि परिषद।

संस्थापक सदस्य—लायन्स क्लब हरिद्वार एवं भागीरथी क्रीड़ा संस्थान। नागरिक परिषद आदि।

धार्मिक गतिविधियां

सक्रिय सदस्य—जैन युवक मण्डल हरिद्वार।

अध्यक्ष—श्रमण जैन भजन प्रचारक संघ।

राष्ट्रीय प्रचार संयोजक—भगवान महावीर 2500 वां निर्वाण महोत्सव।

संगठन सचिव—जैन साहित्य इण्टर नेशनल। दिल्ली।

संयोजक—श्रीराम भारतीय कला केन्द्र द्वारा प्रस्तुत—महावीर वैले।

संयोजक पूजा समिति—बाहुबली महामस्तकाभिषेक समारोह [1983]

क्षेत्रीय संयोजक (दक्षिण)—जैन मिलन संस्थान। तथा अध्यक्ष चतुर्थ क्षेत्र।

नोट—जैन मिलन एक अखिल भारतीय संस्थान है। इसका देश में 200 इकाइयां तथा 1000 आजीवन सदस्य हैं। देश में 5 क्षेत्र कार्यरत हैं। यह संस्था 1950 में इलाहाबाद में गठित हुई थी। इसके सदस्य नाम के आगे वीर शब्द का प्रयोग करते हैं।

हमारे सहयोगी (२६)



श्री जयप्रकाश जैन, सीनियर एडवोकेट। मेरठ

(A) पता:—कोठी नं० 99 मानसरोवर। मेरठ शहर सुपुत्र—श्री बिशम्बर सहाय जैन।

तीन भाई एव 6 पुत्रों का भरा पूरा परिवार

(B) धार्मिक जीवन:—

1-भारतीय जैन मिलन के सस्थापक सदस्य और अब उसके केन्द्रीय उपाध्यक्ष तथा उसकी विधान निर्मात्री समिति के संयोजक एवं मेरठ में उसकी शाखा के भी संस्थापक।

2-अखिल भारतीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अन्तर्गत निर्मित जैन मन्दिर हस्तिनापुर की समिति के वे उप-मन्त्री हैं।

3-सदस्य अखिल भारतीय जैन परिषद एवं महा-सभा।

4-संस्थापक सदस्य जैन होमियो चिकित्सालय मेरठ।

(C) सामाजिक योगदान

1-सरधना मे 50 लाख रुपये की योजना के अधीन साज-सज्जा सहित राष्ट्रीय हॉस्पिटल कमेटी के संयोजक। समिति दस लाख रुपया इकट्ठा कर चुकी है।

2-अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन की मेरठ जिला शाखा के महामन्त्री।

3-पहिले चैयर मैन और अब डायरेक्टर मेरठ विधि (LAW) चैम्बर लिमिटेड।

4-सदस्य संचालक उपसमिति वैश्य सम्मेलन पत्रिका।

पृष्ठ 14/6 का शेष

समिति के सदस्य होने के साथ-साथ आप बाल संग्रहालय, चलद्रावल ग्रामोद्योग समिति आदि संस्थाओं की कार्यकारिणी तथा लाला लाजपतराय स्मारक पुस्तकालय के अध्यक्ष एवं गंगा प्रसाद वर्मा मेमोरियल सोसाइटी के मंत्री हैं। इतनी सामाजिक एवं राजनैतिक व्यस्तताओं के उपरान्त आप व्यवसाय में भी सक्रिय हैं दाऊ जी केमिकल्स प्रा०लि० के डाईरेक्टर तथा केसरी किमाम कार्यालय के प्रोप्राईटर हैं।

विश्व हिन्दू परिषद द्वारा अयोध्या की राम जन्म स्थली वापिसी अभियान के आप प्रान्तीय अध्यक्ष हैं और अखिल भारतीय कसौंधन वैश्य महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

सारा वैश्य समाज ऐसे व्यक्तित्व पर गर्व कर सकता है।

हमारे सहयोगी (२७)



प्रधान मन्त्री द्वारा सम्मानित; पदक प्राप्त

वैद्यराज यज्ञेश्वर प्रसाद केसरी के संस्मरण

- जन्म—बिहार प्रान्तस्थ शाहाबाद जिला के कोआथ ग्राम में 21 सितम्बर 1901
- पिता—हकीम मथुरा प्रसाद जिले के सुप्रसिद्ध चिकित्सक, समाज सुधारक जो महात्मा गांधी के अनन्य भक्त थे।
- महात्मा गांधी के आह्वान् पर सन् 1921 में विश्वविद्यालय परीक्षा त्याग असहयोग आन्दोलन में, देश की स्वतन्त्रता हेतु अनवरत प्रयत्न और उसके लिए तीन बार सन् 192·, 1930 और 1942में कई वर्ष जेल यातनायें सहे और बिहार के गणमान्य नेताओ यथा राजेन्द्र बाबू के संग जेल में रहे। कांग्रेस के उच्च पदों को सम्भालते रहे।
- स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के सभापतित्व में आयोजित सन् 1921 में गौरिक्षा महासम्मेलन वृन्दावन में एक प्रस्ताव के समर्थन से स्वामी जी प्रभावित हुए। कैम्प में बुला गायत्री दीक्षा प्रदान की।
- बिहार प्रान्तस्थ वैश्यों की निबन्ध प्रतियोगिता में सर्वप्रथम, पदक और प्रशंसा-पत्र से सम्मानित।
- अपने विख्यात् हितैषी औषधालय की स्वर्ण जयन्ती देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद के सभापतित्व में सम्पन्न कराई।
- बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य लगातार बीस वर्षों तक रहे।
- अनेक विद्यालय, कन्या विद्यालय और कालेजों की संस्थापना में सहयोग, संचालन और उनके मन्त्री रहे।
- प्रादेशिक केसरवानी सम्मेलन के दो सत्रों सन् 1940 और 1952 ई० के सभापति निर्वाचित हो समाज को अग्रणी करने का प्रयास। अ०भा० महासभा के उपसभापति पद पर भी रहे।
- महात्मा आनन्द स्वामी से वानप्रस्थ की दीक्षा के पश्चात् आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में साधनारत।

अध्याय १५

कलवार समूह का इतिहास

भारत के देदीप्यमान इतिहास कारों में श्री काशी प्रसाद जायसवाल व श्री रजनीकान्त शास्त्री प्रभृति इन्हीं में से हो गये हैं। उन्होंने इतिहास को जो मोड़ दी है उसमें निजी मान्यताओं का स्थान भी है। उनके आधार पर श्री चिन्तामणि हठेला मणि इलाहाबाद निवासी ने आगे रिसर्च करके कलवारों का इतिहास प्रस्तुत किया था, जो चन्द्रवंशीय हैहय क्षत्रिय जाति के सचित्र मासिक पत्र कलचुरि के जनवरी १९५७ के इतिहास विशेषांक में प्रकाशित हो चुका है। अत्यधिक विद्वता पूर्ण इस पुस्तक का मैंने भी उपयोग किया है। इस अध्याय में हम उस अंक के निष्कर्षों को ही उद्धृत करेंगे। मेरा उनका पत्र व्यवहार भी हुआ था और मैंने उनसे इलाहाबाद में स्वयं जाकर विचार विनिमय भी किया था।

(०१) प्रागैतिहासिक

श्री मणि जी के अनुसार कलवार वास्तव में चन्द्रवंशीय हैहय क्षत्रिय ही हैं। उनका उद्भव अत्रि गोत्र से है अत्रि ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। मणि जी गोत्र को आचार्य का द्योतक नहीं मानते, बल्कि रक्त-परक मानते हैं। अत्रि के चन्द्रमा, उनके ययाति। ययाति की ब्राह्मणी पत्नी देवयानी से जब विवाह हो गया तो उसके गर्भ से यदु और तुर्वसु दो पुत्र हुये। यदु की तीसरी पीढ़ी में हैहय हुये जिनसे यह वंश चला। पद्म पुराण में हैहय को महात्मा करके सम्बोधित किया गया है। इस प्रकार यदु व तुर्वसु प्रति लोम विवाह की सन्तान थे।

इस आधार पर वे अपने को क्षत्री कहते रहे हैं और उनका मत रहा है कि वे वैश्य नहीं हैं। कलवारों में से दो बन्धुओं ने प्रथम महायुद्ध में दो सर्वोच्च पदक (विक्टोरिया क्रास) प्राप्त किये थे। जो क्षत्रियत्व के अनुकूल गर्व का विषय है।

(०२) शाब्दिक व्युत्पत्ति मणि जी के अनुसार

कल्चुरि, कलार, कलवार, कलचूरि, कल्यपाल, कलबाला, कल्लवाल आदि शब्द समानार्थक हैं। राज्य कुलों में कल्यपाल भोजन भण्डार आदि की व्यवस्था करते थे। यह स्थिति तब आई जब कलवारों की स्वतन्त्र राजा की स्थिति समाप्त हो गई थी और वे प्रजाजन बन चुके थे। बाद में अन्न उत्पादन और अन्न का व्यापार भी कुछ लोग करने लगे। कीलाल शब्द वेदों में भी आया है और तेज, अन्न, तेजस्वी के अर्थ में आया है। कीलाल अमृत पेय के अर्थ में भी आया है। [इतिहास विशेषांक का पृष्ठ-१२]

स्मृतियों में कलाल का समानार्थक शब्द शौण्डिक भी आया है। वहाँ उनको मद्य व्यवसाई करके लिखा है। परन्तु मनु ने शौड़िकों को शूद्र लिखा है, क्योंकि वे वैदिक धर्म का पालन नहीं करते थे। यह मनु की ज्यादती प्रतीत होती है क्योंकि ब्रह्मपुराण में हैहय लोग राज-वंशों में गिने हैं और जन्म की व्यवस्था में जाति बदलती नहीं है। (पृ० १३)। वस्तुतः हैहय के पाँच पुत्रों में से एक ताल जंघ से जो पांचकुल हुये हैं उन्हीं में से शौंडिकेय एक हैं। कातव पुराण के अनुसार शुण्डि यन्त्र से शराब निकलने के कारण शौण्डिक और सुरा चुआने के कारण क्षत्रियों के एक वर्ग का नाम चौहान पड़ा। बाल्मीकि रामायण (८३/१४ में राम को मनाने भरत के साथ जो लोग गए, उनमें इनका भी उल्लेख है।

!"सुवर्णकारा प्रख्यातास्तथा कम्बल कारकः।
स्नाय कोष्णोदका वैद्य धूपिकाः शौण्डिकास्तथा ॥

(०३) कलवार समूह में सम्मिलित उपजातियां

मध्य प्रदेश में कलारों के वर्ग यो हैं—परदेशी-कासरे-राय-उरहवार दंडसेन-मालवीय-चौकसे-झरिया-मराठे और सिहोरे (विशेषांक पृष्ठ—२२)

इनमें से सिहोरों के भी २४ भेद हैं जिनमें डडोरे, नरवरिया, मुखरिया, पवइया, बिजोल्या, महरेले, टकसारिया, वजणिया, सुभट, माली खंडेलवाल, कटकवार' कटारिया आदि हैं।

[परन्तु खण्डेलवारों ने इस मान्यता से असहमति प्रगट की है]

कलवारों का एक समृद्ध वंश शिवहरे हैं। मि० रसेल ने लिखा है ऊपर वर्णित सिहारे वास्तव में शिवहरे है। यह शब्द सोमहारे या सोमवारे का अपभ्रंश है। सोम का अर्थ शराब है। शिव के उपासक होने से भी शिवहरे कहलाते हैं। रशेल ने अगरू और सगरू नाम के दो भाइयों की दंत कथा लिखी है कि कैसे एक बार सगरू ने महुआ खरीदा और उसे चुआ कर शराब बनाकर लाभ कमाया और वही पेशा कर निकले। सियारू की सन्तान शिवहरे कहलाई। कुछ लोग इन्हें सौरवारे बताते हैं, जिन्होंने सोमनाथ मन्दिर बनाया था। हार जाने के बाद इन्हें शिवहारे कहने लगे।

मध्य प्रदेश में सिहोरे लोग बुन्देलखण्ड से आकर बसे। उनका नाम ऊमरे है। यह लोग भ्रमवश अब अपने को ओमर वैश्य कहने लगे हैं। [पृष्ठ—21] [परन्तु ओमर लोग असहमति प्रगट करते हुये अपने को इस ग्रुप से बाहर का बताते हैं।—सम्पादक] राजा भोज वर्ग के लोग हैहय वंश का अंग हैं और भंडारी कहलाते हैं, (पृ० २२) कटकवार शिवहरों के भाग हैं। (७)-पवइया लोग कर वसूल करते थे, और बिलासपुर में बसते हैं। वे भी कलवार हैं। (८)यू०पी० में बाथम लोग तथा बिहार के खण्डाशार भी कलवार हैं। बाथम शब्द क्षत्रिय का द्योतक है। शाहजहाँपुर इनका केन्द्र है। हरनामदास अकबर के समय में इनका प्रतिभाशाली पुरुष था। फर्रुखसियर के फर्रुखाबाद में भी बाथम वैश्य बसे हैं। इनका मुख्य पुरुष खुशहाल राय था। यह लोग बहुत दिनों तक जुही कानपुर से कलवार गजट अखबार निकालते रहे थे। [पृष्ठ—36] परन्तु बाथम वैश्य अपना पृथक अस्तित्व बताते हैं। [सम्पादक]

उक्त कानपुर वाले पत्र के अप्रैल १९०६ वाले अंक में लिखा है कि उनका ही एक वर्गगुनेरिया गुलरे या गोलवारा कहलाता है। इनका मूल स्थान गौलेर था। [पृष्ठ—39] [परन्तु गुलहरे बन्धु असहमत होते हुये अपने को पृथक स्वतन्त्र उपवर्ग बताते हैं। —सम्पादक]

(३) पंजाब स्थित अहलूवालिया लोग भी कलवार हैं। १९०१ की सैन्सस रिपोर्ट ने ऐसा ही निश्चय किया। इन्हीं के वंश का कपूरथला में राज्य था। महाराजा कपूरथला का गोत्र जयसवाल है, जो जायसवाल से बिगड़ कर बना है। (पृ० ४१)

(४) छत्तीसगढ़ में वर्णवाल लोग भी कलवार हैं। यह कर्णवाल से बिगड़ कर बना है यह मद्य-मांस प्रेमी हैं। हैहय क्षत्रियों की औलाद हैं। इनका गोत्र शांडिल्य है। (पृष्ठ—४१) [परन्तु बरनवाल बन्धु इससे असहमत हैं। सम्पादक]

(५) जायस-वाल भी एक क्षत्रिय जाति है, जो रायबरेली के पास जायस को अपनी जन्मभूमि मानते हैं। ये यहीं के राजपूतों की एक शाखा हैं। इनका बनारस में गोत्र शाँडिल्य हैं। ये भी कलवार हैं। (पृ० ४८) कुछ लोगों का विचार है कि जेसलमेर राज्य के संस्थापक महाराज जासलदेव के वंशज ही जायसवाल हैं।

(६) टांक और मालवीय लोग भी कलवार हैं। कोटा के मालवियों का जायसवालों से सम्बन्ध हुआ है। (पृ० ४९) ये कलवार मालवा के रहने वाले हैं। मालवीय ब्राह्मण भी होते हैं। कर्कोट इस भाग को पूर्व समय में राजधानी थी। (पृ० ५१)

(७) वास्तव में कुछ यादव लोग मथुरा छोड़ कर पंजाब जा बसे थे। ये नागवंशी थे। जो कि वास्तव में यदु थे। नागर लोग इन्हीं का अंश हैं। और नागर कलाल कहे जाते हैं।

(८) कसेरे भी हैहय वंशी हैं। रत्नपुर राज्य ताम्रध्वज के वंशज हैहयों का था। कसेरे ठठेरे रत्नपुर का ही अपना आदि स्थान कहते हैं। कसेरों के कई भेद हैं। मराठा, देशवारा, परदेशी, झाड़े औधिया, करैया, पूर्बिया, दयाराम। इन सबका गोत्र अहिदया है। [पर औधिया अवधवाल नाम से अपने को प्रसिद्ध किये हुये हैं। —सम्पादक]

(९) मध्यप्रदेश के तमेरे या ताम्रकार लोग भी रत्नपुर से निकले हैहय वंशी हैं।

(१०) बंगाल, उडीसा, में शौण्डिकों की निम्न जातियां हैं—कारख, गामी, गाई, ग्राई, चौधरी, नायक, पजियार, पांड़े, महतो महथा, मण्डल, महासेठ, साहू, साव, सरकार, सिंह, शाहा, राउत।

(११) दरभंगा में—सेठ, महासेठ, महतो, पूर्वे, पजियार, महथा, नामक, गामों, मडाय, हाथी, प्रधान, मोदी आदि।

(१२) उड़ीसा में साहू, लाहा, महापात्रा राय-चौधरी एवं बेहरा।

(१३) भागलपुर बिहार में—गंजवार, बिरवार, कलसूड़ी, मंडल, धनेश्वर। अन्य भेद यों हैं—संवाहुत, बीजाहुत, गंजवार, चौथान, धनेश्वर, सिनहा।

(१४) छत्तीसगढ़ में-कोसरे, दंडसेना, झरिया, झासआ, उत्कल-ताल।

(१५) बिहार के ब्याहुत लोग भी कलवार हैं। यह बीजयुक्त का अपभ्रंश है। इनके यहां विवाह पर बलराम को शराब से मनाया जाता है, जैसा कि शेष कलवारों में होता है। प्रतीत होता है कि हैहय क्षत्रिय परम्परा से इनमें से अनेक वर्ग अपने को प्रथक करते गये हैं।

(०४) कलवारों के राज्य :

पर यह स्पष्ट है कि कलवारों के पूर्वज हैहय वंशियों का कभी सारे भारत पर राज्य था। कलवारों के पूर्वज हैहय-क्षत्री बड़े प्रतापी राजा थे।

मुसलमानों के आने के पहिले काठियावाड़, कच्छ, राजपूताना, मथुरा, भरतपुर, करौली, धौलपुर, गुड़गाँव, आगरा, ग्वालियर, मैसूर, विजय नगर, काबुल, कन्दहार सर्वत्र यदु वंशीय राजाओं का राज्य था। कन्दहार के राजा को हाहज कहते थे। (पृ० ४६)। कन्दहार के हैहय राजा बाद में बौद्ध हो गये थे (पृ० ४७)।

जबलपुर को पहिले चेदि कहते थे। इनकी राजधानी त्रिपुरी थी। कलचुरी एक राजघराने का नाम था जिसे जनता में कल्यपाल कहते थे। (पृ० ५५)। दशार्ण देश ग्वालियर का पूरा नाम था। शिशुपाल विराट का राजा था। वह भी चन्द्रवंशीय था। द्वारिका तो वृष्णियों के अधिकार में थी ही। यह सब हैहय क्षत्रिय थे।

कलिङ्ग में सम्राट क्षारवेल हुआ जो महान प्रतापी था। यह भी चेदि क्षत्रिय था [पृ० ६०] दक्षिण कोशल पर जिन मेघ राजाओं का अधिकार था, वे भी हैह्‌य क्षत्रिय थे। कर्कटक राजा तीसरी सदी में हुये और कर्नाटक का राज्य चलाया और कलचुरि सम्बत चलाया। ये भी कलावर थे। [पृ० ७] नासिक इनकी राजधानी थी। उहरसेन इनका पूर्वज था। कलचुरियों में मांगेयदेव और कर्णदेव प्रतापी सम्राट हुये हैं। [पृष्ठ ७९] कर्णदेव ने कालिंजर का किला जीत लिया था। कांगड़ा का राजा उसके यहां बन्दी था। बगाल और उड़ीसा उसे कर देते थे। १०४१ में उसने प्रयाग जीत लिया था। [पृष्ठ ८२]। काशिराज उसकी उपाधि थी। उसने चन्देलों को नष्ट कर दिया था।

चालुक्यों को मैसूर में डाहलों ने हटाकर राज्य स्थापित किया था। यह डाहल भी कलचुरियों की एक शाखा थे। विजल इसी वश में हुआ। इसका पुत्र सोमेश्वर हुआ।

रायपुर में हैहय क्षत्रियों का राज्य था। ताम्रध्वज नामक नरेश से युधिष्ठर के अश्वमेध यज्ञ के समय युद्ध हुआ था।

(०४०१) कलवारों द्वारा काश्मीर पर ८३ वर्ष ४ मास राज्य किये जाने की बात कल्हण कृत राजतरंगिनी में वर्णित है। इस पुस्तक में काश्मीर का ४००० वर्ष का क्रमबद्ध इतिहास सुरक्षित है। राजतरंगिनी के अध्याय ५ में एक राजवंश का कल्यपाल वंश नाम से वर्णन है और यह भी लिखा है कि लोक में इसे कलवार वंश भी कहते हैं। यह लोग पहले राजा के भोजनाध्यक्ष (कल्ल=भोजन) होते थे। अवन्ति वर्मन प्रथम राजा था, जिसने लौकिक सम्वत् ३९५९ (यही सम्वत् युधिष्ठिराब्द भी कहलाता है) में राज्य किया।

वह वैष्णव धर्म मानते हुये भी अपने को शैव बताता था। तो भी १० वर्ष तक प्राणी-हिंसा इसने बन्द करा दी थी। वह अज्ञात मां-बाप का पुत्र था। और घड़े से निकाला बताया गया है।

शंकर वर्मा—उसका उत्तराधिकारी था। उत्तरापथ के स्वामिराज की कन्या सुगन्धा से उसने विवाह किया था। उसने सन् ३९७७ तक राज्य किया। सात रानियों से विवाह किया। उसके मरने पर वे सती हो गईं। उसने देव वाणी संस्कृति में बोलना बन्द करवा दिया था। सातवीं रानी सुगन्धा से उसके मंत्री प्रभाकर वर्मा ने विवाह करके राज-काज संभाला, परन्तु शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हुआ। तब उस गोत्र के पार्थ नामक व्यक्ति के राज्य में दुर्व्यवस्था के कारण दुर्भिक्ष पड़ा तथा १ बोरी चावल का मूल्य १००० दीनार तक हो गया। इसके बाद राजाओं का क्रम यों रहा :—

पार्थ,→ चक्रवर्मा,I→ पार्थ→
पिता पुत्र—भाई—
शूरवर्मा चक्रवर्मा II—शम्भुवर्धन, चक्रवर्मा III

इन चक्रवर्मा ने हांसी नामक डोम कन्या से विवाह किया और इस कारण डामर द्वारा इसका वध कर दिया गया। तब उसका पुत्र पार्थ गद्दी पर बैठा। इसके पुत्र ने अवन्तिवर्मन नाम रखा और अपने पिता का बध करवा दिया। भीषण क्षय रोग से इसकी भी मृत्यु हो गई। इसका उत्तराधिकारी शूरवर्मा हुआ। परन्तु मलवर्धन नामक मंत्री ने उसे हटाकर अपना राज्य पंचायत द्वारा चलाया। अवन्तदेव नामक कायस्थ राजा ने यह राज्य समाप्त कर दिया।

(०४·०२) कार्त्तिकेय सहस्रबाहु अर्जुन

रेवा नदी के तीर पर माहिष्मती (उज्जैन) नगरी इसकी राजधानी थी। मनुस्मृति के लेखानुसार ब्राह्मण अवध्य समझे जाते थे। उनको दोषी पाये जाने पर ब्राह्मण 'अनादर' 'अनादर' मात्र कहकर छोड़ दिया जाता था। परन्तु हैहयों ने इसे नहीं माना। अपराध करने पर ब्राह्मणों को भी कठोर दण्ड दिया जाने लगा। इससे ब्राह्मण समुदाय अप्रसन्न रहने लगा। 'कामधेनु' गाय पर महाराज सहस्रबाहु और ऋषि जमदग्नि में संघर्ष चल गया। उसमें सहस्रबाहु द्वारा जमदग्नि का बध हो गया। जमदग्नि ऋषि के पुत्र परशुराम ने प्रबल संगठन करके क्षत्रियों के विशेषकर हैहय क्षत्रियों के बीज-वश मिटाने का संकल्प कर सग्राम छेड़ दिया। महाराजा सहस्रबाहु इस संघर्ष मे खेत रहे। २१ बार हैहय क्षत्रियों को परशुराम की क्रोधाग्नि में जलना पड़ा। इस संकट के समय कश्यप ऋषि ने हैहयों की रक्षा करने में सहायता दी। तब समस्त हैहय वंशियों ने भार्गवों से पुरोहित कार्य हटाकर कश्यप ऋषि को अपना गुरु बना दिया।

[·०४·०३] मध्य दक्षिण भारत के कलचुरी

दक्षिण भारत में त्रिपुरी कौशल और कल्याणी में इस वंश के 'कलचुरी' राजवंश चले जिनका 'कलचुरी' संवत भी चला । यह संवत संभवतः आश्विन शुक्ला प्रतिपदा वि० ३०६ के आस पास प्रारम्भ हुआ था।

[·०४·०४] शालिवाहन

शालिवाहन पुर के बसाने वाले राजा शालिवाहन इसी वंश के शोभा बढ़ाने वाले थे। शालिवाहन पुर, तन्नोगढ़, प्रभास पत्तन, अन्हल वाडा आदि स्थानों में भट्टी, कलारसी, कलार राजपूत, चोरवारे, सोरवारे, शौरसेनी, सौराष्ट्रवारे नाम करके हैहय वंशियों के राज चले।

[·०४·०५] कपूरथला के जस्सासिंह

पंजाब में कपूरथला का राजवंश इसी जाति में से चला जो, सन् १९४७ तक विद्यमान था : इसमें महाराज जस्सासिंह अत्यधिक प्रतापी राजा हुये जिन्होंने अहमदशाह अब्दाली को हराकर देश को मुक्त कराया था। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर इन्हीं महाराज ने निर्माण कराया था। इन्होंने एक सोने का सिक्का भी चलाया था जिस पर अंकित था। "मुल्क अहमद गिरफ्त ब फज्ले अकाल सिक्का दरजद जहां जस्सा कलाल।"

[०४·०६] सिक्खों के गुरु

सिक्ख संप्रदाय के चौथे गुरु रामदास से लेकर गुरु अर्जुनदेव, गुरु हरगोविंद जी, गुरु हरिकिशन जी, गुरु तेगबहादुर जी और दशम गुरु गोविंदसिंह जी तक इसी हैहय वंशान्तर्गत शौण्डिक, सौढ़ी अथवा सूढ़ी वर्गीय महापुरुष हुये हैं, जिन्होंने आर्य हिन्दू जाति की रक्षा की थी।

[·०४·०७] अंगदेश के राजा कर्ण

भागलपुर व मुंगेर का अंचल महाभारत कालीन राजा कर्ण का रंगस्थल कहा जाता है जहां कि कालिंजर का प्रसिद्ध किला है। यह किला सम्राट कलचुरी कर्ण का बनाया हुआ है । कलचुरि, हैहय वंशीय क्षत्रिय थे—इनके ताम्र लेखों में 'अत्रैव हैहय नृपान्वय" स्पष्ट लिखा गया है। कलचुरि पाशुपत पन्थी कट्टर शैव थे, और पाशुपत पन्थ के प्रतीक अनेक अवशेष कालिंजर के दुर्ग में आज भी मौजूद हैं।

[·०४·०८] दक्षिण पथ के कलभ्र :

मेरी (सम्पादक की) जन्म भूमि अलीगंज (एटा) निवासी, साहित्य मनीषी श्री कामता प्रसाद जी जैन एम० आर० ए० एस० अपने जैन इतिहास के पृष्ठ १४ पर लिखते हैं-पांचवीं छठीं शताब्दी के बीच कलभ्रों (कलवारों) का आक्रमण दक्षिण भारत पर हुआ था। उन्होंने चोल, चेर एवं पांड्य के राजाओं को परास्त करते समय तामिल देश पर अधिकार कर लिया था। कहा जाता है कि यह कलभ्रगण कर्णाटक देश के मूल निवासी 'कल्लर' जाति के लोग थे। पांड्य राजाओं को जीतने के कारण उन्होंने 'मारन' और 'नेंदु मारन' विरुद धारण किये थे। इनके अतिरिक्त इनके दो विरद् 'कलभ्रकलवन' और 'मुत्तरैयन' तीन देशों के स्वामी अर्थात् (त्रिकलिंगाधिपति) भी थे।

कांची के शासक को 'तिरयन्' कहा जाता था। जब कलभ्र आए और पल्लव करद राजा बने तो 'कलभ्र' नरेशों ने 'ताण्डैयन' की उपाधि धारण की। 'पेरिय पुराणम्' में लिखा है कि जैसे ही कलभ्र तामिल देश में अधिकृत हुए, उन्होंने जैन धर्म अंगीकार कर लिया। बात भी ठीक समझ पड़ती है, इसलिये कि कलचुरियों की रत्नपुर (छत्तीसगढ़) वाली शाखा भी जैन धर्म की अनुगामिनी हो गई थी। और मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट प्रदेश मे हजारों घर जैन कलवारों के आज भी हैं।

श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य के 'हिन्दू भारत का उत्कर्ष' पृष्ठ २१२ के आठवें प्रकरण में लिखा है—दक्षिण के चालुक्यों के उदय से भी पूर्व पश्चिम प्रान्त में कलचुरियों का राज्य था। सातवाहन (आन्ध्र) के पश्चात् उनके साम्राज्य का अधिकांश उनकी आधीनता में अवश्य आ गया था।

[०५] इतनी उपजातियां बनने का कारण :

०१) स्थानपरक—पुर्विया, मालवीय, भोजपुरी, अयोध्योवासी, जैसलमेरी, आदि। [पर अयोध्यावासी वैश्य अपने को पृथक स्वतन्त्र जाति कहते हैं।—सम्पादक]

०२) कई एक राज घरानों में कलेवा, भण्डार आदि कार्यों पर जिन पूर्ण विश्वस्त व्यक्तियों को नियुक्त किया गया वे भरिया, चौकसे, भण्डारी आदि नामों से पुकारे जाने लगे। कच्छ के डहरी भाग के डहरिया कहाये।

०३) कुछ नाम धन-सम्पन्नता के कारण भी पड गये यथा श्री माल, धनेश्वर और शाह आदि।

०४) (सोम) चन्द्रवंशी होने के कारण सोमवंशी वर्ग बना। इसके विरोधी सोम रस का कार्य यज्ञ में करने के लिये सोमवंशी लपन वग होना बताते हैं।

०५) आचरण श्रेष्ठ होने के कारण भी कुछ नाम पड़े यथा सेठ, महासेठ, महाजन आदि।

०६) प्राचीन काल में जो व्यक्ति विभिन्न प्रकार के आसव तैयार करते थे और वे आसव 'दवादारू' के रूप में प्रयुक्त किये जाते थे। घर घर में उन आसवों के खींचने की भट्टी रहती थी। ऐसे लोग भट्टी अथवा भाटी कहाये।

[०६] कलवारों का शराब से सम्बन्ध

इस विषय में मणि जी की मूल वर्णित पुस्तक के ही विचार यों हैं;—

युद्ध, मांस और शराब कलवारों की प्रिय वस्तु रही है और मणि जी इन सब पर गौरव अनुभव करते हैं क्योंकि यह क्षत्रियोचित कर्म हैं।

'वे स्वतः पीने के लिये अच्छी शराब बनाते थे। शासन न होने पर इन्होंने बनाने और बेचने का पेशा अपना लिया। इस सिद्धान्त को स्वीकार करना कोई आश्चर्य जनक बात नहीं है।' (पृष्ठ २१)

कौटिल्य अर्थशास्त्र के २।२५ का हवाला देकर मणि जी ने लिखा है कि बिक्री की दुकाने कैसी हों: वातावरण सुन्दर हो, सुसज्जित हो, वहां दासियें तथा वैश्यायें हों। सुरा के प्रकार, उनके बनाने की पद्धति, आसवों का निर्माण आदि पृष्ठ ६० से ६४ तक मणि जी ने लिखी है। छत्तीसगढ़ में इन्हें दण्डसेना उत्कल कलाल आदि कहते हैं और यह लोग सुरा देवी अर्थात काली की उपासना करते हैं (पृ० ८७)। मद्य पीते नहीं पर नई धान की फसल आने पर शराब बनाने के उपकरणों की पूजा करते हैं (पृ० ८७)।

बंगाल में सूंड़ी लोग प्राय: शराब का व्यापार सगौरव करते हैं। (पृ० ८८)। कलवारों में बलदाऊ जी को मानने की प्रथा विवाह पर होती है। मण्डप के नीचे दो कुल्लहड़ शराब रखी जाती है।

मणि जी एक स्थान पर लिखते हैं 'राजा होने के कारण क्षत्रिय को मांस और मद्य का सेवन अभीष्ट है। आज भी मिलिटरी में यह वस्तुयें सप्लाई की जाती हैं। अस्तु कलावारों में यदि इनका प्रचलन है तो आश्चर्य ही क्या है? ....शैव भारत का पुराना धर्म है। यह तो वैष्णव तथा जैन संस्कार हैं जिन्होंने लोगों को भीरु बना दिया है। और तो और राज्य शासक हैहय-वंशी-क्षत्रिय अपने को वैश्य कहने लगे हैं, इससे बढ़कर दुख की और क्या बात होगी? [परन्तु वैश्य कहलाने का प्रचलन सर्वत्र प्रारम्भ हो चुका है—सम्पादक]

शैव होने के नाते वे यज्ञ में बलि और मांस भक्षण में भी आस्था रखने की बात कहते हैं। पृष्ठ ३५ पर लिखते हैं:—देवताओं को तृप्ति यज्ञ में आहुति या बलि देकर की जाती थी। दूध, घी अनाज, मांस और सोमरस (एक मादक रस), इन सभी वस्तुओं की आहुति देवताओं के लिये दी जाती थी।'

(०६·०१) शराब (सुरा) के विषय में

आर्थिक आवश्यकता-इसका उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक धन लगाया जाता है और पर्याप्त आमदनी की जाती है। आज की सरकारें शराब के कारण उत्पन्न शराब का उत्पादन बढ़ाने के लिए धन भी देती हैं। अनेकों धर्मों मे उसकी आज्ञा है।

धार्मिक आवश्यकता

(अ) **इस्लाम में**-जिस वस्तु को अल्लाह पाक ने जन्नत के लिए पवित्र माना है, उसको क्यों कर इन्सान बुरा कहे? शराब के पीने की छूट तो अल्लाह ने जन्नत में दी है। (१) नियामत के बागों में।४३। (२) तख्तों पर आमने सामने।४४। (३) इनमें साफ शराब का प्याला घुमाया जायेगा। ४५। (४) सफेद रंग पीने वालों को मजा देगा।४६। (५) न उमसे सर घूमते हैं, न उससे बकते हैं,।४७। (कु० पा० २३ सू साफ्फात रु० २) (६) उनको खालिश शराब मुहर की हुई पिलाई जाएगी जिस (बोतल) की मोहर कस्तूरी की होगी। और अच्छा करने वालों को चाहिए कि उसी पर इच्छा करें।२६। और उसमें तसनीम (चश्मे) के पानी की मिलावट होगी।२७।

(डा० श्रीराम आर्य कासगंज (एटा) की पुस्तक 'स्वर्ग विवेचन' से)

(ब) बाइबिल के ईसाई धर्म में भी शराब पीने की खुली छूट है—

(१) खुदा का बेटा ईसा शराबी था (मत्ती ११) (२) खुदा लोगों को दावतें खिलाता व शराब पिलाता था (याशायाह २५-६) (३) ईसाई खुदा ने लोगों को शराब पिलाई (योएल २) (४) "आओ हम अपने पिता का दाख रस पिलावें और हम उसके साथ शयन करें कि हम अपने पिता का वंश चलायें। तब उन्होंने उस रात अपने पिता को दाख रस पिलाया और यदि लौठी गई और अपने पिता के साथ शयन किया। हम उसे आज रात भी दाख रस पिलावें, तु जा के शयन कर। सो लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भिणी हुईं।

(तो उत्प. पर्व १८ आ. ३२। ३३ ३४। ३६। स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश से उद्धृत)

(स)-वाम मार्ग में :

वाममार्गियों के विचार से भी शराब कोई बुरी वस्तु नहीं है, बल्कि बार-बार जन्म लेने से बचने का एक सुनिश्चित मार्ग है। उड्डीस तन्त्र आदि में एक प्रयोग लिखा है: पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत पतति भूतले, पुनरुत्थाय वै पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।

वाम मार्ग पर चलने वाले लोगों का यह भी प्रचार है कि 'ब्रह्म शाप विमोचय' अर्थात शराब ब्रह्मा आदि के से शाप से रहित है।

(द) वेद में भी सोम रस की प्रशंसा में सैकड़ों मन्त्र हैं। परन्तु अब विद्वान कहने लगे हैं कि अन्न की सुरा कहा जाता है, (२) 'यशो हि सुरा' [शतपथ] यश ही सुरा है। (३) 'सुरा उदक नाम (निघण्टु) सुरा जल को कहते हैं।

(०६.०२) कथानकों की आवश्यकता

एक जायसवाल विद्वान ने पिछली शताब्दी में एक कातन्त्र-पुराण में संस्कृत श्लोकों के माध्यम से सुरा बनने व बेचने को धार्मिक श्रेष्ठ रूप देने का प्रयत्न किया है। उदाहरण निम्न प्रकार हैं—

कीर्तवीर्यो महावीर्यो यादवो दान सागरः।
तस्य पुत्र सहस्रेषु पंचैवावंस्तिा भूवे॥

× × × ×

विक्रान्ताश्च पराक्रान्ता शुण्डायोद्धार एवते।
योद्धृणां हि प्रियं मद्यं रणप्रियाः मद प्रियाः।
वीरा हि मदिरा तस्मात तेषु मद्य प्रियम दा
विविधानां च मद्यानामाविष्कर्त्तार एवते।
हस्ति शुण्डेव तद्यस्मात् यन्त्रं शुण्डं प्रकीर्त्तितम्।
शुण्ड यंत्रमतिख्यात समस्तं हस्ति शुण्डवत्
शुण्ड यन्त्रेण निर्माता शुण्डा तस्मात प्रकीर्तिता।

यो विक्रीणीत शुण्डां स्याच्छुण्डी शौंड़ी से शौंडिकः
शौंडिकः शौंडिकेयों व चौहान क्षत्रियः क्वचित् ।
क्वचित सुतस्य सोतारः क्षत्रा नाम्ना च भारते ॥
क्वचिद्वा कल्यपालश्च मिष्टमद्यस्य पालकः ।
क्वचिद्वा कल्यपालश्च सुरा कल्प प्रपालकः ॥
चौहानो मद्य चूहनात्मवस्य्रक्षरणागतः ।
सवनात्सुत मद्यस्य सोता सोतार एवते ।

यदुवंश में महावीर्यवान महाराजा कार्तिकेय सहस्रबाहु बडा दानी हुआ । जिसके हजारों पुत्रों में से केवल ५ ही बचे जयध्वज, शूरसेन, वृषभ, मधु और ऊर्जित । जयध्वज से तालजंघ हुआ । तालजंघ से १०० पुत्र हुये । और्व मुनि के तेज से इन सब का संहार हो गया । उनमें से सबसे बड़ा वीतिहोत्र वृष्णि था जो मधु का पुत्र था ।

ये सब बड़े विक्रमशील पराक्रमी, शूर और योद्धा थे । उन योद्धाओं को मद्य बडा प्रिय था । वे रण और मद्य दोनों के ही बड़े प्रेमी होते हैं । अतएव मधु के पुत्र वीतिहोत्र वृष्णि ने सूंड रूपी यन्त्र द्वारा नाना प्रकार के मद्य बनाए और उनका अविष्कार किया । उस यन्त्र का नाम 'शुण्ड़ा' पड गया । उसी शुण्डा यंत्र से तैयार की गई मदिरा 'शुण्डा' कही गई । और 'शुण्डा' का व्यापार करने वाला शौण्ड़ी' शूण्डी तथा शौंड़िक नाम से पुकारा गया । वे ही 'सुत' नाम मद्य को कूट कर निकालने वाले क्षत्र नाम से पुकारे गये । वही कल्यपाल कहाए और वे ही लोग मद्य चुआने के कारण चौहान कहे गए । फिर लिखते हैं—

आदौ मद्य प्रिया द मालवे कति हैहयाः ।
आविश्चक्रुश्च पानार्थ शुण्डाख्यां मदिरा पुरा ॥
तीव्रं तेजस्करं मद्यं बन्धुम्यश्च ददुः पयु ।
व्यक्रीणन् कमशः शुण्डों जीविकाय च केचन ॥
हैहया राजवंशीयाः क्षत्रियास्तु हि दुर्जयाः ।
कर्मजां पदवी नीत्वा शौंडि शूण्डीति ते भरे ॥
हैहयाः शौण्ड्रिकः ऊचुः शण्डानाम व्यवसायिनः ।
तत्रार्बुद गिरिं प्रान्ते मालवे एिवदिहस्सतः ॥
हैहयाः शौंडिकः ऊष्टुः शण्डानां व्यवसायिनः ।
तत्रार्बुदगिरि प्रान्ते मालवे स्विदितस्ततः ॥

अर्थात मधु प्रिय हैहय क्षत्रियों में ही तीन मदकारी सुरा का आविष्कार करके पिया, बनाया और व्यापार किया ।

अर्थात् आरम्भ में मद्यप्रिय हैहय वंशियों ने ही शुण्डा नामक मद्यका आविष्कार किया था । उन्होंने तीव्र मदकारी सुरा बना कर स्वयं पिया और अपने बन्धुओं को भी पिलाया । बाद में उन्होंने मद्य बनाकर बेचने का पेशा अपना लिया । तभी से उनका पेशे के अनुसार यह शुण्डी या शौण्ड्री नाम पड़ गया । हैहय=शौंडिक मद्य का व्यवसाय करने लगे थे । आबू और मालवा प्रान्त ही उनके व्यापार करने का क्षेत्र था ।

रामायण काल में भी शौण्डिकों का वर्णन मिलता है :—

यथा हयेमशौण्डीरं शौण्डीरः क्षत्रियर्षभः ।
किं नाम कृपणं दैवमशक्तमभिशंससि ॥
[अयोध्या कांड श्लोक २३]

रामायण में इन शौण्डिक क्षत्रियों का जिक्र रामायण के समय से ही चन्द्र वंशियों में सुरा प्रवृत्ति का द्योतक है । [शौण्डिक चन्द्र वंशी क्षत्रिय हैं । और आजकल कलवारों के ही वर्ग हैं ।]

(०६.०३) सामाजिक रीति-रिवाजों में सुरा की आवश्यकता

बलभद्र की प्रिय वारुणी जायसवालों के घरों में बलभद्र पूजन का रिवाज है । जब शादी में भोजन के लिये कच्ची रसोई तैयार होती है तो वर या कन्या का पिता या उनका कोई अन्य अभिभावक जो दिन भर इस पूजन कार्य के लिये उपवास करता है, अपने बन्धु बान्धवों से कहता है कि चलो बलभद्र मना लावें । उनका मना लाना आवश्यक है ।

इस अभिप्राय से वर या कन्या का पिता अपने अन्य चार कुटुम्बियों के साथ एक थाली में (या पत्तल) में दाल, भात, बूरा आदि जो भी (मातृ पूजन के दिन कच्ची रसोई विरादरी के लिये उस दिन वनी रहती है), परोसकर बलभद्र को प्रतिमा के सम्मुख रखता है। पर बलभद्र का सत्कार केवल दाल, भात आदि से नहीं होता । वारुणी नामक दिव्य पेय जो वरुण देव द्वारा प्रेषित हो (उपस्थित) किया जा वृन्द्रोबनोत्पन्न कदम्ब वृक्षों के कोटरों से चुआ करता था । जैसा विष्णु पुराण अंश ५ अध्याय २५ में लिखा है—

वने विचरतस्तस्य सहगोपैर्महात्मनः ।
मानु पच्छद्मरुपस्य मेषस्य धाणीधतः ॥

उपभोगार्थत्यर्थ वरुणः प्राहवारुणीम् ।
अभीष्टा सर्वदा यस्य वरूणि त्वं महौजसः ।

अनतसेयोपभोगाय तस्य गच्छ मदे शुभे ।
इत्युक्तावारुणीतेन सन्निधानमथा करात् ॥

वृन्द्रावनोत्पन्न कदम्ब तरु कोटरे ।
विचरन् बलदेवोऽपि वारूणी मधमुत्तमम् ॥

आघ्राय बारुणी तर्पमावापाथ पुरातनम् ।
ततः कदम्यात् सहसा मधुधारा रुलांग ला ॥

पतंती वीक्ष्य मैत्रेय प्रेययो ररमाम् मुदम् ।
पपौ च गोप गोपिभिः समवेतो मुदान्वितः ॥

अर्थात माया मनुष्य का शरीर धारण कर गोपों के साथ वन में बिहार करते हुए पृथ्वी को धारण करने वाले महात्मा शेष जो अर्थात् बलदाऊ जी के उपभोगार्थ वरुण देव ने वारुणी से कहा, से वारुणी ! तू महातेजस्वी अनन्त जी अर्थात् बलदाऊ जी को सदैव प्रिय हो । हे कल्याणी तू उनके उपभोगार्थ जा ।" वरुण के इस भांति कहने पर वारुणी ने वृन्दावन में उत्पन्न कदम्ब वृक्षों के कोटरों में आश्रम लिया।

वन में बिहार करते हुये बलदेव जी को वारुणी की उत्तम गन्ध महकने से उसे पान करने की इच्छा हुई। हे मैत्रेय ! हलधर जी को वारुणी की धारा कदम्ब को कोटर से अचानक बहती देख बड़ा आनन्द हुआ। उन्होंने गोप-गोपियों के साथ उसका पान किया।

श्रीमद् भागवत स्कन्ध १० अध्याय ६५ में भी श्री बलभद्र का रास विलास वर्णन करते हुये उसके लेखक ने वारुणी के सम्बन्ध में यही बात लिखी है—

वरुण प्रेषिता देवी वारुणी वृक्ष कोटराम्।
पतन्ती यद्वनं सर्वं स्वगन्धेनाध्यवासयत्॥

तं गंधं मधुधाराया वायुमोपहृते बलः।
आघ्रायोपगतस्तत्र ललनाभिः समं पयौ॥

अर्थात् भगवान बलभद्र के रास करते समय वरुण जी की भेजी हुई वारुणी ने वृक्ष कोटर से बहकर अपने सुगन्ध से समूचे बन को सुवासित कर दिया। वायु के द्वारा पहुंचाई गई वारुणी सौरभ को सूंघकर बलभद्र जी वहां गये और व्रजाङ्गनाओं के साथ वारुणी का पान किया।

बलभद्र के सम्बन्ध में पूर्वोल्लिखित वारुणी विवरण से यह स्पष्ट है कि बिना वारुणी के उन्हें प्रसन्न करना वैसा ही दुस्तर कार्य था जैसा शिव को भांग और विष्णु का तुलसी पत्र बिना प्रसन्न करना सोच लेना है। यद्यपि वह पेय जिनके बलभद्र जी शायक थे अब नहीं मिलती। अतः सत्य-नारायण जी की कथा में बतलाये हुये "अभावे शालिचूर्णं वा शर्करां च गुडं तथा" के अनुसार कलवारों में घृत, पकवान, बुंदिया और चने की दाल तथा दिव्य वारुणी के मंड़प के नीचे मिट्टी के भाण्डो (कुल्हड़ों) में प्राप्त सुरा और चीनी से तैयार किया गया मधुर रस रखा जाता है। इसके बाद पाँचों जन थाली या पत्तल में रखे भोज्य पदार्थ को अपने-अपने हाथों से एक साथ छूकर परस्पर कहते हैं—"देवता उठे ! बलभद्र उठें ! फिर आपस में से ही लोग कहते हैं—हां उठे !" इस प्रकार अभिनय कर सुभद्रा हरण की घटना का स्मरण किया जाता है जब कृष्ण ने बलदाऊ की आज्ञा के बिना अर्जुन द्वारा पूजा को जाती सुभद्रा को उडवा दिया था। अतः विवाह के लिये बलदाऊ को मनाना आवश्यक था।

स्पष्ट है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। उपरोक्त आवश्यकताओं हेतु सुरा (शराब) आवश्यक थी और कलवार बन्धुओं ने समाज की इस आवश्यकता की पूर्ति की।

(७०) कलवारों से समाज में विशेष व्यवहार

अ—तुलसी दास के राम चरित मानस के उत्तर काण्ड में कागभुशुन्डि गरुड को अपने अवध में कलिकाल में हुये जन्म का वर्णन सुनाता हुआ, कलियुग का वर्णन करते हुये कहता है :—

जे वरनाधम तेलि कुम्हारा; स्वपच किरात कोल कलवारा॥
नारि मुई गृह सम्पति नासी। मूड़ मुडाये होंहि सन्यासी॥
ते विप्रन सन आपु पुजावहिं। उभय लोक निज हाथ नसावहि॥
(दो० ९९ख चौ० ५-६-७)

ब—अमर कोश में शौण्डिकों को शूद्र कहा है। शूद्राश्चावर वर्णाश्च वृषलाश्च जघन्याः। इसका कारण प्रतिलोम विवाह पद्धति है।

क्षत्रिय स्त्री + वैश्य पति, से उत्पन्न सन्तान = मागध। ब्राह्मण स्त्री + क्षत्रीय पति से उत्पन्न सन्तान = सूत। ब्राह्मण स्त्री + वैश्य पति से उत्पन्न सन्तान = वैदेहक।

एक कलवार बन्धु द्वारा निर्मित कातव पुराण में शौण्ड्रिक के लिये सूत शब्द आया है। ययाति क्षत्रिय राजा था जिसने शुक्राचार्य विप्र की कन्या देवयानी से विवाह किया था। इसके साथ शर्मिष्ठा क्षत्रियाणी भी आई था। यदु और तुर्वसु इसी देवयानी से उत्पन्न थे। हैहय यदु की चौथी पीढ़ी में थे। ब्राह्मणों ने इन सन्तानों को कभी क्षमा नहीं किया और इन्हें सदा सूत कहा है क्योंकि यह प्रतिलोम विवाह अर्थात् क्षत्रिय राजा द्वारा ब्राह्मण पत्नी से पैदा हुये थे।

स—परुषराम से युद्ध, जमदग्नि की हत्या, कामधेनु का हरण आदि कारणों से ब्राह्मणों ने इन्हें ब्र ह्मण और गौ का विरोधी घोषित किया।

द—जसा पहिले कह आये हैं, सारे चन्द्रवंश की उत्पति विलक्षण है।

य—धार्मिक सूर्यवंशी राजा वैष्णव थे। चन्द्रवंशी प्रायः शैव थे। अतः ब्राह्मण वर्ग इन्हें सदैव हेय समझता रहा। बाद में यह लोग बौद्ध भी हो गये जब कि आबू पर्वत पर विश्वामित्र ने इनकी शुद्धि की थी।

र—मद्य पान और मद्य का व्योपार अपना लेने के कारण समाज में इनका दर्जा नीचा रक्खा गया। और मनु ने तो अध्याय 4/2/216 में भोजन निषेध का नियम बना दिया।

[इस पुस्तक का लेखक इन घृणाओं का समर्थक नहीं है।
सम्पादक]

(७८) शिरोमणि सभा

अखिल भारतीय हैहय क्षत्रीय महासंघ

गत पृष्ठों में जो कुछ कहा गया है, उससे स्वभावतः निष्कर्ष है कि पिछली पीढ़ी में कपूरथला के मोहनसिंह जी अहलूवालिया [कपूरथला राजघराने के तथा मोहन मीकिन तथा कोका कोला कम्पनी के मालिक] के निर्देशन में हैहय क्षत्रिय नाम से आन्दोलन अति तीव्रता से चला। वे ही आजीवन इसके प्रधान रहे और कलवार कही जाने वाली जातियां उनके संघ में शामिल हो गई। उनके बाद उनके पुत्र श्री दलबीर सिंह अहलू-वालिया इसके अध्यक्ष हुये। अंग्रेजी राज्य के उत्तर काल में यह प्रवृत्ति हर जाति में थी कि वर्ण व्यवस्था की सोपान में वे एक सिड्ढ़ी ऊपर वाले वर्ण से अपने को सम्बद्ध करती थीं। पर वैश्य

वर्ण तो बना ही क्षत्रिय वर्ण के पेशा परिवर्तन से था। अग्रवाल, माहौर, कमलापुरी आदि सभी ने अपना आदि स्रोत क्षत्रिय राजकुलों से माना है। राजा का पद बड़ा आकर्षक था और भारत में हरेक जाति अपने को राजकुल का वंशज सिद्ध करने का उपक्रम करती रही है। परन्तु कलवार बन्धु,—यद्यपि सब व्यौपारी थे, पर उपरोक्त महत्वाकांक्षा के कारण वे हैहय क्षत्रिय संघ में शामिल हो गये थे, नामों में सिंह तथा उपाधि में वर्मा लगाने लगे। अन्य वैश्यों ने क्षत्रिय-स्रोत अपनाने पर कुछ आपत्ति नहीं की, पर यह नाम व उपाधि परिवर्तन ने अलगाव पैदा कर दिया। इस समय 1984/85 में इस महासंघ के अध्यक्ष हैं श्री बसन्त नारायण सिंह कलकत्ता और महामंत्री हैं श्री शिवनारायण जायसवाल, डिस्टिलरी कंपाउंड। लालपुर। रांची (बिहार)। और बिहार शाखा के महामंत्री हैं श्री तेज नारायण जायसवाल। मधुबनी बाजार—पूर्णिया (बिहार)।

इस संस्था का अधिक सिलसिलेवार परिचय इस पुस्तक में देना समीचीन न होगा। इस आन्दोलन ने विशाल वैश्य समूह को अत्यधिक हानि पहुंचाई है। तो भी इनके एक सम्मेलन की जो दिल्ली में दिसम्बर 83 में हुआ था, की थोड़ी चर्चा आवश्यक है।

दि० २४व २५ दिसम्बर ८३ को बाराखम्बा रोड स्थित दिल्ली के प्रसिद्ध माडर्न स्कूल में अखिल भारतीय हैहय क्षत्रिय महासभा का १८ वां अधिवेशन सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन २५ दिसम्बर को खुले अधिवेशन का उद्घाटन राष्ट्रपति ज्ञानीजैल सिंह ने सर शंकर लाल ओडीटोरिम में दिन के ठीक ग्यारह बजे किया। राष्ट्रपति ने सर्वप्रथम बाबा जस्सा सिंह अहलुवालिया को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते आश्चर्य प्रकट किया कि यहाँ सिर्फ सरदार ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश से करीब १३६ जातियों के प्रतिनिधि पहुंचे हुए हैं। उन्होंने सरदार दलजीत सिंह अहलुवालिया को इस प्रयास के लिए धन्यवाद भी दिया। और कहा कि मनुस्मृति ने हमें चार वर्ण में बांट कर कमजोर बना दिया था, परन्तु इस अखिल भारतवर्षीय हैहय क्षत्रिय महासभा के माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र के १३६ जातियों को मिलाने का प्रयास वस्तुत: सराहनीय है। उन्होंने भारतीय संविधान को नई मनुस्मृति की संज्ञा देते हुए कहा कि हरिजन परिवार में जन्में नये मनु डा० अम्बेदकर ने पुरानी रूढ़ियों और जात-पात के बटवारे को पूर्णतः झुठला दिया। उन्होंने कहा कि आदमी कर्म से बड़ा होता है, जन्म से नहीं।

उन्होंने संत रविदास, गुरू नानक, संत कबीर जैसे महात्माओं की याद दिलाते कहा कि जाति बन्धन तोड़ने का संकल्प हमारे इन पूर्वजों ने बहुत पहले शुरु कर दिया था, जो आज धीरे-धीरे टूट रहा है।

पिछड़े वर्गों में पैदा अधिकारियों की शिकायत करते हुए उन्होंने कहा कि वे अपनी जाति बताने से भी कतराते हैं। भला ऐसे लोगों के रहते पिछड़ी जातियां उन्नति कैसे करेंगी ?

उन्होंने बड़े ही भावुक स्वरों में कहा कि हम अपने मन को मजबूत बनाकर पिछड़े समाज के प्रगतिशील होने के नाते उन्हें उचित रास्ता बतायें ताकि वे भी समाज में नई दिशा खोजकर प्रगति पथ पर चल सकें।

उन्होंने अपने मजाकिया स्वभाव का परिचय देते हुए कहा कि हमें जातिवाद मिटाना है, जाति नहीं। गरीबी मिटानी है, गरीब नहीं।

समाज के पढ़े-लिखे व अधिकारियों पर कई बार तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि वे भी अपने को ऊंची जाति में ही मिलाने की कोशिश करते रहते हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि ऊंची जातियों में पैदा लोग अपने चरित्र से गिरते जा रहे हैं फिर भी वे अपने को ऊंचा समझते हैं और नीची जातियों से बड़े होने पर भी अपने को नीचा समझते हैं।

उन्होंने उपस्थित धनवानों एवं दानवीरों से भी कहा कि लक्ष्मी वह नागिन है जो अपने पोषण करने वाले का ही नाश करती है। अत: धनवानों को चाहिये कि वे उसका उपयोग अच्छे कामों के लिए करें ताकि पिछड़े, अशिक्षित एवं गरीब समाज की उन्नति हो सके।

तत्पश्चात अखिल भारतवर्षीय हैहय क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष, बाबा जस्सा सिंह के पोते, सरदार मोहन सिंह के सुपुत्र, सरदार चरणजीत सिंह, एम० पी० के अग्रज सरदार दलजीत सिंह अहलुवालिया ने राष्ट्रपति का हार्दिक स्वागत किया।

———

अध्याय १५ क

क्षत्रिय-करण की प्रतिक्रिया

परन्तु वास्तविकता किसी दिन उद्भासित होनी ही थी। हैहय क्षत्रिय महासंघ में सम्मिलित जातियों ने पृथक होकर अपनी स्वतन्त्र संस्थायें बनायीं। नाम के आगे सिंह लगाना बन्द किया और वर्मा की पदवी के स्थान पर गुप्त पदवी अपनाई और धीरे धीरे वैश्य महासम्मेलन की ओर आकृष्ट होकर उसमें प्रवेश प्रारम्भ कर दिया है। इस प्रक्रिया का पूरा इतिहास धीरे-धीरे संकलित किया जा रहा है। अब तक दो प्रमुख अंग शौण्डिक एवं जायसवाल के स्वतन्त्र संस्थानों का पता लगा है।

(०१) शौण्ड्रिक जाति-प्रागैतिहासिक

एक प्रसिद्ध श्लोक संस्कृत वाङ्मय में यों है :—

"शौण्डिको युद्धनिपुण: क्षत्रिय प्रोच्यते बुधै: ।"

अर्थात विद्वान लोग युद्ध-निपुण क्षत्रिय को शौण्ड्रिक कहते हैं।

२— शौंड व्याडी, निपुण, चपलो, पन्डतात: प्रवीण: । इतने पर्याय हैं इस शौण्ड शब्द के।

३— जयध्वजातालजंघास्तात्तत: सुता: ।
हैहयानां कुला: पञ्च भोजाश्चावन्तवस्तथा ॥१०॥
वीतिहोत्रा स्वयंजाता शौण्डिकेयास्तथैव च ।
वीतिहोत्रादनन्ताऽभूदनन्ताद् दुर्जयो नृप: ॥११॥

अग्नि पुराण अ० २७४

अर्थ—जयध्वज से तालजंघ, तालजंघ से हैहयवंश के पांच कुल—भोज, अवन्ति, वीतिहोत्र, स्वयंजात एवं शौण्ड्रिकेय हुये। वीतिहोत्र से अनन्त हुए और अनन्त से दुर्ज्जय राजा हुए।

४— रथानामायुधानाञ्च कृपाणनाञ्च वारुणे ।
शौण्डिका: कर्माधिकृता वायव्ये परिकर्मिण: ॥८॥

अग्नि पुराण अ० १०६

अर्थ—रथ, आयुध, कृपाण और वारूणि सहित कार्य कराने के स्वामी शौण्ड्रिक लोग वायव्य कोण में नगर, ग्राम तथा दुर्गादि की रक्षा के लिये नियत किये गये।

५— परन्तु पारस्कर गृह्य सूत्रों का समय आते आते यह शब्द हेय हो गया। जातिकर्म संस्कार में प्रसूता गृह में विशेष होम हेतु निम्न श्लोक विनियोजित है :—

शण्डामर्का उपवीर: शौण्डिकेय उलूखल: ।
मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनो नश्यतादित: स्वाहा ॥ 1/116

(इत:) इस [प्रसूतिगृह से] शण्डामर्का) सुखों को तपाने वाले (उपवीर:) हठीले (शौण्डिकेय) सुख में विघ्न डालने वाले (उलूखल:) मूसलवत चोट करने वाले (मलिम्लुच:) मैले कुचैल (द्रोणास:) नासिका को विकृत करने वाले (च्यवन:) जल्दी नष्ट करने वाले (नश्यतात्) नष्ट हो जावें।

६— और तब जाति के सम्बन्ध के एक व्यवस्था पत्र कांशी के विद्वानों ने प्राप्त किया गया।

"नहि जात्यन्तर वृत्त्याश्रणे नैव जातित: पतितो भवितुमर्हति। ऊतो वयमस्या जन्मत: क्षत्रियत्वं कर्मतो वैश्यत्वं व्यवस्थापयाम:"

अर्थात —केवल दूसरी जाति की जीविका करने मात्र से ही कोई अपनी से पतित नहीं हो सकता। अत: हम लोग इस जाति को जन्म से क्षत्रिय और कर्म से वैश्य होने की व्यवस्था देते हैं।

(सं० १९८१ भाद्र कृष्ण ८ भृगुवार)

बस इस व्यवस्था को इनकी पत्रिका शौण्ड्रिक ने अपने मई ८३ के अंक में छापा गया और जाति भाइयों का चिन्तन बदल गया।

(०२) अखिल भारतीय शौण्ड्रिक संघ

मुझे जनवरी 1983 में श्री आर०एल० साहू चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट धनबाद का पत्र प्राप्त हुआ। जिसमें उन्होंने लिखा कि शौण्ड्रिकों को वैश्य मानते हुये उक्त नाम से अखिल भारतीय संस्था पटना में मुख्य कार्यालय बना कर कार्यरत है। हमने इसके महामन्त्री से पत्राचार किया और अपने 16-6-83 के पत्र में उन्होंने हमें लिखा।

"शौण्ड्रिक समाज के अन्तर्गत अनेक यूनिटें हैं और हमारा प्रयास उन सबको संगठित करके अ०भा० वैश्य महासम्मेलन में योगदान देना है।"

और इस महासम्मेलन के निर्माण के समय 1981 में बिहार से श्री जमुना प्रसाद भूतपूर्व डिप्टी मेयर पटना सिटी भी आये थे तथा उन्हें उपप्रधान चुना गया था। वे शौण्ड्रिक वर्ग से हैं।

इस संघ की स्थापना दिसम्बर 1954 में तथा प्रथम अधिवेशन गया में दानवीर श्री बलदेव साहू (राय साहब) निवासी लोहारदगा (रांची) के सभापतित्व में हुआ। इसके महामन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण साव थे। लगातार 4 वर्ष तक वे ही संस्था चलाते रहे।

अब 1983 में इसके मुख्य पदाधिकारी यों हैं—

अध्यक्ष—श्री डा० अनिरुद्ध मंडल FRCS
कोरका वाया गोड्डा—संथाल परगना

महामन्त्री— श्री शिवगुलाम प्रसाद गुप्त
सूडी टोला—महेन्द्रू पटना—6

इनका पंचम महासम्मेलन मई 84 में रांची में हुआ।

इसके स्वागताध्यक्ष श्री शिवप्रकाश साहू एम० पी० थे। अधिवेशन से पूर्व प्रान्त व्यापी दौरे किये गये। और लोहारदगा (रांची) गुमला, सिमडेगा, घुर्बा, जमशेदपुर, टिटलागढ (उडीसा), इच्छापुरम (आन्ध्र), भुवनेश्वर, कटक, हजारीबाग, कुजु यह लोग गये।

पत्रिका :--पत्रिका का नाम भी शौण्ड्रिक है। सम्पादक श्री विश्वनाथ प्रसाद साहू एम. ए. दरियापुर (पटना) तथा प्रकाशक श्री रामवृक्ष प्रसाद महेन्द्रू पटना-६ हैं। इसके उड़िया विभाग के संपादक हैं। प्रो० डाक्टर पतितपावन मण्डल। सांध्य कालिज, राउरकेला।

गतिविधियां :—कोशी प्रमण्डलीय सम्मेलन प्रतिनिधि सभा की एक बैठक दि० 27-11-82 को हुई इसके अध्यक्ष श्री दयानन्द साहू थे। स्थान था शौण्ड्रिक टोला, प्रताप गज। इसकी प्रतिनिधि सभा में इनके 7 युवकों ने बिना दहेज शादी करने की शपथ ली। माण्डू (हजारी बाग) में क्षेत्रीय सम्मेलन फरवरी 84 में हुआ। हजारी बाग, जिला यूनिट—अध्यक्ष सुखदेव प्रसाद, तथा महामन्त्री जमुना प्रसाद, अधिवक्ता हैं।

प्रतिष्ठित पुरुष :—(दिवगन्त) चाईबासा (बिहार) के रायबहादुर नैपाल राव के पुत्र श्री लक्ष्मी नारायण साव B. A. का जन्म 1913 में हुआ था। वे माइन्स ओनर्स एसोसियेशन के सचिव थे तथा अ० भा० शौण्ड्रिक संघ के संस्थापक और नगर पालिका के चैयरमैन थे। दिवन्गत 7 जुन 1982।

(2) आचार्य श्यामसुन्दर गुप्त "जिज्ञासु" शास्त्री रोसड़ा (समस्ती पुर बिहार)। जातीय इतिहास के लेखक थे। इन्हें जाति भाई अब ऋषि कहकर सम्बोधित करते हैं।

(3) श्रीकृष्ण साहू—लोहार दगा। इनकी फर्म बल्देव साहू श्री कृष्ण साहू ने सन 45 में शौड्रिक सघ के स्थायी फंड हेतु 20000/- दान में दिया था।

(4) श्री शिवकुमार साहू M. P. टिटलागढ़ (उड़ीसा)।

(5) श्री सालिक राम जैसवाल संसद सदस्य। इलाहाबाद

—:०:—

[०२] जायसवाल बन्धुओं के स्वतन्त्र संगठन

शौण्ड्रिकों की ही भांति जायसवालों के स्वतन्त्र संगठन इसी दशाब्दी में आकर बनना प्रारम्भ हो गये हैं।

जायस ग्राम से विकास वाले वैश्यों ने अपना नाम जायसवाल रक्खा है। जो संगठन बना है, वह अखिल भारतीय स्तर का है। उसके 1984-85 के अध्यक्ष है श्री जातलाल जायसवाल।

(पता—रामनारायण जायसवाल रोड न० 3-5-1083 नारायण गुड़ा-हैदराबाद—29), कार्यकारी अध्यक्ष श्री धीरजलाल जायसवाल (पता नं० 1, प्रिन्स पार्क, करेली बाग, बड़ोदरा-गुजरात) तथा महासचिव श्री वेद कुमार जायसवाल, [पता-राम नगर, लोनी रोड, शाहदरा, दिल्ली-32] हैं। अन्य पदाधिकारियों का नाम देना भी समीचीन होगा।

वरिष्ठ उप-प्रधान

वाल्मीकि चौधरी भूतपूर्व सांसद चांदमारी रोड, पटना-20 (फोन : 53610)

उप-प्रधान

1. श्री चित्रकांत जायसवाल जूनी लाइन्स, बिलासपुर (मध्य-प्रदेश)

2. श्रीमती अनुसूइया जायसवाल। चेयरमैन बिहार समाज कल्याण बोर्ड डाक बंगला रोड, पटना-1

3. श्री राजेन्द्र नारायण गुप्त 32-लक्ष्मी नारायण रोड, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-2

4. श्री जगन्नाथ प्रसाद जायसवाल, जायसवाल भवन, 21/33-ए लहुरापीर, वाराणसी

सचिव

1. श्री सीताराम जायसवाल नं० 225-विधान सारणी, कलकत्ता-7

2. श्री चन्द्र प्रकाश वर्मा 23-5-787 नागुल चिंता, शालीबंडा, हैदराबाद-5

3. श्री जयंती लाल जायसवाल। सम्पत सदन, 7-भोगीलाल पार्क, आर० वी० देसाई रोड, वडोदरा (गुजरात)।

कोषाध्यक्ष

श्री हरिकिशन जायसवाल नं० 1812-कटरा शेखचांद, लाल कुंआ, दिल्ली-110006 (फोन : 527654)

इनमें से श्री वाल्मीकि चौधरी अ० भा० वैश्य महा सम्मेलन के पहिले महामन्त्री फिर उपाध्यक्ष तथा श्री सीताराम जायसवाल आर्य समाज विधान हरियाणी कलकत्ता के प्रधान हैं। तथा श्रीमती अनुसूइया जायसवाल बिहार वैश्य परिषद की अध्यक्ष हैं।

इनकी एक शाखा कानपुर में कार्यरत है। उसके 1984/85 के अध्यक्ष हैं श्री परमार्थी कृष्ण कुमार गुप्त [पता न० 133 M पर्णकुटी, परमार्थपुरी-किदवई नगर-कानपुर-11] इन्होंने ही इस संगठन को महासम्मेलन से शीघ्र सम्बन्धित कराने का आश्वासन दिया है।

प्रमुख व्यक्ति

(1) श्री अनन्त राम जायसवाल सांसद फैजाबाद।

(2) श्री छोटेसिंह एडवोकेट (उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।) अलवर (राजस्थान)।

—:०:—

अध्याय-१६

ओमर-ऊमर वैश्य समाज का संक्षिप्त इतिहास

(०१) वैश्य जाति की संगठन शक्ति अपूर्व थी जिसके द्वारा वे सम्पूर्ण विश्व में व्यापार करके वितरण व्यवस्था को नियन्त्रित करते थे किन्तु समय ने इस सुसंगठित जाति को जो केवल एक वैश्य जाति के नाम से संबोधित की जाती थी, सैकड़ों टुकड़ों में विभक्त कर दिया।

जातीय इतिहास की दृष्टि से प्रायः सभी जातियों का इतिहास स्पष्ट नहीं है, किसी भी जाति विशेष के सम्बन्ध में अधिकार पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वह कब और कहां किस प्रकार उत्पन्न हुई परन्तु यह सत्य है कि देशकाल एवं परिस्थितियों के अनुसार जातियां बनती रहीं हैं।

(०२) स्थान वाचक इतिहास--ओमर तथा ऊमर नाम से सम्बोधित की जाने वाली यह जाति अति प्राचीन है। ओमरगढ़, ऊमर कोट, ऊमरपुर आदि स्थानों का सम्बोधन जाति की गौरव गाथा के प्रमाण हैं। भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों में इस नाम से नगर बसे हैं। पेशावर में मुकाम ऊमर जर्द, गुजरानवाला में 'ऊमरपुर', हैदराबाद में 'ऊमर कोट', विजगापट्टम में 'ऊमर कोट' सूरत में 'ऊमर खादी', मध्य प्रदेश में 'ऊमर वाड़ा', अकोला में 'ऊमर खेड़ा', रीवाँ में 'उमरिया', उदयपुर में 'उमरादा' आदि भारतवर्ष के ऐसे अनेक स्थान हैं जो इस जाति के नाम से सम्बन्धित प्रतीत होने हैं।

मुगलों के शासन में भी परिषद हुआ करती थी जिसमें देश के वाणिज्य एवं व्यापार को बढ़ाने वाले व्यक्तियों के प्रतिनिधि सम्मिलित किये जाते थे। इन सम्मानित दरबारियों को उमरा (अमीर शब्द का बहुवचन) नाम से सम्बोधित किया जाता था। हो सकता है देशकाल के अनुसार एवं भाषा के अन्तर के कारण 'उमरा' शब्द बदलकर ओमर या ऊमर बन गया हो।

कालान्तर में कुछ लोग अपने को ओमर अथवा ऊमर के नाम से सम्बोधित करने लगे। कुछ लोग अपने को दढ़ ओमर कहने लगे और कुछ लोग अपने को दूसरे ओमर (दोसर) कहने लगे।

शेरिंग महोदय ने अपनी पुस्तक Hindu Tribes & Castes में लिखा है कि ऊमर एक बहु संख्यक प्रभावशाली जाति है जो आगरा से ललितपुर तक, उत्तर में गोरखपुर तक तथा पूर्व में बनारस एवं आजमगढ़ तक पाई जाती है। इसी प्रकार क्रूकन महोदय ने अपनी पुस्तक में लिखा है 'ऊमर'-वैश्यों की एक उप जाति है जो मेरठ आगरा तथा कुमायूं कमिश्नरियों के अतिरिक्त अन्य स्थानों में बड़ी संख्या में पाई जाती है। पूरब में इसके तीन वर्ग हैं--तिल ऊमर, दढ़ ओमर और दूसर।

फैलाव के कारण इन तीन विभागों के भी उप विभाग हो गये। यथा-जहानाबादी ओमर, पछइयाँ ओमर, खरे ऊमर, नित ऊमर, बिहारी ओमर वैश्य एवं कनौजिया ओमर आदि।

[०३] रीति रिवाज

पाठकों का ध्यान ओमर वैश्यों के प्राचीन रीतिरिवाजों की ओर आकर्षित करते हैं कि कितने सरल तरीके से इनके यहाँ सम्बन्ध होते थे। कायदा था कि नाई कुन्डली लेकर लड़के वाले के यहां पर जाता था। वही उभय पक्षों को राजी करता था। साथ ही उसकी यह भी ड्यूटी रहती थी कि वह दोनों पक्ष की इतनी जानकारी रखे आपका रिस्ता व लपक (गोत्र) के हिसाब से सम्बन्ध उचित है। लड़के के मामा, फूफा आदि को लड़की देखने जाने में उनको भेंट लेने और देने वालों को कोई असुविधा नहीं होती थी।

कुल शादी में केवल ४०/- या ५०/- का दहेज मिलता था, उसमें भी लड़की वाला केवल २५/- दिया करता था। अगवानी के समय १५-५० रु० लड़की के मामा लड़के के मामा को दिया करता था। इसके साथ में पहिले भोज की प्रथा भी थी। जिसमें ५० नये पैसे यानी एक अठन्नी की भेंट चाचा, बाबा, पिता, मामा, नाना, फूफा वगैरह को दी जाती थी। इस २५/- में काट कर बाकी जो बचता था वही दहेज दिया जाता था।

अब आपका ध्यान एक और पुरानी प्रथा की ओर ले चलते हैं। वह यह कि पहले तीन लोग ही लड़की देखने जाते थे। वह केवल घर के ही होते थे मामा, फूफा आदि नहीं। उन लोगों को खाना खिलाया जाता था और सम्मान स्वरुप भेंट भी दी जाती थी। भेंट में कोई गिनती की पाबन्दी नहीं थी। किसी प्रकार के उपहार आदि का भी चलन नहीं था। सगाई के बाद लोग अगवानी दिया करते थे। वह भी सगाई के अनुसार। बाजार आदि की मिठाई का चलन नहीं था। सब लोग अपने घरों में अलौरी आदि की मेहमानी दिया करते थे। टीका-जो आजकल कर दिया जाता है यह रिवाज नहीं था। दरवाजे पर बारात आने पर केवल सरबत तथा पान का स्वागत होता था और लड़के वाला जनवासे में दावत करके अपने व्योहारों और रिश्तेदारों को खिलाता था।

दूसरे दिन भोज में केवल परिवार के लोग और रिश्तेदार जाते थे जो एक ही साथ बैठकर भोज खाते थे। उस समय जो लोग कुछ

गलत काम करते थे उनकी बिछाई काट की जाती थी और वे केवल अकेले बैठकर भोज करते थे यानी गलत काम करने वाले को अपमानित किया जाता था।

इसके बाद बारात विदा हो जाती थी । कोई किसी से कुछ मांगता नहीं था।

०४) धार्मिक भाव

जगन्नाथ जी की रथयात्रा कानपुर में जनरलगंज स्थित जगन्नाथ जी की गली से ११ जुलाई ८३ को हुई। रथयात्रा में भगवान श्री जगन्नाथ जी के रथ के अतिरिक्त सैकडों रंग विरंगी धार्मिक राजनैतिक सामाजिक झाँकियां शामिल थीं। साथ ही कई मंडलों द्वारा अपने वाद्य यन्त्र भी बजाये जा रहे थे जो अपूर्व थे। जगह-जगह बिजली की सजावट, पीने का पानी, शर्बत आदि की काफी व्यवस्था की गई थी।

इस अवसर पर ओमर वैश्य समाज संकीर्तन मंडल द्वारा रजत जयन्ती वर्ष पर भगवान राजगद्दी की झांकी विशेष सज-धज के साथ निकाली गयी थी।

दुसरे दिन जगन्नाथ स्वामी (बाई जी का मन्दिर) की यह रथयात्रा सवारी नगर परिक्रमा हेतु जनरलगंज कानपुर से निकली जिसमें श्री ओमर वैश्य प्रेम मंडल कानपुर अपने नये वाद्य यन्त्रों युधिष्ठिर एवं दुर्योधन की मल्लयुद्ध की झांकी के साथ सम्मिलित हुआ।

तीसरे दिन उमा जगदीश मन्दिर के श्री जगन्नाथ स्वामी की रथयात्रा सवारी धनकुट्टी से नगर परिक्रमा हेतु प्रस्थान हुई। वाद्य प्रदर्शन के साथ शंकर भगवान जी अपना ताण्डवनृत्य भी प्रस्तुत कर रहे थे।

दोनों ही रोज मंडल ने अपना विश्राम परेड स्थित वृहमावर्त सनातन धर्म स्कूल में कर भोजनादि किया तथा भगवान जगन्नाथ स्वामी की वापसी सवारी में सम्मिलित होकर परिक्रमा पूर्ण की।

इस उपक्रम से पौराणिक मान्यतायें प्रगट हैं।

(०५) बसाव फैलाव–जहानावादी ओमर इस समूह के प्रमुख अंगों में से हैं। यह बन्धु जिला कानपुर, हमीरपूर, बांदा, फतेहपुर, झांसी इलाहाबाद एवं मध्य प्रदेश के विभिन्न स्थानों में निवास करते हैं।

इसी प्रकार सैकड़ों वर्ष पूर्व बसे कन्नौज नगर में निवास करने वाले अपना परिचय कनौजिया ओमर के रुप में देने लगें। इस थोक के भाई मुख्य रूप से फरुखाबाद, हरदोई, शाहजहाँपुर, खीरी लखीमपुर, सीतापुर, शाहाबाद, मथुरा एवं आगरा आदि जिलों में बहुतायत में निवास करते हैं।

पूर्व में इनका मुख्य निवास स्थान मिर्जापुर है। यहाँ वे अपने को पूर्वीय मिर्जापुरी ऊमर कहते हैं। इसी थोक के अन्तर्गत कुछ लोग विधवा विवाह के पक्ष में दूसरे कुछ लोग विपक्ष में होने के कारण अपने को दूसरे ओमर कहते हैं। यह लोग अपने को खरे ओमर बतलाते हैं। इनका निवास स्थान मुख्य रूप से मिर्जापुर, इलाहाबाद, बनारस, जौनपुर, फैजाबाद आदि हैं।

इसी प्रकार गोंड़ा, बहराइच, बस्ती, गोरखपुर, आजमगढ़, सुल्तानपुर, प्रताप गढ़, एवं नेपाल राज्य के जातीय बन्धु अपने को उत्तरी ओमर या ऊमर के नाम से पुकारते हैं। इनके रीति रिवाज मिर्जापुर के भाइयों से मिलते जुलते हैं।

बिहार प्रान्त में बसे हुए बन्धु अपने को विहारी ओमर वैश्य के नाम से सम्बोधित करते हैं। इनका जातीय संगटन बहुत ही अच्छा है। इनकी एक अपनी सभा भी है जिसे 'चौरासी' के नाम से जाना जाता है। इन बन्धुओं का निवास स्थान मुख्य रूप से चम्पारन, पटना, मुंगेर, हजारीबाग, बर्दवान, छपरा, संथाल परगना एवं दरभंगा आदि हैं।

विरासी ओमर के नाम से जाना जाने वाला थोक जहानाबादी थोक का ही एक अंग है।

(०६) गोत्र--वर्तमान समय में ओमर समाज के जितने विभाग हैं उन सबका गोत्र कश्यप ही है। ओमर वैश्य जाति के आदि गुरु महर्षि कश्यप थे। कश्यप गोत्र शिष्य परम्परा के अर्न्तगत प्रचलित हुआ है । हमारी लपक व्यवस्था विशेषता है । रक्त भेद को प्रकट करने के लिये लपकें बनाई गई है। इन लपकों का नामकरण प्रायः स्थान विशेष एवं व्यापार विशेष के नाम पर ही हुआ है।

अध्याय १६ अ

इनकी महासभा का जन्म और विकास

(०१) सम्पूर्ण जाति अनेकों थोकों और वर्गों में विभक्त थी। थोक अपने ही दायरे के अन्दर विवाहादि सम्बन्ध करने को बाध्य थे। थोकों की जनसंख्या कम होने के कारण विवाहादि में कठिनाई पड़ती थीं। एक थोक दूसरे के साथ खान-पान में भी परहेज करता था। किसी किसी थोक में विवाह का सम्बन्ध ऐसा होता था कि लड़की तो ले लेते थे पर अपनी लड़की उसे नहीं देते थे। तथा लड़की की सुसराल से भी खान पान से भी परहेज करते थे। सर्व मान्य इतिहास के अभाव में कोई अपने को औदम्बर से, कोई ओम-हर से, कोई ओमरा से, तथा कोई सृष्टिकर्ता से, अपनी उत्पत्ति बतलाकर मतभेद प्रकट करते थे। जाति के नामकरण में भी एक मत नहीं हो रहे थे।

समाज की उपरोक्त दुरावस्था का अन्त कर संगठित करने के लिये जाति हितैषी सज्जन जिनमें मास्टर मलूकदास मिर्जापुर, श्री सुखनन्दनलाल मिर्जापुर, श्री देवीदयालु जी गुप्त कानपुर, महाशय शिवगोपाल जी शाहाबाद, बा० यमुना प्रसाद जी, मुंगराबादशाहपुर तथा श्री छदामीलाल जी ठठिया आदि ने समाज की एक अखिल भारतीय संस्था स्थापित करने का विचार निश्चित किया। इसके पहिले मिर्जापुर और कछवा और ठीकयाम में ऊमर वैश्य हितकारिणी सभा, सन् १६०८ में स्थापित हुई थी।

परन्तु अखिल भारतीय संगठन बनाने हेतु कानपुर से प्रकाशित "ओमर वैश्य शुभ चिन्तक" मासिक पत्र भी सन १६२८ से प्रयत्न कर रहा था।

उन महानुभावों ने कानपुर में एक सभा श्री वृन्दावन जी अकबर पुर निवासी की अध्यक्षता में सन १६२८ में सम्पन्न की। यह सभा ही पहली सभा थी, जिसमें जाति के सभी वर्गो (थोकों) के लोग अर्थात् जहानावादी, शाहाबादी, कनौजिया, बिरासी और मिर्जापुरी (छरे-दूसरे) ऊमर ओमर सभी भाई उपस्थित थे। कानपुर की इस सभा के बाद तीसरे महीने में ही शाहाबाद में स्थानीय भाईयों के सहयोग से एक सभा 'सर्व ओमर वैश्य सम्मेलन" सम्पन्न कराया गया। शाहाबाद के इस सम्मेलन में निश्चय हुआ कि "अखिल भारतीय ओमर वैश्य महासभा" के नाम से प्रथम अधिवेशन आगामी वर्ष तिलहर (शाहजहाँपुर) में सम्पन्न किया जाय। पश्चात् यह अधिवेशन सफलता पूर्वक निश्चित स्थान पर हुआ भी।

(०२) विगत ४५ वर्षों में महासभा के २४ अधिवेशनों में समाज सुधार के अनेक प्रस्ताव पारित हुये। पहले जहाँ समाज अनेक थोकों में बंटा था और उनके अन्दर ही विवाह तथा खान-पान होते थे, अब थोकों और वर्गों पर विवाह शादी बिना थोकों की पूंछ तांछ के अबाध गति से होने लगे हैं।

बाल विवाह जहाँ पहले बहुतायत से होते थे अब उनका नाम निशान भी मिट रहा है। अब तो शारदा कानून की वैवाहिक सीमा भी समाज लाँघने को प्रस्तुत है।

विधवा विवाह के लिये भी किंचित प्रतिबन्ध के साथ महासभा आज्ञा दे चुकी है।

महासभा के अन्तर्गत एक आर्थिक सहायता समिति का भी गठन हो गया है जो असहाय स्त्री-पुरुष, बालक–वृद्ध सभी की सहायता में तत्पर है। निर्धन छात्रों को छात्रवृति देने का भी उत्तम प्रबन्ध है। महासभा कितनी ही कुरीतियों का उन्मूलन भी कर चुकी हैं।

(०३) प्रथम से २४ वे अधिवेशन तक की सूची स्थान सहित निम्न प्रकार है:-

सन	संख्या	स्थान	अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष
१६२८	१	तिलहर	श्री श्यामलाल जी, कार्यवाहक अध्यक्ष	
			,, विश्वनाथ प्रसाद गुप्त मिर्जापुर	
१६३१	२	शाहजहाँपुर	,, प्यारेलाल गुप्त कानपुर	
१६३२	३	हरदोई	'' वेचेलाल गुप्त वकील उन्नाव	
१६३३	४	पुवायां	'' प्यारेलाल गुप्त कानपुर	
१६३४	५	कानपुर	,, जगन्नाथ प्रसाद (मस्तराम)	श्री वेनी प्रसाद जी
१६३५	६	बिन्दकी	,, लक्ष्मीनारायण गुप्त हमीरपुर	,, रामनारायण ,,
१६३६	७	मकनपुर	,, केदारनाथ गुप्त 'चलाका' उन्नाव	,, मिश्रीलाल ''
१६३८	८	लखनऊ	,, यमुनाप्रसाद गुप्त मुंगराबादशाहपुर	श्री भगवती प्रसाद जी
१६३६	१०	कन्नौज	,, ,,	,, बिहारी लाल ''
१६४०	११	वाँदा	,, धनीराम गुप्त (नम्बरदार) कानपुर	,, भगवती प्रसाद ,,
१६४१	१२-१३	उन्नाव	,, भोलानाथ गुप्त कछवा	,, नन्दकिशोर ,,
१६४३	१४-१५	बनारस	,, माताप्रसाद गुप्त इलाहाबाद	,, राजाराम जी
१६४६	१६	अमौली (फतेहपुर)	,, राजाराम जी गुप्त चांदपुर	श्री रामेश्वर दयालु
१६४७	१७	शाहाबाद (हरदोई)	'' हकीम जानकी प्रसाद गुप्त पुवायाँ	
१६४६	१८	रोहणी (विहार)	,, प्रयाग दास गुप्त मिर्जापुर	'' जैनारायण प्रसाद
१६५१	१६	मिर्जापुर	,, यमुनाप्रसाद गुप्त मुंगराबादशाहपुर	,, महादेव प्रसाद जा
१६५३	२०	कानपुर	,, ,,	श्री देबीदयालु ''
१६५५	२१	मुक्तानगर	'' देवीदयाल जी गुप्त कानपुर	'' जगन्नाथ प्रसाद जी
१६६३	२२	चित्रकूट	,, बलरामदास जी गुप्त अमौली	,, मुन्नीलाल जी
१६६६	२३	प्रयाग (कुंभ मेला)	,, गणेश प्रसाद जी गुप्त मिर्जापुर	,, जुगुलकिशोर जी
१६७०	२४	बिठूर (ब्रह्मावर्त)	,, मुन्नीलाल जी गुप्त बाँदा	,, रामस्वरूप गुप्ता

(०४) इन अधिवेशनों की संक्षिप्त झांकी

I–तिलहर की यह सभा आर्य समाज मन्दिर में सम्पन्न हुई जिसमें प्रतिनिनिधियों की संख्या ५६ थी। वहां महासभा के उद्देश्य एवं नियमों पर ही विचार हुआ। वैश्या–नृत्य–बहिष्कार का प्रस्ताव पारित हुआ। सभा के प्रधान मंत्री बाबू मुन्नालाल जी (शाहजहाँपुर) बनाये गये।

II– शाहजहाँपुर के इस अधिवेशन में ५ प्रस्ताव पारित किए गए। अगले सत्र के लिये श्री रघुवीर सहाय जी (शाहाबाद) मन्त्री नियुक्त हुए। महासभा विद्यार्थी फण्ड बनाया गया। उन्नाव निवासी लाला नन्दकिशोर ने अपना एक उन्नाव का मकान महासभा को दान में दिया।

III–तीसरे अधिवेशन के साथ गृहकला कौशल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

इस सम्मेलन में प्रधान मन्त्री कानपुर के श्री लक्ष्मी नारायण गुप्त श्रीपति निर्वाचित हुए।

IV– चौथे अधिवेशन में "औमर वैश्य हितैषी" नाम से मासिक पत्रिका प्रकाशित करने का निश्चय किया गया।

V– इस अधिवेशन में "कानपुर ओमर वैश्य नवयुवक संघ" का जन्म हुआ। सभा में एक हजार से अधिक संख्या में बन्धु उपस्थित हुये। अगले सत्र हेतु महासभा के प्रधान मन्त्री श्री देवी दयाल गुप्त निर्वाचित हुए। अक्टूबर १९८५ को संविधान का विधिवत रजिस्ट्रेशन करा लिया गया।

VI– छठे अधिवेशन के साथ कवि सम्मेलन तथा नवयुवक सम्मेलन सम्पन्न किया गया। खुली सभा में नियम–भंग के दोषी व्यक्तियों की निन्दा की गई। भविष्य में महासभा के साथ महिला सम्मेलन के आयोजन का निश्चय हुआ। विधवा विवाह के समर्थन में विचार व्यक्त किये गये। प्रधान मन्त्री के पद पर पुनः श्री देवी दयालु गुप्त चुने गये।

VII– सातवें अधिवेशन के साथ संगीत सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया।

IX– नवें सम्मेलन में अगले सत्र के मंत्रित्व का कार्य भार श्री भोला नाथ जी (कछवा) को सौंपा गया।

X– दसवें सत्र में मंत्री श्री भोला नाथ जी के अथक प्रयत्नों से अनेक जिला सम्मेलनों का आयोजन हुआ।

XI– ग्यारहवें अधिवेशन में जातीय झण्डे का वर्तमान स्वरूप सर्व सम्मति से निश्चित किया गया।

XII– बारहवें सम्मेलन में सभापति का जुलूस निकाला गया। यहीं एक जातीय झण्डा गान निश्चित हुआ।

XIII– महासभा का तेरहवाँ अधिवेशन कहीं भी आयोजित न किया जा सका। क्योंकि सन् ४२ का राष्ट्रीय आन्दोलन चालू था।

XIV– चौदहवाँ अधिवेशन में श्री कमलेश जी प्रधान मन्त्री चुने गए।

XV– अनेक कारणों से महासभा का पन्द्रहवाँ अधिवेशन कहीं नहीं हो सका। अधिवेशन दिनांक ९–१०–११ फरवरी १९४६ को बाबू राजा राम की अध्यक्षता में आयोजित हुआ।

XVI– सोलहवें अधिवेशन में हमीरपुर नवयुवक संघ की ओर से वीर–बालक नाटक का सुन्दर अभिनय भी किया गया।

इस अधिवेशन के बाद सन् १९४७ में देश आजाद हुआ और दो भागों में विभक्त हो गया। जगह-जगह सांप्रदायिक दंगे हुए। इन्हीं कारणों से महासभा का वांक्षित विकास अवरुद्ध हो गया।

XVII– सत्रहवे अधिवेशन में महासभा में 'ओमर' के साथ ऊमर शब्द कोष्ठ में जोड़कर 'ऊमर' शब्द से अपने को जो बन्धु संबोधित करते थे, उन्हें विशेष संतोष प्रदान कर सामाजिक एकता में अभिवृद्धि हुई।

XVIII– अटारहवें अधिवेशन में खुली सभा की कार्यवाही दो दिन तक चली। इसमें बिहार में निवास करने वाले तथा पूर्वी उ० प्र० में निवास करने वाले बन्धु अधिक संख्या में सम्मिलित हुए।

XIX– उन्नीसवाँ अधिवेशन श्री प्रयाग दास जी द्वारा स्थापित श्री ऊमर वैश्य विद्यालय के विशाल प्रांगण में हुआ।

महासभा के अगले सत्र के लिए श्री भोलानाथ जी गुप्त को प्रधान मन्त्री चुना गया।

XX– बीसवाँ अधिवेशन ओमर वैश्य विद्यालय भवन विरहाना रोड कानपुर में सम्पन्न।

इसमें महिलाओं के लिये ओ. वै. बा. विद्यालय की बालिकाओं द्वारा 'राखी की लाज' नाटक का मंचन प्रस्तुत किया गया।

अधिवेशन में श्री भोलानाथ जी गुप्त को मन्त्री चुना गया।

XXI– इक्कीसवाँ अधिवेशन मुक्तिदायिनी मुक्ता देवी के मंदिर के समीप स्थित ओमर गढ़ के अवशेष कालिंदी कूल पर बसे मुक्ता नगर में हुआ। श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्त जी (कानपुर) द्वारा बनवाये गये धर्मशाला में ८ साल की लम्बी अवधि के बाद यह अधिवेशन हुआ। यहीं दृढ़ ओमर एवं दोसर तथा अन्य दो शाखाओं के एकीकरण का निश्चय किया गया। श्री प्रयागदत्त जी शाहाबाद प्रधान मन्त्री चुने गए।

XXII– बाइसवां अधिवेशन चित्रकूट धाम में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में उपस्थिति लगभग ४००० के थी, जिसमें यथेष्ट संख्या में महिलायें भी सम्मिलित हुई थीं। श्रीमती शीलवती वैद्या की अध्यक्षता में एक विशाल महिला सम्मेलन हुआ।

यहाँ एक यज्ञ भी आयोजित किया गया था जिसके बाद अनेक स्वजातीय बालकों का सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार हुआ तथा रात्रि में एक दिन कानपुर के उत्साही बालकों द्वारा 'धरती के लाल' नामक

नाटक अभिनीत किया गया। चित्रकूट में एक जातीय धर्मशाला के निर्माण की योजना स्वीकार की गयी।

XXIII– तेईसवें अधिवेशन में कुम्भ के पर्व के कारण देश के कोने कोने से बन्धु इलाहाबाद पधारे थे।

XXIV– चौबीसवें अधिवेशन में एक ओमर-दूसर ओमर एवं दोसर वैश्यो का सामूहिक सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

तदन्तर एक अधिवेशन सुजान गंज (जौनपुर) में १९७६ में हुआ। इसके बाद से निम्न पदाधिकारी कार्यरत हैं।

सन् १९७६ में इसके मुख्य पदाधिकारी निम्न प्रकार थे :—

अध्यक्ष— श्री सुशीलचन्द्र गुप्त कानपुर-2 उनके दिवंगत होने पर 1985 में श्री महेश गुप्त एडवोकेट–नागपुर

महामन्त्री—श्री शिवप्रसाद गुप्त ऐडवोकेट। मुंगरा बादशाहपुर (जौनपुर)

प्रचार एवं प्रकाशन मन्त्री—श्री कपूरचन्द गुप्त ऐडवोकेट। वासली गंज (मिर्जापुर)। वे ही पत्रिका 'हितैषी दूत' के सम्पादक भी हैं।

यहाँ निश्चय हुआ कि महासभा के अन्तर्गत क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किये जावें और तदनुसार शाहजहाँपुर, सोनहिता, महलावाँ, मुंगरा, बादशाहपुर में क्षेत्रीय समितियाँ गठित हुई। पदाधिकारियों ने व्यापक दौरे सगठन हेतु किये और अपना सम्बन्ध वैश्य महासम्मेलन से जोड़ा गया।

अन्य आधीन संस्थायें।

ओमर क्लब कानपुर। अध्यक्ष राजेश्वर गुप्त नं० 69/68 दाना सोरी। ओमर वैश्य नवयुवक संघ शाहजहाँपुर। कार्यालय गयादीन जातीय मन्दिर–बहार गंज

ओमर वैश्य महिला संघ कानपुर।

ओमर वैश्य इण्टर कोलेज कानपुर।

हिन्दू इण्टर कॉलेज मिर्जापुर।

निदान जून 85 में श्री सुशील चन्द्र गुप्त के निधन पर श्री भगवती प्रसाद गुप्त [नं० 87/239 आचार्य नगर कानपुर–2[अध्यक्ष चुने गये।

[०२] विशिष्ठ पुरुष

स्व० बाबू सुशील चन्द्र जी गुप्त कानपुर

जन्म २८ अक्टूबर १९१२ निर्वाण १३ जनवरी १९८५ सौम्यता जहाँ प्रत्येक हृदय आकर्षित करती थी, वहीं आपके स्वभाव की सरलता एवं प्रतिभा मिलने वालों को प्रभावित करती थी। बाबू जी का जन्म कानपुर में हुआ था। आपके पूज्य पिता स्व० श्री लालता प्रसाद जी गुप्त उदारमना एवं दूरदर्शी व्यवसायी थे।

आपने स्नातकोत्तर शिक्षा कानपुर में प्राप्त की। तब आपने M.A.B. Com, L.L.B करके हिन्दी अंग्रेजी–उर्दू एवं मुड़िया का सम्यक ज्ञान अर्जित किया। आपने अपने पैतृक व्यवसाय को बहुत समुन्नत बनाया। आज लालताप्रसाद सुशीलचन्द्र फर्म गृह निर्माण वस्तु व्यापार में एक कीर्तिमान माना जाता है। व्यवसाय के साथ–साथ समाज सेवा में भी आप अग्रणी रहे। फलतः अनेकों व्यवसायिक संगठन में संरक्षक—मन्त्री एवं सदस्य रूप आप सम्बद्ध रहे। जिसमें मर्चेन्ट्स चेम्बर आफ कामर्स ए०सी०सी० सीमेंट स्टाकिष्ट एसो०, गृह निर्माण वस्तु विक्रेता संघ, एवं अपना प्रतिस्टान तथा बिक्रीकर सलाह समिति आदि प्रमुख हैं।

ओमर वैश्य आर्थिक सहायता समिति के आप जहां जन्म दाता थे वहीं उसमे मंत्री–कोषाध्यक्ष–उपाध्यक्ष आदि पदों पर कार्य कर उसे समुन्नत बनाया। सम्प्रति महासभा के आप अखिल भारतीय अध्यक्ष थे।

स्वर्गीय बाबूजी श्री ओमर वैश्य नवयुवक संघ, (रात्रि पाठशाला) बाल निकुंज स्वरूप नगर, बालसेवक बिरादरी, ओमर वैश्य विद्यालय समिति, ओमर वैश्य विद्यालय पुस्तकालय स्वरूप नगर, नागरिक संघ इलेक्ट्रो होम्योपैथी मेडिकल कालेज प्रभृति संगठनों के उपाध्यक्ष एवं सदस्य रहे। साथ ही कानपुर प्रोवेशन कमेटी एवं S. P. C. A. के आजीवन सदस्य तथा युनीवरसिटी के रजिस्टर्ड ग्रेजुएट भी थे। इन सम्पूर्ण कार्यों के साथ आपने समाज के मुख पत्र हितैषीदूत का सफल सम्पादन भी वर्षों तक किया था।



अध्याय-१७

मौर्य (माखुरी जाति) की ऐतिहासिक खोज

प्राचीनता

'मौखरी' शब्द अत्यन्त प्राचीन है । पाणिनि की अष्टाध्यायी' में इस शब्द का मूल रूप "मौख्यर्याः" है । मौर्य ब्राह्मीलिपि में यह शब्द "मौखल्लिनाम" मिट्टी की मुद्रा पर अंकित है । (देखें, Arch. Surv. Ind. Rep. १५ पृष्ठ १६६) । हर्ष चरित इस शब्द की व्युत्पति 'मुखर' शब्द के आधार पर करता है । (देखें, हर्ष चरित कावेल और थामस का अनुवाद पृ० १२८) । आदिकाल में 'मौखरी' को 'मुखर' या 'मौखरी' दोनों कहते थे । परन्तु कालान्तर में 'मौखरी' शब्द हो गया । माखुरी हरहा लेख के अनुसार उन सौ पुत्रों के वंशज हैं जिन्हें राजा अश्वपति ने वैवस्वत (मनु) से पाया था" । (देखे, Ep. Ind १४ पृष्ठ ११६ श्लोक ३)

इतिहासकारों ने अश्वपति को महाभारत–काल में केन्द्रीय पंजाब में स्थित मद्र का राजा बताया है । अश्वपति एक महान विद्वान तथा प्रबल प्रतापी सम्राट भी था । उसके शासन–काल में कोई प्रजा शराब तथा धूम्रपान का सेवन नहीं करती थी । कोई भी व्यक्ति मांस, मछली, प्याज तथा लहसुन नहीं खाता था ।

हर्ष चरित पुस्तक भी माखुरी जाति की उत्पत्ति पर प्रकाश डालता है । इस पुस्तकानुसार वास्तविक अथवा कल्पित मुखरनाम का एक प्रतापी पूर्वज हुआ था । उसी के नाम पर इस वंश का नाम मौखरी पड़ा । वाण ने माखुरी जाति को एक गणतंत्रात्मक समुदाय घोषित किया है । क्योंकि, मौखरी राजा अपने मंत्री मंडल की राय से शासन चलाता था ।

भूतपूर्व कोटा राज्य में २३९ ई० के मौर्य ब्राह्मीलिपि में एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, जिसमें तीन मौखरी सामन्तों के नाम मिलते हैं । एक मौखरी सामन्त महा सेनापति का भी वर्णन मिलता है जो राजस्थान में शासन कर रहा था ।

मौर्यकाल में मौखरी लोग उत्तर भारत के विशाल क्षेत्र में फैले हुए थे । उत्तर भारत की राजनीति में दीर्घकाल तक इन मौखरियों का दबदबा बना रहा । ये लोग मौर्यों के सामन्त बन कर विभिन्न प्रदेशों पर राज्य कर रहे थे । कई मौखरी सामन्तों की शादी उनकी राजकुमारियों से हुई थी । मौर्य बराबर तथा नागार्जुनी पहाड़ी अभिलेखों में भी मौखरी सामन्तों के नाम मिलते हैं । वे मौर्य राजाओं के अधीनस्थ सामन्त थे । अनेकों माखुरी सामन्तों की शादी-व्याह भी राजकुमारियों से होने का वर्णन इतिहास में अनेकों स्थानों पर मिलता है ।

अध्याय-१८

यज्ञ सेनी उपनाम

हलवाई उपनाम कान्यकुब्ज उपनाम मोदनवाल वैश्य

हिन्दू धर्म वर्णव्यवस्था मण्डल की तरफ से प्रकाशित पुस्तक जाति-अन्वेषण के भाग एक के पृष्ठ 287 पर लिखा है कि हलावाई जाति शुद्ध वैश्य हैं और इन्हें वैश्य वर्णनुसार कर्म करने का अधिकार है । उसी प्रकार पुस्तक जाति भास्कर के पृष्ठ 204 पर लिखा है कि फर्रुखाबाद के समीप एक हलवाई जाति रहती है जिसके हाथ की लोग मिठाई व पूड़ी कचौड़ी खा लेते हैं । इनका गोत्र प्रायः कश्यप माना गया है ।

जातियों के अभ्युत्थान क्रम को समझने में इस उपजाति के नाम परिवर्तन की प्रक्रिया बड़ी दिलचस्प है । पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार में इन बन्धुओं की बड़ी आबादी है । ग्रामीण क्षेत्रों में हलवाई का धन्धा करने से जाति का नाम ही हलवाई वैश्य था । बिहार तथा उत्तर प्रदेश सरकारों ने इन्हें इनकी शिक्षा तथा आर्थिक पिछड़ेपन के कारण पिछड़ा वर्ग [भाग क अवर] घोषित किया हुआ है ।

[यू०पी० सरकार जी०ओ० नम्बर 131 X/XXIV/78/–1958 दि० 17–9–58] बाद में इन्हें नाम नहीं जंचा तो कन्नौज की ओर से विकास के आधार पर कान्यकुब्ज वैश्य करके अपना नाम करण किया ।परन्तु जब पता लगा कि भुर्जी लोग भी अपने को कान्यकुब्ज वैश्य कहने लगे हैं, तो अपना नाम मोदनवाल रख लिया है । उड़ीसा के बन्धु नाम के आगे साहु शब्द लगाते हैं ।

[०१] मोदनवाल शब्द को पूरे इतिहास में ढूंढने के प्रयत्न ।

इनकी महासभा के एक पदाधिकारी ने मत व्यक्त किया है कि कान्यकुब्ज वैश्य (हलवाई) का मूल पुरुष श्री मदन सेन जी महाराज का वंशज था, जो कन्यकुब्ज देश (कन्नौज) के महाराजा थे । जैसा कि वर्ण विवेक चन्द्रिका नामक ग्रन्थ से उद्धृत किया गया है । श्री मोहन सेन जी, श्री मान् महाराजा श्री भलनन्दन जी की चौथी पीढ़ी तथा उनके पूर्वज श्री वैवस्वत मनु से सातवीं पीढ़ी में उत्पन्न थे । पहले अव्यक्त रूप से प्रजापति (ब्रह्मा) उद्भूत हुए । उनके मुख में ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, उरु से वैश्य और पाद से शूद्रवर्ण रचा गया । प्रजापति के उरूछा से वैश्यों के मूल पुरुष भलनन्दन और उनकी स्त्री मरुत्वती नाम से पैदा हुई । उनके पुत्र वत्सप्रीती, तथा वत्सप्रीती के प्रांक्षु हुए । तथा प्रांक्षु के ६ पुत्र हुए । जिनका नाम क्रमशः मोद, प्रमोद, वाल, मोदन, प्रमर्दन, शंकुकर्ण हुआ और इनके कर्म भी भिन्न–भिन्न हुए ।

श्री मान "मोदन जी से इस वैश्य जाति की, श्री मोदन जी ने उस उसम वृहद यज्ञ में आए हुए अतिथि देवताओं की निमित्त बहुत बड़े

पैमाने में भांति–भांति के नए पाक पदार्थ बनाकर उनका आगत–स्वागत कर उनको प्रसन्न किया। अतः उनके द्वारा श्री मोहन जी इस कल्प के आचार्य कहे गए और उनके वंशज इसी वैश्य वृति द्वारा संसार में फैल गए। मोदन के वंश मे मोदक (लड्डू) इत्यादि का व्यवसाय करने वाले वैश्य उत्पन्न हुए। आज वे करीब चार लाख की संख्या में हैं। चूंकि यह जाति कई प्रकार के मोदक (लड्डू) कई प्रकार के मोहन भोग (हलुआ) कुण्डलिनि (जलेबी) आदि पदार्थ (खाद्य) बनाती थी। अस्तु महाराज श्री मोदन सेन जी के कान्यकुब्ज देश से इस वैश्य जाति का विस्तार हुआ। (राजधानी का नाम महोदनपुरी था) अब कन्नोज है। उस समय जैसा कि देश नाम से ही महत्व के जाति नाम पुकारने की प्रथा थी। चारों वर्ण को भोजन देने के निर्मित इस पाक पदार्थ बनाने–बेचने वाली वैश्य जाति का नाम कान्यकुब्ज वैश्य पड़ा। जिसे कन्नौजिया हलवाई कहकर सम्बोधन होने लगा। आज जो भी मिठाई का कार्य करता है, वही हलवाई कहा जा रहा है। जबकि केवल कान्यकुब्ज वैश्य ही हलवाई कहा जाता रहा है।

जैसे अन्य वैश्य जाति में अग्रवाल, केजरीवाल, खंडेलवाल, जायसवाल, इत्यादि वैश्य बन्धुओं में अपने जाति सूचक शब्द का प्रयोग करते हैं उसी प्रकार कान्यकुब्ज वैश्य हलवाई जाति का सूचक, मोदन वंश के प्रतीक स्वरूप "मोदनवाल" है। क्योंकि अपने स्वजातीय के धर्म वर्ग, तदा शिक्षित वर्ग अपने को हलवाई कहने में संकोच करता है। इसका कारण यह है कि इनका समाज में जैसे स्थान गिर गया हो। लोग हलवाई को निम्न कोटि की श्रेणी में गिनते हैं।

यह मोदन वाल उत्पत्ति का संक्षिप्त रूप है जो श्री गया प्रसाद मोदनवाल महामंत्री उत्तर प्रदेशीय कान्यकुब्ज वैश्य हलवाई सभा इमरती रोड गनेशगंज जिला मिर्जापुर (उ०प्र०) से हमें प्राप्त हुआ है।

मूल कन्नौज–कानपुर में रह गये लोगों ने यज्ञ सेनी शब्द उपयुक्त समझा। एक तो इस लिये कि अन्य वैश्यों के पूर्वज अग्रसेन, महासेन, चौसेनी एवं द्वादश श्रेणी आदि से इसमें शब्द साम्य था और सेन शब्द वैश्यत्व का द्योतक है। इसी समानान्तरता पर यज्ञ सेन महाराज की अग्रज होने की कल्पना है। दक्षप्रजापति ने कनखल में जो यज्ञ किया था, वे यक्ष भगवान उनके प्रधान मन्त्री बताये गये। उनकी कुल रीति भी यही थी कि प्रातः लाल भट्टी को गोबर से लीपना और उस पर प्रथम मिष्ठान्न की आहुति रूप अज्ञारी देना। यह यज्ञ प्रक्रिया का ही अवशिष्ट रूप था। यों भी समाज को मिष्ठान अर्पण करना भी यज्ञ का पर्याय उपक्रम लगता है। इनकी कानपुर से निकलने वाली पत्रिका के मुख पृष्ठ पर मोदन सेन और यज्ञ सेन भगवानों का फोटो होता है।

और एक जातीय गीत में यज्ञ सेन को पूर्व कथित मोद से जोड़ दिया गया है :—

मोदन सुत हे ! महोदयो तव जन्म भूमि गुणखान।
मोद प्रमोद बाल और मोदक के तुम परम प्रधान॥
मोदक के मोदकदाता तुम हो अनुपम ऋषिराज।
जय जय यज्ञसेन महाराज॥
दक्ष–यज्ञ के संरक्षण में हो तुम ही अधिराज।
जय जय यज्ञसेनं महाराज॥

और धीरे धीरे ये अब आषाढ़ मास की पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) का जयन्ती महोत्सव मनाने लगे हैं तथा मोहन सेन की जयन्ती कार्तिक शुक्ला नवमी को मनाते हैं। इनका समय महाभारत से कुछ पूर्व का कहा गया है।

०२) बसाव-फैलाव और स्थान भेद से नामकरण

इनकी आबादी उत्तरी भारत के लगभग सब प्रान्तों तथा मध्य-प्रदेश और उड़ीसा और महाराष्ट्र में भी है। कन्नौज से चलकर एक जत्था प्रयाग, सुल्तानपुर, प्रतापगढ, बनिया एवं वाराणसी आदि जिलों में जाकर कान्यकुब्ज वैश्य हलवाई कहाई। इन्हीं का एक उप-दल प्रयाग से जौनपुर जाकर जौनपुरी हलवाई कहाया। दूसरा जत्था आजमगढ, फतुहा, सहसाराम, एवं पटना की ओर जा बसा और अपने को कनौजिया हलवाई कहने लगा। तीसरा जबलपुर की ओर गया और बादशाही हलवाई कहाता है।

जो लोग कन्नोज क्षेत्र ही में रहते रहे वे आज हलवाई कहाते रहे पर कालान्तर में वे अपने को यज्ञसेनी कहने लगे क्योंकि १९०० के लगभग जब यह नाम रक्खा गया, हलवाई शब्द का श्रोत मुसलमानी सा लगने से वह नाम छोड दिया गया। जो भाग मगध में और आगे गया वह मगहिया हलवाई कहाया। शायद मध्यदेशिया हलवाई (मधेशिया) इसी ग्रुप के वैश्य हों। मगध को कीकड़ व पतित देश माना जाता था। जहां धर्म-कर्म व खान पान सुरक्षित न रह सकने की किंवदन्ती थी। वहां बसे हलवाई वैश्यों के साथ खान-पान में अन्यों का बराबरी का व्यवहार नहीं रहा। एक श्लोक यों भी प्रसिद्ध है :—

अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग सौराष्ट्रे मगधधेषु च।
यात्रा बिना नगच्छन्ति पुनः संस्कारमर्हति॥

अर्थात यदि यात्रा मात्र को भी इन देशों में जावे तो लौटने पर शुद्धि संस्कार कराना चाहिये। [यो भुर्जी कहे जाने वाले लोगों ने कान्यकुब्ज नाम रक्खे है, वे भी कहीं-कहीं कान्यकुब्ज हलवाई माने-जाने और पुकारे जाने लगे हैं। [इनकी भुर्जी बाबा नामक एक पत्रिका भी निकलती थी। —सम्पादक]

०३) अखिल भारतीय कान्य कुब्ज वैश्य महासभा

अध्यक्ष – श्री शिम्भूप्रसाद राम गुप्त भूतपूर्व स्पे० ऐक्जी० मजिस्ट्रेट।
नं० 76 घाघरा बिल्डिंग। टैन्कबन्दर रोड, बम्बई–10
मंत्री—प्रो० राम बालक प्रसाद M.A. B.L. नया पुरन्दर पुरा पटना–1

वाराणसी अधिवेशन 1958

23 वां अधिवेशन कानपुर में हुआ

सन 1976 के अध्यक्ष श्री रामफल गुप्त बदौसा।

महामन्त्री—श्री रामबालक प्रसाद

और 26 वां अधिवेशन जायस जि० रायबरेली में जुलाई 85 में हुआ जिसका उदघाटन श्री बनारसी दास गुप्त अध्यक्ष अ०भा० वैश्य महासम्मेलन ने किया।

समानान्तर संस्था अ. भा. यज्ञ सेनी हलवाई वैश्य महसभा
प्रधान—श्री ब्रजमोहन गुप्त। इन्द्र नारायण। गणेश चौक छिंदवाडा (म०प्र०)
मंत्री—श्री जगन्नाथ प्रसाद गुप्त M.A. नं० 17/27। बाबा खेरेपति लेन। माल रोड। कानपुर—1

महाराष्ट्र शाखा
प्रथम अधिवेशन जुलाई 75 में बम्बई में हुआ। इसमें नागपुर अकोला, अमरावती, धूलिया से प्रतिनिधि आये थे। प्रान्त में इनकी आबादी 25000 के लगभग है।

यज्ञसेनी वैश्य हलवाई समिति उत्तर प्रदेश
उत्तर प्रदेश कान्य कुब्ज वैश्य हलवाई सभा। इमरती रोड। गणेश गंज। मिर्जापुर।
अध्यक्ष—श्री राम आर्य एडवोकेट, सुल्तानपुर उ०प्र०
मंत्री—गया प्रसाद मोदन वाल
बिहार शाखा का केन्द्र स्थान गिरीडीह है।

४४) निकलने वाली पत्र-पत्रिकायें-

१. **समाज दीप**—प्रकाशन स्थल नं० 41 रूप नारायण नन्दन लेन कलकत्ता—25
सम्पादक—श्री अमर गुप्त
२. **हितकारी**—सम्पादक श्री रामबालक प्रसाद M.A. B.L. पटना
३. **हलवाई**—कान्य कुब्ज वैश्य पत्रिका वाराणसी
४. **वैश्य समाज पत्रिका**—सन 68 से लगातार त्रैमासिक निकल रही है। सम्पादक श्री रामस्वरूप वैश्य नं० 41 शास्त्री नगर। लखनऊ—4
5. **वैश्य संगम**—सम्पादिका श्रीमति कमला देवी गुप्त नं० 12/15 जौयौलिया बाग। नाटी इमली, वाराणसी—1

०५) विशिष्ट पुरुष

१) कविवर जयशंकर प्रसाद

जन्म—काशी में सम्वत 1946 में सुंघनी साहु देवीप्रसाद जी हलवाई वैश्य के यहां हुआ था। तथा 48 वर्ष की आयु में सम्वत 1994 में वे स्वर्गवासी हुये। काव्य (कामायनी सहित), नाटक (जन्मेजय का नाग यज्ञ सहित 6), उपन्यास (कंकाल सहित 3), तथा पांच कहानी संग्रह उन्होंने लिखे। ब्रज तथा खडी बोली दोनों में कविता की है। प्रकृति चित्रण तथा रहस्यवाद में पारंगत थे।

२) स्वामी भजनानन्द सरस्वती भी हलवाई वैश्य थे। उन्होंने शाहजहांपुर में एक विशाल मन्दिर बनवाया है जो कि वहां का एक दर्शनीय स्थल है। मैंनपुरी मे स्वामी एकरसानन्द के साथ में वे रह रहे थे। स्वर्गाश्रम हारद्वार में भी उनके स्मरणान्चल हैं।

हमारे सहयोगी



डा० भरत प्रसाद गुप्त
M.B.B.S, D.T.M.&H.
Ph.D, F.I.A.M.S
पटना

परिचय—बिहार के पटना मेडिकल कालेज व अस्पताल के क्षेत्रीय रक्त बैंक में अवकाश प्राप्त मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, देश के शीर्षस्थ रक्त-विज्ञान विशेषज्ञों में गण्य-मान्य, कमलापुरी वैश्य समुदाय के अग्रणी नेता, समाज-सेवी तथा हिन्दी में ग्रन्थ-लेखन एवं पत्रकारिता में गहरी निष्ठा।

अखिल भारतीय कमलापुरी वैश्य महासभा से तीन दशकों से भी अधिक समय से सक्रियता से जुड़े समाज की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के सूत्र संचालक के रूप में प्रतिष्ठित। सम्प्रति उक्त महासभा के संयुक्त महामन्त्री, महासभा की त्रैमासिक मुख-पत्रिका "कमलापुरी" के प्रधान सम्पादक एवं संरक्षक, पिछले छ दशकों से समाज के कालेज-छात्रों के सहायतार्थ महासभा के तत्वावधान में संचालित छात्रवृत्ति-कोष के विशिष्ट दानी।

जन्म—१२ सितम्बर १९२० को उत्तर बिहार के छपरा नगर में अखिल भारतीय कमलापुरी वैश्य महासभा के संस्थापक महामन्त्री एवं कमलापुरी-समाज के युग पुरुष स्व० वैद्य श्री रघुवीर प्रसाद गुप्त के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में।

शिक्षा—स्कूली शिक्षा छपरा में, पटना विद्यालय के अन्तर्गत मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण (१९३८), कलकत्ता विश्वविद्यालय से I.Sc. (१९४०), पटना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत प्रिंस ऑफ वेल्स मेडिकल कोलेज से M.B.B.S. (१९४६), कलकत्ता विश्व विद्यालय के अन्तर्गत स्कूल ऑफ ट्रापिकल मेडिसन से D.T.M.&H. (१९५४), पटना विश्वविद्यालय से रक्त विज्ञान (पैथोलोजी) में Ph.D. (१९७०), ब्लड ट्रांसफ्यूजन तकनीक में विशेष प्रशिक्षण मद्रास से से (१९५५) व बम्बई से (१९६५) तथा रक्त-विज्ञान में विशेषता की मानद उपाधि दिल्ली से (१९८३)।

सेवायें—सरकारी सेवा में बिहार राज्य स्वास्थ्य सेवा संवर्ग के अन्तर्गत १९४७ से विभिन्न पदों पर। पटना मेडिकल कालेज में १९५५ से मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी के पद पर २५ वर्षों तक पद स्थापित रहकर १९८० में सेवा निवृत। सम्प्रत्ति क्लिनिकल रक्त-विज्ञान व पैथोलोजी में निजी प्रैक्टिस।

उल्लेख्य उपलब्धियां—[क] बिहार सरकार द्वारा गठित बिहार राज्य ब्लड बैंक पुनर्गठन उपसमिति के अध्यक्ष (१९७२-७४) प्रतिवेदन की अनुशंसायें सरकार द्वारा पूर्णत: स्वीकृत।

[ख] पंजाब विश्वविद्यालय के अन्तर्गत पोस्ट ग्रेजुएट संस्थान में विशेषज्ञता में परीक्षक (१९७८-७९), उसी संस्थान में विशेषज्ञता की नियुक्तियों के लिये विशिष्ट सलाहकार (१९७८-८०)।

[ग] रक्त विज्ञान पर लिखित ६०० पृष्ठों का मौलिक ग्रन्थ—'रक्त आधान' सिद्धान्त एवं प्रयोग का भारत सरकार द्वारा प्रकाशन तथा देश के हिन्दी भाषी राज्यों के मेडिकल कालेजों के लिये स्वीकृत (१९७८)

[घ] विशेषज्ञता के अखिल भारतीय संगठन—I.S.B.T.I (इंडियन सोसाइटी ऑफ ब्लड ट्रांसफ्यूजन एंड इम्यूनोहेमाटोलोजी) के पिछले तीन वर्षों से वरिष्ठ अध्यक्ष तथा उसकी प्रादेशिक शाखा के अध्यक्ष।

[ग]—इंडियन मेडिकल ऐसोशियेशन, इंडियन रेडक्रास सोसाइटी, रोटरी इन्टर नेशनल आदि अनेकानेक स्वयंसेवी संगठनों, सामाजिक एवं साहित्यक संस्थाओं से जुड़े रह कर समाज एवं जन-सेवा में निरन्तर संलग्न।

अध्याय १९

दोसर वैश्य

(अ) उत्तर भारत में इन बन्धुओं के अकेले कानपुर में करीब ५ हजार परिवार हैं। इसके अलावा लखनऊ, फतेहपुर, बिंदकी, बांदा, उन्नाव आदि नगरों में दोसर समाज के अनेक परिवार हैं। "अ. भ० दोसर वैश्य महासभा कानपुर" एक इकाई के रुप में वहां सामाजिक कार्य कर रही है। पर उनसे कार्य विधि की कोई रिपोर्ट नहीं मिली। हाँ दक्षिणाञ्चल में कार्य रत संगठन का विशेष परिचय निम्न प्रकार है :—

[ब] दक्षिण प्रान्तीय दोसर वैश्य महासभा नागपुर (बाद में परिवर्तित नाम—मध्य प्रदेशीय)

(०१) इस सभा की स्थापना फरवरी १९४९ को महाशिवरात्री पर्व पर नागपुर में हुई इसका कार्यक्षेत्र मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उडीसा, गुजरात, आ. प्र. तामिलनाडू तथा पं. बंगाल है।

(०२) उत्तर से अनेक दोसर वैश्य परिवार रोजी-रोटी की तलाश में देश के दक्षिणी आंचल में आये और मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र में आकर बस गये। उतर प्रदेश में इनकी एक महासभा पहले से कार्यरत थी, इसलिये "दक्षिण प्रान्तीय दोसर वैश्य सभा" नागपुर नामकरण हुआ।

(०३) अधिवेशन व प्रस्ताव :—

इस सभा के अब तक १० अधिवेशन मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र के विभिन्न नगरों में हो चुके हैं। जिनमें से चार नागपुर में [१९४९, १९५१ १९५९ तथा १९७४ में], दो जबलपुर में [१९५२ तथा १९८२ में], चिखली [१९५६], बिवरा [१९६२], भाटापारा [१९६९] तथा नादगांव [१९७९] में हुऐ। अगला अधिवेशन नवम्बर १९८५ को सागर [म. प्र.] में होना है।

इन अधिवेशनों द्वारा बारातों में आतिशबाजी पर पूर्ण बंदिश, विधवा विवाह को मान्यता, पर्दाप्रथा की समाप्ति, स्त्री शिक्षा का प्रसार तथा ठहरौनी का निषेध, करने में सभा सफल रही है

(०४) सामाजिक पत्रिका:—

सभा की स्थापना के साथ ही एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी शुरु हुआ, जो "वैश्य सहोदर" [रजि०] के नाम से नियमित चल रही है।

(०५) दोसर वैश्य भवन:—

सभा ने १० हजार फुट का प्लाट खरीदा व १९५९ में भूमि-पूजन कर निर्माण कार्य शुरु किया। समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं में नागपुर के सर्वश्री लक्ष्मीनारायण जी "मंद" के नेतृत्व में परिश्रम कर चंदा इकट्ठा किया। श्री महादेव प्रसाद जी व श्री अवधबिहारी जी ने स्वयं बड़ी रकमें सभा को दान में दी।

नागपुर के सबसे मंहगे व महत्व पूर्ण मार्ग सेन्ट्रल एवेन्यु पर खड़ा दोसर वैश्य भवन सारे शहर में अपनी कीत्ति फैला रहा है। दो मंजिली इस इमारत के नीचे के माले में ३५ दुकानें व व्यवसायिक कार्यालय किराये से दिये हुये हैं। जिसमें प्रतिवर्ष एक लाख रुपये से ऊपर की आय सभा को होती है। ऊपर के माले में एक बड़ा सभागृह, सभा का आफिस, अतिथि-कक्ष, स्कूल आदि के लिये काम में लाया जाता है। भवन के मंगल कार्यालय में पूरे साल शादी-विवाह होते रहते हैं।

(०६) सामुहिक विवाह आयोजन:—

दोसर वैश्य सभा ने वर्ष १९७४ में सामूहिक विवाह का आयोजन किया। तब से हर साल "बसन्त पंचमी" पर दोसर भवन में आयोजन होते हैं। उ० प्र०, उडीसा, प० बंगाल, मध्य प्रदेश और मराठावाडा से हजारों लोग आकर इस आयोजन में भाग लेते हैं। सभा द्वारा ये आयोजन निःशुल्क होते हैं, तथा आयोजन की सारी व्यवस्था सभा अपने खर्च से करती है।

(०७) अन्य गतिविधियां :—

एक प्राइमरी स्कूल का संचालन, गरीब छात्रों को छात्र वृत्तियां व मुफ्त पुस्तकें, मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन स्वरुप, सायकिल घड़ी, सिलाई मशीन, आदि का हर वर्ष पुरस्कार, निराश्रित परिवारों, विधवाओं या शारीरिक अक्षम लोगों को हर माह आर्थिक सहायता देना सभा की नियमित गतिविधि है।

(०८) कान्वेन्ट स्कूल:—

सभा द्वारा दोसर वैश्य भवन के एक भाग में बच्चों को उचित शिक्षा देने के लिये एम० बी कान्वेट नाम से स्कूल चल रहा है। स्कूल संचालन हेतु समाज के श्री महादेव बद्री प्रसाद गुप्त ने २५ हजार रुपये का अनुदान सभा को दिया था। २५ अगस्त को महाराष्ट्र प्रांत के तत्कालीन वन मन्त्री श्रीछेदीलाल जी गुप्त ने इसका विधिवत उद्‌घाटन किया था।

(०९) सर्व वैश्य सम्मेलन .—

१९७९ में सभा के एक अधिवेशन में प्रस्ताव पास हुआ था कि दोसर वैश्य समाज इस बात का प्रयास करे कि सभी वैश्य जातियां जो आज बिखरी पड़ी हैं, संगठित होकर सामाजिक समस्याओं का समाधान करें। सभा के संस्थापक लक्ष्मी नारायण 'मंद' ने यह प्रस्ताव रखा और इस गुरुभार को पूर्ण करने का दायित्व भी लिया। उन्होंने नागपुर के सभी वैश्य वर्गों से व्यक्तिगत संपर्क कर बैठकें बुलाई। दुर्दैव से इसी बीच मंद जी का निधन हो गया अतः उनके

अधूरे कार्य को सभा के कार्यकर्ताओं ने पूरा करने का संकल्प कर कार्यवाही आगे बढाई। सुखद परिणाम निकला और ४ अप्रैल १९८१ को दोसर वैश्य भवन नागपुर में भारतीय स्तर का सर्ववैश्य सम्मेलन आयोजित हुआ। उसका उद्‌घाटन तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री श्री सीताराम जी केसरी ने किया। आयोजन में विभिन्न वैश्य वर्गों के लगभग एक हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिनमें अग्रवाल, गहोई, ओमर, दोसर, अग्रहरी, अयोध्यावासी, केसरवानी, कसौंधन आदि का समावेश था। इसमें श्री डी. सी. अग्रवाल [आयकर आयुक्त], दीनदयाल जी गुप्ता [भू० पू० मंत्री], आदि ने सभी वैश्यों को संगठित होने का आह्वान किया।

(१०) शाखा सभायें :—

जबलपुर व औरंगाबाद में शाखा सभाओं की स्थापना क्रमशः १९८० और १९८१ में हुई।

(११) दोसर वैश्य समाज के अधिकाँश परिवार नागपुर, जबलपुर, रायपुर, बिलासपुर, सागर, गोंदिया, रायगढ, सुहेला, कलकत्ता, औरंगाबाद, भाटापारा, नांदगांव, सिवनी, बिवरा, बम्बई आदि स्थानों में हैं।

(१२)—निम्नलिखित बंधु श्री दोसर वैश्य सभा, नागपुर के अध्यक्ष व मंत्री रह चुके हैं।

	अध्यक्ष			मन्त्री	
१]	श्री दीनदयाल जी, बिलासपुर	[१९४९–५१]	१]	श्री शिवनारायण पटेल, नागपुर	[१९४९–५१]
२]	श्री छेदीलाल जी शहडोल	[१९५१–५२]	२]	,, रामदीन गुप्त, नागपुर	[१९५१–५२]
३]	श्री जगन्नाथ प्रसाद जी सागर	[१९५२–५६]	३]	,, लक्ष्मीनारायण जी मंद नागपुर	[१९५२–७४]
४]	श्री रामनारायण जी रायपुर	[१९५६–५९]		,,	,,
५]	श्री प्रहलाददास जी नांदगांव	[१९५९–६२]		,,	,,
६]	श्री पन्नालाल जी भाटापारा	[१९६२–६८]		,,	,,
७]	श्री गयाप्रसाद जी बिलासपुर	[१९६८–७४]		,,	,,
८]	श्री एड. रामरतन जी परतवाडा	[१९७४–७९]	४]	,, द्वारका प्रसाद गुप्त, नागपुर	[१९७४–से वर्तमान]
९]	श्री राजकुमार जी सागर	[१९७९–८२]		,,	,,
१०	श्री श्यामलाल जी नागपुर	[१९८२–से१९८५]		,,	,,
११	श्री प्रभाकर काशी प्रसाद गुप्त नं. ११४/१ प्रोफेसर कोलोनी – गौदिया	[१९८५]		,,	,,
				,,	,,

(१३) विशिष्ट पुरुष

१] स्व० लक्ष्मीनारायण मंद' नागपुर :—

इस समाज का कोई भी व्यक्ति "मंद" जी का नाम बराबर जानता है। दोसर वैश्य समाज की स्थापना में उनका विशेष योगदान था। २५ वर्ष तक वे सभा के मंत्री रहे। १९७४ में निवृत्ति के समय सभा की रजत जयन्ती पर उन्हें "समाज शिरोमणि" की उपाधि से सम्मानित किया गया था। २८ नवम्बर १९८० को ७० वर्ष की आयु में वे ब्रह्मलीन हो गए। उनकी प्रतिमा का अनावरण हरियाणा के भूतपूर्व मुख्यमंत्री बनारसीदास जी गुप्त ने किया था।

२] स्व० श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' :—

कानपुर निवासी "पद्मश्री" श्यामलाल जी दोसर वैश्य समाज की धरोहर थे। लोग उन्हें "पार्षद" जी के नाम से पुकारते थे। "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा" के रचियता तथा स्वतन्त्रता सेनानी पार्षद जी को भारत सरकार ने १९७३ में पदमश्री की उपाधि से सम्मानित किया था। १० अगस्त १९७७ को लगभग ८० वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। उ० प्र० सरकार ने पूरे राजकीय सम्मान से उनकी अत्येष्टि की।

३] स्व० पन्नालाल जी गुप्त बिन्दकी:—

पन्नालाल जी "बापू" के नाम से जाने जाते थे। न सिर्फ समाज में बल्कि राजनीति में बराबर दखल रखते थे। वे कई वर्ष तक अपने क्षेत्र फतेहपुर में एम. एल. सी रहे। दिनाँक २४/६/८४ को ८० वर्ष की आयु में हत्या का शिकार हो वे इस संसार से चले गये।

१४) परिचय सभा के कुछ वर्तमान कार्यकर्ताओं का :-

१] श्री श्यामलाल गुप्त नागपुर :-

४८ वर्षीय श्री. श्यामलाल गुप्त दोसर वैश्य सभा के वर्तमान अध्यक्ष हैं। श्यामलाल जी में समाज के प्रति निष्ठा कूट–कूट कर भरी है।

२. श्री. जयप्रकाश गुप्त. नागपुर. : सभा के कोषाध्यक्ष तथा इंका के एक सक्रिय युवा कार्यकर्ता श्री. जयप्रकाश गुप्त. अ. भा. वैश्य महासम्मेलन के मंत्री भी हैं। वे विशेष कार्यकारी दंडाधिकारी व रा० स०। माईनिंग कार्पो. के चेयरमेन भी रह चुके हैं।

३. श्री. द्वारकाप्रसाद गुप्त नागपुर :-

दोसर वैश्य सभा के मंत्री श्री द्वारका प्रसाद गुप्त केन्द्रीय सरकार के नागपुर स्थिति एक कार्यालय में राजपत्रित अधिकारी हैं। करीब १५ वर्षों से सभा की पत्रिका "वैश्य सहोदर", का संम्पादन भी कर रहे हैं।

इस समाज द्वारा जिन नगरों में एवं ग्रामों में सार्वजनिक समाज सेवा के रूप में भवन, विद्यालय, धर्मशाला, देवमंदिर आदि निर्मित हुए हैं, उनका संक्षिप्त परिचय भी दे रहे हैं। यह वृत्तान्त प्रमाण रूप है कि केवल एक उपजाति ने ही जब इतने कल्याणकारी कार्य किये हैं, तो समूची वैश्य जाति का योगदान कितना प्रचुर होगा।

उत्तर प्रदेश : कानपुर

१) "श्री दोसर वैश्य विद्यालय समिति कानपुर" द्वारा संचालित निम्न संस्थायें हैं।

(i) **श्री गंगादीन गौरीशंकर इण्टर कॉलेज, छावनी।**
(ii) **श्री दोसर वैश्य बालसदन (अनाथालय) छावनी।**
(iii) **दोसर वैश्य मान्टसरी विद्यालय छावनी।**
(vi) **श्री दोसर वैश्य बालिका विद्यालय।**

(२) **सेन्ट्रल धर्मशाला,** कलक्टर गंज कानपुर (स्वामित्व बाबू राधेश्याम गुप्त कानपुर)

(३) **सीताराम धर्मशाला,** लोहाई कानपुर। स्वामित्व बाबूरामजी गुप्त, वकील कानपुर।

(४) **कत्थेवालों की धर्मशाला,** धनकुटी, कानपुर। (स्वामित्व श्री किशनलाल छोटेलालजी कत्थावाले)

(५) **दोसर वैश्य धर्मशाला,** भूसाटोली कानपुर (स्वामित्व फर्म भगवानदीन राधाकृष्ण)।

(६) **मेड़ीलाल धर्मशाला,** हरवंस मोहाल कानपुर। (स्वामित्व श्री मेड़ीलाल गुप्त)

(७) **लाल बंगला वालों की धर्मशाला,** जुही। (स्वामित्व राधेश्यामजी, लोहाई कानपुर)

नोट — इसके अतिरिक्त कानपुर नगर में लगभग २० देवमंदिर दोसर वैश्य समाज द्वारा निर्मित हैं।

लखनऊ

१) 'कृष्णादेवी दोसर वैश्य एज्यूकेशन सोसायटी' लखनऊ द्वारा संचालित संस्थाए—

(i) **कृष्णादेवी गर्ल्स डिग्री कालेज,** (कला विभाग) रामनगर आलमबाग, लखनऊ।

(ii) **कृष्णादेवी गर्ल्स इण्टर कालेज,** (बालिका), रामनगर, आलमबाग, लखनऊ।

(iii) **कृष्णा शिक्षा निकेतन** (पोलीटेकनिक) रामनगर आलमबाग, लखनऊ।

(vi) **नारायण कामर्स कालेज,** कानपुर रोड, आलमबाग लखनऊ। संस्थापक एवं प्रबन्धिका श्रीमती कृष्णा देवी धर्मपत्नी श्री गंगानारायण गुप्त।

(२) **गुरुप्रसाद गुप्त दो. वै. विद्यालय** लखनऊ। निर्माता—श्री गुरूप्रसाद गुप्त, नेहरू क्रास के पास। लखनऊ। आपकी नेमिषारण्य तीर्थ में भी एक धर्मशाला है।

बाराबंकी

'विश्राम सदन' के नाम से प्रसिद्ध विशाल एवम् कलात्मक इस भवन में धर्मशाला, औषधालय, भगवान का सुन्दर दर्शनीय मंदिर आदि हैं। यह तीन मंजिल की सुन्दर इमारत लगभग सात लाख की लागत से बम्बई निवासी स्व. ब्रजमोहन लाल जी गुप्त ने १५ वर्ष पूर्व बनवाई थी। आपने एक धर्मशाला बद्रीनारायण तीर्थ में भी बनवाई है। 'विश्राम सदन' के निकट एक गौशाला भी निर्मित है।

हरदोई

बाबूलाल गुप्त 'स्मृति भवन' [हरदोई] इस भवन में मांटेसरी विद्यालय चल रहा है। इसे समाज के प्रसिद्ध पुरुष श्री सुन्दरलाल गुप्त (एडवोकेट) ने सन् १६३५ में (लागत लगभग एक लाख रुपये से) निर्मित कराया था।

भगवन्तनगर

भगवन्तनगर (जिला उन्नाव) में दोसर वैश्य समाज का प्रसिद्ध प्राचीन परिवार स्वर्गीय राजा सहिजादा का अभी तक प्रख्यात है। इस परिवार के कई सार्वजनिक मन्दिर भवन बने हैं। भगवन्तनगर में प्रसिद्धि नाम 'साहन का तालाब' और उसके किनारे शिवालय तथा 'ठाकुरद्वारा' भी कलात्मक रूप से बना है।

भगवन्तनगर निवासी स्वर्गीय शिवमंगलप्रसाद गुप्ता द्वारा निर्मित प्रसिद्ध शक्तिपीठ चण्डिकादेवी के स्थल बक्सर गांव जो सुरसरी पतित-पावनी गंगानदी के तट पर विद्यमान है। वहां अमावस्या पूर्णिमा तथा अन्य पावन पर्वों पर गंगा स्नान पर श्रद्धालु जनता द्वारा यात्रा तथा मेला भरता है। कई साधु संत तथा भक्तजन गंगामाता की सन्निधता प्राप्त करने हेतु वहां निवास भी कर रहे हैं। यहीं पर बृहत धर्मशाला का निर्माण शिवमंगलजी ने विशाल इमारत के रूप में लाखों की लागत से सेवाभाव से कराया है। लगभग ७०–७५ कमरे आंगन में कुआं आदि यात्रियों की सुविधा के हेतु हैं, जिसमें हजारों यात्रियों को निवास सुविधा प्राप्त होती है।

शिवालय

जिला उन्नाव के अन्तर्गत त. रणजीत पुरवा के ग्राम चैनपुर मवइया स्वर्गीय शिवनाथ गुप्त के पूर्वजों द्वारा सुन्दरतम विशाल शिवालय निर्मित किये गये जो ग्राम की शिखर पताका के समान हैं।

चैनपुर में ही दूसरा शिवालय स्व० गुजरबाबू गुप्त द्वारा निर्मित है। यह भी सुन्दरतम शिव मन्दिर ग्राम से डेढ़ दो मील दूरी से ग्राम का निशान बताता है।

बिजईपुर त० खागा जि० फतेहपुर

देवी का मन्दिर उससे संलग्न अखाड़ा, बगीचा, कुंआ आदि हैं। (निर्माता स्व० मूलचन्द गुप्त नागपुर)

औंग (जिला फतेहपुर)

'रघुनन्दनप्रसाद प्रायमरी पाठशाला'

रोसो ग्राम जिला हरदोई

मोटर स्टैंड विश्रामशाला–निर्माता समाज के एक सेवी बन्धु द्वारा सार्वजनिक दोसर वैश्य समाज के सहयोगी हैं।

लालगंज (जिला रायबरेली)

संगमरमर का बना एक सुन्दर शिवालय तथा एक ठाकुरद्वारा (निर्माता स्व० रामदुलारे गुप्त की धर्मपत्नी)

हमारे सहयोगी (२८ अ)



Name : Gundaiah Setty B. A. (Hons.) B.L. Advocate
Father's name : Nallapeta V. Naranaiah
Date of Birth : 14-5-1922
Residential Address : "Chandakulla", No. 330, 22nd Cross, I&III East Block, Jayanagar, Bangalore-560011.
Hobby : Philosophy & Politics

At present he is President of the following institutions:—

1. Vasavi Veda Nidhi, Vasavi Kshethra, 22nd Cross, Jayanagar Bangalore City. Which runs 'Vasavi, Veda Patha Shala' and 'Vasavi Sanskrith Patha Shala.
2. Vasavi Mandali, Jayanagar, Bangalore.
3. Valmiki Anjaneya Seva Sangha, Visveswarapuram, Bangalore. 4. Pedda Peta Arya Vysya Seva Sangha, Bangalore. 5. Sri Subramanya Ghati Arya Vysya Chatrada Seva Sangha. 6. Sri Vidurashwatha Arya Vysya Santharpana Sangha. 7. P. S. K. Hotel Old Boy's Association. 8. Health Inspector's Association, Bangalore City Corporation. 9. Milk Dairy Agent's Association, Bangalore. 10. Khasagi Shala Naukarara Sangha, Bangalore. and (11). Vice President. Vasavi Samuhika Seva Sangha, Bangalore.

TRUSTEE

1. Hema Hanumanthaiah Setty Anjaneya Setty Sons Trust, Maruthi Dharma Shala, Bangalore.
2. Kabirnathswamiji Brahma Vidyashrama.

WARDEN Arya Vysya Hostel, Bangalore.

Served as Vice-Chairman, Karnataka State Bar Council, President, Bangalore City Bar Association. President, Cuddapha Sacchidananda Swami Mutt.

He was a detenu during Emergency 1975 and was imprisoned for more than 18 months. It was only at that time he got elected to Karnataka Legislative Council. Now he is there for the second term.
Legal Adviser : Vysya Bank Ltd. Omkar Asrama

लालगंज ग्राम में ही बृहत तालाब ईंटों से निर्मित है-दोसर वैश्य बन्धु द्वारा ही तालाब बना है। निर्माता स्व० काशीनाथ गुप्त।

जगन्नाथगंज जिला रायबरेली-श्री रामलाल प्रयागदास गुप्त के द्वारा निर्मित सुन्दर शिवालय बृहत रूप से बनवाया गया है जो ग्राम की शोभा है।

× × × ×

नागपुर

१) 'दोसर वैश्य भवन'

२) 'राधाकृष्ण मन्दिर' हंसापुरी, नागपुर (स्वामित्व स्व० जगन्नाथप्रसाद गुप्त का परिवार)। इतवारी नागपुर।

३) 'श्री सीताराम मन्दिर' हंसापुरी नागपुर (निर्माता-स्व० श्री बल्देवप्रसाद गुप्त)।

४) 'श्री दुर्गामन्दिर' सीतावर्डी नागपुर निर्माता -स्व० बिन्दा-चरण गुप्त नागपुर)

झलप (जिला रायपुर)

एक धर्मशाला स्व० रामधनीलाल गुप्त की धर्मपत्नी द्वारा निर्मित।

भाटापारा (जिला रायपुर)

'सत्संग भवन व मन्दिर' निर्माता स्व० बाबूलाल गुप्त भाटापारा।

पाढ़र (जिला बैतूल)

'इन्दोबाई स्मृति धर्मशाला' एक भाग में स्कूल चलता है। निर्माता व ट्रस्टी श्री रासबिहारी गुप्त, बैतूल।

१६ सामूहिक विवाहों की परम्परा :—

सामूहिक विवाह का प्रथम आयोजन ६ मई १९७४ को हुआ था, जिसमें ५ जोड़े परिणय-बद्ध हुए थे। नागपुर में अब तक सम्पन्न हुए १२ आयोजनों में ११६ जोड़े परिणय बद्ध हो चूके हैं। दि २८ नव० ८५ को सागर में २० जोडों का सामूहिक विवाह हुआ।

१७. समाज के युवा लेखक श्री रमण गुप्त द्वारा लिखित नाटक 'देशद्रोही' महाराष्ट्र राज्य नाट्य महोत्सव (स्पर्धा १९७५) में पुरस्कृत हुआ था। आपके द्वारा लिखित कहानी तथा पटकथा पर एक मराठी भाषी फिल्म 'आली लहर केला कहर' हाल ही में प्रदर्शित हुई थी।

हमारे सहयोगी (२८ ब)



स्व० श्री मूलादास गुप्ता, अजमेर

इनका जन्म जिला भरतपुर में सन् १८६१ में हुआ था । पुश्तैनी व्यवसाय रुपया उधार देने से बौहरे के रूप में जाने जाते थे। जब अपनी पुत्री की शादी की, तो सात गांवों को भोजन कराया। जब गांव में भीषण अकाल पड़ा तो उस समय ये अजमेर आ गये। वहाँ वे एक बिस्कुट फैक्टरी के सेल्स एजेन्ट बन गये। सन् १८११ में रेलवे केरिज वर्कशाप में नौकरी मिल गयी जहां से वे "सिनियर चार्जमैन" के पद से सन् १८४६ में निवृत हुये। सन् १८७३ को दिवंगत हुये।'

सामाजिक जीवन :—

(अ) आर्य समाज के सभी कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया तथा डी. ए. वी. कॉलेज अजमेर के निर्माणार्थ प्रचुर धन एकत्रित किया।

उन्होंने जगह जगह व्यायामशालायें स्थापित कीं। उन्होंने छूआछूत का भेद मिटाने हेतु समय समय पर सामूहिक रूप से प्रीतिभोज प्रारम्भ कराये। तथा अनाथालय/विधवाश्रम आदि की स्थापना में प्रचुर सहयोग दिया।

(ब) **कांग्रेस**—कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे। अम्बर चरखा के प्रचार कार्य में अग्रणी रहे। स्वयं हाथ की कती एवं बुनी हुई खादी आजीवन पहनते रहे।

जब श्री पंडित जवाहर लाल जी नेहरू अजमेर पधारे थे तो उस समय कांग्रेस की वालंटियर कोर के मुख्याधिकारियों में इनको विशेष रूप से चुना गया था।

(स) **अनाथ प्रेम**—चलते राह में यदि कोई दुखी अनाथ, बालक, बालिका, स्त्री पुरुष कोई भी मिल जाता था तो उनसे उनका दुख नहीं देखा जाता था। उसे अपने घर पर रखकर, उसका पालन पोषण करना, पढ़ा लिखा कर लघु उद्योग सिखाकर उसकी शादी करके और अपने जीवनयापन की व्यवस्था में समर्थ कर ही अपने घर से विदा किया करते थे। उनमें से आज भी कई व्यक्ति जिन्दा उदाहरणार्थ मौजूद हैं।

(द) **स्काउटिंग**—स्काउटिंग संस्था कायम कर लोगों में मानव सेवा का भाव उत्पन्न किया।

(य) **जीवधारी प्रेम**—'श्री सीता गौशाला के नाम से पक्की गौशाला का निर्माण कराया।

गांव प्रेम—सेवा निवृत्त होने के पूर्व अपनी जन्म भूमि में एक धर्मशाला, एक चौबारा, कुंआ तथा बगीचा बनवा दिया।

(ल) **व्यवसायिक**—नौकरी के साथ साथ व्यवसाय करना भी नहीं भूलते थे और निम्न धंधे भी चालू रखे थे—

१- नये बाजार में गोटा बुनने की ग्यारह मशीनें लगा रखी थीं।
२- फायसागर रोड़ पर हाथ करघे लगा रखे थे।
३- अजमेर रेलवे स्टेशन पर टैक्सी (१० सीट वाली सैलून टाईप शैवरलेट कार) चलवा रखी थी।'

(व) **जातीय प्रेम**—सर्वप्रथम १८२५ में शाखा भेद को मिटाकर उन्होंने कासगंज के 'शाक्यवार' वर्ग की पुत्री का विवाह 'महावर शाखा' के पुत्र के साथ कराया। सभी को एक "तन्तुवाय वैश्य" के झंडे तले आने का आव्हान किया। इन्होंने भारत का कोई भी कोना नहीं छोड़ा जहां "तन्तुवाय वैश्य सभा" स्थापित नहीं की हो। फिर अथक परिश्रम करके अजमेर कान्फ्रेंस में पटना के जमींदार एवं बैंकर्स बाबू यमुना दास जी कन्नौजिया को ढूंढ निकाल कर उन्हें सभापति बनाया। तथा 'अखिल भारत वर्षीय तन्तुवाय वैश्य महासभा' को जन्म दिया। इसके अलावा जातीय उत्थान हेतु अनेक कार्य भी किये जैसे :—

(ल) **शैक्षणिक :—**

१- सन् १८३० में (महावर एंग्लो वैदिक मिडिल स्कूल) एम. ए. वी. मिडिल स्कूल की स्थापना।

२- सन् १८३२ में अपने निजी भवन में 'जादूघर कन्या पाठशाला' की स्थापना की जो कि आजकल "सरस्वती बालिका विद्यालय" के नाम से विख्यात है।

३- योग्य विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति दिलाने हेतु "एजुकेशनल फण्ड" की स्थापना।

४- श्री महावर तन्तुवाय वैश्य वैदिक हिन्दी पाठशाला, दिल्ली की १० अगस्त १८४३ में स्थापना।

५- २ जनवरी सन् १८४७ में पुष्कर राज में 'तन्तुवाय वैश्य घाट' खरीद कर सभा को समर्पित करना।

—: ० :—

हमारे सहयोगी (२८ स)



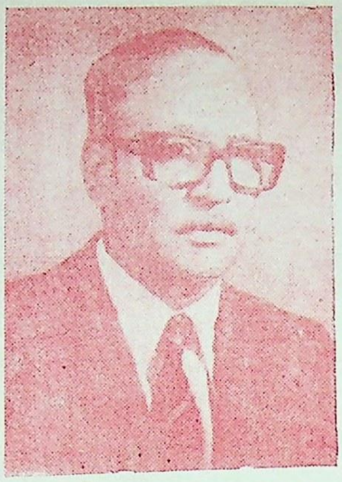
श्री रामलाल जी गुप्ता
M. A. B. T. SHASTRI अजमेर

राजस्थान के अजमेर शहर के एक सम्पन्न परिवार में श्री रामलाल गुप्ता का जन्म एक जून १९२७ को सेठ लक्ष्मण लाल जी के घर हुआ। पिता जी अपने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व से सामाजिक जागृति के सजीव उदाहरण थे। माता-पिता की छत्रछाया से वंचित हो जाने पर ज्येष्ठ भ्राताओं के निस्वार्थ त्याग के बल पर आप पोस्ट ग्रेजुयेट हुए। और मुरादाबाद से बी. टी. की डिग्री प्राप्त की। इनका विवाह कानपुर के श्री मेहन्त श्री माधौराम की पुत्री श्रीमती चन्द्रावती के साथ हुआ, जो कि स्वयं भी बी. ए. बी. एड. थीं। वे एक राजकीय विद्यालय में प्रधान अध्यापिका के पद पर कार्य कर रही हैं। वे शिक्षा विभाग में तेरह वर्ष तक अराजपत्रित पद पर व १८ वर्ष तक राजपत्रित अधिकारी के पद पर कार्य कर १९८२ में प्रिन्सीपल, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर वाटी (जि. झुंझनू) के पद से सेवा निवृत्त हुए। डिप्टी इन्सपेक्टर आफ, स्कूल एवं प्रिंसीपल पद पर अपनी सराहनीय सेवाओं के कारण आपको जिला स्तर, राज्य स्तर पर भी सम्मानित किया जा चुका था। महात्मा गाँधी सृजित आन्दोलन के दौरान यह जेल भी गये और स्वतन्त्रता सेनानी बनने का गौरव प्राप्त किया।

इनके जीवन पर दयानन्द सरस्वती की अमिट छाप है, क्योंकि इनका लालन-पालन, अध्ययन, आर्य समाज अजमेर के वायुमण्डल में हुआ था। आपके ज्येष्ठ पुत्र रेवेन्यु बोर्ड अजमेर एवं लघु पुत्र जो कि मैकेनिकल इंजिनियर हैं; निरीक्षक, ब्आइलर्स एण्ड फैक्टरीज के पद पर सीकर में कार्यरत हैं :

बाल-काल से ही जातीय सेवा करते आ रहे हैं। आपने कितनी बार स्थानीय "तन्तुवाय वैश्य सभा [जादूघर, लक्ष्मण चौक, अजमेर] के मंत्री पद कार्य किया। सेवा निवृत्त होने के पश्चात् से अपना समय जातीय सेवा में ही अर्पित कर रहे हैं तथा इस समय "श्री तन्तुवाय वैश्य पुष्कर घाट निर्माण समिति" के मंत्री का कार्यभार सफलता पूर्वक सम्हाले हुए हैं।

हमारे सहयोग (२८ द)



श्री धर्मात्माशरण कोठीवाल । मुरादाबाद

जन्म अप्रैल १९२१ में कुलीन अग्रवाल कोठीवाल परिवार में हुआ। उच्चत्तम शिक्षा M.A, LL.B. काशी विश्व विद्यालय से प्राप्त करके अपने पिता साहू शिवशक्ति शरण के साथ ही व्यौपार और उद्योग के निजी कार्य में लग गये। पिता साहू शिवशक्ति शरण जी नगर के प्रसिद्ध समाज सेवी विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में अग्रगण्य थे और धार्मिक कार्यों में भी विशेष रूचि रखते थे। नगर की अनेक उच्च शिक्षा व समाज सेवी संस्थाओं से सम्बधित थे इसी परम्परा के अनुसार धर्मात्मा शरण जी भी प्रेरित हो सेवा कार्य में अपना समय देने का प्रयास करते रहते हैं। एक पुत्री आभा व दो पुत्रों अक्षर और अमित को भी आपने ग्रेजुएट कराके विवाह कर अपने पैरों पर खड़ा कर दिया है और अपने पूर्ण परिवार सहित नगर व जिले में लोक प्रिय व्यक्ति के रुप में ख्याति प्राप्त की है।

सामाजिक जीवन :

शिक्षा क्षेत्र में—मुरादाबाद स्थित महाराजा अग्रसेन इन्टर कालेज तथा जे. आर. गर्ल्स कोलेज की मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष तथा हिन्दू कोलेज में कार्यकारिणी सदस्य हैं।

जातीय क्षेत्र में—अग्रवाल सभा मुरादाबाद के उपाध्यक्ष हैं। जन सेवा हेतु एक कोठीवाल धर्मशाला के मैनेजिंग ट्रस्टी हैं तथा एक नया कार्यक्रम सम्पादित करा रहे हैं जिसमें कोठीवाल परिवार ५ लाख रुपये से एक **सार्वजनिक अतिथशाला**—बनवायेंगे जिसमें जिला अस्पताल के अन्त: रोगियों के तीमारदार पारिवारिक जन ही निशुल्क: ठहर सकेंगे। ऐसा संस्थान भारत में अपने ढंग का सर्वप्रथम प्रयास होगा।

व्यवसाय—पारिवारिक गृह सम्पत्ति तथा लेन-देन के अतिरिक्त आपका एक कोल्ड स्टोरेज तथा एक मुरादाबाद सुगर वर्क्स भी है।

राजनैतिक—कई वर्षों तक सम्मिलित कांग्रेस की नगर शाखा के जनरल सैक्रेटरी रहे हैं।

अध्याय २०

वारहसेनी वैश्य

(०१) प्रागैतिहासिक स्रोत

प्रसिद्ध अन्धक-वृष्णि संघ जिसके महात्मा कृष्ण और अक्रूर प्रमुख नेता थे, वह मूलवंश है जिससे बारहसैनी जाति का उद्भव हुआ इनके कुछ मनीषी मानते हैं। यो तो वृष्णि शब्द अथर्व वेद (४-४६-७) में आता है। वैदिक साहित्य में १०० वृष्णियों, ब्रह्मा-द्वारा वृष्णिवंश का परिवर्द्धन, वृष्णि वैश्यों द्वारा पर्वतादि प्रदेशों से सोमवल्ली आदि पदार्थ, शकट, रथ पोत, उष्ट्र, अश्व आदि पर लादकर लाना तथा ग्राहक यूथों से धन का बढ़ाना लिखा है। इन वेदमन्त्रों के दूसरे भी अर्थ हो सकते हैं, किन्तु वृष्णि शब्द का प्रयोग निर्विवाद है। सामवेद की एक वार्ष्णेय शाखा भी है। वृष्णियों के अन्दर धार्मिक नेता, वीर सेनापति तथा बड़े-बड़े व्यापारी थे।

परन्तु विडम्बना यह है कि यह कुल समूह भारत में बाहर से आकर बसा था। क्योंकि पुराणों के अनुसार कुरुवंश के 'यदु' यादवों के आदि पुरुष थे और अन्धक-वृष्णि, कुकुर, भोज आदि कुल इसी वंश के अन्तर्गत थे। श्री काशीप्रसाद जयसवाल सात्वतों और यादवों को एक ही मानते हैं। यादवों ने किसी पीछे वाले जत्थे के साथ भारत में प्रवेश किया। ऋग्वेद में यादवों और तुर्वशों के किसी दूरदेश से आने और पार्श्वसों (फारसवालों) से सम्बन्धित होने की ध्वनि निकलती है। प्रारम्भ में वशिष्ठ आदि ऋषि इन्द्र से उनके नाश की प्रार्थना करते पाये जाते हैं, किन्तु बाद में अङ्गिरस ने उनका सहानुभूति पूर्वक वर्णन किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय तक वे शेष आर्यों से घुलमिल गये थे।

पौराणिक साहित्य में तो यादवों को असुर के नाम से सम्बोधित किया गया है। महाभारत में भूरिश्रवा ने अर्जुन को कृष्ण का अनुयायी होने के कारण बहुत फटकारा है। वह यदुवंशियों को स्वभाव से कुकर्मी और व्रात्य कहता है। वे वीर थे और अपने ढोरों के साथ झुण्ड में भ्रमणशील जीवन व्यतीत किया करते थे तथा वैदिक आर्यों से युद्ध किया करते थे। सामाजिक नियम कुछ ढीले थे। फुफेरी बहिन से और काली अनार्य कन्या से विवाह इनमें प्रचलित थे और इसी कारण पुरोहित वर्ग इनसे अप्रसन्न था। [पता नहीं बारह सेनी बन्धुओं को भारत का मूल निवासीन होना पसन्द है। —सम्पादक]

तो भी हम अन्धक-वृष्णि संघ की कुछ प्रवृत्तियां लिखते ही हैं

उनकी काउन्सिल में खूब वाद-विवाद हुआ करते थे। इनकी सभा में बभ्रु, उग्रसैन और कृष्ण निर्वाचित सभापति या प्रधान थे। सब प्रजातन्त्रीय नेता आपस में रिश्तेदार थे। काउंन्सिल में वृष्णियों का नेता आहुक था और दूसरे पक्ष का नेता अक्रूर था। इस अक्रूर को बारह सेनी अपना अग्रज मानते हैं।

वार्ष्णेय इतिहास

हरिवंश पुराण के ३४ वें अध्याय में आया है कि अक्रूर राजा की माता गान्दिनी तथा पिता श्वफल्क था। श्रीकृष्ण अक्रूर का पितृव्य था। गान्धिनी काशी के राजा की पुत्री थी। यह अक्रूर स्यमन्तक नामी अति सुन्दर मणि को धारण करता था।

काशिका में भी शिनी और वासुदेव तथा श्वाफल्क (—अक्रूर) और चैत्रक के नाम हैं; अन्धकवृष्णि संघ का शासनाधिकार दो राजाओं को प्राप्त था और दोनों अपने-अपने अलग 'वर्ग' निर्माण करते थे। अंधकों के नेता अक्रूर संयुक्त राजसभा के दो सभापतियों में से एक थे। और दूसरे के नेता श्री कृष्ण थे; अक्रूर के वर्ग और श्रीकृष्ण के वर्ग में बहुत विरोध हो जाता था और वे एक दूसरे की निन्दा भी करते थे।

प्रत्येक संघ के अंक और लक्षण हुआ करते थे। लक्षण का व्यवहार सिक्कों और पताकाओं पर हुआ करता था। जब कोई नया शासक अथवा शासकों का समूह निर्वाचित होता था, तब वह अपना कोई विशिष्ट अंक निर्धारित करता था और जब वह अधिकार-च्युत होता था तो उसका अंक परित्यक्त कर दिया जाता था।

धर्म और दर्शन

आर्य साहित्य में वृष्णियों को व्रात्य कहा गया है। श्री जयशंकर प्रसाद ने इन्हें बुद्धिवाद के आधार पर नये नये दर्शनों की स्थापना करने वाला बतलाया है। ये दुःखवाद की प्रतिष्ठा करने वाले उन तीर्थकरों के पूर्वगामी थे जिन्होंने संसार को दुःखमय माना है और दुःख निवृत्ति को ही पुरुषार्थ। वे आत्मवाद में आस्था न रखने वाले तथा बाह्य उपासना में चैत्य पूजक थे। दुःखवाद जिस मनन शैली का फल था, वह बुद्धि या विवेक के आधार पर तर्क के आश्रय में बढ़ती रही। जहाँ आर्य व्रात्यों में बुद्धिवाद और दुःखवाद का प्रचार हो रहा था, वैदिक धारा के अनुयायी आर्यों में आनन्द का सिद्धांत भी प्रचारित हो रहा था। वे बुद्धिवाद को अविद्या कहते थे और अद्वैत तथा आनन्द की उपासना करते थे। दोनों धाराओं का द्वन्द्व कृष्ण और इन्द्र के संघर्ष गोवर्द्धन धारण में निरूपित है। कृष्ण की विजय पौराणिक हिन्दू संस्कृति की समन्वयात्मक दृष्टि की पूर्ण विजय है। वैदिक धारा में वरुण विवेक के प्रतिनिधि हैं और इन्द्र आनन्द वादी धारा के।

(०२) व्यवसायात्मक

वैदिक काल से लेकर राजपूत काल तक समाज विभिन्न रूपों में संगठित होता रहा। इन्हें गण, समूह संघ कहते थे। ये संगठन राजनीतिक, गोत्रात्मक और व्यावसायिक सभी प्रकार के थे।

किन्तु एक संगठन शुद्ध आर्थिक आधार पर खडा हुआ था जिसे श्रेणी के नाम से पुकारा गया है। इस संगठन को राज्य की स्वीकृति प्राप्त थी।

फलस्वरुप इसके मुखियों को राज्य में सम्मान दिया जाता था और इनके निश्चयों का आदर किया जाता था।

एक शिल्प-जीवी लोगों की एक श्रेणी बन जाती थी। जैसा कि काशिका २१/१/५६ में कहा गया है। किसी-किसी श्रेणी में एक-एक हजार तक शिल्पी होते थे। प्रत्येक श्रेणी का एक प्रधान या मुखिया चुना जाता था जिसे प्रमुख या ज्येष्ठक कहते थे। कभी-कभी एक ज्येष्ठक के बाद उसका बेटा भी ज्येष्ठक होता था।

शिल्प का समस्त संचालन और नियन्त्रण श्रेणी के हाथ में रहता था। कच्चे माल की खरीद, तैयार की बिक्री, उपज का और श्रम के समय का नियन्त्रण, मिलावट को रोकना, बाहर के शिल्पों के मुकाबले से बचने के लिये व्यापार की रोक-थाम, शिल्प सीखने वालों की शिक्षा के नियम, अन्तेवासिकों और भृतिकों की 'भृति' नियत करना आदि सभी अधिकार श्रेणियों के हाथ में रहते थे।

इन श्रेणियों की एक छोटी प्रबन्ध समिति होती थी जिसमें कई सभासद होते थे। वे समस्त कार्य सम्पादन करते थे और भिन्न-भिन्न विद्याओं में निपुण होते थे। उनमें से कोई-कोई गान, कथा, धर्म-प्रसंग, वस्त्र बुनने, ज्योतिष, समर, धर्म, शील आदि विषयों में दक्ष होते थे। ये संस्थायें अपने नियम से बंधी रहती थी। स्मृतियों ने इनके नियमों को 'समय' का नाम दिया है। 'समय' का उल्लंघन करने वाला सभा से निकाल दिया जाता था। यदि उनके द्वारा श्रेणी की कुछ हानि होती थी, तो हानि का ग्यारह गुना दण्ड उसे देना पड़ता था।

इनकी बड़ी समिति या समूह (House of Assembly) के भी निर्धारित नियम थे। उपस्थिति के नियम निश्चित थे। ढ़ोल बजाकर उपस्थिति की सूचना दी जाती थी। बोलने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी और यदि कोई प्रमुख इस स्वतन्त्रता में बाधा डालता तो उसे 'पूर्व साहस दण्ड' दिया जाता था।

किन्तु इन श्रेणियों को राज्य में बडा मान प्राप्त था। रामायण में जहां रामचन्द्र को युवराज बनने के लिये राजा दशरथ की सभा का चित्र खींचा गया है, उसमें श्रेणियों के मुखियों और निगमों के श्रेष्ठियों को ऊंचा स्थान दिया गया। महाभारत में गन्धर्वों से हारने पर दुर्योधन कहता है। कि मैं श्रेणी-मुख्यों को कैसे मुंह दिखाऊंगा। गौतम ने धर्म सूत्र 10/49 में लिखा है कि कृषक, व्यवसायी गोपालक, महाजन और शिल्पियों को अपने-अपने समुदाय के लिए विधान बनाने का अधिकार है और उन लोगों की बात सुन लेने के बाद ही राजा अपना निर्णय देगा।

बौद्ध काल में ग्रामों, श्रेणियों आदि के लोग जमा होकर 'ठहराव' करते थे और राजा को सलाह देते थे। न्यायालयों में श्रेणियों का इतना महत्व था कि उनके मुकदमों को फैसल करने के लिये एक पृथक 'व्यावहारिक' होता था।

अपने कोष और सार्थवाहों (काफिलों) के संरक्षण के लिये इन्हें सेना भी रखनी पडती थी। इसी 'श्रेणीबल' का राज्य भी उपयोग करता था। [कोटिल्य 2/33]

राज्य के आहत और प्रमाणित होकर ये श्रेणियां जनता की भी विश्वास पात्र बन गई और आज के जमाने में जो साख बैंकों की है, वह इन श्रेणियों को प्राप्त हुई। श्रेणियां अपने सिक्के (Currency) चलाती थी, इसके अतिरिक्त ये ट्रस्टों (Trust) का भी कार्य करती थीं।

याज्ञवल्क्य स्मृति से ज्ञात होता है कि इनके ब्याज की दर १५ प्रतिशत थी। व्यापार के लिये भी ये संस्थाये रुपया उधार देती थीं और इनकी हुण्डियों (cheque) की दूर-दूर तक मान्यता थी।

श्रेणियों की संख्या देश काल के अनुसार बदलती रही। 'मुग पक्ख जातिक' में लिखा है कि अपने सम्पूर्ण राज्य वैभव के साथ यात्रा करते राजा ने चारों जातियों, अठारहों श्रेणियों एवं अपनी सम्पूर्ण सेना को बुलाया। इससे यह तो ध्वनित होता है कि उस समय मोटे तौर पर १८ श्रेणियाँ मानी जाती थीं। प्रो० मजूमदार ने तत्कालीन साहित्य अभिलेखों से संग्रहीत करके २७ श्रेणियों की लिस्ट प्रस्तुत की है जो इस प्रकार है:—

१. लकड़ी का काम करने वाले (बढ़ई; अलमारी, पहिए, मकान, जहाज और गाड़ी बनाने वाले) २. धातु का काम करने वाले (स्वर्णकार रजतकार) ३. पत्थर का काम करने वाले ४. चमड़े का काम करने वाले ५. ओदयान्त्रिक (पानी का इंजन बनाने वाले) ६. हाथी दाँत का काम करने वाले ७. बाँसकार (बाँस का काम करने वाले) ८. कांसकार (काँस का काम करने वाले) ९. जौहरी १०. जुलाहे ११. कुम्हार १२. तिल पिशक (तेली) १३. डलिया बनाने वाले १४. रंगरेज १५. चित्रकार १६. धान्निक (धान्य का व्यापार करने वाले) १७. कृषक १८. मछुए १९. कसाई २० नाई २१. माली २२. पोतवाहक २३. पशु पालक २४. सार्थवाह (काफिले वाले) २५. डाकू और लुटेरे २६. बन रक्षक (सार्थवाहों की पुलिस) २७. महाजन इत्यादि।

इन श्रेणियों की बसावट उनकी दूसरी विशेषता है। गली, मुहल्ले यहाँ तक कि पूरे गाँव में एक ही प्रकार के शिल्पियों के रहने का उल्लेख पाया जाता है। इस प्रकार की बस्तियों का दन्तकार वीथी, रजकवीथी, ओदनिक, घर, वीथियम आदि नामों से उल्लेख हुआ है।

नवीं शताब्दी में इब्नखुररदाद बा नामक अरब यात्री सात जातियों का उल्लेख करता है, यथा क्षत्रिय, ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य, चांडाल,

और लाहड़ । श्री चिन्तामणि बिनायक वैद्य का मत है कि दसवीं शताब्दी के पश्चात् वैश्य समुदाय अपने निवास स्थान के नाम पर जातियों के रूप में परिणत होने लगा था किन्तु मुस्लिम काल के प्रारम्भ तक आज कल वैश्य कही जाने वाली किसी जाति का निर्माण नहीं हुआ था।

समाज ने अपना वर्तमान रूप मुगल काल में ही धारण किया किन्तु उनका मूल इतिहास पुरातन संघों, गणों, और श्रेणियों में ढूंढा जा सकता है। अग्रवाल जाति की उत्पत्ति का वास्तविक स्रोत भी काशीप्रसाद जायसवाल के मतानुसार अग्रश्रेणी है। इसका ग्रीक रूप Agesinae पाया जाता है। अग्रश्रेणी ही से अग्रसेन शब्द की उत्पत्ति हुई और फिर उसे ऐतिहासिक व्यक्तित्व प्राप्त हो गया है।

इसी प्रकार 'श्रेणी' नाम का स्वतन्त्र गण राज्य भी था जिसका उल्लेख जायसवाल जी अपने हिन्दूराज्य तन्त्र में करते हैं। स्पष्टत: आधुनिक सेनी' जाति के लोग इसी श्रेणी से उद्भूत हैं।

एक और उपजाति 'चौसेनी' नाम से विख्यात है उसका संस्कृत रूप 'चतुश्रेणी लिखा जाता है। 'श्रेणीबल' बढाने के लिये और व्यापारिक सुविधा के लिये चार प्रकार की श्रेणियां संयुक्त हो गई हों और कालान्तर में उन्होंने "चौसेनी', नाम की उप जाति का रूप ग्रहण कर लिया हो । सो और व्यापारियों के संगठन 'श्रेणी' कहलाते थे 'बारहसैनी' जाति भी ऐसी ही १२ श्रेणियों का समूह है। १२ की संख्या हमारे साहित्य में बहुत प्रचलित रही है। बारहसैनियों का सब से पुराना संस्कृत नाम 'द्वादशश्रेणी' ही मिलता है। कविवर मुरलीधर ने भी इसी शब्द का प्रयोग किया है। बारहसैनियों का सबसे प्रचलित नाम 'द्वादशश्रेणी' ही मिलता है। बाहरसैनियों में गोत्र की अप्रधानता और पारस्परिक सगोत्रीय विवाह सम्बन्ध भी इसी कारण से होते है कि वे मूलत: १२ सामाजिक समूहों से मिल कर बने हैं।

(०३) बारह सैनो और वार्ष्णेय का समन्वय

'वार्ष्णेय शब्द को 'बारहसैनी' का शुद्ध रूप कुछ लोग कहते हैं और वृष्णि को जाति का आदि पुरुष। बारहसैनी समाज में अक्रूर को पूर्व पुरुष मानकर उनकी पूजा प्रचलित है। वैदिक काल से यह परम्परा चली आती थी कि प्राचीन पुरखों को 'पूज्यदेवता' का स्थान मिल जाता था। इस प्रकार वृष्णिगण ही समयान्तर से वृष्णि-श्रेणियों में से एक हो गई किन्तु वार्ष्णेय शब्द का अपभ्रंश 'बारहसैनी' नहीं है। श्रेणियों के जाति रूप में परिवर्तित होने का समय वही है जो अपभ्रंश भाषाओं के प्राधान्य का है अर्थात् विक्रम की प्रथम सहस्राब्दी का अन्तिम शतक। द्वादश शब्द के बारह तथा श्रेणी का 'सेनी' में बदलना सर्वथा भाषा शास्त्र के नियमों के अनुकूल है। जाति उपजतियों के वर्तमान रूप में आने का समय भी यही अपभ्रंश काल है।

(०४) वंशावलियों पर एक दृष्टि

"बारहसैनी" जाति की बहुत सी वंशावलियाँ प्रकाशित हुई है।
(अ) प्रचलित वंशावलियों में सोरों निवासी कविवर मुरलीधर चतुर्वेदी लिखित "बारहसैनी जाति वृक्ष" प्रकाशित हो चुका हैं। कविवर मुरलीधर गोस्वामी तुलसीदास की पत्नी रत्नावली के चरित के प्रसिद्ध लेखक हैं। आपने सं० १६६७ वि० (१७४० ई०) में इस जाति वृक्ष की रचना की थी।

युधिष्ठर संवत ५६६ में मथुरा निवासी श्रीपति नामक कश्यप गोत्री वैश्य ने देखा कि उस के सजातीय संकर और यज्ञोपवीत विहीन 'व्रात्य' होते जा रहे हैं तो उसने कालिन्दी कूल पर एक यज्ञ किया और वत्स, गर्ग, कश्यप और वशिष्ठ गोत्री वैश्यों को बुलाकर प्रायश्चित कराया और फिर सब १२ वर्ष से अधिक आयु वाले सजातियों का मौज्जी बन्धन कराया और मण्डप में उन्हें एक श्रेणी में बिठा 'द्वादशश्रेणी' वैश्य संघ की नींव डाली।

इस प्रकार इस मर्यादा की स्थापना कर कि जो द्वादश वर्ष में यज्ञोपवीत ग्रहण न करें वे द्वादशश्रेणी न कहावें, कीतिमान श्रीपति सुरपुर सिधार गया एवं अपने पश्चात अपने दो सुकृति पुत्र भूति, और विभूति को छोड़ गया।

यह वंश वृक्ष बारहसैनी जाति के उन गोत्रों का उल्लेख करता है जो प्राय: जनसंख्या द्वारा सत्य प्रमाणित हो गये हैं।
(ब) गोस्वामी लक्ष्मणाचार्य अपनी पुस्तक 'ब्रज की झांकी' (गीताप्रेस) में अक्रूर घाट पर राजा व्राहसेनीय' (बारहसैनी) होना बतलाते हैं। इसी आधार पर अक्रूर के १३ भाईयों और उनके शिनि वंशज होने के नाते शैनीय कहलाने के कारण बारहसैनीय की उत्पत्ति बतलाई।

सारांश

बारहसैनी समाज में गोपीनाथ (अक्रूर मन्दिर) की पूजा प्रचलित है। इस प्रकार दो मान्यताओं के बीच इनका इतिहास घूम रहा है।

(०५) विशिष्ट पुरुष

1) पद्म श्री स्व० डा० धनीराम प्रेम
2) स्व० बाबू मिश्रीलाल एडवोकेट अलीगढ
2) स्व० प्रतपाल आर्य। अलीगढ।
4) प्रिन्सिपल आचार्य मुरारीलाल विष्णु पुरी। अलीगढ
5) श्री पुरुषोत्तम लाल M.L.C. अलीगढ़

(०६) बारह सेनी संस्थाओं का इतिहास

(०१) भारतवर्षीय श्री वैश्य वारहसेनी महासभा बहुत पुरानी संस्था है। इसके आधीन अलीगढ़, एटा, हाथरस, मथुरा, खैर, सिकन्दराराऊ, आगरा, प्रभृति नगरों में शाखा सभायें हैं। एक मासिक पत्रिका "वारहसेनी" नाम से अलीगढ़ से निकलती है जिसके सम्पादक

श्री महीपाल निर्मल [रामघाट रोड] तथा प्रकाशक श्री पन्नालाल वार्ष्णेय (नं० 5115 सराय हकीम) अलीगढ़ हैं। संस्था के अन्तर्गत विशाल वारहसेनी स्नातकोत्तर कौलेज अलीगढ़ में है। इसके अतिरिक्त वहीं तथा हाथरस और एटा में एक एक इन्टर कोलेज है। चौधरी चरण सिंह के मुख्य मंत्रित्व काल में उत्तर प्रदेश सरकार ने आज्ञा प्रसारित की थी कि जातीय नाम वाली शैक्षणिक संस्थाओं को सरकारी ग्रान्ट बन्द कर दी जावेगी। तब इन्होंने संस्थाओं का नाम वार्ष्णेय शब्द पर रक्खा यह कह कर कि श्री वार्ष्णेय हमारे आदि पुरुष और भगवान थे। इस विशाल संस्था को लेकर इनके प्रबुद्ध व्यक्तियों में दो दल हो गये। उक्त महासभा की किन्हीं कारणों से रजिस्ट्री न हो पाई थी। अतः दूसरे धड़े ने तुरन्त 1980 चुनाव के बाद समानान्तर संस्था रजिस्ट्री करा ली। और चूंकि महासभा ही उपरोक्त कोलेजों की स्वामिनी तथा प्रबन्ध कारिणी है, अतः विवाद हाईकोर्ट में विचाराधीन है।

अतएव हम उनके विषय में साधिकार लिखने से मजबूर हैं। फिर प्रार्थना करने पर भी उन्होंने अपना अपना विवरण नहीं भेजा है।

सन् 1983 में विवाद पूर्ण पदाधिकारी यों थे।

अध्यक्ष—सेठ गुलजारी लाल कागज वाले। सेट गली। आगरा

महामन्त्री—महेशचन्द्र वार्ष्णेय ऐम० ए०।

मानिक चौक अलीगढ़

मैनेजर वार्ष्णेय कोलेज—श्री नवरत्न प्रकाश ऐडवोकेट।

मानिक चौक अलीगढ़।

पत्रिका जनतायुग अलीगढ़ के 26–12–83 अंक में छपे अनुसार अध्यक्ष हैं श्री पुखराज चन्द्र सर्राफ तथा महामन्त्री हैं श्री राघवेन्द्र गुप्त ऐडवोकेट।

०२) प्रतीत होता है कि धड़ेवाजी से विपन्न होकर वरिष्ठ जाति बन्धुओं ने वारहसेनी सेवक–समाज नाम से निर्माणात्मक व्यवस्था–रत एक संस्था संगठित की है। और "वारह सेनी सन्देश" नामक मासिक पत्रिका भी प्रकाशित की है। इसके सम्पादक श्री जगदीश प्रसाद वार्ष्णेय तथा प्रकाशक है श्री डा० पन्नालाल वार्ष्णेय [मानिक चौक] अलीगढ़।

—०—०—०—

अध्याय २१

तन्तुवाय वैश्य

(०१) विस्तार

तन्तुवायु वैश्यों की संख्या इस देश में लगभग एक करोड़ है। ये आसाम, बंगाल में ताँती, विहार में तांती, पटवा, कोष्टी, यू. पी. में कोरी, कोली, पटवा, तन्तुवाय वैश्य, मध्यप्रदेश में कोष्टा, कोष्टी, गुजरात में खत्री, सौराष्ट्र में खत्री, महाराष्ट्र में कोष्ठा, पटवेगर, मद्रास में शालि, सौराष्ट्र, में कैकोलकर, पतलूनकर, देवांग आदि नामों से पुकारे जाते हैं।

(०२) पेशा परक

इनका जातीय पेशा वस्त्र बुनना और बेचना है। इनका व्यवसाय वैदिक काल से सम्मानीय रहा है क्योंकि जो जातियां कम कपड़े का व्यवहार करती या नंगी रहती हैं वे असभ्य समझी जाती रही हैं। वेदों में बुनाई के सम्बन्ध में अनेक अनुच्छेद हैं और बुनाई की उपमा अध्यात्म की शिक्षा तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये व्यवहार में लाई गई है। उदाहरण देना समीचीन होगा :—

वितन्वतेधियो अस्मै अपांसि वस्त्राणि पुत्राय मातरोवयन्ति।
ऋग्वेद। 5/17/6

[मातायें अपने पुत्र के लिये वस्त्र बुनें। तथा सब बच्चे कपड़े के तन्तुओं की भाँति आपस में सटे हुये प्रेम-प्रीति से रहें।]

सीसेन तंत्रं मनसा मनीषिणाः ऊर्णा सूत्रेण कवयो वयन्ति।
[यजुर्वेद 19/80]

[विचारी विचार कर, सज्जन ऊनी सूत से कपड़ा बुनते हैं।]
इस मंत्र का दृष्टा ऋषि गृहत्मद दी आदि तन्तुवाय है।

आकृन्तन्त वयन या अतन्वत याश्चदेवीस्तन्तू नामितो ततन्थ। तास्त्वादेवीर्जरसे यस्वा युष्मतीदं परिधत्स्व वासः। [अथर्व 1/1/6]

(इस वस्त्र को सूत कातने और कपड़ा बुनने की कला में प्रवीण देवियों ने तुरी (जिस पर कपड़ा लपेटा जाता है) तथा वेम आदि साधनों द्वारा तैयार किया है। यह उन्होंने काता तथा उन्हों ने बुना है।)

अथर्व वेद 6/9/2 नाहं तन्तुन विजानाभ्योतुं·········पित्रा) में ऋचाकार कहलवाता है कि मैं तो कपड़ा बुनना भी नहीं जानता, अब जीविकार्जन कैसे करूं। अतः स्पष्ट है कि कपड़ा बुनना कोई अश्लाघ्य कार्य नहीं था।

(०३) बुनकर का वैश्य वर्णस्थ होना

(i) याज्ञ वल्क्य स्मृति -- 119 में वैश्य के कर्म गिनाये गये हैं :— कुसीद कृषि वाणिक्य पशुपाल्यं विथः स्मृतम्॥

यहाँ कुसीद शब्द बुनकरों का द्योतक है और यह वैश्यों के कर्मों में गिनाया है।

(ii) देवल स्मृति में वर्णों के कर्म निम्न प्रकार गिनाये हैं :—
शूद्रधर्मी द्विजाति शुश्रूषा पापवर्जनं,
कलत्रादिपोषणं कर्षण पशुपालन भारोद्वहन,
पण्यव्यवहार चित्रकर्म नृत्यगीत वेणु वीणामृर-
नमृदङ्गावादनापिनि॥
यहाँ कर्षण कार्य वैश्य का बताया है।

(iii) जाति अन्वेषण नामक प्रसिद्ध पुस्तक में पं० छोटेलाल शर्मा मत प्रगट करते हैं कि तन्तुवाय जाति वैश्य हैं किन्तु वंशानुक्रम से कुछ शाखा ब्राह्मण व क्षत्रिय भी हैं।

(iv) श्री आर० सी० दत्त ने अपनी पुस्तक प्राचीन भारत की सभ्यता के इतिहास में पृष्ठ 750 पर लिखा है कि :--

"वैदिक युग के आर्य संयुक्त थे और (Epic) ऐतिहासिक काव्य काल में वे धर्माध्यक्ष, राजा में बंट गये और शेष लोग वैश्य व शूद्र कहाये।" आगे पुस्तक के दूसरे भाग में बात आगे बढ़ाते हुये कहते हैं कि दर्शन शास्त्रों के काल तक वैश्य भिन्न २ जातियों में नहीं बंटे थे। वे लोग लेखक, वैद्य, सोनार, लोहार, और तांती का काम करते थे।" तीसरे भाग में वे कहते हैं कि मनु के समय तक व्यापार या शिल्प में रत इन वैश्यों को यज्ञोपवीत का अधिकार प्राप्त ा।

(v) भारत सरकार की हैन्डलूम एवं मिल पर अनुसन्धान समिति की 1942 रिपोर्ट में पृष्ठ 64 पर यों आया है।

The Social status of the weavers has never been low, and they are included among the VAISYAS, the third of the four main caste divisions in India and many of them will wear the sacred thread, which is the mark of Twice born.

(vi) मध्य प्रदेश में मन्दसौर में प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर की निर्माता तन्तुवाय वैश्यों को प्राचीन संघ (GUILD) थी। यह 5वीं शताब्दी में बना था और इस पर के शिलालेख में निर्माण कर्त्ता संघ का उल्लेख है। इससे भी इनके सम्मानीय स्थान का बोध होता है।

(०४) भेद व गोत्रादि

बंगाल में इन्हें नव शासा के अन्तर्गत गिना जाता है। पाराशर स्मृति के अनुसार इन 9 जातियों के हाथ का पानी पी लेना चाहिये :— ग्वाला, माली, तेली, तन्तुवाय, हलवाई, वरई, कुम्हार, लोहार और नाई। वहाँ इनके निम्न भेद हैं :--

(i) अश्विना या आसिन तांती [वर्द्धमानी, वर्णकुल, मध्यकुल, मान्दारण और उत्तर कुल], (ii) वलरामी (iii) वंग (iv) बड़ाभगिया (झांपनिया तांती), (v) कातुर (vi) कोरा (vii) क्षीर, (viii) मधुकरी (ix) नड़ियाली (x) नीर (xi) पात्र (xii) पुरन्दर्त (xiii) पूर्वकुल (xiv) राढ़ी और (xv) उढ़वी।

वे अपने नामों के आगे बराथ, वसाक, भउ, मुद्र, बां, बिट, चन्द, दुगरी, दलाल, दास, दत्त, दे गुई, प्रामाणिक, हंसी, पाचनदार, कर, लु, मण्डल, मेघ, मुखिम, नन्दी, पाल, साधु, सवरि, रक्षित और शील

उपनाम जोड़ते हैं। वे अपने गोत्र भी अगस्त्य, अलदासी, अलन्यान, अत्रि ऋषि, बड़ ऋषि, वात्स्य, भरद्वाज, विश्वामित्र, ब्रह्मा, पाराशर, शाण्डिल्य, ज्ञापण और व्यास बताते हैं। वहां कटवा के राजा तन्तुवायु वैश्य जाति के थे।

बिहार में—पटवा–ततवा श्रेणी में विभक्त हैं। वहाँ कनौजिया तथा तिरहुतिया दो अल्ले हैं।

उत्तर प्रदेश—कोरी तथा पटवा नाम से जाने जाते हैं।

अल्लों का नाम शाक्यवाद, अहरवार, माहौर, वनौधिया इत्यादि हैं।

दक्षिण भारत—शालि, देवांग, फैकोलट, कोष्ठी, खत्री, पटनेगर, टगौरा, कुरुहिना, सेटी, गौड़, वलाही, पंका, सिडन, सोनियन, चेटूकर।

उड़ीसा में—रंगनी, हंसी, पत्रा।

(०५) **ह्रास का कारण**— ढ़ाका व चिटगाँव के बुनकर प्रसिद्ध थे। शेष भारत में वस्त्र की सप्लाई वे ही करते थे। मुस्लिम शासन काल में मोमिन जाति के जुलाहों को राज्य संरक्षण मिला और इनके धंधे छिनते गये। अंग्रेजी समय में ईस्ट इन्डिया कमेटी मैनचैस्टर और लंकाशायर से मिल का कपड़ा लाई। भारतीय बुनकरों की ऊंगलियां तक कटवायी गयीं। प्रति स्पर्द्धा में गृह-उद्योग नहीं टिका और वे महागरीब हो गये। गरीबी ही सामाजिक गिरावट और विद्या वंचता का कारण है। कुछ अन्य जातियों ने भी इनका धन्धा अपना लिया और यह पिछड़ गये।

(०५) क्र०सं० पत्रिका का नाम	प्रकाशक का नाम पता	सम्पादक
(१) हमारी आवाज	श्री रामवतार शाह। प्रधान मंत्री पश्चिम वर्गीय तन्तुवाय वैश्य सभा नं० ३४६ अपर चितपुर रोड। कलकत्ता—६	श्री जगदीश प्रसाद जी बी० ए० (आनर्स)
((२) तन्तुवाय ज्योति	श्री मोतीदास जी कन्नोजिया प्रवन्धक तन्तुवाय ज्योति। कदम कुंआ। पटना।	श्री घनश्यामदास जी
(३) समाजोत्थान	श्री प्यारेलाल जी गुप्ता। मंत्री तन्तुवाय वैश्य सभा समाजोत्थान कार्यालय नं० १३।३६७ परमट। कानपुर।	श्री प्यारेलाल जी गुप्ता
(४) तन्तुवाय जागृति	श्री रोशनलाल जी बी०ए० २, दरियागंज, अन्सारी रोड। दिल्ली।	श्री गोपाल दास जी प्रभाकर
(५) रचना	श्री तुलसी प्रसाद जी। रचना कार्यालय, हाथरस।	श्री बाबूराम जी गुप्त बी० ए०
(६) तन्तुवाय	श्री के०पी० वसन्तराम जी। मंत्री तन्तुवाय वैश्य सभा। नं० ३१ ब्राइट स्ट्रीट। पार्क सर्कस। कलकत्ता।	श्री दीप मिठौलिया बी० ए० विशारद

उपरोक्त पत्रिकाओं का प्रकाशन लेखादि सामग्री के अभाव में तथा कुछ आर्थिक कठिनाईयों के कारण नहीं हो पा रहा है। इस समय प्रायः सभी पत्रिकाएं बन्द सी हैं।

[०७] तन्तुवाय का वैदिक साहित्य में सम्मान

ऋग्वेद 10-5-7-2 में कहा गया है कि जो "तन्तु-यज्ञोपवीत" तन्तु–यज्ञों का प्रसाधक है और विद्वानों में आहत है उसको हम धारण करें। आर्य समुदाय को वेदाध्ययन आवश्यक था। वेदाध्ययन हेतु, उपनयन, यज्ञोपवीत और व्रत बन्ध आवश्यक था। यज्ञोपवीत वर्णाअनुसार मूंज, कपास या रेशम का होता था। रेशम और कपास की तन्तु का रूप देने हेतु तन्तुवाय की आवश्यकता थी। तभी तन्तुवाय समूह आवश्यकता अनुसार बना। काल क्रम में जब अंग्रेजी शासन को समाप्त करने हेतु उनके द्वारा भारतीयों से छीना तन्तु व्यवसाय वापिस लाना आवश्यक समझा गया तो वैश्य-जन गांधी ने तकली, चर्खा और कर्घा को पुनः आवश्यक करके इसे जन-जन का पेशा बनवाया। तन्तुवाय देश का धनोत्पादक वैश्य वर्ग होने से श्रद्धा और करुणा दोनों का पात्र है।

इसी प्रकार विवाह प्रकरण में साम मन्त्र ब्राह्मण का मंत्र 1/1/1/5 विनियोजित है। इस मन्त्र को पढ़ के वर वधू को उपवस्त्र देती है :—

या अकृन्तन्नवयन् या अतन्वत,
याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ।
तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वा युष्मतीदं
परिधत्स्व वासः।

[हे कन्ये 'तू मेरे साथ बुढ़ापे तक सङ्गिनी हो' इस महावस्त्र को पहिन। और कान्तिवान व आर्कषक हो। जिन देवियो ने इस वस्त्र को काता व बुना है उन देवियों को धन्यवाद व आदर दे।

शिरोमणि संगठन

(०१) यह ज्ञात होने पर कि इनकी आबादी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेश, गुजरात, मद्रास और महाराष्ट्र प्रभृति में हैं और यत्र-तत्र नगर एवं प्रादेशिक इकाइयाँ संगठित हुई हैं, इन्होंने एक अखिल भारतीय संगठन की स्थापना सितम्बर 44 में अजमेर में की और उनकी एक प्रतिनिधि बैठक दिल्ली में 1945 में कर डाली। यहीं इतिहास अनुसन्धान समिति बनी। सन् 1946 में प्रथम वार्षिकधिवेशन सिकन्दरा राऊ ज़ि० अलीगढ़ में पटना निवासी श्री यमुना प्रसाद कनौजिया बी. ए. के सभापतित्व में हुआ। यहां विद्या प्रचार और समाज सुधार के प्रस्ताव पास किये गये

पदाधिकारी – यमुना लाल कनौजिया
प्रधानामंत्री — चन्दू लाल बद्रेरिया दिल्ली

सन 46 में ही भागलपुर में विशाल मीटिंग होकर पटवा तथा ततवा को एक किया गया और उन्हें तन्तुवाय वितान में लाया गया।

[०२] संस्था की प्रमुख उपलब्धियां :-

१- भवन—२ जनवरी १९४७ को तीर्थराज "पुष्कर" में निर्जन खण्डहर रूपी घाट खरीदा गया। इसी स्थल पर पूर्ण चारदिवारी, ७ कमरे, दो स्नानगृह, दो शौचालय (फलश सिस्टम), बनाये गये। पुष्कार घाट पर सीढ़ियां भी बनवाई जा चुकी हैं, जो तीर्थ यात्रियों के स्नानार्थ उपयोग में आती हैं। अनुमानत: भूमि एवं भवन का मूल्य लगभग २० लाख रुपये आंका गया है।

२-विद्यालय—परम पूज्यनीय स्व० श्री मूलादास जी गुप्ता, अजमेर जो कि उपरोक्त संस्था के उपसभापति थे, उन्होंने अपने निजी भवन में एक कन्या पाठशाला स्थापित की। शनैः शनैः यह पाठशाला उन्नति, के शिखर पर पहुंच गई है, जो कि "सरस्वती बालिका महाविद्यालय" डिग्री कालेज के नाम से विख्यात है। यादगार के रूप में संस्थापक श्री मूलादास जी गुप्ता की फोटो विद्यालय के सभा कक्ष में रक्खी है।

[०३] संस्था से संबंधित स्वर्गीय विभूतियों के नाम

१- स्वर्गीय श्री मूलादास जी गुप्ता अजमेर

२- डा० विश्वनाथ प्रसाद जी ज्ञानी एम० एस० सी, पी० एच० डी०, प्रोफेसर साइंस कालेज पटना।

३- प्रिन्सिपल श्री बनवारी लाल जी गुप्त-भागलपुर।

४-श्री लाल जी लाल मुंगेर।

५- श्री के० पी० बसंतराम। कलकत्ता।

६- श्री भवानी प्रसाद जी एम० ए०, एल०एल०बी०। गवर्मेन्ट प्लीडर एण्ड पब्लिक प्रोजीक्यूटर। इन्दौर।

अध्याय-२२

पुरुवार वैश्य

०१) इस नाम का वैश्य उपवर्ग उत्तर-प्रदेश के इटावा, जालौन एवं आगरा तथा मध्यप्रदेश के जबलपुर जिलों में आबाद है। यह अपने इतिहास को प्राचीन वैदिक काल तक ले जाते हैं।

सामवेद की यों सहस्त्र शाखायें कही जाती हैं [सहसुवर्त्मा सामवेद :—पतञ्जलि] परन्तु इसकी गायन पद्धतियां दो ही हैं।

(i) प्राच्य=जिसके प्रस्तोता कोशल देशीय राजपुत्र हिरण्यनाभ थे।

(ii) औदीच्य=जिसके प्रस्तोता अवन्ति के निवासी पौष्यञ्जि।

यह दोनों सुकर्मा के शिष्य थे, जो वेदव्यास के पुत्र जैमिनि के पौत्र थे।

इस हिरण्यनाभ का एक पुरुवार वंशीय सन्नीतमान का पुत्र कृत नामक शिष्य था।

इसने साम संहिता का 24 प्रकार से प्रवर्तन किया।

[मत्स्य $\left(\frac{49}{75—76}\right)$ हरिवंश $\left(\frac{20}{41—44}\right)$, विष्णू $\left(\frac{4}{19—50}\right)$

वायु (41/44), ब्रह्माण्ड $\left(\frac{35}{49—50}\right)$, एवं भागवत (12/1/50)

प्रभृति पुराणों में इस पुरुवार वंश का संकेत है। अतः प्रतीत होता है कि गान विद्या पारंगत यह वैश्य कुल बाद में व्यापारी बन गये

इनके कई प्रमुख व्यक्तियों से मैं मिला [यथा डा. प्रो. राजेन्द्र कुमार पुरुवार [मंगलम कुटीर, नन्दराम नगर] उरई, डा. शंकरलाल गुप्त BIMS [बूरा वाली गली—धुमना, फर्रुखाबाद], पर विशद इतिहास प्राप्त न हो सका।

०२) इनकी एक अखिल भारतीय पुरुवार वैश्य महासभा (रजिस्टर्ड) भी है। जिसके अध्यक्ष (1984-85 में) हैं श्री रामचरण शाह भूतपूर्व विधायक। सिंगाही (लखीमपुर खीरी) और महामंत्री हैं। श्री धर्म नारायण गुप्त M. A., B Com., LLB मोतीगंज, भरथना (इटावा उ. प्र.)। पुरुवार समाज नाम से एक मासिक पत्रिका भी निकलती है, जिसके सम्पादक हैं डा. कृष्ण गुप्त फीरोजाबाद (आगरा)।

०३) समान नाम का एक और उपवर्ग है—पोरवाल—पर वे अपने को पुरुवार से पृथक बताते हैं। प्रयत्न करने पर भी इतिहास इनके पदाधिकारियों ने उपलब्ध नहीं कराया। इटावा में इनकी एक रजिस्टर्ड संस्था है। इसके अध्यक्ष हैं श्री ज्योति शंकर पोरवाल, सर्राफ, इटावा और मंत्री हैं श्री प्रेम नारायण गुप्त। इसके 29 आजीवन सदस्य हैं।

अध्याय-२३

रौनियार वैश्य

०१) इनका भी जातीय इतिहास प्राप्त नहीं हो सका। पर इतना ज्ञात हुआ है कि बिहार सरकार ने इन्हें पिछड़ी जाति लिस्ट के एनेक्सर-२ में रखा है। पर यह अनेक्सर-१ में जाने में प्रयत्न रत हैं।

०२) इनकी पत्रिका का नाम="रौनियार वैश्य" है। सम्पादक—सुन्दरलाल महाशय। खगड़िया (बिहार)। प्रकाशन स्थान-रौनियार वैश्य भवन। राधा कृष्ण मंदिर। ब्रज किशोर पथ-पटना–1 है।

०३) शिरोमणि सभा–अखिल भारतीय रौनियार महासभा 1963 ई० से स्थापित है। क्रमवार विवरण ज्ञात नहीं हो सका।

कुछ वार्षिक अधिवेशन निम्न प्रकार हुये---

+अध्यक्ष हवलदारी राम गुप्त। डाल्टन गंज में।

+अध्यक्ष नकछेदीराम गुप्त। गढ़वा में।

+सोलहवां अधिवेशन। खगड़िया में। अध्यक्ष-भागीरथ प्रसाद पटना।

+अठाहरवां अधिवेशन। पटना में। प्रो० चन्द्रकेतु प्रसाद MA कंचनपुर। नैपाल इसके अध्यक्ष थे।

19 वां वार्षिकोत्सव गान्धी मैदान पटना में अप्रैल 82 में हुआ जिसमें निम्न मुख पदाधिकारी चुने गये।

अध्यक्ष=श्री रामनारायण साह भू० पू० विधायक। पोस्ट गंजभरसरा (रोहतास) बिहार।

उपाध्यक्ष=भरत प्रसाद गुप्त। गार्डन रीचरोड। शादीपुर। कलकत्ता।

(2) शिवप्रसाद रौनियर। कौनटी होटल। इन्द्र चौक। काठमन्डू। नैपाल।

महामंत्री=श्री मती तारा गुप्त MLA छज्जूबाग। पटना–1

मंत्री=लक्ष्मण प्रसाद गुप्त नं. 19/43 वरुण पुल। वाराणासी।

नोट-एक समानान्तर संगठन विश्व रौनियार वैश्य महासभा नाम से है। पर विशेष विवरण प्राप्त नहीं हुआ।

(०४) अन्य संस्थायें---

१) युवक रौनियार समाज वाराणासी। अध्यक्ष–रमेश लाल गुप्त

२) पटना जिला रौनियर सभा। अध्यक्ष–बुलाकी लाल साह (विजय टैक्स टाइल। महेश्वरी मार्केट, पटना–4

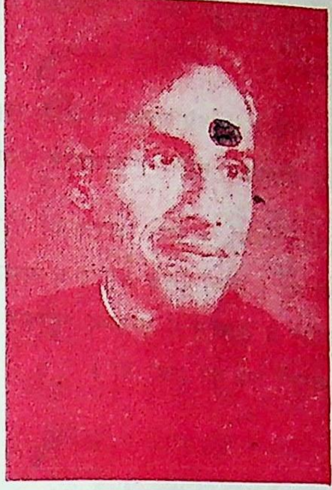
३) गया नगर शाखा। अध्यक्ष किशोरीलाल रौनियार मंत्री राजेन्द्र प्रसाद M. Com.

४) धनबाद शाखा। मंत्री श्री सुखदेव प्रसाद

५) हजारीबाग जिला शाखा। अध्यक्ष-बैजनाथ प्रसाद गुप्त

६) वैद्यनाथ धाम [अध्यक्ष—नरसिंह शाह सर्राफ। मंत्री डा. दुर्गाप्रसाद गुप्त]

हमारे सहयोगी (२९)



बाबू ओम प्रकाश गुप्त

सीनियर एडवोकेट

निवास : सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

कोठी नं० 341 पश्चिमी, कचहरी रोड मेरठ-1

श्री ओम प्रकाश जी का जन्म चार अगस्त १९२२ को ग्राम चितवाना शेरपुर जिला मेरठ में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री जयनारायण था जो कि चितवाना शेरपुर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक थे।

श्री ओम प्रकाश जी का बचपन चितवाना शेरपुर में ही बीता। हाई-स्कूल से लेकर एल. एल. बी. तक की उनकी शिक्षा-दीक्षा मेरठ में ही मेधावी छात्र के रूप में हुई।

तेईस वर्ष की आयु में आपका विवाह ग्राम दबथला के एक संभ्रान्त परिवार की कन्या श्रीमति शकुन्तला देवी के साथ अति सादगी से सम्पन्न हुआ। यह आपके परिवार का दहेज प्रथा के प्रति सुधार-वादी दृष्टि कोण का परिचायक है।

१९४६ में आपने मेरठ में चौधरी खड़गसिंह के साथ वकालत का कार्य प्रारम्भ किया। आप आजकल मेरठ के प्रतिष्ठित सिविल और रेवेन्यु के वकील हैं। तथा मित्र मंडल में आपकी राय अन्तिम मानी जाती है।

राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में आपकी प्रारम्भ से ही विशेष रुचि रही है। गरीबों की सेवा करने में, उनकी सहायता करने में आपको विशेष आनन्द की अनुभूति होती है। आप एक सिद्धान्त वादी व्यक्ति हैं। आपकी सामाजिक और राजनीतिक उपलब्धियां कुछ इस प्रकार से हैं—१९५७-५८ में आप भारत सेवक समाज के संयोजक रहे। १९६२ से ६६ तक आप मेरठ जिला सहकारी बैंक लिमिटेड मेरठ के प्रबन्धक संचालक तथा जिला सहकारी संघ के संचालक, तथा जिला परिषद के सदस्य रहे। अनेक अन्य सामाजिक संस्थाओं से भी निकट का सम्बन्ध रहा है। १९७८ से १९८० तक फिर मेरठ जिला सहकारी बैंक के संचालक के पद पर रहे। १९७८ से ८० तक अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल राजवंश सभा की कार्यकारिणी के सदस्य, १९८० से १९८२ तक उपाध्यक्ष तथा १९८२ से राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के १९८३ से मेरठ जिले के अध्यक्ष हैं। १९५२ से अब तक ग्रामोदय समिति के महामंत्री हैं। लाला जयनारायण मैमोरियल चिकित्सालय चितवाना शेरपुर के संस्थापक हैं। योग साधना समिति के पैटर्न सदस्य हैं। मेरठ कॉलिज मेरठ के आप आजीवन सदस्य हैं। आप मेरठ जिले के राजनीतिक क्षेत्र में एक स्तम्भ समझे जाते हैं।

आपका जीवन बहुत ही सादगी एवम् शालीनता से परिपूर्ण है।

आपके परिवार में आपकी आठ पुत्रियां और एक पुत्र हैं। आपकी पत्नी की असमय मृत्यु हो गयी थी, फिर भी आपने और आपके माता पिता ने बच्चों को मां की कमी महसूस नहीं होने दी। छः पुत्रियों के आप संभ्रान्त परिवारों में विवाह कर चुके हैं। आपके सभी दामाद उच्च पदों पर आसीन हैं। परिवार की ओर से आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हैं। आपके पुत्र श्री शिव प्रकाश जी भी आपके साथ ही वकालत का कार्य करते हैं। वे बहुत ही कम उम्र में बहुत प्रतिभावान हैं। वे भी इस वक्त बहुत सी सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं जिनमें अ. भा. युवा राजवंशीय अग्वाल सभा मुख्य है। अधुना अपनी इस संस्था के मुख पत्र वैश्य सम्मेलन के सम्पादक हैं।

७) रोहतास जिला शाखा-अध्यक्ष-निर्मल कुमार गुप्त एडवोकेट।

८) बक्सर—[अध्यक्ष गोपाल प्रसाद चीनी मिल वाले। मंत्री भोलानाथ प्रसाद। बिहार फार्मेसी।

९) सहरसा--मंत्री। हरिप्रसाद गुप्त।

१०) जमशेदपुर-अध्यक्ष प्रसाद शाह।

११) आरा, पटना, वाराणासी और वैद्यनाथ धाम के तीर्थ स्थलों में इनकी धर्मशालायें हैं।

(०५) प्रमुख व्यक्ति दिवंगत-(१) सम्राट हेम चन्द्र विक्रमादिय-राहुल सांक्त्यायन ने अपनी पुस्तक अकबर में उसे रौनियार वैश्य लिखा है।

(२) श्री हेमन लाल गुप्त एडवोकेट, आसन सोल गुप्त एडवोकेट।

(३) श्री स्व० जगन्नाथ प्रसाद आर्य छपरा।

जीवित--१) श्री कन्हैया जी भूतपूर्व जज पटना हाई कोर्ट।

२) श्री मोहन लाल गुप्त भूतपूर्व राज्य मंत्री बिहार।

३) श्री पारसनाथ गुप्त M. Com भूतपूर्व महामंत्री महासभा सीता शरण लेन। मीठापुर। पटना-१।

अध्याय २४

मद्धेशिया [मध्यद्धेशीय] वैश्य

भारत के मध्यदेश में बसे होने से मध्यदेशीय वैश्य कहलाते हैं। प्रार्थना करने पर भी जातीय इतिहास उपलब्ध नहीं हो सका। परन्तु इनकी अखिल भारतीय मध्यदेशीय वैश्य महासभा का क्वचित वर्णन उपलब्ध है। इसके मुख्य पदाधिकारी निम्न प्रकार हैं :—

अध्यक्ष—प्रो० रामाधार प्रसाद। देवरिया (उ०प्र०)
वरिष्ठ उपाध्यक्ष—श्री गणेश प्रसाद साहा। शक्ति प्रेस। रींवा (M.P.)

महामंत्री—श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्त, 56/122 औसान गंज, वाराणसी।

भूत पूर्व महामंत्री—श्री जगदीश प्रसाद ऐडवोकेट। सब्जी बाग। पटना-4

जातीय पत्रिका का नाम है "वैश्य सन्देश" और इसके सम्पादक हैं श्री लक्ष्मीनारायण श्री चौधराना टोला। दानापुर (पटना)

जून 84 में पदाधिकारियों ने सारे भारत का दौरा किया था, उनका वृतान्त हमें भेजा था। उससे इनके बसाव व संगठन का भान होता है। यह दौरा इन्दौर व उज्जैन से प्रारम्भ होकर गुजरात के बड़ौदा व अहमदाबाद नगरों तक का हुआ था।

अध्याय २५

तैलिक वैश्य

(०१) पीछे कहा जा चुका है कि वर्ण व्यवस्था स्थापित होते समय देश में उद्योगों का विशाल रूप से चलन नहीं हुआ था । अन्न व वस्त्र का वितरण मात्र वैश्य कर पाते थे और वैश्य जन अतएव व्यापार प्रमुख ही थे । स्मृति काल आते आते कृषि उपज से यन्त्रों द्वारा उपयोगी वस्तुयें बनाना आवश्यक हो गया और इन यन्त्रों के उद्योगों का कार्य भी वैश्यों को सौंपा गया । प्रतीत होता है कि बिहार, बंगाल, तामिलनाडू व महाराष्ट्र अर्थात देश के समुद्र तटीय अंचल के वैश्यों ने विदेशों से आयातित यन्त्रोत्पादित वस्तुओं के आयात को घटाने के लिये देश में ही उद्योग धन्धे प्रारम्भ किये थे । परन्तु देश का दुर्भाग्य है कि उद्योग धन्धों को स्मृतिकारों ने वह उच्च स्थान नहीं दिया जो शिक्षकों, राजकर्त्ताओं तथा व्यापारियों और महाजनों को प्राप्त था । परन्तु उन्हें चतुर्थ वर्ण में रखा जाना भी घोर अन्याय था । अत: उनके हाथ का पानी पीने की तो आज्ञा रही, पर उन्हें द्विजों का दर्जा नहीं दिया गया । यज्ञोपवीत तथा सोलह संस्कारों के कर्मकाण्ड से रहित वे व्रात्यवत हो गये । प्रजातन्त्र वाद और वोट बाहुल्य के बदलते युग में साम्यता के प्रचुर प्रवाह ने व्यापारी वैश्यों को बाध्य किया कि वे उद्योगरत अपने इन वर्ण बन्धुओं को साथ लें । स्वर्णकार बन्धु तो अयोध्यावासी आदि नाम रखकर वैश्य इकत्ता को कायम रक्खे । पर तैलिक, गन्धी, एवं तन्तुवाय, प्रभृति जन वैश्य शब्द से निरादर के युग में भी चिपटे रहे जो कि स्तुत्य है । अब वैश्य महासम्मेलन ने सिद्धान्त बना दिया है कि जो अपने को वैश्य कहे, वही वैश्य है ।

इसी प्रकार शराब के उद्योग में लगे बन्धुओं से जब अन्य वैश्यों ने दुराभाव रक्खा तो वे अपने को क्षत्रिय कहने लगे । वैश्य महा–सम्मेलन के इस क्रान्तिकारी पग से प्रभावित हो जायसवाल बन्धुओं ने भी हैहय क्षत्रिय छाता (UMBRELLA) से पृथक जंसवाल सभा बनाई है और वैश्य कहलाने में गौरव अनुभव करने लगे है ।

इन आन्दोलनों के फलस्वरूप ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, कायस्थ और भूमिहार के अतिरिक्त सब शेष हिन्दू जातियाँ वैश्य (UMBRELLA) में समाहृत होकर इस देश में लगभग 12 करोड़ होकर इस देश का वर्चस्व अपने हाथ में लेने की स्थिति में हो जावेंगी । पटना कारपोरेशन के चुनाव (1984) के समय बिहार राज्य वैश्य सभा ने यह परिभाषा अपना कर 28 में से 9 अपने द्वारा खड़े व्यक्ति पार्षद बनाने में सफलता प्राप्त की । यह इस अभियान का श्री गणेश है ।

(०२) इसी चिन्तन के अनुसार इस इतिहास में तैलिक वैश्यों को स्थान देना समीचीन है ।

All India Tailik Vaishya Mahasabha

C. Office : 173 South Avenue, New Delhi-11 (Ph. 372816)

OFFICE-BEARERS

PATRON : Sh. Krishanaiah Shetty (Prop. Bharath precision machine Tools Aids Accessories), 125 West of Chord Road, Rajaji Nagar, 2nd Stage, Bangalore–560010.

1. PRESIDENT : Shri Ram Lakhan Prasad Gupta Advocate, Ex-Member of Parliament (Rajya Sabha), Res. : Kaura Maidan, Mongher (Bihar) Phone : 2305.

2. WORKING PRESIDENTS :
   (i) Sh. Panna Lal Gupta Advocate (Snehi Samaj), 73, Vivekakanand Marg, Jana Seva Press, Allahabad, U. P. Phone : 54677
   (ii) Sh. S. K. Sahu M. P. (Lok Sabha). 173, South Avenue, New Delhi-11 Phone. 372861 [Res. 7-Satya nagar, Bhuwaneswar–7, Orissa Ph. 35912]
   (iii) Shri M. B. Patil, B. A., L L. B. Ex-MLA, Mahawir Talkies, Amraoti (Maharashtra) Phone : 3196; Nagpur. Phone : 24141

3. VICE-PRESIDENTS : (All the State Organisation Presidents.)
   (i) Bihar : Shri Jagdish Prasad (Peerless Insurance Co.), Salimpur Ahra, Patna.
   (ii) Delhi : Shri Mangumal Sahu, 437 Gali Mata Wali, Teliwara, Delhi-110006. Phones : Res. 517919; Shop 234273
   (iii) Kerala : Shri P. Ramaswamy (Municipal Councillor). Ponnaiah Bhawan, Poonalur. Phone : Res. 71, Shop : 41
   (iv) Maharashtra : Smt. Kesharbai Kshirsagar, M. P. (Lok Sabha), 51, South Avenue, New Delhi-110011, Phone : 373727. [Home Address : At. & P. O. Beed (Maha.) Ph. 265]
   (v) Rajashthan : Shri Bipin Prabhakar, A/26 Shastri Park, Near Kali Bhatta, Jaipur.
   (vi) Uttar Pradesh : Shri Kishori Lal Gupta M. A.. L L. B., Maya Bazar, Gorakhpur.

4. GENERAL SECRETARY : Shri V. G. Prakashe (Guruji); Bhaldarpura, Gangipeth Muhal, Nagpur 18 (Maha.) Phone : 42178

5. ADDITIONAL GEN. SECRETARY : Shri Shanta Ram Potdukhe, M. P. (Lok Sabha), 17. North Avenue. New Delhi-110001 Phone : 374745
Jal Nagar Ward, P. O. Chandrapur (Maha.) Phone : 2486

6. SECRETARIES : Gen. Secy. of Reception Committee of the last All India Conference of AITVM and Gen. Secretaries of State organisations.]
· Shri Ram Lal Saha, M. S. Road, Asansol (West Bengal)
   (i) Andhra Pradesh : Sh. C. M. Bhaskara Rao (Org. Secy.), (Oldpet), Kuppam (Chittor) A. P.
   (ii) Bihar : Shri Ram Deo Prasad, Sahu Samaji Bhawan. Bihari Sao Lane, Patna–4
   (iii) Gujarat : Shri Kanti Lal Modi Advocate' Navipole, Infront of Municipal Kotha, Ahmedabad.
   (iv) Madhya Pradesh : Sh. Ram Krishan Sahu, Qtr. No. X-8-60 PWD Bangalows, Tulsi Nagar (South T. T. Nagar), Bhopal-5 (M. P.)
   (v) Uttar Pradesh : Sh. Satyendra Nath Gupta Advocate, Muhalla Mogalpura, Maunath Bhanjan (Azamgarh),

7. MAHASABHA SAMACHAR
   (i) Editor : Dr. Jagannath Sahu M. A. Ph. D. 36, North Avenue, New Delhi-110001
   Home Add. Vill. & P. O. Mohadi (Mandhar), Raipur (M. P.)
   (ii) Associate Editor : Sh. Prem Shanker Sahu. F-12/11 Sushma Bhawan, Krishan Nagar, Delhi-110051 (Office : The Hindustan Times, Reading Section, Kasturba Gandhi Marg, New Delhi-110001. Phone : Office 386201/240

8. ORGANISING SECRETARIES :
   (i) Sh. V. Janardhanan, P. B. 203, Komarapalyam, Via Erode (T. N.)
   (ii) Principal G. P. Sahu, 477 Wright Town, Jabalpur (M. P.)
   (iii) Sh. Dinesh Kumar Sahu. At./P. O. Nayapalli, Plot No. 726, Bhuwaneshwar-751012

9. OFFICE SECRETARY : Sh. M. C. Gagerna 23/10 Shakti Nagar, Delhi-110007

10. TREASURER : Sh. Vishesh Kumar Rathore, C-1/183 Yamuna Vihar, Delhi-53 (Office : Steel Authority Ltd., Jeewan deep Building, Sansad Marg, New Delhi-110001) Ph. 312225

11. AUDITOR : Sh. Chandra Shekher Sahu, F 12/11 Sushma Bhawan, Krishn Nagar, Delhi-110051 (Office : Howe (India) Pvt. Ltd. Nehru Place New Delhi).

--:o:--

अध्याय-२६

दक्षिण भारत में भी वैश्य

(०१) उत्तरी भारत में प्रायः यह गलत फहमी रही आई है कि दक्षिण भारत में वैश्य नहीं हैं क्योंकि दक्षिण के वैश्य अलग प्रकार के उपनामों का प्रयोग करते थे। अपने 1963 के मद्रास निवास काल में मैंने वहाँ के होम मिनिस्टर (बाद में चीफ तथा सेन्ट्रल मिनिस्टर) श्री भक्तवत्सलम द्वारा जार्ज टाउन की आर्य वैश्य सभा द्वारा स्थापित एक अस्पताल के उद्घाटन का समाचार सितम्बर के समाचार पत्रों में पढ़ा। दक्षिण भारत आर्य वैश्य सभा के कार्यालय 17 गोडाउन स्ट्रीट-मद्रास-1 में जाकर उसके प्रधान पद्मनाभन चेट्टी से मिला। ज्ञात हुआ के उत्तर से जो वैश्य वर्ण आन्ध्र तक आकर वेश व अपना रहन सहन, शाकाहार, तथा संस्कृत भाषा निष्ठता बनाये रक्खे, वे आर्यवैश्य नाम रक्खे रहे हैं। इसलिये तैलगू भाषा का उद्गम संस्कृत है। जो धुर दक्षिण गये वे, पृथकता से तमिल भाषी हो गये। कालान्तर में पता लगा कि द्रविण स्रोत की भी कुछ वैश्य जातियाँ हैं। तथा तैलिक बन्धु भी अपने को वैश्य उपनाम कहते हैं।

उत्तर दक्षिण में चेट्टी, नागरथ तथा लिगायत बन्जीगा उपजातियाँ और हैं। इनका विशद वर्णन प्राप्त नहीं हो सका संक्षिप्त वर्णन ही उपलब्ध हो सका है जो निम्न प्रकार है :—

(०२) **चेट्टी**—संभवतः संस्कृत शब्द श्रेष्ठी का अपभ्रंश है। श्रेष्ठी का अर्थ महाजन तथा बड़ा व्यापारी है। इनमें से कुछ यज्ञोपवीत पहिनते हैं। कुछ निरामिषभोजी हैं। तथा कुछ मछली तथा अवर्जित मांस खा लेते हैं। दक्षिणात्य ब्राह्मण (सावित्री वैदिक) इन्हें शूद्र मानते है। और न इनकी पुरोहिताई करते हैं और न दान लेते हैं। इनकी मुख्य शाखा नटकुत्तल है जिसका बसाव मदुरा जिले में है। इनकी जनसंख्या 35-40 लाख है। वे कर्नाटक में भी हैं तथा किसी समय बर्मा का भी प्रव्रजन किये थे। मुख्य आबादी कृष्णा, नीलोर, कडप्पा, कुरनूल और कोयमबटूर जिलो में है। वे सब या तो लेन-देन का काम करते हैं या खेती। व्यौपार में बहुत कम हैं।

(०३) **लिन्गायत**—बन्गीय कर्नाटक में बहुसंख्या में बसे हैं। और प्रायः ग्रामों में बसे हैं।

(०४) **तेलेगू बन्गीय**—आन्ध्र के कुछ भागों में पाये जाते हैं।

(०५) कर्नाटक के शिला एवं हस्त लेखों में वैश्यों के वहां देशी, परदेशी, उभय देशी एवं नाना देशी कर के उपभेद लिखे है। और उन्हें वीर वलिन्ज समाय प्रतिपादक और अध्याबोले वरस्वामी करके स्मरण किया गया है। इन शिला एवं हस्त लेखों में इनके द्वारा अनेक शैव, जैन और बौद्ध मन्दिरों के पुनर्निर्माण की गाथा भी अंकित है। तथा वैदिक ब्राह्मणों, जैन मुनियों और बौद्ध भिक्षुकों को प्रचुर दान देने का भी वर्णन है।

(०६) **कोमटी वैश्य**—तत्कालीन उच्चनीच की भावनानुसार अपने को उत्तरीय स्रोत वाले सब आर्य वैश्य कहने लगे यद्यपि उनका नाम कोमटी वैश्य था और वे बरार, महाराष्ट्र, आन्ध्र, कर्नाटक एवं तामिलनाडु में सर्वत्र पाये जाते हैं। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन की अप्रैल ८१ की प्रथम बैठक में उनकी संगठित संस्था अखिल भारतीय वैश्य समाज (रजिस्टर्ड) से सम्पर्क हुआ और उनके द्वारा आंग्ल भाषा में सर्व वैश्य इतिहास भी प्रकाशित हुआ है। उसके आधार पर इस अध्याय में आर्य वैश्यों का ही वर्णन है। जातिवार, गोत्रवार, शब्दवार तथा स्रोत वार इनका पूर्ण इतिहास प्राप्त नहीं हो सका। हाँ संस्थाओं का तारतम्य अवश्य उपलब्ध है। उसी से निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

(०६·०१) कोमटी वैश्यों के मुख्य ५ उपभेद हैं :—

(१) गावुरी (२) कलिन्ग कोमटी (३) वेरी कोमटी (४) वल्जी कोमटी (५) नागर कोमटी।

गावुरी लोग पूर्ण निरामिषाहारी हैं। अन्यों में मांस का चलन बताया गया है। गावुरी एवं कलिन्ग कोमटी प्रायः शंकर मतानुयायी हैं। थोड़े ही लिंगायत अथवा रामनुजाचार्य के अनुचर हैं। वेरी कोमटी प्रायः लिन्गायत हैं। इन सबके आदि गुरु भास्कराचार्य थे जिनका मुख्य मठ वेलारी जिले के गूटी स्थान पर है।

ब्राह्मण पुरोहित इनकी पुरोहिताई तो करते हैं, पर इनके यहाँ वैदिक मन्त्रों का उच्चारण नहीं करते हैं। इनके यहाँ मामा की लड़की होने पर उससे विवाह करना अनिवार्य सा है। केरल में तो ब्राह्मण मात्र बहिन की पहिली लड़की से शादी करने पर बाध्य हैं। [इसलिये महाभारत में कर्ण ने शल्य को डाँटा है कि तुम ऐसे देश से आये हो जहाँ बहिन [मामा की लड़की] से शादी कर लेते हैं। यों गुजरात में भी यह चलन था क्योंकि अर्जुन ने सुभद्रा से तथा कृष्ण ने सत्यभामा से विवाह किया था।]

कोमटी हलवाई का धन्धा भी करते हैं क्योंकि तिलंगाना में मयार या हलवाई जैसी अन्य कोई जाति नहीं है। इनकी आबादी निम्न प्रकार है :—

तामिलनाडु = १५ लाख
आन्ध्र = १४ लाख
कर्नाटक = २ लाख
महाराष्ट्र = ३ लाख

इनके संस्थानों का विशद वर्णन प्राप्त है जो इस अध्याय में क्रम वार दिया जा रहा है।

(०६.०२) दक्षिण भारत में वैश्य वैभवः राज्य वंश।

अहिवोल क्षेत्र (कर्नाटक)=राजवंश का नाम जरसोप्पे (GERSSOPPE) राजा का नाम होन्ना। समय १४०५ ई०।

पेनुगोंडा क्षेत्र (आन्ध्र प्रदेश)—राजा का नाम कुसुम श्रेष्ठी। समय ११ वीं शताब्दी।

(०६.०३) राजनयिक

पूर्व परम्परा—महपद्मनंद के प्रधान मंत्री कल्पक और उसके पुत्र सखदल को जैन साहित्य में वैश्य लिखा है। ब्राह्मणों ने सखदल का ईर्षा वश बध करा दिया था। तभी चाणक्य नन्द का नाश करा सका। बिम्बसार की वैश्य महिषी से जन्मा अभय कुमार बिम्बसार का प्रधान मंत्री था और श्रेणियों के सिद्धान्त का निरुपण उसी ने किया था।

जैन साहित्य के अनुसार शिशुनाग वंश के अजातशत्रु का पुत्र उदयन जो भाटिया वैश्य जाति का था। वह बिम्बसार का नाती था। दक्षिणांचल में विजय करके उसी ने उद्यन सैन्य की स्थापना की थी।

अशोक विन्दुसार को ध्वस्त करके जब सिंहासनारुढ हुआ तब अपने सहायक राधा गुप्त को अगमात्य नियुक्त किया था।

इसी परम्परा में तेजपाल, वस्तुवाल, बामाशाह, वाग्भट्ट, अमर भट्ट, अब्य आदि का भी नाम आता है। दक्षिणांचल में स्वतन्त्रता प्राप्ति (1947) के बाद व्यन्कट सुबइया केन्द्र में, के० रोसइया आन्ध्र में और वी०वी० गुरुभक्ति नागम्मा केशव मूर्ति, रमैया चेट्टी, सुनइया चेट्टी कर्नाटक में और के० रोसइया आन्ध्र में पुनः मिनिस्टर हो रहे हैं। और अमर जीवी पोट्टी श्री रामुल-आन्ध्र भाग को मद्रास से प्रथक कराके स्वतन्त्र प्रदेश बनाने हेतु आमरण अनशन में शहीद हुये। इन्हीं की शहादत के बाद आन्ध्र प्रदेश का निर्माण हुआ। जन्म मार्च 1901 महाप्राण 15 दिसम्बर 1952। आदि स्रोत स्थान नीलोर पर जन्म स्थान अन्नापिलाई स्ट्रीट मद्रास था। डंडी मार्च के समय रेलवे की नौकरी छोड़ गांधी जी के पास जा साबरमती आश्रम में रहने लगे। जीवन में राष्ट्रीय आन्दोलन में ३ बार जेल गये। एक दिन का उपवास हरिजनों के मन्दिर प्रवेश कराने पर पहिले भी किया था।

(०६.०४) वैश्यकवि—माध, भक्त तुकाराम, हेमचन्द्र सूरी, सिद्ध पाल, विजय पाल

वैश्य पीठाधिपति

आचार्य वादि देव सूरी, आचार्य वज्र स्वामी, वादि भटाला सूरी श्री शान्तिस्वरुपुल,

(०६.०५) वैश्य भक्त गण--तुलाधार, सुदामा श्रेष्ठी, सागर श्रेष्ठी, विराथी, महायोगिनी वेंन्कटम्मा, वुल्लेसुमल्लिया श्रेष्ठी, विजय श्रेष्ठी दम्पत्तिशुलु, कविवाण श्रेष्ठी एवं भविष्य दत्त।

(०६.०६) वैश्य सन्त गण—वम्मल वार—रामानुज की अल्वार भक्त परम्परा में यह सर्व प्रथम थे। वे वैश्य थे। नालधार प्रबन्धय नामक काव्य उनका लिखा है। वैष्णव मतानुसार वेदों के भक्ति गीतों को स्थानीय भाषा में उन्होंने मानों उतार दिया हो।

महादेवी अक्का—बसवेश्वर के शैव सिद्धान्त पर यह प्रसिद्ध स्त्री दर्शनकार हैं। वे निर्मल सेट्टी की पुत्री थीं। सन 1180 में चालुक्य राज कौशिक से उनका विवाह हुआ था। राजा ने एक बार एक महेश्वर संत का निरादर किया तब वे सन्यासिनी हो गईं थीं। बाद में वे श्री शैल में मल्लिकार्जुन की पूजा में जीवनार्पण करती रहीं।

बौद्ध भिक्षु धर्म गुप्त—दक्षिण गुजरात के एक वैश्य परिवार में जन्मे। कन्नौज में कौमुदी संघाराम में बौद्ध दर्शन पढ़ा। पंजाब के टेक्का नामक संघाराम में कुछ दिन रहकर स्थल मार्ग से सन 590 में बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ चीन चले गये। मार्ग में दो वर्ष काश्गर के संघाराम में रहे। उन्होंने चीन में बौद्ध साहित्य का अनुवाद किया और यात्रा के संस्मरणों में मार्गस्थ सब देशों का भूगोल और इतिहास भी लिखा। **सन्त गुरु ब्रह्मीभूत श्री रंगनाथ महाराज प्रभानिकर** प्रभानी जिला (महाराष्ट्र) के ग्राम सग्पथ में 1889 में जन्मे। यह सन्त आर्य वैश्य थे। उनके परिवार में पंढरपुर के पान्डुरंग भगवान की पूजा की परम्परा थी। रंगनाथ जी भी विट्ठल के पुजारी और आजन्म ब्रह्मचारी रहे। विनायक महाराज से अलान्दी में उन्होंने ज्ञानेश्वरी तथा अब अद्वैत साहित्य पढ़ा। कृष्ण कीर्तन में वे ध्यानास्थित हो जाते थे। और उन्हें साक्षात्कारी संत कहा जाता था। जनवरी 19 0 में वे दिवंगत हुये।

(०६.०७) अन्य विभूतियां

१)**विमल मत्री**—मुहम्मद गजनी को पाटन के आक्रमण में हराने वाले राजा वनराजु के राज्य में नानू नामक प्रागभट्ट वैश्य ने पाटन नगर का निर्माण किया था। उसके पुत्र लाहर को राजा ने जनरल बना दिया था। उसी परिवार में 1085 में विमल का जन्म हुआ। राजा भीमदेव ने उसे आक्रान्ता सिन्धुराज से लड़ने भेजा था, जिसे विमल कैद कर लाया था। एक बार उसने शेर से द्वन्दयुद्ध किया था। चन्द्रावती विजय करके वहां का राज्य भीमदेव ने उसे दे दिया। उसने नेमिनाथ भगवान का एक मन्दिर भी बनवाया था।

२) **दानेश्वर जगदुशा**—वैश्य सोलक श्रेष्ठी का पुत्र। कई जैन मन्दिरों एवं एक मस्जिद "भिमिति" का निर्माताथा। सन १३१३ के अकाल में उसने गूजर देश के ४००००, सिन्धु देश के ६००००, मुरादराज्य हेतु १६०००० तथा मालव हेतु ५०००००, काशीकि हेतु १६००००० देहली नवाब हेतु १०५००००, कन्धार हेतु ६०००० व्यक्तियों के भोजनार्थ धन वितरित किया उसे जगत परिपालनदक्षदु कहकर इतिहासकारों ने स्मरण किया है।

३) **मामिडि व्यकटरायुलु**—आन्ध्र प्रदेश में पलाकोल्लु में १७६४ में जन्मे, इन सज्जन को विद्वत्ता के कारण बालमार, साहित्यचक्रवर्ती और पंडित राय की उपाधियां युवावस्था ही में प्राप्त हो गई थीं। वे बगलादेवी एव गुह्येश्वर के पुजारी थे। वैश्यों के वेदाध्यानानाधिकार एवं मंदिर-प्रवेष-निषेध को उन्होंने चैलेन्ज किया और उनका पुत्र भर्दैया संस्कृत विद्वता के प्रभाव से मदुरा के मीनाक्षी मन्दिर में घुस गया। उन्होंने निम्न ग्रन्थ लिखे.

शब्दार्दकल्पथरुवु, आन्ध्रदीपिका, आन्ध्रलक्ष्मण, पर्यायरत्नमाला, शाक्तरेफालक्षणम, व्याकरणम, विशेष शब्द चिन्तामणि, वैश्याचार सुधामणि। इंगरज संस्कृत विद्वान ब्राउन एवं मशोर टौड ने उन्हें

स्वर्णपदक दिये। उन्होंने कई बार अष्टवाधम यज्ञ किये। महारानी विक्टोरिया ने उन्हें 1000 बीघा कृषि भूमि समर्पित की थी।

वैश्यों के वेदाध्ययन के अधिकार हेतु वे प्रिवी काउन्सिल तक ब्राह्मणों से मुकदमा लड़े और अन्त में विजयी हुये। सन 1834 में वे स्वर्गवासी हुये।

४) आत्पुरि लक्ष्मीवर्रसिहम सोमायुनलु—जन्म 1845 – सन 1864 के समुद्री तूफान में मछलीपत्तनम में विपुल जन सेवा की। उन दिनों की ऐफ ए. परीक्षा 1966 में गोल्ड मैडल प्राप्त करते हुये पास की। पहिले मिशन स्कूल में अध्यापक हुये। फिर वकालत 1874 में पास करके ऐडवोकेट बने। राममोहन राय के ब्रह्मसमाज से आकर्षित होकर एक पुत्र का यही नाम रखा। वे 1879 में जज नियुक्त हुये। उन्होंने वैश्य-गुरुकुलों की स्थापना की और विधवा विवाह का समर्थन उस युग में भी किया। भास्कर पंडित के सान्निध्य में योग प्रक्रियायें की। बनारस जाकर वैश्य धर्म प्रकाश पुस्तक प्रकाशित की। विजय नगर और विशाखापत्तम में वेदों में सारगर्भित भाषण दिये। वे संस्कृत स्कूल कमेटी के प्रधान थे। वेदों के तत्कालीन पाश्चात्य विद्व निकोलसन एवं चार्ल्स फ्रान्सिस से वेदों पर शास्त्रार्थ किया। सन 1892 में एक वृहत यज्ञ किया यद्यपि तत्कालीन पौराणिक पंडितवर विरुपक्ष स्वामी ने वैश्यों द्वारा यज्ञ के अनाधिकार की चेष्टा कहके उसे रोकना चाहा। ब्राह्मणों ने उन्हें दो बार मार डालना भी चाहा, पर वे बच गये। उन्होंने अंग्रेजी शासन पर जोर-डालकर खुले मेलों में पशुबलि बन्द कराई। सन 1901 में दक्षिण का यह "दयानन्द" दिवंगत हुआ।

(०६.०८) कुलदेवी वसावी

वसावी राजा कुसुमश्रेष्ठी की पुत्री थी। वह विशाखापत्नम के चालुक्य राजा विष्णु वर्द्धन के मातहत पेनुगोडा अंचल का राजा था। अपनी एक दिग्विजय यात्रा में विष्णु वर्द्धन पेनुगोडा होकर निकला और परम सुन्दरी राजकन्या वसावी को कहीं देख पाया और उस पर मुग्ध हो गया और विवाह का सन्देशा भेजा। समीपस्थ १८ ग्रामों के वैश्य जन विचारार्थ इकट्ठे हुये। वे १०२ गोत्रों के थे। उन्होंने विष्णु-वर्द्धन के पास जा विरोध प्रगट किया और सफलता न मिलते देख वसावी सहित अग्नि को समर्पित होकर प्राण त्याग दिये। तभी से वसावी को देवी करके मान्यता मिली और उसकी मूर्तियाँ वहाँ के नागेश्वरप्रभु मन्दिर में स्थापित हुईं। राजा विष्णु वर्द्धन दुख से आतापित होकर मर गया।

जैसा कि इस देश में होता रहा है, कालान्तर में वसावी शब्द को वसु से निकला मान कर उन्हें वसु अर्थात विष्णु और फिर विष्णु के अवतार कृष्ण की भगिनी बताया गया है। और यह प्रसिद्ध किया गया है कि वह विशिष्ट आत्मा युग-युगान्तर, में वेद-धर्म के प्रचारार्थ उत्कीर्ण होती है। नाम के आगे कन्यक शब्द स्वर्ण समान तेजस्विता का द्योतक है। उनके वैभव की कथा धौम्य द्वारा राजराजा नरेन्द्र को सुनाई बताई गई।

इस देवी को ही सुन्दर कालान्तर में विश्व व्यापक पराशक्ति स्वरूपी श्री वसावी कन्यक परमेश्वरी अम्भावारु मान लिया गया। और हैदराबाद में जुलाई ८३ में एक विश्व शान्ति महा यज्ञ श्री श्री श्री पुल्लुरु नारायन दास गुरु के सानिध्य में कराया गया। एक वसावी पुराणभी उपलब्ध है जिसके लेखक व्यास महर्षि बताये हैं। इन मन्दिरों के प्रथक स्वतन्त्र प्रबन्ध हेतु इस संस्था ने भारत के विधान के आर्टीकिल २६ के अनुसार अधिकारों हेतु राज्यपाल को एक मेमोरेन्डम सितम्बर ८४ को दिया था। तथा Act 17/66 के अनुसार राज्य द्वारा प्रबन्धक नियुक्त करने का विरोध किया था।

अमेरिका में बसे आर्य वैश्यों ने केलीफोरनियाँ में एक वसावी मन्दिर का निर्माण किया है।

अप्रैल १९८५ में मन्त्रालय नगर (जि० कुरनूल आ० प्र०) में वसावी नित्य अन्न क्षेत्र भवन का उद्घाटन कर्नाटक के मुख्यमन्त्री श्री रामकृष्ण हैगडे द्वारा किया गया था।

(०७) अखिल भारतीय वसावी कन्यक परमेश्वरी टेम्पिल फैडरेशन

ऊपर इनकी कुल देवी वसावी का वर्णन किया जा चुका है। इस कुल देवी को समर्पित मन्दिरों का संघ बनाकर पंजीयत कराया गया है ताकि मन्दिरों की सम्पत्ति खुर्द-बुर्द न हो। इसका स्थायी कार्यालय S. V. K. Temple पोस्ट पेनुगोन्डा (आन्ध्र प्रदेश) में है। यहीं की वसावी देवी मूल निवासी थी। इस नाम वाले मन्दिर व ट्रस्ट ही इस संघ के सदस्य हो सकते हैं। इसका आजीवन शुल्क १०००/– है। प्रधान, छ उपाध्यक्ष, महामन्त्री व कोषाध्यक्ष, ६ मंत्री तथा ५१ सदस्यों से कार्यकारणी बनती है तथा तामिलनाडू से १०, कर्नाटक से १०, आन्ध्र से १४, महाराष्ट्र एवं केरल से एक-एक मेम्बर और लिया जाता है। वसावी देवी के इन अंचलों में ४०० मन्दिर हैं। श्री वेलूरु दुर्वासुलू गुप्त इसके अध्यक्ष हैं। इसकी प्रथम वार्षिक बैठक देवनगिरे में अप्रैल ८४ में हुई थी।

अन्य ट्रस्ट तथा कल्याणकारी ट्रस्ट निम्न प्रकार हैं:—

मद्रास में

1. Addepally Kokilamba Charities, C/o, Messrs. A Radha & Sons, Jewellers, Kutcherry Road, Madras-4
2. Addepally Kandasamy Chetty Chenchu Venkatasubbu Guruvayamma Charities, 15, Kumarappa Mudaly St. Nungambakkam, Madras-34

3. Rao Bahadur Allathoor Nathamoony Chetty's Charities, 32 Venkatachala Mudali Street Madras-3
4. Rao Bhadur Athuloor Thiruvengalamma's Estate, (Under the Management of Papoi Chetty Raghavaiah Chetty's Charities), 31 Narayana Mudali Street, Madras-1
5. Allathur Namberumalu Chetty's Educational Endowments, (Under the Management of Singammsetty Ateendrooloo Chetty's Charities), 31 Narayana Mudali Street; Madras-1
6. G. Andalamma's Charities, (Under the Management of Singamsetty Ateendrooloo Chetty's Charities) 407, Mint Street, Madras-1
7- Arya Vysya Ramanujakootam, 11, Ellamman Koil Street. Old Mambalam, Madras-33
8. All India Arya Vysya Samajam, Regd. Office : 177; N. S. C. Bose Road, Madras-1
9. Bysani Madhaviah Chetty's Charity Fund, 143/145 Mint Street, Madras-1
10. Bashyakarlu & Manavala Mamuni Sriperumpudur Charities, 'Crynant' Rajamannar Avenue, 64 Harrington Road, Madras-31
11. Dharmamurthi Rao Bahadur Calavala Cunnan Chetty's Charities, 224, Govindappa Naick Street G. T. Madras-1
12. Calimidi Namberumal Chetty's Charities. 53 A Sri Md. Usman Road, Madras-17
13. Calvi Sadasiva Chetty's (Madras) Charities, 148, Nyniappa Naick Street, Madras-3
14. Chinni Sreeramulu Chetty's Charities, 23, Chinna Thambi Mudali Street, Madras-1
15. Chavula Rangiah Chetty's Charities, 14, Strotten Muthiah Mudali Street, Madras-1
16. Cheedella Rangamannar Chetty's Charities, 43. Strotten Muthiah Mudali Street, Madras-1
17. Chithapuram Sriranganancharamma's Estate, 32, Venkatachala Mudali Street, Madras-1
18. Cheedella Venkatachalam Chetty Charities, 174, Govindappa Naicken Street, Madras-1
19. Copparam Veeraraghavulu Chetty Ramanujakootam, 32, Narayana Mudali Street, Madras-1
20. Smt. Desu Kannamma Charities, 10, Nungambakam. High Road, Madras-34
21. Grandhi Ramaswamy Chetty's Charities Messrs. Gem & Co., 325, N. S. C. Bose Road, Madras-1
22. Gurram Thiruvengadam Chetty's Charities, 207 208, N. S. C. Bose Road, Madras-1
23. Gurram Subramanyam Chetty Sowmitri Gurukamakshamma Charities, 25 Annapillai street, Madras-1
24. Gurram Akkulu Chetty's Estate, (Under the Management of Pappichetty Raghavaiah Chetty's Charities) 31, Narayana Mudali Street, Madras-1
25. Grandhi Pushpavalli Thayaramma's Charities, (Under the Management of Singmsetty Ateendrooloo Chetty's Charities) 407 Mint Street, Madras-1
26. Gurram Krishnaswamy Chetty's Charities, (Under the Management of Singamsetty Ateendrooloo Chetty's Charities), 407 Mint street, Ma ras-1
27. Kakumani Audikesavulu Chetty's Charities, 49, Narayana Mudali Street, Madras-1
28. Kalvi Ramanna Vysya Dharma Shathram, 24, Narayana Mudali Street, Madras-1
29. Kasi Chetty's Charities, (Hazaram) 19. Kasi Chetty Street, Madras-1
30. Kandha Gaddala Chellapillai Charities, 85, Godown Street, Madras.
31. Kavali Narasimhulu Chetty's Charities, 55, Govindappa Naicken Street. Madras-1
32. W. Lakshmanaperumall Chetty's Charities, 6, Venkatachala Mudali Street, Madras-1
33. Sri Mandaram Rangaiah Chetty's Charities, 30, Kasi Chetty's Street, Madras-1
34. Sri Mullangi Charities, 35, Vaidyanatha Mudali Street, Madras-1
35. Sri G. Narasayya Chetty's Charities 158, Annapillai Street, Madras-1
36. Sri Narayana Guruviah Chetty's Estate & Charities 121. Varada Muthiappan Street Madras-1
37. Pappichetty Ragaviah Chetty's Charities, 31, Narayana Mudali Street, Madras-1
38. Sri Perialwar Trust & Chinni Subbiah Chetty's Charities, 307-308, N. S. C. Bose Road, Madras-1
39. Pettugola Poornavalli Thyaramma's Charities. 114, Audiappa Naicken Street, Madras-1
40. Sri Pydah Audiseshachalam Chetty Chengavalli Thayaramma's Charities, 31, Acharappan Street Madras-1
41. Sathrasala Venkatachalam Chetty's Charities, 4 Kasi Chetty Lane, Madras-1
42. Soora Luchmiah Chetty's Charities 1/14, Big Street Madras-5
43. Dewan Bahadur Sella Guruswamy Chetty's Soundarya Mahal Trust, 214, Govindappa Naicken Street, Madras-1.

45. Surichetty Alwar Chetty's Charities, 1, Kasi Chetty Lane, Madras–1.
46. Surichetty Varadaramanujam Chetty's, (Under the Management of Surichetty Alwar Chetty Charities)· 1. Kasi Chetty Lane, Madras–1.
47. Sri Kanyaka Parameswari Devasthanam & Charities, 'Kotwal Market', Audiappa Naicken Street, Madras–1.
48. Thatha Elayalwar Chetty's Charities 53, Strotten Muthiah Mudali Street, Madras–1
49. Thatikonda Rajamanner Trust, 'Crynant' Rajamannar Avenue, 64, Harrington Road, Madras–31.
50. Thummalapenta Narayana Chetty Subbarayalu Chetty's Charities, 126 Varadamuthiappan Street, Madras–1
51. Sri Tiruvali Tirunagiri Sri Tirumanagaiamman Kainkaryabhivardhini Sabha, 207–208. N. S. C. Bose Road, Madras–1.
52. Voora Sriramulu Chetty's Charities 67, Govindappa Naicken Street, Madras–1.
53. Voora Seetharama Chetty Amruthavalli Thayaramma's Charities, 46, Varadamuthiappan Street, Madras–1.
54. Vupputur Sreedevamma Trust, 1, Barn by Road, Madras–10.
55. Vuputur Alwar Chetty's Charities, 48–49, Govindappa Naicken Street, Madras–1.
56. Vuputur Andalamma's Charities, 132, Audiappa Naicken Street, Madras–1.
57. Veerabommala Kamalamma Pattabhi Chetty's Charities' 148, Nyniappa Naick Street Madras–3.
58. Vankayala Kuppiah Chetty's Charities, 10, Varadamuthiappan Street, Madras–1.
59. Sriperambudur Vysya Thadhiyaradhana Charities, 34, Varadamuthiappan Street Madras–1.
60. Vootukuri Naryana Chetty Trust, 2/74, Godown Street, Madras–1.

महाराष्ट्र में

1. नाग्रेश्वर मन्दिर—नान्देड।
2. नागरेश्वर मन्दिर—खंडार।
3. कन्यक परमेश्वरी मन्दिर—गंगाखेद।
4. कन्यक परमेश्वरी मन्दिर—लाटूर।
5. विट्ठल मन्दिर—अडोल्टी।
6. आर्य वैश्य होस्टल—अमरावती रोड—रामनगर-नागपुर-1
7. कन्यक परमेश्वरी मंदिर चन्द्रपुर।

आन्ध्र प्रदेश में

1. वैश्य भवन Kalyan Mandapam—Feel Khana-Hyderabad=500012.
2. वसावी सेवा केन्द्रम (अतिथि गृह)—Runs also Indian Institute of Management (by G.Secy.Comray Ram)
3. कन्यक परमेश्वरी मंदिर– याकूतपुरा = हैदराबाद–24
4. श्री शैल आर्य वैश्य अन्न क्षेत्र = श्री शैल—कुरनूल (A.P.)

कर्नाटक में

1. Vasavi Dharmasala. 4, Vani Vilasa Road, Visweswarapuram, Bangalore–4.
2. C. Subramane Shwara Kalyanamantapam 2nd Block Jayanagar, Bangalore–11.
3. Belugodu Kalyanamantapam, 8th Block Jayanagar, Bangalore–11.
4. N. Adi Ramiah Adi Lakshmamma Kalyana Mantapam, Vasavi Temple Road, Visweswarapuram, Bangalore—11.
5. Raja Seva Ramiah Chetty, Parvathamma Kalyanamantapam, Bell Temple Road, Chamarajpet, Bangalore–18.
6. Vasavi Hostel, Vasavi Temple Road, V. V. Puram, Bangalore–4.
7. Pabbati Keswiah Setty Kamalakshamma Ladies Hostel, Bangalore.
8. Devatha Venkataratnam Chetty, Ladies Hostel, Market Road, V. V. Puram, Bangalore–4.
9. Siddikatta Arya Vysya Sangham, K. P. Temple, Malavathi Rama Rao Road, Bangalore–2.
10. Venkatamuniah Chetty Chowltry and Hostel, Avenue Road, Bangalore–2.
11. Vasavi Veda Pa tashala Nagarthipet, Bangalore–2.
12. Vasavi Union, C/o. D. A. V. Ratnam Setty, Vijayalakshmi Silk Kendram, Kempagowda Road, Bangalore–9.
13. Karnataka Arya Vysya Mahasabha, Vasavi Dharmasala Building, National High School Road, Visweswar. puram, Bangalore–4.
14. The Arya Vysya Officials and Professionals Association, Vasavi Dharmasala Building, Bangalore–4.

15. Anantha Seva Asramam,
Nehru Extension, Malur–563 130 (Kolar Dist)
16. Arya Vysya Mandali,
Old Town, Bhadravati–577 301.
17. Arya Vysya Youth Association,
Kanyaka Parameswari Temple Street,
Nagamangala (Mandya Dist.)
18. Arya Vysya Mandali,
Bhadravathi, (Sinogar Dist.)
19. Arya Vysya Sangam, Gangavati.
20. Arya Vysya Mandali, Nanjangudi, Mysore Dist.
21. Arya Vysya Samaj, Heerapur (Dharwar Dist.)

All India Vaish Samaj

स्थायी कार्यालय—नं० 6-1-91 बसावी नगर। सेक्रेटरियेट रोड हैदराबाद—500004

इसके तीन प्रकार के सदस्य हैं :— (1) आजीवन (2) दानी तथा (3) संरक्षक तथा पदाधिकारी होते हैं।

अध्यक्ष, अध्यक्ष द्वारा नामजद 9 उपाध्यक्ष, महामन्त्री, 9 मन्त्री-कोषाध्यक्ष तथा 51 कार्यकारिणी सदस्य। सन 1985 तक अध्यक्ष थे श्री कसल ऐस० विट्ठल [कन्यक महल थर्ड वी. जे. ऐक्सटैन्शन] देवनगिरे, (कर्नाटक) और महामन्त्री-श्री के. सी. गुप्त, नं० 4/7/313 ईसामिया बाजार, हैदराबाद–500027.

यह संस्था अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन से सम्बन्धित (AFFILIATED) है।

अप्रैल 84 में बहुत धूम धाम से वार्षिकोत्सव देवनगिरे में हुआ था जिसमें उत्तरी भारत से भी अनेक नेता गये थे। श्री के० रोसइया M.L.C मुख्य अतिथि थे तथा उपाधि वितरण श्री व्यन्कट सुवइया तत्कालीन राज्य मन्त्री केन्द्र सरकार ने किया था।

पारित प्रस्ताव निम्न प्रकार थे :-

RESOLUTIONS :

1. Resolved to call upon all the Vysyas known by different nomenclature such as Arya Vysyas, Ayodhyavasi Vysyas, Awadhwal Vysyas, Chettys, Settys, Chettiars, Agarwals, Maheswaris, Oswals, Mahores, Khandelwal, Guptas and others in India to makesustained efforts to carryout detailed census and to integrate themselves, and thereby lead the community to greater prosperity.

2. Realising the importance of trade and industry for the economic welfare of our nation, it is resolved that the community take-up more and more small-scale industries, home industries, medium and large scale industries and agriculture, utilising whatever resources are available both in rural and urban areas, so as to generate employment opportunities to the youths, men and women and also resolved that the vysya organisations at all levels, be called upon to assist the weaker and backward sections of our community in starting and running industries and to provide the technical know-how and other informations.

3. Resolved that the community be called upon to extend co-operation to the patriotic and developmental activities of the nation.

4. Resolved to call upon all the vysya organisations to encourage cultural activities among all sections of vysyas and to bring about social reforms and cultural upliftment of the community.

5. It is resolved as seriously expressed by women also, that on the death of husband, the widow shall not be objected if she continues to apply KUM KUM on her forehead and wears BANGLES, FLOWERS, etc. It is further resolved to encourage widow marriages among the vysya community.

6. Dowry system being a blot on our society, it is firmly resolved to root out this evil with all the power at the command of the community so that mental and financial tortures and dowry deaths are avoided. Simple and mass marriages shall be encouraged by all sections of the community.

7. Resolved to arouse political awareness among the members of the community and to help them take wise decisions and constructive course of action in the political field, in a manner that promotes national integration and solidarity.

8. Resolved to call upon all the vysya organisations, women and youths, to start and encourage educational institutions, especially for spreading technical education and to extend all co-operation to Govt. in its efforts to eradicate illiteracy and to make the education purposeful in India.

9. Resolved to call upon the members of the community to extend their full suport to the co-operative movement and to promote more and more co-operative banks and societies to meet the economic needs of the different classes of the people.

10. At the session of the representatives of All Kanyakaparameswari Temples in India, this First All India Vysya conference resolves to form a sub-committee to decide the design and style of the statue, photo, life teachings and the pooja vidhanam of Sri Vasavi.

11. Resolved to submit a memorandum to the Govt. of Andhra Pradesh and other State Governments to redress the grievences that are being faced by the temples of the Vysya Community.

12. It is resolved to set-up agencies by the vysya organisations, for the upliftment of weaker sec ions of vysyas and for the agricultural developments among the vysyas.

13. Resolved to establish a GURU PEETA to guide the destinies of the vysya community.

14. It is resolved to start hospitals, health units and other medical facilities, as part of humanitarian services, thereby to serve the community and the needy people at large.

15. It is resolved to submit memoranda to the appropriate authorities in all the states of our country, not to treat wholly any community as backward, but to declare and to treat individual persons as backward depending upon their economic and educational backwardness.

16. Resolved to take-up the task of mobilisation of small savings intensively in all the states throughout India through all the registered and recognised associations of our community to inculcate and promote the habit of saving money, as a socio-economic measure.

17. With a view to strive for an everlasting flow of benefits to the community in particular and to humanity in general, resolved to institutionalise the resolutions by means of setting up of separate specialized agencies and organisations and for this purpose, it is further resolved to authorise the President of the Conference to form a high power steering committee.

दूसरा वार्षिक सम्मेलन अप्रैल 85 में मन्त्रालय नगर जिला कुरनूल में हुआ। इसमें मुख्य पदाधिकारी प्राय: वही रहे।

इन्होंने दो वृहद स्मृति ग्रन्थ छपायें हैं। जो सम्पूर्ण वैश्य जाति के इतिहास तथा अन्य सूचनाओ से भरपूर है। जो 1983 में छपाया था, उसमें मेरे द्वारा लिखित हिन्दी भाग भी था। उसे इस पुस्तक का अध्याय दो करके शामिल किया गया है।

(०६.१२)- – इसके अन्तर्गत केरल प्रान्तीय शाखा का उदघाटन जुलाई 83 में पाल घाट में हुआ।

अध्यक्ष-—टी. श्रीनिवासुलू [पता श्री राम रौलर मिल्स कान्जीकोडे वैस्ट—पोस्ट–पालघाट 678623 केरल]

(०६.१३) तमिलनाडू प्रान्तीय शाखा–

महामन्त्री—श्री बन्दीआर सूर्य प्रकाश सेट्टी।

पता-—नं० 119 No. 1 कुमारन स्ट्रीट। पोस्ट सेलम–636001 तामिलनाडू

मद्रास आर्य वैश्य महासभा, नं० 205 माउब्रेज रोड। मद्रास–18 चैयर मैन--टी० पुल्लन गुप्ता नं० 26 न्यू आबादी रोड मदास-10,

मन्त्री - डी० नागराजुल चेट्टी।

(६.१४) आन्ध्र प्रांतीय आर्य वैश्य महासभा

[स्थापित 1936] आन्ध्र की 40 लाख की वैश्य आबादी में 19.6 लाख आर्य वैश्य सभा के सदस्य हैं। अध्यक्ष हैं श्रीराधाकृष्णैया और महामन्त्री श्री जे० वेभियाह।

इसकी शाखायें–

प्रोड्डाटूर (कडप्पा)– यहाँ विशाल कन्यक परमेश्वरी मन्दिर है। जिस पर 100 फीट ऊंचा टावर बना है। इनके पास दो कन्यक मन्डप भी है जहाँ विवाह शादी होते हैं। एक तल्लम वीरेय्या स्मृति हाल मीटिंगों हेतु है। जिसमें एक विशाल लायब्रेरी है। इस समय (1984 में, अध्यक्ष है श्री के. ऐस. सुब्बा राव और मन्त्री हैं श्री मेदा शेषइया।

हैदराबाद नगर शाखा

अध्यक्ष बलराजियाह गुप्त,

मन्त्री--बोगन्द्रापू राजेन्द्र

(०६.१५) महाराष्ट्र आर्य वैश्य महासभा

अध्यक्ष—डा० रमाकान्त मामीडवार।

महामन्त्री—श्रीगोविन्द व्यन्कट हाडोलतीकर। नं० 1/117666 विजय नगर। नान्देड़ [431602]

इसके अन्तर्गत निम्न जिला नगरो में संगठित शाखायें हैं— वजीराबाद वैश्य भवन में, नान्देड, परवनी, धारूर जिला बीड में वैश्य भवन में, लातूर जिला ओसमानाबाद में कन्यक मन्दिर में,

औरंगाबाद, आर्य वैश्य होस्टल, अमरावती, कन्यक मन्दिर नागपुर में, यवतभाल में वैश्य भवन मंगल कार्यालय में, चन्द्रपुर, बम्बई [अध्यक्ष- श्री जी. ऐन. कातू नं० 11 दुवाशलेन–बम्बई–४], थुमान्ना (बम्बई),

०६.१६ अन्य संस्थायें

१. अ. भा. युवाजन संघ

अध्यक्ष—श्री के० एन० गुप्त। नं० 4/1/403
आविद रोड, हैदराबाद।
महामन्त्री--के वाला स्वामी गुप्त ऐडवोकेट। आर्दशनगर
हैदरावाद

२. आन्ध्र प्रदेश वैश्य ग्रेजुएट कान्फ्रेन्स—

अध्यक्ष—श्री जी० सी० गुप्त एम० ए०
पता— C-125, B-Block, MALKAPET COLONY
हैदराबाद–36

आन्ध्र में 20000 वोटर ग्रेजुएट स्नातक मंडल क्षेत्र से MLC चुने जाने हेतु हैं। इनकी सभा की स्थापना अ. भा. वैश्य युवा जन सभा ने की थी।

३. अ. भा. वैश्य महिला सभा।

अध्यक्ष---श्री मती नागम्मा केशव मूर्ति भूतपूर्व मिनिस्टर

शताब्दियों तक उत्तर भारत के वैश्य यह समझते रहे कि दक्षिण अंचल में वैश्य हैं ही नहीं। परन्तु यह श्रेय वैश्य महासम्मेलन को ही है कि उसने न केवल इनकी जानकारी प्राप्त की वरन दोनों के संगठनों का समुच्चय कर दिया। अब आसेत-हिमालन यह सारा देश वैश्यों से वास्तविक रूप में परिवेष्टित एवं परिप्लावित है। नेताओं एवं कार्य कर्त्ताओं का परस्पर परिचय, आवगमन एवं विचार परिवर्तन हो रहा है। यह जानकर कौन सा वैश्य गौरवान्वित न होगा कि भूत पूर्व उपराष्ट्रपति तथा कुछ काल तक कायवाह राष्ट्रपति श्री वी. डी. जत्ती भी वैश्य हैं।

———

हमारे सहयोगी (३०)



श्री शान्ति स्वरूप अग्रवाल (सरूरपुर वाले)
शान्ति कुटीर, साकेत, मेरठ–1

श्री शान्ति स्वरूप जी का जन्म सरूरपुर के प्रतिष्ठित परिवार में स्व० ला० हरदेव सहाय जी के यहां हुआ था। इनकी इस समय आयु लगभग ६७ वर्ष है।

श्री शान्ति स्वरूप जी उच्च सम्मानीय व्यक्तित्व वालों में से हैं। तथा मेनका टैकसटाईल सरधना के संस्थापक, एवं कई भट्टों के मालिक हैं।

आप ग्राम सरूरपुर के वर्षों तक प्रधान रहे, तथा सन् १९६० से १९८३ तक सरूरपुर ब्लाक के ब्लाक प्रमुख रहे। अब १९८३ से इनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री योगेश बन्सल ब्लाक प्रमुख हैं।

आप हर्रा इण्टर कालिज व सरूरपुर इण्टर कालिज के प्रबन्धक भी बहुत लम्बे काल तक रहे। आप कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्त्ता भी थे।

वैश्य महासम्मेलन की शाखा मेरठ के संस्थापक सदस्य तथा १९८३ स्थापना काल से ही कोषाध्यक्ष हैं।

आप सदैव सभी वैश्यों के उत्थान में तत्पर रहते हैं एवं गरीबों के हितैषी एवं सहायक हैं।

आपके पाँच पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं, जो सभी होनहार व कर्मठ हैं।

अध्याय-२७

अन्य विभिन्न वैश्य उपवर्ग

इस अध्याय में अति संक्षिप्त वर्णन उन उपजातियों का है जिनके जातीय उद्‌गम और शिरोमणि संस्थानों का हम पूर्ण परिचय अभी तक प्राप्त नहीं कर सके पर जिनका अगले संस्करण में विशद वर्णन किया जावेगा।

०१) ओसवाल

इनका, श्री मालों तथा श्री श्रीमाली का स्रोत एक लगता है। कर्नल टाड ने लिखा था कि राजस्थान के व्यापार और धन का आधा भाग इन उपजातियों के हाथ होकर गुजरता है। इनमें से मुस्लिम राज्य काल में उच्चपदाधिकारी भी होते थे, जिनकी संख्या ब्रिटिश शासन में कम हो गयी। राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द स्कूलों के इन्सपैक्टर थे। वे ओसवाल वैश्य थे। उदयपुर राज्य के दीवान बाबू पन्नालाल तथा जयपुर राज्य के वित्तमंत्री नाथूमल भी ओसवाल थे। उनमें वैष्णव और जैन दोनों धर्मावलम्भी हैं। भोजक ब्राह्मण वैष्णवो के पुरोहित हैं। पालिताना तथा त्रि नगर के जैन मन्दिरों के निर्माण में उन्होंने प्रचुर धन लगाया था। ब्रिटिश राज्य स्थापन की कहानी में जिन मुर्शिदाबाद के जगत सेठ एवं लार्ड हेस्टिग्स का वर्णन है, वे भी ओसवाल वैश्य थे। इनमें दसा और वीसा का भेदभाव है।

०२) श्रीमाली वैश्य

मारवाड़ में झालौर के पास श्रीमाल नगर से इनका विकास है। इसे अब भिनाल कहते हैं। भिनाल गुजरात के राजपथ पर होने से व्यौपारिक केन्द्र था। श्रीमालों में भी दसा और वीसा होते हैं। वीसा गोत्रीय प्रायः जैन हो गये हैं। दसा लोगों में वैष्णव व जैन दोनों ही हैं। ये प्रायः जौहरी का धन्धा करते हैं। बनारस विश्व विद्यालय के एक कुलपति डा. कालूलाल श्रीमाली जी थे।

०३) पल्लीवाल--राजस्थान में पाली से निकास। पालीवाल ब्राह्मण भी होते हैं।

०४) भाटिया—प्रायः कपास के व्यापार में रत हैं। यह सिन्ध व करांची में थे। बम्बई व पंजाब में भी हैं। दयानन्द सरस्वती के प्रारम्भिक शिष्यों में भाटिया वैश्य प्रमुख थे।

०५) रस्तोगी या रोहतगी वैश्य—प्रायः देहरादून, कानपुर, लखनऊ, फर्रुखाबाद, मेरठ, बरेली व कलकत्ता में इनकी आबादी है। कानपुर के प्रसिद्ध समाज सेवी डा. जवाहर लाल रोहतगी गान्धी जी के प्रिय शिष्यों में थे। उनकी पुत्री श्रीमती सुशीला रोहतगी केन्द्रीय समाज सुधार बोर्ड की चेयर मैन हैं। हौज काज (दिल्ली) में इनका एक हाई स्कूल है। यह प्रायः वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव हैं। वे पितृ-मृत्यु के बाद ही यज्ञोपवीत पहिनते हैं।

इनके तीन उपभेद हैं—(१) अमेठी (२) इन्द्रपति (दिल्ली वाले) एवं मनहरिया [बघेल खंड के मइहर अंचल से]।

०६) लोहिया—लोहे के काम में रत वैश्य। इन्हें यज्ञोपवीत का अधिकार नहीं था। अब वे अपने को अग्रवालों का अंग कहते हैं।

०७ सोनिया—(बिहार के स्वर्णकार)

०८) सूरसेनी (मथुरा में)

०९) महोविया (महोबा में)

१०) कठवान (बिहार में)—इनके कतिपय भाग गरीबी के कारण बिहार में खेती या खेत पर मजदूरी करने लगे हैं। मैथिल ब्राह्मण इनके कुल पुरोहित हैं। इनमें विधवा विवाह की आज्ञा रही है। मृत का ३१ वे दिन श्राद्ध करते हैं।

११) बैस वनियां—फैलाव क्षेत्र—बिहार। इनमें विधवा विवाह की आज्ञा नहीं रही है। प्रायः पीतल के बर्तनों के व्यापारी हैं।

१२) जामेय वैश्य—यह प्रायः इटावा (उ. प्र.) जिले में बसते हैं। यह अपने को भक्त प्रहलाद का वंशज बताते हैं।

१३)—लोहाना वनियां=यह भाटिया वैश्यों की एक शाखा लगती है। और प्रायः सिन्ध में वसते थे। तब इनकी संख्या लगभग ५०००० बताई जाती है।

१४) रैवाड़ी वनियां—उदगम स्थान रैवाड़ी (गुड़गांव)। आधुनिक वसाव बिहार का गया नगर।

१५) कानू वैश्य—भोजन सामग्री के विक्रेता।

१६) गुजरात अंचल के वैश्य।

(i) नागर [दस्सा एवं वीसा]

(ii) दिसावल (iii) पोरवाल (iv) गुजर (v) मौढ़

(vi) लाड (vii) झरोला (viii) सौराठया

(ix) खदैता (x) हरसोरा (xi) कपोला (xii) उर्वाला

(xiv) पटौलिया या पटेल (xiv) वायदा ब्राह्मण उपजातियाँ भी इन्हीं नामों की हैं जो इन इनकी कुल पुरोहित हैं। यह सब प्रायः वैष्णव मत की वल्लभाचार्य शाखा के अनुगामी हैं। और यज्ञोपवीत पहिनते हैं। कुछेक जैन मतानुयायी भी हैं।

१७) उड़ीसा प्रान्त के वैश्य।

वहां सोनार एवं गुतली नामक दो ही वैश्य उपवर्ग हैं। इनमें प्रथम कुछ छोटे दर्जे के वैश्य माने जाते हैं, यद्यपि धनाढ़य, तम वे ही हैं। यह शिक्षा तथा व्यवसाय दोनों में पिछड़े हैं। तभी तो थोक व्यापार पर महावर एवं राजस्थानी अग्रवालों ने उड़ीसा पहुंचकर कब्जा कर लिया है।

१८) बंगाल में वैश्य

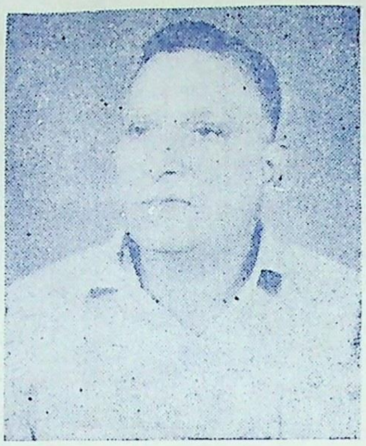
बंगाल में यद्यपि वे व्यापर रत हैं, पर उन्हें यज्ञोपवीत नहीं दिया गया और उनकी गिनतो द्विजाति में न होकर शूद्रों में होती रही है। उनके दो भाग हैं—

(१) स्वर्ण वणिक (२) तथा गन्ध वणिक [मसाले के व्यापारी] इसके अतिरिक्त इनसे भी निम्न स्तर पर कान्स वणिक एवं शंख-वणिक माने गये हैं, यद्यपि स्वर्ण वणिक से शेष तीनों का ऊंचा आदर।

सोनार वैश्य वहां कंजूस करके मशहूर हैं यद्यपि लक्ष्मी की उन पर कृपा है। परन्तु वे बड़े व्यापार व व्यवसाय की रिस्क नहीं लेते । अनेक बंगाली लोक कथाओं तथा गोविन्द-सामन्त काव्य के रचियता लाल बिहारी डे तथा भारतेर यात्रा के लेखक बाबू भोलानाथ चन्द्र सोनार वैश्य थे। जज ब्रजेन्द्र कुमार सील भी इन्हीं में से थे । इनकी संख्या लगभग ५ लाख है। उनके भी दो भेद हैं । सप्तग्रामी और वंभजा। सप्तग्रामी नाम के आगे मलिक, धर, लाहा, वराल, आधिया और सेन उपनाम रखते हैं। यह सब चैतन्य गोसाईं के अनुयायी हैं, और मांस तथा मादक द्रव्यों से प्रायः बचते आये हैं, परन्तु गोसाई एवं वल्लभ महाराजों ने उनकी स्त्रियों से सम्पर्क रखने को धार्मिक बाध्यता का प्रचार कर रक्खा था।

गन्ध वैश्य—इनको अन्य बंगाली मध्यम स्थिति का शूद्र ही मानते हैं, परन्तु वंशीय ब्राह्मण उनके हाथ का पानी पी लेते थे । वे खाद्य पदार्थ तथा अफीम, चरस का व्यापार करते हैं, परन्तु गाँजे का नहीं, यह आर्थिक दृष्टि से भी मध्यम स्थिति के ही हैं । वे नामों के आगे सिन्हा, धानी डे, नाग, साधु एवं दत्त प्रभृति उपनाम जोड़ते हैं। इनकी संख्या बंगाल में लगभग १० लाख है । वे रहते तो साधारण रूप से हैं पर विवाह एवं धर्म पूजा पर अच्छा व्यय करते हैं । उनकी स्त्रियों का पातिव्रत धर्म मशहूर है।

हमारे सहयोगी (३१)



जगदीश सरन तायल M. Com.

271 खारी कुंआ, मेरठ-2

श्री जगदीश सरन तायल का जन्म २० अप्रैल १६३१, को मुजफ्फरनगर में हुआ था। आपके पिता जी का नाम लाला राम गोपाल था, जिनकी धार्मिक प्रवृति तथा सत्यता के कारण मुजफ्फर-नगर में इनकी गिनती प्रतिष्ठित व्यक्तियों में थी । और वे गौशाला, सनातन धर्म सभा आदि में पदाधिकारी भी रहे।

जीवन—सादा जीवन, उच्च विचार, छल कपट रहित।

पत्नी—सुशिक्षित तथा परम सहयोगिनी, सुशील स्वभाव।

सन्तान—सात पुत्रियां सभी उच्च शिक्षित एक एम.ए.(अंग्रेजी) व एल.एल.बी., द्वितीय एम.ए. एम.फिल., पी.एच.डी. (साईकोलोजी) तृतीय एम.एस.सी. एम. फिल. (सांख्यकी), चतुर्थ एम.एस.सी. (रसायन शास्त्र) के बाद मैडीकल कालिज में पी. एच. डी. (बायो कैमेस्ट्री) में अध्ययनरत, पंचम बी.ए. (प्रथम वर्ष) में अध्ययन रत।

प्रारम्भिक जीवन में बी. काम. के पश्चात चार वर्ष शिक्षा संस्थाओं में मुख्य अध्यापक पद पर कार्य किया तत्पश्चात तीन वर्ष बघरा इण्टर कालिज, जे. टी. सी. कालिज व गांधी इन्जिनियरिंग कालिज के मैनेजर के रूप में कार्य किया । सन् १६५८ से सहकारी विभाग उ० प्र० में आठ वर्ष विभिन्न पदों पर कार्य किया। सन् १६६६ में त्यागपत्र देकर प्रिंटिंग प्रेस प्रारम्भ किया व सन् १६७४ में फर्म तायल ट्रेडर्स प्रारम्भ किया।

वर्तमान व्यवसाय :—विश्व प्रिंटिंग प्रेस तथा फर्म तायल ट्रेडर्स (विभिन्न सरकारी विभागों की स्टेशनरी के निर्माता व विक्रेता)।

वैश्य वर्ग के उत्थान में सदैव सहयोगी एवं सभी प्रकार से प्रयत्नशील रहते हैं।

१—वैश्य महासम्मेलन की मेरठ जिला शाखा के संस्थापक गणों में से एक।

२—इस महा सम्मेलन के मुख पत्र "वैश्य सम्मेलन" के प्रकाशक एवं मुद्रक हैं।

अध्याय-२८

जैन धर्मानुयायी वैश्य

नोट :— यह अध्याय-'इतिहास मनीषी' डा. ज्योति प्रसाद जैन 'विद्यावारिधि' M.A.L.L.B., Ph.D. के सहयोग से तैयार किया गया है ।

जैन धर्मावलम्बी वैश्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से क्वचित भिन्न रहते हुए भी, लौकिक एवं सामाजिक दृष्टि से अखिल भारतीय वैश्य समाज का सदैव से अभिन्न अंग रहते आए हैं । अतएव वैश्य जाति के इतिहास एवं उपलब्धियों का कोई भी विवरण जैन वैश्यों के तत्सम्बन्धी योगदान के परिचय के बिना अधूरा ही रहेगा । उसका उचित मूल्यांकन करने के लिए जैन धर्म और उसकी सांस्कृतिक परम्परा का तथा उसमें वैश्यों की स्थिति, स्थान एवं उपलब्धियों का परिचय आवश्यक है । स्थानाभाव के कारण भले ही वह अति संक्षिप्त संकेत-सूचन मात्र ही हो ।

(२८·०१) जैन धार्मिक परम्परा :

राग-द्वेष-काम-क्रोध-मोहादि विकारों पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाले आत्म-विजेता को 'जिन' या जिनदेव कहते हैं--उन्हें ही केवली अर्हत या अरहंत भी कहते हैं । अर्हतों में से कई तीर्थंकर भी कहलाते हैं, क्योंकि वे वीतराग बनकर समस्त प्राणियों के हित के लिए मार्ग प्रवर्तित करते हैं और जन्म-मरण रुपी संसार-सागर से पार करने वाले धर्म-तीर्थ की स्थापना करते हैं । जिन देवों द्वारा पुरस्कृत यह धर्म-व्यवस्था ही जिन धर्म या जैन धर्म कहलाती है, और उसके अनुयायी जैन कहलाते हैं । प्राचीन भारतीय साहित्य में इस परम्परा के उल्लेख आर्हत. श्रमण, व्रात्य, निर्ग्रन्थ आदि नामों से भी प्राप्त होते हैं । इसके गृहत्यागी तपस्वी साधुओं को श्रमण, निर्गन्थ या मुनि, साध्वियों को आर्यिका, गृहस्थ पुरुषों को श्रावक और गृहस्थ स्त्रियों को श्राविका कहते हैं । सरावग, सरावगी, सराक, सेपड़े आदि श्रावक शब्द के अपभ्रंश रूप हैं ।

(२८·०२) जैन धर्म की उपधारायें :

जैन परम्परा में समय-समय पर अनेक सम्प्रदाय-उपसम्प्रदाय भी उदय में आते रहे, जिनमें से वर्तमान में दो प्रमुख सम्प्रदाय हैं-दिगम्बर और श्वेताम्बर । दिगम्बर सम्प्रदाय अपने मन्दिरों में अपने इष्टदेव जिनेन्द्रों, अर्हतों या तीर्थंकरों की यथा-जातरूप दिगम्बर-वीतराग-ध्यानस्थ प्रतिमाओं की पूजा-अर्चा-उपासना करता है, और मोक्षरूपी परम साध्य की साधना में साधक की चरमावस्था के लिए सर्वथा निरारंगी-निष्परिग्रही-निरीह दिगम्बर रूप को अनिवार्य मानता है । इस सम्प्रदाय में तीन पंथ हैं- तेरह पंथ-शुद्धाम्नाय, बीसपंथ या भट्टारक पंथ और तारणपथ जो मूर्ति पूजा को आवश्यक नहीं मानता । श्वेताम्बर परम्परा में दो प्रमुख पंथ हैं-मन्दिरमार्गी, संवेगी या श्रृंगारी जो जिन मूर्तियों को मुकुट-कुंडल-हार आदि से अलंकृत करता है और मुक्ति की साधना के लिए दिगम्बरत्व को अनिवार्य नहीं समझता । दूसरा भेद साधुमार्गी है जो मन्दिर-मूर्ति-पूजा का विरोधी है । इसमें भी दो भेद हैं, एक स्थानकवासी और दूसरे तेरापंथी । श्वेताम्बर परम्परा के सभी साधु वस्त्रधारी होते हैं, जिनमें से स्थानकवासी और श्वे० तेरापंथी साधु मुखपत्ती भी धारण किए रहते हैं । दिगम्बर सम्प्रदाय के क्षुल्लक, ऐल्लक, भट्टारक आदि साधु सवस्त्र रहते हैं, किन्तु मुनि दिगम्बर रहते हैं । साध्वियां सभी सम्प्रदायों की सवस्त्र ही रहती हैं । सभी जिन सम्प्रदायों में तत्वज्ञान, सिद्धान्त दर्शन, आत्मसाधना के प्रकार और परम लक्ष्य, तथा पुराण-पुरुषों से सम्बन्धित अनुश्रुतियों को लेकर प्रायः कोई मत-भेद नहीं है, जो कुछ हैं वे अधिकांशतः साधुवेश, साधुचर्या, पूजापद्धति, क्रियाकाण्ड तथा कतिपय गौण पुरातन परम्पराओं को लेकर ही हैं । सभी सम्प्रदाओं ने जैन संस्कृति के संवर्धन में योगदान दिया है और वे उसका तथा जैनत्व का संरक्षण करते आए हैं ।

(२८·०३) वैदिक और जैन संस्कृतियें सहोदरा बहिने हैं ।

जैन धर्म और संस्कृति विशुद्ध भारतीय, स्वतन्त्र एवं मौलिक हैं— किसी भी अन्य परम्परा से उद्भुत या उसकी शाखा-प्रशाखा नहीं है । उसका प्रचलन एवं प्रसार भी भारतवर्ष के कोने-कोने में उसकी मूलतः देशज भारतीय जनता के बीच ही मुख्यतया रहता आया है । वह न तो किसी एक ईश्वरीय या पैगम्बरी धर्मग्रन्थ पर अवलम्बित किताबी धर्म है, और न किसी एक व्यक्ति द्वारा समय विशेष या स्थान विशेष में प्रदर्शित कोई ऐतिहासिक धर्म है; वरन् ब्राह्मण परम्परा के शैव वैष्णवादि हिन्दूधर्म की भांति परम्परामूलक एवं सनातन है । वस्तुतः भारतवर्ष में सुदूर अतीत में जबसे भी मानवीय सभ्यता, धर्म और संस्कृति का इतिहास मिलना प्रारम्भ होता है, तभी से दो सांस्कृतिक धाराएं साथ-साथ प्रवाहमान होती मिलती हैं । एक प्रवृत्ति प्रधान, बहु देवतावादी, ऐहिलौकिक, वेदाश्रित ब्राह्मण या बहित धारा रही जिसका प्रतिनिधित्व आज का अनेक सम्प्रदायों एवं पंथों में विभक्त हिन्दू धर्म करता है । दूसरी निवृत्ति प्रधान, अहिंसामूलक, अध्यात्मवादी अहित या श्रमण धारा रही, जिसका प्रतिनिधित्व जैनधर्म करता है—बौद्धादिक कई अन्य तीर्थक सम्प्रदाय भी छठी शती ई० पूर्व के लगभग उसी में उत्पन्न हुए थे, जिनमें से बौद्धधर्म को छोड़कर अन्य सब प्रायः नामः शेष हो गए, और बौद्धधर्म भी गत एक सहस्र वर्षों में स्वयं भारतवर्ष में तो प्राय. तिरोहित रहा । किन्तु जैनधर्म की धारा इस देश में अविच्छिन्न बहती आई है—किसी काल और प्रदेश में अत्यधिक प्रभावशाली रूप में तो किसी में अल्प प्रभाव रखती हुई ।

मूल भारतीय संस्कृति की श्रमण और ब्राह्मण नामक दोनों ही सहोदरा धाराओं में परस्पर संघर्ष भी हुए, आदान-प्रदान भी हुए, एक ने दूसरे को प्रभावित भी किया । परिणामस्वरूप हिन्दू परम्परा ने अनेक आचार एवं विचार जैन परम्परा से ग्रहण किए । दोनों परम्पराएं एक दूसरे की पूरक होकर चलती आई हैं । निहित स्वार्थी

ने कभी-कभी उनमें वैमनस्य, विरोध, विद्वेष आदि को भी बढ़ावा दिया, किन्तु सामान्यतः सहिष्णुता और सहअस्तित्व का ही प्राधान्य रहा। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि एक ही देशज एव चिरसंगिनी होने के कारण दोनों के ही अनुयायी भारतवर्ष के प्रायः प्रत्येक भाग में और प्रत्येक वर्ष, जाति, वर्ण, व्यवसाय में साथ-साथ रहते आए हैं। ऐसे अनगिनत ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध हैं कि एक ही परिवार में कोई सदस्य शैव या कोई वैष्णव, कोई बौद्ध और कोई जैन रहा। आज भी, विशेषकर वैश्य परिवारों में अनेक ऐसे हैं जिनके कुछ सदस्य जैनधर्म का पालन करते हैं तो कुछ वैष्णव, शैव या आर्य-समाजी मत का। ऐसे परिवारों में परस्पर रोटी-बेटी व्यवहार भी प्रायः निर्बाध चलता रहा है। इसके अतिरिक्त, ऐतिहासिक युग के पूर्व के पौराणिक युग के ऋषभ, भरत, राम, कृष्ण आदि प्रायः सभी प्रमुख पुराण पुरुष दोनों ही परम्पराओं में समान रूप से समादृत हैं, तत्सम्बन्धित अनुश्रुतियों का संरक्षण भी दोनों ही परम्पराओं ने अपने-अपने ढंग पर किया है। वस्तुतः जैसा कि स्व० डा० जयचन्द्र विद्यालंकार ने कहा है, 'उक्त प्रागैतिहासिक पुराणयुग का भारत का इतिहास जैनों का भी उतना ही अपना है, जितना कि वेदों को मानने वालों का।' देश के प्रायः प्रत्येक भाग में जैनों के प्राचीन तीर्थ, धार्मिक स्मारक एवं पुरावशेष बिखरे पड़े हैं। ऐसा शायद ही कोई प्राचीन स्थान हो जिसकी हिन्दुओं में तीर्थ रूप से मान्यता है और जैनों का उससे कोई धार्मिक सम्बन्ध न हो, और शायद ही कोई ऐसा जैन तीर्थक्षेत्र हो जिसके साथ हिन्दुओं का धार्मिक लगाव न हो। जन-जीवन के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में सहयापन, समान भाषा, रहन-सहन, खान-पान, पर्व-त्यौहार, पूजा पद्धति, क्रियाकाण्ड, रीति-रिवाज आदि इतने अभिन्न या समान हैं कि एक बाहरी व्यक्ति को जैन और हिन्दू एक ही समाज के अभिन्न अग प्रतीत होते आए हैं। गत-दो-डेढ़ शताब्दियों में तो यह तथ्य और अधिक चरितार्थ हुआ है, क्योंकि पूर्वकालों में तो जैनधर्म के अनुयायी ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र, सभी वर्णों और उनकी प्रायः सभी जातियों उपजातियों में पर्याप्त संख्या में रहे, किन्तु इधर जैन धर्मानुयायी मुख्यतया वैश्य जातियों में ही सीमित होते चले गए।

इस सम्बन्ध में एक तथ्य और ज्ञातव्य है कि सनातन हिन्दू और जैन परम्पराओं के इतने सुदीर्घकालीन नैकट्य, प्रभूत आदान-प्रदान, विभिन्न एवं विविध साम्यों के बावजूद भी दोनों ही परम्पराओं ने अपना-अपना जो स्वतन्त्र व्यक्तित्व अक्षुण्ण एवं अविच्छिन्न बनाए रक्खा है, और अपने-अपने ढंग पर अपना जो स्वतन्त्र विकास करती आई है, उसका प्रधान कारण दोनों परम्पराओं के बीच कतिपय मौलिक सैद्धान्तिक, तात्विक, दार्शनिक, वैचारिक एव आचारविषयक अन्तर हैं। उन्हीं के कारण वे दोनों परस्पर पूरक बनी रही हैं, और एकता में अनेकता चरितार्थ करती आई हैं।

२८.०४] ब्राह्मणीय वर्ण-व्यवस्था में वैश्य वर्ण

प्रथम अध्याय में इस विषय में सुस्थिर किये सिद्धान्तों का सारांश यह है कि वैश्य शब्द की व्युत्पत्ति 'विश' शब्द से हुई है। वैदिक सभ्यता के उदयकाल में जब वैदिक आर्यों के घुमन्तु कबीलों ने पश्चिमोत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में ग्राम बसाकर रहना प्रारम्भ किया तो प्रत्येक ऐसी बस्ती और उसके निवासी सामूहिक रूप से 'विश' कहलाते थे, और उनके सदस्य वैश्य। उनमें परस्पर कोई भेदभाव नहीं था। उनका मुख्य उद्योग कृषि तथा पशुपालन था, जिसके साथ-साथ व्यापारिक प्रवृत्ति भी प्रारम्भ हुई। स्थायी निवास तथा स्थायी उद्योग रहने के कारण यह आवश्यकता प्रतीत हुई कि विश या जन में जो व्यक्ति शारीरिक परिश्रम के प्रायः अनुपयुक्त, किन्तु वय-वृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध होने के कारण आदरणीय थे, उन्हें 'विश' का मार्ग दर्शन, शिक्षा-दीक्षा, धार्मिक कृत्य, बस्ती की स्त्रियों और बच्चों की देखभाल आदि कार्य सौंपे गये, और वे ब्राह्मण कहलाए-उन्हीं में से विशेष ज्ञानियों और सम्माननीयों को ऋषि कहा गया। कुछ लोगों को विश की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया और उन्हें क्षत्रिय संज्ञा दी गई। शेष सब दिनभर बस्ती के बाहर खेतों में काम करते, चरागाहों में पशु चराते, और अपने अतिरिक्त उत्पादनों के विनिमय के लिए अन्य बस्तियों के साथ आवश्यक व्यापार करते थे। ये सब वैश्य कहलाए। श्रमजीवियों और कर्मकरों को शूद्र संज्ञा दी गई। उनसे विविध सेवा कार्य लिए जाते थे। विश या जन का बहुभाग एवं प्रधान अंग सबका भरण-पोषण करने वाला वैश्य समुदाय था, शेष तीन उसके सहयोगी एव सहकारी थे। इस प्रकार कार्य-विभाजन की सुविधा की दृष्टि से ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य शुद्र रूपी चतुवर्ण व्यवस्था का उदय हुआ। यह विभाजन कर्मतः था, जन्मतः नहीं। समस्त समाज एक इकाई थी, सबसे परस्पर रोटी-बेटी व्यवहार अबाध था और वर्ण-परिवर्तन सामान्य बात थी। शनैः शनैः वह वंश परम्परागत व रूढ होती चली गई। उत्तर-वैदिक युग या रामायण-महाभारत-पुराणादि में वर्णित युगों में, विशेषकर मनुस्मृति आदि स्मृतियों के निर्माणोपरान्त, हिन्दू समाज के वर्णाश्रम व्यवस्था जन्मगत एवं रुढ़ हो गई। इतना ही नहीं, प्रत्येक वर्ण में अनेक जातियां उपजातियां उत्पन्न होती गईं। धर्म एवं ज्ञान का प्रायः एकाधिकार ब्राह्मण वर्ण के हाथ में आने से वह सर्वोपरि हो गया, और राज्य सत्ताओं के जम जाने पर क्षत्रिय वर्ण द्वितीय स्थान पर रहते भी सवाधिक शक्ति-सम्पन्न हो गया। वैश्य वर्ण, जो कभी सर्व प्रधान था, तृतीय स्थान पर आ गया. किन्तु प्रायः समग्र अर्थतन्त्र का संचालक होने के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण बना रहा। इन तीनों ही वर्णों को द्विज संज्ञा भी प्राप्त हुई, शेष द्विजेतर की स्थिति समाज में निम्न स्तर पर रही। पूर्व मध्यकाल तथा मध्यकाल में जाति-प्रथा का विस्तार हुआ। जातियां-उपजातियां रूढ होती चली गई, प्रत्येक जाति-उपजाति का अपना-अपना स्वतन्त्र संगठन विकसित हुआ और रोटी-बेटी व्यवहार भी जातिगत सीमित हो गया।

२८.०५] जैन धर्म और वर्ण-व्यवस्था

जैन परम्परा की अनुश्रुतियों के अनुसार कर्मप्रधान मानवी सभ्यता के पूर्व भारत क्षेत्र के मध्य देश में मानव-जन का जीवन प्रकृत्याश्रित

एवं भोगप्रधान था । इस काल में एक के बाद चौदह कुलकर या मनु हुए जिन्होंने उन मानव कुलों (या कबीलों) का नेतृत्व, संरक्षण एवं मार्गदर्शन किया । अन्तिम कुलकर एवं मनु नाभिराय थे जो अपनी चिरसंगिनी महादेवी के साथ उस वन में निवास करते थे जहाँ कालान्तर में आद्यनगरी अयोध्या की स्थापना हुई । उनके पुत्र प्रथम तीर्थंकर आदि देव ऋषभनाथ थे । जैन वाङमय के अनुसार उन्हें ही भोगयुग के अवसान और कर्मयुग तथा मानवी सभ्यता के आविर्भाव का श्रेय है । उन्होंने मानवों को असि-मसि-कृषि-शिल्प-विद्या-वाणिज्य रूपी षटकर्मों का शिक्षण दिया; ग्राम नगर आदि बसाये, राज्य व्यवस्था और समाज व्यवस्था की; विवाह प्रथा चलाई, और मानवों के कर्म एवं प्रवृत्ति अनुसार क्षत्रिय, वैश्य और शुद नामक तीन वर्णों की स्थापना की । तदुपरान्त स्वराज्य को अपने सौ पुत्रों में विभाजित करके और अयोध्या राज्य का उत्तराधिकार ज्येष्ठ पुत्र भरत को सौंपकर उन्होंने सर्वथा निस्संग रूप में वन में जाकर तपस्या की, कैवल्य की प्राप्ति की और मानवों को उनके हित-सुख के लिए धर्म एवं मोक्ष पुरुषार्थों का उपदेश दिया । उनके पुत्र भरत ही भरत क्षेत्र के सर्वप्रथम चक्रवर्ती सम्राट हुए और उन्हीं के नाम पर यह महादेश भारतवर्ष कहलाया । श्रीमद् भागवत आदि प्रायः सभी प्रमुख ब्राह्मणीय पुराणों में उपरोक्त नाभेय ऋषभ एवं उनके पुत्र भरत के उल्लेख बहुत कुछ जैन पुराणों जैसे ही हैं, बल्कि वहाँ इन ऋषभदेव को भगवान विष्णु का एक प्रारंभिक (आठवाँ) अवतार भी रहा बताया है । जैन पुराणों के अनुसार भ. ऋषभदेव ने क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र, तीन ही वर्ण स्थापित किये थे । भरतचक्रवर्ती ने संयम-त्याग-ज्ञान ध्यान की विशेषताओं से युक्त व्यक्तियों को ब्राह्मण संज्ञा देकर चतुर्थ वर्ण की भी स्थापना की । इस प्रकार जैन परम्परा में चतुवर्ण व्यवस्था प्रचलित हुई, किन्तु वह कार्य–विभाजन की सुविधा के लिए ही अंगीकृत हुई, और कर्मतः ही रहीं, जन्मतः नहीं । साथ ही तीर्थंकर युग में, अर्थात् मानवी सभ्यता के आदि काल में हुए प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से लेकर चौबीसवें तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर पर्यन्त के सुदीर्घ काल में व्यवस्था का दार्शनिक रूप उपदिष्ट हुआ । अल्पाधिक अन्तराल से होने वाले चौबीसोंतीर्थंकर क्षत्रियवर्ण के थे, उनके गणधरादि प्रधान शिष्यों एवं तत्तद् परम्पराओं के आचार्यों में अनेक ब्राह्मण भी हुए, कई एक वैश्य भी हुए । तीर्थंकर युग में वर्ण व्यवस्था कर्मतः होने के कारण परिवर्तनीय भी थी, और चारों ही वर्णों में परस्पर रोटी-बेटी व्यवहार भी चलता था । आदि तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ के कुछ ही कालोपरान्त अयोध्या पति मर्यादा पुरुषोत्तम ऋषभ का समय तो अतीतयें गणनातीत है, बीसवें तीर्थंकर महाराज रामचन्द्र इन ऋषभदेव के ही इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न हुए थे और वाल्मीकिय रामायण तथा पद्मपुराणादि जैन-रामायणों में वर्णित घटनायें घटीं थीं । बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ (अरिष्टनेमि) महाभारत कालीन नारायण कृष्ण को जैन पुराणों में उनका ताऊजात भाई बताया है । वेद व्यास रचित महाभारत की भांति ही युग की घटनाएं जैन हरिवंश पुराण में विस्तार से वर्णित हैं । तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ (८७७–७७७ इ. पू.) काशी के उरगवंशी राजकुमार थे और अन्तिम तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर (५९९–५२७ ई०पू०) वैशाली के ज्ञातृकवंशी व्रात्य क्षत्रिय राजकुमार थे ।

२८.०६ जैन धर्म और वैश्य जाति

भारतीय जनता का बहुभाग प्रारम्भ से ही सहस्त्रों वर्ष पर्यन्त वैश्य रहा आया । वैश्य जाति के आचार विचार, रहन-सहन और आजीविका के कृषि, पशुपालन, व्यापार उद्योग-धन्धे आदि साधन शान्ति-पूर्ण रहे । अतएव अहिंसा प्रधान एवं दयामूलक जैन धर्म के प्रति वैश्य समुदाय का विशेष आकर्षण प्रारम्भ से ही रहता आया, और इस धर्म के गृहस्थ अनुयायी श्रावक–श्राविकाओं में वैश्यों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक रहती आई । गुरुमुख से अपने हित के वाक्य सुनकर उन पर श्रद्धा; विवेक एवं क्रिया रूप आचरण करने वाला श्रावक कहा जाता है । दान-पूजा-शील–उपवास उसके चार मुख्य धार्मिक कर्तव्य हैं, अथवा देव पूजा-गुरुपास्ति-स्वाध्याय-संयम-तप-दान रूपी दैनिक षटकर्मों का यथाशक्ति अभ्यास करने वाला सद्गृहस्थ श्रावक होता है । धर्म पूर्वक सम्पादित उसके अर्थ एवं काम पुरुषार्थों की निर्बाध साधना में जैन धर्म तनिक भी बाधक नहीं होता अपितु साधक ही होता है । जैन पुराणों एवं कथाओं में अनगिनत धर्मात्मा सेठों, महाजनों, सार्थवाहों आदि के उल्लेख प्राप्त हैं । वैश्य जाति अर्थ प्रधान एवं कर्मप्रधान होने के कारण समाज के अन्य सब वर्गों का सामान्यतया और साधु-संतों, ज्ञानी-ध्यानियों तथा अभावग्रस्तों का विशेषतया अपनी दान प्रवृत्ति द्वारा भरण-पोषण करना अपना सर्वप्रथम धर्म मानती आई, अतएव पूर्वकाल में समस्त परिग्रह का त्याग करके मुनिदीक्षा लेने और वन में जाकर तपस्या करने वाले वैश्यों के उल्लेख क्षत्रियों और ब्राह्मणों की तुलना में बहुत कम हैं । वैसे भी मुनिदीक्षा लेने के पश्चात् उक्त साधु या साध्वी का कोई वर्ण या जाति नहीं रहती, उसके गृहस्थ अवस्था के सारे नाते-रिश्ते और सम्बध समाप्त हो जाते हैं ।

तीर्थंकर युग अथवा वैदिक और पौराणिक युगों में वर्ण तो थे किन्तु उनके अन्तर्गत जातियां-उपजातियां नहीं थीं । केवल क्षत्रियों और ब्राह्मण के कतिपय कुल–गोत्रादि थे । प्रारम्भ में वैश्यों के कुल गोत्रादि भी नहीं थे - **वैश्य मात्र एक वर्ण और एक जाति थी।** श्रेष्ठि, महाजन, साहु, वणिक, गृहपति गाथापति आदि विशेषण, अथवा लगभग २००० वर्ष प्राचीन मथुरा आदि के शिलालेखों में व्यवसाय परक सार्थवाह, मानिकर (जौहरी), गंधी, स्वर्णकार, लौहकारुक, काष्ठवणिक, रायंगिनि, घृत या तैल व्यापारी, आदि नाम प्रयुक्त मिलते हैं । किन्तु तदन्तर, संभवतया यूनानी पल्हव, शक, कुषाण, हुण, पारसी आदि अनेक बाहिरी जातियों के आगमन तथा यहां बसकर यहां की जनता में मिश्रित हो जाने के परिणाम स्वरूप, प्रायः सभी वर्णों में, विशेषकर वैश्यों में जातियां उपजातिय उदय में आने लगी कभी स्थान विशेष के नाम पर, या किसी पूर्व पुरुष के नाम पर, या किसी गुरु के नाम पर, अथवा व्यवसाय विशेष या किन्हीं ऐतिहासिक – सामाजिक परिस्थितियों के कारण । तथापि आठवीं– नवीं शती ई० तक वैश्यों की जातियों – उपजातियों के स्पष्ट नामांकित उल्लेख

साहित्य या अभिलेखों में प्राप्त नहीं होते। किन्तु उसके पश्चात इन जातियों-उपजातियों की संख्या में द्रुत वेग से वृद्धि हुई, उनके अपने-अपने स्वतंत्र संगठन बनने लगे और विकास होने लगा। आज वैश्यों की चौरासी जातियों की संख्या रूढ़ सी हो गई है, कई मध्यकालीन सूचियों में उनका उल्लेख है। केवल कतिपय जाति-नामों के अन्तर है। वैश्यों की प्रमुख जातियां-अग्रवाल, खण्डेलवाल, ओसवाल, श्रीमाल, जैसवाल (जायसवाल), पल्लीवाल (पालीवाल), पद्मावती पुरवाल, गृहपति (गहोई), बघेरवाल (बघेरवाल): पोरवाल, प्राग्वाट, परवार, गोलापुरब, गोलालारे, गोलश्रृंगारे, लमेचु, खरौआ, बुढ़ेलवाल, हूमड़, रोहतगी, माहौर, केसरवानी, महेश्वरी, सेंतवाल, बरनवाल आदि हैं। जिनका इतिहास पीछे लिख आये हैं: इनमें से प्रत्येक में एकाधिक उप-जातियां गोत्र या अल्लभी हैं, यथा अग्रवालों में दस्से, बीसे, अथवा राजवंशी लोहिया, गिदौड़िया, दिल्लीवाल, देसवाल आदि उपजातियां और गर्ग, गोयल, मित्तल, बंसल, वंसल, जिन्दल, तायल आदि गोत्र। इनमें से प्राय किसी भी जाति उप-जाति का परम्परा-इतिहास भी दो हजार वर्ष से प्राचीन नहीं है, और किसी का भी स्पष्ट उल्लेख हजार ग्यारह सौ वर्ष से अधिक पुराना नहीं मिलता। साथ ही प्रायः इन सभी जातियों में जैन धर्म की अल्पाधिक प्रवृति उनके प्रारंभ से ही रहती आई है, आज भी है। इसके अतिरिक्त, भारतीय इतिहास के प्राचीन युग के प्रायः अवसान पर्यन्त भी जबकि वैश्यों के अलावा ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्र वर्गों के भी पर्याप्त संख्यक व्यक्ति जैन धर्म के अनुयायी थे। गत लगभग एक सहस्त्र वर्षों में अन्यवर्गों में जैनों की संख्या शनैः शनैः विरल होती गई, और वह अधिकांशतया एवं मुख्यतया वैश्य जातियों मे ही सीमित होता चली गई। वर्तमान में जैनधर्मावलम्बियों की संख्या जैन संस्थाओं के अनुसार कुछ कम एक करोड अनुमानित है, और उसका लगभग नब्बे प्रतिशत वैश्य हैं। दक्षिणात्य प्रदेशों में कहीं-कहीं अनेक ब्राह्मण और शुद्र भी जैन हैं। राजस्थान एवं मध्यभारत में कितने ही क्षत्रिय-राजपूत भी जैन हैं, और बिहार उडीसा आदि में जैन समाज की मुख्य धारा से कटे अनेक सराक (मूलतः श्रावक) भी हैं। मध्यकाल के प्रारंभ तक जैनों की संख्या अब की अपेक्षा कई गुना अधिक थी, किन्तु बौद्धों, शैव, नयनारों, वैष्णव अलवरों, श्री वैष्णवों, वीर शैवों (लिंगायतों), मुसलमानों और ईसाइयों, अन्त में आर्य समाज आदि के प्रचार प्रसार से जैनों की संख्या एवं प्रभाव में निरन्तर ह्रास होता आया। तथापि आज भी भारतीय संघ के प्रायः सभी राज्यों में, उनके प्रायः सभी जिलों में, सभी प्रमुख नगरों एवं व्यापार केन्द्रों में जैन धर्मावलम्बियों का निवास है। उनके तीर्थ स्थान, पुरावशेष, धार्मिक स्मारक, लोकोपकारी संस्थाएं भी महादेश में प्रायः सर्वत्र फैली हुई हैं। भारत वर्ष के बाहर अनेक पश्चिमी एवं पूर्वी देशों में भी अनेक सम्पन्न जैन प्रवासी बसे हुए हैं। वैश्यों ने महादेश की संस्कृति, राष्ट्रीय जीवन तथा जन जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशंसनीय प्रभूत योगदान दिया है, और आज भी दे रहे हैं।

२८.०७ धार्मिक सिद्धान्त

जैन धर्म का सिद्धान्त, तत्व ज्ञान, दर्शन, विचार पद्धति और आचार मार्ग मौलिक एवं स्वतंत्र हैं। जीव और अजीव (चेतन और जड़, या आत्म और अनात्म) दोनों अनादि-निधन शाश्वत तत्व है। जीवात्माएं अनन्त हैं, और परमाणु रुप में पुद्गल द्रव्य भी अनन्त हैं। प्रत्येक आत्मा ज्ञानगुण विशिष्ट चैतन्य अमूर्त तत्व है जबकि पुद्गल रुप-रस गन्ध-वर्णादि वाला मूर्त द्रव्य है। ये दोनों ही इस चराचर विश्व के मुख्य उपादान हैं। इस विश्व का न कोई स्रष्टा है, न पालन कर्त्ता और न संहारकर्त्ता है। जीव और अजीव के संयोग से ही प्रत्येक जीवात्मा का जन्म-मरण रुप संसार प्रवाहमान है। आत्मा के राग-द्वेष काम-क्रोधादि विकारों के कारण ही जीव के साथ पुद्गल का दुखदायी संबन्ध होता है, और जब कोई आत्मा संयम-तप-ध्यान आदि द्वारा आत्मशोधन करके उन समस्त विकारों से मुक्त हो जाता है, तो वह निराकार-निर्विकार-शुद्ध-बुद्ध परमात्मा बन जाता है। आत्मा अपने प्रमाद और अज्ञानवंश संसार चक्र में फंसा रहता है, अपने किए कर्मों का फल भोगता रहता है। किन्तु जब वह जागरुक होता है तो स्वपुरुषार्थ द्वारा वह कर्मजाल को छिन्न-भिन्न करके मुक्त परमात्मा हो जाता है। अपने गुणों और निहित शक्तियों एवं क्षमताओं की दृष्टि से सभी आत्मायें समान हैं। सभी में परमात्मत्व निहित है। किन्तु स्वोपार्जित कर्मों के फलस्वरूप ये आत्माएं आत्मिक विकास की विभिन्न ऊंच-नीच अवस्थाओं में पाई जाती हैं। जैन कर्म-सिद्धान्त विलक्षण है। उसका दर्शन आत्म एवं अनात्म तत्वों की सिद्धि आगम-प्रमाण, युक्ति, और तर्क से करता है। उसकी प्रमुख विशेषता है कि वह अनन्तधर्मा वस्तु तत्व की भिन्न-भिन्न पहलुओं और दृष्टियों से विवेचना करता है, अतएव वह दर्शन अनेकान्तवाद कहलाता है। उसकी अभिव्यक्ति के लिए कदाग्रहविहीन स्याद्वादमत पद्धति का आश्रय लिया जाता है, अतः वह स्याद्वादमत भी कहलाता हैं। जैन अध्यात्म शुद्ध आत्मतत्व के स्वरुप, उसकी साधना, प्रतीति अनुभूति और उपलब्धि पर बल देता है। उपनिषदों की आत्मविद्या, शांकर वेदान्त और निगुण संतों एवं सूफियों के रहस्यवाद में उसकी प्रतिच्छाया यत्र-तत्र दीख पड़ती है। जैन दृष्टि से वह वस्तु का निजी स्वभाव रूप निश्चय धर्म है। अतः व्यवहार धर्माचरण दो प्रकार का है-एक विषयाशावशातीत-निरारंभी-निष्परिग्रहीज्ञान-ध्यान-तपलीन मुनिधर्म है जिसमें मोक्षमार्ग की एक-निष्ठ साधना की जाती है, और जो पर्याप्त कठोर एवं दुर्गम है। दूसरा सामान्य संसारी गृहस्थ स्त्री पुरुषों का श्रावकाचार है, जो अपनी-अपनी क्षमता एवं परिस्थितियों के अनुसार व्रतों का एक देश पालन करते हैं, हिंसा-झूठ-चोरी-कुशील परिग्रह आदि पापों एवं कुव्यसनों से बचते हैं और शुभ प्रवृतियों में लीन रहने का प्रयत्न करते हैं। वे शुद्ध शाकाहारी होते हैं, मद्य मांसादि के सर्वथा त्यागी होते हैं, अन्य मादक यथा प्याज-लहसुन आदि तामसिक पदार्थों का भी सेवन नहीं करते, सूर्यास्त के उपरांत रात्रि में भोजन

नहीं करते, पानी तक छानकर पीते हैं। जीवदया पालन करने वाले करूणावान, उदार, दानी और परोपकारी होते हैं। किसी भी प्राणी को जानबूझ कर अपने स्वार्थ, द्वेष या आनन्द के लिए किसी प्रकार का भी मानसिक या शारीरिक कष्ट देना या पीडा पहुंचाना सबसे बड़ा पाप समझते हैं। इस प्रकार जैन धर्म एक आत्म-अस्तित्ववादी, वास्तविकतावादी, आशावादी, पुरुषार्थप्रधान, समत्व-सहयोग-सदभाव सह अस्तित्व की भावनाओं से पूर्ण स्वच्छ, सरल, सात्विक जीवन दृष्टि एवं जीवन पद्धति का प्रेरक तथा पोषक धर्म है।

जैनधर्मावलम्बी वैश्यों के आचार और विचार में, जीवन और व्यवहार में यह दृष्टि एवं पद्धति भली प्रकार मुखरित होती आई है। और उनके सहजीवि शैव-वैष्णवादि हिन्दु सम्प्रदाय भी उससे प्रभूत प्रभावित हुए हैं, विशेषकर उक्त सम्प्रदायों के वैश्य जातीय अनुयायियों के रहन-सहन में अपने जाति-बन्धु जैनों के रहन-सहन से प्राय: कोई स्थूल अन्तर प्रतीत नहीं होता। इसी कारण जैसे अग्रवाल जैनों और अग्रवाल वैष्णवों के बीच परस्पर सामाजिक आदान-प्रदान, रोटी-बेटी व्यवहार सहज चलता है, उसी प्रकार खंडेलवाल, जैसवाल, पल्लीवाल गहोई आदि अन्य वैश्य जातियों में भी चलता है। इतना ही नहीं, जैनों और वैष्णवों के देव मन्दिरों, तीर्थ स्थानों, पूजा पाठ, धार्मिक एवं लौकिक क्रियाकाण्ड, विवाह आदि संस्कारों, पर्व-त्यौहारों, रीति-रिवाजों आदि में भी एक अजनबी को कोई विशेष अन्तर दृष्टि गोचर नहीं होता। और, भारतीय संस्कृति एवं चिन्तन का मूल प्राणस्वर जो अध्यात्मवाद है वह भी जैन चिन्तन द्वारा जितना पुष्ट एवं प्रसारित हुआ है, उतना शायद किसी अन्य सम्प्रदाय के चिन्तन द्वारा नहीं हुआ। जैन संतो के व्यक्तित्व एव उपदेशों ने भारतीय जन साधारण को सदैव प्रभावित किया है।

[२८.०५] वैश्य जातीय जैन संत

पुराण कथाओं में जिन असंख्य योगिराजों, मुनियों, साध्वी आर्यिकाओं के उल्लेख प्राप्त हैं, उसमें अधिकांश क्षत्रिय रहे प्रतीत होते हैं, किन्तु अनेक वैश्य और ब्राह्मण भी थे और कुछ एक शूद्र भी। स्वयं भगवान महावीर के समय (छठी शती ई०पू०) में गृहपति आनन्द आदि जिन अध्यात्मरत सर्वोपरि दश आदर्श उपासकों या व्रती श्रावकों का विवरण प्राप्त हैं, वे सब अपने समय के अत्यत धनाढ्य वैश्य श्रेष्ठि थे। उनके अतिरिक्त सुदर्शन सेठ, धन्यकुमार (धन्ना जी), शालिभद्र, जिनदत्त आदि अन्य अनेक वणिक शिरोमणि थे। जिन्होंने विपुल वैभव का परित्याग करके मुनिदीक्षा ली और तपस्या की थी। शूरवीर श्रेष्ठि-पुत्र जम्बू कुमार भी एक ऐसे ही महापुरुष थे जो इस युग के अन्तिम केवलज्ञानी हुये। तदनन्तर दसवीं शती ई० पर्यन्त के काल में भी अनगिनत धर्मात्मा वैश्य हुए जिन्होंने श्रावक धर्म का निष्ठा पूर्वक पालन किया और कितनों ही ने मुनि जीवन भी जिया। किन्तु उस लगभग डेढ़ सहस्र वर्ष के काल में जिन प्रसिद्ध जैन संतों का जो कुछ परिचय प्राप्त है उस पर से यह कहना दुष्कर है कि उनमें से कौन सुनिश्चित रूप से वैश्य कुलोत्पन्न थे, सिवाय द्विसंधानकाव्य, नाममाला एवं विषापहारस्तोत्र के कर्ता भक्तराज श्रेष्ठिवर धनञ्जय (७ वीशती) जैसे कतिपय अपवादों के। तदुपरान्त, मध्यकाल में तो विभिन्न सम्प्रदायों के जैन संतों या साधु साध्वियों में वैश्य कुलों में जन्म लेने वालों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई, विशेषकर उत्तर, मध्य और पश्चिम भारत में। सुप्रसिद्ध आचार्य हेमचन्दसूरि (१२ वीं शती), आचार्य कल्प पं० आशाधर जी (१३ वीं शती), अन्य अनेक मुनि, आर्यिका, भट्टारक, यति, तथा गृहत्यागी उदासीन श्रावक वैश्य जातीय रहे। गत दो अढ़ाई सौ वर्षों में आचार्य भीखम जी, ब्रह्मरायमल्ल, पंडित प्रवर टोडर मल्ल, आनन्दधन, त्यागी बाबा दौलत रामजी, महात्मागाँधी के गुरु रायचन्द्र भाई, ऐल्लक पन्नालाल बाबा लालामनदास, बाबा भागीरथ वर्णी, ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद, महात्मा भगवानदीन, क्षु. गणेश प्रसाद वर्णी, स्वामि सहजानन्दजी, कान्हजी स्वामी प्रभृति अनेक वैश्य कुलोत्पन्न जैन आध्यात्मिक सन्त हुए। आज विभिन्न सम्प्रदायों के जैन साधु-साध्वियों की सख्या लगभग तीन-चार हजार है, और उनमें अधिकांश वैश्य जातीय हैं। ये जैन सन्त निष्परिग्रही, भिक्षाचारी एवं पदबिहारी होते हैं और जन-जन को धार्मिक आस्था, नैतिकता, सदाचरण और अध्यात्म का उपदेश निरन्तर देते रहते हैं।

[२८.०६] साहित्यिक क्षेत्र :

धर्म के पुरस्कर्ता प्रत्येक तीर्थंकर ने अपने-अपने समय में सद्धर्म का दिव्य उपदेश दिया था, जिसे उनके गणधरादि प्रधान शिष्यों ने निबद्ध किया, आगामी तीर्थंकर के उदयकाल तक वही श्रुतागम चलता रहा। अन्तिम तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर के दिव्य उपदेशों को भी इसी प्रकार उनके इन्द्रभूति गौतम आदि गणधरों ने निबद्ध किया। सम्पूर्ण जैन धर्मशास्त्र चार अनुयोगों में विभाजित है—करणानुयोग, दिव्यानुयोग, प्रथमानुयोग और चरणानुयोग। इसके अतिरिक्त भक्ति साहित्य, स्तोत्र-स्तवन, पूजा-पाठ, मन्त्रशास्त्र आदि विविध प्रकीर्णक धार्मिक साहित्य हैं।

तीर्थंकरों का, विशेषकर भगवान महावीर का उपदेश तत्कालीन जनभाषा अर्धमागधी प्राकृत में हुआ था, अत: जैन आगमों तथा आगमिक साहित्य की भाषा प्राकृत थी। दसवी शती ई० के उपरान्त प्राकृत भाषा में ग्रन्थ रचना विरल हो गई। संस्कृत में भी ई० सन के प्राय: प्रारम्भ काल से ही जैन साहित्य रचा जाता रहा, मध्यकाल के उपरान्त तक भी यह प्रवृति चलती रही। अपभ्रंश भाषा लगभग छटी शती ई० से १५ वीं-१६ वीं शती तक चलती रही। तमिल, कन्नड आदि द्रविड भाषाओं में भी प्राचीन एवं मध्यकाल में विपुल जैन साहित्य रचा गया। हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी आदि देशभाषाओं में उनके उदयकाल (१२वीं १३वीं शती ई.) से लेकर वर्तमान पर्यन्त ने विपुल जैन साहित्य रचा गया।

दसवीं शती पर्यन्त के प्राय: सभी जैन ग्रन्थकार संसार त्यागी मुनिपदधारी आचार्य थे, उनमें से कितने और कौन निश्चित रूप से वैश्यकुलोत्पन्न थे, यह कहना कठिन है। किन्तु मध्यकाल के विभिन्न भाषायिक जैन ग्रन्थकारों में गृहस्थ विद्वान पंडितों, कवियों आदि की

संख्या सैकड़ों में है और उनमें से अधिकतर वैश्यकुलोत्पन्न रहे हैं। वर्तमान में भी अनुमानतः साधिक दो हजार अच्छे जैन विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, कवि एवं लेखक हैं। इस प्रकार विभिन्न भाषाओं और उनके विविध विषयक साहित्य की अभिवृद्धि में जैन वैश्यों का प्रभूत एवं प्रशंसनीय योगदान रहा है।

[२८·०७] कला क्षेत्र :

जैनों ने काव्य, संगीत, चित्र, मूर्त एवं स्थापत्य प्रभृति सभी ललित कलाओं के संवर्धन में प्रभूत एवं प्रशंसनीय योगदान दिया है। विशेषकर मन्दिरों, देवमूर्त्तियों एवं विविध धार्मिक स्मारकों तथा कलाकृतियों के निर्माण में उन्होंने अत्यन्त उत्साह, सुरुचि एवं उदारता का परिचय दिया है। उनके तीर्थक्षेत्र, धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र देश के प्रायः प्रत्येक भाग में फैले हुए हैं और अपने कलात्मक महत्व के कारण देशी-विदेशी कलामर्मज्ञों के आकर्षण का केन्द्र बने हैं। सित्तनवासल (तमिल देश) खंड गिरि-उदय गिरि (उडीसा) बादामी व एलोरा (महाराष्ट्र), धाराशिव (आन्ध्र), राजगिर (बिहार), उदयगिरि (म. प्र.) आदि के जैन गुहामंदिर, लगभग दो हजार वर्ष प्राचीन शक-कुषाण कालीन मथुरा में अनेक धर्मात्मा वैश्य स्त्री पुरुषों द्वारा निर्मापित धार्मिक कला कृतियाँ, पाहिल श्रेष्ठि, पाडाशाह आदि द्वारा निर्मापित खजुराहो आदि के कलापूर्ण जिनालय (१० वीं शती), चन्द्रावती के राजा और भीम सोलंकी के मंत्री विमलशाह (१०३० ई०) तथा बघेलों के मंत्रीद्वय वस्तुपाल-तेजपाल (१२३२ ई०) द्वारा निर्मापित आबूपर्वत पर देलवाड़ा के विश्वप्रसिद्ध जिनमंदिर, राजस्थान में सेठ धन्नाशाह-रत्नाशाह (१५ वीं शती) द्वारा निर्मापित राणकपुर का प्रख्यात चतुर्मुख मंदिर कर्नाटक के श्रावणबेल गोल मूडबिद्री आदि की बसदियाँ (मंदिर), गुजरात के शत्रुंजय-पालीताना, गिरनार, तारंगा आदि, उ० प्र० के देवगढ़, म० प्र० के चन्देरी, आहार पपौरा, बागपुर दुधई ग्वालियर आदि के मध्यकालीन जिनालय, आधुनिक युग में कलकत्ता का राय बद्रीदास का उद्यान मंदिर, बेलगछिया का मंदिर, बिहार में सम्मेद शिखर, पावापुर आदि के जिनालय, उ० प्र० में सेठ छदामीलाल द्वारा निर्मापित फिरोजाबाद का जिन मंदिर उ० प्र०, म० प्र०, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात आदि राज्यों के अनगिनत सुन्दर जिनालय, जो भारतीय स्थापत्य के गौरव है, सब जैन वैश्यों की ही धार्मिक उदारता के प्रमाण हैं।

अनेक स्थानों में कलापूर्ण उत्तुंग मानस्तम्भ है---चित्तौड़ का सुप्रसिद्ध आदिनाथ कीर्तिस्तंभ (१४वीं शती) भी एक जैन सेठ शाहजीजा द्वारा निर्मापित है। जिन मूर्तियों के निर्माण एवं प्रतिष्ठा--पना में जैन वैश्यों का अत्यधिक उत्साह रहता आया है। ये मूर्तियाँ विविध पाषाण, अष्टधातु, कांस्य, स्वर्ण, रजत, स्फटिक तथा अल्पमूल्य एवं बहुमूल्य रत्नों से निर्मित हुई और आकार में यव परिमाण से लेकर ८४-८५ फुट ऊंची विशालकाय भी हैं। श्रवणबेलगोल, कारकल, वेणूर, श्रमणगिरि, धर्मस्थल, कुंभोज-बहुबलि आरा, फिरोजाबाद आदि की विशालकाय बहुबलि प्रतिमाएं, बड़वानी की बावन गजीं, ग्वालियर के किले की विशाल मूर्तियां सुप्रसिद्ध हैं। पन्द्रहवीं शती के अन्तिम पाद में अकेले एक सेठ जीवराज पापड़ीवाल ने लाखों जिनमूर्तियाँ निर्मापित एवं प्रतिष्ठित कराकर देशभर के मन्दिरों में वितरित की थीं। देश में शायद ही कोई ऐसा नगर, कस्बा या ग्राम है जहाँ जैन वैश्यों की छोटी-बड़ी बस्ती हो और वहाँ एक या अधिक जिन मन्दिर न हों। अनेक ऐसे भी स्थान हैं जहां पुराने जैन स्मारकों के भग्नावशेष बिखरें हैं, किन्तु आज किसी जैन का वहां आस-पास निवास नहीं है। जिनमन्दिरों में कलात्मक प्रस्तरांकनों के अतिरिक्त, अनेकों में सुन्दर भित्तिचित्र भी बने, तथा अनेक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ प्रतियों को सुन्दर लघुचित्रों एवं कलापूर्ण साज-सज्जा से अलंकृत किया गया। अनगिनत जैन वैश्य स्त्री-पुरुषों ने जैन कला के विविध रूपों के सृजन, संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में प्रभूत योग दिया है। मन्दिरों और मूर्तियों की स्थापना हेतु विशाल पैमाने पर जिन-बिंब प्रतिष्ठा महोत्सव किये जाते हैं।

[२८·०८] राजनैतिक क्षेत्र :

भारतवर्ष में राज्य सत्ता एवं युद्ध व्यवसाय पर क्षत्रिय वर्ण, तथा कालान्तर में उनसे अद्भुत राजपूत जातियों का मुख्यतया वर्चस्व रहा है और राजगुरु, पुरोहित, मन्त्री आदि बहुधा ब्राह्मण रहे। किन्तु अर्थतन्त्र के संचालक वैश्यों की भी कोई भी राज्य उपेक्षा नहीं कर सकता था। अतएव प्रायः प्रत्येक राज्य के मन्त्रि-मण्डल एवं अन्तरंग परामर्शक परिषद में राज्य के प्रमुख सेठों का भी महत्वपूर्ण स्थान एव मान रहता था। प्रत्येक राजधानी एवं नगर का प्रमुख सेठ नगरसेठ या पट्टणस्वामि कहलाता था, पूरे राज्य का प्रधान सेठ राज्य सेठ कहलाता था, और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं प्रभाव वाला कोई कोई सेठ जगत सेठ भी कहलाता था। इन सेठों का राज्य की राजनीति में भी पर्याप्त योगदान रहता था। भारतीय इतिहास के प्रायः प्रत्येक युग मे तथा उस समय के अधिकतर राज्यों में तदोक्त पदधारी एकाधिक जैन सेठों के होने का पता चलता है। महावीर युग में मगधनरेश श्रेणिक बिम्बसार का बुद्धिनिधान प्रधान मन्त्री उसकी वैश्य पत्नी से उत्पन्न हुआ था। उसी काल में श्रेष्ठि पुत्र जम्बूकुमार ने एक शत्रु के विरुद्ध राज्य की सैन्य का संचालन करके विजय प्राप्त की थी, तथा श्रेष्ठिपुत्र धन्यकुमार ने मगध, अवन्ति, वत्स आदि कई राज्यों में राज्यमन्त्री पद पर कार्य किया था। नन्द नरेशों के कई मन्त्री वैश्य थे। सम्राट अशोक के पुत्र कुणाल और पौत्र सम्राट सम्प्रति, दोनों की माताए वैश्य कन्याएं थीं। गुजरात के छहरात नरवाहन (नहपान) का मित्र एवं राज्य सेठ सुबुद्धि नामक धनकुबेर था (प्रथम शती ई०) उत्तरवर्ती शतियों में उत्तर एवं दक्षिण भारत के विभिन्न राज्यों में राजनीतिनिपुण अनेक जैनों का उल्लेख है, किन्तु उनमें से कौन या कितने वैश्य थे, यह कहना

कठिन है। राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण द्वि० के समय में (ल. ९०० ई० में) मूलगुन्द के प्रसिद्ध राज्यमान्य 'सेठ चन्द्रार्य, उसके पुत्र चिकार्य और पौत्रों नागार्य एवं आसार्य के प्रभाव एवं धार्मिक कार्यों के उल्लेख हैं। चालुक्य विक्रमादित्य के समय में वनवासि देश का राज्यमान्य जैन सेठ विणेय-बम्मिसेहि था जिसने १०८० ई० में एक भव्य जिनालय बनवाकर त्यागियों तथा अग्रहार के हजारों ब्राह्मणों के लिए एक सत्र स्थापित किया था। ल० १२०० ई० में अरसिकेरे प्रदेश के जैनों में प्रमुख पट्टणस्वामि कल्लि सेट्टि और जक्किसेट्टि थे। उसी काल में नागरखण्ड प्रदेश में शंकर सेट्टि आदि अनेक प्रभावक जैन सेठ थे जिनका मुखिया पट्टणस्वामि कवडेय बोधिसेट्टि था। विष्णु वर्धन होयसल के समय में ११२५ ई० में, राज्य एवं राजधानी का प्रधान सेठ (पोटसलसेट्टि एवं द्वार समुद्र-पट्टणसामि) नेलम्बि सेट्टि था। तदनन्तर मल्लि सेट्टि को पोय्सल सेट्टि का पद मिला और उसे एलोरा का शासक भी नियुक्त किया गया। इसी नरेश का एक जैन वैश्य कृपापात्र महाप्रभु पेर्म्मडि था, जिसके पुत्र भीमय्य, पौत्र मसणिसेट्टि एव मारि सेट्टि और प्रपौत्र गोविन्द सेट्टि बड़े प्रभावशाली, दानी और धर्मात्मा सेठ थे। होयसल नरसिंह प्र० का महाप्रधान-सर्वाधिकारी एवं सेनापति एरेयंग और उसका वीर पुत्र ईश्वर चमपति (सेनापति) भी संभवतया जैन वैश्य थे—ईश्वर चमूप की पत्नि और नाकि सेट्टि की पुत्री नारीरत्न माचियक्के (११६० ई०) बड़ी विदुषी, दानशीला एवं धर्मात्मा थी।

होयसल बल्लाल द्वि० का महाप्रधान-सर्वाधिकारी आभूषणाध्यक्ष एवं दण्डनाथ अमृत या अमितय्य चेट्टिसेट्टि का पौत्र और हिरियम सेट्टि का पुत्र था (ल० १२०० ई०) उसके चार भाई भी राज्य के वीर दण्डनायक थे। होयसल राज्य के अन्य प्रमुख राजमान्य एवं प्रभावशाली जैन सेठ एरेगंक, बम्मिसेट्टि, गन्धिसेट्टि, सोविसेट्टि, देविसेट्टि, मारिसेट्टि, कामिसेट्टि, भरतिसेट्टि, राजसेट्टि, होयसल रामनाथ का प्रसिद्ध राज्यसेठ नाल-प्रभुदेविसेट्टि, आदि थे। पूर्वमध्यकाल के दक्षिणापथ के चालुक्य, कलचुरि, यादव, काकतिय, गग, सान्तर, शिलाहार आदि प्रायः सभी राज्यों में जैन श्रेष्ठियों का अत्यधिक योगदान रहा, स्वयं विजयनगर साम्राज्य (१३३६-१५६५ ई०) में भी उनका अच्छा योगदान रहा। मैसूर आदि कई राज्यों में तो अन्त तक चलता रहा।

उत्तरापथ में, मुसलमानी राज्य की स्थापना के पूर्व, ग्वालियर के कच्छपघट, बयाना के यादव, बुन्देलखण्ड के चन्देल, मालवा के परमार, दिल्ली के तोमर, शाकंभरी के चौहान आदि विभिन्न राजपूत राज्यों में जैन वैश्यों की राज्य में प्रतिष्ठा एवं अत्याधिक योग रहा। दिल्ली के अनंगपाल तोमर (११३२ ई०) का राज्य सेठ एव मंत्री नट्टलसाहु देश प्रसिद्ध था, गुजरात में आठवीं शती के मध्य से तेरहवीं शती के अन्त पर्यन्त क्रमशः चावड़ा, सोलंकी और बघेल नरेशों का राज्य रहा, और इस काल में बीसियों जैन वैश्यों ने कुशल राज्यमन्त्रियों, शूरवीर सेनानायकों, दण्डनाथों, सामन्त-सरदारों तथा उच्च अधिकारियों के रूप में इन राज्यों के संरक्षण में योग दिया जिनमें चम्पा श्रेष्ठि, विमलशाह, मुंजाल सेहत, उदयन, शान्तनु, वाग्भट, आम्रभट, चाहड़, वस्तुपाल, तेजपाल, सेनापति सज्जन आदि सुप्रसिद्ध हैं। मध्यकाल में ग्वालियर के तोमरों, चन्द्रवाड़ के चौहानों और राजस्थान के विभिन्न राजपूत राज्यों में सैंकड़ों जैन वैश्यों के उक्त राज्यों के मन्त्री, दीवान, भंडारी सेनानायक, राजदूत, प्रशासनिक अधिकारी आदि होने के साक्ष्य प्राप्त हैं। मेवाड़ोद्धारक राष्ट्रभक्त भामाशाह का नाम तो सर्व प्रसिद्ध है किन्तु न जाने कितने अन्य भामाशाह, प्रचंड सेनानायक एवं कुशल राजनीतिज्ञ इस जाति ने उन राज्यों को दिए।

१२५७ ई० के गुजरात के भीषण दुर्भिक्ष के समय नगूडशाह ने गुजरात से धन एवं अन्न का वितरण करके दुष्कालपीड़ित असंख्य जनता को जीवनदान दिया था और कई तत्कालीन एवं तत्प्रदेशीय हिन्दू व मुसलमान शासकों का भी धन देकर संरक्षण किया था। पाटन के शाह समरा और सालिग ने १२९८ ई० में अलाउद्दीन खिलजी के भयंकर आक्रमणों से त्रस्त जनता की अद्भुत सेवा की थी, सैंकड़ों हिन्दू एवं जैन मन्दिरों की विध्वंस से रक्षा की, नष्ट-भ्रष्ट हुए देवस्थानों का पुनः उद्धार किया और सहस्त्रों लोगों को मुसलमानों के बन्दीगृह से मुक्ति दिलायी। इस कार्य में उन्होंने राज्यतंत्र में अपने प्रभाव का भरपूर उपयोग किया था। मुगल पूर्व कालीन मुसलमानी शासन में दिल्ली का नगर सेठ पूर्णचन्द अग्रवाल (ल० १३०० ई०), वीसल साहु, ठक्कफेरु, प्राग्वाट वंशी सूर एवं वीर, रथपति श्रीमाल, साहूवाधू, साहूमहीपाल, साह सागिया, गुजरात के पेथडशाह और समराशाह, सैयद मुबारकशाह का राज्यमंत्री हेमराज अग्रवाल, दिडढासाहु, बयाना के साहुथील्हा एवं खण्डेलवाल साहुरणमल, लोदी सुल्तानों के समय में दीवान दीपग, संघाधिप कुलिचन्द्र, चौधरी देवराज, चौधरी टोडरमल जैसवाल, संघाधिप साधारण अग्रवाल, सागर के गढ़ासाव, रणथंभोर के वैद्यराज रेखा पण्डित, मालवा के सुल्तानों के मन्त्रीश्वर मण्डन व उनके भाई-बन्धु, सघपति होलिचन्द्र, इत्यादि अनेक राज्यमान्य एवं प्रभावशाली जैन वैश्यों के उल्लेख प्राप्त हैं। तत्कालीन ग्वालियर के तोमर नरेशों के मन्त्रीश्वर कुशराज जैसवाल प्रभृति कई जैन वैश्य मन्त्री व उच्च पदाधिकारी थे। राजस्थान के मेवाड़, मारवाड़, अम्बर आदि प्रायः सभी राजपूत राज्यों में तो अनगिनत जैन वैश्य शूरवीरों, राज्यमन्त्रियों तथा प्रशासनिक अधिकारियों के विवरण प्राप्त हैं।

मुगलकाल में रणकाराव को सम्राट अकबर ने आबू प्रदेश का शासक नियुक्त किया था, और उनके पुत्र राजा भारमल को सम्पूर्ण सांभर प्रदेश का। उनकी अपनी सेना थी और अपने सिक्के चलते थे। आगरा में साहु टोडरमल शाही टकसाल के अधीक्षक थे, सहारनपुर नगर बसाने वाले साहरनवीरसिंह राजा रामसिंह अग्रवाल के पुत्र, सम्राट के कृपापात्र अनुचर, जागीरदार और सहारनपुर की टकसाल के अध्यक्ष थे। रणथंभोर के दुर्गपाल के मन्त्री क्षेमसिंह (१५६१ ई), निमाड़ के संघपति माणिक सुराणा, ग्वालियर के चन्दन चौधरी, भानपुरा-इन्दौर के संघपति डूंगर, आमेर के महाराज मानसिंह के महामात्य साह नानू, बीकानेरी मंत्री कर्मचन्द बछावत, आगरा के

सेठ हीरानंद मुकीम, सबलसिंह मोटिया, बिहार–बंगाल में लोदीखाँ के दीवान धन्नाराय, सागवाड़ा के हेमराज पाटनी, अहमदाबाद के सघपति रतनासी, दिल्ली के संघाधिप भगवानदास, सिरोही के साहगागा, मिर्जा राजा जयसिंह के दीवान मोहनदास भौंसा, धमौनी–सागर के संघपति आसकरण, मुलतान (सिन्ध) के सेठ वर्धमान नवलाख, लाहौर के साह हीरानन्द अग्रवाल टोडारायसिंह के राज्य मंत्री वादिराज सोगानी, फतेहपुर के नबाब के दीवान ताराचन्द, औरंगजेब के दरबारी शान्तिदास जौहरी, बिहार शरीफ के संघवी संग्राम सिंह, पटना के सेठ कुंवरपाल–सोनपाल, मुर्शिदाबाद का सुप्रसिद्ध जगत सेठ घराना, फर्रूखसियर के शाही खजांची घासीराम अवध के प्रथम नवाब सादतखां के खजांची व दीवान केशरीसिंह कटक के मंजु चौधरी, लखनऊ के राजा बच्छराज नाहटा, मुगल शाह आलम (ल० १८०० ई०) के शाही खन्जाची राजा हर सुखराय एवं उनके पुत्र राजा सुगनचन्द्र मथुरा, का प्रसिद्ध सेठ घराना, इत्यादि, राज्यमान्य तथा राजकार्य में सक्रिय रहने वाले विविध जातीय जैन वैश्यों के कतिपय उल्लेखनीय उदाहरण हैं। तत्कालीन राजपूत राज्यों में तो जैन राज्यमंत्रियों, दीवानों, अन्य उच्च पदाधिकारियों आदि की संख्या सैकड़ों में है। अंग्रेजी शासन के लगभग १५० वर्ष के काल में भी ऊंचे से ऊंचे पद व सम्मान जैन वैश्यों ने विविध क्षेत्रों में प्राप्त किए। स्वातन्त्र्योत्तर युग में भी उन्होंने राजकीय सेवाओं के प्रशासन, न्याय, पुलिस, सेना, तकनीकी आदि प्रायः सभी क्षेत्रों में तथा शिक्षा, वकालत, डाक्टरी, इन्जीनियरी, विज्ञान, दर्शन, साहित्य, पत्रकारिता, कला आदि बौद्धिक व्यवसायों में भी अपना उल्लेखनीय प्रतिनिधित्व बनाए रखा है।

१८५७ ई० के स्वातन्त्र्य समर में दिल्ली के हुकमचन्द जैन एक अंग्रेज द्रोही देशभक्त नेता थे जिन्हें बादशाह बहादुर, मिर्जा मुगल, तात्या टोपे आदि को सक्रिय सहयोग देने के कारण 19 जनवरी 1958 ई० को फांसी दी गई थी। इसी प्रकार ग्वालियर राज्य के बैंकर अमर चन्द बांठिया को रानी झांसी आदि की सक्रिय सहायता करने के लिए 22 जून 1858 को लश्कर में फांसी दी गई थी। इस युद्ध में कितने ही अन्य जैन भी शहीद हुए लगते हैं। वर्तमान शती के पूर्वार्ध के स्वतंत्रता संग्राम में सभी वर्गों के अनगिनत जैनों ने तन मन धन से सक्रिय योग दिया है। हमने-उत्तर प्रदेश राज्य के जैन स्वतन्त्रता सेनानियों का विवरण कई वर्ष पूर्व एकत्र किया था, जिसमें लगभग ड़ेढ सौ नाम उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, बिहार, बंगाल, मध्य-प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि अन्य राज्यों के जैन स्वतन्त्रता-सेनानियों की कुल संख्या साधिक एक हजार होनी चाहिये। इनमें जमीदार सेठ, साहूकार, व्यापारी, छात्र, अध्यापक, वकील, डाक्टर तथा राजकीय सेवा में नियुक्त, प्रायः सभी वर्गों के व्यक्ति रहे और पचासों महाप्राण महिलायें भी थीं। इन देश-भक्तों ने विविध आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेकर पुलिस के डड़े खाए, गोलियाँ झेली, जेल की सजायें काटीं, अपनी सम्पत्ति जब्त होती देखी, वकालत आदि व्यवसाय तथा सरकारी नौकरियाँ भी अनेकों ने स्वेच्छा से छोड़ दीं, विविध प्रकार के त्याग एवं बलिदान किए। महात्मा गांधी के चिरंजीलाल बड़जात्या जैसे दर्जनों जैन अनन्य भक्त, शिष्य एवं निकट सहयोगी थे। शेरे पंजाब ला. लाजपतराय भी शायद जन्मत जैन थे। पं० अर्जुन लाल सेठी जैसे दर्जनों उत्कट क्रान्तिकारी भी रहे, देशभक्त पत्रकार, कवि एवं लेखक भी रहे, कांग्रेस आदि विविध राजनीतिक संगठनों में कार्यरत देश सेवी भी रहे।

परिणामस्वरुप, स्वांतत्र्योत्तर काल में भी केन्द्र में तथा विभिन्न राज्यों में जैन सांसदों आदि के सदस्यों मन्त्रियों, मुख्य मन्त्रियों, 'राज्यपालों राजपूतों आदि की कुल संख्या सैकडों में अनुमानित है जिनका राष्ट्र की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान एवं सक्रिय योगदान रहा है।

[२८.०९] व्यापारिक क्षेत्र—

मानवी सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही वैश्य जाति का प्रधान उद्यम व्यापार व्यवसाय रहा है, जिसमें साहुकारा, महाजनी वाणिज्य उद्योग-धन्धे आदि सम्मिलित रहे। जैन वैश्य इस प्रवृत्ति के अपवाद नहीं रहे, वरन् वाणिज्य-व्यापार में वे अन्यों की अपेक्षा कुछ अधिक ही चमके। पूर्वोक्त प्रकरणों में जिन जैन सेठों का नामोल्लेख हुआ है, उनमें से अधिकांश प्रथमतः अपने अपने समय एवं क्षेत्र के अत्यन्त धनवान साहूकार या व्यापारी भी थे। प्राचीन कालीन जैन कोट्याधीश सेठों, सार्थवाहों आदि के अतिरिक्त, मध्यकाल से कतिपय अधिक उल्लेखनीय नाम हैं :—

चन्देलकालीन खजुराहो का सात विशाल फलोद्यानों का दान करने वाले गृहपति वंशी श्रेष्ठि पाहिल्ल (954 ई०), बुन्देलखंडी लोकानुश्रुतियों का सुप्रसिद्ध पाडाशाह (भैंसाशाह) अग्रवाल जिसने ल.-11-12 वीं शती में सैंकड़ों पुराने मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया तथा सैंकड़ों नवीन मंदिर बनवाए थे, चण्डोम (दूबकुंड) का दानी नगरसेठ श्रेष्ठिदाहड़ (1088 ई०), अर्थूणा का कुवेर सम श्री सम्पन्न भूषणसेठ (1109ई०), दिल्ली की नट्टलसाहु अग्रवाल (1132 ई०) जिसका व्यापार देश-विदेशों में दूर-दूर तक फैला हुआ था, बिजौलिया के पोखाडवंशी श्रेष्ठि शिरोमणि लोलार्क (1169 ई०), गुजरात का दानवीर सेठ जगडुशाह–(1257 ई०) जिसने लाखों स्वर्णमुद्राए' व्यय करके दुष्काल पीडितों की तथा तत्कालीन शासकों की सहायता की थी, पाहण के शाहसमरा और सालिग (1298 ई०), चित्तोड़ के कीर्तिस्तंभ तथा शताधिक अन्य नवीन मंदिरों के निर्माण, 18 विशाल श्रुत भंडारों के संस्थापक और सवालाख राजबंदियों को छुड़ाने वाले बघेरवाल सेठ साहजीजा (ल-1400 ई०)' लगभग एक करोड स्वर्ण मुद्राओं की लागत से राजी कपूर का विशाल एवं अत्यंत कलापूर्ण चतुर्मुख–धवल प्रसाद निर्माण कराने वाले तथा राणा कुंभा के राज्य सेठ धन्नाशाह–रत्नाशाह (1433–98 ई०), लक्षाधिक जिन मूर्तियों के प्रतिष्ठापक मुण्डासा के राज्यसेठ शाहजीवराज पापड़ीवाल (1491 ई०), दानवीर तोलाशाह का पुत्र मेवाड़ का राज्यसेठ कर्माशाह (1530 ई०) जो

अपने समय का शीर्षस्थ वस्त्र व्यापारी था–चीन, बंगाल आदि देशों से प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये का माल उसकी कोठी में आता-जाता था। गोरुसिप्पे (कर्णाटक) का चवुडि सेट्टि (1537 ई.) जो इस शर्त पर जरूरत मंदों की मुक्त हस्त से सहायता करता कि वे बुरे काम छोड़ देंगे और भले काम करेंगे। बनवासि देश के कदम्ब नरेश के राज्यश्रेष्ठि यांजण और अम्बुवण–दोनों पिता–पुत्र दानी, धर्मात्मा तथा अपने समय (ल. 1550–60 ई.) और प्रदेश के शीर्षस्थ व्यापारी थे। नागौर निवासी वणिक्पति राजा भारमल श्रीपाल (ल. 1575–1600 ई.) सम्राट अकबर की ओर से सांभर प्रदेश का शासन करते थे और साथ ही स्वर्ण एवं जवाहिरात के शीर्षस्थ व्यापारी थे। उनकी दैनिक आय एक लाख टका (रुपये) थी जिसमें से पचास हजार टके प्रतिदिन सम्राट के कोष में देते थे। प्रायः उसी काल में हीरानंद मुकीक आगरा के शीर्षस्थ रत्न-व्यापारी थे। सबलसिंह मोठिया (1410-25 ई०) भी आगरा के राजसी वैभव सम्पन्न शीर्षस्थ साहुकार थे। सूरत का जैन सेठ वीर जी वोहरा (1619-70 ई०) अपने समय का आयात-निर्यात का सर्वोपरि भारतीय व्यापारी था। आगरा, बुरहानपुर, गोलकुण्डा तथा अन्य प्रमुख व्यापार केन्द्रों में उसकी गद्दियां थीं, पश्चिम में अरब सागर व फारस की खाड़ी के देशों तथा दक्षिण-पूर्व में भारतीय द्वीप समूह पर्यन्त उसका व्यापार फैला था, उसके सैंकड़ों जहाज चलते थे। अरब, पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी आदि विदेशी व्यापारी उसकी कृपा पर अवलंबित रहते थे— उन्हीं विदेशियों के कथनानुसार अपने समय में यह अस्सी लाख स्वर्ण मुद्राओं का धनी कोट्याधीस भारतीय सेठ सम्पूर्ण विश्व का सबसे बडा धनवान समझा जाता था। मुलतान का वर्धमान नवलखा (१६५०-६०), १८ वीं शती में मुर्शिदाबाद के जगत सेठ और सूरत के खेमजी-मूलजी भाई, १९ वीं शती में मथुरा के सेठ लक्ष्मीचन्द और उनके वंशज अजमेर के मूलचन्द सोनी और वंशज झालरापाटन के विनोदी राम सेठी और उनके 'ताजिरूलमुल्क' उपाधिधारी वंशज वर्तमान शताब्दी के पूर्वार्ध में बम्बई के प्रसिद्ध जौहरी सेठ माणिक चन्द जे.पी., इन्दौर के रावराजा सर सेठ हुकम चन्द, दिल्ली के रायबहादुर सुल्तान सिंह, भारतीय जहाज–उद्योग के पिता शोलापुर के बालचन्द हीराचन्द दोसी, तथा तदनन्तर साहू-जैन प्रतिष्ठान, आदि व्यापार एवं उद्योग-धन्धों के क्षेत्र में उल्लेखनीय रहे। अहमदाबाद आदि की अनेक कपडा मिलों, बंगाल के जूट व्यापार, बिहार झीचा आदि की कोयले की खानों, इत्यादि में; जैन व्यापरी प्रमुख रहे हैं। गत शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा किये गये सर्वेक्षणों से प्रकट हुआ था कि भारतवर्ष के सम्पूर्ण व्यापार का आधे से अधिक जैन व्यापारियों के हाथ में था। इधर कुछ दशकों में उस स्थिति में पर्याप्त ह्रास हुआ है, तथापि आज भी जैन समाज का अधिकांश भाग व्यापार — व्यवसाय में संलग्न है।

२८.१० सामाजिक स्थिति और समस्याएं :—

जैन समाज प्रायः शत प्रतिशत साक्षर है, और उनमें शिक्षितों का अनुपात भी लगभग 70-75 प्रतिशत है। बौद्धिक व्यवसायों और राजकीय सेवाओं में भी लाखों जैन संलग्न हैं। उनके अपने धार्मिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संगठन भी अनेक एवं व्यवस्थित हैं। उनके सैंकडों विद्यालय, दर्जनों महाविद्यालय, शोधसंस्थान, पुस्तकालय छात्रावास, चिकित्सालय, औषधालय, छात्रवृत्ति-कोष, अनाथालय बाल-विश्राम, पत्र-पत्रिकाएं, पिंजरापोल, गोशालाएं, धर्मशालाएं आदि लोकोपकारी संस्थाएं देश में प्रायः सर्वत्र फैली हैं।

कुल मिलाकर यह एक शिक्षित एवं सुसंस्कृत मध्यवित्त समाज है, अतः उसके गुण – दोष भी हैं। देशव्यापी गिरती हुई नैतिकता एवं धार्मिक आस्थाओं के स्खलन से अखिल वैश्य जाति की भांति जैन वैश्य भी प्रभावित हैं। दहेज-प्रथा शिक्षितों की बेरोजगारी, विवाह-शादी के दिखावे एवं अपव्यय, कमर तोड़ मंहगाई आदि से भी त्रस्त हैं। कतिपय अन्धविश्वास एवं कुरुढ़ियां भी हैं। जाति–पांति के बन्धन अभी हैं, किन्तु ढीले पड़ते जा रहे हैं–वैश्य उपजातियों में परस्पर विवाह सम्बन्ध भी होने लगे हैं। जैन वैश्यों की परिस्थितियां एवं समस्याएं जैनेतर वैश्यों से प्रायः भिन्न नहीं हैं। दोनों एक ही राष्ट्र और एक ही जाति के अभिन्न अंग हैं। अतएव एक–दूसरे के हित एवं उत्कर्ष के साधक हैं, विरोधी नहीं।

[२८·११] उपसंहार—

पूर्वोक्त पृष्ठों में स्थानाभाव के कारण जैन धर्मावलम्बी वैश्यों की धार्मिक एव सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, इतिहास, उपलब्धियां, स्थिति आदि का जो अति संक्षिप्त परिचय दिया गया है, उससे वैश्य इतिहास में उनके स्थान एवं महत्व का मूल्यांकन करने में सहायता मिलेगी। इस अध्याय के लेख में प्रतिपादित तथ्यों एवं कथनों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित विपुल साहित्य उपलब्ध है। अन्त में निर्दिष्ट संदर्भ ग्रन्थ सूची में सरलता से उपलब्ध होने वाली कतिपय आवश्यक पुस्तकों का सूचन कर दिया है, जिससे जिज्ञासु पाठक लाभ उठा सकते हैं। वैसे, जैनाजैन वैश्य जातियों में से प्रत्येक के इतिहास की व्यवस्थित शोध–खोज की जाने की महती आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :—

1. जैन धर्म —सिद्धान्ताचार्य पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री चौरासी–मथुरा, छठा संस्करण 1985।
2. वर्ण, जाति और धर्म— पं० फूलचन्द सिद्धान्त शास्त्री–भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली 1963।
3. तीर्थंकरों का सर्वोदय मार्ग —डा० ज्योति प्रसाद जैन, दिल्ली 1974।
4. रिलीजन एण्ड कलचर आफ दि० जैन्स—,, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली तृतीय संस्करण, 1983।
5. जैन सोर्सेज आफ दी हिस्ट्री आफ एन्शेंट इण्डिया–,,मुंशीराम मनोहरलाल दिल्ली, 1964।

6. भारतीय इतिहास : एक दृष्टि—,, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली, द्वि० सं० 1966।

7. प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएं—,, ;, 1975

8. उत्तर प्रदेश और जैन धर्म—,, ज्ञानद्वीप प्रकाशन, लखनऊ 1976.

9. रुहेलखण्ड-कुमायूं जैन डायरेक्टरी —,, दि० जैन परिषद, काशीपुर 1970.

10. जैन धर्म सहुश्रीवन्धु प्राचीन अने जुवंतधर्म—,, अहमदाबाद 1979.

11. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान—-डा० हीरालाल जैन। भोपाल, 1962।

12. जैन जागरण के अग्रदूत—अयोध्या प्रसाद गोयलीय, भा० ज्ञा० पीठ दिल्ली, 1952।

13. जैन कला और स्थापत्य—तीन खण्ड—भा० ज्ञा० पीठ, दिल्ली, 1975।

14. भारत के दिग० जैन तीर्थ-चार भाग—भा० दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, बम्बई, 1975।

15. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन डायरेक्टरी— बम्बई 1914।

तथा अन्य प्रकाशित डायरेक्टरियाँ, जैन साहित्य के विविध इतिहास, कई भागों में प्रकाशित जैन शिलालेख तथा अभिलेख संग्रह, कई प्रकाशित ग्रन्थ प्रशप्ति संग्रह तथा शास्त्र-भण्डारों की प्रकाशित ग्रन्थ सूचियां, जैन सिद्धान्त भास्कर, जैना एन्टीक्वेरी, अनेकान्त, शोधांक, आदि जैन शोध-पत्रिकाओं की फाइलें, इत्यादि।

हमारे सहयोगी (३३)



श्री उमा शंकर गुप्त

नं० 119/457 दर्शन पुरवा-कानपुर-12

साहित्य, समाज और संस्कृति की त्रिवेणी में जब राष्ट्रभक्ति की धारा का भी संगम हो जाता है, ऐसे ही तीर्थ स्वरुपा राष्ट्रभक्त परिवार में श्री उमा शंकर गुप्त का जन्म सात जनवरी सन् उन्नीस सौ इकसठ (७-१-१९६१) को उत्तर प्रदेश के कानपुर महानगर में हुआ। आप वर्ष १९७७ में इण्टरमीडिएट (वाणिज्य) परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर, तदोपरान्त वर्ष १९७९ में कानपुर, विश्व-विद्यालय से बी० काम उत्तीर्ण करने के पश्चात आप व्यापार में संलग्न हो गए। किन्तु अपनी कुल परम्परानुसार सामाजिक, साहित्यिक जगत में भी अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। **सम्प्रति आप वैश्य महासम्मेलन की कानपुर जिला शाखा के महासचिव, अखिल भारतीय श्री अयोध्यावासी वैश्य नवयुवक सघ के उपाध्यक्ष, अयोध्यावासी वैश्य महासभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री** के अतिरिक्त आधा दर्जन से अधिक सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संगठनों से सम्बद्ध हैं।

आपके पूर्व परिवार जन स्व० सेठ बिहारी लाल जी मऊरानीपुर (झांसी) के प्रख्यात श्रेष्ठी थे। अस्पतालों, पाठशालाओं, धर्मशालाओं, आर्य समाज एवं धर्मार्थ कार्यों में उनकी विशेष रुचि थी। कालान्तर में उन्होंने पितामह श्री पुत्तूलाल जी के तत्कालीन राजनैतिक वातावरण से प्रभावित हो स्वतन्त्रता आन्दोलन में सन् १९२७ (संवत् १९८३) में स्वयं को बलिदान कर दिया। श्री उमा शंकर गुप्त ने विद्यार्थी जीवन में ही कविता-निबन्ध एवं वादविवाद प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त किये।

हिन्दी-गद्य कुछ कहानियां भी प्रकाशित हुई हैं। आपने सन् १९७८ में स्थानीय कवियों की संस्था "मधुरिका" का गठन किया, जिसके वे आजीवन संरक्षक हैं। आपने अयोध्यावासी वैश्य सामूहिक-विवाह समारोह कानपुर (मई १९८४) एवं गुरसहायगंज (नवम्बर १९८४) में सहसंयोजक एवं स्वागतमंत्री के रूप में सम्पादित किया। आपने उत्तर प्रदेश में सामूहिक विवाह आन्दोलन को नवीन शक्ति दी है। आपने स्वजातीय बन्धुओं की जनगणना का कार्य कर उसे "संकलन" रूप में प्रकाशित भी किया है। इस मध्य कानपुर में दो बार सर्व वैश्य सम्मेलन एवं युवा वर्ष पर युवा सम्मेलन का सफल आयोजन किया है। आपके व्यक्तित्व को देखते हुए इन्हें अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन (All Indieg Vaish Federation) के साहित्यकार प्रकोष्ठ (Cell) का संयोजक (Nov 85 में) मनोनीत किया गया है।

इसके अतिरिक्त आप नगर की सामाजिक, साहित्यिक एव सांस्कृतिक संस्था "तरुणाई" के मानद सदस्य, पूर्वांचल समाज के मन्त्री एवं क्लस्टार के सांस्कृतिक मंत्री के रुप में साहित्य की सेवा कर रहे हैं। आपकी आर्य समाज के कार्यक्रमों में भी भूमिका रहतो है। आपके सामाजिक, कार्यकलापों में आपकी पत्नी श्रीमती रीता गुप्ता का सहयोग सदैव उपलब्ध रहा है।

—: ० :—

अन्तिम अध्याय
उपसंहार
सर्व वैश्यों के एकीकरण का इस दशक का प्रयत्स

०१)–पुस्तक के अध्याय दो के पृष्ठ २४ पर यह उल्लेख किया जा चुका है कि कैसे 26 अप्रैल 81 को धर्म भवन दिल्ली 49 में देश के 37 वैश्य उपवर्गों के 141 प्रबुद्ध प्रतिनिधियों ने सर्व वैश्य एकता हेतु संगठन बनाने का निर्णय किया। उस दिन श्री बजरंग लाल जाजू (दिल्ली) को इसका अध्यक्ष तथा श्री बाल्मीकि चौधरी भूतपूर्व सांसद (पटना) को इसका महामन्त्री बनाया गया था। इस हेतु बनी कार्यकारिणी में सभी Founding Fathers थे। विपुल पत्राचार तथा भ्रमण के उपरान्त इस समिति ने एक अर्द्ध-संघीय विधान प्रस्तुत किया। जिसके पदाधिकारी तो व्यक्ति-गत सदस्यों से हर तीसरे वर्ष चुने जाने थे। तथा सम्बद्ध होने वाली उपवर्गीय एवं सर्ववैश्य सभाओं के सभापतियों एवं मन्त्रियों से अधीक्षण समिति बननी थी। तथा इस प्रकार चुने पदाधिकारियों और सम्बद्ध सभाओं के मन्त्रियों से कार्यकारिणी बननी थी। सम्बद्ध सभाओं के अंतस्वराज्य में दखल न देने सम्बन्धी एक पैरा भी विधान में था। यह विधान Founding Fathers की अगली बैठक ने दिनांक 1 नवम्बर 81 को पारित कर दिया। दिनांक 2 नवम्बर 82 के सत्रीय अधिवेशन में वह पुष्ट हुआ और श्री बनारसी दास गुप्त को उस दिन अध्यक्ष तथा मुझे महामन्त्री चुना गया।

०२) इसके बाद महासम्मेलन की अधीक्षण समिति की बैठकें निम्न प्रकार हुई :—

दिनांक	स्थान	
26-6-63	मुजफ्फरनगर	स्वगताध्यक्ष श्री ला. शीतल प्रसाद भू.पू. कुलपति
4-9-83	मेरठ	,, ,, दयानन्द गुप्त उद्योगपति मोदीनगर
12-1-84	बरेली	,, ,, राममूर्ति भू.पू. मिनिस्टर. व सांसद
24-3-84	सहारनपुर	,, ,, डा. जयगोपाल गर्ग भूतपूर्व विधायक
9-8-84	इलाहाबाद	,, ,, श्यामाचरण गुप्त उद्योगपति
29-2-85	मेरठ	अतिथेय श्री राजेन्द्र कुमार जैन प्रकाशक—वैश्य-सम्मेलन
6-7-85	कानपुर	आतिथेय अयोध्यावासी नवयुवक मंडल के मंत्री —श्री उमाशंकर गुप्त

०३) वैश्य समाचार पत्र सम्मेलन

दिनांक 14 अप्रैल 45 को वैश्यों द्वारा संचालित समाचार पत्रों के घटकों का सम्मेलन धर्मभवन—नई दिल्ली-49 में श्री विश्व बन्धु गुप्त सांसद राज्यसभा के सभापतित्व में सम्पादित हुआ। इसमें आमंत्रित समाचार पत्रों की सूची नीचे दी जा रही है। श्री शिवचरण गुप्त भूतपूर्व सांसद इसके स्वागताध्यक्ष थे। निश्चय हुआ कि वैश्यों की समस्याओं तथा उन्नयन प्रस्तावों का प्रचुर प्रचार इनके माध्यम से किया जावे। एक स्थायी समिति इस प्रस्ताव के कार्यान्वियन हेतु बनाई गई और श्री केशर सिंह गुप्त. सम्पादक व्यापार भारती इसके कार्यवाह मनोनीत किये गये।

(अ) वैश्यों द्वारा संचालित उन पत्रिकाओं की सूची जो वैश्य नाम से प्रकाशित हैं।

क्र०सं०	अखबार का नाम	सम्पादक का नाम	पता
1-	अग्रसेन-संदेश, नागपुर	द्वारा श्री नरेन्द्र जी नागपुर गृह निर्माण समिति, गांधी चौक, सदर नागपुर	
2-	अग्रवाल समाज	श्री दुली चन्द्र शषि	5-5-1024, हिन्द नगर गोपा महल, हैदराबाद-2
3-	अग्रवाल गजट	... ...	12, दलियाबाजार इन्दौर-2
4-	अग्रयामी, जयपुर	श्री रतन लाल अग्रवाल	अग्रसेन कटला, आगरा रोड, जयपुर।
5-	वैश्य सहोदर	श्री द्वारिका प्रसाद गुप्त	दोसर वैश्य भवन, सेन्ट्रल एवन्यू रोड, नागपुर-18
6-	केसरवानी ज्योति	श्री भोलानाथ गुप्त	नारायण मन्दिर, हाता चन्दापुर, 916/मुट्ठी गंज इलाहाबाद-3
7-	जैन मिलन समाचार	वीर सत्येन्द्र कुमार जैन	भारतीय जैन मिलन, 26 पूर्वा अहीरान, मेरठ।
8-	वैश्यों का उरुतंत्र हरिद्वार संस्करण।	डा० रामेश्वर दयाल	रामेश्वर कुज, हरिद्वार ज्वालापुर-249, 407
9-	वैश्यों का उरुतंत्र: आगरा संस्करण	श्री दाऊ दयाल वॉद्दिल	2/149, पीपल मंडी, आगरा-3।
10-	माहौर मित्र	श्री सत्यदेव आर्य	363, कैलाश गंज, एटा।

क्र०सं०	अखबार का नाम	सम्पादक का नाम	पता
11-	माहुरी मयंक	शिव प्रसाद लोहानी, एम० ए०	(1) माहुरी, भवन, पुरानी गोदाम गोसाई बाग गया। (2) पोस्ट नूरसराय जि० नालन्दा (बिहार)
12-	राजधानी–सहानर संदेश	श्री सुरेश चन्द्र गुप्त	494/A बलजीत नगर-दिल्ली–8
13-	निषान्त	श्री कैलाश नाथ जी, इन्जी०	नं० 41/571, नरही लखनऊ।
14-	शौण्ड्रिक	विश्व नाथ प्रसाद साहू	पो०, दरियापुर, जिला पटना।
15-	गहोई वैश्य बन्धु	प्रो० हरनारायण	शासकीय महाविद्यालय डाबरा, ग्वालियर (म०प्र०)
16-	महेश्वरी	... ...	कौटन मार्केट, नागपुर।
17-	महेश्वरी सेवक	... ...	बीकानेर–1
18-	महेश्वरी सन्देश	... ...	... ...
19-	समाज संगठन	... ...	108 सीतला माता बाजार, इन्दौर।
20-	महेश्वरी संकल्प	श्री महेश राठी	मालपानी गली, व्यावर–1 राजस्थान
21-	खण्डेलवाल वैश्य महासभा पत्रिका	महामन्त्री	गंगा मंदिर स्टेशन रोड जयपुर।
22-	महावर जागरण	श्री राजेन्द्र प्रसाद	नं० 25/2/6, कन्हैया क्लाथ मार्केट, मथुरा।
23-	वैश्य प्रवोधिनी	श्री लक्ष्मी कान्त शास्त्री	कड़प्पा (आन्ध्र प्रदेश)
24-	चतुर्थ श्रेणी मासिक	ईश्वरी प्रसाद गुप्ता	931, त्रि नगर दिल्ली—35
25-	अग्रवाल संदेश, प्रकाशक	डा० सतीश चन्द्र	नं० 3/21, लेखराज नगर, अलीगढ़।
26-	वैश्य परिवार	राम कुमार गुप्ता	156, स्मिथ गंज, मेरठ।
27-	विजयवर्गीय सन्देश	कुंज विहारी लाल, विजय वर्गीय।	नं० 533, गोरधन पुरा, कोटा राजस्थान।
28-	विजय बन्धु	अमिताभ विजय	350, विजय सदन। हनुमान जी का रास्ता, । जयपुर।
29-	समाज ज्योति	ईश्वर चन्द्र गुप्ता	नं० 119 सी, नई मंडी मुजफ्फरनगर।
30-	अग्रोहा तीर्थ	चन्द्र मोहन गुप्ता	न० 4421, नई सड़क दिल्ली–6
31-	युवा माहेश्वरी	... ...	शारदा भवन, 8/193 आर्य नगर कानपुर।
32-	अयोध्यावासी वैश्य समाचार	... ...	न० 42 गूजरपुर, भोपाल, (मध्य प्रदेश)
33-	अयोध्यावासी पंच	देवी चरण गुप्त, इन्जी०	961 धमापुर। वाई का बगीचा जबलपुर (मध्य प्रदेश)
34-	मंगल तारा	कमला भैया	110/3, नेहरू नगर। कानपुर।
35-	जयघोष	श्री हरिवाणी	नौबस्ता। कानपुर–12
36-	नया संसार	अभय गोयल	17, प्रेमपुरी मुजफ्फरनगर।
37-	मंगल मिलन	श्री रामावतार गुप्त	न०-डी 36, साउथ एक्सटेंशन भाग–1, नई दिल्ली-49
38-	अग्रकुल मासिक	राजेन्द्र कुमार जैन	माडल टाऊन। हिसार [हरियाणा]।
39-	अग्रसेन वाणी	... ...	गंगापुर सिटी। राजस्थान।
40-	अग्रपथ	... ...	झरना टोक (राजस्थान)
41-	अग्रवाल पत्रिका	... ...	अग्रवाल धर्मशाला, शिवाला लुधियाना।
42-	अग्रोदक	गिरिराज प्रसाद गुप्ता	हिण्डौन। राजस्थान।
43-	समाज विकास	... ...	न० 152 बी० महात्मा गांधी रोड़, कलकत्ता।
44-	खण्डेलवाल परिवार	... ...	42/154, विल्लोचपुरा आगरा।
45-	अग्रचयनिका	... ...	अग्रवाल धर्मशाला, सहारनपुर।
46-	अग्रसेन पुष्पांजलि	... ...	न० 147 इमली बाजार इन्दौर।
47-	अग्रचेतना	... ...	न० 48, पंचमुखी, मुजफ्फरनगर।
48-	अग्रवाल धर्म	... ...	मनिया, धौलपुर, राजस्थान।

क्र सं०	अखबार का नाम	सम्पादक का नाम	पता
49-	अग्रमंच	राजकुमार बंसल	दर्शनी गेट देहरादून।
50-	अग्रोहा जन्मभूमि	श्री राधाकिशन महाजन	तिलक बाजार, हिसार (हरियाणा)
51-	युवा अग्रवाल	ओमप्रकाश अग्रवाल	न० 10, पण्डित पंत मार्ग नई दिल्ली–1
52-	अग्रोदक	श्री श्याम बनवाड़ी प्रदीप	भीलवाड़ा (राजस्थान)
53-	अग्रोदक (जयपुर संस्करण)	... ...	न० 1634, साथली वाली गली जयपुर–2
54-	बरनवाल चंद्रिका	डा० प्रेमप्रकाश वर्नवाल	बर्नवाल धर्मशाला, बड़ी कपयरी, वाराणसी।
55-	मथुरासिनी समाचार	श्री भोला प्रसाद, चरण पहाड़ी	शेरपुर बाजार, बिहार शरीफ, जिला–नालन्दा।
56	भारतीय अग्रवाल समाचार	श्रीं गोपीनाथ अग्रवाल/ओम प्रकाश रुईया	17–ए पान दरीबा, इलाहाबाद–3
57-	मित्र सन्देश	श्री गौतम प्रकाश	पोस्ट बाक्स नं० 8011 दिल्ली–9
58-	बाथम दीप	श्री ज्वाला प्रसाद गुप्त	लखीमपुर खीरी।
59-	बाथम वैश्य बन्धु	श्री पुरुषोत्तम दास बाथम	कानपुर।
60-	महावर मयंक	श्री चन्दगी लाल	न० 477, गंगापोल, जयपुर–2
61-	वसावी	श्री एच० एस० शिवहट्टी	गादक (कर्नाटक) आ० प्र०
62-	आर्य वैश्य	श्रीं सुधाकरण एन० गादम	त्रैमासिक 942, सदाशिव पेंठ पूना
63-	संरचना सन्देश	श्री मोहन लाल गुप्त (केशरवानी)	4226, ए/1 अन्सारी रोड, नई दिल्ली—2
64-	वारहसेनी सन्देश	डा० पन्ना लाल वार्ष्णेय	मानिक चौक, अलीगढ़
65-	अग्रवाल स्नेही	डा० रोशन लाल	हिन्द समाज प्रेस, सोवती गेट, जोधपुर
66-	अग्रवाल महिमा	अशोक कुमार	जौहर (जौधपुर)
67-	माथुर वैश्य बन्धु	सत्य प्रकाश गुप्त "सत्येश"	नं० 27/52, पथवारी आगरा—4
68-	अग्रहरि समाज	विशम्भर प्रसाद अग्रहरि	B–154 लोक बिहार। दिल्ली–34
69-	कसौधन जागृति	श्री राम गुलाम गुप्त	किला बाजार, बरेली
70-	कसौधन बन्धु	श्री नन्दकिशोर कसौंधन	मऊशिवाला, फैजाबाद
71-	कसौंधन प्रगति	डा० आर० एस० गुप्ता	नं० 18, सिनेमा लाईन। राजनन्द गांव (म०प्र०)
72-	वैश्य समाज पत्रिका	श्री जगन्नाथ प्रसाद गुप्त	नं० 17/27, खेरापति लाईन, जी. टी. रोड। कानपुर
73-	महाजन समाचार	श्री प्रेम कुमार महाजन	नं० 1774; नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली
74-	अग्रजीवन	श्री रामलाल अग्रवाल	नं० 560, गोपाल जी का रास्ता, जयपुर–3
75-	वैश्य सन्देश	श्री लक्ष्मी नारायण श्रीष	चौधराना टौला, दानापुर (पटना)
76-	महासभा समाचार	डा० जगन्नाथ साहूं (पी. एच. डी)	नं० D–36 नार्थ एवेन्यु। दिल्ली-1
77-	बारहसेनी	श्री पन्ना लाल वाष्णेय	8/15, 16–प्रेम सदन, सराय हकीम अलीगढ़–202001
78-	गहोई समाचार	श्री रामदास गुप्त	सरदार पटेल इन्टर कालेज, चिरगाँव झाँसी
79-	कमलापुरी	डा० भरत प्रसाद गुप्त	नं० बी-150, पौपुल्स कोआपरेटिव, कंक्कड बाग कोलौनी, । पटना–20
80-	अग्रोदक	मि० प्र० मित्तल आर.एम.पी.	नं० 1634; सोधली वाले की गली, चौडा रास्ता जयपुर (राजस्थान)
81-	अग्रवाल राजनीति	श्री महावीर प्रसाद अग्रवाद	अग्रवाल हाऊस, रेलवे रोड सोनीपत (हरियाणा)

क्र॰सं॰	अखबार का नाम	सम्पादक का नाम	पता
82-	अग्रवाल मंडल समाचार	श्री धन्नामल जैन	अजय प्रेस, गोकुल बाजार रेवाड़ी (हरियाणा)
83-	अग्रकूल	श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन	महेन्द्र बिहार, मांडल टाउन हिसार (हरियाणा)
84-	बंसल समाचार	श्री अर्जुनदास अग्रवाल	पुरानी सब्जी मन्डी। कैथल (हरियाणा)
85-	अग्रवाल प्रकाश	श्री पुष्पेन्द्र कुमार गुप्ता	शो रूम नं॰ 24, मध्यमार्ग सेक्टर-7 सी, चन्डीगढ
86-	अग्रदीप	ज्ञान चन्द्र गर्ग	9/126 अग्रसेन मार्ग गांधी धाम कच्छ गुजरात
87-	वैश्य जागृति ज्योति	श्री रमेश कुमार गुप्त	नं॰ 1893, वेहराम वेग स्ट्रीट, लालकुआ दिल्ली
88-	संसार के गौरव महाराजा अग्रसेन	श्री दुर्गा प्रसाद अग्रवाल	5/174, आर॰ के॰ पुरम नई दिल्ली-22
89-	महाजन मित्र	डा॰ एस॰एन॰ महाजन	जे-5/2, कृष्ण नगर, दिल्ली-5
90-	अग्रवाल समाचार	श्री गोविन्द राम अग्रवाल	24/9, शक्ति नगर, दिल्ली-6
91-	जायसवाल जैन मासिक	श्री पदम सिंह जैन	एम. 65, आब्जर्वेटरी कम्पाउन्ड, लोधी रोड, नई दिल्ली-3
92-	समाज ज्योति	न्यू मारवाडी कटरा	नई सड़क दिल्ली-6
93-	अग्रवाल पत्रिका	नं॰ए-3/158,	पश्चिम विहार दिल्ली 63
94-	अग्रवाल पत्रिका	रामभरोसे गर्ग	नई दिल्ली-34 प्रीतम पुरा न. एन. डी. 18
95-	समाज विकास	श्री नन्द किशोर जलान	152 बी. महात्मा गांधी रोड कलकत्ता-7
96-	केडिया जगत	श्री सीता राम केडिया	नं॰ 120, महात्मा गाँधी रोड कलकत्ता-7
97-	समाज पत्रिका	रामस्वरूप वैश्य	नं॰41, शास्त्री नगर रकाब गंज लखनऊ-4
98-	वैश्य संगम	श्री मति कमला देवी गुप्त	जे-12/15, जीवैलिया बाग, नाटो हमला, वाराणसी-221001,
99-	गणिनाथ	श्री बृजमोहन गुप्त एम.ए.	गणेश चौक, छिन्दवाडा (म॰प्र॰)
100-	अग्रलोक	करूणेश नन्दन गर्ग	नं॰ 44/2, रंजीत पुरी, मेरठ केन्ट-1
101-	महेश पुत्र	गंगादास बिन्नानी	नं॰ 42 पथुरिया घाट स्ट्रीट। कलकत्ता-6
102-	मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा	डा॰ आर॰ पी॰ गर्ग	नं॰ 130, महाराणा प्रताप नगर-भोपाल
103-	वैश्य जागृति ज्योति	रमेश कुमार गुप्त	नं॰ 1898 बहराम वेग का कुआ चांदनी चौक दिल्ली-6
104-	माहौर जागृति	रामकिशोर गाँगिल	शंकर बाजार। मुरैना (M.P.)
105-	हितकारी	कृष्ण कुमार गुप्त	लाल गंज राय बरेली
106-	पोरवार समाज	डा॰ सुरेश चन्द गुप्ता	प्रोफेसर कालौनी। छिवरा-मऊ जि॰ फर्रुखाबाद U.P.

वैश्यों द्वारा संचालित दैनिक पत्रिकाओं की सूची : इन्हें राष्ट्रीय पत्रिका भी कहा जा सकता है।

क्र. सं॰	अखबार का नाम	सम्पादक का नाम	पता
1.	अमर उजाला	श्री ऐ. के. गोयल	कार्यालय अमर उजाला, आगरा
2.	दैनिक नई दुनियां	श्री अजय छजलानी	इन्दौर।
3.	नव प्रभात	श्री चन्द्र मोहन नागौरी	सर्राफा बाजार। ग्वालियर,
4.	देशबन्धु, रायपुर/जबलपुर	मायाराम सुरजन	625, गाँधी मार्ग, जबलपुर-2
5.	देश बन्धु	मायाराम सुरजन	नई दुनियां मार्ग, रायपुर।
6.	नवीनदुनियां	परमानन्द भाई	बीड़ी म॰ 7 के मालिक, जबलपुर।
7.	दैनिक जागरण, इन्दोर	श्री ईश्वर चन्द्र जैन	स्नेहलता गंज,, इन्दौर।
8.	दैनिक जागरण, भोपाल	श्री गुरुदेव गुप्त	भोपाल।
9.	जागरण	श्री नरेन्द्र मोहन गुप्त	नं॰-2 सर्वोदय नगर, कानपुर-5
10.	आज "दैनिक"	श्री शार्दुल विक्रम गुप्त	वाराणसी
11.	हिन्दुस्तान टाईम्स	श्री के. के. बिड़ला	नई दिल्ली
12.	इण्डियन एक्सप्रेस	श्री रामनाथ गोयनका	बहादुर शाह जफर मार्ग दिल्ली

क्र० सं०	अखबार का नाम	सम्पादक का नाम	पता
13.	मय राष्ट्र	माम चन्द्र मितल	शीश महल । मेरठ सिटी
14.	विकास शील भारत	बाँके विहारी अग्रवाल	ट्रांसपोर्ट नगर । आगरा ।
15.	दैनिक नव ज्योति	श्री डी. वी. चौधरी	अजमेर
16.	सन्मार्ग	श्री रामवतार गुप्ता	नं० 160 सी. चितरंजन एवेन्यू कलकत्ता-7
17.	दैनिक विश्वमित्र	श्री कृष्ण चन्द्र अग्रवाल	74, धर्म तल्ला स्ट्रीट, लेनिन सारणी, कलकत्ता-13
18.	राष्ट्र दूत	श्री हरिकृष्ण अग्रवाल	अग्रसेन मार्ग धर्मपेठ नागपुर-10
19.	विश्व भ्रमण	श्री घनश्याम दास अग्रवाल	खजूरी बाजार । इन्दौर
20.	हमारा युग	महावीर जैन	84, प्रेमपुरी । मेरठ
21.	अमर उजाला	अशोक कुमार अग्रवाल	शाहजहांपुर रोड । बरेली
22.	विश्वमित्र	सुरेश कुमार	मालरोड । कानपुर
23.	जागरण	श्री धीरेन्द्र कुमार गुप्ता	न० 5/14/1, अधेरा पुल । वाराणसी
24.	अमृत प्रभात	सत्यनारायण जैसवाल	इलाहाबाद
25.	मेरठ समाचार	श्री राजेन्द्र पाल गोयल	मेरठ
26.	जागरण	श्री राजेन्द कुमार गुप्ता	नं० 352, सिविल लाईन, झाँसी
27.	जागरण	श्री मदन लाल गुप्ता	कसौटा हाउस, रीवा (म० प्र०)
28.	इन्दौर समाचार	श्री सुरेश सेठ विधायक	न० 17 न्यू देवास रोड, इन्दौर
29.	नवभारत	प्रफुल्ल कुमार महेश्वरी	जहांगीराबाद [मध्य प्रदेश]
30.	जवान भारत	श्री आनन्द अग्रवाल	सतना (मध्य प्रदेश)
31.	आज का आनन्द	श्याम अग्रवाल	पूणे (महाराष्ट्र)
32.	विश्वमित्र	कृष्ण चन्द्र मग्रवाल	फोर्ट (बम्बई)
33.	छपते-छपते	विश्वम्भर नैवर	नं० 13 सो. लोअर चितपुर रोड कलकत्ता
34.	रूपलेखा	बी. एल. शाह	नं० 9-लेनिनिसारणी कलकत्ता-13
35.	दैनिक नव ज्योति	दुर्गाप्रसाद चौधरी	जयपुर (राजस्थान)
36.	गुजरात समाचार	श्रीयन्स प्रसाद शाह	अहमदाबाद
37.	हिन्द व्यापार	राकेश सिंहल	नं० 2029, खारी वावली । चांदनी चौक-दिल्ली-6
38.	साप्ताहिक हिन्दुस्तान	शीला झुन-झुन वाला सहसंपादक	दिल्ली-1
39.	समाचार भारती	सत्य सुमन	दिल्ली-1
40.	हिन्दुस्तान समाचार	सुरेन्द्र बंसल, शिव कुमार गोयल	दिल्ली
41.	नन्दन	रतन कुमार शील	दिल्ली
42.	दैनिक प्रभात	वी. एस. विनोद	मेरठ
43.	दैनिक भास्कर	द्वारिका प्रसाद अग्रवाल	जयेन्द्र गंज, ग्वालियर
44.	दैनिक भास्कर	पन्ना लाल अग्रवाल	उज्जैन
45.	दैनिक भास्कर	महेश प्रसाद अग्रवाल	31, रानी महल । झांसी
46.	दैनिक भास्कर	... ...	इन्दौर
47.	दैनिक भास्कर	... ...	भोपाल
48.	दैनिक नव भारत	राम गोपाल महेश्वरी	काटन मार्केट, नागपुर
49.	दैनिक नवभारत	गोविन्द लाल वीरा	राम सागर पुरा, रायपुर M.P.
50.	दैनिक नवभारत	मदन लालमहेश्वरी	रानी की कोठी, जबलपुर
51.	दैनिक नवभारत	श्री एम. पी. चौधरी	भोपाल
52.	तेलगू तेजम	ऐरम चन्द्रशेखर गुप्ता	खमान (आन्ध्र प्रदेश)

53.	तेलगू देशम	डुम्पसिट्टो वेंकेन्ट्या गुप्ता	वारन्गल (आन्ध्र प्रदेश)
54.	प्रिय मित्र	डुग्गल हनुमंता राव	वारन्गल (आन्ध्र प्रदेश)
55.	धर्म युग	धर्मवीर भारती	बहादुर शाह जफर मार्ग दिल्ली-2
56.	नवभारत	साहू रमेश चन्द्र जैन	21, तिलक मार्ग, दिल्ली-1
57.	दैनिक कर्मयुग प्रकाश	रामेश्वर गुप्त	चौक बाजार । बान्दा
58.	दैनिक मध्य युग	वी० के० गुप्त	33 शापिंग सैन्टर, अमर टाकीज । बान्दा ।
59.	गुजरात समाचार	श्रीयन्स प्रसाद शाह	गुजरात समाचार भवन, खानपुर अहमदाबाद
60.	हिन्दुस्तान समाचार	शिव कुमार गोयल निदेशक	दिल्ली-1
61.	जनशक्ति	निस्तार म० गुप्त	नाजिरपति (सिलचर), आसाम

वैश्यों द्वारा संचालित उन पत्रिकाओं की सूची जो सार्वजनिक हैं; केवल वैश्य मात्र के हेतु ही नहीं हैं।

क्र०सं०	अखबार का नाम	सम्पादक का नाम	पता
1.	वसुधैव कुटुम्बकम्	श्री शिवनाथ विवोध	न० डी. 671, करेली, इलाहाबाद
2.	पीड़ित वाणी	प्रेम चन्द्र कंसल	गुलावठी, जिला-बुलन्दशहर
3.	दैनिक धधकती चिनगारी	श्री सीता राम गुप्त	छोटी बजरिया, सदर, मुरैना
4.	गाजियाबाद टाईम्स	जयप्रकाश गुप्ता	गाजियाबाद
5.	ग्रामीण जनता	डा० नन्द राम गोयल	रूड़की जिला-सहारनपुर
6.	यूथ लीडर	प्रमोद कुमार गोयल	गंगोह-सहारनपुर
7.	त्रिदोष	डा० भूषण लाल संगल	33/2, मेन बाजार, रूड़की
8.	शादुलपुर टाईम्स	सुशील कुमार जिन्दल	शादुलपुर, चुरु (राजस्थान)
9.	सत्यादर्श	रामकृष्ण गुप्त	प्रदीप, लॉज, मुहल्ला-मोहन कासगंज-एटा
10.	न्याय ज्योति	प्रमोद कुमार गुप्ता ऐडवोकेट	मु० जैजैराम । कासगंज (एटा) ।
11.	कर्मठ गुरु	डा. नत्थू लाल अग्रवाल	277, ईदगाह लखीमपुर खीरी
12.	भारत दर्पण	राजीव जिन्दल	अम्बर तालाब, रेलवे रोड । रूड़की
13.	जगत टाइम्स	मुरारी लाल अग्रवाल	गोवर्द्धन रोड़, मथुरा
14.	जय कांठल	एम. के. मोदी	प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश)
15.	हिण्डोन समाचार	सरोज कुमार गोयल	हिण्डोन सिटी, राजस्थान
16.	ध्वनि तरंग	नरेन्द्र कुमार गुप्ता	मोहल्ला मार्केट, सहारनपुर ।
17.	उत्तराखण्ड टाइम्स	मुरारी लाल जिन्दल	मुजफ्फरनगर
18.	शिवनाथ	हरप्रसाद अग्रवाल	रायपुर (मध्य प्रदेश)
19.	धर्मदूत	नरेन्द्र गोयल	बीच पट्टी, पिलखुआ (गाजियाबाद) ।
20.	मारकण्डा टाईम्स	रणजीत कुमार गुप्त	शाहाबाद मरकण्डा, जिला कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
21.	लखनऊ मेल	प्रकाश चन्द्र गुप्त	गोला गंज, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
22.	व्यापार भारती	केसर सिंह गुप्ता	नं० 30, कोरोनेशन भवन, चांदनी चौक, दिल्ली ।
23.	गुरुवार	अनिल आर्य	प्रेम प्रिन्टिग बोकारो स्टील-सिटी धनबाद ।
24.	प्रभावति	श्याम बनवाड़ी, प्रदीप	भीलवाड़ा (राजस्थान)
25.	जनता के विचार	एम. आर. बसल	चरखी दादरी, (हरियाणा)

26.	बन्धु प्रतिष्ठान	... ...	गांधी नगर, सुल्तानपुर (उ०प्र०)
27.	इन्सानी आंचाल	देशबन्धु गुप्ता	व्रज मार्केट बरेली (उत्तर प्रदेश)
28.	पूर्वी पंजाब	रामस्वरूप मित्तल	मित्तल सदन, भिवानी (हरियाणा)।
29.	सत्यलोक वाणी	अशोक जैन/मोहन जैसवाल	43/93, चौक, कानपुर
30.	घायल पत्थर	डा० लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता	29 बी, गोपालसिंह, पीलीभीत
31.	काल प्रवाह	जितेन्द्र भारती	इस्लामियां रोड़ पुरानी मंडी, सहारनपुर
32.	मधुर समाचार	यू० एल० गुप्ता	शेखर निवास, पंचपेडा कटघर, (उत्तर प्रदेश)
33.	कमजोर की पुकार	... ...	... ...
34.	हिन्दी सभा	श्री तारा चन्द्र गुप्ता	गऊशाला मार्ग, सहारनपुर
35.	सहारनपुर दर्पण	अनिल कुमार अग्रवाल	चर्च रोड, सहारनपुर
36.	गोलाघाट सन्देश	सत्य नारायण ओमर	न० 87/239, आचार्य नगर। कानपुर
37.	समाचार तरंग	जगदीश प्रसाद अग्रवाल	नं० 62, कटरा रोड : अमरोहा (मुरादाबाद)
38.	नवयुग	चौधरी कृष्ण मूर्ति	वैलौर (आन्ध्र प्रदेश)
39.	देश रत्न	हरिशंकर वार्ष्णेय	29/48 राजामंडी। आगरा–2
40.	आज का देश	रामशंकर गुप्ता	245, नवाबगंज। कानपुर–2
41-	दूर देश दैनिक	जे० के० जोग	न० 10567, मानकपुरा, दिल्ली
42-	नागवेद	एम० पी० गुप्ता	न० 91 भोगल लेन, जंगपुरा दिल्ली।
43-	दिशा भारती	अनिल कुमार गुप्ता	न० 2 तानसेन मार्ग, बंगाली मार्केट, दिल्ली–1
44-	कुर्सी के पुजारी	राधेश्याम अग्रवाल	क० 1249/3, रोहतास नगर दिल्ली
45-	ग्रामीण दुनियां	एम० एम० गुप्ता	न० 39/38, राजेन्द्र नगर। नई दिल्ली
46-	दिशा संकेत	विकास गुप्ता	142, गुप्ता भवन। बदरपुर दिल्ली–44
47-	राजधानी दर्शन	सुरेन्द्र कुमार गुप्त	2899, गुप्ता मार्केट। सदर बाजार। दिल्ली
48-	सुख संगम	बलवन्त सिंह जैन	4833/ एक्स–3, टैगौर बिल्डिंग, बाराट्टी, दिल्ली।
49-	जय महामना	श्रीमती उर्मिला अरुण	न० 15 एम. दिलशाद कालोनी शाहदरा दिल्ली–32
50-	मुद्रण परिवार	एन० ऐस० जैन	1203/18, त्रिनगर, दिल्ली
51-	नवयुग	चन्द्रगुप्त केशरवानी	न० सी० के० 25/2, चौक वाराणसी
52	सूर्य सम्पादक	मुन्नू लाल गुप्त	हरगांव (सीतापुर)।
53-	रीडर साप्ताहिक	गोपाल गोयल	न० 3, विक्टोरिया पार्क गूलर नाका–बान्दा
54-	प्रजावाणी	मदनलाल वियाणी	नान्देड, महाराष्ट्र
55-	आज की बात दैनिक मेवात एवं सुनहरा भारत	विजयपाल अग्रवाल	सदर बाजार, गुड़गांव हरियाणा।
56-	ज्ञानोदय	इन्द्रप्रभाकर	ज्ञानोदय प्रेस, हिसार, हरियाणा।
57-	जनता के विचार	नाथूराम बंसल	रेलवे रोड़, चरखी दादरी (हरियाणा।)
58-	अग्रवाल राजनीति	महावीर प्रसाद अग्रवाल	अग्रवाल हाउस, रेलवे रोड, सोनीपत (हरियाणा)
59-	जगजीत	प्रेमलाल गुप्त	नई बस्ती, अम्बाला शहर।
60-	समर्पण 9	रामेश्वर दयाल अग्रवाल	28–33–34, कच्चा बाजार। अम्बाला छांवनी।
61-	संसार केशरी	जगमोहन गुप्ता	पुलिस लेन, के सामने। पोमपुरा स्ट्रीट। नारनौल (हरियाणा)।
62-	विषैला सत्य	रमेश कुमार अग्रवाल	नई बस्ती, बहादुर गढ़। हरियाणा।
63-	गांव-गाँव	लाला राम गुप्त	नं० 303, पटवा गली, करनाल। हरियाणा।
64-	चमकता हरियाणा	तुलसी राम मित्तल	रेलवे रोड़, भिवानी।
65-	विचार जागृति	उमेश अग्रवाल	रेलवे रोड़, सफीदो शहर। (हरियाणा)

क्र सं०	अखबार का नाम	सम्पादक का नाम	पता
66-	हाल चाल	किरण गुप्ता	न० 150 जगदीश कालोनी। रोहतक (हरियाणा)
67-	उद्यान पत्रिका	मदन गोपाल गुप्ता	सब्जी मण्डी। कैथल (हरियाणा)।
68-	उषा वेला	जयनारायण गुप्ता	गुप्ता प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना मंडी, हरियाणा।
69-	व्यापार वाणी	राम कुमार गुप्त	प्रीति नगर, हिसार।
70-	मीठाफल	अशोक गोयल	गली न० 5, अबोहर, (पंजाब)।
71-	फिल्म इन्डस्ट्री	नरेन्द्र गोयल	मिल रोड, जनता नगर। चौक। लुधियाना।
72-	तरुण दूत	कथूरिया चन्द्र अग्रवाल	मकान न० 22, सेक्टर-22 ए। चन्डीगढ़।
73-	भक्ति रसामृत	वीरेन्द्र कुमार गुप्त	न० 574, सैक्टर-20 ए। चन्डीगढ़।
74-	सुधाबिन्दु		न० 55/3 म्युनिसिपल क्वाटर। शाहपुर, अहमदाबाद। गुजरात।
75-	जयहिन्द	श्री एन०एल० शाह	आश्रम रोड़, पो० बा० 200 अहमदाबाद--गुजरात।
76-	हैदराबाद समाचार	मनोपढ़जी	न० 11/5/69, चारकमान हैदराबाद।
77-	जागृत राजस्थान	रामाविलास मौढ़ानी	न० 451, हार्डिकर बाग हिमायत नगर, हैदराबाद।
78-	प्रायश्चित [मासिक]	श्री कृष्ण गोपाल मित्तल	न० 3072, प्रताप स्ट्रीट दरियागंज, नई दिल्ली--2
79-	जन सजीवन [मासिक]	श्री भरत गुप्ता	न० जे--53 अशोक विहार फेस--I
80-	समित, मासिक	कल्याण चन्द्र गुप्ता	न० 11 ए राउज ऐवेन्यू दिल्ली।
81-	वैश्य जागृति ज्योति	रमेश कुमार गुप्त	न० 1893, वेहराम वेग स्ट्रीट, लालकुंआ, दिल्ली-6
82-	संतवाणी मासिक	श्री सुशील कुमार अग्रवाल	170/ए-2, मोतिया बाग, दिल्ली-54
83-	आपके विचार मासिक	सुरेश कुमार गुप्ता	2237, गली अनार, दरीबा, दिल्ली।
84-	दया धर्म मासिक	ओमप्रकाश गोयल	4, हरिजन बस्ती, न्यू रोहतक रोड, दिल्ली-3
85-	दिल्ली प्रगति मासिक	विनोद कुमार गुप्ता	4418, मन्दिर वाली गली, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-6
86-	हर एक मासिक	प्रवीण प्रकाश सिंघल	न० 6035, गली समोसन, फीलखाना, दिल्ली-6
87-	क्रीड़ा लोक मासिक	श्री मती शकुन्तला गुप्ता	न० 1901, गली, सेलुजा बाजार सीताराम, दिल्ली-6
88-	युवा प्रवर्तन मासिक	विनय बिन्दल	जी-177, सर्वोदय इन्क्लेव, नई दिल्ली—17
89-	श्याम परिवार पत्रिका	बाबू राम बंसल	नं० 1136, छत्ता मदन गोपाल दिल्ली-6
90-	वैवाहिक दुनिया मासिक	श्रीमती ऊषा सिंहल	जे-32 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली-24
91-	समग्र द्विमासिक	गोरी नन्दन सिंहल	नं० 1655/56 हरगोविन्द नगर। बहादुरगढ रोड। दिल्ली-6।
92-	श्री हरिकथा	सुरेन्द्र अग्रवाल	नं०-15 इन्डस्ट्रीयल एरिया, लोधी रोड, दिल्ली-23
93-	नगर दर्शन	कैलाश चन्द्र	न० 15 ट्रान्सपोर्ट सैन्टर, रोहतक रोड, जनरल स्टोर। दिल्ली-35।
94-	कुलपति	श्री गिरधारी लाल जालान	न० 5754, जोगीवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-6
95-	रीडर साप्ताहिक,	... ...	3. विक्टोरिया पार्क नाका-बांदा (उत्तर प्रदेश)
96-	सूत्रकार	स्नेही आत्मा	न० 14, मदन चटर्जी लेन, कलकत्ता-7
97-	रूप लेखा	श्री बी०बी०एन० साह	न० 9, विधान सरनी, कलकत्ता-13
98-	आज का राजस्थान	श्री भागीरथ गुप्ता	न० 3. अरविन्द सरनी, कलकत्ता-5
99-	परम्परा	श्री प्रकाश अग्रवाल	न० 22/1, धर्मतल्ला, कलकत्ता-1
100-	राष्ट्र मित्र	श्री नरेश चन्द्र अग्रवाल	न० 12, बी.बी.डी. बाग पी.ए. हरेस्ट्रीट कलकत्ता-7
101-	क्या (पाक्षिक)	श्री सावरमल अग्रवाल	न० 73, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता।
102-	जय जवान जय किसान (अंग्रेजी)	श्री जुगल किशोर अग्रवाल	गोपाल नगर रोड, अलीपुर कलकत्ता-7

क्र सं०	अखबार का नाम	सम्पादक का नाम	पता
103-	सचमुच (पाक्षिक)	श्री प्रकाश गुप्त	न० 136, बलियाघाटा रोड, कलकत्ता–7
104-	विशाल मरुधर	श्री नन्द किशोर अग्रवाल	न० 9, एजरा स्ट्रीट, कलकत्ता–1
105-	हरियाणा साहित्य पत्रिका	श्री सत्यनारायण अग्रवाल	49, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता–7
106-	अकेला	श्री विश्वनाथ गुप्त	तिनसुखिया (आसाम)
107-	हितकारी	श्री राम बालक प्रसाद	नया पुरन्दरपुर, जी० पी० ओ (साउथ)-पटना
108-	रामराज	श्री रामनाथ गुप्त	स्वरूप नगर, कानपुर–2
109-	बाथमदीप	श्री मदन लाल गुप्त	बाथम वैश्य धर्मशाला, लखीमपुर खीरी (उत्तर प्रदेश)
110-	पुरवार पृष्ठ	श्री आनन्द प्रकाश	पुरवार वस्त्र भण्डार, राजमार्ग उरई (जालोन)
111-	नव शंकर	डा० जय मंगलम् पी.एच.डी.	नया रामनगर, उरई। (जालोन)
112-	राजनीति	श्री जितेन्द्र अग्रवाल	सोनीपत। हरियाणा।
113-	जनता के विचार	श्री एन०आर० बंसल	चरखी, दादरी। हरियाणा।
114-	हमारा युग (दैनिक)	श्री महावीर जैन	मेरठ।
115-	Indian Continental	श्री इन्द्रेश कुमार गुप्त	1/189 पीपल मंडी। आगरा

०३) सरकारिया कमीशन को प्रतिवेदन

केन्द्रीय सरकार ने केन्द्र–राज्य सम्बन्धों पर पुर्नविचार के लिये जस्टिस आर० ऐस० सरकारिया को एक सदस्यीय कमीशन के रूप में नियुक्त किया था। केन्द्र की शक्तियां घटाने के बजाय बढ़ाई जावें क्योंकि राज्यों में स्थानीय बहुमत वाली जातियों ने सरकारों पर कब्जा करके अपनी अपनी जातियों को ही लाभ पहुंचाया है और सर्वत्र वैश्यों का उत्पीडन किया है। एतद्विषयक प्रतिवेदन सरकारिया कमीशन को दि० 12–6–84 को महामन्त्री ने तैयार करके तथा अधीक्षण समिति से स्वीकार कराके भेजा। उसकी एक हजार प्रतियां सन 1985 के नव निर्वाचित लोकसभा एवं राजसभा के सांसदों तथा देश की सब प्रमुख राजनैतिक पार्टियों को भेजी गई।

०४) नव निर्वाचित सांसदों का अभिनन्दन

दि० 7 मई 85 को कांस्टीटयुशन क्लब-दिल्ली में इस सत्र के नव निर्वाचित वैश्य लोक सभा सांसदों का अभिनन्दन किया गया। इसका आतिथ्य भार अपने श्री बजरंगलाल जाजू ने उठाया। इसमें 16 में से निम्न साँसद कृपा करके उपस्थित हुये और वैश्येकता परक विचार व्यक्त किये .—-

1.	सर्व श्री मूलचन्द डागा	पाली (राजस्थान)
2.	श्रीमती प्रभावती गुप्त।	मोतीहारी (बिहार)
3.	श्रीमती रतन कुमारी।	जबलपुर (म० प्र०)
4.	श्री सतपाल मित्तल।	लुधियाना
5.	,, संतोष कुमार साहू	उडीसा
6-	'' शिवप्रसाद साहू	राँची (बिहार)
7-	,,. विधीचन्द जैन	बाड़मेर (राजस्थान)
8-	,, डालचन्द जैन	सागर (मध्य प्रदेश)

तथा सांसदगण श्री मति इन्दुबाला सुखाडिया (उदयपुर), श्री निहाल सिंह जैन (आगरा) रामेश्वर नीरखरा–गादरवाडा के सन्देश पढ़े गये। इसमें भूतपूर्व साँसद भी आमंत्रित किये गये थे। निश्चय हुआ कि देश भर के वर्तमान एवं निवर्तमान वैश्य सांसदों एवं पार्षदों का एक सम्मेलन अतिशीघ्र बुलाया जावे और उसमें वैश्यों के हित संरक्षण पर चर्चा हो।

०५) चौदह सूत्री कार्यक्रम

वैश्य मात्र के पथ प्रदर्शन हेतु निम्न 14 सूत्रीय कार्यक्रम छ:पवाकर 10000 की संख्या में वितरित किया गया। इसे वैश्यों की 50 पत्र–पत्रिकाओं ने छापा। इस प्रकार कोई 5 लाख प्रतियों में वितरित हुआ।

०६) भारतवर्ष के वैश्य जनों हेतु १४ सूत्रीय कार्यक्रम

अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन द्वारा प्रसारित

१—साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित होकर राजनीतिज्ञों ने देश के अर्थतन्त्र पर कब्जा सा कर लिया है और सुनियोजित ढंग से वैश्यों का धन, वैभव, वर्चस्व और सम्मान हरण किया जा रहा है। गांव-गांव, नगर-नगर और जिला स्तर पर सारे वैश्य उपवर्ग आत्म रक्षा हेतु संगठित हो जावें।

२—हर उपवर्ग की सभी सोसाइटी और जलसों में उस अंचल के शेष सब वैश्य वर्गो को भी सादर आमन्त्रित किया जावे।

३—हर वयस्क व्यक्ति नियमानुसार अपना वोट बनवा ले।

४—वैश्य बन्धु जो किसी भी राजनैतिक पार्टी में हों, वैश्यों के हितों की पार्टी में वकालत कर के उन्हें न्याय दिलाने का प्रयत्न करें, जैसे स्वतन्त्र व्यापार प्रणाली का संरक्षण, अनावश्यक कन्ट्रोलों को खत्म किया जाना, अनावश्यक राष्ट्रीयकरण का विरोध, जिन वैश्यों का धन्धा छीना जावे उन्हें वैकल्पिक कार्य दिया जाना आदि। व्यापार

हमारे सहयोगी (३२)



"SAMAJA RATNA"
Sri Veloor Durvasusulu Gupta
Nava Niketan 5-9-22/14
Adarsha Nagar, Hyderabad

Sri V. Durvasulu Gupta was born in 1921 in a philanthrophic business family in Hyderabad. While studying in Osmania University College, attracted by a cell of Hyderabad State Student leaders to boycott College and join Independence movement, he discontinued studies and joined the Vandematharam movement. Afterwards he joined the family business.

In 1936 he took active part in first Nizam Rastra Arya Vysya Mahasabha, held at Hyderabad, as a head of Voulenteers group, when his father Sri Veerabhadriah Garu was the General Secretary to Nizam Rastra Arya Vysya Mahasabha.

In 1939 he was elected joint Secretary to Vysya Hostel, Hyderabad at the time of inception. He took active part in State reorgonisation movement and was Secretary to Andhra Telangana Akikarana Samiti. He served as General Secretary and Treasurer to Andhra Pradesh Arya Vysya Mahasabha and now is on its advisory Board.

He served as General Secretary to Vasavi Seva Kendram, Hyderabad for eight years since inception. He is Vice President of all India Vysya Samaj. He is Vice President of A.P. Federation of Vysya Institutions.

He worked during State Freedom struggle with Dr. Chenna Reddy.

He is Vice President of Vasavi Nityanna Satram, Mantralayam and advisor to Akhila Bharata Srisaila Khetra nityanna Satram, Srisailam.

He is General Secretary to Vysya Bhavan Kalyana, Mandapam, Hyderabad.

He is President to All India Vasavi Kanyakaparameshwari Temples Federation and Chairman to Sri Kanyaka Parameshwari Temple Trust Board, Hyderabad.

He is President to Hyderabad Metal Merchants, Association and Vice President to Andhra Pradesh Federation of Chambers of Commerce and Trade.

He was President to Basti Congress Committee, Mandal Congress Committee, Vice Presicent to Hyderabad City Congress Committee and member to Andhra Pradesh Congres. Committee.

He is treasurer to Indian Institute of Commerce and Management and Governing Council Member to Vasavi Engineering College of Vasavi Accademy of Education.

He is serving the poor through "SRI VELOOR DURVASVLU GUPTA CHARITABLE TRUST".

He is awarded "SAMAJA RATNA" by All India Vysya Samaj with the auspicious hands of Sri Rama-Krishna Hegde, Chief Minister of Karnataka for the service he has renderded to the Community and Nation in General.

He is a devotee and member of The Divine Life Society founded by Sri Sri Sri Shivananda Saraswaty Swamy of Rishikesh, Himalayas.

हमारे सहयोगी (३३)

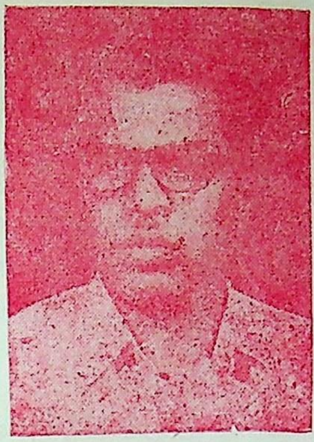


श्री राजेन्द्र कुमार जैन B. Com. LLB
६६ तीरगरान। मेरठ-२

जन्म—२२ जनवरी सन १९३४

शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात ही समाज सेवा के क्षेत्र में कूद पड़े। श्री जैन सभा के प्रधान मन्त्री चुने गए। १९६६ में उद्योगों में उत्पादकता कैसे बढ़ाई जाये, इस विषय पर रिपोर्ट देने के लिये नैशनल प्रोडक्टीविटी कौंसिल द्वारा बनाई गई Study Team के सचिव नियुक्त किये गये। वैस्टर्न यू. पी. चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री के विगत २३ वर्षों से मन्त्री पद पर कार्यरत हैं। अ०भा० दिगम्बर जैन परिषद के मुख्य पत्र वीर का सम्पादन १९६८ से १९८२ तक किया। भारतीय जैन मिलन समाचार का वर्तमान में सम्पादन १९७९ से कर रहे हैं। १९८४ से वैश्य सम्मेलन के सम्पर्क में आये और वैश्य सम्मेलन के शुरू के अंकों का प्रकाशन व सम्पादन किया। जैन समाज की अनेकों संस्थाओं से सम्बन्धित हैं जैसे अ० भा० दिगम्बर जैन महासभा, दिगम्बर जैन महासमिति, उत्तरांचल दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, वीर निर्वाण भारती, श्रमण जैन भजन प्रचारक संघ आदि रोटरी कलब मेरठ सैण्ट्रल के इस समय मन्त्री हैं। जैन धर्म सम्बन्धी प्रचुर साहित्य का प्रकाशन आपके सम्पादन में हुआ है। खेलों में शतरंज, क्रिकेट व लान टेनिस का शौक है।

हमारे सहयोगी (३४)



डा रमाकान्त सा. मामीडवार · नान्देड़ (महाराष्ट्र)

NAME : Dr. R. S. Mamidwar, M. B. B. S. (Osm.)
DATE OF BIRTH : 04-08-1930

MEDICAL : General Practitioner Nanded (Maharashtra) Founder member of Sahayogi Hospital. Founder member of Nanded Medical Foundation. President I.M . Nanded Branch. 76-77. State Council member of I.M A. 1981-82.

EDUCATIONAL : (1) Secretary Abhinav Bharat Sikshan Sanstha, running Arts, Commerce and Science College.

(2) Founder Director—College of Physical Education Nanded.

LIONS : Deputy Dist. Governer Dis . 232-D in year 1980-81 acted as chairman on various committees. Specially as youth exchange Chairman and Organiser. All India youth conference at Pune in 1979-80.

VAISHA SAMAJ :

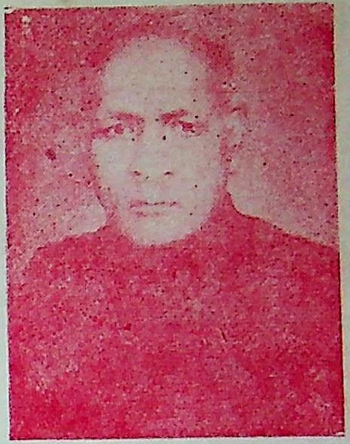
(1) President Nagreshwar Vaish Mandir from 1981 to 1984.
(2) Founder President Maharashtra Arya Vaisha Mahasabha.
(3) First elected President of Maharashtra Arya Vaisha Mahasabha.
(4) Vice-President. Federation of Southern States Arya Vaisha Mahasabhas.

GENERAL :

(1) Member of Nerli Kusts Dham.
(2) Associated with Various other Philanthrophic Organasation eg. Blood Bank, Red Cross etc.

FAMILY : Married to sow Dawarkabai having three daughter and one Doctor son.

हमारे सहयोगी (३५)

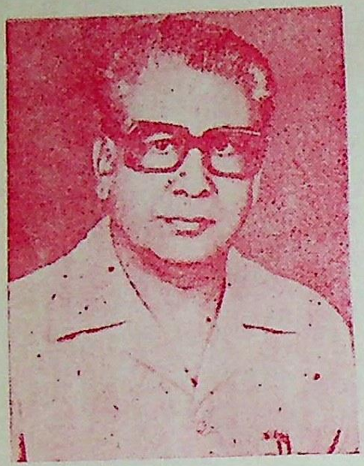


श्री राम प्रताप गुप्त

(कमलापुरी वैश्य) गढ़वा पलामू।

पलामू जिला अन्तर्गत गढ़वा निवासी सम्पन्न परिवार के स्वर्गीय श्री राम रतन साह, कमलापुरी वैश्य के द्वितीय पुत्र के रूप में गत १९१२ के दिसम्बर महीने में जन्म हुआ। आधुनिक प्रचलित खेलों तथा पठन-पाठन में विशेष अभिरुचि। नगर के विद्यालय से १९३३ में मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्ण हुये, तदन्तर समय-समय पर राजनैतिक, धार्मिक तथा अन्य सामाजिक कार्यों में सहयोग प्रदान करते रहे। शिक्षा के प्रवर्द्धन हेतु नगर में विद्यालय की स्थापना की। फिर कमलापुरी वैश्य समाज में प्रगति लाने के लिए संगठन सभा में सक्रिय भाग लेने लगे। पलामू जिला कमलापुरी वैश्य सभा के उपाध्यक्ष १९४५-४६ तथा १९४८ में अध्यक्ष निर्वाचित हुये। १९३८ में जो अखिल भारतवर्षीय कमलापुरी वैश्य महासभा का पलामू जिले के नगर उंटारी शहर में हुई, उस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष भी रहे। इसी बीच गत १९५९ से १९८२ ई० तक हलधर ट्रान्सपोर्ट के प्रबन्धक के पद पर काम किया। सन् १९७७ में अखिल भारतवर्षीय कमलापुरी वैश्य महासभा के अधिवेशन, जो सीतापुर (मध्य प्रदेश) में एवं इलाहाबाद में हुये सम्पन्न हुआ उनमें उपाध्यक्ष चुने गये। और अप्रैल १९८४ में अध्यक्ष के पद पर निर्वाचित हुये।

हमारे सहयोगी (३६)



डा० दयाकृष्ण विजयवर्गीय
विजय
पी० एच० डी०, एल० एल० बी०
साहित्य रत्न, सिद्धान्त भास्कर

कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो सोये हुये समाज को जगाकर प्रगति के पथ पर अग्रसर कर देते हैं, ऐसा ही एक नाम डा० दयाकृष्ण विजयवर्गीय का है। अखिल भारतीय विजयवर्गीय वैश्य महासभा को सन् 1969 में आपने पुनजागृत किया। कार्यकारिणी ने कार्य-वाहक प्रधान मन्त्री के रूप में उनको वहीं मनोनीत किया। आपने प्रयत्न कर सन 71 में शाहपुरा में महासभा का अधिवेशन बुलवाया। वहां वे विधिवत प्रधानमन्त्री नियुक्त हुये। डा० विजयवर्गीय न 7 वर्षों तक प्रधानमन्त्री के रूप में महा सभा को गति देने व अन्य समाजों के समकक्ष लाकर खड़ा कर देने में जो कुशलता प्रदर्शित की, वह सर्वत्र सराही गई। सन 78 में आपने महा सभा का नवम अधिवेशन उसी सजधज के साथ आयोजित करवाया तथा प्रगतिशील सामाजिक प्रस्ताव पारित करवाये।

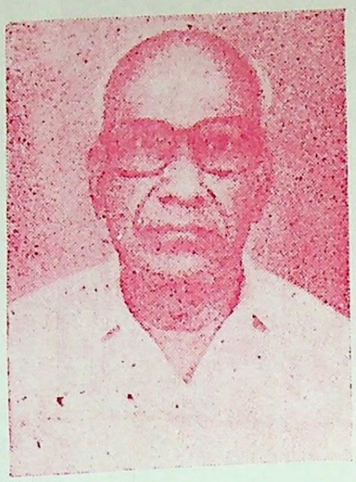
सन 80 में समाज ने उन्हें विधिवत महासभा अध्यक्ष बना दिया। सन 85 की 8 जून तक आपने महा सभा के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। "विजयवर्गीय सन्देश" पत्रिका को सन 52 में आपने ही प्रारम्भ किया था।

विजयवर्गीय नवयुवक मंडल के माध्यम से भी आपने कई बार पदाधिकारी रहकर बड़ी सेवा की है। समाज सेवा के साथ साथ आपकी रुभिरूचि साहित्य में प्रारम्भ से ही रही है। आप श्री भारतेन्दु समिति कोटा के प्रधानमन्त्री व अध्यक्ष दोनों पदों पर आसीन रह चुके हैं। कोटा हिन्दी सेवक संघ के भी आप कुछ समय अध्यक्ष रहे। आप सिद्ध हस्त कवि हैं। आपके महाकाव्य "आज्जनेय" पर आपको राजस्थान का विशिष्ठ मीरा पुरस्कार भी मिल चुका है। आपकी 14–15 पुस्तकें प्रकाशित हैं। जिनमें गीता अनुशीलन, राजस्थानी काव्यों में श्रृंगार-भावना, आदि–सम्राट आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। आपने कई साहित्यिक व सामाजिक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया है। मधुमती उदयपुर के भी आप सम्पादक रहे हैं।

राजनीति में डा० विजयवर्गीय की प्रारम्भ से रूचि रही है। आप राजस्थान विधान सभा के सदस्य भी रह चुके हैं। कोटा नगर परिषद के पार्षद तथा नगर विकासन्यास कोटा के भी आप सदस्य रह चुके हैं। कोटा के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक जीवन से भी आप पुरी तरह जुड़े है।

आपकी साँस्कृतिक अभिरूचि इसी से परिलक्षित होती है कि आप वर्तमान में संस्कार भारती के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष हैं, जो ललित कलाओं के लिये समर्पित संस्था है। आपका शैक्षणिक जगत में भी दखल रहा है। आप राजस्थान विश्व विद्यालय की सीनेट के भी 6 वर्षों तक सदस्य रहे हैं। आपने कोटा में एक विचार प्रधान संस्था की भी स्थापना कर रखी है जिसका नाम है चिन्तन। चिन्तन के आप संस्थापक अध्यक्ष हैं। वैसे व्यवसाय की दृष्टि से आप एडवोकेट हैं। आपका जन्म 8-4-29 को ग्राम छजावा जिला कोटा में हुआ है। आप समाज के लिये पूरी तरह समर्पित व्यक्ति हैं।

हमारे सहयोगी (३७)



श्री लछी राम अग्रवाल
श्याम भवन, रेलवे रोड़, हरिद्वार

पूर्व निवासी—यह परिवार राजस्थान के जिला माधोपुर सीकर का निवासी है। वहाँ इनके पिता जी राजवैद्य थे। प्रसिद्ध वैद्य रामकुमार ने वहां बाला जी का मन्दिर बनवाया था, जिसमें हनुमान की मूर्ति है। आपके चार भाई थे। बाद में उन्होंने आकर उत्तर-प्रदेश में सर्विस की। राजकीय कम्पाउन्ड़र की पोस्ट से रिटायर्ड होकर हरिद्वार में मैड़ीकल हाल स्थापित करके प्रचुर धनार्जन किया। आपके चार कन्यायें हैं। जो सब ग्रेजुएट हैं। पुत्र तीन हैं—विजय अग्रवाल B. Sc., ड़ा० जोगेन्द्र पाल सिंह BAMS (प्रवक्ता राजकीय आर्युवैदिक कॉलेज ऋषिकेश) तथा श्री अजय कुमार। भ्रातृगण Lions Club में कार्यरत हैं तथा जोगेन्द्र पाल जी तो स्थानीय शाखा के उपाध्यक्ष हैं।

संस्थान—(१) श्याम मेडीकल हाल (स्वामी)
(२) यूनीवर्सल ट्रेडर्स (पार्टनर)
(३) डायरैक्टर शिवालिक कामर्टैड प्राईवेट लिमिटेड। रानीपुर (हरिद्वार)

हेतु कम ब्याज पर प्रचुर ऋण की व्यवस्था कोष व व्यापारिक विभागों और निकायों में सारी नौकरियों का आरक्षण, बिना मुकदमा चलाये बन्दी न बनाना, सेल्स टैक्स का खत्म किया जाना। परिवहन का राष्ट्रीयकरण समाप्त करना आदि।

५—चुनावों में वैश्य जन अपनी आस्थानुसार पार्टियों से टिकट प्राप्त कर राजनीति में प्रवेश करें।

६—चुनाव से लिस्ट सिस्टम की मांग करिये, जिसके अनुसार देश का हर वोटर देश के किसी भी प्रत्याशी को वोट दे सके और इस प्रकार सब जातियां अपनी जनसंख्या के अनुसार विधान तथा लोक सभा में अपना प्रतिनिधित्व पा सकें।

७—वैश्य जन उसी को वोट दें और जितायें जो वैश्यों के हितों के संरक्षण का वचन दें। जो वैश्यों के हितों के विरोधी हैं उन्हें अपने संगठित वोट से हराने का प्रयत्न करें।

८—अधिकतर प्रदेशीय सरकारों ने वैश्यों का वृहत उत्पीड़िन किया है। हमें केन्द्र सरकार से ही न्याय की आशायें हैं, अतः उन सब वृत्तियों, धारणाओं और सुधारों व संशोधनों का समर्थन किया जावे जिनसे केन्द्र अधिक पुष्ट हो।

९—इस देश की भाषा, धर्म और संस्कृति के प्रति निष्ठावान रहिये, और उन्हें नष्ट करने के उपायों का जुटकर विरोध करिये।

१०—व्यापार में ईमानदारी बरतिये और प्रजा का दिल जीतिए। घूस देकर काम न कराईये। दान दया के स्रोतों को सूखने न दीजिए। यथापूर्वक धर्मशाला, गौशाला, विद्यालय, गुरुकुल, अस्पताल, मन्दिर सदाव्रत संस्थाओं का निर्माण चालू रखिये।

११—यदि अपने उपवर्ग में योग्य वर-वधू न मिले तो वैश्य मात्र में भी ढूंढिये; ताकि अन्तः उपवर्गीय विवाहों का चलन होकर वैश्य संगठन भी साथ–साथ ही सुदृढ़तर होता जावे। विवाहों के रीति रिवाजों में शालीनता लाइये और अपव्यय बचाइये। विवाह बारहों मास करायें जा सकें। विवाह संस्कार दिन में करायें। हर विवाह की विधिपूर्वक रजिस्ट्री भी कराइये और जहां विवाह के पांच वर्ष के अन्दर वधू की मृत्यु संदेहास्पद ढंग से हुई हो तो पुलिस व मजिस्ट्रेट को सूचना दीजिये। मर्यादित दहेज तथा सामूहिक विवाहों का चलन प्रारम्भ करिये।

१२—पारम्परिक धन्धों के अतिरिक्त अन्य पेशों में भी प्रवेश करिये। उद्योग धन्धों व बड़े कृषि फार्मों को प्रारम्भ करके देश के अभ्युत्थन में हाथ बटाइये।

१३—अपने नई पीढ़ी के बच्चों के नाम के आगे गुप्त या वैश्य शब्द लगाइये। यदि गोत्र या उपवर्ग परक नाम जोड़ना हो तो उस शब्द के साथ गुप्त या वैश्य शब्द लगाइये। यथा: बाथम वैश्य या केसरवानी गुप्त और गोयल गुप्ता। अपने नामों के आगे भी यथा सम्भव इस प्रकार से गुप्त या वैश्य शब्द को जोड़ लीजिए।

१४—अपने दैनिक व्यवहार व पदासीन कार्यों व नियुक्ति आदि में और चीजें समकक्ष हों तो वैश्य जन को वरीयता दें। अगले आदेश की प्रतीक्षा करिये।

०७) वैश्य राजकीय उच्च अधिकारियों को भी एक प्रपत्र भेजा गया, जिसकी संख्या 5000 थी। उनसे प्रार्थना की गई कि वैश्यों को लाभ दिलायें।

(०८) अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के आजीवन सदस्यों के नाम पते [जिनके कन्धों पर इस एकीकरण महायज्ञ को आगे ले जाने का भार है।]

क्र०सं०		पता
1/1	डा० रामेश्वर दयाल गुप्त M.A. Ph.D	रामेश्वर कुन्ज। आर्य नगर। हरिद्वार रोड। ज्वालापुर (सहारनपुर)–249407
2/2	श्री जयप्रकाश गुप्त	नं० 7/12 ईस्ट पटेल नगर। दिल्ली–8
3/3	श्री बनारसी दास गुप्ता भूतपूर्व मुख्यमंत्री।	विजय नगर। भिवानी (हरियाणा)।
4/8	,, विद्याराम गुप्त ऐडवोकेट।	मिल एरिया। मुरैना (M.P.)
5/4	,, रामेश्वर दास अग्रवाल।	नं० D–35 दक्षिण विस्तार I नई दिल्ली–49
6/12	,, राम अवतार गुप्त।	उक्त प्रकार ही
7/14	,, प्रेम प्रकाश गुप्त	नं० 47/35 पंजाबी बाग। दिल्ली–26
8/15	" सेठ सीताराम गुप्त	नं० A–11, निजामुद्दीन वैस्ट, दिल्ली–13
9/17	" बजरंग लाल जाजू उद्योगपति	नं० 1/11B पहवा मैन्शन। आसफ अली रोड। दिल्ली–२
10/21	" बालाधनदायथम	नं० 291 अग्रहरन स्ट्रीट। इरोड [638001] तामिलनाडू।
11/23	" डा० अरुण केसरी।	लोहिया नगर रोड। कंकड बाग। पटना–20

12/24	श्री गंगा स्वरुप गुप्त	प्रल्हाद बाटिका। बुढ़ाना गेट मेरठ।
13/28	श्री रामकृष्ण गुप्त केशरवानी	नं० 923 बापूराव जगताप मार्ग। भायखला बम्बई-27
14/29	दानी प्रसाद गुप्त	नं० CC-10 गुन सागर नगर, स्टेशन रोड, पोस्ट-कलवा (400605) जिला थाना महाराष्ट्र
15/30	श्री प्रिन्सिपल भोलानाथ केसरवानी M.A.	नं० 916 चन्दापुर का हाता, मुहभिनु इलाहाबाद—३
16/42	डा० श्रीमती शैल गुप्त Ph.D.	नं० 559 प्रह्लाद बाटिका। मेरठ सिटी।
17/43	श्री महेशचन्द गुप्त	नं० 694 प्रह्लाद बाटिका। मेरठ
18/44	श्री जयप्रकाश गुप्त। Executive Magistrate	गुप्ता निवास। लोहार पुरा। नागपुर—18
19/46	Sh. K N. Gupta	नं० 4/1/403 आबिद रोड़। हैदराबाद—1 AP
18/47	Sh. S K Radha Krishnerya Industrialist	KALLUR P. S. जिला अनन्थपुर A.P.
19/48	Sri K Nandgopal Oil Millowner	P. O—GOOTY Ps. जिला अनन्थपुर A.P.
20/52	श्री चाननमल नेवर।	नेवर भवन रानिया बाजार सिरसा (125055) हरियाणा
21/60	श्री माधुरीशरण अग्रवाल नर्मदा इन्डस्ट्रीज	नं० 6/1 Industrial Estate-गोविन्दपुरा भोपाल-23
22/62	" भगवत स्वरुप गुप्त + कृष्ण कुटीर	जवाबपुरा स्ट्रीट। मुरादाबाद
23/65	... ...	शुल्क अप्राप्त
24 66	श्री नाथूराम सेवक	अलीगंज (ऐटा) उ प्र०
25/68	डा० प्रकाश नारायण गुप्त, भूतपूर्व मिनिस्टर।	नं० 45 विजय नगर। आगरा
26/69	श्री अरविन्द नाथ सेठ	भारत लैम्पस। कोल्ड स्टोरेज कम्पाउन्ड। मेरठ
27/70	श्री जमुना प्रसाद। भूतपूर्व डिप्टीमेअर।	लाल फाटक। मारूफगंज। पटना-8
28/74	श्री रामकृष्ण हर्ष	See Serial 110
29/76	श्री पुरुषोतम गर्ग	नं० C-4/7 माडल टाउन दिल्ली-9
30/80	,, केदारनाथ गुप्त अध्यक्ष केसरवानी शिक्षा समिति	नं० 20 जवाहर पार्क—इलाहाबाद
31/81	" सतीश चन्द्रगोयल।	नं० 227 चन्द्रलोक। मेरठ—2
32/87	" हुक्मचन्द जैनी, वर्द्धमान स्वदेशी-खादी	सरधना (मेरठ)।
33/95	Dr. S. P. Mittal M.D.	नं० 244/2, शिवाजी रोड। मेरठ
34/106	श्री महाबीर सरन रस्तोगी	नं० 5 कृष्ण पाडा। जामा मस्जिद। मेरठ-२
35/107	Dr .M. C. Varshney M.B.B.S	नं० B-29 P. L. Sharma Hospital-Meerut.
36/121	श्री सत्येन्द्र कुमार जैन	नं० 224 वीर नगर। मवाना (मेरठ)
37/128	श्री जगदीश प्रसाद गुप्त एडवोकेट।	नं० 200 कानून गोयान। मेरठ-२
38/129	" जगदीश शरण तायल M.Com.	विश्व प्रिंटिंग प्रेस नं० 271 खारी कुंआ, मेरठ-२
39/134	,, रामेश्वर प्रसाद जिंदल	पुराना बाजार, खैर, (अलीगढ)
40/136	,, Pakkati Venktesewran	विमल पल्ली (508217) जिला नलगुन्डा। आन्ध्र प्रदेश
41/.39	" राधेश्याम गुप्त।	सिकन्दराराऊ (अलीगढ़)
41/139	श्री शिवचरन गुप्त भूतपूर्व सांसद	नं० S-51/B पन्चशील ऐन्कलेब, नई दिल्ली-१७
43/143	श्री प्रवीण प्रकाश वरनवाल MA	लखीमपुर खीरी उ०प्र०
44/146	डा० जयगोपाल गर्ग EX M.L.A.	चर्च लेन। सहारनपुर
45/147	प्रो० पी० के० गुप्त M Sc.	नं० 13 जवाहर नगर। बरेली
46/151	Sh. K. Radha Krishna Rao jewellers	नं० 2/4/244 सुल्तान बाजार। हैदराबाद-I A.P.
47/153	Sh. T N. Venkatagri Shetty + S. K.P. Temple Street P.o. Y N Hoskate जिला तुमकुर। कर्नाटक-572.4	
48/158	श्री राम सनेही गुप्ता एडवोकेट	नं० 105 अरूणा नगर। एटा, उ०प्र०
49/159	Sri Dandu bala Narsaiah	नं० 9 A पद्मराब नगर। सिकन्दराबाद। आन्ध्र-प्रदेश

50/161	श्री सुभाष गोयल	नं 38/75 पंजाबी बाग वैस्ट । नई दिल्ली
51/66	श्री नृपेन्द्र लाल गुप्त	उदित आयतन । शेखपुरा । पटना-14
52/175	डा० धन प्रकाश	नं० 1 मंगल नगर । सहारनपुर
53/176	श्री कृष्ण लाल आदेश कुमार आढ़ती	शहीदगंज । सहारनपुर
54/178	श्री सुरेश चन्द्र तायल पत्रकार	अनाज मण्डी । रूडकी (उ०प्र०)
55/179	श्री सुभाष चन्द्र गुप्त	नं० 65/A-11 बारादरी । मुरादाबाद
56/182	श्री श्री प्रकाश अग्रहरि	नं० D-262 निर्माण बिहार दिल्ली-92
57/187	श्री कन्हैया लाल गुप्त	मोती विल्डिग । लंका । बाराणसी
68/210A	डा० शंकर लाल गुप्त	गली बूरावालीं । घुमना । फर्रुखाबाद
59/193A	श्री राकेश कुमार गुप्त	नं० 91 विजय नगर कौलोनी । बदायूं
60/195	श्री महेन्द्र कुमार गुप्त एडवोकेट	बाँदा रोड । अतर्रा (बाँदा)
61/199	श्री रामसेवक गुप्त एडवोकेट	नं० 7/109 A स्वरूप नगर । कानपुर-2
62/200	श्री अवधेश कुमार गुप्त	खुरहन्द रेलवे स्टेशन । (बांदा)
63/206	श्री चुन्नी लाल गुप्त	न्यू मार्केट । बांदा
64/207	श्री विशम्भर दयाल अग्रबाल	नं०-21, वेतबा अपार्टमैन्टस II रोशनपुरा नाका तॉत्या टोपे नगर । भोपाल (M. P.)
65/214	श्री विन्देश्वरी प्रसाद बरनबाल	नं- S-21/114 D नील कौटेज । मलदहिया । बाराणसी
66/216	श्री शरद कुमार जैन MLA	जयन्त ज्योति । नं० 5 राइडिन्ग रोड । शेखपुरा । पटना-14
67/223	श्री जगदीश प्रसाद मित्तल	नं० 2/6 अन्सारी रोड । दिल्ली-2
68/226	डा० श्री सुखदेव प्रसाद गुप्त BIMS	मोहल्ला-बाबूगंज । उन्नाव
69/227	श्री हरीशचन्द बंसल ऐडवोकेट	विशम्भर नाथ रोड । बाँदा
70/228	श्री रामगोपाल साहू	सपाशिव स्टोर्स । स्टेशन रोड, बांदा
71/233	श्री मुकन्दीलाल गुप्त एडवोकेट	कर्वी (बांदा)
72/237	श्री बलदेव प्रसाद अग्रवाल	मैनेजर जैपुरिया अतिथि गृह । चित्रकूट धाम (बांदा)
72/236	श्री भैरों प्रसाद गोयल	स्टेशन रोड । कर्वी (बांदा)
73/238	श्री रामचन्द्र अग्रवाल EX MLA	नं० 18 मीरा पथ । नेहरू पार्क इन्दौर 3 (M.P.)
75/239	श्रीमती ग्यारसी बाई अग्रवाल	नं० 18 मीरापथ । इन्दौर-3
76/243	श्री श्यामाचरण गुप्त उद्योगपति	नं० 44 थार्न हिल रोड़, आनन्द भवन चौराहा । इलाहाबाद-3
77/246	श्री तीरथ राम गुप्त ।	मानिकपुर (बांदा)
78/247	श्री वीरेन्द्र नाथ गुप्त ऐडवोकेट	नं० 308 सिविल लाइन्स । एटा
79/248	श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल ।	गान्धी मार्केट । कचहरी रोड । एटा
80/249	श्री धर्मात्मा शरण कोठीवाल ।	सिविल लाइन्स । मुरादाबाद
81/250	श्री डालचन्द जैन M.P.	चमेली चौक । सागर M.P.
82/284	श्री राम वृक्ष राम ।	गोकुल पथ । पटेल नगर । पटना-23
83/258	श्री शिवप्रसाद गुप्त M.L.C. भूतपूर्व डिप्टी चैयरमैन	उत्तर प्रदेश विधान परिषद न० 16 कालिदास मार्ग । लखनऊ 1
84/259	श्री ध्रुवनारायन भदानी ।	झुमरी तिलैया (बिहार) ।
90	श्री अमर नाथ लोहिया ।	न० CB-50 नारायना ग्राम । रिंग रोड । दिल्ली ।
91	श्री बाबूलाल मित्तल ।	जीवाजी गंज । मुरैना M.P.
92	श्री राधेलाल गुप्त BA	महाजन मुहल्ला । चंदौसी । मुरादाबाद
93	श्री ओम प्रकाश गुप्त ।	मेन बाजार । नगला बीच (आगरा)
94	Dr. S.P. Gupta	आजादपुर ग्राम पोस्ट A.T.M. दिल्ली-33
95	श्री दिनेश दास B.Sc. LL.B.	पैट्रोल पम्प । जी० टी० रोड । एटा
96	श्री अतुल गुप्त	न० 220 बाई पास रोड । फिरोजाबाद (आगरा)
97	श्री बी० बी० खेतान	न० D-13/4 Okhla Industrial II दिल्ली-20

98 श्री सीताराम गुप्त उद्योग पति । बड़ी छपट्टी । फीरोजाबाद (आगरा)
99 श्री बृज बिहारी गुप्त । गौरी दाल मिल्स । जंकशन रोड । मथुरा ।
100 श्री रामकिशन खण्डेलवाल न० 34/3159 बीडन पुरा । करौल बाग । दिल्ली–5
101 श्री नरेशचन्द्र गोयल न० B–J–3 वैस्ट शालीमार बाग । दिल्ली ।
102 श्री प्रमोद तापड़िया । महेश्वरी प्रोटीन्स लिमि० । HIG इन्दौर बम्बई रोड । इन्दौर ।
103 Sh. M. P. JAIN न० A–1 भालचा मार्ग । नई दिल्ली–21
104 श्री सुरेश जैन । न० D–81 कमला नगर । दिल्ली–7
105 श्री कमल किशोर गुप्त न० 1958 त्रिनगर । दिल्ली–35
106 श्री महावीर प्रसाद जैन न० 4/226 कचहरी घाट । आगरा
107 श्री युगल किशोर जैन । मंडी रोड जालन्धर सिटी ।
108 श्री J.P. Gupta न० 1/18 B आसफ अली रोड । दिल्ली–2
109 Sir Gundaiah Setty MLC ऐडवोकेट चान्द कुला न० 330, बाइसवाँ क्रास ! फस्ट व थर्ड ब्लाक । जयनगर । बंगलौर–11

110 श्री राम कृष्ण हर्ष 47 गुरुनानक पुरी B. C. बाजार—मेरठ–कैंट
111 Dr. Nagrajulu Chettey, Secretary Madras, Arya Vaish Mahasabha 205 MOWBRAYS ROAD. Madras-600018
112 Sh. S. Papanna Setty, Post box No. 31. M. G. Road Hospet (Bellary)—Karnatak.
113 Dr. M. Krishanamurty, Head of Deptt. of Civil Engg. S. V. University, TIRUPATI (Andhra Pradesh)—517502
114 Vaish Ratna S. Ramlingam President Arya Vaish Sangha 40/421. Eswar Nagar, Kurnul (Andhra Pradesh)
115 Sh. Vijitendra Kumar (Advocate), Sikohabad Road, Etah.
116 Sh. A.V. Gundappa Shetty, President Municipal Council and Taluk Board, P.O. ARKALGWD, District-Hassan Karnataka—575102.
117 Sh. Kabua Prakash Rao, B. Com. 5–3–884 Surya Mahal Near Majjanjahl market–Hyderabad-1.
118 Sh. K. Krishna Rao, B. Com. House No. 4–7–729/A Esamian Bajar, Hyderabad–27
119 Sh. M. Puranmal Agarwal, 5–8–277, Mahesh Nagar Hyderabad–1
120 श्री राइपुड़ी नारारायन राव । प्रकाशम रोड़ पोस्ट खमाम—AP.
121 श्री माईलापुर सुवरामन्यम । पटेल रोड़, पोस्ट-रायचुर (कर्नाटक)
122 Sh. Utukuri Lakshmi, Kantamma, P. O. BAPTALA, Distrtct. Guntur (A. P.)
123 Sh. Raj Kamal Gupta, Naya Bajar, Sahara, (Bihar)
124 Sh. Kashi Nath R. Karunakar, Pioneer Industrial Tobacco Works, 153 Imambara Road, Bombay–400099.
125 Shri Mahesh Chand Gupta Ashok Sweet Bazar, Sharam, Delhi—6
126 Sh. Laxmi Chand Gupta (C. A.) C–124, Priti Bihar. Delhi–92.
127 Sh. Deviram Singhal 18 Friends colony M I G–5, Shahganj, AGRA.
128 Sh. Mahendra Chand Khemka, No–3/21, Kutcharry Ghat. AGRA.
129 Sh. Mahesh Chand Gupta, M I G koihi No–1, Gandhi Nagar, AGRA.
130 Sh. Dr. Panna Lal Varshneya (B. I. M. S.), Manik, Chowk, ALIGARH.
131 Sh. G. Narayan Rao (Retired I.A.S.) 14–2–332/F, Gyanbagh Colony, Hyderabad–500012
132 Sh. C. Som Raj Ram, M. Com. LL. B., 3–6–42/A Hmyat Nagar. Hyderabad—500029.
133 Sh.G.G. Gupta M.A. President Vysya Graduate Association, C-125, B-Block Malakpet Colony-Hyderabad-500036
134 Sh.V. Vittal Rao, M. A. LL. B. 16–2–836/A/15 L. I. C. Colony, Saidabad–Hyderabad–500059.
135 Sh. K. Baleshwar Gupta, B. A. LL. B. 5–-9–22/37, Advocate, Adarsh Nagar, Hyderabad–500483.
136 Sh. M.P. महेश्वरी 112/210 A सरुपनगर–कानपुर
137 श्री रामप्रताप जिन्दल 222 प्रेमपुरी–मेरठ
138 श्री अजय मित्तल 59 छीपी टैन्क–मेरठ
139 Sh. S. P. Bansal Architect रंजन बिल्डिंग P. L. Sharma Road–मेरठ
140 श्री जयेन्द्र गोयल 284 चैपल स्ट्रीट । मेरठ कैण्ट

142	श्री महावीर प्रसाद गुप्त	72 अशोक पार्क रोहतक रोड । नई दिल्ली-35
143	श्री दुर्गादास खैतान	S-224 Greater Kailash नई दिल्ली-1
144	श्री रामकुमार महेश्वरी	4/5831 देवनगर-करौलबाग । नई दिल्ली-5
145	श्री कैलाश चन्द बंसल,	C-4 शिवाजी पार्क दिल्ली-26
146	श्री श्रीराम आयल कम्पनी (संजय अग्रवाल)	१४, रोहतक रोड । नई दिल्ली
147	श्री दीवान चन्द जैन	१५७ वीर नगर । जैन कौलौनी-दिल्ली
148	श्री सूरज प्रकाश अग्रवाल	C-४६०, कोटला मुबारिकपुर । दिल्ली-23
149	श्री रामसरन अग्रवाल	२१४ सत्यनिकेतन । रिंग रोड नई दिल्ली-२१
150	श्री मुसद्दी लाल खन्डेलवाल	६४/४२०४ रैगडपुरा । करौलबाग । नई दिल्ली-५
151	श्री हरीचन्द चैन,	C-६०/२ शिवाजी पार्क । नई दिल्ली-२६
152	श्री विजय कुमार वंसल	C-४३ A शिवाजी पार्क । नई दिल्ली २६
153	Sh. S. P. Bansal (ATTE), RAM BATKA SHIVAJI ROAD MEERUT.	
154	श्री छन्ना राम बन्सल	C-20 शिवाजी पार्क—दिल्ली 26
155	श्री विवेक चन्द गोयल	३०२ गली नं०—7 थापर नगर । मेरठ
156	श्री हरस्वरुप गुप्त	४७८६ चौक छटूटी दिल्ली-५५ ।
157	श्री ओमप्रकाश गुप्त	८८ मास्टर ब्लाक । शंकरपुर । दिल्ली-९२
158	श्री रामेश्वर दयाल गुप्त	२७६१ गली रामरूप । सब्जी मण्डी । दिल्ली-७
159	श्री लालता प्रसाद वैश्य	न० 56 चन्द्र सदन । पुराना किला । लखनऊ ।
160	श्री द्वारिका प्रसाद चैतन्य ।	गायत्री तपोभूवि । मथुरा-3
161	Sri R.N. Sri Newas	No. 3 Obalppa garden Second Road बंगलौर-11
162 TO 176	नाम कोषाध्यक्ष से आने शेष हैं ।	
177	श्री ओम प्रकाश गुप्त	न० 91/16 A फरीदाबाद । हरियाना ।
178	श्री जैन ।	जैन इन्डस्ट्रीज । मलेर कोटला । पंजाब ।
179	श्री मदन मोहन मिन्त्री ।	कालिम्पौन्ग (दार्जलिंग) ।
180	श्री राजकुमार रस्तोगी ।	कारमेकल गंज । बदायूं
181	श्री मनोहर जगदेव प्रसाद गुप्त ।	इतवारी बाजार । भण्डारा रोड । नागपुर ।
182	श्री पूरनमल अग्रवाल ।	न० 32 सेन्ट्रल एवेन्यु । नागपुर-18
183	,, ऐडवोकेट रमेशचन्द्र अग्रवाल।	जोधराज भवन । सिनावर्डी । नागपुर-9
184	श्री वल्देव प्रसाद गुप्त ।	दोसर वैश्य भवन । सेन्ट्रल ऐवेन्यु । नागपुर-18
185	,, मथुरादास डेकडीवाल ।	ऐम्प्रैल मिल रोड । बजरिया । नागपुर-18
186	,, नवलचन्द पुगलिया ।	सर्राफा बाजार । इतवारी रोड । नागपुर ।
187	,, संतोश कुमार हजारीलाल अग्रवाल ।	जलाल पुरा । गान्धी बाग । नागपुर ।
188	,, शिवकिसन अग्रवाल भुजिया वाला ।	इतवारी रोड । नागपुर ।
189	,, सुभाष चन्द काशी प्रसाद गुप्त ।	लोहाओली । इतवारी । नागपुर
190	,, नरेशचन्द्र परमेश्वर दीन गुप्त ।	गुप्ता भवन । टेम्पिल बाजार । सीतावर्डी । नागपुर-9
191	,, कैलास चन्द्र गुप्त ।	गोविन्द निवास । सेन्ट्रल एवेन्यु । नागपुर-18 ।
192	,, श्री श्याम सुन्दर गुप्त	टैम्पिल बाजार । सीतावर्डी । नागपुर-9
193	प्रो० प्रभाकर गुप्त ।	ब्लाक C-1 प्रोफेसर कौनौनी, गोंदिया-144601
194	डा० भरत प्रकाश गुप्त M.B.B.S, Ph.D, शान्तायन	न० B150 People's Cooperative Colony : Road No. 8 कंकड बाग । लोहिया नगर । पटना-20
195	श्री राम औतार सिघल ।	महेश खादी वीविंग फैक्टरी । निकट शहर कोतवाली । मेरठ सिटी ।

196- श्री प्रमोद कुमार जैन ऐडवोकेट। नं० 268 ठठेरवाड़ा । मेरठ सिटी।
197- श्री भुवनेश चन्द्र गुप्त। नं० 603 मुहल्ला हीरालाल मवाना। (मेरठ) 25040।
198- श्री अवध बिहारी लाल एडवोकेट 146/16D आर्यपुरी, मुजफ्फरनगर।
199- श्री बाबूराम गुप्त नं०K 20 सरोजिनी नगर। दिल्ली-110023

(प्रेस को अक्तूबर 85 में भेजते समय तक की उपरोक्त लिस्ट है इसके अतिरिक्त संस्था के 262 वार्षिक सदस्य हैं। स्थानाभाव से उनके नाम पते न दे सकने से क्षमा प्रार्थी हैं।)

०६) इस महासम्मेलन से सम्बद्ध शिरोमणि सभाओं की सूची

(१) अ० भा० महाउरु वैश्य संघ। प्रधान, शिवचरण गुप्त, Ex. M·P. S-51B पंचशील ऐन्क्लेव दिल्ली-१७ महामन्त्री, प्रो० हरप्रसाद भैय्याजी अयोध्या निवास : मैरिस रोड। अलीगढ़।

(२) अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन। अध्यक्ष—श्री बनारसी दास गुप्त (भिवानी) हरियाणा
महामन्त्री—श्री प्रदीप कुमार मित्तल नं० D-५७ साउथ ऐक्सटैन्सन प्रथम। दिल्ली-४६

(३) श्री दौसर वैश्य महासभा, । अध्यक्ष : प्रो० प्रभाकर गुप्त गोंदिया। मंत्री द्वारिका प्रसाद गुप्त M.Com.

(४) प्रधान वैश्य समाज उत्थान मण्डल, नेवर भवन, रानिया बाजार सिरसा (हरियाणा)। पिन कोड-१२५०५५ प्रधान श्री चाननमल नेवर

(५) अखिल भारतीय माहौर वैश्य सभा। प्रधान श्री रामगोपाल गुप्त भूतपूर्व चैयरमैन M.B.
पोस्ट—सिकन्दरा राव, जिला अलीगढ (U.P.) मन्त्री—श्री ब्रह्मानन्द जन सेवक, जी०टी० रोड एटा—यू०पी०

(६) आन्ध्र प्रदेश आर्य वैश्य महासभा। अध्यक्ष—श्री के० एन० गुप्त नं० ४-१-४०३ आविद रोड। हैदराबाद-१ (A.P.)

(७) All India Vaish Kanyaka Parmeshwari Temple Federation प्रधान संत्री वैलूर दुर्वासिल गुप्त।
कार्यालय—5-9-22/ 4 Adarsh Nagar Hyderabad-500083

(८) All India Western Vaish Barnval Maha Sabha प्रधान Sh. Mahendrapal Gupta Moh. Kot Sambhal Dt. Moradabad (UP) महामन्त्री बी०एस० गुप्त, नवावपुरा-मुरादावाद

(९) अ० भारतवर्षीय केसरवानी वैश्य महासभा। प्रधान रामगोपाल गुप्त एडवोकेट। वीर सावरकर चौक-सतना। (म०प्र०)
महामन्त्री—श्री रामवृक्ष राम, पटना

(१०) बिहार राज्य वैश्य सभा। प्रधान पदम भूषण डा० दुखनराम MP एक्जीवीसन रोड़ पटना-१ (बिहार)
महामन्त्री—श्रीमती तारा गुप्त MLA—छज्जू बाग। पटना-१

(११) अ० भा० श्री अयोध्यावासी वैश्य महासभा। प्रधान—श्री मदनचन्द कश्यप। स्वदेशाश्रम भावसार चौक। जमन्नाथ रोड। सेन्ट्रल ऐवेन्यु। नागपुर (४४६००२) महामन्त्री—श्री प्रो० एस० के दास। नं० २/५०४ A आजाद नगर कानपुर—२

(१२) अ०भा० अवधवाल वैश्य महासभा। महामंत्री—राम कृष्ण हर्ष ४७, गुरु नानकपुरी। बी०सी० बाजार। मेरठ-कैन्ट
प्रधान—श्री सीताराम गुप्त। श्री जगदीश फाउन्ड्री। माल गोदाम रौड। अम्बाला सिटी

(१३) अ०भा० वैश्य अग्रवाल राजवंश सभा। अध्यक्ष श्री रमेशचन्द बंसल। चौक। रुड़की पिन—२४७६६७,

(१४) अ.भा. ओमर (ऊमर) वैश्य महासभा। महामंत्री श्री शिवप्रसाद गुप्त ऐड़वोकेट। पोस्ट-मुंगरा बादशाहपुर जि० जौनपुर (उ०प्र०)

(१५) अ० भा० वैश्य समाज ६-१-६१, Vasavinagar, Secretariat Road–Hyderabed–५०००४ President–Kasala S. Vittal III Main, P. J. Extension Davangere, Karnatak–५७७००२ Gen. Secty—K. C. Gupta ४-७-३१३ Esamia Bazar, Hyderabad—२७

(१३) अ० भा० बरनवाल वैश्य महासभा, अध्यक्ष श्री बिन्धाचल प्रसाद बरनलाल, नील कोटैल ५२२१/११४–D मलपहिया-वाराणसी। महामंत्री–प्रो० डा० जगदम्बा प्रसाद बरनवाल। नं० ४३ प्राध्यापक आवास। काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

(१७) बिहार वैश्य परिषद्—अध्यक्ष-श्रीमती अनसुईया जायसवाल। डाक बंगला रोड-पटना–१
महामंत्री—श्री राधा कृष्ण प्रसाद–सुर्खी गोदाम लोदीपुर पटना–१

(१८) अखिल भारतीय वैश्य महासभा–मेरठ शहर। सहमंत्री-श्री गंगा स्वरूप गुप्त। प्रह्लाद वाटिका। मेरठ।

(१९) अ० भा० कमलापुरी वैश्य महासभा। महामंत्री—श्री रघुवर प्रसाद गुप्त। कमलापुरी भवन। करीमचकछपरा (बिहार)
प्रधान—श्री रामप्रताप गुप्त। मेन रोड। पो० गढ़वा जि० पलामू) (दक्षिण बिहार)

(२०) अ० भा० माथुर वैश्य महासभा फिरोजाबाद-जिला आगरा (उ० प्र०)। प्रधान—सीताराम गुप्ता गली तिलक भवन। फिरोजाबाद (आगरा) उत्तर प्रदेश। महामंत्री श्री माता प्रसाद पनवारिया, गली तिलक भवन। फिरोजाबाद (आगरा)

(२१) केसरवानी वैश्य शिक्षा समिति । अध्यक्ष श्री केदारनाथ गुप्त न०-२० जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद ।
(२२) महाराष्ट्रीय वैश्य समाज । अध्यक्ष—श्री गजानन नारायन खातू नं० ११ डुवास लेन । बम्बई-४
(२३) कुमार तनय वैश्य सभा । अध्यक्ष सूर्य कुमार गुप्त C.A. निकट मिशन अस्पताल । बरेली ।
(२४) अ० भा० कसौंधन वैश्य महासभा । अध्यक्ष---डा० दाऊ जी गुप्त Ph.D. भूतपूर्व मेयर । नन्द निकेतन । नाका हिंडोला । लखनऊ । मन्त्री—श्री रामगुलाम गुप्त-किला बाजार बरेली ।
(२५) अ. भा. अग्रहरि वैश्य महासभा । अध्यक्ष–श्री रामप्रसाद लाल गुप्त । बख्तियारपुर (पटना) पिन ८०३२१२ महामन्त्री—श्री दिनेश कुमार गुप्त नं० B-438 लक्ष्मीबाई नगर । दिल्ली-23
(२६) अ. भा. तन्तुवाय वैश्य महा सभा । अध्यक्ष– श्री सुगन चन्द्र बंसल । शोभा सदन । नं० १२७ आदर्श नगर । अजमेर-१
(२७) किशन गंज माहौर वैश्य सभा । दिल्ली-७
मंत्री—पन्नालाल वैश्य नं० १६१६ रेलवे कौलोनी किशन गंज । दिल्ली-७
(२८) पश्चिमी उत्तर प्रदेशीय वरनवाल वैश्य महासभा । अध्यक्ष–श्री महेन्द्र पाल गुप्त M.A. प्रवक्ता । सम्भल : मुरादाबाद ।

१०) जिला इकाइयां

(१) जनपद मुजफ्फरनगर— प्रधान–श्री दयाराम गर्ग ऐडवोकेट । सिविल लान्इस । मुजफ्फरनगर ।
मन्त्री–प्रो० श्री गिरवर सिंह गुप्ता नं० १२८ कुन्दनपुरा । मुजफ्फरनगर ।
(२) मेरठ—प्रधान–श्री ओमप्रकाश ऐडवोकेट । नं० ३४१ प० कचहरी रोड । मेरठ ।
मन्त्री–श्री जयप्रकाश जैन । नं० ६६ मानसरोवर । मेरठ ।
(३) बांदा---मन्त्री–श्री राधेश्याम मुखिया । अतर्रा ।
(४) एटा– प्रधान–श्री फ़कीरचन्द अग्रवाल । गांधी मार्केट । कचहरी रोड, एटा ।
(५) कानपुर—मन्त्री–श्री उमाशंकर गुप्त । ११६/४५७ दर्शन पुरवा । कानपुर–१२ ।
(६) लखनऊ—श्री कृष्णकान्त केसरवानी । नं० ८० पुराना किला । लखनऊ ।
(७) इलाहाबाद—श्री सच्चिदानन्द वरनवाल । नं० ६५B बाई का बाग । इलाहाबाद ।
(८) वाराणसी—अध्यक्ष–श्री नन्दलाल गुप्त । नं० K-६५/४२ कबीर चौरा । वाराणसी ।
(९) लखीमपुर खीरी—संयोजक डा. नत्थूलाल अग्रवाल । नं. २७७ ईदगाह । लखीमपुर खीरी ।
(१०) सहारनपुर—मन्त्री–श्री महेन्द्र कुमार जैन । वीर नगर । रामवाला । सहारनपुर ।
(११) बरेली—मन्त्री–श्री रामकुमार अग्रवाल M.Com. LLB. सर्राफ । शिवाजी मार्केट । बरेली ।
(१२) उन्नाव—डा. सुखदेव प्रसाद BIMS बाबूगंज । उन्नाव ।
(१३) विदर्भ प्रान्तीय वैश्य महासम्मेलन—अध्यक्ष–श्री पूरनमल अग्रवाल ।
(१४) जनपद वैश्य महासम्मेलन—छपरा (विहार) मन्त्री–श्री N. K. Gupta M.A. मुदरी राय का चौराहा । चौक । छपरा ।
(१५) बुलन्दशहर—अध्यक्ष–लक्ष्मण सरुप मित्तल । ऐडवोकेट ।
(१६) जालौन—अध्यक्ष– अयोध्याप्रसाद कुमुद । ऐडवोकेट । उरई ।
(१७) पश्चिमी उत्तर प्रदेश—वैश्य महासभा । पिलखुवा ।
(१८) मेरठ मण्डल वैश्य समाज—अध्यक्ष– श्री राजकुमार गुप्त ऐडवोकेट । नं. १५६ स्मिथ गंज । मेरठ ।
(१९) अलीगढ़—अध्यक्ष–आचार्य मुरारीलाल । विष्णुपुरी । अलीगढ़ ।
(२०) सीतापुर—मन्त्री–श्री बलदेव बिहारी गुप्त । नं. ५६४ आलमनगर (गदियाना) सीतापुर-१
(२१) इटावा श्री बजरंगलाल महेश्वरी ।
(२२) मैनपुरी—
(२३) मुरादाबाद—श्री सतीशचन्द्र गुप्त । ऐडवोकेट ।
(२४) फर्रुखाबाद—संयोजक–श्री कृष्ण मुरारी गुप्त । गली मोमबत्ती । फर्रुखाबाद ।
(२५) बदायूं—श्री कृष्ण स्वरूप वैश्य । भूतपूर्व डिप्टी मिनिस्टर । बनारसी भवन । बदायूं ।
(२६) सुलतानपुर—मन्त्री–सज्जनलाल कसौंधन । अम्बेडकर मार्ग । गान्धी नगर ।
(२७) आगरा—मन्त्री–हरीशंकर वार्ष्णेय । संपादक 'देशरत्न' । नं. २६/४८ राजामण्डी । आगरा-२

११. इसके अतिरिक्त निम्न जिलों में संयोजक मनोनीत किये जा चुके हैं :—

(१) मुरैना (M.P.) (२) ग्वालियर (३) देहरादून (४) मिर्जापुर (५) गया (६) आजमगढ़ (७) चम्पारन (८) रोहतास (९) हिसार (१०) वर्द्धवान (बंगाल) (११) अजमेर (१२) अम्बाला (१३) मुजफ्फरपुर (बिहार) (१४) गोरखपुर (१५) पन्ना (M.P.) (१६) सम्बलपुर (उड़ीसा) (१७) गोन्डा (१८) जौनपुर (१९) हजारीबाग (बिहार) (२०) हमीरपुर (२१) बिजनौर (२२) रामपुर (२३) धनबाद (२४) फैजाबाद (२५) सीकर (२६) पीलीभीत (२७) बहादुरगढ़ (हरियाणा) (२८) मुन्घेर (२९) भिवानी (३०) गाजियाबाद (३१) दिल्ली प्रदेश ।

शेष जिलों में संयोजक नियुक्त किये जा रहे हैं ।

निम्नलिखित वैश्य जातियों की शिरोमणी सभाओं का पता लगा लिया गया है और सम्बन्ध हेतु उनसे पत्राचार जारी है:—

(१) चतुर्सेनी वैश्य (२) महाजन वैश्य पंजाब तथा हिमाचल क्षेत्र (३) साहू वैश्य (४) यज्ञसेनी वैश्य (५) हलवाई या कान्यकुब्ज या मोदनवाल (६) जैन मिलन (७) दिगम्बर जैन (८) श्वेताम्बर जैन (९) खन्डेलवाल (जयपुर) (१०) शौण्डिक संघ पटना (११) गहोई वैश्य, झांसी (१२) महेश्वरी, इन्दौर (१३) बारह सेनी, अलीगढ़ (१४) जयसवाल, दिल्ली (१५) नेमा वैश्य, भोपाल (१६) असाटी वैश्य, जबलपुर (१७) विजयवर्गीय, कोटा (१८) मध्यदेशीय वैश्य वाराणसी (१९) रौनियार वैश्य, रोहतास (२०) बाथम वैश्य, सीतापुर (२१) रस्तोगी (२१) रोहतगी (२२) पोरवाल, भरथना (२३) पुरुवार–इटावा (२४) गुलहरे, कानपुर (२५) शिवहरे, जसवन्तनगर (२६) सुन्मानी (हरदोई) ।



वैश्यों का राष्ट्र गीत

रचयिता–डा० रामेश्वर दयाल गुप्त एम. ए पी. एच. डी.
महामन्त्री–अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन



आओ गावें वैश्य जाति का यश अक्षय ।
भारतमाता के आदि पुत्र जय आर्य–पूर्व विख्यात 'पणि' ।
गौ सम्वर्द्धक, रक्षक कृषि के, जय आर्य-राष्ट्र के दिव्य–मणि ।।
जय नाभाष्टिनेमि, जय वात्सप्रभि, जय मकल,
जय वैश्य ऋषि, जय जय वेद मंत्रों के दृष्टा ।
जय मुनि पार्श्वनाथ, जय अग्रसेन जय वैशाली,
जय अग्रोहा गढ़ माहौर, जय प्रजातन्त्र के सृष्टा ।
तुम वर्णधर्म के मेरु–दण्ड, जय विप्र–छत्र पालक महान, ।
तुम देवालय–विद्यालय निर्माता जय धर्मशाल शृंखला प्रधान ।
तुम अन्नक्षेत्र के प्रस्तोता, जय उत्पादक उद्योग खान ।
तुम न्यास स्रजक, तुम क्रतुहोता, जय संस्कृति के उपादान ।।
जय चन्द्रगुप्त, जय अशोक जय धर्मचक्र के उच्चाकर्ष ।
जय वैष्णव, समुद्रगुप्त जय विक्रम सम्वत् जय महान हर्ष ।।
जय मुगल राज्य प्रथम विध्वसक जय हेमू रौनियर शाह ।
जय सेनापति औघडदानी, जय महाजन विभूति भामाशाह ।।
जय ब्रिटिश निस्तारक लाजपत, गांधी, पटेल जय अहिंसक त्रास ।
जय सूफी अम्बा प्रसाद जय माहौर भगवान दास ।।
जय हिन्दी–गद्य के अध्येता जय कांशी के भारतेन्दु, ।
जय रत्नाकर, जय मैथिली शरण राष्ट्र कवितेन्दु ।।
जयशंकर प्रसाद जय जयगोयन्दका जय पोद्दार ।
जय सूरी हेमचन्द, पलटू जय, जय सत्यकेतु, काशीप्रसाद इतिहासकर ।।
जय अग्रवाल, जय महाउरु, जय अयोध्यावासी, अवधवाल ।।
जय राजवंशी जय अग्रहरि, जय बाथम, जय बरनवाल ।
जय शौड्रिक, जय कोमढ़ी, जय महाजन, जय जयसवाल ।।
जय कसौंधन, जय ओमर, जय सुन्मानी कुरु और पोरवाल ।।
जय यज्ञ सेनी चौसेनी, जय गहोई अरु बारह सेनी ।
जय माथुर, माहुरी, गुलहरे, रौनियार, केशरवानी ।।
जय अन्य त्रिशत उपजाति, जिनकी ख्याति मयी वानी ।
युग युग से प्रवाहित देशमध्य विधा यह जानी मानी ।।
जय मयुरासिनी जयवसावी, जय महालक्ष्मी अरु सती महान ।।
जय वैश्य जाति जुग जुग फैले तेरा भव्य वितान ।।

१५) अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के पदाधिकारी 1986

(ALL INDIA VAISH FEDERATION)

दिल्ली कार्यालय—पाहवा मैन्शन, नं० 1/11B B आसफअली रोड, दिल्ली-२

अध्यक्ष—बनारसी दास गुप्त भू०पू० मुख्यमन्त्री । विजय नगर, भिवानी (हरियाणा)

उपाध्यक्ष—के०सी० गुप्ता ४-७-३१३ ईसामियां बाजार । हैदराबाद-२७
जमुना प्रसाद भू०पू० डिप्टी मेयर लाल फाटक, पटना सिटी—८ ।
कन्हैया लाल गुप्त उद्योगपति, मोती बिल्डिंग, लंका, वाराणसी ।

महामन्त्री—डा रामेश्वर दयाल गुप्त, M.A. Ph. D.
रामेश्वरकुंज । आर्य नगर, ज्वालापुर—२४९४०७ (सहारनपुर) उ. प्र.

मंत्री—डा० अरुण केजरी B.V. Sc. & A.H.
आजाद पथ, कंकड़ बाग, पटना—२०

जयप्रकाश गुप्त Executive Magistrate लोहार पुरा, नागपुर—१८

पत्रिका सम्पादक—ओमप्रकाश ऐडवोकेट ।
नं० ३४१ पश्चिमी कचहरी रोड, मेरठ ।

प्रकाशक—जगदीश शरण तायल । विश्व प्रेस : मेरठ—2

कोषाध्यक्ष—जय प्रकाश गुप्त ७-१२ ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली—८

विशिष्ट कक्ष (CELLS) के निदेशक

१. राजनीतिक कक्ष—श्यामचरण गुप्त B. Sc. LL. B.
४४ थार्न हिल रोड, इलाहाबाद-३

२. वैश्य समाचार पत्र कक्ष—शिवचरण गुप्त भू०पू० सांसद
S–51/B पंचशील पार्क । दिल्ली—17

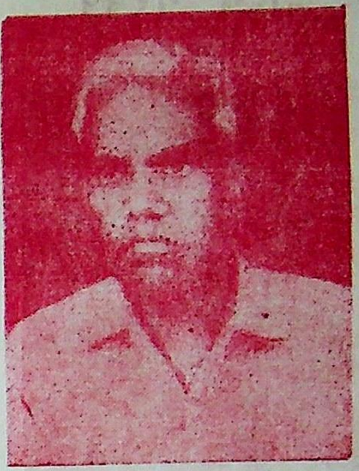
३ प्रशिक्षण एवं रोजगार कक्ष—बजरंग लाल जाजू उद्योगपति
M–65 ग्रेटर कैलाश । पार्ट—नई दिल्ली

४. स्थानीय निकाय कक्ष—डा० प्रकाश नारायण गुप्त भू.पू. राज्यमंत्री
४५ विजय नगर, आगरा

संगठन मंत्रीगण—रामसनेही गुप्त एडवोकेट, एटा (उ० प्र०)
शिवप्रसाद लाहानी M.A. नूर सराय (नालन्दा) बिहार ।
रामचन्द्र गुप्त पूर्व विधायक—18 मीरा पथ नेहरू पार्क इन्दौर ।
श्री गजानन नारायण काटू । 11 दुवास लेन । बम्बई-4 ।
ताराचन्द गुप्त MALLB—गौशाला लेन । सहारनपुर ।

प्रचार मन्त्री—राम कृष्ण हर्ष बी० ए० ।
नं० 12 ए कल्याण नगर । गढ़ रोड । मेरठ

हमारे सहयोगी (३८)



श्री सोहन लाल वैश्य

पुत्र—श्री बाबूलाल, गोत्र विन्दल, शिक्षा बी० ए०

पता— 263, जुबली गंज । रजबन बाजार । मेरठ छावनी

भारतीय डाक विभाग मेरठ से जन सम्पर्क निरीक्षक पद से सेवा निवृत

उपमहासचिव - अखिल भारतीय अवधवाल वैश्य महासभा (रजिस्टर्ड)

आजीवन सदस्य - अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन तथा अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा (पंजीकृत) देहली

वितरण प्रभारी—'वैश्य-सम्मेलन' हिन्दी मासिक । मेरठ ।

मन्त्री - चन्दा स्पार्टस क्लब मेरठ ।

भू०पू० मन्त्री—डिस्ट्रिक्ट स्पोर्टस, एसोसिएशन मेरठ ।

भूतपूर्व अध्यक्ष—पोस्टल एम्पालाईज युनियन मेरठ मण्डल, मेरठ ।

श्री सोहन लाल एक धार्मिक विचारों वाले सामाजिक कार्यकर्ता हैं। आप अवधवाल वैश्य महा सभा के संस्थापक सदस्यों में से हैं। श्री राम कृष्ण हर्ष के साथ आप लम्बे समय से सिन्धु घाटी सभ्यता और वैश्यों के योगदान विषय पर खोज में संलग्न हैं। आल इंडिया वैश्य समाज की कर्नाटक कान्फ्रेंस 1984 में आपने विशेष रूप से भाग लिया था।

हमारे इन दो कार्यकर्ताओं ने जातीय कार्य हेतु, एक अदभुत कार्य किया है कि श्री हर्ष जी के सुपुत्र देवेन्द्र गुप्त एवं श्री सोहनलाल वैश्य के सुपुत्र श्री अमरनाथ गुप्त ने अखिल भारतीय वैश्य नवयुवक सम्मेलन की स्थापना की है और क्रमशः इसके महामंत्री तथा कार्यकर्त्ता प्रधान हैं। वैश्य युवकों का संगठन एक महत्वपूर्ण कदम है।

ग्रन्थकार डा० रामेश्वर दयाल गुप्त का जीवन परिचय



लेखक—तदात्मज यतीन्द्र कुमार गुप्त B. Sc. (Engg.)
[मैनेजर भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स लिमिटेड—हरिद्वार]

जन्म तथा परिचय—आपका जन्म स्थान उत्तर प्रदेश के एटा जिलान्तर्गत कस्बा अलीगंज में १९२० में हुआ। इनके पिताजी एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता थे जो बीसियों वर्ष वहां की आर्यसमाज के मन्त्री, मंडल कांग्रेस कमेटी के मंत्री, शुद्धि-सभा एवं दलितोद्धार सभा को स्थानीय शाखाओं के मंत्री, बाद में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा के कार्यवाह आदि रहे थे, और जिन्होंने वहां दयानन्द ऐंग्लोवैदिक हाई स्कूल तथा आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की थी। इनके दो भाई तथा एक बहन है जो सब उनसे छोटे हैं। एक भाई ओम प्रकाश देव एम.काम बोकारो स्टील प्लान्ट में असिस्टैन्ट जनरल मैनेजर (अकाउन्टस)थे तथा दूसरे महाराष्ट्र सरकार में डी एस.पी. (प्रोजीक्युशन) जिनका नाम श्री सत्य प्रकाश गुप्त B. Com. B.L. है। बहिन विवाह के तुरन्त बाद विधवा हो गई क्योंकि उसका पति विधार्थी उपद्रवों में शादी के दूसरे वर्ष ही मारा गया। तब उस बहिन स्वतन्त्रा देवी का इन्होंने आर्य सामाजिक पद्धति प्रो. राजबहार गुप्त M.A.,C.T. से पुर्नविवाह कर दिया।

बचपन तथा सतत विद्याध्ययन—अपने पिता जी के प्रभावित संस्कारों के कारण १९३० में दस वर्ष की आयु में शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करते हुये गंजडुंडवारा नगर में गिरफ्तार हुये। पं० मोती लाल नेहरु के निधन पर १९३२ में प्राइमरी स्कूल बन्द करवा हेडमास्टर प० व्रजलाल का पुतला निकाला क्योंकि वे बच्चों को डरा धमकाकर स्कूल में पकड़ बुलाते थे। उनकी नाराजी से स्कूल छोडना पडा और ग्राम सलेमपुर जिला मैनपुरी के एक स्कूल में प्रवेश लिया। पर वहां भीषण डकैती पड़ी। उसमें इनके पिता जी को गहरी चोटें लगीं। कांग्रेस कार्यकर्त्ता कहकर परिचय देने पर डाकुओं के सरदार ने जान बख्श दी। तब कासगंज के एक स्कूल से कक्षा चार पास किया। वर्नाक्युलर मिडिल अलीगंज से, हाईस्कूल राजकीय विद्यालय एटा से १९३८ में, इन्टर साइन्स १९४० में तथा बी.एस.सी. भी डी.ए०वी० कालेज कानपुर से १९४२ में, बी०ए० भागलपुर वि०वि० से १९६६ में, एम. ए. पोलिटिकल साइन्स में, १९७४ में हमीदिया राजकीय कालेज भोपाल विश्वविद्यालय से १९७६ में किया। वहां पी ऐच.डी. का शोध का विषय था दयानन्दसरस्वती द्वारा पुन: प्रदर्शित वैदिक राजदर्शन। भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद से वैदिक धर्म-विशारद तथा सिद्धान्त-शास्त्री परीक्षायें पास की। यह सब परीक्षायें प्रथम श्रेणी में पास कीं। फिर इन्स्टीट्यूट आफ इलैक्ट्रोनिक एन्ड कम्युनिकेशन इन्जीनियरस से पहले ग्रेजुऐट परीक्षा की जो इलैक्ट्रीकल इन्जीनियर के समक्ष है। और बाद में उसके मेम्बर तक होकर (MIETE) की उपाधि प्राप्त की। सन १९८४ में गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय से वैदिक साहित्य विषय में एम. ए. प्रथम श्रेणी में पास किया।

बी०एस०सी० तक की शिक्षा काल में मुन्नालाल गुलजारीलाल जातीय विद्या-प्रचार-ट्रस्ट मारहरा (एटा) से दो वर्ष तक दस रुपया मासिक (१९३८-१९४०) तक दो वर्ष (१९४०-४२) तक पन्द्रह रुपया मासिक की ससम्मान ऋण-छात्रवृत्ति पाई, जिसे काम पर लगने पर अन्य विद्यार्थियों में वापिस कर दिया। शेष पढ़ाई का व्यय इनके साधन-विपन्न पिता जी जैसे-तैसे जुटा कर देते थे। इसके अतिरिक्त दयानन्द कालेज कानपुर में एक धर्म परीक्षा होती थी जिसमें सर्वप्रथमक स्थान पाने पर इन्जीनियर राजा ज्वालाप्रसाद छात्रवृत्ति दस रुपया मासिक दी जाती थी। पूरे चार वर्ष १९३८-४२ तक सर्वश्रेष्ठ अंक पाकर उन्होंने वह छात्रवृत्ति भी पाई। कालेज के नियमानुसार लगातार फर्स्ट डिवीजन में पास होते रहने के कारण कालेज तथा होस्टल की फीस से मुक्त रहे। शिक्षार्थ हुये अध्यवसाय की कहानी कुछ तफसील से इस लिये लिखी है कि आगे आने वाली पीढ़ी के गरीब पर प्रतिभावान विद्यार्थियों को यह प्रोत्साहन का कारण बने।

राजनैतिक झुकाव—बचपन का कांग्रेसी झुकाव कालेज में पहुंचते पहुंचते हिन्दू निष्ठ संस्थाओं की ओर हो गया। सन १९४१ में भागलपुर में हिन्दू महासभा अधिवेशन पर बिहार सरकार द्वारा रोक लगाये जाने पर तत्कालीन महासभा-प्रधान स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने सत्याग्रह आन्दोलन छेड़ा था। उसमें यह २१ दिन भागलपुर जेल में रहे जब कि सावरकर जी, श्यामप्रसाद मुकर्जी, चन्द्रगुप्त वेदालंकार एवं भाई परमानन्द सदृश शीर्षस्थ नेताओं से सान्निध्य रहा। इसी प्रकार १९४८ में गांधी हत्या के समय सरकार ने इन्हें, इनके पिताजी, तथा छोटे भाई ओमप्रकाश देव को इमरजैन्सी में नजरबन्द कर दिया यह कहकर कि यह परिवार राष्ट्रीय-स्वयं सेवक संघ के अत्यन्त क्रियाशील कार्यकर्त्ता हैं। बाद में इनके पिता जी हाईकोर्ट द्वारा रिट दायर किये जाने पर छोड़े गये, तथा इन्हें भी १९ दिन बाद छोड दिया गया।

सरकारी नौकरियों का कैरियर—बी. एस. सी. पास करते करते टेलिफोन आपरेटर के कम्पटीशन में पास होने से १९४२ में इस पद पर लखनऊ में नियुक्त हुये। उन दिनों १९४२ का भारत छोड़ो

आन्दोलन छिड़ा हुआ था। गवर्नर के टेलिफोन नं० ३६० पर उनकी बात टेलीफोन एक्सचेंज में किसी ने सुनने का प्रयत्न किया। उस पर सीक्रोफोन लगा हुआ था ' सुई हिलते ही गवर्नर ने नोट कर लिया। तुरन्त अपना ए. डी. सी. टेलीफोन ऐक्सचेंज भेजा और गांधी टोपी और खदर की ड्रेस में इन्हें सम्बन्धित लोकल बोर्ड पर ड्यूटी करते देखा और पूछ त.छ की। फल स्वरूप विभाग ने इन्हें लगातार तंग किया, तब इन्होंने वहाँ से त्याग पत्र दे दिया। फिर डी. ए. वी, कौलेज होशियारपुर (पंजाब) में साइन्स विभाग में डिमान-स्ट्रेटर होकर चले गये। वहीं से टेलीफोन विभाग के इन्जीनियरिंग सुपरवाइजर की प्रतियोगिता में बैठे और सफल होकर आगरा-लाहौर-रावलपिंडी, फीरोजपुर, मेरठ, देहरादून, मसूरी, कानपुर इटावा फरुखाबाद अलीगढ, मुजफ्फरपुर, छपरा और पटना में १९४४ से १९५६ तक इस पद पर कार्यरत रहे। सन १९५६ में गजटैड पद पर पदोन्नत होकर एस. डी. ओ. रांची में, फिर दिल्ली, झाँसी अलीगढ़, मद्रास, कलकत्ता बीकानेर और भोपाल में १९७४ तक नियुक्त रहे। फिर १९७४ से १९७८ तक इन्दौर, सागर, रानीपुर, (हरद्वार) श्री नगर (गढवाल) हिसार और रोहतक में डिविजनल इन्जीनियर रहे। बीच में दो वर्ष भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स हरिद्वार में डेपुटेशन पर टैली कम्यूनिकेशन इन्जीनियर रहे। अप्रैल ७८ में ३३ वर्ष की सरविस के बाद रिटायर्ड हुये।

इस सारे कार्य काल में कभी रिश्वत नहीं ली और इस लिये पदाधिकारियों के कोपभाजन बनकर इतने ट्रान्सफर होते रहे। यहां तक कि इनके डायरैक्टर जनरल एल. सी. जैन आई. सी. ऐस. ने एक इन्टरी कान्फीडैन्शल रैकर्ड में बिना पहिले जवाब मांगे हुये लिख दी जिससे प्रमोशन पर प्रभाव पडा। इसके खिलाफ अलीगढ के मुन्सिफ, फिर जिला जज की कोर्ट, फिर इलाहाबाद हाईकोर्ट से वे विभाग के खिलाफ अपील दर अपील जीतते गये। हाई कोर्ट में इन्होंने चार दिन अपने केस पर स्वयं बहस की और उस आई० सी० एस० डायरैक्टर जनरल की इन्टरी वापिस की गई। तथा अपनी निश्चित तिथि से पदोन्नति हुई। हाई कोर्ट में अपना केस स्वयं प्रस्तुत किया जो A. .R. में रिपोर्ट हुआ है।

आप रिटायर्ड होकर शिम्भूदयाल पोस्टग्रेजुएट कालेज गाजियाबाद में २ वर्ष राजनीति विज्ञान के प्रवक्ता होकर एम ए. की कक्षाओं को पढाते रहे। वहां से ६० वर्ष की आयु में रिटायर्ड होकर अब सारा समय सार्वजनिक कार्यों में देते हैं।

आर्य समाज के क्षेत्र में—सैकडों व्याख्यान, साप्ताहिक सत्संगों में तथा वार्षिकोत्सवों और जयन्तिओं में दिये हैं। अब भी बडी-आर्यसमाजों के उत्सवों पर भीड की भीड उनके व्याख्यान सुनने को उमड़ पडती है। प्रान्तीय और सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभाओं में वे कार्यकारिणी में रहे हैं और उनकी लिखी निम्न पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

(१) त्रैत-दर्शन (२) ब्रह्मयज्ञ (३) देवयज्ञ (४) वेद का वितान (५) वैदिक राज-दर्शन (६) निराकार की पूजा (७) निराकार की स्तुति (८) शिव और विष्णु ऐतिहासिक पुरुष थे। (९) यज्ञ की वैज्ञानिक व्याख्या (१०) नारी-वरदान या अभिशाप (११) आर्य अल्पमत हैं (१२) पुकार पशुओं की। वे आर्यों का त्रैतवाद नामक एक मासिक पत्रिका भी निकालते हैं। त्रैत वाद पीठ के संस्थापक और अध्यक्ष भी हैं। अब गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय में डी० लिट० हेतु पुनर्जन्म विषय पर रिसर्च कर रहे हैं।

जातीय सेवा—जातीय ट्रस्ट की सहायता से शिक्षित होने की बात उस जातीय ऋण से जाति सेवा के माध्यम से उऋण होने की बात इनके मन को सदा जाति-सेवा में लगे रहने को प्रेरित करती रही है। यों तो १९३८ में वे कासगंज में होने वाले संयुक्त प्रदेशीय माहौर वैश्य महासभा के उत्सव में शामिल हुये थे फिर उन्हें जाति कार्य की प्रेरणा स्व० प्रेम शरण जी प्रणत और उनके द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र माहौर मित्र ने दी। सभा का अगला अधिवेशन १९५३ में बीच के नगला मे हुआ जहां वे उसके महामन्त्री चुने गये। इसके बाद उन्होंने १९५५ में अलीगढ में, १९५८ में बरेली में, १९६२ में फिर अलीगढ में उत्सव कराये जो बड़े शानदार हुये। फिर १९६७ में तथा १९८० में आगरा के स्वर्ण जयन्ती तथा हीरक जयन्ती उत्सवों के भी वही सूत्रधार थे। सन १९८१ में उन्हें अ०भा० माहौर वैश्य सभा का आजीवन संरक्षक बना दिया। सन १९५५ में जब क्षेत्र विस्तार की बात चली तो माहौर, महावर, माथुर, माहुरी, वैश्यों के शिरोमणि-संस्थानों से सम्पर्क करना और उनमे संघ निर्माण हेतु प्रस्ताव पास करवाना, उन्हीं के प्रयत्न का फल है। बिहार में माहुरी वैश्य का पता उन्होंने अपने बिहार ट्रांसफर काल में लगाया। और आगरा में १९६४ में संघ की स्थापना कर दी। और उसके शानदार उत्सव, अलवर गिरीडीह (बिहार), कलकत्ता, मुरादाबाद, मुरैना, व बरेली और झुमरी तिलैय्या में हुये। महाउर वैश्य के इतिहास पर अनुसन्धान नामक पुस्तक प्रकाशित कराई जो लगभग २५० पृष्ठ की थी। कुछ अन्तराल के बाद जब संघ का काम १९८० में फिर प्रारम्भ हुआ, तबसे तो संघ कार्य ही उनके जीवन का ध्येय सा हो गया लगता था। दो बार सारे भारत का दौरा करके संघ की १०० शाखायें सब वर्गों के सदस्य सहित पंजाब राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बंगाल, देहली, मध्य-प्रदेश, बम्बई और बिहार में खोली हैं। प्रतिवर्ष २ अक्टूबर को दिल्ली में महासेन-भामाशाह-गांधी स्मृति दिवस मनाने की और १९८१ से हर शहर में मनाने की परम्परा उन्होंने डाली है। जाति का एक चिन्ह, एक वैज, एक झंडा, एक जातिगीत और अंग्रज स्मृति दिवस की एक परम्परा स्थापित की है। लगभग १५ वर्ष से "वैश्यों का उरुतन्त्र पत्रिका" मासिक निज व्यय से १९८५ तक निकालते रहे। और सब वैश्यों के संरक्षण हेतु जो अखिल भारतीय संगठन निर्माण हुआ है उसके आप Founding Fathers में से हैं और १९८१ में उसके महा मंत्री चुने गये। इस पद के योगदान स्वरुप उन्हें संघ का आजीवन संरक्षक बनाया गया।

इनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमेश कुमारी गुप्त का एक लाइन में जिक्र करना जरूरी है जो कि सब समाज कार्यों में सदैव सहायक तथा उत्तन्त्र पत्रिका की प्रकाशक हैं। हरिद्वार में आपने जीव-दया-मंडल नाम से एक संस्था १६८० में रजिस्ट्री कराई है, जो कि पंचपुरी क्षेत्र में पशुओं के हितों की संरक्षण-कर्त्ता है। आचार्य श्री राम शर्मा के गायत्री आन्दोलन में ब्रह्मवर्चस संस्थान में यज्ञादि पर होने वाली रिसर्च संस्था के भी वे कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

यह प्रकरण यहीं समाप्त करते हैं। उन दर्जनों विद्यार्थियों का उल्लेख नहीं करेंगे जिन्हें छात्रवृत्तियाँ दी या दिलाई हैं, न उन दर्जनों जातीय एवं अन्य नवयुवकों के नाम नहीं गिनवायेंगे जिन्हें उन्होंने अपने सर्विस काल में तथा तदन्तर नौकरी दिलवाकर काम पर लगाया है। और न युवक युवतियों का उल्लेख करेंगे जिनके विवाह-शादी आप ने कराये हैं। और वैश्य महासम्मेलन की गतिविधियाँ तो इस पुस्तक से ही स्पष्ट हैं—स्थापना काल से इस सर्व वैश्य इतिहास के प्रकाशन तक।

हमारे सहयोगी (३६)



लायन दयाराम गर्ग B.A. LLB. सीनियर एडवोकेट
275 A सिविल लाइन्स (उत्तरी) मुजफ्फरनगर।

लायन दयाराम गर्ग का जन्म मुजफ्फरनगर उत्तर-प्रदेश के एक वैश्य परिवार में ला० जादोराम जी के यहां १ जुलाई १६३५ में हुआ। मां श्रीमती भगवती देवी ने लालन पोषण किया।

आपने बी. ए. एल. एल. बी. की शिक्षा प्राप्त की तथा वर्ष १६५६ में वकालत शुरु की। आप टैक्स सलाहकार हैं और मुजफ्फर नगर जनपद के सफल सीनियर एडवोकेट हैं।

आपका विवाह वर्ष १६५८ में श्री दर्शनलाल गुप्ता की पुत्री सुशीला गर्ग से सम्पन्न हुआ। बड़ी पुत्री हिमांशु बाला का विवाह सहारनपुर तथा छोटी रजनी बाला का डा० वेद भूषण मुजफ्फरनगर के साथ हुआ।

ज्येष्ठ पुत्र संदीप गर्ग अभी अविवाहित है और अपनी स्टील की फैक्टरी मैं० गणेश इस्पात एण्ड एलाइड इन्डस्ट्रीज लि० के नाम से कानपुर में लगा रहा है। तथा छोटा पुत्र अभी विद्यार्थी है।

राजनैतिक स्तर पर शहर कांग्रेस के वर्ष १६७६-७७ में कोषाध्यक्ष रहे तथा वर्ष १६७७ में ही श्री मती इन्दिरा गांधी को जेल भेजने के विरोध में ७ दिन जेल में रहे। अब कांग्रेस (आई) की कार्य-कारिणी के सदस्य हैं।

आप लायंस इन्टरनेशनल डिस्ट्रिक्ट ३२१ सी के रिजन ६ के डिस्ट्रिक्ट गर्वनर के पद पर कार्य कर रहे हैं। इससे पहले कलब के सचिव, अध्यक्ष व जोन चेयरमैन रह चुके हैं। लायनवाद में रहते हुए ही आपने एक बवासीर का कायरो सरजरी द्वारा कैम्प का आयोजन कराया जिसमें बिना आप्रेशन कराये बवासीर का इलाज कराया गया।

आप १६७१ में सिटी बोर्ड मुजफ्फरनगर के सदस्य चुने गये तथा एक वर्ष कनिष्ठ उपाध्यक्ष तथा दो वर्ष ज्येष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर कार्य किया और वर्ष १६७७ तक समाज की सेवा की।

आप वर्ष १६७७ में श्री सनातन धर्म सभा (रजि०) के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुने गये और तब से आज तक इस पद पर कार्य कर रहे हैं। इनके कार्यकाल में श्री सनातन धर्म सभा भवन का जीर्णोद्धार हुआ। सारा भवन सुन्दर बनाया गया है। उसमें एक एलोपैथिक धर्मार्थऔषधालय वर्ष १६५६ में खुलवाया गया। तथा एक शिशु मन्दिर की स्थापना वर्ष १६७७ से की गई। वर्ष १६७८ में ही कीर्तन-भवन तथा श्री लक्ष्मीनारायण भगवान का मन्दिर बनवाया गया। सभी संस्थान सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

आपके प्रयास से ही वैश्य सभा जनपद मुजफ्फरनगर की स्थापना वर्ष १६८२ में की गई, जिसकी औपचारिक प्रथम बैठक आपके निवास स्थान पर हुई तथा पदाधिकारियों का चयन तथा एक कमेटी का गठन किया गया। उसमें आपको उपाध्यक्ष बनाया गया।

वर्ष १६८३ में वैश्य सभा जनपद रजि० का अध्यक्ष सर्व सम्मिति से बनाया गया और तब से अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं। आपका मुख्य कार्य गरीब वैश्य विधवाओं की सहायता करना रहा है। इसके अतिरिक्त गरीब भाईयों के रोजगार के साधन जुटाने में सहायता। वैश्य परिवारों के मेधावी छात्रों को प्रोत्साहन देना भी मुख्य लक्ष्य रहा है और इस ओर निरन्तर वे प्रयत्नशील हैं।

वैश्य सभा के लिए एक भूमि जो लगभग १४½ बीघे है जुटाने का प्रयास किया है। और उस लिये धन एकत्र किया है। इस भूमि में किसी योजना चलाने का विचार है। क्योंकि यह भूमि आबादी के बिलकुल निकट है। आप फतेहचन्द सनातन धर्म पब्लिक स्कूल के मैनेजर/सैक्रेटरी के पद पर भी कार्य कर रहे हैं जिसकी स्थापना वर्ष १६८४ में की थी। उस समय केवल ७१ बच्चों ने प्रवेश लिया था, अब १८१ बच्चे स्कूल में हैं। स्कूल प्रगति की ओर अग्रसर है।

इसके अलावा सनातन धर्म डिग्री कालिज तथा सनातन धर्म कालेज एसोसिएशन की कार्य कारिणी तथा वैदिक पुत्री गर्ल्स इन्टर कालिज की कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य भी हैं।

इनके अलावा नगर की सामाजिक व धार्मिक अनेक ट्रस्टों की कार्य-कारिणी के सदस्य ट्रस्टी के पद पर रह कर समाज की सेवा में संलग्न हैं। जिनमें मुख्य श्री गौशाला सभा रजि०, परोपकारी समिति रजि०, मित्र संघ एवं श्री रामलीला सभा रजि० हैं। रामलीला सभा के वर्ष १६८५ के अध्यक्ष भी हैं और एक आदर्श रामलीला का प्रदर्शन कराने में सफल रहे।

ऐसे कर्मठ व समाज-सेवी व्यक्ति वे हैं जिन्होंने अपना जीवन समाज-सेवा को ही अर्पित कर रखा है।

१२) वर्त्तमान एवं निवर्त्तमान वैश्य सांसद-विधायक-पार्षद की नामावली ।

भारत भर के वैश्य जनों हेतु राजनैतिक पाथेय निश्चित करने हेतु हमारी एक जिला आगरा शाखा को उक्त राजनयिकों का एक सम्मेलन आहुत करने का काम सौंपा गया है। इसमें निम्न महानुभावों को आमंत्रित किया गया है :—

उत्तर-प्रदेश के वैश्य विधायक

भूतपूर्व

1. श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
2. श्री शिवलाल मित्तल
3. '' सुमेर चन्द्र गोयल-मेरठ
4. '' रतन लाल गर्ग ऐडवोकेट— मेरठ माकेत,
5. '' रामप्रकाश भूतपूर्व डिप्टी चीफ मिनिस्टर (भा. ज. पा.)
6. '' कन्हैया लाल गुप्त
7. '' सत्यवीर (बिजनौर)
8. ,, गेंदा लाल गुप्त अलीगंज (एटा)
9. '' डा० प्रकाश नारायण गुप्त (आगरा)
10. ,, साहू ओमकार सरन कोठीवाल सिविल लाइन्स-मुरादाबाद
11. ,, नरेश चन्द्र अग्रवाल—हरदोई
12. म० भगवान दास बरन वाल
    दीनदयाल उपाध्याय मार्ग मिर्जापुर
13. ,, राम गुलाम MLC पीलीभीत
14. ,, हरसहाय। बिलारी (मुरादाबाद)
15. ,, कृष्ण स्वरुप वैश्य एडवोकेट। बदायूं
16. '' शिवप्रसाद नागर। लखीमपुर खीरी।
17. '' संच्चिदानन्द गुप्त, गोला गंज। सदर बाजार, लखनऊ।
18. ,, धानीप्रसाद अग्रहरि, धानी बाजार, गोरखनुर।

वर्तमान (1985)

1. श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—सीतापुर
2. श्रीमती पुष्पा सिंहल मुरादाबाद।
3. श्रीमती चारुशीला। रामबाग रोड। मुजफ्फरनगर
4. श्री रिक्षपाल सिंह बन्सल खेकड़ा। (मेरठ)
5. ,, सत्यप्रकाश विकल। कमला, नगर आगरा।
6. ,, ओम प्रकाश रिक्षारिया। झांसी
7. '' सतीश चन्द्र जायसवाल, इलाहाबाद।
8. '' योगेश कुमार गर्ग। बिसौली (बदायूं)
9. ,, राजेश खेरा ललितपुर। (झांसी)
10. श्री शिवप्रसाद गुप्त MLC, 16 कालिदास मार्ग, लखनऊ।
11. श्री ओम प्रकाश जिंदल। बेलन गंज, आगरा।

---

19. ,, रामकृष्ण शाह। काश्मीर होटल। हजरतगंज लखनऊ।
20. '' विद्या भूषण। भूतपूर्व मिनिस्टर। मुजफ्फरनगर
12. ,, रामकृष्ण महेश्वरी। कांठ (मुरादाबाद)
22. '' दयाल कृष्ण ऐडवोकेट। मथुरा
23. ,, रामगोपाल गुप्त। फतेहपुर
24. '' बालोजी अग्रवाल। नमक मंडी—आगरा।

बिहार के वैश्य विधायक

भूतपूर्व

1. श्री जय कुमार पालित। रमना, (गया)
2. '' पूरन चन्द्र भूतपूर्व मिनेस्टर। डाल्टन गंज
3. '' लक्ष्मी प्रसाद केसरी गढ़वा, (पलामू)
4. रामनरायन शाह दिनारा (रोहतास)
5. श्रीमती प्रभावती गुप्त [अब ऐम.पी. नई दिल्ली]
6. श्री राजकुमार पूर्वे
7. '' रामपरीक्षण साहू
8. ,, शरद प्रसाद, जैन ''जयन्त-ज्योति''
   नं –5 बील्डिंग रोड़, शेखपुरा, पटना—14
9. '' ध्रुव भगत।
10. '' सीताराम।
11. '' शीतल प्रसाद गुप्त।
12. '' राजकुमार महासेठ।

1984 के

श्री मती तारा गुप्त
1, छज्जू बाग पटना—१

शेष अज्ञात

---

13. श्री सूरज मडल।
14. '' रामवृक्ष चौधरी।
15. '' लहटन चौधरी।
16. श्रीमती रमनीका गुप्ता।
17. श्रीमती उर्मिला देवी।
18. श्री राजकिशोर प्रसाद MLC.।
19. श्री योगेन्द्र प्रसाद चौरासिया। ''
20. श्री रघुनाथ प्रसाद ''

राजस्थान के विधायक

भूतपूर्व

1. श्री मास्टर आदित्येन्द्र (भूतपूर्व मिनिस्टर)
2. श्री चिरंजी लाल गर्ग ।
3. ,, रामकिशन दास ।
4. ,, भंवरलाल ऐरन ।
5. ,, द्वारिका प्रसाद अग्रवाल ।
6. ,, विज्ञान मोदी ।
7. ,, चंचल कुमार गोयल ।
8. ,, रामनारायण चौधरी ।
9. ,, मानिक चन्द सुराना । बीकानेर ।
10. ,, कौशल किशोर जैन ।
11. ,, विरधी चन्द जैन, पाली ।
12. ,, बद्रीप्रसाद गुप्त । भूत. मिनिस्टर निकट—बस स्टेशन अलवर

वर्तमान [1985 के]

1. श्री माणिक दानी MLA बेवर
2. श्री बिहारी लाल पारिख MLA मंडल
3. कुमारी पुष्पा जैन MLA. (१) पाली (२) नं०-११, एम.एल.ए. क्वार्टर्स—जयपुर
4. श्री हरीश पल्लीवाल MLA., गंगापुर
5. श्री कालीचरण सर्राफ MLA जौहरी बाजार । जयपुर
6. ,, मुक्ति लाल मोदी MLA. कोट पुतली ।
7. श्री प्रेमसिंह सिंघवी MLA. छाबड़ा ।
8. श्री बिरदमल सिंघवी ऐड्वोकेट, MLA, जोधपुर

---

13. श्री बहादुर सिंह कविराज विसन फार्मेसी, धौलपुर
14. श्री राम गोटेवाला, बनी पार्क, जयपुर
15. श्री हीरालाल देवपुरा, भूतपूर्व मिनिस्टर ।

मध्य प्रदेश के वैश्य विधायक

भूतपूर्व

1- श्री सूरीमल जैन ।
2- श्री हिम्मत कोठारी ।
3- श्री महावीर प्रसाद जैन ।
4- श्री जय नगनलाल गोयल ।
5- श्री रमेश अग्रवाल ।
6- श्री रामकुमार अग्रवाल (रायगढ़) ।
7- श्री बाबूलाल जैन ।
8- श्री नरसिंह दास गोयल । गोरे गांव, जिला जबलपुर ।
9- श्री शंकर कानूनगो ।
10- श्री जगदीश प्रसाद गोयल, लश्कर ग्वालियर ।
11- श्री जे.के गुप्ता MA LLB. लोहा मन्डी
12- श्री नारायण प्रसाद गुप्त
13- श्री बी. बी. गुप्त
14- श्री गुलाब चन्द अग्रवाल (दतिया)
15- श्री फूल चन्द बयानी । भिलाई (दुर्ग)
16- श्री हिम्मत कोठारी—रतलाम
१7- श्री रामचन्द्र महेश्वरी ।
28- श्री रामचन्द्र गुप्त । नं०-१८ मीरापथ । नेहरू पार्क, इन्दौर
१9- श्री शिवनारायण गुप्त । भूतपूर्व मेयर । नं० 252 गढ़ा फाटक । 'जबलपुर'
20 श्री चिरौंजी लाल गुप्त । इन्दौर
23- श्री राधाकृष्ण गर्ग ऐडवोकेट । बैतूल ।
22- श्री लक्ष्मी नारायण अग्रवाल । (गाडर वाला) 'नरसिंह पुर'
23- श्री रामहित गुप्त । भूतपूर्व मिनिष्टर । रामनगर (सतना)
24- श्री रामगोपाल गुप्त । वीर सावरकर चौक सतना ।

वर्तमान [1985 के]

1- श्री सम्पत स्वरुप जाजू—नीमच
2- श्री पुनीत राम साहू—राजिम
3- श्री रामहित गुप्ता । अमरपाटन
4- श्री हिम्मत कोठरी । (रतलाम)
5- श्री जामेश्वर साहू । धमाधा जि० दुर्ग से । गुरुद्वारा के पास । स्टेशन रोड—दुर्ग ।
6. श्री चन्द्रशेखर साहू । अप्पनपुर ।
7- ,, चित्रकान्त जैसवाल । बिलहा
8- श्री राम जी महाजन । मसौद
9- ,, श्री रामचन्द्र जैन । सिडनी
10- श्री पी. ऐम. जैन । सागर
11- श्री कुमारी दीपा साहु । कुश्री
12- ,, गंगा राम बॉदिल (१) नं० 24 पुराना पारिवारिक खंड विधायक विश्राम ग्रह । भोपाल (२) नया बाजार । लश्कर (ग्वालियर)
13- श्री नरेन्द्र नहटा । मानसा ।
14- श्री सरूप चन्द जैन । रायपुर
15- श्री द्वारिका प्रसाद गुप्त ऐड्वोकेट । वैकुन्ठपुर
16- श्री कृष्ण कुमार । रायगढ़ ।

25- श्री राजेन्द्र जैन ।
26- श्री सत्यनारायण अग्रवाल
27- श्री भानुप्रकाश गुप्त । सारंगगढ (अम्बिका पुर)

28- श्री गोपाल कृष्ण विजय वर्गीय । भू०पू० मुख्यमन्त्री । मालवीय नगर— भोपाल ।
29- श्री सुरेश चौधरी । मुरैना
30- श्री जीवन लाल साहू राजिम (रायपुर)
32- श्री चन्द्रहास साहू । कुरूड़ रायपुर
32- श्री सुरेश सेठ इन्दौर
33- श्री टोटकूराम साहू । अवधपुर (रायपुर)
34- " सत्यनारायण सन्तन । इन्दौर
35- श्री कन्हैया लाल । इन्दौर ।
36- श्री लालचन्द मित्तल, मेअर इन्दौर ।
37- श्री मानिक चन्द गुप्त ।

हिमाचल प्रदेश

भूतपूर्व

श्री देशराज महाजन

1985 के

श्री सत महाजन मिनिस्टर हिमाचल स्टेट, शिमला

उडीसा

1– श्री वेद प्रकाश अग्रवाल
2– ,, गदाधर गिरि, नं० 10123 D. 5 Unit भुवनेश्वर

अभी पता नहीं लगा पाये ।

हरियाणा

१– श्री बलवन्त राय तायल हिसार
२– श्री बल्देव तायल—हिसार
3– " रघुनाथ गोयल ।
4– श्री मांगे लाल गुप्त, भूतपूर्व मिनिस्टर ।
5– " कन्हैया लाल पोसवाल ।

१– श्री मूलचन्द मंगला
2– श्री सागर मल गुप्त, मिनिस्टर—चंडीगढ़

6– " ब्रज मोहन गुप्त ।
7– " मूलचन्द जैन ।
8– ,, बनारसी दास गुप्त, विजय नगर, भिवानी ।

पंजाब

१- श्री ओमप्रकाश गुप्त ।
2- " हर वंस लाल ।
3- ,, श्री चन्द्र ।
4- ,, कपूर चन्द जैन ।
5- ,, ब्रजलाल गोयल । सामनिया गेट–पटियाला
5- ,, फकीर चन्द गुप्त, भूतपूर्व मिनिस्टर । सिविल लाइन्स । भटिन्डा

I– Sh. O. P. Gupta, 130 Iqbalganj, Ludhiana
2– Sh. Sunil Mahajan Gurdaspur
3– Sh. Prem Gupta

महाराष्ट्र

१- श्री छेदी लाल गुप्त भूतपूर्व मिनिस्टर । गोंदिया
2- श्री H.B. Patel B.A. LLB. महावीर टाकीज । अमरावती
3- ,, जमना लाल श्री राम गोयनका ।
4- ,, स्वरूप चन्द्र अजमेर ।
5- ,, सुरेश चन्द्र देवताले ।

१– श्री मधुकरराव किम्मतवार
2– ,, रामकृष्ण जुगलाजी, कोटखाये पौनी (भंड़ारा)
3– " श्री प्रमोद शिन्दे वर्धा ।
4– ,, जगन्नाथ राव डांगे MLC. यवतमल (वाउमा)
5- श्रीमती, यशोधरा बजाज राज्यमन्त्री । महाराष्ट्र सरकार—बम्बई

पश्चिमी बंगाल

अज्ञात

१– श्री सीता राम गुप्त, काकीनाडा [24 परगना]
2– श्री गंगा दयाल साहू [बूलागढ]
3– श्री तारापद साधू खान । सिन्धूर (हुगली)

हमारे सहयोगी [३४]



श्री नारायण प्रसाद गुप्त

श्री नारायण प्रसाद गुप्त "गुरूजी" का जन्म सन् १६२० ई० में ग्राम दयालपुर ज़िला भागलपुर (बिहार) के कमलापुरी वैश्य परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम स्व० श्री ईश्वर प्रसाद गुप्त एवं माता का नाम स्व० कमलेश्वरी देवी है। इनका लालन-पालन बहन चन्द्रवती ने किया। इनकी पत्नी श्रीमती सरस्वती देवी जिन्होंने गुरूजी को स्वतन्त्रता आन्दोलन में काफी सहयोग दिया, स्वतन्त्रता सेनानियों को छिपे रूप से भोजन करवाती और पैम्फलेट को छिपाकर बटवाती थीं। ये अभी भी कांग्रेस आई की क्रियाशील सदस्या हैं।

इनके पाँच पुत्र हुए इनका प्रथम पुत्र श्री सियाराम गुप्ता अधिशासी अनुदेशक, तथा द्वितीय पुत्र श्री अनन्त प्रसाद गुप्त छपरा आर्य समाज के आर्यपुरोहित हैं। श्री ओमप्रकाश गुप्त एम.एस.सी. एम. एड. विद्या वाचस्पिति और उनकी पत्नी दोनों बोकारो स्टील प्लांट के महाविद्यालय में प्रवक्ता हैं।

इन्होंने अपने गांव में स्वराज्य आश्रम दयालपुर के नाम से एक राष्ट्रीय पाठशाला खोली है जिसमें प्रधान अध्यापक के पद पर ४० वर्षों तक अवैतनिक सेवा किया। इसी से गांव वालों ने गुरू जी के नाम से विभूषित किया। ये एक समाज सेवी एवं कट्टर-कांग्रेसी हैं। सन् १६३० ई० में गांधी जी के आह्वान पर सत्याग्रह आन्दोलन में इन्हें छः मास की सजा हुई थी। जिसे पटना कैम्प जेल में व्यतीत किया। पुनः १६४२ ई० के "करो या मरो" आन्दोलन में भागलपुर केन्द्रिय कारागार में कैद रहे। उस समय इनका घर काफी छिन्न भिन्न हो गया। स्वतन्त्रता सेनानी होने के कारण इनको केन्द्रीय सरकार ने स्वराज्योपरान्त कई बार पुरूस्कृत किया।

ये आर्य समाज के अनुयायी हैं। सम्प्रति आर्य समाज दयालपुर के मन्त्री हैं। इनका सारा परियार वैदिक धर्म के अनुयायी हैं। अछूतोद्धार में भागवन्ती, हरिजनों के लिए मन्दिर खोलवाना, मांस-मदिरा छुड़वाना, बलि-प्रथा को रोकना, बाल विवाह तथा अनमेल विवाह को रोकना, और विधवा विवाह करवाना, अनाथ बच्चों को अनाथालय पहुंचाना, आत्महत्या को रोकना आदि, सामाजिक कार्य इनके जीवन के अंग रहे हैं। कमलापुरी वैश्य की सम्पूर्ण जनगणना इन्हीं के प्रयास से सफल हुई। इन्होंने कई बार वैश्य सम्मेलन अपने क्षेत्र में करवाया। पुनश्च: जब बिनोवा भावे के भूदान आन्दोलन में इनके क्षेत्र में आए, तो गाँव के सभी धनी मानी लोग पीछे रह गए, लेकिन जमीन दान देने के बाद उनके साथ बहुत दिनों तक कार्य किये।

हमारे सहयोगी (३५)



कमलापुरी वैश्य कुलोत्पन्न दानवीर श्री बौए लाल साह जी नेपाल तराई के जनकपुर अंचल-जि. धनुषा, ग्राम पंचायत महुआ–खजुरी के वार्ड न. ६ के निवासी श्री हजारी साह जी के सपुत्र हैं। इनका जन्म अक्टूबर १६१६ ई विक्रम सम्वत १६७६ साल के कार्तिक को हुआ था। शिक्षा नैपाल की मध्यमा परीक्षा पास हैं।

ये ४ भाई हैं। ज्येष्ठ में स्वयं, द्वितीय श्री बंसत साह, तृतीय श्री महाजन साह एवं डॉ. मदन साह जी हैं और एक बहन भी हैं। इनको तीन पुत्र एवं तीन पुत्री हैं। प्रथम पुत्र रामनारायन साह गुप्ता, द्वितीय लक्ष्मी नारायन गुप्ता, तृतीय श्री नारायन गुप्ता। इन सभी पुत्रों की शादी भारत के जयनगर, बरगिनीयां एवं राजनगर शहर में हो चुकी है। इनके प्रथम पुत्री सरस्वती देवी, द्वितीय विमल देवी, तृतीय कैलासा देवी है। इन पुत्रीयों का रिस्ता भारत के छपरा शहर द्वितीय की नेपाल के मिरचैया तथा तृतीय की भारत के देवधा ग्राम में हो चुका है। इनके पिता श्री हजारी साह जी ६३ वर्ष की अवस्था में पुत्र–पौत्र से सेवा प्राप्त कर जीवित हैं।

इनका निजी व्यापार किराना दुकान, बड़ा–राइस मील एव खेती–बारी प्रधान है। स्वयं स्वस्थ हैं एव समाज सेवा, ग्राम विकास तथा राष्ट्र एवं राज परिवार के सेवा मे सक्रिय योगदान देते रहते हैं।

ये अपने ग्राम की जनता हेतु–एक बौए लाल साह मिडिल स्कूल, एक हाई स्कूल स्थापित कर चुके हैं। अपने माता जी के नाम पर एक राष्ट्रीय निजी प्राथमिक विद्यालय भवन का निर्माण करा चुके हैं।

ग्राम के सड़क में तीन–तीन पक्का कलवर्ट का निर्माण करके ग्राम विकास में योगदान दिए हैं। ग्राम में श्री विरेन्द्र पुस्तकालय भवन का निर्माण भी करा चुके हैं। राष्ट्र के लिये नेपाल रेलवे के बगल में सरकार के लिये एक आधुनिक थाना भवन का निर्माण खजुरी स्टेशन करवा दिया।

ये ग्राम के अलावा नेपाल के बड़े शहर जनकपुर धाम के राष्ट्रीय कालेज में एक पुस्तकालय भवन तथा कौमन रूम का भवन निरमान कर चुके हैं। इसी शहर के राष्ट्रीय खेल–कूद के स्टेंडीयम में ३६ हजार की आर्थिक मदद दिए हैं।

सन् १९६९ ई० में नेपाल के श्री मझली महारानी प्रिन्सेस शाह के (जो अब स्वर्गीय हो चुकी हैं) हाथो ४१ हजार रु० प्रदान कर इसी जनकपुर धाम शहर में नेत्रदान शिविर–संचालन कराये। सन् १९७६ ई. से ही नेत्रदान शिविर इनके देख–रेख में प्रत्येक साल चलाया जाता है। इस शिविर से अब–तक प्रत्येक साल ४०० से ५०० तक मोतीया-बिन्द रोगी ऑपरेशन का लाभ उठाते हैं। सभी रोगी को इनके द्वारा मुफ्त चश्मा, खाना एवं दवायें दी जाती हैं। नेत्रदान रोगीयों के पीड़ा तथा जमाव को देख कर इन्होंने स्थायी आंख–अस्पताल श्री बौए लाल साह पानो देवी (पत्नी) नेत्रदान शिविर के नाम से रामानन्द चौक, जनकपुर धाम में ६, ७ लाख रुपया की लागत से सरकार द्वारा सम्पर्क कर सन् १९८६ ई० के जनवरी में तैयार करा दिया है।

इनके सक्रिय सेवा भावना एवं देश–नरेश तथा समाज के लिये योगदान को देखकर सन् १९६८ ई० में तत्कालीन स्व. राजा महेन्द्र बीर विक्रम शाह देव सरकार ने इन्हें नेपाल का आदर–पत्र प्रदान किए। सन् १९७७ में भी मौजुदा राजा श्री ५ महाराजाधिराज बिरेन्द्र बीर विक्रम शाह देव सरकार ने आदर–पत्र प्रदान किए।

श्री कमलापुरी वैश्य समाज के लिये भी ये अपने स्वजातीय भाइयों एवं समाज के साथियों द्वारा कई कार्यों में तत्पर रहे। छात्र–वृत्ति में दान देकर स्वजातीय युवकों की शिक्षा में योगदान देते रहे हैं।

MLA's From Karnataka

भूतपूर्व

1. Sri Ramaiah Chetty Industrialist Ex. Minister SIRAGUPPA (P. C.-583120) Dt. Bellanri.
2. Sri Nagamma VISHWAMURTY Ex. Minister "KARUNA" III Main P. J. Extention DAVANGRE (577002)
3. Sri Chandra Kant Sindor BIDDAR [585401]
4. ,, T. G. Satyanerayanan Industrialist BELLARY [583101]
5. ,, Narayanappa Konda.
6. ,, M. L. Vasudevmurty Plantu. CHIKMANGLUR [577101]

१९८५ के

1. Sri K. Malappa Hindupur
2. ,, Pathi Rajgopal GUNTAKAL
3. ,,Rambhroj B. Potdair MLC.
4. ,, S. Suddappa Setty MLC.

7. Sri Gundaiya Chetty B.Sc LLB. Advocate Kola Complex [upstairs] Avenue Road Bangalore-2
8. ,, V. S. Lakshmi Kantappa Anavathi Dr. SHIMOGA

MLA's in Andhra Pradesh

EX—MLA's

1. Sri Nand Ram Vainkataiah.
2. ,, Kaparapu Subba Rao.
3. ,, Kolluru Seetaiah Gupta.
4. ,, Kotta Kesavullu.
5. ,, Basava Manaiah.
6. ,, Gonda Srihari.
7. ,, Kotta Venkateswarulu.
8. ,, Rebala Buchitama Sheshaiah.
9. ,, Obili Setty Rama Rao.
10. ,, T. C. Thimaiyah Setty.
11. ,, Kottika Krishnamurthy.
12. ,, K. G. Sri Rangaiah Setty.
13 ,, Tellakula Jalaiah.
14. ,, Kanchula Ramamurthy.
15. ,, B. V. Grummurty.
16. ,, Attululli Saruesluva Rao.

MLA's 1985

1. Sri Nandram Kankataiah P. O.—KODANGAL Dt. Mahboob Nagar.
2 ,, Muttho Gopal Krishna. P. O.-KAKINADA. Dt.—East Godavari.
3. ,, A. Krishnaiah P. O.—KAMAPEDDY Dt. Nizamabad.
4. ,, Ravihoti Ramaih. P. O.—ADONI. Dt.-Kurnool.

17. Sri Didiga Satyanarayan.
18. ,, Daps Vishal Pitty.
19. ,, Nalambarru Kundaiha.
20. ,, Smt. T. Satyavati.
21. ,, Sri K. Kinkataramaiha.
22. ,, K. S. Subba Rao. Prudalatur.

आजीवन सदस्य अ० भा० वैश्य महा सम्मेलन। (पृष्ठ उप-18 से आगे)

141 श्री प्रदीप मित्तल। नं D-57 दक्षिण विस्तार-दिल्ली 110049
200 श्री बाबूराम गुप्त । न. K-20 सरोजिनी नगर-दिल्ली-23
200 A श्री AK Rajvanshi B.Sc. (Engg) न. 145 बेगम बाग । मेरठ ।
201 ,, परमार्थी कृष्ण कुमार गुप्त न. 133-M पर्ण कुटी । परमार्थी पुरी किदवई नगर । कानपुर
202 ,, ईश्वर चन्द्र गुप्त । गौरी फैन्टा (नेपाल) वाया पिलिया जि० खीरी उ०प्र० ।
203 ,, ला० सीना राम गुप्ता अध्यक्ष अवधवाल वैश्य महासभा जगदीश फाउण्ड्री माल गोदाम रोड अम्बाला शहर।
204 ,, डा० राजा राम गुप्ता उपाध्यक्ष, अवधवाल वैश्य महासभा 72 बदाम मण्डी कंकरखेडा मेरठ।
204 ,, तुलसीदास कन्सल स० मंत्री अवधवाल वैश्य महासभा 168/A प्रगतिनगर नगला बटटू मेरठ।
206 ,, शिवप्रसाद बिन्दल स० मन्त्री अवधवाल वैश्य महासभा 162 जवाहरपुरी कंकरखेडा मेरठ।
207 ,, बी.एल. टिण्डल प्रचार मन्त्री, अवधवाल वैश्य महासभा, सेक्टर—5, क्वाटर 612 आर. के. पुरम नई दिल्ली—22
208 ,, दीवान चन्द वैश्य उपाध्यक्ष अवधवाल वैश्य महासभा, 8 डयूपलैक्स फ्लैट गुडमण्डी। देहली 110007
209 ,, ज्ञान सी. वैश्य उपाध्यक्ष अ. भा. अग्रवाल सम्मेलन 62 सत्यनिकेतन नानकपुरा रिंग रोड। नई दिल्ली-22
210 ,, राम कृष्ण गुप्ता असिस्टेण्ट सुपरेन्टेन्डैन्ट रेलवे 406/C रेलवे कलोनी भटयारी बाग। सहारनपुर।
211 ,, राजपाल गुप्ता BA. सगठन मन्त्री अवधवाल वैश्य महासभा 174 जवाहर पुरी कंकरखेडा। मेरठ।
212 ,, ला० मनोहरलाल राजेश कुमार वैश्य कोषाध्यक्ष अवधवाल वैश्य महासभा नेहरु बिल्डिंग स्पाटू रोड। अम्बाला शहर।
213 ,, नन्द लाल गुप्ता B.A. मंत्री अवधवाल वैश्य महासभा, A-94 मोती बाग-एक नई दिल्ली-22
214 ,, विजय वन्सल BA. स० मंत्री अवधवाल वैश्य महासभा, 35 आर्य पुरी गली नम्बर-2 मुजफ्फरनगर।
215 ,, मुरारी लाल तायल, 7 शिवप्रताप नगर महेशनगर गुरुद्वारे के निकट, अम्बाला कैन्ट।
216 ,, हरीश चन्द्र मंगल ठेकेदार, 20-A इन्द्रा मार्ग बाबरपुर शहादरा देहली-32
217 ,, मास्टर दयाराम तायल, 3231/1 सैक्टर 49-D चण्डीगढ।
218 ,, कृष्ण लाल गुप्ता पोस्ट मास्टर, 3881/1 सैक्टर 49-D चण्डीगढ।
219 ,, मास्टर डाल चन्द गुप्ता महामंत्री माध्यमिक शिक्षक संघ 14 पुरवा शेखलाल मेरठ।
220 ,, ओम प्रकाश वैश्य मैनेजर डायमेन्ड एल्क्ट्रोनिक्स 295 केला रोड। गाजियाबाद उ०प्र०
221 ,, वलीराम गोपीनाथ खरवारे। राधानिवास शिवाजी चौक खोवली, जि० रायगढ़ महाराष्ट्र
222 ,, गौरी शंकर गुप्त, राम नगर। नई दिल्ली—53
223 ,, M/S खजान सिंह विनय कुमार। पसरहा बाजार। हाथरस जि० अलीगढ।
224 ,, विजय कुमार रुइया। नं० 84/60 लालबाँके स्ट्रीट। कानपुर—3
225 ,, विनोद हिसारिया। मारवाडी। मुहल्ता। बेगूसराय जिला—विहार।
226 " जयभगवान न० 1 GM Wing गणेश लेन। किशन गंज दिल्ली—6
227 श्री देवानाम वी सत्यनारायनन नं० 519 एवेन्यु रोड। बंगलौर—2
228 श्री रामनिवास गुप्त। [मैं० राम सहाय निवास] बजाज। सहावर टाउन। जि० एटा। उ०प्र०
229 ,, पुरूषोत्म दास सन्स अग्रवाल मार्ग, कासगज (एटा)
230 " किशन गोपाल गुप्त। मोहनपुर (एटा) उ०प्र०।
231 " विजय प्रकाश गुप्त, A-638 कमला नगर। आगरा—5
232 श्री हरिनन्दन प्रसाद। नं० 52- 54 टाटानगर मिल एरिया। जमशेद पुर (बिहार)
233 श्री हरीप्रसाद गुप्त। स्टेशन रोड। जयनगर (जिला मधुवनी) पिन—847286 बिहार
234 श्री शिवचरण लाल गुप्त। शुभ लक्ष्मी ट्रेडिग। खेरली जि० अलवर [राजस्थान]
235 श्री कन्हैया लाल श्रोमर (वामदेव) मधारे टोला जौनपुर
236 Sri SARVESH WAR RAO erundu Narsinghmunti & Sons Thanskasu—Nagar (TANUKU)-Pc- 534212
237 श्री ला० म ार प्रसाद गर्ग स० कोषाध्यक्ष अवधवाल वैश्य महासभा, म० 1234 वार्ड-6 अम्बाला शहर
238 " ओमप्र ा बन्सल मन्त्री अवधवाल वैश्य महासभा, मकान 7768 वार्ड-4 अम्बाला शहर

239 श्री ला० कन्हैय्यालाल गुप्ता, कन्हैय्या मैडीकल स्टोर त्रिलोक पुरी डाकखाने के सामने देहली–92 ।
240 " ला० मोहन लाल गुप्ता, 221/65–A एस ब्लाक विष्णु गर्डन नई दिल्ली—18 ।
241 ,, चन्द्रकान्त विजयकुमार वैश्य 562 ओटो मारकीट बरवाला रोड, हिसार ।
242 ,, सत्यपाल सूयकान्त अग्रवाल, थानसिंह जला मिल अलेक्जेन्ड्रा रोड अम्बाला छावनी ।
243 ,, वेदप्रकाश कैश आफीसर, 702–RB वकीलपुरा सदर बाजार, करनाल ।
244 ,, रामस्वरूप गुप्ता चित्रायण डिजाईनर, 193 रविन्द्र पुरी सदर बाजार–मेरठ ।
245 ,, ला० छांगेलाल कृष्णलाल अग्रवाल । पंजाबी मोहल्ला निकल्सन रोड, अम्बाला छावनी ।
246 ,, सुखराम आर्य शास्त्री । 990/2 शास्त्री नगर स्कीम नं०–7, मेरठ शहर ।
247 ,, डा० ज्योति प्रसाद गुप्त । जोती क्लीनिक । जैन कौलेज रोड । अम्बाला शहर । (हरियाणा)
248 श्री ला० बाबुलाल बिस्कुट वाले 265 ऊंचा मौहल्ला कसेरु खेडा मेरठ
249 श्री जुगल किशोर पुत्र ला० रामअवतार, 35 जवाहर पुरी कंकरखेडा । मेरठ
250 श्री रमेश कुमार गुप्ता, द्वीप इलैक्ट्रोनिकस, 264 ऊंचा मौहल्ला कसेरु खेडा, मेरठ ।
251 " राधेश्याम गुप्त । जायसवाल भवन । सन्निकर रोडवेज बस स्टेशन । पोस्ट–सदर, जौनपुर ।
252 " हीरालाल गुप्त मोदनवाल । अनुपम जलपान ग्रह, हुसैनाबाद । जौनपुर U. P.
253 " बसंत लाल गुप्त एडवोकेट । मण्डी अहमद खाँ [अवध नगर] जौनपुर ।
254 " मनोहर लाल गुप्ता ।Eco Gents wear. 36 बी. सी. बाजार, मेरठ ।
255 श्री आर. के. गुप्ता 43/55 पुर्वी दुलीचन्द गाजियाबाद । उ०प्र० ।
256 श्री किशोरीलाल अवधवाल R–19 रमेश पार्क लक्ष्मी नगर । देहली 110092 ।
257 श्री जगदीशचन्द्र गुप्त [महामंत्री–व्यापार संघ (ई)] श्री जगदीश निवास । उई बाजार । जौनपुर ।
या गाढ़ा वस्त्रालय । जोगियापुर-जौनपुर ।



हमारे सहयोगी (४२)

श्री मोहन लाल प्रभाक - कनखल (हरिद्वार)

पारिवारिक परिचय—आत्मज स्व० लाला रामसरन दास गोयल गोत्रीय अग्रवाल । तीन पुत्र व तीन पुत्रियाँ जो कि सब पोस्ट ग्रेजुएट हैं जिनमें बड़ी पुत्री नीलम ने संस्कृत में भास व कालिदास के काव्य की तुलना पर डाक्टरेट (Ph.D.) प्राप्त की है और छोटा पुत्र अनिल अग्रवाल पंचपुरी की वैश्य-सम्मेलन शाखा के मन्त्रि हैं ।

शिक्षा—पंजाब विश्व विद्यालय से प्रभाकर तथा आर्य विद्या परिषद से विद्यावाचस्पति की डिग्री प्राप्त की ।

सामाजिक—जीवन के प्रारम्भ से ही सामाजिक कार्यों में रुचि रही है । कनखल में वैश्य कुमार सभा के स्थापनकर्त्ताओं में से हैं । सन् 1945 से 1980 तक अध्यक्ष व महामन्त्री आदि पदों पर रहे और विशाल भवन बनवाने में तन-मन-धन का सहयोग दिया । उसके माध्यम से दीन-हीन सहायता, अग्रसेन जन्मोत्सब आदि अनेकों कार्यों की परम्परा डाली ।

राजनैतिक—प्रारम्भ में कांग्रेस कार्यकर्ता रहे पर मुस्लिम तुष्टीकरण नीति से क्षुब्ध होकर हिन्दू राजनीति में प्रवेश किया जिस हेतु आचार्य किशोरीदास बाजपेई ने प्रेरित किया ।

पहिले हिन्दमहासभा में और 1951 से जनसघ के शीर्षस्थ नेता रहे । इसीलिये (1) सन 1948 में रा० स्व० संघ के अवैध घोषित होने पर (2) सन् 1966 गोवध निषेध की माँग के दिल्ली सत्याग्रह में । (3) सन 1952 के काश्मीर सत्याग्रह में (4) सन 1966 में लखनऊ गौहत्या आन्दोलन में तथा (5) मंहगाई विरोधी आन्दोलन में इस प्रकार पाँच बार जेल यात्रा की । इस समय भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय परिषद में प्रतिनिधि हैं ।

स्थानीय—हरिद्वार विकास परिषद के सदस्य 20 वर्ष तक उपाध्यक्ष रहे कई वर्षों तक म्यूनिसिपल बोर्ड के पार्षद रहे हैं ।

शैक्षणिक—निम्न शिक्षा संस्थाओं की मैनेजिंग कमेटी में हैं—

(1) गुरुकुल काँगड़ी इन्टर साइन्स कालेज ।
(2) गुरु मण्डल संस्कृत विद्यालय ।
(3) श्री चन्द जूनियर हाई स्कूल ।

स्व० स्वामी कल्यदेव परिव्राजक के पटु शिष्य होने से हिन्दी के अभ्युत्थान में सदैव कार्यरत रहे ।

धार्मिक—कनखल रामलीला कमेटी में विभिन्न पदों पर रहे ।

आर्थिक—व्योपार मण्डल के अध्यक्ष तथा कोआपरेटिव कन्ज्यूमर्स सोसाइटी के विविध पदों पर वर्षों रहे । जिला खाद्यान्न संघ के महामन्त्री भी रहे ।

संक्षेप में इनका समाज सेवार्थ हेतु समर्पित जीवन है । और देश में वैश्यों ने जो सांस्कृतिक उन्नयन में योगदान दिया है, इनका जीवन उस पद्धति का प्रतिनिधित्व रूप है ।

हमारे सहयोगी (४३)



श्री हरिनन्दन प्रसाद

प्रसाद निवास । नं० 12 CH Avenue जमशेदपुर–1

श्री हरिनन्दन प्रसाद सुपुत्र स्वर्गीय देवकी नन्दन प्रसाद । टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी के पदाधिकारी । पौत्र स्वर्गीय गुलाब चन्द दास माता श्रीमती चन्द्रादेवी । धार्मिक विचारों वाली महिला । आयु 55 (पचपन) वर्ष । व्यवसाय-काष्ठ विक्रेता, आपूर्तिकर्ता एवं लघु उद्योगी । एक चाचा स्व० रामेश्वर प्रसाद, अखिल भारतीय कमलापुरी वैश्य महासभा के अध्यक्ष थे । मूल निवासी झाउगंज, पटना ।

पाँच विवाहित बहिनें हैं जिनमें एक डाक्टर प्रेम गुप्त हैं । प्रथम पुत्र श्री बसन्त नारायण प्रसाद B. Com. द्वितीय पुत्र चि० राज प्रसाद, बगलौर में इलैक्ट्रिकल अभियन्त्रण के छात्र हैं । दामाद श्री प्रभात गुप्ता M. A. & Business Management किये हुये हैं ।

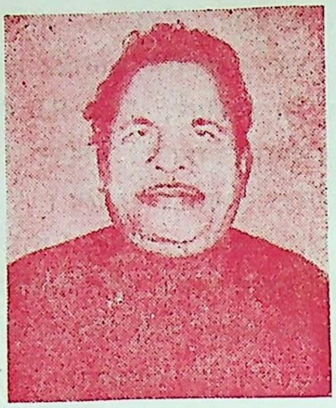
अपने विद्यार्थी जीवन में राजनीति एवं सामाजिक कार्यों में सक्रिय भाग लेते रहे हैं । स्वतन्त्रता सेनानियों को इन्होंने आर्थिक मदद भी प्रदान किया है । साथ ही हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे में भी अपने नगर में सद्भावना का परिचय दिया ।

जमशेदपुर को-आपरेटिव कॉलेज, खुलवाने में भी इन्होंने काफी संघर्ष किया । अपने समाज की कुप्रथाओं को हटाने के लिये हमेशा संलग्न रहते हैं ।

अपने परिवार में अब तक इन्होंने बिना दहेज के ही शादी की हैं और भविष्य में भी इनका यही इरादा है । सम्प्रति आप-जमेशदपुर टिम्बर मर्चेन्टस एसोसियेशन के जनरल सेक्रेटरी हैं, बिहार प्रान्त टिम्बर ट्रेडर्स-कोआर्डिनेशन कमिटी, सिंहभूमचैम्बर आफ कामर्स एवं इण्डस्ट्री तथा सिंह भूम इण्डस्ट्रीज एसोशिएसन के कार्यकारिणी समिति के सदस्य तथा जमशेदपुर कमलापुरी वैश्य कमिटी के अध्यक्ष हैं ।

व्यापारिक स्थल - दि बिहार शॉ मिल्स, 52 से 64 टाटानगर मिल्स एरिया काष्ट विक्रेता एवं आपूर्तिकर्त्ता, जमशेदपुर–831002, टाटा नगर-बिहार ।

हमारे सहयोगी (४४)



सेठ रामेश्वरदास अग्रवाल ।

निर्मला छावनी । हरिद्वार

पितृ परिचय—स्वर्गीय लाला अनन्त राम अग्रवाल, ऋषिकेश के सुप्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्त्ता थे । कांग्रेस आंदोलन में जेल गये तथा स्थानीय कमेटी की प्रचुर सहायता की । परन्तु 1952 में जब कांग्रेस ने लोकसभा हेतु रायसहाब सेवक राम को अपना प्रत्याशी बनाया तो उन्होंने पण्डित नेहरु से विरोध प्रकट किया और कांग्रेस छोड़ दी तथा राय सहाब को परास्त कराया ।

आपने सन 1944 में उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध नेता देव सुमन को शरण दी थी और इस उपलक्ष्य में पुलिस ने परिवार की भीषण मार-पीट की । राजनैतिक निष्ठा को बिना कोई लाभ उठाये उन्होंने 1952 में कांग्रेस छोड़ दी तथा पहिले जनसंघ और बाद में जनता पार्टी का समर्थक कार्यकर्त्ता सारा परिवार बन गया ।

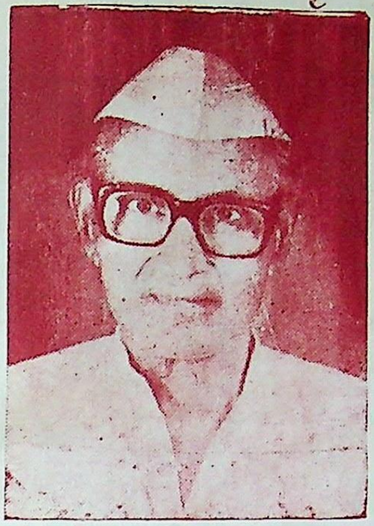
पारिवारिक—श्री रामेश्वर दास अग्रवाल के चार पुत्रियाँ हैं जो पोस्ट ग्रेजुएट हैं परन्तु पुत्रगण श्री मोहनदास, महेश कुमार, शिवनन्दन तथा राकेश कुमार उच्च शिक्षा में नहीं गये और अपना परम्परागत देशी घी का थोक व्यापार करते हैं ।

सामाजिक—आपने ऋषिकेश की अग्रवाल धर्मशाला में कमरे बनवाये हैं । तथा तभी से हरिद्वार की अग्रवाल सभा के प्रधान हैं । प्रतिवर्ष अग्रसेन जयन्ती सम्पादित करके बृहत जलूस निकलवाते हैं ।

हरिद्वार में मैत्री संगम नाम से कार्यरत सभा के भी अध्यक्ष हैं । मूल निवास स्थान घरौंडा जिला करनाल में भी कुछ परोपकारी वैश्य संगठनों में भी हाथ रहा है ।

अधतन पता—कोठी नं० 34 निर्मला छावनी, हरिद्वार । (यू.पी.)

हमारे सहयोगी (४५)



सेठ श्री हरलाल जी गुप्ता अजमेर

सेठ श्री हरलाल जी गुप्ता का जन्म राजस्थान के ऐतिहासिक नगर अजमेर में मार्च 1916 में हुआ। इनके पिता लक्षमण लाल जी मिल्कीयत के स्वामी और प्रसिद्ध व्यक्ति थे। इन्हीं के नाम से जादूघर में "लक्ष्मण चौक" प्रसिद्ध है। आर्य समाजी संस्कार पैतृक रूप में मिले क्योंकि इनके पिता महासय चिरजीलाल जी आर्य समाज अजमेर के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। सन् 1977 में जब प्लेग का भयंकर प्रकोप अजमेर शहर में फैला उस समय आपने सेवा समिति के कप्तान के नाते डा० खाँड वाले, पं. जियालाक और शी चाँद कर इशा जी शारदा के साथ सराहनीय भूमिका निभाई।

इनके दो भांई तो प्रिन्सीपल, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के पद से सेवा निवृत्त हुये हैं तथा अन्य दो भाई रेल सेवा में कार्यरत हैं।

अपने सामाजिक जीवन में, आप सन् 1952 में "म्यूनिसिपल कमीश्नर" अजमेर में निर्वाचित हुये तथा जनता को काफी उपलब्धियां प्राप्त कराकर यश कमाया।

आप सन् 1935 से अब तक कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं तथा अनेक बार "ब्लाक अध्यक्ष" पद पर सुशोभित रहे हैं।

आप आर्य समाज के जाने माने कार्यकर्त्ता आज भी हैं और सदैव सक्रिय रूप से सभी कार्यक्रमों में भाग लेते रहे हैं विशेष उपलब्धि यह है कि अजमेर में "दयानन्द शताब्दी" जो कि समस्त संसार के स्तर पर सन् 1983 में आयोजित की गई थी, उस अवसर पर आपने दिन रात एक करके काफी मात्रा में धन एकत्रित किया तथा अतिथियों के "भोजन व्यवस्था कक्ष" के प्रमुख अधिकारी थे।

आपने इस सब के उपरान्त अपनी जाति सेवा कार्य भी निष्ठा पूर्वक किया फलस्वरूप आपने सितम्बर 1944 में "अखिल भारत वर्षीय तन्तुवाय वैश्य कान्फ्रेंस, अजमेर" में संचालन मन्त्री का कार्य भार सफलतापूर्वक सम्भाला। तथा इस कान्फ्रेंस के पूर्व एवं पश्चात् जहाँ जहाँ भी जातीय, जलसे सभायें एवं कान्फ्रेंस आदि का आयोजन किया गया, उन सभी स्थानों पर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। आज भी आप स्थानीय श्री तन्तुवाय वैश्य पुष्कर घाट निर्माण, समिति जादूघर, लक्ष्मण चौक, अजमेर के अध्यक्ष पद पर आसीन हैं।

आप सन् 1956 से आज तक "चक्की एसोसिएशन, अजमेर" के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचित होते आ रहे हैं।

आपके तीन पुत्र एव तीन पुत्रियाँ हैं। सबसे बड़े पुत्र "शुगर मिल्स" कटघुइयाँ" (उ प्र०) में चीफ इन्जीनियर हैं। शेष तीनों पुत्रियां M.A. B.Ed (एम. ए. बी-एड) अध्यापिकायें हैं।

हमारे सहयोगी (४६)



ी दयाशंकर गुप्त, मुरादाबाद

श्री दयाशंकर जी का जन्म 22 अप्रैल 1924 को मुरादाबाद में साहू भूकन सरन जी के घर में हुआ। चार भाई तथा पाँच बहिनों का परिवार था। आपके ताऊ जी की सच्चरित्रता की प्रशसा सुनकर उन्हें प्रेरणा मिलती थी कि मैं भी उन जैसा ही बनकर प्रशंसा का पात्र बनूं।

सन् 1946 में इनका विवाह हसनपुर निवासी श्री गोविन्दराम जी की सुपुत्री शकुन्तला देवी के साथ सम्पन्न हुआ। मात्र 100 रुपये उधार लेकर साहस बटोर कर अपना स्वतन्त्र धन्धा प्रारम्भ किया। इसी का फल है कि आज इनका व्यवसाय प्रथम श्रेणी का है तथा समाज में प्रतिष्ठा है।

आपने 1964 में जिला हलवाई संघ का पुर्नगठन किया और इसमें कोषाध्यक्ष पद प्राप्त किया। आज मुरादाबाद हलवाई संघ तथा अ० भा० खाद्य पेय संघ की अन्तरंग के भी सदस्य हैं। 1967 में शंकर मिष्ठान भण्डार नामक नई फर्म का निर्माण किया। 1967 में विद्यानगर मऊ जिला मुरादाबाद में शंकर डेरी फार्म खोला। 1963 में दुग्धशाला नामक डेरी का निर्माण किया उसमें सभी कर्मचारियों को हिस्सेदार बनाया। 1964 से जनता सेवक समाज के अन्तरंग सदस्य के रूप में सेवारत हैं। आपका परिवार एक शिक्षित परिवार है तथा आपके सभी पुत्र ग्रेजुएट तथा पोस्ट ग्रेजुएट हैं।

सामाजिक जीवन

प्रधान उत्तर प्रदेशीय माथुर वैश्य सभा, मुरादाबाद। उपप्रधान अ. भा. महाउरु वैश्य संघ।

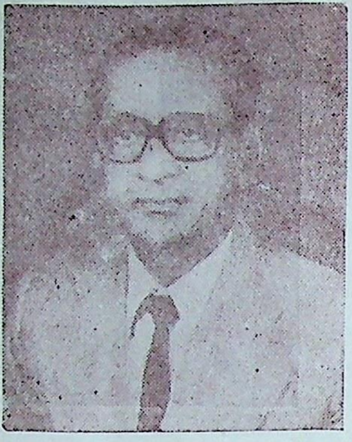
संयोजक प्रस्तोता—अ. भा. वैश्य महा सम्मेलन जिला शाखा मुरादाबाद वर्ष 1985 में। अध्यक्ष गढ़ मुक्तेश्वर गंगा मेला माथुर वैश्य कैम्प जो प्रतिवर्ष गंगा तट पर लगता है और जहाँ से प्राथमिक चिकित्सा तथा ठहरने की प्रचुर व्यवस्था होती है।

मई 8 तथा मार्च 86 में अमरोहा–नगली सैयदपुर–हसनपुर–चन्दौसी में सस्थाओ की शाखायें दौरा करके खोलों।

अन्तः वैश्य उपवर्गीय विवाहों में आस्था :

बड़ी सुपुत्री इन्द्रेश का विवाह चौसेनी वैश्यों में, दूसरी सुपुत्री चन्द्रकान्ता एम. ए. बी-एड. आचार्य का विवाह बिहारस्थ भगत वैश्यों में से श्री मनुदेव एम ए. [प्रवक्ता–गुरुकुल कांगड़ी-विश्वविद्यालय] से तथा बड़े पुत्र प्रदीप का विवाह रस्तौगी वैश्यों में करके वह परम्परा जारी रखी जिसमें स्वयं अपना विवाह भी गहोई वैश्यों में किया था।

हमारे सहयोगी (४७)



रामसेवक गुप्त एडवोकेट

स्वरूपनगर । कानपुर-2

जन्म 1-10-1984

पिता—नारायण प्रसाद, पितामाह, श्री राम सहाय ।

भ्रातागण-(1) डा० राम गुलाम गुप्ता Ph.D. D. Lit अध्यक्ष राजनीति विभाग । (2) श्री रामदास कृषि तथा व्यापार में संलग्न तथा । (3) श्री राम प्रसाद गुप्ता प्रसिद्ध कर अधिवक्ता ।

पुत्र—(1) श्री सन्तोष कुमार, एवं श्री प्रमोद कुमार जी माने जाने कर-अधिवक्ता हैं ।

(2) श्री विनोद कुमार गुप्ता B. E. (M.B A.) इन्जीनियर Science तथा (4) अचल गुप्ता हिन्दुस्तान लीवर लि॰ तथा पारले के प्रमुख अभिकर्ता हैं । आपके पुत्र सन्तोष कुमार गुप्ता जो लायन्स क्लब के चार्टर्ड अध्यक्ष हैं, ने चार लाख की धनराशि संग्रह कर कानपुर में डायलायसिस यूनिट कायम किया जिसका उद्‌घाटन माननीय प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने पिछले दिनों किया था ।

सार्वजनिक कार्य :

उपाध्यक्ष—विद्या मन्दिर कन्या विद्यालय इण्टर कालिज । स्वरुप नगर, कानपुर-2

अध्यक्ष—अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन जिला शाखा कानपुर ।

सदस्य—रोटरी क्लब कानपुर ।

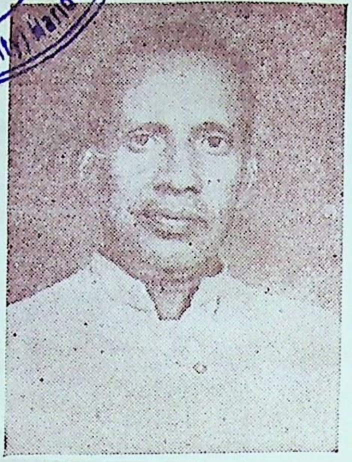
निवर्तमान अध्यक्ष—सेल्सटैक्स बार एसोसिएशन कानपुर ।

निवर्तमान सदस्य—मेसोनिक क्लब कानपुर ।

अध्यक्ष—ओमर इढ़ अमर तथा दोसर वैश्य समाज कानपुर ।

इनके परिवार की महिलायें भी सार्वजनिक कार्यों में रुचि लेती हैं । आपके अनुज की पत्नी कानपुर बेकवर्ड क्लास कांग्रेस (आई) की अध्यक्ष तथा प्रमुख समाज सेवी महिला हैं ।

हमारे सहयोगी (४८)



श्री हरप्रसाद गुप्त, जयनगर; नेपाल

मिथिला के महाराज जनक की राजधानी जनकपुर (नेपाल क्षेत्र) धाम से सटे 27 किलोमीटर पूर्व दक्षिण में जयनगर छोटा सा शहर भारतीय क्षेत्र में है । इसी में दिनांक जून 1934 को कमलापुरी वैश्य वंशोदय कश्यप गोत्र में श्रीमान जयगोविन्दराम जी गुप्त के द्वितीय पुत्र के रुप में उदय श्री गुप्त जी छः भाई एवं तीन बहन हैं । अभी सभी भाईयों का आवास और व्यवसाय भिन्न-भिन्न होते हुये भी परस्पर प्रेमभाव है ।

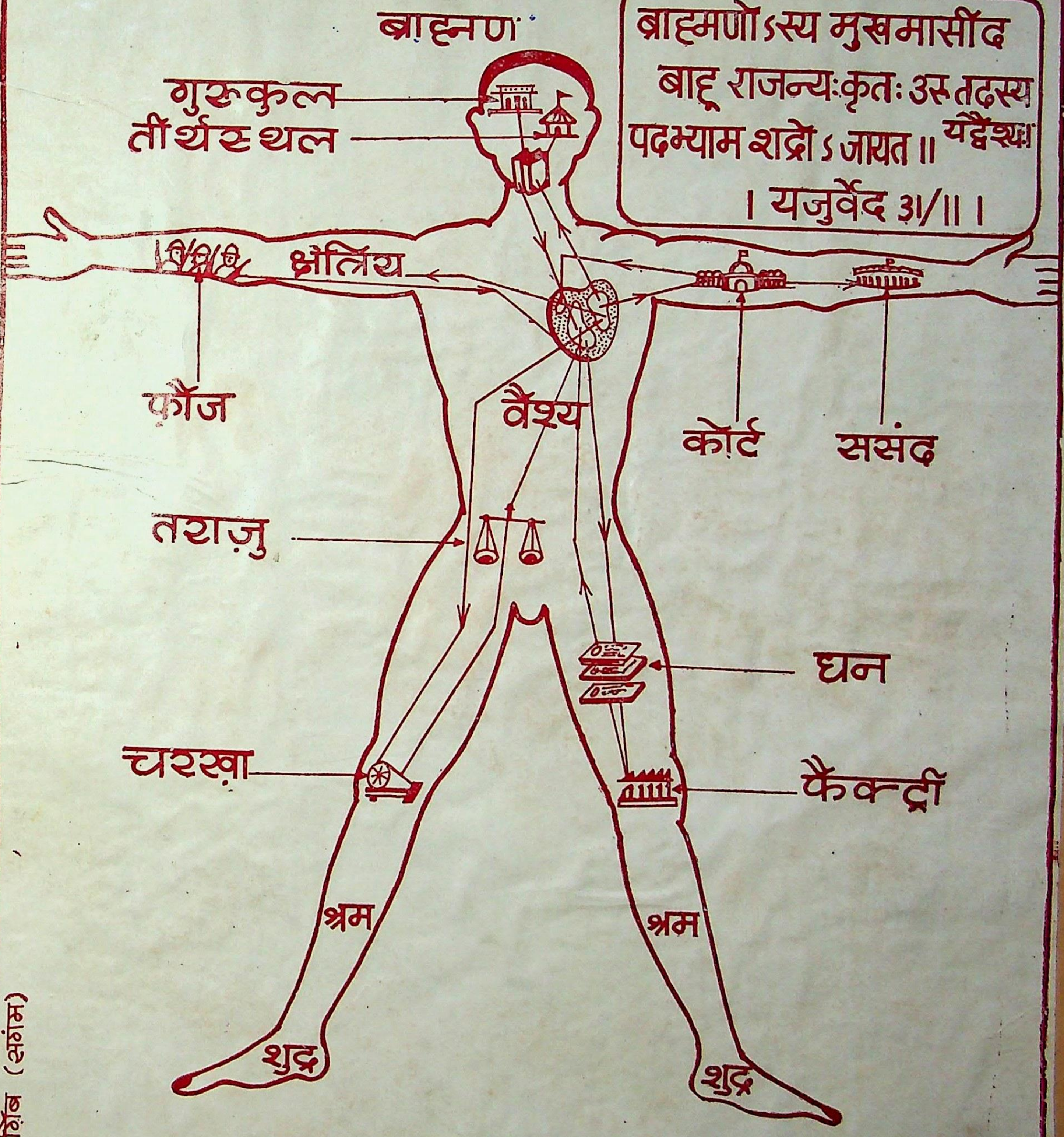
इनका विवाह पटना के कमलापुरी महासभा के अध्यक्ष रामेश्वर प्रसाद जी गुप्त के अनुज भ्राता श्रीमान देवकी नन्दन प्रसाद जी गुप्त वेलफेयर आफीसर टाटा संस्थान । पुत्री श्रीमति कुसुम गुप्ता से सम्पन्न हुआ । पिताजी के स्वर्गवास पर ये अपने पैत्रिक व्यवसाय सोना-चाँदी के व्यापार में जुट गये ।

उस समय तक उनकी शिक्षा मैट्रीक ही तक सिमित रहा । इनके तीनों लड़कों ने B. Com. तक शिक्षा पाई है । जहाँ समाज का कुछ कार्य होता उसमें यथायोग आर्थिक मदद करते रहे, ज्येष्ठ पुत्र चि० आनन्द कुमार गुप्त B. Com. का शुभ विवाह सहरसा निवासी वहां के आजन्म चेयरमेन एवं आजन्म वहीं से विधायक श्रीमान भूषण प्रसाद जी गुप्त की पौत्री से हुआ । तीसरा पुत्र नेपाली नागरिक है, और काठमान्डू शहर में ही व्यवसाय के लिये गये हैं ।

इनका सीधा सम्बन्ध अध्यात्म की ही ओर है । सभी धार्मिक उत्सवों में भाग लेना जरूरी समझते हैं । समाज में कोई भी उत्सव हो उस में भाग लेते रहते हैं । पिछले साल द्वितीय जिला वैश्य सम्मेलन जयनगर में ही हुआ जिसमें आर्थिक प्रचुर सहयोग दिया । सम्मेलन में इनकी यही आवाज थी कि वैश्य एकीकरण का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब हम लोग आपस में शादी ब्याह इसी सम्मेलन से शुरु करें ।

समाज ब्रह्म का वर्णों में विभाजन

ऋग्वेद दशम् मंडल ९०वाँ सूक्त/१२वाँ मंत्र



ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद
बाहू राजन्यःकृतः उरु तदस्य यद्वैश्यः
पदभ्याम शद्रो ऽ जायत ॥

। यजुर्वेद ३१/११ ।

शशिभ (संगम)